सर्वोत्तम
रूसी साहित्य
पुस्तकमाला

ИВАН ТУРГЕНЕВ

ЗАПИСКИ ОХОТНИКА

ИЗДАТЕЛЬСТВО
ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
МОСКВА

इवान तुर्गनेव

शिकारी के शब्द-चित्र

श्री सन्मति पुस्तकालय
क्र०
जयपुर

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को

अनुवादक नरोत्तम नागर

विषय-सूची

पृष्ठ

खोर और कालीनिच .	६
येरमोलाई और चक्कीवाले की पत्नी	३०
रसभरी का झरना .	४६
जिले का डाक्टर .	६५
मेरा पडोसी रदीलोव .	८१
माफीदार ओवस्यानिकोव	६४
ल्गोव	१२४
बेजिन चरागाह .	१४२
क्रसीवया मेच का निवामी कास्यान	१७५
कारिन्दा	२०५
खाता-घर	२२७
बिर्यूक	२५५
दो जमीदार	२६८
लेबेद्यान	२८२
तत्याना वोरीसोवना और उमका भतीजा	३०२
मृत्यु	३२१
गायक	३४२

प्योत्र पेत्रोविच करातायेव . . ३७१
मिलन-वेला ३९५
ग्चिग्री जिले का हैमलेट ४१०
चेरतोपखानोव और नेदोप्यूस्किन ४५०
चेरतोपखानोव का अन्त ४७६
जीवित समाधि ५३३
पहियों की खडखड ५५५
वन और स्तेप ५७७

खोर और कालीनिच

बोल्खोव जिले में से होकर जीज्द्रा जिले मे जाने का जिस किसी को भी मौका मिला है, वह ओरेल प्रान्त मे बसनेवाले लोगो और कालूगा प्रान्त की आबादी के बीच की भिन्नता को देखे बिना नही रह सकता। ओरेल के किसान का कद छोटा है, बदन झुका हुआ और चेहरे से उदासी तथा शक टपकता है। ऐस्पन लकडी के बने छोटे छोटे मनहूस घरो में वह रहता है, और खेतो में बेगार के काम पर पसीना बहाता है। और किसी तरह का व्यापार नही करता। वह भूखे पेट रहता है और छाल की चप्पले पहनता है। दूसरी तरफ कालूगा का लगान अदा करनेवाला किसान, चीढ-वृक्ष की बनी चौडी-चकली झोपडियो मे रहता है कद का लम्बा, साहसी, प्रसन्न वदन है और चेहरा साफ-सुथरा। मक्खन और तारकोल का व्यापार करता है, और छुट्टियो के दिन ऊचे जूते पहनता है। ओरेल प्रान्त का गाव आम तौर पर जोते हुए खेतो के बीच, किसी खाई-खड्ड के किनारे, जो अब गन्दे पानी के जोहड का काम देता है, स्थित होता है (गबेर्निया के पूर्वी भाग का हम अब जिक्र कर रहे हैं)। गिने-चुने बेंत-वृक्षो और दो या तीन मरियल-से बर्च-वृक्षो के सिवा मील-भर के एटे-पेटे में कोई दूसरा पेड दिखाई नही देता। झोपडिया एक-दूसरी से सटी और उनकी छतें गले-सडे फूस से ढकी हुई. इसके उलट कालूगा के गाव के इर्द-गिर्द, आम तौर पर चारो तरफ जगल होते हैं। झोपडिया एक-दूसरी से दूर दूर, अधिक पायदार और तख्तो के पटाववाली होती

है, फाटक कसकर वद होते है, टट्टर टूटे-फूटे और धूल चूमते नजर नही आते। उनमें ऐसे छिद्र नही होते कि राह चलते सुअर अनायास भीतर घुस आय और शिकारी के लिए तो कालूगा प्रान्त कही अधिक अच्छा है। ओरेल प्रान्त मे जगल और झाडियो के बचे-खुचे अवशेप पाच साल के अन्दर खत्म हो जायेगे, और दलदली इलाके का तो अब कोई निशान भी वाकी नही रहा। इसके प्रतिकूल, कालूगा में, दलदली इलाका मीलो तक और जगल सैकडो मीलो तक फैले हुए है। और वहा शिकार के लिए वह शानदार पक्षी, ग्राउज आज भी बडी तादाद में मिलता है। इसके अलावा एक और वढिया चाहा पक्षी भी वहा वहुतायत में पाया जाता है, और जब तीतर जोरो से पर फडफडाता हुआ अचानक ऊपर की ओर उडान भरता है तो शिकारी और उसका कुत्ता चौंक उठते है और खुशी मे फूले नहीं समाते।

शिकार की खोज मे एक बार जब मै जीज्द्रा जिले में गया तो वहा खेतो मे जाते हुए कालूगा प्रान्त के एक छोटे जमीदार से मेरी मुलाकात हुई और उससे परिचय हो गया। पोलुतीकिन उसका नाम था। उसे भी शिकार की धुन थी और इसी लिए जाहिर है वह एक वहुत वढिया आदमी था। फिर भी उसमें कुछ कमजोरिया भी थी। मिसाल के लिए वह प्रान्त की हर अविवाहित लडकी से जो किसी जमीदारी की उत्तराधिकारिणी होती विवाह का प्रस्ताव करता, और जब वह उसका प्रस्ताव ठुकरा देती और उसका घर पर भी आना वन्द कर देती तो वह, टूटे दिल अपने तमाम मित्रो और परिचितो के सामने अपना दुखडा रोता फिरता और बरावर उस युवती के सगे-सवधियो को अपने वाग के खट्टे आडुओ तथा अन्य कच्चे फलो के तोहफे भेजता रहता। जब भी होता, बडे चाव से साथ वह एक ही कहानी कहता। लेकिन, वावजूद इसके कि अपनी कहानी की खूवियो पर वह स्वय मुग्ध था, और किसी की उसमें रुचि न होती। अकीम नाखीमोव की कृतियो और 'पिन्ना' नामक

उपन्यास का वह प्रेमी था; बोलने में वह हकलाता था, अपने कुत्ते का नाम उसने नजूमी रख छोडा था, और 'तथापि' की जगह 'कदापि' कहा करता था। अपने घर मे भोजन पकाने की उसने फ्रान्सीसी पद्धति स्थापित कर रखी थी, और उसके बावरची के कथनानुसार इस पद्धति की विशेषता यह है कि हर पदार्थ का असली जायका बदल जाता है। इस कला-कर्मी के हाथो का स्पर्श पाकर मास से मछली का स्वाद आता था, मछली से कुकुरमुत्ते का, और सेवइयो से बारूद का। रही सही कसर इस बात से पूरी हो जाती कि शोरबे मे एक भी ऐसी गाजर न डाली जाती जिसने तुल्य चतुर्भुज या समलब का आकार न धारण कर लिया होता। लेकिन, इन इक्की-दुक्की और मामूली-सी कमज़ोरियो को छोडकर, मिस्टर पोलुतीकिन, जैसा कि हम कह चुके है, बहुत ही बढिया जीव था।

जान-पहचान के पहले ही दिन पोलुतीकिन ने मुझे रात को अपने घर ठहरने के लिए आमंत्रित किया।

"मेरा घर यहा से पांच-एक मील आगे है," उसने कहा, "पैदल जाने में काफी दूर पडेगा। सो चलो, पहले खोर के यहा होते चले।" (पाठक उसका हकलाना नजरन्दाज करने के लिए मुझे क्षमा करेगे।)

"खोर कौन है?"

"मेरा एक काश्तकार है। यही, एकदम पास रहता है।"

हम लोग उस ओर चल पडे। जगल के बीच एक खूब साफ और जोते-बोये हिस्से मे खोर का एकाकी घर खडा था। चीढ लकडी की बनी कई एक इमारते थी जो एक दूसरी के साथ तख्तो के बाडो से जुडी हुई थी। मुख्य इमारत के सामने पतली टेको पर खडा एक द्वार-मण्डप फैला था। हम भीतर गये। बीस बरस का एक लम्बा और खूबसूरत नौजवान हमे दिखाई पडा।

"अरे, फेद्या! खोर घर पर है?" पोलुतीकिन ने पूछा।

"नही। खोर तो शहर चले गये है," मुसकराते और वर्फ जैसे सफेद दातो को झलकाते हुए लडके ने जवाव दिया, "आपके लिए छोटी गाडी निकलवा दू?"

"हा, मुनुवा, छोटी गाडी। और थोडी क्वास* भी लेते आओ।"

हमने घर में पाव रखा। दीवारो के साफ-सुथरे तख्तो पर सुब्दल के घटिया छपे कागज़ का एक भी टुकडा नही था, एक कोने मे, चादी के चौखटेवाली वोझल देव-प्रतिमा के सामने, दिया जल रहा था। लीपा लकडी की वनी मेज को हाल ही में खरोच खरोचकर साफ किया गया था। खिडकियो के चौखटो के जोडो और दरारो में न तो चपल गोवरैले इधर से उधर दौडते नजर आते थे और न मनहूस तिलचट्टे दुवके दिखाई देते थे। लडका देखते न देखते बढिया क्वास से भरा सफेद रग का वडा-सा वरतन, गेहू की पावरोटी का एक मोटा और भारी-सा टुकडा और लकडी के कटोरे में नमक लगे एक दरजन खीरे लिये आ हाज़िर हुआ। इन सव चीज़ो को उसने मेज पर रख दिया और फिर, दरवाज़े से पीठ लगाये, मुस्कराता हुआ हमे देखने लगा। हम लोग अभी जलपान से निवट भी न पाये थे, कि चू चू करती गाडी दरवाज़े पर आ खडी हुई। हम लोग वाहर निकले। पन्द्रह वरस का एक लडका—वाल घुघराले और गाल गुलावी—गाडीवान की जगह वैठा था और वडी मुश्किल से काली-सफेद चित्तीवाले हृष्ट-पुष्ट घोडे की रास थामे था। गाडी के इर्द-गिर्द हट्टे-कट्टे छ जवान खडे थे, जो शकल-सूरत से एक-दूसरे से और फेद्या से वहुत कुछ मिलते थे। "खोर के वेटे है ये सव," पोलुतीकिन ने कहा।

"सव खोरकी है," (अर्थात्, जगली विलाव—खोर—के वेटे), फेद्या ने कहा। वह हमारे पीछे पीछे सीढियो पर निकल आया था। "लेकिन इनके अलावा और भी है—पोताप जगल में है, और सीदोर वूढे खोर के साथ शहर चला गया है। और देख वास्या," गाडीवान को

---

* रूस का एक पेय जो काली पावरोटी से तैयार किया जाता है।

सम्बोधन करते हुए उसने कहा, "हवा की तरह ले जाना, समझे? मालिक को ले जा रहा है। और देख, ज्यादा मस्ताना नही, उवड-खावड राह्-बाट मे ज़रा सभलकर चलाना। ऐसा न हो कि गाडी उलट दे और मालिक के पेट मे गडवड हो जाय।" फेद्या के वाक्-विलास पर अन्य खोरकी हस पडे। "नजूमी को उठाकर गाडी मे वैठा दो!" पोलुतीकिन ने शान के साथ फरमान जारी किया। फेद्या ने, रस लेते हुए नजूमी को जो जवर्दस्ती मुह पर मुसकान लादे था, हवा मे उठाकर गाडी की तलहटी में विठा दिया। वास्या ने घोडे की लगाम ढीली की। हम लोग चल पड़े।

"यह रहा मेरा हिसाव-घर," नीची छतवाले एक छोटे-से घर की ओर सकेत करते हुए सहसा पोलुतीकिन ने मुझसे कहा।

"अन्दर चलोगे न?"

"जरूर!"

"अव यहा काम नही होता," भीतर पाव रखते हुए उसने कहा, "फिर भी जगह देखने लायक है।"

हिसाव-घर में दो सूने-से कमरे थे। उसका रखवाला एक काना वूढा था जो आगन में से लपककर वाहर आया।

"कहो कैसे हो, मिन्याइच्च?" पोलुतीकिन ने कहा। "यह क्या वात है कि तुम पानी नही रखते?"

काना वूढा कही लोप हो गया और तुरत पानी की एक बोतल तथा दो गिलास लिये आ पहुचा।

"जरा चखकर देखो," पोलुतीकिन ने कहा, "यह हमारे झरने का लाजवाव पानी है।"

हम दोनो ने एक एक गिलास पानी पिया। बुढऊ इस वीच नत-मुद्रा में खडा रहा।

"हा तो, मै सोचता हू अव चले," मेरे नये मित्र ने कहा।

"इस हिसाब-घर में ही सौदागर अलिलूयेव के हाथो मैने बडे अच्छे दामो चार एकड जगली जमीन वेची थी।"

हम लोग गाडी मे बैठ गये और आध घटे में ही गढी के अहाते में आ पहुचे।

"कृपा कर जरा यह तो बताइये," साझ के भोजन के समय मैने पोलुतीकिन से पूछा, "यह खोर आपके दूसरे काश्तकारो से अलग-थलग क्यो रहता है?"

"कारण यह है कि वह एक चतुर किसान है। पचीस साल पहले उसकी झोपडी जला डाली गयी थी। सो वह मेरे स्वर्गीय पिता के सामने हाजिर हुआ। 'मेरी अर्ज़ मजूर हो, निकोलाई कुज़्मीच,' उसने कहा, 'मुझे अपने जगल में दलदलवाले हिस्से पर बसने की इजाजत दे दीजिये, मै लगान अच्छा दूगा।'

'लेकिन दलदली भूमि पर तुम क्यो बसना चाहते हो?'

'मेरी ऐसी ही कुछ इच्छा है। सिर्फ, मेरे मालिक, निकोलाई कुज़्मीच, इतनी दया करना कि मुझसे मज़दूरी न करवाना, बल्कि जितना भी आप ठीक समझें, लगान नियत कर दें।'

'साल में पचास रूबल।'

'अच्छी बात है। मुझे मजूर है।'

'लेकिन देखो, बकाया न चढने पाये।'

'बेशक, बकाया नही चढेगा।'

सो वह दलदली भूमि मे बस गया, और तभी से लोग उसे खोर (अर्थात्, जगली विलाव) कहते है।"

"अच्छा। तो क्या वह काफी अमीर हो गया है?" मैने पूछा।

"हा, अमीर हो गया है। अब सौ रूबल का लगान देता है, पर मै और भी बढाऊगा। कई दफे मै उससे कह चुका हू—'तुम अपनी आज़ादी खरीद लो, खोर, बहुत अच्छा रहेगा, आज़ादी खरीद लो ' लेकिन वह—काइया कही का—कहता है कि यह उसके बूते का नही, उसके पास पैसा नही है, मगर यह कौन मानेगा ."

अगले दिन, सुबह की चाय के बाद ही, हम लोग फिर शिकार के लिए निकल पडे। हम लोग गाव मे से गुजर रहे थे कि एक नीची झोपडी के सामने पोलुतीकिन ने अपने कोचवान को रुक जाने को कहा और फिर जोरो से हाक लगायी—"कालीनिच!"

"आया, मालिक, अभी आया!" आगन मे से आवाज़ आयी। "जूते कस रहा हू।"

हम लोग टहलते हुए आगे बढे। करीब चालीस वर्ष की उम्र का एक आदमी गाव के छोर पर हमारे साथ आ मिला। कद का लम्बा और छरहरा, और छोटा, पीछे की ओर झुका हुआ सिर। यही था कालीनिच। उसका खुशमिजाज सावला चेहरा, कुछ कुछ चेचक के हल्के दाग लिये, पहली नजर में ही मुझे भला लगा। कालीनिच (जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ) अपने मालिक के साथ हर रोज़ शिकार पर जाता था। कभी उसका थैला और कभी उसकी बन्दूक सभाले वह उसके साथ रहता था, वही टोह लगाता कि शिकार कहा मिलेगा, पानी लाकर देता, शिकार के लिए झोपडिया बनाता, स्ट्रावेरी बटोरता, और गाडी के पीछे पीछे दौडता था। पोलुतीकिन उसके बिना एक कदम भी नही बढ सकता था। कालीनिच बहुत ही खुश और अत्यन्त कोमल मिजाज का आदमी था। हर घडी कोई धुन वह धीमी धीमी आवाज़ मे गुनगुनाता रहता और लापरवाही के साथ अपने इर्द-गिर्द देखता रहता। वह कुछ बुदबुदाकर बोलता था, और बोलते वक्त उसकी हल्की नीली आखो में हसी की चमक रहती। उसका हाथ आदतन उसकी मुख्तसर-सी खूटे-नुमा दाढी को सहलाता रहता। वह तेज़ी से तो नही, लेकिन लम्बे डग भरता हुआ चलता था, टेक के लिए एक लम्बी पतली छडी पर थोडा झुकते हुए। दिन-भर में दो-एक बार वह मेरी ओर मुखातिब हुआ, और बिना किसी चाटुकारिता के मेरी सेवा मे लगा रहा, लेकिन अपने मालिक की देखभाल वह ऐसे करता था जैसे वह कोई छोटा बच्चा हो। दोपहर के समय असह्य गर्मी

से घबराकर जब हम छाह के लिए उतावले हो उठे, तो वह हमें अपने मधुमक्खी-उद्यान में—जो ठीक जगल के बीचोबीच था—ले गया। कालीनिच ने हमारे लिए यहा एक नन्ही-सी झोपडी के पट खोल दिये जिसके चारो तरफ सूखी और सुगधित जडी-बूटिया लटक रही थी। सूखी घास बिछाकर उसने हमें आराम से बैठा दिया और इसके बाद, अपने सिर पर जालीदार-सा एक झोला डाला, एक चाकू, छोटा-सा एक बरतन और जलती हुई एक खपची उठायी और हमारे लिए शहद का एकाध छत्ता ~~ लाने के लिए चल दिया। ताजा और स्वच्छ, पारदर्शी शहद खाने के बाद हम लोगो ने झरने का पानी पिया और मधुमक्खियो की सुस्त भनभनाहट और पत्तो की सरसराहट के बीच निद्रा देवी की गोद में खो गये।

हवा के एक हल्के झोके ने मुझे जगा दिया मैंने अपनी आखें खोली। कालीनिच पर मेरी नज़र पडी। अधखुले दरवाजे की देहली पर बैठा वह चाकू से लकडी को छील छीलकर चम्मच बनाता रहा था। मै बडी देर तक उसके चेहरे को जो मधुर और निर्मल था, मुग्ध भाव से देखता रहा। पोलुतीकिन की भी आखें खुल गयी। लेकिन हम एकदम उठ नही बैठे। इतनी दूर तक चलने और गहरी नीद के बाद, बिना हिले-डुले, सूखी घास पर पडे रहना बडा सुखद लग रहा था। हाथ-पावो और शरीर में विचित्र प्रकार की शिथिलता आ गयी थी। हमारे चेहरे गर्मी के कारण लाल हो रहे थे और आखें मधुर अलसाहट से मुदी हुई थी। आखिर हम लोग उठ खडे हुए और साझ तक के लिए फिर घूमने निकल पडे। ब्यालू के समय मैंने फिर खोर और कालीनिच की चर्चा छेड दी।

"कालीनिच भला किसान है," पोलुतीकिन ने बताया, "बडा फरमानबरदार और काम आनेवाला। लेकिन वह अपनी ज़मीन पर ढग से काश्त नहीं कर पाता। मै हमेशा उसे वहा से खीचता रहता हू। हर

रोज़ वह मेरे साथ शिकार पर जाता है . अब ख़ुद ही सोच लो कि उसकी काश्त कैसी चलती होगी।"

मैंने उससे सहमति प्रकट की, और हम सोने के लिए चल दिये।

अगले दिन पोलुतीकिन को अपने पडोसी, पिचुकोव के सम्बन्ध में किसी काम शहर जाना पड़ा। इस पडोसी पिचुकोव ने पोलुतीकिन की कुछ ज़मीन को जोत लिया था और ज़मीन के इसी हिस्से पर उसकी एक किसान औरत को कोडो से पीटा था। सो, शिकार के लिए मै अकेले ही निकल पडा, और साझ से पहले खोर के घर जा पहुचा। झोपडी की ड्योढी पर एक बूढ़े आदमी से मेरी मुलाकात हुई–गजा सिर, नाटा कद, चौडे कधे, और हट्टा-कट्टा मजबूत आदमी था। यही खोर था। मैंने बडे ध्यान से उसे देखा। उसका चेहरा सुकरात के चेहरे से मिलता-जुलता था। वैसा ही ऊचा और प्रशस्त माथा, वैसी ही छोटी छोटी आखें, वैसी ही चपटी नाक। हम दोनो साथ साथ ही झोपडी के अन्दर गये। उसी फेद्या ने थोडा दूध और रई की रोटी लाकर मुझे दी। खोर एक बेंच पर बैठ गया, और शान्त भाव से अपनी घुघराली दाढी को सहलाते हुए, मेरे साथ बाते करने लगा। ऐसा लगता था जैसे वह अपनी कद्र जानता है। उसके बोलने और चाल-ढाल मे एक थिरता थी। रह रहकर, उसकी लम्बी मूछो के बीच से दबी हसी फूट पडती।

हम लोग बोवाई, फसल और किसानो की जिन्दगी के बारे में बाते करते रहे वह हर बात में मुझसे सहमत मालूम होता था। केवल बाद मे मुझे कुछ बेतुकेपन का बोध हुआ और लगा कि मै मूर्खतापूर्ण बाते कर रहा हू. . इस तरह हमारी बातचीत कुछ अजीब ढग से चल रही थी। खोर, बडी सावधानी से बात करता और कभी कभी उसकी बाते बडी अस्पष्ट-सी रहती। हमारी बातचीत का एक नमूना देखिये।

"यह तो बताओ, खोर," मैंने उससे पूछा, "तुम अपने मालिक को कुछ देकर अपनी आज़ादी क्यो नही खरीद लेते?"

"भला, किस लिए खरीदू मैं अपनी आज़ादी? अब मैं अपने मालिक को भी जानता हू, और अपना लगान भी मुझे मालूम है . बहुत भला मालिक मिला है हमें।"

"आजाद होना हमेशा अच्छा होता है," मैंने अपना मत प्रकट किया।

संदिग्ध नज़र से खोर ने मेरी ओर देखा।

"सो तो है ही," वह बोला।

"तो? फिर क्यो नही तुम अपनी आजादी खरीद लेते?"

खोर ने सिर हिलाया।

"लेकिन, श्रीमान, आज़ादी ख़रीदने के लिए मेरे पल्ले है क्या?"

"अरे रहने दो, बुढऊ! ज्यादा बनो नही।"

"अगर खोर को आज़ाद लोगो के बीच फेंक दिया जाय," दबे स्वर में, जैसे अपने-आप से ही, वह कहता गया, "तो हर अनदाढिया खोर को मात करने लगे।"

"तो तुम भी दाढी मुडवा डालो!"

"दाढी आखिर है क्या? निरी घास! जब चाहो काट डालो।"

"तो फिर?"

"लेकिन खोर सीधा सौदागर बनेगा, और सौदागर लोग बडे मजे की जिन्दगी बिताते है, और उनके दाढी भी होती है।"

"तो क्या थोडा-बहुत व्यापार भी तुम करते हो?" मैंने उससे पूछा।

"बस थोडे मक्खन और थोडे तारकोल का व्यापार आपके लिए गाडी जोतवा दू न?"

"तुम बडे चालाक आदमी हो। अपनी जबान पर लगाम कसे रहते हो," मैंने मन ही मन कहा। फिर प्रकट रूप में बोला, "नही। गाडी नही चाहिए। कल तुम्हारे घर के पास ही शिकार खेलूगा। और अगर तुम इजाज़त दो तो रात मैं तुम्हारे पुआल-घर में ही सो रहू।"

"बड़ी खुशी से। लेकिन क्या, पुआल-घर में आप आराम से सो पायेंगे? औरतो से कहे देता हू कि आपके लिए वहा एक चादर बिछा दे और तकिया लगा दे. सुनती हो?" अपनी जगह से उठते हुए वह चिल्लाया, "इधर आओ और तुम, फेद्या, तुम भी उनके साथ चले जाओ। आप जानते ही हैं, औरते बेवकूफ होती हैं।"

पाव घटे वाद फेद्या एक लालटेन उठाये मुझे पुआल-घर मे लिवा ले गया। मैं सोधी पुआल पर पसर गया। मेरा कुत्ता पावो के पास दबक गया। फेद्या ने सलाम किया। दरवाजा चरमराया और बन्द हो गया। बहुत देर तक मेरी पलके नही झपकी। एक गाय दरवाज़े तक आयी और दो बार उसने भारी उसासे छोडी, कुत्ता भी बडे रोब से उसपर गुर्राया, एक सुअर भी चिन्ताशील आवाज़ मे किकियाता हुआ उधर से गुजरा, पास ही एक घोडा घास चवा रहा था और नथुनो को फरफरा रहा था . आखिर नीद ने मुझे आ घेरा।

सूरज निकलते ही फेद्या ने आकर मुझे जगा दिया। यह चपल लड़का मुझे पसन्द आया, और जहा तक मै देख सका, वह वृद्ध खोर का भी लाडला था। वडे मित्रतापूर्ण ढंग से, वे आपस में चोचे लडाते। वृद्ध भी मुझसे मिलने चला आया। या तो इसलिए कि मैंने उसके घर में रात वितायी थी, या किसी और कारण से, पहले दिन की बनिस्वत खोर आज निश्चय ही अधिक हार्दिकता से मेरे साथ पेश आया।

"समोवार तैयार है," मुसकराते हुए उसने मुझे सूचना दी। "चलिये, चाय पी ली जाय।"

हम लोग मेज पर आ वैठे, एक हृष्ट-पुष्ट दिखनेवाली किसान औरत, उसकी वहुओ में से एक, लोटे में दूध ले आयी। धीरे धीरे एक एक करके उसके सब वेटे भी झोपडी में जमा हो गये।

"आपके वेटे खूब हट्टे-कट्टे जवान है!" मैंने वुढऊ से कहा।

"हा," चीनी की एक छोटी-सी डली दातो से तोडते हुए उसने कहा, "ऊपर से देखने में तो यही जान पडता है कि इन्हे मुझसे और मेरी वुढिया से, कोई शिकायत नही।"

"क्या ये सब तुम्हारे साथ ही रहते है?"

"हा, खुद अपनी मर्ज़ी से इन्होने यहा रहना पसन्द किया, सो यही रहते है।"

"क्या सभी का व्याह हो चुका है?"

"सिर्फ यही एक है जिसने व्याह नही किया—पाजी कही का!" फेद्या की ओर इशारा करते हुए जो पहले की ही भाति दरवाज़े का सहारा लिये खडा था, उसने जवाव दिया, "और वास्या अभी बहुत छोटा है। उसके व्याह की अभी जल्दी नही है।"

"और व्याह मै भला करू क्यो?" फेद्या ने जवाब दिया। "मै ऐसे ही ठीक हू। किस लिए लाऊ जोरू? हाथो की खुजली उतारने के लिए, क्यो?"

"बस बस, तू ओह, मै तेरी नस नस पहचानता हू! तू चादी का छल्ला चमकाता है घर की दासियो का एक घडी पीछा नही छोडता" फिर गृह-दासियो की नकल उतारते हुए वोला, "'अरे अव तो वस करो, शरम खाओ! छोडो!' अरे मै तुझे जानता हू कि कैसा शरीफ-जादा है तू!"

"किसान औरत और भला होती किस लिए है?"

"किसान औरत—मजदूर होती है," खोर ने गम्भीर अन्दाज मे कहा। "वह किसान की नौकर होती है।"

"मजदूर को पल्ले वाधकर मै क्या करूगा?"

"वही तो। तुझ जैसे खुद तो आग से खेलेगे और दूसरो को हाथ जलाने के लिए छोड देगे। तेरे जैसे छोकरो को मै पहचानता हू।"

"तो कर दो न मेरी शादी! अव जवाव क्यो नही देते?"

"बस बस! काफी हो चुका, झक्की कही का! देखता नही, हम इन महानुभाव को भी परेशान किये हुए है। तेरी शादी तो मै करूगा ही, समझ ले और आप, श्रीमान, इसका बुरा न माने। अभी बच्चा ही है आखिर! अभी इसे कुछ अकल बटोरने का मौका नही मिला।"

फेद्या ने अपना सिर हिलाया। "खोर है घर पर?" एक सुपरिचित आवाज सुनाई दी और कालीनिच झोपडी में आ खडा हुआ। अपने हाथ में वह स्ट्राबेरियो का एक गुच्छा लिये था जिसे वह अपने मित्र खोर के लिए तोड लाया था। वृद्ध ने समूचे हृदय से उसका स्वागत किया। मैंने आश्चर्य से कालीनिच की ओर देखा। मै कबूल करता हू कि मुझे यह उम्मीद कतई नही थी कि कोई किसान इतनी कोमल भावनाओ का परिचय दे सकता है।

उस दिन हस्बमामूल चार घटो के बाद मै शिकार के लिए रवाना हुआ और अगले तीन दिन खोर के यहा ही बिताये। अपने नये मित्रो मे मेरा मन रम गया। पता नही कैसे मैंने उनका विश्वास प्राप्त किया, लेकिन वे अब बिना किसी झिझक के मुझसे बाते करते थे। मैंने बडी खुशी से उनकी बाते सुनी और उन्हे देखता रहा। दोनो मित्रो में जरा भी समानता नही थी। खोर स्थिर-चित्त, व्यवहारिक, प्रबध करने में दक्ष और समझ से काम लेनेवाला आदमी था, कालीनिच, उसके प्रतिकूल, आदर्शवादियो और सपने देखनेवालो की श्रेणी मे से था, रोमाटिकता और उछाह-उमगो का पुतला। खोर वास्तविकता को पकडना जानता था, मतलब यह कि अपना घर-बाहर बना लिया था, अपने पल्ले कुछ जमा-जथा भी कर ली थी, मालिक और दूसरे अधिकारियो को खुश रखता था। कालीनिच छाल की चप्पले पहनता था, और हर दिन के खाने की जुगार नये सिरे से करता था। खोर ने काफी बडा कुनबा पाल रखा था जो उसका हुक्म माननेवाला और सुसम्बद्ध था। कालीनिच के भी एक जमाने बीवी थी, जिससे वह डरता था, और कोई बाल-बच्चे न थे। खोर ने पोलुतीकिन

का कुछ भी नही छिपा था। कालीनिच अपने मालिक को श्रद्धा की नज़र से देखता था। खोर कालीनिच को प्यार करता था और सरक्षक की भाति उसका खयाल रखता था। कालीनिच खोर को प्यार करता था और उसका आदर करता था। खोर कम बोलता था, दबे दबे हसता था, और मन ही मन सोचता था, कालीनिच अपने को भावुकता के साथ व्यक्त करता था, हालाकि कारखाने में काम करनेवाले चपल मजदूर की भाषा जैसा उसकी भाषा में प्रवाह नही था। लेकिन कालीनिच को कुछ ऐसी सिद्धिया प्राप्त थी कि खोर भी उसकी इज़्जत करता था। वह रक्त स्रावो, दौरो, पागलपन और कीडे-मकोडो को झाड-फूककर दूर कर सकता था, उसकी मधुमक्खिया कभी गडबड नही करती थी, और वह हाथ का बडा कुशल था। खोर ने मेरे सामने ही नये खरीदे एक घोडे को अस्तबल मे ले जाने के लिए उससे अनुरोध किया। कालीनिच ने बडी गम्भीरता से उस अविश्वासी बूढे के अनुरोध का पालन लिया। कालीनिच का सबध प्रकृति से अधिक गहरा था, खोर का आदमियो और समाज से। कालीनिच बहस-मुबाहसो के झगडे में नही पडता था, आखे बद करके हर चीज में विश्वास कर लेता था। खोर का जीवन के प्रति रवैया व्यग का रूप धारण कर चुका था। उसने बहुत कुछ देखा और अनुभव किया था, और मैंने उससे बहुत कुछ सीखा। मिसाल के लिए, उसकी बातो से मुझे मालूम हुआ कि हर साल, कटाई से पहले, एक छोटी अजीब-सी गाडी देहातो में नमूदार होती है। इस गाडी में लम्बा कोट पहने एक आदमी बैठा रहता है, जो दरातिया बेचता है। वह एक दराती का एक रूबल और पचीस कोपेक – नोटो के रूप में डेढ रूबल – वसूल करता है। अगर सौदा नकद लेना हो, तो उधार लेने पर पूरे चार रूबल पर बेचता है। सभी किसान, कहने की जरूरत नही, उससे दराती लेते है, उधार में। दो या तीन हफ्तो बाद वह फिर नमूदार होता है, और पैसो के लिए तकाजा करता है। और चूकि किसान ने अभी अभी अपनी जई काटी होती है, सो वह

अदा करने की सामर्थ्य रखता है। सौदागर के साथ वह शराबखाने में जाता है और वहा कर्ज चुकता हो जाता है। कुछ जमीदारो ने मन में सोचा कि वे खुद ही नकद दाम देकर दरातिया खरीद ले और उन्ही दामो पर किसानों को उधार दें। लेकिन किसानो को इससे कुछ सतोष नही हुआ, वे निराश तक हो गये। वह मजा अब जाता रहा जो दराती को बार बार अपने हाथो में उलटते-पलटते हुए उसे टकारने तथा धातु की गूज सुनने, और शहर के चालाक व्यापारी को बीस बार यह जताने में मिलता है "समझे दोस्त इस दराती में कोई धोखा तो नही है न?"

हसियो की बिक्री मे भी यही पत्तेबाजी चलती। अन्तर केवल इतना होता है कि तब सौदे में स्त्रियो का हाथ रहता है, और वे कभी कभी व्यापारी के लिए यह जरूरी बना देती है कि वह उन्हे—बेशक उनके भले के लिए ही—पीट तक दे। लेकिन स्त्रियो को इन अधोलिखित परिस्थितियो के कारण सबसे अधिक दुर्व्यवहार का शिकार होना पडता है। कागज़ की फैक्टरियों को रद्दी माल सप्लाई करने के लिए ठेकेदार एक ख़ास किस्म के लोगो को नियुक्त करते है जो कुछ ज़िलो में 'उकाब' कहलाते है। इनका काम चिथड़े खरीदना होता है। ऐसे किसी 'उकाब' को सौदागर दो सौ रूबल के नोट देता है और यह अपने शिकार की खोज मे निकल पडता है। लेकिन उस पक्षी-श्रेष्ठ से भिन्न—जिसका उसने नाम धारण किया है—वह सीधा और बहादुरी के साथ अपने शिकार पर नही झपटता, बल्कि इससे एकदम प्रतिकूल, 'उकाब' धोखा-धडी और फरेब से काम लेता है। गाव के पास किसी झाडी की ओट में वह अपनी गाडी छोड़ देता है। योही किसी राह-चलते या निरे आवारा आदमी की भाति अहातो या पिछले दरवाज़ो पर चक्कर लगाता रहता है। उसकी मौजूदगी की गंध पाकर स्त्रिया चोरी-छिपे उससे मिलने निकल आती है। जल्दबाज़ी में सौदा तय होता है। ताम्बे के कुछ सिक्को के लिए स्त्रिया न केवल अपना प्रत्येक बेकार चिथड़ा, बल्कि अक्सर अपने पति की कमीज़ और अपना

पेटीकोट तक 'उकाब' को दे डालती है। इधर स्त्रियो ने एक और लाभप्रद तरीका सोच निकाला है—खुद अपने ही घर से चोरी करके चिथडो की भाति वे सन भी बेचने लगी है। इससे 'उकाबो' के व्यापार में और भी बढती होती है, वह और भी फैलता है। लेकिन इसका मुकाबिला करने के लिए किसान अपनी ओर से और भी चालाक हो गये है। जरा-सा भी शक होने पर, 'उकाब' के फटकने की उडती हुई अफवाह भी मिलने पर वे तुरत और तेजी के साथ हिफाजत और रोक-थाम की कार्रवाई करते है। और, सचमुच क्या यह लज्जास्पद नही है? सन बेचना मर्दों का धधा था—और वे निश्चय ही उसे बेचते—शहर में नही (क्योकि वहा उन्हे उसे खुद लादकर ले जाना पडता), बल्कि यही—उन व्यापारियो के हाथ जो उनके लिए फेरी लगाते है, और तराजू के अभाव में जो एक पूड के लिए चालीस मुट्ठी-भर सन धरवा लेते है—और यह तो आप जानते ही है कि रूसी के हाथ की मुट्ठी में क्या कुछ समा सकता है, खास तौर से उस समय जबकि वह अपनी 'पूरी सकत' से काम लेता है।

चूकि मुझे इस सबका कोई अनुभव नही था और देहात में जन्मा पला नही था, सो इस तरह के ढेर सारे वर्णन मैंने सुने। लेकिन खोर सदा अपने को वर्णन तक ही सीमित नही करता था, वह मुझसे भी बहुत-सी चीजो के बारे में सवाल करता था। यह मालूम होने पर कि मै विदेशो में घूम चुका हू, उसकी उत्सुकता जाग्रत हो उठी यो उत्सुकता में कालीनिच भी उससे कम नही था, लेकिन प्रकृति का, पहाडो और जलप्रपातो का, असाधारण इमारतो और बडे बडे नगरो का वर्णन उसे अधिक आकर्षित करता था। खोर की दिलचस्पी सरकार और शासन सबधी मसलो में थी। हर चीज को वह बडे गौर और ढग से सुनने-समझने की कोशिश करता था। "हा तो उनका वही हाल है जो हमारा, या कुछ फर्क है? बताओ न, श्रीमान, ऐसा है तो क्यो है?" जब मैं कहानी कह रहा होता तो कालीनिच के मुह से निकलता, "हे प्रभु, जैसी तेरी

इतना! जैसा तू चाहे, अरे!" खोर कुछ न कहता, लेकिन अपनी हार्दिकता भरी आँखों से निहार लेता, और कभी कभी केवल इतना ही उसके मुँह से निकलता, "नहीं, इसका तुम्हारे लिए कोई उपयोग नहीं। और यह अपनी चीज है, मेरी चीज है।"

इसकी सारी बातचीत का यहाँ मैं वर्णन नहीं कर सकता, और यह अनावश्यक भी है। लेकिन इस सारी बातचीत से एक बात का मुझे पक्का यकीन हो गया—एक ऐसी बात का जो पाठकों को पूर्व-कल्पना से निश्चय ही हो चुके होंगे—वह यह कि पीटर महान् असल में एक रूसी था—सर्वोपरि अपने सुधारों में रूसी था। अपने बल और शक्ति का रूसी इतना कायल होता है कि वह कठिन से कठिन बोझ उठाने से नहीं डरता। अतीत में वह बहुत कम दिलचस्पी लेता है और साहस के साथ आगे की ओर देखता है। जो शुभ है उसे वह पसन्द करता है, जो युक्तियुक्त है उसे वह लेकर रहता है, जहाँ से भी वह प्राप्त हो। उसकी कर्मठ सहज बुद्धि जर्मनी की वाग्मियों का उपहास करने में रस लेती है; लेकिन खोर के शब्दो में, "जर्मन विलक्षण जीव होते है," और वह उनसे थोडा-बहुत सीखने के लिए तैयार था। अपनी विशिष्ट स्थिति और व्यावहारिक स्वतत्रता की बदौलत खोर ने मुझे काफ़ी ऐसी बाते बतायी जिन्हे आसानी से नही कहलवाया जा सकता था—जैसा कि किसान कहते है—कोल्हू में पीरकर भी नही निकलवाया जा सकता। वह अपनी स्थिति को समझता था, इसमे शक नही। खोर से बाते करने के दौरान में, पहली बार, रूसी किसान की सीधी-सच्ची और समझदारी से भरी बाते सुनने का मुझे मौका मिला। उसका ज्ञान, खुद उसी के अनुसार, काफी व्यापक था; लेकिन वह पढना-लिखना नही जानता था, हालाकि कालीनिच जानता था।

"यह निखट्टू पढा-लिखा भी है," खोर ने अपनी सम्मति प्रकट की, "और उसकी मधुमक्खिया कभी जाडो में नही मरती।"

"लेकिन तुमने तो अपने बच्चो को पढना सिखाया है न?"

एक मिनट तक खोर चुप रहा। फिर बोला—

"फेद्या पढ सकता है।"

"और दूसरे?"

"दूसरे नही पढ सकते।"

"सो क्यो?"

बुढऊ ने कोई उत्तर नही दिया, और बातचीत का रुख बदल दिया। समझदार वह काफी था फिर भी उसमें अनेक पूर्वग्रह मौजूद थे। अधविश्वासी भी वह था। मिसाल के लिए, वह अपनी आत्मा की समूची गहराई से स्त्रियो से घृणा करता था, और जब प्रसन्न अवस्था में होता, उनका मजाक उडाने में कभी न चूकता। उसकी बुढिया पत्नी स्वभाव की चिडचिडी थी और दिन-भर स्टोव के चबूतरे पर पडी रहती थी। उसका झीकना और झिडकना एक क्षण के लिए न रुकता। उसके बेटे उसकी ओर ध्यान न देते, लेकिन बहुओ को वह खुदा के खौफ से सदा डराये रखती। रूसी आल्हा में सास का यह गीत बहुत ही अर्थसूचक है—"तू कैसा निखट्टू पूत है! क्या घर का पुरखा बनेगा! तू अपनी जोरू को तो पीटता नही, तू अपनी जवान जोरू को पीटता ही नही!" एक बार मैंने बहुओ का पक्ष लेने का प्रयत्न किया, और खोर के हृदय में सहानुभूति उपजानी चाही। लेकिन बडे शान्त भाव से उसने मुझे जवाब दिया—"आप क्यो मुझे इस तरह की ओछी बातो में घसीटते है औरते अपने-आप निबट लेगी कोई उन्हे छुडाने की कोशिश करता है तब मामला और तूल पकड लेता है उनके पचडे में पडकर क्यो बेकार अपने हाथ गदे किये जाय।"

कभी कभी कुढन और खीझ से भरी बुढिया तन्दूर से उतरती और गला फाडकर अहाते के कुत्ते को बाहर बुलाती—"आ! आ! कुतुआ!" फिर उसकी पतली कमर को चिमटे से धुनने लगती, या फिर ओसारे में खडी हो जाती और, खोर के शब्दो में, जो भी उधर से

गुज़रना उनपर 'भौंकने लगती', लेकिन, अपने पति से वह भय खाती थी और उसकी फटकार सुनते ही फिर अपने तन्दूर पर जा लेटती। जब कभी पोलुतीकिन का प्रसंग आता तो खोर और कालीनिच का विचित्र वाद-विवाद सुनते बनता।

"बस बस, खोर! उन्हे बीच में न घसीटो," कालीनिच कहता।

"लेकिन वह तुम्हारे लिए जूते क्यो नही खरीद देते?" खोर जवाब देता।

"अरे, जूते! जूतो को मुझे क्या करना है? मै ठहरा देहाती किसान!"

"इससे क्या? किसान तो मै भी हूं। लेकिन यह देखो!" और खोर टाग उठाकर अपने जूते दिखाता जो मानो भीमकाय हाथी के चमडे को काटकर बनाये गये हो।

"जैसे तुममें और मुझमें कोई फरक न हो!" कालीनिच जवाब देता।

"जो हो! तुम्हारी छाल की चप्पलो का पैसा तो वह दे ही सकता है। रोज़ तुम उसके साथ शिकार पर जाते हो। तुम्हे एक जोडी चप्पल तो रोज़ चाहिए।"

"छाल की चप्पलो के लिए तो वह कुछ न कुछ देते ही है।"

"हा, हा देते है। पिछले साल दस कोपेक तुम्हारे हाथ पर रख दिये थे।"

कालीनिच खीझकर मुह फेर लेता और खोर निःशब्द हसी हसता जिसमें उसकी छोटी छोटी आखें पूर्णतया विलीन हो जाती।

कालीनिच का गला अपेक्षाकृत मधुर था और वह बलालाइका* भी थोडा-बहुत बजा लेता था। खोर उसका गाना सुनते कभी न अघाता—अनायास ही उसका सिर एक ओर को झुक जाता और उदास आवाज़ में वह भी स्वर में स्वर मिलाने लगता। 'हाय, मेरी किस्मत!' वाला गीत

---

*तीन तारो वाला रूसी बाजा।

उसे विशेष प्रिय था। फेद्या अपने पिता की हसी उडाने से कभी न चूकता। कहता, "इतने उदास क्यो हो रहे हो बुढऊ!" लेकिन खोर अपना गाल हथेली पर टिकाये, आखे मूदे अपनी किस्मत को विसूरा करता लेकिन अन्य मौको पर क्रियाशीलता में उसे मात करना असम्भव था, वह हमेशा किसी न किसी काम मे व्यस्त रहता–कभी गाडी की मरम्मत करता, तो कभी बाडे को जोडता, कभी जोत की देख-सभार में लगा रहता। लेकिन स्वच्छता और सफाई का उसका स्तर कुछ बहुत ऊचा नही था, वह इसपर जोर भी नही देता था और एक बार जव मैंने उसे टोका तो जवाब मे वह वोला–"वह भी कोई घर है जो गधाये नही? आखिर कुछ तो पता चले कि यहा कोई रहता है!"

"देखो न," मैंने जवाब दिया, "कालीनिच के मधुमक्खी-उद्यान में कैसी सफाई रहती है।"

"सफाई न हो तो मधुमक्खिया वहा टिके नही, श्रीमान!" उसास छोडते हुए उसने कहा।

"अच्छा तो यह बताइये," एक दूसरे मौके पर उसने मुझसे पूछा, "क्या आपके पास अपनी जागीर है?"

"हा, है।"

"यहा से वहुत दूर है?"

"होगी कोई सौ मील।"

"आप अपनी जमीन पर ही रहते हैं, श्रीमान?"

"हा।"

"लेकिन, अगर मैं गलत नही कहता तो, आप अपनी वन्दूक को ही सबसे ज्यादा प्यार करते है।"

"हा, मुझे मानना पडता है कि वात ऐसी ही है।"

"और यही अच्छा भी है, श्रीमान! जी भरकर आउज़-पक्षियो का शिकार करो और मुखिये को बदलते रहो!"

चौथे दिन, साझ के समय पोलुतीकिन का बुलावा आ गया। बुढऊ से जुदा होते मुझे बडा दु:ख हो रहा था। कालीनिच के साथ मै गाडी में जा बैठा।

"अच्छा तो विदा, खोर! भगवान तुम्हे खुश रखे!" मैंने कहा, "विदा, फेद्या!"

"विदा, श्रीमान, विदा। हमे भूलना नही।"

हम लोग चल पडे। सूर्यास्त की पहली दमक से आसमान लाल हो रहा था।

"कल दिन बढिया रहेगा," स्वच्छ आकाश की ओर देखते हुए मैंने कहा।

"जी नही, बारिश होगी," कालीनिच ने जवाब दिया। "वहा बतखें छपछपा रही है, और घास की गध भी काफी तेज है।"

हमारी गाडी जगल मे बढ चली। कालीनिच कोचवान की सीट पर बैठा हिचकोले खाता हुआ दबे-से स्वर मे कुछ गुनगुनाता रहा, और सारा वक्त अस्तप्राय सूर्य पर आखें गाडे रहा

अगले दिन मै पोलुतीकिन के आतिथ्यपूर्ण घर से विदा हो गया।

येरमोलाई और चक्कीवाले की पत्नी

एक साझ शिकारी येरमोलाई के साथ मैं 'त्यागा'* शिकार के लिए गया। हो सकता है कि हमारे सभी पाठक यह न जानते हो कि 'त्यागा' शिकार क्या चीज है। सो मैं पहले यह बता दू।

वसन्त के दिनो में सूरज छिपने से पाव घटा पहले आप जगल में जाते है—अपनी वन्दूक साथ में लिये, लेकिन बिना कुत्ते के। जगल के छोर पर आप अपने लिए कोई एक जगह चुन लेते है, इर्द-गिर्द नजर डालते है, अपनी बन्दूक की पिस्टन जाचते और अपने साथी की ओर देखकर आखें मिचमिचाते है। पन्द्रह मिनट इस तरह गुजर जाते है। सूरज छिप चुका है, लेकिन जगल में अभी उजाला फैला है। हवा साफ और पारदर्शी है। पक्षी चहचहा और बतिया रहे है। नई घास मरकतमणि की तरह चमक रही है आप अभी रुके है। धीरे धीरे जगल के खलारो में अधेरा हो चलता है। साझ के आकाश की खूनी लाल दमक धीरे धीरे जडो और पेडो के तनो पर रेगती उत्तरोत्तर ऊपर सरकती जाती है, और निचली—अभी प्राय पत्तो से खाली—टहनियो पर से होती पेडो की स्थिर, तन्द्रिल, चोटियो पर पहुच जाती है . और अब पेडो की चोटिया अधेरी हो चली है, गुलाबी आकाश क्रमश धुधला होकर काला-नीला पड गया है। जगल की गध ज़ोर पकडती है। नम धरती और उमस की गध

---

*एक प्रकार का शिकार, जब वसन्त में नर पक्षी मादा पक्षियो को मिलने के लिए उडते हुए किसी विशेष स्थान की ओर जा रहे होते है।

वातावरण में भर जाती है। फरफराती हुई हवा पास आते न आते दम तोडने लगती है। पक्षी नीद की गोद में चले जाते है—सब एक साथ नही—वल्कि वारी वारी से, जातिवार। पहले फिन्च-पक्षी सन्नाटा खीचते हैं, कुछ मिनट वाद वार्वलर उनका अनुसरण करती हैं, और उनके बाद पीले वन्टिग चुप हो जाते हैं। जगल अधेरे की परतो के नीचे ढकता जाता है। पेड़ एकाकार होकर भीमाकार काले समूहो का रूप धारण कर लेते हैं। काले-नीले आकाश में पहले तारे सहमे से टिमटिमाने लगते हैं। सभी पक्षी सो गये हैं। केवल रेड स्टार्ट और छोटे कठफोडे अभी भी उनींदे से ची-ची कर रहे हैं   और अव तो वे भी मौन हो गये हैं। पीविट की अन्तिम गूजदार गुहार हमारे सिरो के ऊपर से घूम जाती है, कही दूर ओरियोल पक्षी की उदास पुकार सुनाई देती है और इसके साथ ही बुलबुल का पहला स्वर लहरा उठता है। प्रतीक्षा करते करते आप उकता जाते हैं, तभी सहसा—लेकिन मेरी इस बात को सिर्फ शिकारी ही समझ सकते हैं—गहरे सन्नाटे के बीच टर्र् टर्र् और घर्राटे की विचित्र आवाज और तेज़ पखो की ताल-युक्त फरफराहट सुनाई देती है, और स्नाइप-पक्षी, अपनी लम्बी चोच को वडी नफासत से झुकाये, एक काली झाडी के पीछे से सफाई के साथ वाहर उडता हुआ ऐन आपकी गोली का निशाना बनने के लिए सामने आ जाता है।

यही है 'त्यागा' शिकार।

सो मैं येरमोलाई के साथ 'त्यागा' शिकार के लिए निकला था। लेकिन, पाठक, क्षमा करे, यह जरूरी है कि पहले येरमोलाई से आपका परिचय करा दू।

कल्पना कीजिये कि पैंतालीस वर्ष का एक आदमी है—लम्बा और पतला। लम्बी पतली नाक। सकरा माथा। छोटी भूरी आखें। सुअर की भाति कड़े बालो वाला सिर और मोटे मोटे होठो पर व्यग का भाव। यह आदमी—जाडा हो, चाहे गर्मी—जर्मन काट का नानकिन का पीला कोट

पहनता था, और कमर में पटका कसे रहता था। नीली पतलून और अस्त्राखान टोपी पहने रहता जो मौज में आकर एक दीवालिया ज़मीदार ने उसे भेंट कर दी थी। उसके कमरबन्द से दो थैलिया बधी रहती थी—एक आगे की ओर, बडी दक्षता से दो भागो में कसी—बारूद और गोली के लिए। दूसरी पीछे की ओर शिकार रखने के लिए। डट्टे वह अपनी टोपी में से निकालता था जिसकी थाह का प्रत्यक्षत कोई अन्त नही मालूम होता था। शिकार वेचकर जो पैसे वह बनाता, उससे वह आसानी से कारतूस वक्स और वारूद का डिब्बा खरीद सकता था। लेकिन यह वात कभी, एक वार भी, उसके दिमाग में नही आयी, और पुराने ढग से ही वह अपनी बन्दूक को भरता रहा। उसकी दक्षता को—जिससे कि वह वारूद और कारतूसो को बिखरने या मिल जाने के खतरे से बचाता था—लोग मुग्ध भाव से देखते रह जाते। उसकी वन्दूक एक-नलीवाली थी और पथरी-चिगारी से चलती थी और बडी वेरहमी के साथ 'झटका देने' की उसे आदत पड गयी थी। नतीजा यह कि येरमोलाई का दाहिना गाल, वाए गाल की अपेक्षा हमेशा सूजा रहता था। इस वन्दूक से किस प्रकार वह कोई शिकार मारने में सफल होता था, कोई तेज़ वुद्धि आदमी भी इसका कारण नही वता सकता था—लेकिन इसमे शक नही कि उसका निशाना ठिकाने पर वैठता था। उसके पास एक शिकारी कुत्ता भी था, जिसका नाम वालेत्का था। कुत्ता क्या था, वह एक असाधारण जीव था। येरमोलाई कभी उसे खाना नही देता था। "मैं, और कुत्ते को खाना खिलाऊ?" वह तर्क करता। "अरे कुत्ता वडा चालाक जानवर होता है। अपना पेट भरने के साधन वह खूब जानता है।" और सचमुच, यद्यपि वालेत्का की अत्यन्त क्षीण काया किसी भी तटस्थ दर्शक को द्रवित कर देती फिर भी वह जीवित था और लम्बी आयुवाला था। अपनी इन दयनीय अवस्था के वावजूद, वह कभी एक वार भी गुम नही हुआ था और न ही अपने मालिक को दगा देकर छोड जाने की वात कभी उसके मन में आयी

थी। वह कभी भागता न किसी से, केवल एक बार वह दो दिन के लिए कहीं चला गया था, किसी कुतिया के साथ। लेकिन इस मुराफात से जल्दी ही उसे छुटकारा मिल गया। वालेत्का की सबसे उल्लेखनीय विशेषता थी, दुनिया की हर चीज के प्रति उसकी अविचल उदासीनता. यदि मैं इस समय एक कुत्ते का जिक्र न कर रहा होता तो मैं अवश्य कहता कि वह प्राणी विरक्त हो चुका था। अपनी छोटी दुम को नीचे दबाये वह [illegible] बैठा रहता। बीच बीच में, कभी कभी चौंक पडता और मुह सिकोड लेता, लेकिन कभी मुसकराता नही। (यह तो सर्वविदित है कि कुत्ते मुसकरा सकते है और बहुत ही प्यारा मुसकराते है।) वह बेहद बदसूरत था और जमीदार के निठल्ले नौकर-चाकर, उसकी भद्दी शक्ल पर कुंठा से उसे चिढाने का मौका कभी न चूकते यहा तक कि मार-पीट को भी वालेत्का आश्चर्यजनक वैराग्य से सहन कर लेता। बावर्चियो के लिए तो वह विशेष आमोद का साधन बन गया था। बावर्चीख़ाने की गरमाई और लार टपकानेवाली गधो से आकर्षित होकर–और यह कमजोरी केवल कुत्तो तक ही सीमित नही है–वह जैसे ही अपनी थूथनी रसोई के अधखुले दरवाज़े में घुसेडता, वे सब के सब अपना काम छोड एकदम चीख़ते-चिल्लाते तथा गालिया देते उसके पीछे पड जाते। शिकार का पीछा करने में अपनी अथक शक्ति का परिचय देकर उसने अपना गौरव बढाया था, उसकी घ्राण-शक्ति भी बहुत अच्छी थी। लेकिन, सयोगवश, यदि कभी कोई ज़ख्मी ख़रगोश उसकी पकड़ में आ जाता तो वह हरी झाडियो की ठडी छाव में येरमोलाई से काफी दूर, बडे स्वाद से उसकी आख़िरी हड्डी तक चाट जाता, और येरमोलाई उसे हर ज्ञात-अज्ञात भाषा में गालिया देता रहता।

येरमोलाई पुरानी चाल के मेरे एक पडोसी ज़मीदार के यहा बन्धक था। पुरानी चाल के ज़मीदार शिकार के चक्कर में नही पडते, घरेलू पक्षियो पर सन्तुष्ट रहना ज्यादा पसन्द करते है। केवल असाधारण मौको पर

ही—जैसे जन्म-दिवसो, नामकरण-दिवसो और चुनावो के अवसरो पर—पुरानी चाल के ज़मीदारो के बावर्ची लम्बी चोचवाले किन्ही पक्षियो को पकाने-राधने मे जुटते है और जब उत्तेजित हो उठते है, जो कि रूसियो की एक अपनी विशेषता है जिसका परिचय वे उस समय देते है जब उन्हे ठीक से मालूम नही होता कि कैसे क्या करना चाहिए—तो ऐसी अपूर्व अचार-चटनिया तैयार करते है कि मेहमान परसी हुई रिकाबियो को बस उत्सुकता और ध्यान से देखते रह जाते है, और विरले ही उन्हे चखने का साहस करते है। येरमोलाई को, अपने मालिक के आदेश पर महीने मे एक बार ग्राउज़ तथा तीतर के दो जोडे रसोई में देने पडते थे। इसके बाद चाहे जहा घूमे उसे खुली छूट थी। 'काहिल की औलाद' कहकर उसे पुकारते थे। उन्होने यह समझ लिया कि वह बिल्कुल निकम्मा आदमी है इसलिए उसकी ओर ध्यान देना छोड दिया था। कहने की ज़रूरत नही कि गोली और बारूद की, वह उसके लिए व्यवस्था नही करते थे। इस मामले मे उनका भी ठीक वह सिद्धान्त था जो येरमोलाई का अपने कुत्ते के भोजन के बारे मे था। येरमोलाई एक बहुत विचित्र किस्म का जीव था। पक्षी की भांति लापरवाह, बाते करने का काफी शौकीन, बेढब और खोया खोया-सा। पीने का वह बेहद शौकीन था, और एक लम्बे अर्से तक कभी चुपचाप नही बैठ सकता था। दाए-बाए डोलता हुआ, वह लचक कर जाता था। और इसी लचकती-डोलती चाल के साथ वह एक दिन मे पचास मील से भी ऊपर चल लेता था। अत्यन्त विभिन्न प्रकार की दुस्साहसिकताओ को वह अपने ऊपर ओढता था—दलदलो में, पेडो पर, रेतो पर या पुलो के नीचे वह यो ही रात बिता देता था। एक से अधिक बार वह हवालातो, तहखानो या मस्तियो में बद हो चुका था। कभी उसकी बन्दूक, कभी उसका कुत्ता, उसके अत्यन्त अनिवार्य कपडे तक गुम हो जाते, कभी और कभी मार खा जाता, लेकिन अन्त में—कुछ समय बाद—घर लौट आता, और अपनी बन्दूक तथा अपने कुत्ते को साथ लिये ही

हमेशा घर लौटता। कोई भी उसे खुशमिज़ाज नही कह सकता था, हालाकि उसका मस्तिष्क प्राय हमेशा एकरस रहता था। आम तौर से लोग उसे मौजी आदमी समझते थे। अगर अच्छा साथी मिल जाय तो येरमोलाई थोडी गपशप कर लेता था, खास तौर से उस समय जब साथ में पीने के लिए भी कुछ हो, लेकिन वह देर तक एक जगह टिक नही सकता था–सहसा उठकर चल देता। "अरे, अब कहा चल दिये? बाहर घुप्प अधेरा है।"–"चाप्लिनो जा रहा हू।"–"चाप्लिनो जाने की ऐसी क्या पडी है–दस मील दूर?"–"रात वही, सोफ्रोन के यहा, बिताऊगा।"–"लेकिन रात को यही रह जाओ न!"–"नही, यह नही हो सकता।" और येरमोलाई, अपने वालेत्का के साथ, अधेरी रात मे चल देता, जगल और नालो के बीच से, और ऐन मुमकिन है कि किसान सोफ्रोन अपने घर में उसे घुसने ही न दे। इतना ही नही बल्कि इस बात का भी डर रहता था कि कही वह उसके एकाध जड न दे, यह सबक सिखाने के लिए कि "भले आदमियो को नाहक परेशान करने" का फल यह होता है। लेकिन वसन्त के दिनो में गहरे पानी में मछली पकड़ने मे येरमोलाई की दक्षता की कोई बराबरी नही कर सकता था। केकडो को हाथ से पकडने, गध से शिकार का पीछा करने, लवा-पक्षियो को पास बुलाने, बाजो को साधने, और अधिकाधिक विविध स्वरो मे गानेवाली बुलबुलो को पकडने में वह अपना सानी नही रखता था एक काम वह नही कर सकता था–कुत्ते को ट्रेन नही कर सकता था। उसमें इतना धीरज नही था। उसके एक पत्नी भी थी। सप्ताह में एक बार वह उसे देखने जाता था। बेचारी एक मनहूस-सी, गिरी-पडी, छोटी-सी झोपडी मे रहती थी, और बडी मुश्किल से गुजर करती थी। अगले दिन का भरोसा नही कि कल कुछ पेट मे डालने को मिलेगा या नही। उसका भाग्य, हर पहलू से, सचमुच दयनीय था। येरमोलाई जो इतना बेफिक्र और नेकदिल मालूम होता था, पत्नी के साथ बड़ी क्रूरता और सख्ती से पेश आता था। खुद

अपने घर में वह कठोर और भयावना रूप धारण कर लेता था। वेचारी पत्नी उसे खुश करने में कोई कसर न छोडती, जव वह उसकी ओर देखता तो कापकर रह जाती, और उसके लिए वोद्का खरीदने के लिए आखिरी छदाम तक निकालकर दे देती। और जव वह शाही अन्दाज़ में स्टोव के चवूतरे पर जाकर लेटता और वीर योद्धा की भाति सो जाता तो वह, वडी कर्तव्यनिष्ठा से, उसपर अपने ओढने की भेड की खाल डाल देती। खुद मुझे भी, एक से अधिक वार, उसके चेहरे पर वर्वर क्रूरता की अप्रत्याशित झलक देखने का मौका मिल चुका था। जव वह किसी ज़ख्मी पक्षी को दातो में दवा लेता तो उसके चेहरे का भाव मुझे वडा घिनौना लगता था। लेकिन येरमोलाई अपने घर पर एक दिन से ज़्यादा कभी नही टिकता था। घर से दूर होने पर वह फिर वही 'येरमोल्का' वन जाता था। सौ मील के एटे-पेटे में वह इसी नाम से प्रसिद्ध था, और कभी कभी खुद भी वह अपने आपको इसी नाम से पुकारता था। हीन से हीन दास भी आवारगी के इस पुतले से अपने आपको श्रेष्ठ मानता—और शायद ठीक इसी कारण उसके साथ मित्रता से पेश आता था। पहले तो किसानो को उसके पीछे भागने और खरगोश की भाति उसे खुले मैदान में भगाने में वडा मज़ा आता था, लेकिन वाद में उन्होने उसे भगवान के भरोसे छोड दिया। और एक वार यह समझ लेने पर कि वह कुछ निराला है, उन्होने उसे यत्रणाए देना वद कर दिया। इतना ही नही, वे उसे रोटी देने और उसके साथ वातचीत भी करने लगे यही था वह आदमी जिसे मैंने शिकार के लिए अपना साथी वनाया, और इसी के साथ इस्ता के तटवर्ती वर्च-वृक्षो के भारी जगल की ओर 'त्यागा' शिकार के लिए मैंने प्रयाण किया।

रूस की वहुत-सी नदिया वोल्गा की भाति, एक ओर तो टेढे-मेढे चट्टानी कगारो से और दूसरी ओर समतल चरागाहो से घिरी है। इस्ता नदी भी ऐसी ही है। छोटी-सी यह नदी अत्यन्त अविश्वसनीय ढग से

तुड़ती-मुडती साप की भाति बल खाती बहती है। आधे मील का रास्ता भी वह सीधे नही बहती। कही कही तो किसी ऊचे ढलुवान की चोटी पर से, दस मील दूर तक नदी को देखा जा सकता है—उसके बाध, तालाब और पन-चक्किया, सरपत से घिरे तटवर्ती बाग और फूलो के घने उद्यान नजर आते है। इस्ता मे अनगिनत मछलिया है, खास तौर से रोच-मछलिया (गर्मियो में किसान उन्हे झाडियो के नीचे से यो ही हाथो से पकड़ लेते है)। तटवर्ती पहाडी ढलुवानो पर, जिन पर ठडे निर्मल झरनो की रेखाए खिची है, सीटी-सी बजाती छोटी छोटी टिटिहरिया फरफराती है, जगली बत्तखे तालो के बीच में डुबकिया लगाती और अपने इर्द-गिर्द सावधानी से देखती है, आगे को निकली चट्टानो के नीचे खोहो की छाव मे बगुले खडे है . करीब एक घटे तक हम लोग छिपे हुए खडे रहे, दो जोड़ी स्नाइप-पक्षियो का हमने शिकार किया, और सूर्योदय के समय चूकि हम फिर अपना भाग्य आजमाना चाहते थे ('त्यागा' शिकार सुबह तडके भी किया जा सकता है), इसलिए हम लोगो ने तय किया कि रात सबसे नजदीकवाली पन-चक्की में बितायी जाय। हम लोग जगल से बाहर आ गये और ढलुवान पर से नीचे उतरने लगे। नदी का काला-नीला जल नीचे बह रहा था। हवा धुध से भरी थी। हमने दरवाजा खटखटाया। अहाते में कुत्तो ने भौकना शुरू कर दिया।

"कौन है?" किसी ने भरभरायी और उनीदी आवाज में पूछा।

"हम शिकारी है। रात-भर के लिए ठौर-ठिकाना चाहिए।"

कोई जवाब नही।

"हम पैसे देंगे।"

"मै जाकर मालिक से पूछता हू। शि॰, ये कम्बख्त कुत्ते! जाने कहा से आ मरे!"

हम लोग कान लगाये सुनते रहे। नौकर घर के भीतर गया। फिर जल्दी ही लौटकर दरवाजे पर आया।

"नही!" उसने कहा। "मालिक ने आपको जगह देने से मुझे मना किया है।"

"सो क्यो?"

"उन्हे डर लगता है—आप लोग शिकारी है। कौन जाने, पन-चक्की को फूक डाले। ज़रूर आप लोगो के पास गोला-बारूद होगा।"

"लेकिन, यह तो बेकार की बकवास है!"

"दो साल हुए ऐसे ही हमारी पन-चक्की में आग लग गयी थी। रात को कुछ मछलिया बेचनेवाले आकर टिके और जाने कैसे उन्होने चक्की में आग लगा दी।"

"लेकिन, दोस्त मेरे, हम लोग खुले मे सो भी तो नही सकते!"

"यह आप जाने," उसने कहा और जूतो को खटखटाता हुआ चला गया।

येरमोलाई ने अनेक अशुभ भविष्यवाणियो की उसपर बौछार की और अन्त में, उसास छोडते हुए, बोला—"चलो, गाव चले।"

लेकिन गाव था दो मील दूर।

"अच्छा हो कि रात यही—खुले में—काट दें," मैंने कहा। "बडी सुहावनी रात है। पैसे देने पर पन-चक्की का मालिक थोडा पुआल दे ही देगा।"

येरमोलाई, बिना बहस किये, सहमत हो गया। हमने फिर खटखटाना शुरू किया।

"अरे! अब क्या चाहते हो?" नौकर की आवाज़ फिर सुनाई दी। "कह तो दिया कि हम जगह नही दे सकते!"

हम लोगो ने समझाकर उसे बताया कि हम क्या चाहते है। वह घर के मालिक से पूछने चला गया, और उसे साथ लिये लौटा। बगल का छोटा-सा दरवाजा चरमराया। उसी में से चक्की का मालिक प्रकट हुआ—लम्बा, पिलपिले चेहरेवाला आदमी, साड जैसी गरदन, गोल-मटोल

तोन्द, स्थूल-काय। मेरे प्रस्ताव पर वह सहमत हो गया। चक्की से सौ क़दम दूर एक छोटी-सी झोपडी थी जो चारो ओर से खुली थी। पुआल और सूखी घास ले जाकर उन्होने हमारे लिए वही डाल दी। नौकर ने नदी के निकट घास पर समोवार जमा दिया, और एडियो के बल पसरकर जोरो से उसकी नलका मे फूकने लगा। अंगारे दमक उठे और उनकी रोशनी उसके युवा चेहरे पर पडने लगी। चक्की का मालिक लपका हुआ अपनी पत्नी को जगाने गया और अन्त में आकर सुझाव दिया कि मै घर में चलकर सो सकता हू, लेकिन मैंने बाहर खुले में ही रहना पसन्द किया। चक्कीवाले की पत्नी हमारे लिए दूध, अडे, आलू और रोटी ले आयी। समोवार का पानी जल्दी ही खौल गया और हमने चाय पीना शुरू किया। नदी के ऊपर धुध छायी थी। हवा बन्द थी। कार्न-क्रैको के चिचियाने की आवाज़ चारो ओर से गूज उठी। साथ ही पन-चक्की के पहियो से पैडलो पर से गिरती बूदो की धीमी टप टप और बांध की छडो के बीच से कलकल करते पानी की आवाज आ रही थी। हमने जमीन पर एक छोटा-सा अलाव जला लिया। येरमोलाई अंगारो मे आलू भूनने लगा, और इसी बीच मेरी आखें झपक गयी। जब मेरी नीद टूटी तो पास मे ही किसी की सतर्क, दबी हुई, फुसफुसाहट की आवाज आ रही थी। मैंने अपना सिर उठाया तो देखा कि अलाव के सामने, उल्टी रखी एक नाद पर बैठी, चक्कीवाले की पत्नी मेरे शिकारी-अर्दली के साथ बतिया रही है। उसके कपडो से, उसके हाव-भाव और बोलने के ढंग से यह तो मैं पहले ही भाप चुका था कि वह घरेलू नौकरानी रह चुकी है, और यह कि न तो वह किसान औरत है, और न शहरी। लेकिन उसकी मुख-मुद्रा को पहली बार अब मैंने स्पष्टता से देखा। उसकी उम्र तीस के करीब मालूम होती थी। उसका दुबला-पतला सफेद चेहरा अब भी गज़ब की सुन्दरता के चिन्ह छिपाये था। विशेषकर उसकी आखो ने, जो बड़ी बडी और उदास थी—मुझे खास तौर से मुग्ध किया था। अपनी

"नही!" उसने कहा। "मालिक ने आपको जगह देने से मुझे मना किया है।"

"सो क्यो?"

"उन्हे डर लगता है—आप लोग शिकारी हैं। कौन जाने, पन-चक्की को फूक डाले। ज़रूर आप लोगो के पास गोला-वारूद होगा।"

"लेकिन, यह तो वेकार की वकवास है!"

"दो साल हुए ऐसे ही हमारी पन-चक्की में आग लग गयी थी। रात को कुछ मछलिया वेचनेवाले आकर टिके और जाने कैसे उन्होंने चक्की में आग लगा दी।"

"लेकिन, दोस्त मेरे, हम लोग खुले में सो भी तो नही सकते!"

"यह आप जाने," उसने कहा और जूतो को खटखटाता हुआ चला गया।

येरमोलाई ने अनेक अशुभ भविष्यवाणियो की उसपर वौछार की और अन्त में, उसास छोडते हुए, वोला—"चलो, गाव चले।"

लेकिन गाव था दो मील दूर।

"अच्छा हो कि रात यही—खुले में—काट दें," मैने कहा। "वडी सुहावनी रात है। पैसे देने पर पन-चक्की का मालिक थोडा पुआल दे ही देगा।"

येरमोलाई, विना वहस किये, सहमत हो गया। हमने फिर खटखटाना शुरू किया।

"अरे! अव क्या चाहते हो?" नौकर की आवाज़ फिर सुनाई दी। "कह तो दिया कि हम जगह नही दे सकते!"

हम लोगो ने समझाकर उसे वताया कि हम क्या चाहते हैं। वह घर के मालिक से पूछने चला गया, और उसे साथ लिये लौटा। वगल का छोटा-सा दरवाज़ा चरमराया। उसी में से चक्की का मालिक प्रकट हुआ—लम्वा, पिलपिले चेहरेवाला आदमी, साड जैसी गरदन, गोल-मटोल

नोन्द, स्थूल-काय। मेरे प्रस्ताव पर वह राहमत हो गया। चक्की से सौ कदम दूर एक छोटी-सी झोपड़ी थी जो चारों ओर से खुली थी। पुआल और सूखी घास ले जाकर उन्होंने हमारे लिए वहीं डाल दी। नौकर ने नदी के निकट घास पर समोवार जमा दिया, और एड़ियों के बल पसरकर जोरों से उसकी नलका में फूकने लगा। अगारे दमक उठे और उनकी रोशनी उसके युवा चेहरे पर पड़ने लगी। चक्की का मालिक लपका हुआ अपनी पत्नी को जगाने गया और अन्त में आकर सुझाव दिया कि मैं घर में चलकर सो सकता हूं; लेकिन मैंने बाहर खुले में ही रहना पसन्द किया। चक्कीवाले की पत्नी हमारे लिए दूध, अडे, आलू और रोटी ले आयी। समोवार का पानी जल्दी ही खौल गया और हमने चाय पीना शुरू किया। नदी के ऊपर धुध छायी थी। हवा बन्द थी। कार्न-क्रैको के चिचियाने की आवाज चारों ओर से गूज उठी। साथ ही पन-चक्की के पहियों से पैडलों पर से गिरती बूदों की धीमी टप टप और बांध की छडों के बीच से कलकल करते पानी की आवाज आ रही थी। हमने ज़मीन पर एक छोटा-सा अलाव जला लिया। येरमोलाई अंगारों मे आलू भूनने लगा, और इसी बीच मेरी आखें झपक गयी। जब मेरी नीद टूटी तो पास में ही किसी की सतर्क, दबी हुई, फुसफुसाहट की आवाज़ आ रही थी। मैंने अपना सिर उठाया तो देखा कि अलाव के सामने, उल्टी रखी एक नाद पर बैठी, चक्कीवाले की पत्नी मेरे शिकारी-अर्दली के साथ बतिया रही है। उसके कपड़ों से, उसके हाव-भाव और बोलने के ढग से यह तो मैं पहले ही भाप चुका था कि वह घरेलू नौकरानी रह चुकी है, और यह कि न तो वह किसान औरत है, और न शहरी। लेकिन उसकी मुख-मुद्रा को पहली बार अब मैंने स्पष्टता से देखा। उसकी उम्र तीस के करीब मालूम होती थी। उसका दुबला-पतला सफेद चेहरा अब भी गजब की सुन्दरता के चिन्ह छिपाये था। विशेषकर उसकी आखों ने, जो बड़ी बड़ी और उदास थी—मुझे खास तौर से मुग्ध किया था। अपनी

कोहनिया वह घुटनो पर टिकाये थी, और उसका चेहरा अपनी हथेली पर टिका था। येरमोलाई मेरी ओर पीठ किये बैठा था और अलाव में लकड़िया झोक रहा था।

"जेल्तूखिनो में ढोर-डगरो में फिर प्लेग फैल रहा है," चक्कीवाले की पत्नी कह रही थी, "पादरी इवान की दो गाए मर गयी, भगवान रहम करे हम पर।"

"तुम्हारे सुअरो का अब क्या हाल है?" कुछ रुककर येरमोलाई ने पूछा।

"जिन्दा है।"

"तब तो तुम्हे चाहिए कि सुअर का एक दूध-पीता बच्चा मुझे भेंट कर दो।"

चक्कीवाले की पत्नी कुछ देर चुप रही। फिर उसके मुह से एक उसास निकली।

"तुम्हारे साथ यह और कौन है?" उसने पूछा।

"कोस्तोमारोवो के एक सज्जन है।"

येरमोलाई ने फिर कुछ टहनिया आग में झोकी। टहनिया तुरत जल उठी और सफेद धुआ फुफकारता हुआ उसके मुह से आ टकराया।

"तुम्हारे पति ने हमें कोठरी में क्यो नही ठहरने दिया?"

"डरता है।"

"डरता है, मोटा साड डरता है। अरीना तिमोफेयेवना, 'मेरी चुन्नो-गुन्नो, गला तर करने के लिए ज़रा-सी गिलास में ढाल लाओ न।"

चक्कीवाले की पत्नी उठी और अधेरे में ओझल हो गयी। येरमोलाई दबे स्वर में गुनगुनाने लगा—

जब मै अपनी प्यारी से मिलने जाता रहा
तो मेरे सब जूते घिसकर छलनी हो गये

अरीना एक छोटी-सी सुराही और एक गिलास लिये हुए लौट आयी। येरमोलाई उठा, क्रॉस का चिन्ह बनाया, और एक ही घूट मे गट गट करके पी गया।

"अच्छी है!" उसके मुह से निकला।

चक्कीवाले की पत्नी फिर नाद पर बैठ गयी।

"हा तो अरीना तिमोफेयेवना, क्या तुम अब भी बीमार हो?"

"हा।"

"क्या तकलीफ है?"

"वही मेरी खासी रात-भर चैन नही लेने देती।"

"लगता है, यह साहब तो सो गये," थोडी खामोशी के बाद येरमोलाई ने कहा। "डाक्टर के चक्कर में न पडना अरीना, उसके चक्कर में पडी तो मुसीबत में फस जाओगी।"

"अच्छी बात है। डाक्टर के चक्कर मे नही पडूगी।"

"ऐसी भी क्या, मुझसे मिलने आया करो न!"

अरीना ने सिर लटका लिया।

"जब तुम आओगी तो मैं अपनी घरवाली को उस दिन के लिए निकाल बाहर कर दूगा," येरमोलाई कहता गया, "कसम से, जरूर निकाल दूगा।"

"अच्छा हो कि अब तुम अपने इन साहब को जगा दो, येरमोलाई पेत्रोविच। देखो न, आलू भुन गये हैं।"

"ओह, उसे खर्राटे भरने दो," मेरे फरमानबरदार सेवक ने उपेक्षा के भाव से कहा। "चल चलकर थक गया है, सो घोडे बेचकर सोया है।"

मैंने सूखी घास मे करवट बदली। येरमोलाई उठा, और मेरे पास आया।

"आलू तैयार है। ब्यालू तो करेंगे न? उठिये!"

मै झोपडी से वाहर निकला। चक्कीवाले की पत्नी नाद पर से उठी और जाने को हुई। मैने उससे कहा—

"इस चक्की को क्या तुम काफी दिनो से सभाले हो?"

"दो साल से। ट्रिनिटी-पर्व के दिन से।"

"और तुम्हारा पति कहा से आया है?"

मेरा प्रश्न अरीना ने नही सुना।

"तुम्हारा खाविन्द कहा से आया है?" अपनी आवाज़ को ऊचा करते हुए येरमोलाई ने दोहराया।

"वेलेव से। वह वेलेव नगर का रहनेवाला है।"

"और क्या तुम भी वेलेव की रहनेवाली हो?"

"नही, मै वधक हू, मै वधक थी।"

"किसकी?"

"ज्वेरकोव था मेरा मालिक। अव मै आज़ाद हू।"

"कौन ज्वेरकोव?"

"अलेक्सान्द्र सीलिच।"

"कही तुम्ही तो उसकी पत्नी की दासी नही थी?"

"हा, मै ही थी। आपने कैसे जाना?"

दुगनी उत्सुकता और सवेदना के साथ मैने अरीना पर नज़र डाली।

"मै तुम्हारे मालिक को जानता हू," मैने सिलसिला जारी रखा।

"सचमुच?" धीमी आवाज में उसने जवाब दिया, और उसने अपना सिर झुका लिया।

पाठको को यह वताना मेरा फर्ज़ है, कि अरीना की ओर इतनी सवेदना के साथ मेरी नज़र क्यो घूमी। पीटर्सबर्ग में अपने आवास के दौरान में, सयोगवश, ज्वेरकोव से मेरी जान-पहचान हो गयी थी। वह काफी प्रभावशाली व्यक्ति था तथा शिक्षित समझदार आदमी के नाते प्रसिद्ध भी था। उसकी पत्नी गोल-मटोल, भावुक,

बात बात में आंसू बहानेवाली और कुत्सा से भरी स्त्री थी—बहुत ही ओछी और अरुचिकर जीव। उसके एक लड़का भी था—आज की ऐंठ-अकड़ युवा पीढ़ी का बिल्कुल नमूना—सिरचढ़ा और मूर्ख। ज्वेरकोव के बाह्य आकार-प्रकार को देखकर उसके बारे मे प्रभाव अच्छा नही बैठता था। उसकी छोटी छोटी चूहे जैसी आखे चौड़े और करीब करीब चौरस चेहरे मे से धूर्तता के साथ झाकती जान पड़ती थी, उसकी नाक पैनी और लम्बी थी—नथुने फैले हुए। उसके बारीक छटे हुए सफेद बाल छितरी हुई भौंहो पर ब्रुश की तरह सीधे खड़े रहते, पतले होठ मीठी मुसकान लिये, हर घडी बल खाते। ज्वेरकोव की आदत थी कि वह अपनी ठिगनी टागो को चौड़ा करके और पतलून की जेबो मे छोटे-छोटे हाथो को खोसकर खड़ा होता था। एक बार वह और मै अकेले शहर से बाहर गाडी में हवा खाने निकले। कुछ बातचीत छिड गयी। अनुभव प्राप्त और पारखी आदमी की हैसियत से ज्वेरकोव ने मुझे 'सचाई की राह' दिखानी शुरू कर दी।

"मैं कहता हू कि तुम सब युवा लोग," अन्त मे उसने स्वर अलापा, "यो ही जल्दबाजी में हर चीज की आलोचना और उसके बारे में फतवे जारी कर देते हो। खुद अपने देश के बारे मे तुम्हारी जानकारी न के बराबर है। रूस तुम नौजवानो के लिए एक अनजान देश है। हा, अनजान देश दिन-रात तुम जर्मन पढते हो। मिसाल के लिए इसके, उसके और दुनिया-भर की चीजों के बारे में बाते बघारते हो। जैसे घरेलू दासो को ही लो मैं मानता हू कि यह सब बहुत अच्छा है। लेकिन तुम उन्हे नही जानते, तुम नही जानते कि वे किस ढग के लोग है।" (ज्वेरकोव ने बड़े जोरो से नाक झिडकी और एक चुटकी सुघनी सुटकी।) "अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए मैं एक छोटी-सी घटना तुम्हे बताता हू। शायद तुम्हे दिलचस्प लगे। (ज्वेरकोव ने खखारकर अपना गला साफ किया।) बेशक, तुमसे यह छिपा नही है कि मेरी पत्नी कैसी है। मेरी समझ में, यह तुम भी मानोगे कि उससे ज्यादा रहमदिल औरत

दूसरी मुश्किल से ही दिखाई देगी। उनकी सेवा करनेवाली दासियां का जीवन तो जैसे स्वर्ग का जीवन है। इस बारे मे कोई मत-भेद नही हो सकता.. लेकिन मेरी पत्नी ने नियम बना रखा है कि वह विवाहित दासियो को कभी नही रखेगी। और सचमुच, विवाहित दासियो से काम चल भी नही सकता। बच्चे हो जाते है . और भी कितनी ही बाते उठ खडी होती है। ऐसी हालत में दासी अपनी मालकिन की उतनी सेवा भला कैसे कर सकती है जितनी उसे करनी चाहिए, जितनी कि मालकिन को जरूरत होती है। उसके लिए अब ऐसा करना मुमकिन नही होता। उसका दिमाग दूसरी ही चीजो में उलझा रहता है। मानवीय प्रकृति को ध्यान में रखकर ही हमें चीजो पर नज़र डालनी चाहिए। एक बार ऐसा हुआ कि हमारी गाडी गाव में से गुजर रही थी। यही कोई आज से—ठीक—पन्द्रह साल पहले की बात होगी। कारिन्दे के यहा एक नौजवान लडकी—उसकी बेटी—हमें दिखाई दी। सचमुच वह बडी सुन्दर थी। इतना ही नही, तुम जानो, इतनी सलीकेदार कि लगा, वह एक अच्छी दासी बन सकती है। सो मेरी पत्नी ने मुझसे कहा—'कोको,'—तुम समझ गये होगे कि वह इसी दुलार के नाम से मुझे पुकारती थी—'इस लडकी को अपने साथ पीटर्सबर्ग ले चले। यह मुझे पसन्द है, कोको।' मैंने कहा—'बिल्कुल ठीक, इसे अपने साथ ले चलो।' कारिन्दे ने, कहने की ज़रूरत नही, मेरे पाव चूमे। उसे उम्मीद तक नही थी कि उसका भाग्य यू चमक उठेगा। तुम खुद सोचो . लेकिन लडकी ज़रूर बेवकूफो की तरह आसू बहाने लगी। बेशक, शुरू शुरू मे उसे भारी मालूम हुआ। मा-बाप का घर और इसी तरह की और और बाते उसमें आश्चर्य की कोई बात नही। लेकिन वह बडी जल्दी हमसे अभ्यस्त हो गयी। शुरू में हमने उसे दासियो के कमरे में रखा। उसे, कहने की ज़रूरत नही, ट्रेन किया। और जानते हो लडकी ने अद्भुत उन्नति कर दिखायी। मेरी पत्नी तो जैसे उसपर मुग्ध हो गयी, और अन्त में उसे और सबो से

ऊपर उठाकर अपनी खास दासी बना लिया ... समझे .. और न्याय का तकाज़ा मुझे मजबूर करता है कि मै कहू कि मेरी पत्नी को ऐसी दासी पहले कभी नही मिली थी। नही, नाम को भी नही। बहुत ही दत्तचित्त, विनम्र और फरमानबरदार—जो चाहिए वह सब उसमे था। मेरी पत्नी बहुत ही अच्छी तरह उसे रखती, बल्कि कहना चाहिए कि उसने उसे सिर पर चढा लिया था। वह उसे अच्छा पहनने को देती, अपनी मेज पर से उसे खाना खाने को देती, पीने के लिए उसे चाय देती आदि आदि, जैसा कि तुम खुद सोच सकते हो। हा तो दस साल तक वह इसी प्रकार मेरी पत्नी की सेवा करती रही। फिर यकायक, सुबह के सुहावने वातावरण मे—जरा कल्पना तो करो—एक दिन बिना कोई सूचना दिये अरीना—उसका नाम अरीना था—मेरे कमरे मे भागी हुई आयी और मेरे पावो पर गिर पड़ी। यही वह चीज़ है जो, यह मै बिना किसी लाग-लपेट के तुमसे कह रहा हू, मै सहन नही कर सकता। किसी भी मनुष्य को कभी भी अपनी निजी प्रतिष्ठा को आखो से ओझल नही करना चाहिए। क्यो, क्या मेरी बात ठीक नही? मैंने उससे कहा—'बोलो, क्या चाहती हो?'—'अलेक्सान्द्र सीलिच, मेरे मालिक, आप मुझपर एक मेहरबानी कीजिये।'—'क्या?'—'मुझे ब्याह करने की इजाज़त दे दीजिये।' मै कबूल करता हू कि उसकी यह बात सुनकर मै हक्का-बक्का रह गया। 'लेकिन, पगली, क्या यह नही जानती कि तेरी मालकिन के पास दूसरी कोई दासी नही है?'—'मालकिन की सेवा मै वैसे ही करती रहूगी जैसे अब तक करती आयी हू।'—'बेमतलब की बात मत करो! तेरी मालकिन ब्याही दासियो को रखना बरदाश्त नही कर सकती।'—'मलान्या मेरी जगह ले सकती है।'—'बस, बस, मुझसे ज्यादा बहस न कर।'—'जैसी मालिक की मर्जी ' मै मानता हू कि उसने मुझे एकदम स्तब्ध कर दिया था। सच मानो, मेरा स्वभाव कुछ ऐसा ही है, कोई भी चीज मेरे हृदय को उतना—यह मै दावे के साथ कह

सकता हूं—हां, उतना गहरा आघात नही पहुंचा सकती जितनी कि कृतघ्नता। तुम्हे बताने की जरूरत नही—तुम जानते ही हो—कि मेरी पत्नी कैसी है। जैसे ज़मीन पर फरिश्ता, भलाई की ज़िन्दा मिसाल। बुरे से बुरा आदमी भी उसका जी दुखाते हिचकेगा। हा तो मैंने अरीना को टाल दिया। मैंने सोचा, हो सकता है कि उसके अकल आ जाय। सच मानो, मै यह यकीन करने के लिए तैयार नही था कि कृतघ्नता जैसी कुत्सित, काली चीज़ भी किसी में हो सकती है। लेकिन, जानते हो, हुआ क्या? छ महीने के भीतर ही वह फिर वही अनुरोध लिये मेरे सामने हाज़िर हो गयी। मै स्वीकार करता हू कि इस वार ग़ुस्से में आकर मैंने उसे कमरे से बाहर निकाल दिया और उसे धमकी दी कि मै सारा किस्सा अपनी पत्नी से कह दूगा। मै भिन्ना उठा। लेकिन, इसके कुछ दिन बाद, मेरे अचरज की कल्पना करो जब मैंने देखा कि मेरी पत्नी, आखो से आसू बहाती, मेरे सामने आ मौजूद हुई। वह इतनी विचलित थी कि मै सचमुच घबरा गया। 'अरे, हुआ क्या?'—'अरीना समझो न ओह, कहते शर्म मालूम होती है।'—'असम्भव! कौन है वह आदमी?'—'पेत्रूश्का, हमारा प्यादा।' मेरे विक्षोभ का बाध अब टूट पडा। मै ऐसा ही आदमी हू। अधूरी कार्रवाई मै पसन्द नही करता। पेत्रूश्का नही, उसका भला क्या कसूर? हम उसके कोडे लगवा सकते है, लेकिन मेरी राय मे कसूर उसका नही है। अरीना ठीक, कहने-सुनने को अब और क्या रह गया है। मैंने, वेशक हुक्म दे दिया कि उसके वाल काट डाले जाय, उसे टाट के कपडे पहनाय जाय, और उसे उसके गाव में वापस भेज दिया जाय। मेरी पत्नी को एक बहुत ही बढिया दासी से हाथ धोना पडा। लेकिन और कोई चारा भी नही था। जो हो, घर में अनैतिकता को किसी प्रकार भी सहन नही किया जा सकता। अच्छा यही है कि रोगी अग को काटकर तुरत अलग कर दिया जाय। सो यह है सारा मामला। अब तुम खुद फैसला करो। तुम्हे मालूम है कि मेरी पत्नी

कैसी है .. हा, हा! बिलाशक ... एकदम फरिश्ता है! अरीना उसके मन मे बस गयी थी। और अरीना यह जानती थी। और वह इतना साहस . बोलो, अब क्या कहते हो? और कोई चारा न था। उस लडकी की कृतघ्नता का घाव एक लम्बे अर्से तक टीस देता रहा। तुम कुछ भी कहो– इन लोगो से सवेदन की, हृदय की आशा करना बेकार है। भेडिये को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ, जगल की ललक उसके हृदय से कभी नही निकलेगी। उसने मुझे एक अच्छा सबक दिया। मै तो बस तुम्हारे सामने केवल एक मिसाल रखना चाहता था . "

और व्वेरकोव ने, अपने वाक्य को पूरा किये बिना ही, अपना सिर मोड़ लिया और अपने चोगे को वदन के इर्द-गिर्द और अधिक कसते हुए, मर्द की भाति अपने भावो को प्रकट नही होने दिया जो अनायास ही उसके दिल मे उठने लगे थे।

पाठक सभवत. अब समझ गये होगे मैने क्यो सवेदनापूर्ण उत्सुकता से अरीना की ओर देखा। "चक्कीवाले से तुम्हारा व्याह हुए क्या बहुत अर्सा हुआ है?" मैने आखिर उससे पूछा।

"दो साल।"

"लेकिन यह सम्भव कैसे हुआ? क्या तुम्हारे मालिक ने विवाह करने की इजाजत दे दी थी?"

"इन्होने धन देकर मुझे मुक्त करा लिया।"

"इन्होने, किसने?"

"सावेली अलेक्सेयेविच ने।"

"यह कौन है?"

"मेरे पति।" (येरमोलाई मन ही मन मुसकरा उठा।) "मेरे मालिक ने मेरे बारे मे कभी आपसे कुछ कहा हो . क्यो?" कुछ रुककर अरीना ने पूछा।

उसके इस सवाल का मुझसे कोई जवाव नही देते वना।

"अरीना!" दूर से चक्कीवाले ने पुकारा। वह उठी और चल दी।

"इसका पति क्या भला आदमी है?" मैंने येरमोलाई से पूछा।

"ऐसा ही है।"

"इनके बाल-बच्चे भी हैं?"

"एक था। लेकिन मर गया।"

"सो कैसे? चक्कीवाले को क्या इससे प्रेम हो गया था? क्या इसे मुक्त कराने के लिए उसे ज्यादा रकम देनी पडी थी?"

"पता नही। यह पढ-लिख सकती है। इनके कारबार के लिए यह फायदे की चीज़ है। मेरा खयाल है शायद वह इसे चाहता भी था।"

"और क्या तुम इसे बहुत दिनो से जानते हो?"

"हा। मैं इसके मालिक के यहाँ जाया करता था। उनकी जागीर यहा से दूर नही है।"

"और क्या तुम प्यादे पेत्रूश्का को भी जानते हो?"

"यानी प्योत्र वासील्येविच को? बेशक, मैं उसे जानता था।"

"वह अब कहा है?"

"उसे फौज में भेज दिया गया था।"

कुछ देर हम चुप रहे।

"क्यो यह कुछ ऐसी ही मालूम होती है, जैसे बीमार हो?" अन्त में येरमोलाई से मैंने पूछा।

"होगी लेकिन, मै कहता हू, कल शिकार की मौज रहेगी। सो क्या हरज है, अब थोडा सो लिया जाय।"

जगली बत्तखो का एक दल हमारे सिरो के ऊपर से सनसनाता हुआ गुज़रा और पास ही नदी के पानी में छपाक से उनके उतरने की आवाज़ सुनाई दी। अब अधेरा पूरी तरह घिर आया था, और ठड पडने लगी थी। बुलबुल का मधुर सगीत झुरमुट में गूज उठा। पुआल में हमने अपना बदन छिपाया और सो गये।

रसभरी का झरना

अगस्त के शुरू में गर्मी इतनी तेज पडने लगती है कि बहुधा सही नही जा सकती। इस मौसम में बारह और तीन बजे के बीच, दृढ से दृढ और धुनी शिकारी भी हार मान जाता है और फरमानबरदार से फरमानबरदार कुत्ता भी अपने मालिक की 'एडिया चाटना' शुरू कर देका है—अर्थात अपनी आखो को दु खद ढग से मिचमिचाने और अपनी जीभ को जरूरत से ज्यादा बाहर लटकाये, अपने मालिक से चिपका रहता है। मालिक की झिड़कियो के जवाब मे दीनता से वह दुम हिलाता है। उसके चेहरे पर विमूढता छा जाती है। लेकिन आगे की ओर लपकने से कन्नी कतराता है। ठीक ऐसे ही एक दिन शिकार के लिए मुझे जाना पडा। जी चाहता था कि कही, कम से कम क्षण-भर के लिए, छाह में चलकर लेट लू। लेकिन मैं अपने मन को रोके था और काफी देर से उससे स घर्ष कर रहा था। मेरा कुत्ता, जो कभी हार नही मानता, काफी देर से इधर-उधर झाडियो में भटक रहा था, हालाकि वह जानता था कि उसकी इस भाग-दौड से उसकी मुराद पूरी होने की ज्यादा उम्मीद नही। लेकिन गर्मी इतनी दमघोट थी कि आखिर मैं यह सोचने के लिए मजवूर हो गया कि चेतनता और शक्ति बटोरने के लिए थोड़ा सुस्ता लिया जाय। नन्ही इस्ता नदी तक, जिससे हमारे उदार पाठक पहले ही परिचित है, जैसे-तैसे मैं पहुचा, तट के तीखे कगार से नीचे उतरा और गीले, पीतवर्ण रेत पर से होता हुआ उस झरने की दिशा मे वढा जो आस-पास के सभी क्षेत्रो में 'रसभरी के झरने' के नाम से प्रसिद्ध है। तट में एक दरार है

जो क्रमश एक छोटे किन्तु गहरे नाले के रुप में चौड़ी होती गयी है। झरना इसी दरार में से फूटता है। और उससे बीस कदम की दूरी पर झरना छलछलाता, किलकारिया भरता, नदी मे गिरता है। नाले की ढलानो पर ओक-वृक्ष खडे है, झरने के इर्द-गिर्द छोटी छोटी मखमली घास की हरियाली बिछी है, और उसके ठडे रुपहले पानी की सतह को सूरज की किरनें मुश्किल से ही कभी छू पाती है। आगे बढता मै झरने के निकट तक जा पहुचा। घास पर बर्च की लकडी का एक प्याला पडा था जिसे कोई राह-चलता किसान, लोगो के भले के लिए, छोड गया था। मैंने अपनी प्यास बुझायी, वही छाह में पसर गया, और अपने इर्द-गिर्द नजर डाली। उस खाडी में, जो नदी की ओर जाते जल-प्रवाह से बन गयी थी, और उस कारण लहरियो के चिन्ह जिसपर सदा अकित होते रहते थे, मेरी ओर पीठ किये दो वृद्ध बैठे थे। उनमें से एक जो अपेक्षाकृत मजबूत तथा लम्बे कद का था और गहरे हरे रग का साफ-सुथरा लम्बा कोट तथा एक रोएदार टोपी पहने था, मछलिया पकड रहा था। दूसरा आदमी दुबला-पतला और छोटे कद का था। वह मोटे सूती कपडे का थेगलीदार कोट पहने था और सिर से नगा था। अपने घुटनो पर कीडो से भरा एक छोटा-सा बरतन थामे था, और कभी कभी अपना हाथ उठाकर अपने छोटे-से पके बालो वाले सिर के ऊपर इस तरह ले जाता था जैसे सूरज की धूप से उसे बचाना चाहता हो। मैंने उसे जरा ध्यान से देखा और झट पहचान लिया कि अरे, यह तो स्त्योपुश्का है, शुमीखिनो का रहनेवाला। पाठक मुझे इजाजत दें कि मै उनसे उसका परिचय करा दू।

मेरे घर से कुछ मील दूर एक बडा-सा गाव है। गाव का नाम है शुमीखिनो। सन्त कोजमा और सन्त दामिआन की मानता में यहा एक पत्थर का गिरजा बना है। इस गिरजे के मुह दर मुह कभी एक बहुत बडी गढी थी जो विभिन्न नौकरो के घरो, आउट हाउसो, मरम्मतखानो, अस्तबलो और गाडीघरो, हम्माम और अस्थाई बावर्चीखानो, आगन्तुको

तथा ओवरसीयरो के लिए उपगृहो, पौधाघरो, लोगो के लिए हिण्डोलो तथा कमोवेश उपयोगी अन्य भवनो से घिरी थी। इस गढी में धनी ज़मीनदारो का एक परिवार रहता था। वे मजे से जीवन विता रहे थे कि एक सुवह, अचानक, यह सारी सम्पन्नता स्वाहा हो गयी। मालिक दूसरे घर में चले गये, और यह जगह जन-शून्य हो गयी। भीमाकार घर की भूमि को जो जलकर राख हो चुका था, साग-भाजी उगाने की जगह बना लिया गया, जहा-तहा पुरानी नीवो के अवशेषो के रूप मे ईंटो के ढूह नजर आते थे। आग की भेंट चढने से बची कड़ियो को किसी न किसी तरह जोड-तोडकर एक छोटी-सी झोपडी वना ली गयी थी। इसकी छत उन लट्ठो से डाली गयी थी जो, दस साल पहले, गौथिक शैली का एक मेहरावदार मण्डप वनाने के लिए खरीदे गये थे। माली मित्रोफान, उसकी पत्नी अक्सीन्या और उनके सात वच्चे इसमें रहते थे। मित्रोफान के लिए हुक्म था कि वह, इस जगह से कोई डेढ सौ मील दूर, अपने मालिक के दस्तरखान के लिए हरी सब्ज़ी और वाग की अन्य उपज भेजा करे। अक्सीन्या के ज़िम्मे एक तिरोल गाय की देख-भाल का काम था। यह गाय, ऊचे दाम देकर, मास्को में खरीदी गयी थी। लेकिन वह वाझ निकली, फलत जव से वह आयी थी, उसने एक वूद भी दूध नही दिया था। 'ज़मीनदार' के एकमात्र पक्षी, सलेटी रग के एक कलगीदार नर-हस की देख-भाल भी उसे ही सौंपी गयी थी। वच्चो के लिए, उनकी मासूम उम्र का खयाल करके, कोई खास काम नही नियत किया गया था। इस तथ्य ने, बिना किसी रोक-टोक के, उन्हे और भी आलसी वना दिया। दो वार, सयोगवश, इसी माली के यहा मुझे रात वितानी पडी थी, और जव कभी मैं इधर से गुज़रता था तो वह मुझे खीरे दिया करता था। यह खीरे भी अजीव थे—जाने क्या वात थी, गर्मियो तक में खूव वडे वडे, वेज़ायका और पनियल, पीले रग के और मोटे छिलकेवाले। स्त्योपुश्का को पहले-पहल वही मैंने देखा। मित्रोफान और उसके परिवार को, और

गिरजे के मुखिया वृद्ध गेरासिम को छोडकर — जो बहरा था और जिसे, पुण्य का काम समझकर, सैनिक की एक आखवाली पत्नी के साथ एक छोटे-से कमरे में जगह दे दी गयी थी — गृह-दासो में से एक भी जीव अब शुमीखिनो में नही रहा था। रहा स्त्योपुश्का, जिससे पाठको का मै परिचय कराना चाहता हू। सो उसे मानव जाति में नही गिना जा सकता, और गृह-दासो की कोटि में उसका शुमार करना तो और भी दूर की बात है।

हर आदमी का समाज में कोई न कोई स्थान होता है, कम से कम किसी न किसी प्रकार के नातो में वह गुथा होता है। प्रत्येक गृह-दास, मजदूरी न सही, कम से कम तथाकथित 'राशन' पाता है। स्त्योपुश्का के पास जीविका के कतई कोई साधन नही थे। किसी के साथ उसका कोई नाता-रिश्ता नही था। उसके अस्तित्व का किसी को कोई आभास नही था। इस आदमी का कोई अतीत तक नही था। किसी के मुह से उसका कोई किस्सा सुनने में नही आता था। मर्दुमशुमारी-खाते में भी सम्भवत कभी उसका नाम नही चढा था। बस धुधली-सी अफवाह थी कि किसी जमाने में वह किसी का अरदली रह चुका था, लेकिन वह कौन था, कहा से आया था, किस बाप का बेटा था, और किस प्रकार वह शुमीखिनो के लोगो मे आ मिला, कैसे उसे वह मोटे कपडे का लम्बा कोट हाथ लगा जिसे वह युगो-युगो से पहनता आ रहा था, कहा वह रहता था और क्या उसके जीवन का अवलम्ब था, इन सब सवालो के बारे में कोई भी कुछ नही जानता था। और सच पूछो तो इस विषय में कभी कोई दिलचस्पी भी नही लेता था। अलबत्ता दादा त्रोफीमिच ही एक ऐसे थे जिन्हे सभी गृह-दासो की चार पीढियो को उनके पुरखो की सीधी परम्परा तक का सारा हाल मालूम था। कहते है कि एक बार उन्होने, अपनी याद को टटोलते हुए, यह बताया था कि स्त्योपुश्का एक तुर्की औरत का रिश्तेदार था जिसे स्वर्गीय

मालिक – ब्रिगेडियर अलेक्सेई रोमानिच – किसी लडाई में से एक माल-गाड़ी मे लाद लाये थे। पुराने रूसी रिवाज के अनुसार पर्व-त्योहारो पर दान-दक्षिणा तथा मोथी के बडो और वोद्का की बहार होती है – ऐसे दिनों में भी स्त्योपुश्का न तो खाने की मेज़ो के निकट दिखाई देता था, और न शराब के पीपो के निकट, न तो वह मालिक को सलामी देता था, न उनका हाथ चूमता था और न ही मालिक की नजरो की छत्रछाया मे उनके स्वास्थ्य के लिए कारिन्दे के गावदुम हाथो से भरकर दिया गया जाम छलकाता था। पास से गुजरती कोई दयालु आत्मा इस बेचारे को मालपूवे का अध-खाया टुकडा अगर उसके आगे डाल देती हो तो अलग बात है। ईस्टर के दिन लोग उससे कहते "प्रभु ईसा जी उठे है" लेकिन उसकी चीकट आस्तीन ऊपर न उठती, और अपनी जेब की गहराइयो में से कोई रगीन अण्डा न निकाल पाता जो वह आखे मिचमिचाते और हाफते हुए, अपने छोटे मालिको या खुद मालकिन को भेंट कर सके। गर्मियो मे वह मुर्गीघर के पीछे एक छोटी-सी खपरैल में पडा रहता, और जाड़ो मे हम्माम की बगलवाली छोटी-सी कोठरी में। गहरे बर्फ-पाले में रात को वह पुआल-घर मे जा पडता। गृह-दास उसे देखने के आदी हो गये थे। कभी कभी वे उसे लतिया भले ही देते, लेकिन उसका हाल-चाल पूछने की बात कभी किसी के दिमाग मे न आती। और जहा तक खुद उसकी बात है, वह तो ऐसा मालूम होता था जैसे ओठ बन्द किये ही उसने जन्म लिया हो। अग्निकाण्ड के बाद इस सर्व-परित्यक्त जीव ने मित्रोफान माली की शरण ली। माली नें उसे अपने हाल पर छोड दिया। उसने उससे न तो यह कहा कि "मेरे साथ रहो", और न ही उसे वहां से खदेडकर बाहर निकाला। और वह स्त्योपुश्का माली के यहा नही, बल्कि बाग में रहता था। एकदम निःशब्द वह इधर से उधर गश्त लगाता, जब कभी छीक या खासी आती तो मुह पर हाथ अड़ा लेता, जैसे उसे छीकते या खासते कुछ डर मालूम होता हो। हर घडी वह व्यस्त रहता।

चीटी की भाति दबे-पाव, बिना कोई खटका किये, इधर से उधर टुकरता रहता। और यह सब इस लिए कि कुछ खाना हाथ लग जाय, केवल पेट में डालने के लिए कुछ मिल जाय। और सचमुच, पेट भरने के लिए अगर वह सुबह से रात तक इस तरह न भटकता, तो हमारे इस दयनीय मित्र का निश्चय ही भूख से अन्त हो गया होता। इससे दुखद और क्या होगा कि सुबह उठो तो यह भी न मालूम हो कि आज रात तक खाने को क्या होगा। बाडे की ओट में बैठकर कभी स्त्योपुश्का मूली में दात गडाता, या गाजर को चबाता, या गोभी के गदे डठलो को चीथता। कभी वह, जाने किस लिए, पानी का डोल लिये घिसटता खाखता और कराहता नज़र आता, या किसी छोटे-से बरतन के नीचे आग जलाते और अपने कोट की तलहटी में से छोटे छोटे काले टुकडे-से निकालकर वर्तन में छोडता दिखाई देता। या वह काठ के अपने छोटे-से घरौदे में खटपट करता रहता—कोई कील गाडता, रोटी रखने के लिए तख़्ता लगा रहा होता। और यह सब वह चुपचाप करता, मानो चोरी कर रहा हो। इससे पहले कि आप घूम कर देखें, वह फिर दुबक जाता। कभी कभी, यकायक, दो-चार दिन के लिए वह गायब हो जाता, लेकिन उसकी गैरहाज़िरी की ओर, कहने की आवश्यकता नही, किसी का ध्यान नही जाता था   फिर, वह अचानक दिखाई देने लगता—किसी बाडे की ओट में लुका-छिपा, टहनिया बटोरकर पतीली के नीचे आग सुलगाते हुए। छोटा-सा उसका मुह था, पीली पीली आखें, बाल भौहो तक नीचे लटके हुए, नुकीली नाक, बडे बडे पारदर्शी कान—चमगादड जैसे, और वह दाढी जो सदा, एक पखवारे से बढी मालूम होती थी। यह दाढी न घटती थी, न बढती थी। हा तो यह था वह स्त्योपुश्का जो इस्ता के तट पर एक अन्य वृद्ध के सग मुझे दिखाई दिया।

मै आगे बढा, उनसे बन्दगी-सलाम की, और उनके पास बैठ गया। स्त्योपुश्का का सगी भी मेरा परिचित निकला। मैंने उसे पहचान लिया।

वह काउण्ट प्योत्र इल्यीच क० का दास हुआ करता था—मिखाइलो नावेल्येव, उपनाम—तुमान (मतलब, कोहरा)—जो अब उन्मुक्त हो गया था। वह तपेदिक के एक मरीज, वोल्खोव के नगरवासी के साथ रहता था। यह नगरवासी एक सराय का मालिक था जिसमे मैं कई वार ठहर चुका था। ओरेल राजपथ से सफर करनेवाले युवा अफसर तथा सैलानी तबीयत के अन्य लोग (धारीदार मुलायम कम्बलो में दुबके सौदागरो को दूसरे ही काम रहते है) त्रोइत्स्कोये नामक वडे गाव से थोडी ही दूर, करीव करीव राजपथ से लगी, लकडी की एक काफी वडी दो मंजिला इमारत आज दिन भी देख सकते है। इमारत एकदम वीरान पडी है, इसकी छत टूट-फूट गयी है और खिडकियो मे तख्ते जडे है। दोपहर के समय जव उजली रुपहली धूप खिली होती है, तो इस खण्डहर से अधिक उदास किसी अन्य चीज की कल्पना नही की जा सकती। इसी जगह कभी काउण्ट प्योत्र इल्यीच रहा करता था। वह पुराने जमाने का रईस था। उसकी मेहमाननेवाजी की शोहरत थी। एक समय था जब समूचा प्रान्त उसके घर पर जमा हुआ करता था, नाच-गाने की महफिल लगती थी—और घर पर ही सिखाये गये आर्केस्ट्रा की तेज ऊची आवाज़ तथा आतिशवाजी और रोशनिया हुआ करती, लोग जी भरकर जशन मनाते थे। और, इसमे शक नही कि वृद्धा स्त्रिया जव उधर से गुजरती है तो जागीरदार की वीरान हवेली को देखकर एक से अधिक के मुह से आह निकल जाती है, पुराने दिनो और अपनी बीती हुई युवावस्था की याद उनके हृदय को मथ डालती है। काउण्ट एक लम्बे अर्से तक महफिलो का यह समा वाधते रहे और चेहरे पर सुहावनी मुसकान लिये जी-हुजूर मेहमानो के बीच कभी यहा तो कभी वहा छाये रहे। लेकिन उनकी मिल्कियत, दुर्भाग्य से, इतनी नही थी कि जीवन भर उनका साथ देती। सब कुछ नष्ट कर देने के वाद अपने लिए किसी नौकरी की खोज मे, वह पीटर्सवर्ग के लिए रवाना हुए और, अपनी कोशिशो का कोई फल

पाये बिना, किसी होटल के एक कमरे म उनकी मृत्यु हो गयी। तुमान उन्ही का एक भण्डारी था, और काउण्ट के जीवन-काल में ही उसने अपनी आजादी प्राप्त कर ली थी। करीब सत्तर वर्ष की उसकी आयु थी। सुडौल और आह्लादपूर्ण उसका चेहरा था। वह बराबर मुसकराता रहता, वैसे ही जैसे केवल कैथरीन के काल के लोग मुसकरा सकते है—एक साथ राजसी और अनुग्रह से भरी मुसकान। बोलते समय वह धीमे से अपने होठो को खोलता और धीमे से ही बद करता था, मग्न भाव से अपनी आखो को मिचमिचाता था और कुछ गुनगुनाकर बोलता था। नाक साफ करने और हुलास की चुटकी लेने का काम भी वह इत्मीनान के साथ ही करता था, इस प्रकार जैसे वह कोई भारी महत्व का काम कर रहा हो।

"हा तो मिखाइलो सावेलिच," मैंने कहना शुरू किया, "अभी तक एकाध मछली हाथ आयी या नही?"

"यह देखिये, जरा मेरी डलिया में झाकने की कृपा कीजिये। दो पर्च और पाच रोच मछलिया मैंने पकडी है.. जरा इन्हे दिखाओ तो, स्त्योपुश्का।"

स्त्योपुश्का ने डलिया मेरी ओर बढा दी।

"और कहो, स्तेपान, तुम्हारे क्या हाल-चाल है?" मैंने उससे पूछा।

"ओह ओह बुरा बहुत बुरा तो नही, हुजूर," स्तेपान ने हकलाते हुए कहा, जैसे उसकी जीभ पर कोई भारी बोझ लदा हो।

"और मित्रोफान वह तो अच्छी तरह है न?"

"अ‍ॅ हा हा, हा, मालिक।"

बेचारे ने मुह फेर लिया।

"लेकिन ज्यादा मछलिया नही फस रही," तुमान ने कहा, "बेहिसाब गर्मी है। मछलिया निढाल होकर झाडियो में दुबकी सो रही है। स्त्योपा,

काटे मे केचवा तो लगाओ। (स्त्योपुश्का ने एक कीडा बाहर निकाला, अपनी खुली हथेली पर उसे रखा, दो या तीन बार उसे ठोका, काटे मे उसे लगा दिया, उसके ऊपर थूका, और तुमान को दे दिया।) धन्यवाद, स्त्योपा और आप, मालिक, आप," मेरी ओर मुडते हुए उसने कहना जारी रखा, "आपने क्या शिकार के लिए इधर आने की किरपा की है, मालिक?"

"जो समझो।"

"ओह . और वह आपका कुत्ता है, अग्रेजी है कि जरमन?"

वृद्ध को, कभी कभी अपनी बडाई करने का शौक था। वह जैसे प्रकट करना चाहता था, "ऐसा-वैसा न समझना, मैंने भी दुनिया देखी है"।

"इसकी नसल-वसल का तो कुछ पता नही, लेकिन यो कुत्ता अच्छा है।"

"ओह और शिकारी कुत्तो से भी तो शिकार करते होगे आप?"

"हा, कुत्तो के दो झुड मेरे पास है।"

तुमान ने मुसकराकर अपना सिर हिलाया।

"ठीक ऐसा ही। एक आदमी है जो कुत्तो पर जान देता है, और दूसरा है कि किसी भाव भी उन्हे नही लेना चाहता। मेरे तो हकीर खयाल में कुत्तो से ज़रा रोब पडता है, और इस लिए उन्हे रखना भी चाहिए और सभी कुछ ढग का हो—चकाचक। घोडे भी चकाचक, शिकार हाकनेवाले भी चकाचक पूरी तरह से लैस जैसा कि उन्हे होना चाहिए, और बाकी सब भी चकाचक। स्वर्गीय काउण्ट—भगवान शाति दें उन्हें—मैं मानता हू, शिकार से कोई खास वास्ता नही रखते थे। नही, कभी नही। लेकिन फिर भी उनके पास कुत्ते थे, और साल में दो बार वह उनके साथ बाहर निकलते थे। शिकार हाकनेवाले, महीन गोटेदार लाल रग के चोगे पहने, अहाते में जमा हो जाते, और अपने सिघे बजाते।

साहिब बाहर जाने की किरपा करते, और साहिब का घोडा उनके पास ले जाया जाता। साहिब घोडे पर सवार होते, शिकार हाकनेवालो का मुखिया रकाब में उनके पाव डालता, टोपी उतारकर उन्हे सलामी झुकाता, और लगाम अपने टोप में अडाकर साहिब को भेंट करता। साहिब, किरपा कर, यो अपना चाबुक चटकारते, शिकार हाकनेवाले हाक लगाते, और वे फाटक से बाहर हो जाते। एक शिकारिया, मालिक के दो प्रिय कुत्तो को रेशमी रस्सी से थामे, काउण्ट के पीछे घोडे पर सवार है, और आप जाने, वह कुत्तो का पूरा खयाल रखता है और शिकारिया, कजाक काठी पर ऐसा तनकर बैठा है जैसे वही राजा हो, खूब लाल उसके गाल थे, और अपनी आखो को ऐसे मटकाता और ऐसे मौको पर, आप जानो, मेहमान भी मौजूद होते, मौज-मजे उडाते, मान-मर्जाद से सब कृत्य सपन्न होते ओह! वह चलती बनी, शैतान!" बातो का सिलसिला तोडते हुए अचानक अपनी डोरी को उसने खीचा।

"कहते है कि काउण्ट अपने ज़माने में काफी आज़ाद जीवन बिताते थे?"

वृद्ध ने कीडे के ऊपर थूका, और डोरी को फिर पानी में डाल दिया।

"दुनिया जानती है, वह बहुत ऊचे कुलीन थे। कहते है पीटर्सबर्ग के चोटी के आदमी उनसे मिलने आया करते। सीने पर नीले फीते लगाये वे मेज़ पर बैठते और खाना खाते। और सच, वह उनकी तबीयत खुश करना जानते थे। कभी कभी वह मुझे बुला भेजते। 'तुमान,' वह कहते, 'मुझे कल ज़िन्दा स्टर्जन मछलिया दरकार है। सो देखना, वे हाज़िर रहे। सुन लिया न?'—'हा, हुज़ूर सुन लिया।' ज़री के लम्बे कोट, बनावटी बाल, छडिया, इत्र-फुलेल, बढिया किस्म का ओडीकोलोन, सुघनी की डिबिया, बहुत बडी बडी तस्वीरे—ये सब वह खुद पेरिस से मगवाते थे। जब वह कोई दावत देते तो, बाप रे, मेरा करतार गवाह

हैं, खूब आतिशबाजियां छूटतीं, और गाड़ियों का ताता लग जाता। तोपें तक दगतीं। एकदम चालीस आदमी आर्केस्ट्रा वजाते। उन्होंने एक जर्मन वैण्डमास्टर रख छोड़ा था। लेकिन वह जर्मन था भयानक नक-चढा। वह भी उसी मेज पर मालिक के साथ वैठकर खाना खाना चाहता। सो हुजूर ने उसे चलता वताने का हुक्म जारी कर दिया। 'हमारे वाजा वजानेवाले वैण्डमास्टर के विना भी अपना काम चला सकते हैं,' उन्होने कहा। मालिक हो तो ऐसा। हा तो फिर नाच शुरू होता, और वे सुबह तक नाचते रहते, खास तौर से इकोस्साइसे मात्रादूर ओह अरे वाह! पकड़ लिया!" (वृद्ध ने डोरी खीचकर एक छोटी पर्च-मछली पानी से वाहर निकाली।) "यह लो, स्त्योपा! मालिक सोलहो आना मालिक थे, जैसा कि एक मालिक को होना चाहिए," अपनी डोरी को फिर पानी में छोडते हुए वृद्ध कहता गया, "और दिल के भी वह मेहरवान थे। कभी कभी वह घूसा भी दे वैठते, मगर इससे पहले कि आप पलटकर देखें, वे उसे भूल भी जाते। वस, उनमे एक ही वात थी—वे रखेलियो के शौकीन थे। उफ, वे रखेलिया! खुदा उन्हे माफ करे। उन्होंने ही मालिक को वरवाद भी किया। फिर भी, आप जाने, ज्यादातर नीचे दर्जे से ही वे उन्हे चुनते थे। आप सोचते होगे कि उन लौण्डियो की जरूरतें ही क्या होती होगी? ऐसा नही, सारे यूरोप मे जो भी सबसे कीमती चीजें हैं, उनमे से हर चीज़ उन्हे जरूर चाहिए। कहने को कह सकते हैं—'जैसा जिसको अच्छा लगे, क्यो न वह वैसा ही जीवन विताय! मालिक की वात मालिक जाने' लेकिन अपने को वरबाद करने की भला क्या जरूरत थी? उनकी रखेलियो में एक खास थी। अकुलीना उसका नाम था। वह अब जिन्दा नही रही—खुदा उसकी आत्मा को राहत दें। सीतोवो के एक कान्स्टेवल की लडकी थी। बाप रे, पूरी हर्राफा। काउण्ट को चपतियाने तक से नही चूकती थी! जादू कर रखा था उनपर! मेरे भतीजे को उसने फौज में भेजवा दिया। भला क्यो? इसलिए

कि उसने उसकी नयी पोशाक पर चाकलेट गिरा दी थी. और अकेले उसी के साथ उसने ऐसी हरकत नही की, फिर भी, ओह, क्या दिन थे वह!" गहरी उसास छोडते हुए अन्त में वृद्ध ने कहा। उसका सिर आगे की ओर लटक आया, और वह चुप हो गया।

"तो यह कहो कि तुम्हारे मालिक बडे सख्त थे?" कुछ चुप रहने के बाद मैंने कहना शुरू किया।

"उन दिनो का चलन ही ऐसा था, श्रीमान।" अपना सिर हिलाते हुए उसने जवाब दिया।

"मतलब कि आज यह सब कोई नही करता, क्यो?" मैंने टिप्पणी की, और उसके चेहरे पर अपनी आखें जमाये रहा।

उसने मेरी ओर देखा।

"बेशक, अब पहले से कुछ बेहतर है।" वह बुदबुदाया, और अपनी डोरी में उसने और ढील दे दी।

हम छाह में बैठे थे, लेकिन छाह में भी गर्मी के मारे दम घुटा जा रहा था। बोझिल और धुधली उमस से वातावरण भरा था। चुनचुनाते चेहरे को बेचैनी से हम ऊपर उठाते, इस उम्मीद से कि हवा के स्पर्श का कुछ अनुभव होगा, लेकिन हवा थी कहा। नीले और गहरे आकाश में सूरज तप रहा था। हमारे ठीक सामने, तट के दूसरी ओर, जई का सुनहरा खेत फैला था जिसमें, जहा-तहा, नागदौने के पौदे उग आये थे। जई की बालो में जरा भी कम्पन नही था—वे एकदम स्थिर थी। कुछ और नीचे किसी किसान का एक घोडा घुटनो तक नदी के पानी में खडा अलस भाव से अपनी गीली दुम धीरे धीरे हिला रहा था। छाते-सी छायी एक झाड़ी के नीचे, रह रहकर, एक बडी मछली तिरकर ऊपर आती, और पानी की सतह पर बुलबुले नाचने लगते, और फिर अपने पीछे हल्की लहरिया छोडती, धीरे से तलहटी में लौट जाती। झुलसी हुई घास में टिड्डे शोर मचा रहे थे। नया-पक्षी बेदम और अनमने से टिटिया रहे

[illegible] [illegible] जल्दी [illegible] गर्मी से सुस्त हम निश्चल [illegible] सुनाई दी। कोई रास्ते [illegible] पचास वर्ष की आयु के [illegible] बदन पर फतुरी और [illegible] का डंडा लिये [illegible] रास्ते के किनारे पहुंचा, [illegible] हो गया।

"[illegible]" [illegible] तुमान ने चिल्लाकर कहा। "[illegible] ?"

"[illegible] तुम भी तो मजे में हो न, मिखाइलो गावेलिच!" [illegible] हुए किसान ने कहा। "काले कोसों से [illegible] हूं।"

"भई वाह, [illegible] चले गये थे तुम?" तुमान ने उससे पूछा।

"अरे, मास्को गया था, अपने मालिक के पास।"

"क्यों, कुछ काम था क्या?"

"हा, गया था कि मुझपर कुछ इनायत कर दें।"

"किस सिलसिले में?"

"यही कि मेरा लगान घटा दें, या उसके बदले बेगार ले ले, या मुझे कोई दूसरी जमीन दे दें, या ऐसे ही कुछ और रास्ता निकाल दें। मेरा लडका मर गया है, सो अकेले पूरा नही पडता।"

"तुम्हारा लडका मर गया?"

"हा, मर गया," कुछ रुककर किसान ने कहा, "मेरा लडका मास्को में गाडी हाकने का धधा करता था। सच पूछो तो मेरे लगान को भी वही पूरा पाटता था।"

"अरे, तो क्या तुम अब लगान देते हो?"

"हा हम लगान देते है।"

"तो तुम्हारे मालिक ने क्या कहा?"

"मालिक ने क्या कहा? बाहिर निकाल दिया। कहने लगे, 'सीधे मेरे सिर पर चढे चले आये, क्यो? इन कामो के लिए कारिन्दा मौजूद है। तुम्हे पहले कारिन्दे से अर्ज करनी चाहिए   और तुम्हारे लिए दूसरी जमीन क्या मै आसमान से लाकर दूगा? तुम पर जो रकम निकलती है, पहले उसका तो भुगतान करो।' बहुत गुस्से हुआ।"

"तो फिर   तुम लौट आये?"

"हा, मै लौट आया। मुझे यह मालूम करना था कि मेरा लडका कोई अपना सामान तो नही छोड गया। लेकिन मुझे कोई सीधा जवाब नही मिला। मैने उसके मालिक से कहा, 'मै फिलीप का बाप हू।' और वह बोला, 'मै क्या जानू? और तुम्हारा लडका,' उसने कहा, 'वह कुछ नही छोड गया। उल्टे कुछ मेरे पैसे उसकी तरफ बनते थे।' सो मै वहा से भी चला आया।"

मुसकराते हुए वह इस सब का ऐसे वर्णन कर रहा था, जैसे वह किसी और के बारे में बाते कर रहा हो। लेकिन उसकी छोटी, सकुची-सिमटी आखो से आसू झाक रहे थे और उसके होठ काप रहे थे।

"तो क्या तुम अब अपने घर जा रहे हो?"

"और कहा जाऊ? बेशक, घर ही जा रहा हू। घरवाली भूखो मर रही होगी।"

"तब तो तुम   " सहसा स्त्योपुश्का के मुह से निकला, लेकिन कुछ विमूढ-सा होकर चुप हो रहा, और अपना कीड़ो वाला बरतन टटोलने लगा।

"क्या तुम कारिन्दे के पास जाओगे?" कुछ अचरज के साथ स्त्योपुश्का की ओर देखते हुए तुमान कहता गया।

"उसके पास जाकर क्या करूगा? यू भी तो बकाया सिर पर चढ़ा है। मरने से पहले साल-भर मेरा लडका बीमार पडा रहा। वह अपना लगान तक नही अदा कर पाया, लेकिन उसकी मुझे चिन्ता नही। वे मुझसे कुछ वसूल नहीं कर सकते .. हा, मेरे दोस्त चाहे, जितनी चालाकी दिखायं—मेरे पास देने को है ही क्या!" (किसान हसने लगा।) "किन्तिल्यान सेम्योनिच का सारा काइयापन "

व्लास फिर हसा।

"ओह्, भइया व्लास, जमाना बहुत बुरा आ गया है," तुमान ने सप्रयास कहा।

"बुरा! अरे नही!" (व्लास की आवाज चरचरा उठी।) "उफ, कितनी गर्मी है!" आस्तीन से अपने चेहरे को पोछते हुए उसने फिर कहा।

"तुम्हारे मालिक का क्या नाम है?" मैंने उससे पूछा।

"काउण्ट ***, वालेर्यान पेत्रोविच।"

"प्योत्र इल्यीच का लडका, वही न?"

"हां, प्योत्र इल्यीच का लडका," तुमान ने जवाब दिया, "अपने जीते-जी ही प्योत्र इल्यीच ने उन्हे व्लासवाला गाव दे दिया था।"

"उसका स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"हा, खुदा का शुक्र है," व्लास ने जवाब दिया। "एकदम लाल भभूका हो गया है। चेहरे से ऐसा लगता है जैसे उसमें गद्दिया भरी हो!"

"देखिये न, सरकार," मेरी ओर मुडते हुए तुमान ने कहना जारी रखा, "मास्को के आस-पास भले ही अच्छा हो, लेकिन यहा का तो हाल ही कुछ दूसरा है। लगान तक का जुगाड़ नही हो पाता।"

"कुल कितना लगान तुम्हारे सिर निकलता है?"

"पचानवे रूबल," व्लास बुदबुदाया।

"देखा आपने! और जमीन भी वह कितनी जरा-सी है! सब ओर तो मालिक का जगल फैला है।"

"और वह भी, कहते है, उन्होने बेच डाली है," किसान ने कहा।

"अब आप ही देखिये। स्त्योपुश्का, मुझे एक कीडा तो दो। अरे, क्या ऊघने लगे, स्त्योपुश्का?"

स्त्योपुश्का चौंक पडा। किसान हमारे पास बैठ गया। हम फिर खामोशी में डूब गये। दूसरे तट पर कोई गा रहा था, लेकिन गीत कुछ बहुत ही उदास था। बेचारे व्लास की निराशा और भी गहरी हो उठी

आध घटे बाद एक-दूसरे से विदा लेकर हम वहा से चल दिये।

ज़िले का डाक्टर

शरद् के दिन थे। शिकार से लौटते समय मैं ठड खा गया और रास्ते मे ही बीमार पड गया। सौभाग्य से बुख़ार का आक्रमण जिला-नगर की सराय मे हुआ। मैंने डाक्टर को बुला भेजा। लगभग आधे घटे वाद जिले का डाक्टर आ गया। मझोला कद, काले वाल, और क्षीण काया। पसीना लानेवाली एक टकसाली दवा उसनें मेरे लिए तजवीज की। राई का लेप करने का आदेश दिया और सूखी खखार लेते तथा दूसरी ओर देखते हुए, वडी सफाई के साथ, पाच रूबल का एक नोट उसनें अपनी आस्तीन के कफ में खिसका लिया। इसके वाद घर जानें के लिए वह उठनें को हुआ, लेकिन गया नही। जानें कैसे क्या हुआ कि वाते करने वैठ गया। बुख़ार ने मुझे निढाल कर दिया था। साफ दिखाई दे रहा था कि रात को नीद नही आयेगी। सो मैं इससे खुश हुआ कि चलो थोडा गपशप के लिए एक अच्छा साथी मिल गया। चाय आयी, और डाक्टर खुलकर बाते करनें लगा। वह सूझबूझ का आदमी था, और जोश के साथ कुछ मजाकिया अन्दाज में वह अपने को व्यक्त कर रहा था। इस दुनिया मे अजीब अजीव वाते देखने को मिलती है। कितने ही लोग होते हैं जिनके साथ रहते एक लम्वा अर्सा वीत जाता है, दोस्ती का सा सम्बन्ध भी हो जाता है, लेकिन उनके साथ एक वार भी खुलकर—अपनी आत्मा की गहराई से—वाते करने का कभी सवाल तक नहीं उठना। इसके प्रतिकूल कुछ लोग ऐसे होते है जिनसे अभी मुश्किल मे परिचय भी

नही हुआ कि आप, एकवारगी, उनके सामने—या वे आपके सामने—अपना दिल खोलकर रख देते है—जैसे आप किसी पादरी के सामने अपने सारे गुप्त भेद प्रकट कर रहे हो। कह नही सकता कि किस प्रकार मैंने अपने इस नये मित्र का विश्वास प्राप्त कर लिया—कोई भी तो ऐसी वात नही हुई, फिर भी उसने एक विचित्र घटना मुझे सुनायी। अपने उदार पाठको की जानकारी के लिए उसकी इस कहानी को मै यहा पेश करना चाहता हू और खुद डाक्टर के शब्दो में ही मैं उसे सुनाने का प्रयत्न करूगा।

"तो आप नही जानते,"—क्षीण और थरथराती-सी आवाज में (बिना कुछ मिलाये वेर्योजोव हुलास सूघने का यह एक आम नतीजा होता है) उसने कहना शुरू किया, "यहा के जज मीलोव, पावेल लुकीच से आपका कभी वास्ता नही पडा न? आप उन्हे नही जानते? लेकिन छोडो, इससे कोई फरक नही पडता।" (उसने अपना गला साफ किया और आखो को मला।) "हा तो, आप जानो, यह घटना—ठीक ठीक कहू तो—लैण्ट-पर्व के दिनो मे घटी, ठीक उन्ही दिनो जब बर्फ पिघलना शुरू होती है। मै उनके—आप जानो—अपने इन्ही जज महोदय के घर पर बैठा ताश का खेल प्रिफरेन्स खेल रहा था। हमारा यह जज बहुत ही बढिया जीव है और प्रिफरेन्स खेल का शौकीन। अचानक," (यह शब्द डाक्टर की जुबान की नोक पर थिरकता रहता था) "उन्होने मुझे वताया कि कोई नौकर आपके लिए आया है। मैंने पूछा, 'क्या चाहता है?'—'वह यह पुर्जा लाया है। हो न हो, किसी रोगी ने भेजा होगा।'—'ज़रा देखू तो, कैसा पुर्ज़ा है?' मैंने कहा। पुर्जा सचमुच ही एक रोगी ने भेजा था—ठीक—तो आप जानो—यही हमारा पेशा है, हमारा दाना-पानी है लेकिन हुआ क्या, सो सुनो पुर्ज़ा एक ठकुराइन की ओर से था, विधवा थी वह। उसने लिखा था—'मेरी लडकी दम तोड रही है। खुदा के लिए चले आओ। सवारी के

लिए गाडी साथ भेज रही हू।' यह सब तो ठीक था। लेकिन वह नगर से बीस मील दूर रहती थी। कमरे से बाहर आधी रात का घुप्प अधेरा था, और सडको की यह हालत थी कि बस कुछ न पूछिये। और चूकि वह खुद गरीब थी, इसलिए दो रूबल से अधिक पल्ले पडने की उम्मीद नही थी, हालाकि भरोसा इसका भी नही था। यह भी हो सकता था कि सन का बना कपडा और थोडा अनाज देकर ही टाल दिया जाता। यह सब होने पर भी, आप जानो कि फर्ज पहले, बाद मे कुछ और। एक इन्सान की जिन्दगी का सवाल था। प्रान्तीय कमीशन के एक परमावश्यक सदस्य काल्लियोपिन के हाथो मे मैंने अपने पत्ते थमाये, और घर लौट चला। देखा, ड्योढी के सामने एक छोटी-सी चरमर गाडी खडी है जिसमे देहाती के घोडे जुते है, पेट बढे हुए—बेहद बढे हुए—और उनके बाल नमदे की भाति चिपके हुए। और कोचवान, अदब के ख्याल से, सिर से टोपी उतारे खडा था। 'ठीक,' मैंने मन ही मन सोचा, 'यह साफ है, दोस्त, कि यह रोगी सोने की थालियो मे भोजन करनेवाले नही है' अरे, आप मुसकराते है, लेकिन मै तुमसे कहता हू, मेरे जैसे गरीब आदमी को सभी कुछ सोचना पडता है अगर कोचवान नवाब की भाति बैठता है, और अपनी टोपी को हाथ नही लगाता, यहा तक कि अपनी दाढी की ओट मे से आप पर हसता और अपने चाबुक को फटकारता है—तब आप दावे के साथ छ रूबल की उम्मीद कर सकते है। लेकिन यहा तो, मैंने देखा, रग ही कुछ दूसरा था। लेकिन, मैंने सोचा, अब और चारा भी क्या है। फर्ज पहले, बाकी बाते बाद मे। सो, एकदम जरूरी दवाइयो को मैंने बटोरा और चल पड़ा। और आप क्या विश्वास करेगे? बस, अब समझ लो कि किसी तरह वहा सही-सलामत पहुच गया। सडक क्या थी, पूरी जहन्नुम—नदी-नाले, बर्फ, जगह जगह गड्ढे और सबसे बुरा यह कि अचानक वहा का बाध टूट गया। जो हो आख़िर ठिकाने पर पहुचा। एक छोटा-सा घर था, फूस का छप्पर पडा हुआ।

खिडकियो में रोशनी थी। इसका मतलब यह कि हमारा इन्तजार था। एक वृद्धा स्त्री, एकदम पूजनीय, टोपी पहने बाहर निकली। 'उसे बचाओ,' उसने कहा, 'वह मर रही है।' मैंने कहा, 'भगवान के लिए अपने को इतना दुखी न करो। यह बताओ, रोगी है कहा?'—'इधर आइये।' एक छोटे-से साफ-सुथरे कमरे मे मै पहुचा। एक कोने मे दिया जल रहा था। विस्तरे पर बीस-एक वर्ष की एक लडकी पडी थी, अचेत। तवे की तरह गर्म, सास भारी—बुखार था। अन्य दो लडकिया भी थी—उसकी बहनें—भयभीत और आखो में आसू भरे खडी थी। 'कल,' उन्होनें मुझे बताया, 'यह बिलकुल ठीक थी। जी भरकर इसने खाना खाया। आज सुबह सिर दर्द की शिकायत की और साझ को, अचानक, यह हालत हो गयी।' मैंने फिर कहा, 'मेहरबानी करके परेशान न होइये।' आप जानो, डाक्टर का यह भी तो एक फर्ज है। और मै उसके पास पहुचा, उसका खून निकाला, राई का लेप करने के लिए उनसे कहा और एक मिक्सचर उसके लिए तजवीज किया। इस बीच, आप जानो, मैंने उसे देखा, देखता रहा। ओ, मेरे भगवान! ऐसा चेहरा मैंने पहले कभी नही देखा था! एक शब्द मे—वह प्रतिमा थी, सौन्दर्य की प्रतिमा! दया से मेरा हृदय भर उठा। काफी जोरो से हिल उठा। इतनी प्यारी आकृति! और उसकी आखें लेकिन, शुक्र खुदा का, उसका जी कुछ हल्का होता मालूम हुआ। उसे पसीना आया, सुध-बुध चेती, उसने इर्द-गिर्द नजर डाली, मुसकरायी और चेहरे पर अपना हाथ फेरा उसकी बहने उसके विस्तरे पर झुक आयी। उन्होने पूछा, 'क्या हुआ?'—'कुछ नही,' उसने कहा और अपना मुह फेर लिया। मैंने उसकी ओर देखा। अब वह सो गयी थी। मैंने कहा, 'अब आप लोग रोगी के पास से हट जाइये।' सो हम सब दबे पाव बाहर आ गये। केवल एक दासी वहा रह गयी—शायद कोई जरूरत पड जाय। बैठक में, मेज पर, समोवार मौजूद था, और रम की एक बोतल। हमारे धधे में इसके बिना काम नही चलता। उन्होने

मुझे आग दी, कहने लगा कि रात को यही रुक जाइये। मैने मान लिया। और, सच पूछो तो, रात को उस रात मै जाता भी तो कहा? वृद्धा और बार बार कहती, 'जाने क्या हुआ है?' मै कहता, 'चिन्ता न करो, कुछ नही होगा। रात के दो बज रहे है, अच्छा हो कि तुम अब जाकर आराम कर लो।'—'लेकिन अगर कुछ ऐसा-वैसा हुआ तो किसी को भेजकर तुम मुझे जगवा लोगे न?'—'हा, हा, जगवा लूगा।' वृद्धा चली गयी, और लडकिया भी अपने अपने कमरो मे चली गयी। मेरे लिए उन्होने बैठक मे बिस्तर लगवा दिया था। हा तो मै भी अपने बिस्तरे पर पड़ गया, लेकिन मेरी आख नही लगी—अजीब बात है! यो, सच पूछो तो, मै बहुत थका था। चाहने पर भी मै रोगी को अपने दिमाग से नही निकाल सका। आखिर मुझसे नही रहा गया। मै अचानक उठ खडा हुआ। मैने मन मे सोचा, 'चलकर देखना चाहिए, कि रोगी का क्या हाल है।' उसका सोने का कमरा बैठक की बगल मे ही था। हा तो मै उठा और आहिस्ता से मैने दरवाजा खोला—ओह, मेरा हृदय किस तरह धडक रहा था। मैने झाककर भीतर देखा। दासी सो गयी थी। उसका मुह खुला था, यहा तक कि कम्बख्त खर्राटे भी ले रही थी। लेकिन रोगिणी मेरी ओर मुह किये पडी थी। उसकी बाहे दोनो ओर फेकी हुई थी। बेचारी! मै उसके पास गया तभी सहसा उसकी आखे खुली और वह मेरी ओर ताकने लगी। 'कौन है? कौन है?' मै सकपका-सा गया। 'डरो नही,' मैने कहा, 'मै डाक्टर हू। देखने आया था कि अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?'—'आप डाक्टर है?'—'हा, डाक्टर। तुम्हारी मा ने आदमी भेजकर मुझे शहर से बुलाया था। हमने तुम्हारे बदन से खून निकाला है। सो कृपा कर अब सो जाओ और एक या दो दिन मे ही—ईश्वर की दया से—तुम फिर राज़ी-बाजी हो जाओगी।'—'ओह, डाक्टर, मुझे मरने नही दो मुझे बचाओ, दया करके मुझे बचाओ।'—'अरे, भगवान तुम्हे जिन्दा रखें, ऐसी बाते क्यो कहती हो?

पर मैंने मन में सोचा कि उसे फिर बुखार हो आया है, और उसकी नब्ज देखी। हा, उसे बुखार था। उसने मेरी ओर देखा, और फिर मेरा हाथ थामते हुए बोली, 'मै तुम्हे बताती हू कि मै क्यो मरना नही चाहती, लो मै तुम्हे बताती हू अब हम अकेले है, बस इतना है कि कृपा कर किसी से हा, किसी से भी नही तो सुनिये ' मै नीचे की ओर झुक गया। वह अपने होठ एकदम मेरे कान के पास ले आयी। उसके बाल मेरे गाल का स्पर्श करने लगे। मानिये, मेरा सिर घूम गया। और उसने फुसफुसाना शुरू किया मै कुछ भी नही समझ सका ओह, उसे सरसाम हो गया था वह बराबर फुसफुसाती रही, फुसफुसाती रही, बहुत तेजी से। लगता था जैसे वह रूसी भाषा नही बोल रही है। आखिर उसका फुसफुसाना बन्द हुआ, और कापते हुए उसने अपना सिर तकिए पर रख दिया। फिर ताडने के अन्दाज में मुझे अपनी उगली दिखायी, 'याद रखना डाक्टर, किसी को भी कुछ मालूम न हो।' जैसे-तैसे मैंने उसे शान्त किया, पीने के लिए उसे कुछ दिया, दासी को जगाया। फिर मै वहा से चला आया।"

इतना कहने के बाद डाक्टर ने, खिन्न आवेश के साथ, फिर हुलास की चुटकी ली, और क्षण-भर के लिए चुप तथा निश्चल हो रहा।

"जो भी हो," उसने फिर कहना शुरू किया, "अगले दिन, मेरी आशाओ के प्रतिकूल, रोगिणी की हालत कुछ बेहतर नही थी। मै सोचता रहा, और अचानक मैंने वहा रहने का निश्चय कर लिया, हालाकि मेरे दूसरे रोगी मेरा इन्तजार कर रहे थे और, आप जानो, यह ऐसी चीज नही जिसकी उपेक्षा की जा सके। ऐसा करने से प्रेक्टिस को नुकसान पहुचता है। लेकिन, सबसे पहली बात तो यह कि रोगिणी की हालत सचमुच खतरनाक थी, और दूसरी—सच पूछो तो—यह कि मै उसकी ओर एक गहरे खिचाव का अनुभव करने लगा था। इसके अलावा, उस समूचे परिवार ने मुझे मोह लिया था। हालाकि उनकी हालत सचमुच खराब

थी, लेकिन मैं कह सकता हू कि वे, अद्भुत रूप से, शिष्ट लोग थे उनका पिता एक विद्वान आदमी था, ग्रथकार। कहने की आवश्यकता नही कि वह गरीबी मे मरा था। लेकिन मरने से पहले उसने अपने बच्चो को बडी अच्छी तालीम देने का प्रबन्ध किया था, और अपने पीछे बहुत-सी पुस्तके भी वह छोड गया था। या तो इसलिए कि मैं रोगिणी की देख-भाल बडे ध्यान से करता था, या और किसी वजह से—जो भी हो—मैं यह कहने का साहस कर सकता हू कि समूचा घर मुझे इस तरह चाहता था जैसे मैं भी उनके परिवार का एक सदस्य हू। रास्तो की हालत इस बीच और भी बदतर हो गयी थी। सारा यातायात, जैसा कि कहते हैं, पूर्णतया कट गया था। शहर से दवाइया तक बडी मुश्किल से आ पाती थी। रोगी लडकी की हालत सभलने मे नही आ रही थी। दिन के बाद दिन बीत रहे थे, एक एक करके लेकिन. यहा " (क्षण-भर के लिए डाक्टर रुक गया) "सच, मेरी समझ मे नही आता कि आपसे कैसे कहू " (उसने फिर हुलास की चुटकी ली, खखारा और थोडी चाय गले के नीचे उतारी।) "तो सुनो, बिना इधर-उधर की बाते बनाये दो टूक मैं बताता हू ओह, कैसे कहू! हा तो यह कि वह मुझसे प्रेम करने लगी थी या नही, वह मुझसे प्रेम नही करने लगी थी, बल्कि सच, समझ में नही आता कि कैसे कहा जाय?" (डाक्टर ने नीचे नज़र की और उसके चेहरे पर लाली दौड गयी।) "नही," उसने जल्दी जल्दी कहना शुरू किया, "प्रेम करने लगी, वाह! इन्सान को अपने बारे मे मुगालते मे नही पडना चाहिए। वह एक सुशिक्षित लडकी थी, चतुर और काफी पढी-लिखी। उधर मैं था कि, अगर सच पूछो तो, अपनी लेटिन भी पूरी तरह भूल चुका था। और जहा तक शक्ल-सूरत का सवाल है," (डाक्टर ने मुसकराते हुए अपने ऊपर एक नज़र डाली) "इस मामले मे भी मैं कोई गर्व नही कर सकता। लेकिन उन सर्वशक्तिमान ने इतनी कृपा जरूर की हैं कि मुझे मूर्ख नही बनाया। ––

सफेद में मै भेद कर सकता हू, दुनिया का भी मुझे थोडा-बहुत तजुर्बा है। मिसाल के लिए मै साफ देख सकता था कि अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना—यही उसका नाम था—मेरे लिए प्रेम का अनुभव नही करती, बल्कि मेरे प्रति उसका एक—जैसा कि कहते है—मित्रतापूर्ण झुकाव था—आदर का, या ऐसा ही कोई और भाव। हालाकि अपने इस भाव को वह खुद भी गलती से कुछ और समझ बैठी थी। जो हो, जैसी भी उसकी स्थिति थी, खुद आप अब उसका अन्दाज लगा ले। लेकिन," डाक्टर ने इन सब असम्बद्ध वाक्यो को एक सास में और प्रत्यक्ष अचकचाहट के साथ कहकर अन्त में जोडा, "लगता है जैसे मै कुछ बहक गया इस तरह आपकी समझ में भला क्या आयेगा सो अगर आप इजाज़त दें तो एक सिलसिले से यह सब मै आपको बताऊ।"

उसने चाय का एक गिलास पिया, और स्थिर आवाज में कहना शुरू किया।

"हा तो सुनिये। मेरी रोगिणी की हालत बिगडती गयी। आप डाक्टर नही है, महाशय, सो आप नही समझ सकते कि डाक्टर के हृदय पर क्या बीतती है, खास तौर से शुरू शुरू में—उस समय जब उसके दिमाग मे यह खटकना शुरू हो जाता है कि रोग पर उसका काबू नही पड रहा है। अपने में उसके विश्वास की क्या हालत होती है? एक भीरुता अचानक उसे दबोच लेती है। ओह, शब्दो में बयान नही किया जा सकता। ज़रा कल्पना कीजिये कि जो भी आप जानते थे वह सब कुछ भूल गये है, और यह कि रोगी का आपके ऊपर से विश्वास हट रहा है, और अन्य लोगों से भी यह छिपा नही रहता कि आप कितने अनमने हो गये है। अनमने भाव से रोग के लक्षण बताते है, और फुसफुसाते हुए सन्देह की नज़र से वे आपकी ओर देखते है ओह, कितना भयानक है यह! आप सोचते है इस रोग की निश्चय ही कोई न कोई दवा होगी। काश कि उसका पता लग सकता! क्या यही वह दवा नही है? आप

उसका प्रयोग करते है—नही, यह वह नही है। आप दवा को इतना समय भी नही देते कि वह अपना असर दिखा सके। पहले आप एक दवा की ओर लपकते है, फिर दूसरी दवा की ओर। कभी कभी डाक्टरी नुस्खो की पोथी खोलकर बैठ जाते है। यही है वह—आप सोचते है। कभी कभी, सच, आप यो ही अटकलपच्चू कोई दवा चुन लेते है, एकदम भाग्य के भरोसे और इस बीच एक इनसान मौत के मुह मे जा रहा है। हो सकता है कि दूसरा डाक्टर उसे बचा सके। 'सलाह-मशविरा होना चाहिए,' आप कहते है, 'मै अपने ऊपर जिम्मेदारी नही लेता।' और जब ऐसा होता है तो आप कितने मूर्ख मालूम होते है! लेकिन, धीरे धीरे आप यह सब सहन करना सीख जाते है। इन सब बातो का तब आप पर कोई असर नही होता। एक इन्सान मर गया—लेकिन इसमे आपका क्या कसूर। नियमो के अनुसार ही तो आपने उसका इलाज किया। लेकिन इससे ज्यादा दु ख होता है आपको उस समय जब आप रोगी को अपने ऊपर पूरा पूरा विश्वास करते देखते है, और अपने-आप को कुछ भी कर सकने मे असमर्थ महसूस करते है। हा तो, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना के समूचे घर का मुझमें ठीक ऐसा ही गहरा विश्वास था। वे यह सोचना तक भूल गये थे कि उनकी लडकी की जान खतरे मे है। मै भी, अपनी ओर से, उन्हे विश्वास दिलाता था कि डरने की कोई बात नही। लेकिन असल मे मेरा हृदय बैठा जा रहा था। मुसीबत यह कि लडकी की हालत बेहद खराब थी। दवाइया लाने में कोचवान का सारा दिन बीत जाता। और मै क्षण-भर के लिए भी रोगिणी का कमरा न छोडता। कोशिश करने पर भी मै वहा से न हट पाता। आप जानो, मै उसे दिलचस्प कहानिया सुनाता। उसके साथ ताश खेलता। रात को मै उनकी निगरानी करता। वृद्धा मा आंखो में आसू भरे मुझे धन्यवाद देती। लेकिन मै मन मे सोचता—'मै तुम्हारी कृतज्ञता का योग्य पात्र नही'। सच, मै आप से खुलकर स्वीकार करता हू—और अब उसे छिपाने में कोई तुक भी

नही – कि मैं अपनी रोगिणी से प्रेम करता था। और अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना मुझे चाहने लगी थी। कभी कभी तो सिवा मेरे वह और किसी को कमरे में पाव भी न रखने देती। अब वह मुझसे वाते करती थी, सवाल पूछती थी – मैंने कहा शिक्षा प्राप्त की, कैसे रहता हू, घर पर कौन कौन है, किन किन से मिलता-जुलता हू। मैं जानता था कि उसे वाते नही करनी चाहिए, लेकिन उसपर रोक लगाना – आप जानो, कडाई के साथ – रोक लगाना – यह मेरे वूते के वाहर था। कभी कभी मैं अपना सिर हाथो में थाम लेता, और अपने-आप से कहता, 'यह तू क्या कर रहा है शैतान?' और वह मेरा हाथ अपने हाथ में ले लेती, देर तक इकटक मेरी ओर देखती रहती, और फिर मुह फेर लेती, एक उसास छोडती, और कहती, 'आप कितने भले है!' वुखार से तपते उसके हाथ, और इतनी वडी रसीली, उसकी आखें 'सच,' वह कहती, 'आप वहुत अच्छे आदमी है। आप हमारे पडोसियो जैसे नही है। नही, आप वैसे नही है। ओह, पहले आपसे मेरी जान-पहचान क्यो नही हुई?' – 'अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना,' मै कहता, 'जी छोटा न करो। मुझे लगता है, यकीन मानो मैंने क्या कुछ पा लिया है लेकिन देखो, तुम अपना जी छोटा न करो। सव ठीक हो जायेगा। तुम फिर अच्छी हो जाओगी।' यहा आपको एक वात और वता दू," आगे की ओर झुकते तथा अपनी भौहो को चढाते हुए डाक्टर कहता गया, "वह यह कि वे अपने पडोसियो से वहुत ही कम मिलते-जुलते थे। कारण, छोटे लोग उनके स्तर के नही थे, और धनी लोगो से मित्रता करने में उनका गर्व वाधक होता था। सच, उनका परिवार असाधारण रूप में शिष्ट और सुसस्कृत था। सो, आप जानो, मेरे लिए यह एक वडे सन्तोप की वात थी। वह केवल मेरे हाथो में ही दवा लेने को राज़ी होती। वह, वेचारी, मेरी मदद से थोडा उठती, दवा लेती, और मेरी ओर ताकती रहती लगता जैसे मेरा हृदय फटकर वाहर आ जायेगा, और उसकी हालत यह कि इस

बीच, बराबर, बद से बदतर होती जा रही थी। नही बचेगी—मैं मन मे सोचता। नही बच सकेगी। सच मानो, अगर मेरा बस चलता तो मैं उसके मरने से पहले खुद कब्र मे समा जाता। उसकी मा और बहने थी कि मुझे ताकती रहती, मेरी आखो में आखे डालकर देखती रहती और मुझमे उनका विश्वास क्षीण पडता जा रहा था। 'कैसी है वह अब?' —'ठीक है, सब ठीक है!' सब ठीक है, वाह! मेरा दिमाग मेरा साथ छोड रहा था। एक रात मै अपनी रोगिणी के पास बैठा था। कमरे मे और कोई नही था। दासी थी, लेकिन वह पूरे जोरो के साथ खर्राटे भर रही थी। और इसमे उस बेचारी का क्या दोष। वह भी थककर चूर हो चुकी थी। अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना सारी साझ बहुत बेचैन रही, काफी तेज बुखार था। आधीरात तक वह छटपटाती रही। आखिर लगा जैसे उसे झपकी आ गयी हो। कम से कम वह अब छटपटा नही रही थी, स्थिर पडी थी। कोने मे, देव-प्रतिमा के सामने, एक दिया टिमटिमा रहा था। और मैं, आप जानो, सिर लटकाये वहा बैठा था। मुझे भी कुछ झपकी-सी आ गयी। सहसा मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे बगल में स्पर्श किया हो। मैं घूमा बाप रे, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना, इकटक, मेरी ओर देख रही थी! उसके होठ खुले थे, उसके गाल तमतमा रहे थे। 'क्यो, क्या है?'—'डाक्टर, मै अब मर जाऊगी न?'—'भगवान दया करेंगे।'—'नही, डाक्टर नही, यह मत कहो कि मैं नही मरूगी न, यह न कहो अगर आप जानते सुनो, ईश्वर के लिए मेरी असली हालत मुझसे न छिपाओ!' उसकी सास की गति बहुत तेज हो चली, 'अगर मुझे यह पक्का यकीन हो जाय कि मौत अब टल नही सकती तो . तो मैं सब कुछ तुम्हे बता सकती हू, सब कुछ!'—'नही, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना, मैं तुमसे विनती करता हू।'—'सुनिये। मैं सो नही रही थी। मै बराबर, काफी देर से, आपको देख रही थी। ओह, ईश्वर के लिए . मुझे आप पर विश्वास है। आप एक भले और ईमानदार

आदमी है। मै आपसे विनती करती हू, इस दुनिया में जो कुछ पवित्र है उसके नाम पर विनती करती हू—मुझे सच सच बताइये। अगर आप जानते कि मेरे लिए इसका कितना महत्व है डाक्टर, बताइये। ईश्वर के लिए मुझे बताइये! क्या मेरी जान खतरे में है?'—'सच, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना, मै भला क्या बता सकता हू?' —'ओह, ईश्वर के लिए, मै तुमसे अनुरोध करती हू!'—'मैं तुमसे नही छिपा सकता,' मैंने कहा, 'अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना, तुम्हारी जान सचमुच खतरे में है, लेकिन ईश्वर सब भला करेगे।'—'ओह, मैं मर जाऊगी, मर जाऊगी!' ऐसा मालूम हुआ जैसे वह इससे खुश हो। उसके चेहरे पर एक अजीब चमक दौड गयी। मै आशकित हो उठा। 'अरे नही, घबराओ नही। मै मौत से जरा भी नही डरती।' वह सहसा उठी और अपनी कोहनी के सहारे झुक गयी। 'अब हा, अब मै आपको बता सकती हू कि मेरा रोम रोम आपका कृतज्ञ है कि आप बहुत भले और अच्छे आदमी है मै आपसे प्रेम करती हू।' उद्भ्रान्त की भाति मैंने उसकी ओर ताका। मेरे लिए यह सब, आप जानो, भयानक था। 'सुन रहे है न, मै आपसे प्रेम करती हू।'—'अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना, आप मुझे क्योकर इसके योग्य समझती है?'—'ओह नही, आप नही जानते, आप मुझे नही समझते।' और उसने सहसा अपनी बाहे फैलायी, मेरा सिर अपने हाथो में थामते हुए उसे चूम लिया सच मानो, मै एकदम हडबडा-सा उठा। घुटनो के बल मै गिर गया, और उसके तकिए में मैने अपना मुह छिपा लिया। वह अब चुप थी। उसकी उगलिया मेरे बालो में काप रही थी। मैने सुना, वह रो रही है। मैने उसे सभालना, तसल्ली देना शुरु किया सच, मै नही जानता कि मैने क्या कुछ कहा। 'अरे, इस तरह तो तुम दासी को जगा दोगी,' मैंने उससे कहा, 'अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना, मै तुम्हारा बहुत बहुत आभारी हू . सच मानो अपना जी छोटा न करो।'—'बस, बस,' वह कहती गयी, 'बस, अब कुछ नही चाहे तो वे अब

सब जाग जाय, सब के सब यहा आ मौजूद हो, अब कुछ चिन्ता नही . देखो न, मै मर रही हू. और आपको क्या डर है? तुम क्यो डरते हो? अपना सिर ऊचा करो। या शायद आप मुझसे प्रेम नही करते? शायद मैने गलत समझा। अगर ऐसा हे तो मुझे माफ करना।'—'अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना! यह तुम क्या कह रही हो मै मै तुमसे प्रेम करता हू, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना!' उसने सीधे मेरी आखो मे देखा, और अपनी बाहे फैला दी। 'तो यह लो, मुझे अपनी बाहो मे भर लो।' सच मै आपसे ठीक कहता हू, मै नही जानता कि उस रात मै पागल होने मे कैसे बच गया। मुझे इस बात का चेत था कि रोगिणी अपनी जान से खेल रही है, मैने देखा कि वह अपने आपे मे नही है, मै यह भी जानता था कि अगर वह अपने-आपको मौत के निकट न समझती तो वह कभी मेरी ओर ध्यान न देती, और बिलाशक, आप कुछ भी कहे, प्रेम का अनुभव किये बिना पचीस वर्ष की उम्र मे मौत को गले लगाना आसान नही है। यही वह चीज थी जो उसे इतनी पीडा दे रही थी, और इसी की वजह से, और कोई चारा न देख, वह मेरी ओर लपकी। क्यो, अब तो आप समझ गये न? लेकिन वह मुझे अपनी बाहो मे कसे रही, और अपना बन्धन ढीला करने को तैयार नही हुई। 'मुझपर, और अपने पर भी, तरस खाओ, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना,' मैने कहा। 'क्यो, अब सोचना क्या है,' उसने कहा, 'आप जानते है कि मुझे मरना तो है ही,' वह बार बार, बिना रुके, यह दोहराती रही, 'अगर मै जानती कि मुझे फिर जीवन मे लौटना और एक भली लडकी की तरह कायदे से रहना होगा तो बेशक, शर्म-लिहाज करती लेकिन अब क्या?'—'लेकिन यह कौन कहता है कि तुम मरोगी?'—'ओह, बस रहने दो। तुम मुझे धोखे में नही रख सकते। झूठ बोलना तुम्हारे बस की बात नही—तुम्हारा चेहरा इसकी गवाही है।'—'तुम जिओगी, अलेक्सान्द्रा अन्द्रेयेवना। मै तुम्हे चगा कर दूगा, तुम्हारी मा का आशीर्वाद हमे प्राप्त होगा—

और हम दोनो एक हो जायेंगे– सुख से रहेगे!'–'नही, नही, आपने मुझसे सब कह दिया है। मै मरुगी तुमने वचन दिया है मुझे वता दिया है।' यह मेरे लिए अत्यन्त निर्मम था–अनेक कारणो से निर्मम था। और देखिये, मामूली वाते कभी कभी क्या कर डालती है। वात यो कुछ नही मालूम होती, लेकिन फिर भी कितनी दुखद थी। जाने उसके मन में क्या आया कि मेरा नाम पूछने लगी–कुल का नही वल्कि मेरा छोटा नाम। निश्चय ही मै वडा अभागा रहा हूगा जो मेरा नाम त्रीफोन रखा गया। सच, इसमें शक नही। त्रीफोन इवानिच। घर में सभी मुझे डाक्टर कहकर पुकारते थे। जो हो, मजबूरी थी। सो मैंने कहा–त्रीफोन, उसने भौहे चढायी, अपना सिर हिलाया और जाने क्या फ्रेंच भाषा में वुदवुदा उठी–ओह, निश्चय ही वह कोई अरुचिकर वात रही होगी–और फिर हसी। वैसे ही अरुचिकर अन्दाज में। हा तो इस प्रकार सारी रात मैंने उसके साथ काटी। सुवह होने को आयी तव मै वहा से हटा। ऐसा मालूम होता था जैसे मेरा दिमाग ठिकाने नही है। इसके वाद, सुबह की चाय के वाद, दिन में मै फिर उसके कमरे में गया। हे भगवान, अब तो वह पहचानी भी मुश्किल से जाती थी। मरने के वाद भी, जब उन्हे कब्र में सुलाया जाता है, लोग उससे कही अच्छे मालूम होते होगे। सच, चाहे कसम ले लो, मै कुछ नही समझ पाता–कतई नही समझ पाता–मैंने वह यत्रणा कैसे सही। इसके वाद भी, तीन दिन और तीन रात, वह अधमरी-सी हालत में पडी रही। राते भी कैसी? जाने क्या क्या उसने कहा। और आखिरी रात–जरा खुद कल्पना कर देखिये–मै उसके पास वैठा था, और भगवान से केवल एक प्रार्थना कर रहा था–'जल्दी करो भगवान! इसे और साथ ही मुझे भी, अपने पास वुला लो।' सहसा, वृद्धा मा कमरे में चली आयी, एकदम अप्रत्याशित। पिछली साझ मै उससे–मा से–कह चुका था कि अब वहुत कम उम्मीद

है, अच्छा हो कि पादरी को वुला भेजो। वीमार लडकी ने जव अपनी मा को देखा तो वोली, 'यह अच्छा हुआ कि तुम आ गयी मा। यह देखो, हम दोनो एक-दूसरे से प्यार करते हैं—हम एक-दूसरे से वचनवद्ध हो चुके हैं।'—'यह क्या कह रही है, डाक्टर, क्या कह रही है?' मैं पीला पड गया। 'यो ही वडवडा रही है,' मैंने कहा, 'वुखार है ' लेकिन वह वोली, 'वस, वस, अभी अभी तुम मुझसे कुछ और ही कह रहे थे, और तुमने मेरी अगूठी भी ग्रहण की है। वहाना क्यो वनाते हो? मेरी मा वहुत भली है—वह माफ कर देगी—वह सव समझती है—और मैं मर रही हू। मुझे झूठ वोलने की जरूरत नही। लाओ, अपना हाथ मुझे दो।' मैं उछलकर खडा हुआ और कमरे से वाहर भाग गया। कहने की जरूरत नही कि वृद्धा ने भाप लिया कि मामला क्या है।"

"जो हो, मैं आपको अव और अधिक नही उवाऊगा। और फिर मेरे लिए भी इन सव वातो की याद करना काफी दुखद है। अगले दिन रोगिणी की मृत्यु हो गयी—भगवान उसकी आत्मा को शाति दे," उसास छोडते और उतावली के साथ वोलते हुए डाक्टर ने कहा, "मृत्यु से पहले उसने घर के लोगो से कहा कि वे वाहर चले जाय, और मुझे उसके साथ अकेला रहने दें। 'मुझे माफ करना,' उसने कहा, 'शायद मैं तुम्हारे प्रति दोषी हू मेरी वीमारी लेकिन मेरा यकीन करो, तुम से अधिक मैंने कभी किसी को प्यार नही किया मुझे भुलाना नही मेरी अगूठी अपने पास रखना।"

डाक्टर ने मुह दूसरी ओर मोड लिया। मैंने उसका हाथ थाम लिया।

"ओह," उसने कहा, "अच्छा हो कि हम किसी दूसरे विषय पर वाते करे। मामूली दाव रखकर थोडा प्रिफरेन्स खेले—अगर आपको यह पसन्द हो तो मेरे जैसे लोग ऊची भावनाओ में नही डूव-उतरा

सकते। सिर्फ एक ही चिन्ता हमारे लिए बहुत है—बच्चो को चीखने-चिल्लाने से और पत्नी को झिडकिया देने से कैसे शान्त रखा जाय। तब से, आप जानो, जैसा कि कहते है, मैंने विधिवत शादी भी कर डाली। सच, एक सौदागर की लडकी से। दहेज मे सात हजार मिले। अकुलीना उसका नाम है। त्रीफोन की ही जोडीदार समझो। उसका स्वभाव बडा चिडचिडा है। गनीमत यही है कि वह दिन-भर सोती रहती है हा तो फिर प्रिफरेन्स ही हो जाय?"

कोपेक के दावो के साथ हम प्रिफरेन्स खेलने बैठ गये। त्रीफोन इवानिच ने मुझसे ढाई रूबल जीते और इस जीत के कारण बहुत खुश खुश वह गहरी रात गये अपने घर लौटा।

मेरा पड़ोसी रदीलोव

शारद् में स्नाइप-पक्षी वहुधा लीपा-पेडो के पुराने वागो की शरण लेते है। हमारे यहां, ओरेल प्रान्त में, ऐसे बागो की तादाद काफी है। हमारे पुरखा, जब भी वसने के लिए कोई जगह चुनते थे तो फल के वाग के लिए दो एकड अच्छी-खासी ज़मीन जरूर अलग रख छोडते जिस में लीपा-पेडों की कई कतारे लग सके। पचास या अधिक से अधिक सत्तर सालो के भीतर इन जागीरो का—या जैसा कि इन्हे कहा जाता है 'कुलीन घरानो' का—इस धरती से धीरे धीरे लोप होता जा रहा है। मकान खण्डहर वनते जा रहे थे या बेचे जा रहे थे, पत्थर के बगले मलवे का ढेर वन जाते। सेवो के पेड ठूठ वन चुके थे और उनसे ईंधन का काम लिया जाता था। चहारदीवारी और बेंत वृक्षो के बाडे लोगो ने उखाड़ डाले थे। केवल लीपा-पेड ही पहले की भाति, अपनी पूरी गरिमा के साथ खडे है, और अपने इर्द-गिर्द फैले खेतो के बीच खडे हमारी लापरवाह पीढी को 'उन पुरखो और सगे-सबधियो' की कहानी कहते है, जिन्होंने हमसे पहले इस धरती को आबाद किया। लीपा के ये पुराने पेड वडे शानदार होते हैं। रूसी किसानो की बेरहम कुल्हाडी भी उन्हे अछूता छोड देती है। चारो ओर दूर दूर तक फैली छोटे छोटे पत्तो से युक्त उनकी सबल डालियाँ निरन्तर छाया प्रदान करती है।

एक बार, तीतरो की टोह मे, येरमोलाई के साथ मैं खेतो का चक्कर लगा रहा था, जब थोड़ी दूरी पर मुझे एक वीरान बाग दिखाई

पडा। मै उसकी ओर मुड गया। उसकी सीमा में मैंने अभी मुश्किल से ही पाव रखा होगा कि अचानक, पर फडफडाता हुआ एक स्नाइप-पक्षी झाडी में से उडा। मैंने गोली दागी और उसी क्षण, कुछ ही डग दूर, एक चीख़ मुझे सुनाई दी। एक युवती का भयभीत चेहरा क्षण-भर के लिए पेडो के पीछे से झाका और फिर तुरत ओझल हो गया। येरमोलाई दौडकर मेरे पास आया—"अरे, यहा गोली क्यो दाग रहे हो? यहा तो जमीदार रहता है।"

इससे पहले कि मै कोई जवाब देता, या मेरा कुत्ता रोब के साथ उस पक्षी को लिये हुए मेरे पास आता, मुझे तेजी से बढते डगो की चाप सुनाई दी, एक लम्बा मुछेल आदमी झुरमुट में से बाहर निकला और मेरे सामने आकर खडा हो गया। मैंने उससे माफी मागी, उसे अपना नाम बताया और जिस पक्षी का उसकी जागीर में मैंने शिकार किया था, वह उसे ही भेंट कर दिया।

"अच्छी बात है," मुसकराते हुए उसने कहा। "मुझे यह भेंट स्वीकार है, लेकिन एक शर्त पर—वह यह कि आपको मेरे घर चलना होगा और मेरे साथ भोजन करना होगा।"

सच पूछो तो उसके इस प्रस्ताव से मुझे कुछ ज्यादा खुशी नही हुई। लेकिन इनकार करना भी सम्भव नही था।

"शायद आपने मेरा नाम सुना हो, मै आपका पडोसी रदीलोव हू, यहा का जमीदार," मेरा नया परिचित कहे जा रहा था। "आज रविवार है, और निश्चय ही कुछ बढिया भोजन बना होगा, वर्ना मै आपको न्योता ही न देता।"

मैंने वैसा ही कुछ जवाब दिया जैसा कि ऐसी परिस्थितियो में दिया जाता है और उसके पीछे चलने के लिए घूम पडा। एक छोटी-सी पगडडी पर से जिसे हाल ही में साफ किया गया था, हम जल्दी ही लीपा के झुरमुट से बाहर आ गये और साग-भाजी के बगीचे में पाव रखा।

सेव के पुराने पेड़ो और गूजबेरी की घनी झाड़ियो के बीच सफेदी मायल हरी छल्लेदार गोभी की पाते खडी थी। हॉप-बेल ऊचे बासो के इर्द-गिर्द अपने पजे फैलाती ऊपर चढ़ती चली गयी थी। भूरी टहनियो के घने आल-जाल मे मटर की सूखी फलिया लटक रही थी। बडे बडे चपटे कद्दू, मालूम होता था जैसे धरती पर लुढक रहे हो। नुकीले, धूल भरे पत्तो के नीचे खीरे पीले पड चले थे। मेड के किनारे किनारे लम्बा बिछुआ उगा था। दो या तीन जगह तातार हनीसकल, एल्डर और जगली गुलाब के झुरमुट दिखाई देते थे। भूतपूर्व फूलो की क्यारियो की यादगार के रूप में अब ये ही बाकी बचे थे। मछलियो के एक छोटे-से कुण्ड के पास जिसमें गदला मटमैला पानी भरा था, एक कुआ नजर आ रहा था जिसके इर्द-गिर्द छोटे छोटे पानी के गढे थे। बत्तखें इन गढो मे तैरने और छीटे उडाने मे व्यस्त थी। अपनी आखो को मिचमिचाता और अपने अग अग को फडकाता एक कुत्ता एक मैदान मे बैठा हड्डी को नोच रहा था। उसके पास ही एक चितकबरी गाय अलस भाव से घास का पागुर कर रही थी और रह रहकर अपनी सीकिया पीठ पर पूछ का चवर डुलाकर मक्खी-मच्छरो को उडा रही थी। पगडडी एक ओर को मुड चली। सरपत के घने झुरमुट और बर्च-वृक्षो की ओट में से भूरे रग के एक छोटे-से पुराने घर पर हमारी नजर पडी। इसकी छत तख्तो से पटी थी और घुमावदार सीढिया थी। रदीलोव चलते चलते रुक गया।

"लेकिन," प्रसन्न हृदय और सीधी नजर से मेरे चेहरे की ओर देखते हुए उसने कहा, "फिर से सोचने पर मुझे लगा मन ही तो है आखिर, हो सकता है कि मेरे साथ चलने और मेल-मुलाहिजा करने में आपका दिल न चाहता हो। अगर ऐसा है तो "

मैंने उसे बात पूरी न करने दी, बल्कि उसे यकीन दिलाया कि, इसके विपरीत, उसके साथ भोजन करके मुझे अत्यत प्रसन्नता होगी।

"सो तो आप जानें।"

हमने घर में प्रवेश किया। सीढियो पर एक युवक से हमारी भेंट हुई। वह नीले रग के मोटे कपडे का लम्बा कोट पहने था। रदीलोव ने येरमोलाई के लिए तुरत कुछ वोद्का लाने का आदेश दिया। शिकारन्दाज ने उदार मेजवान की पीठ पीछे ही अदव से सलामी झुकायी। विभिन्न प्रकार की रगीन तस्वीरो तथा पक्षियो के पिजरो से सजे हाल को पारकर हम एक छोटे-से कमरे में दाखिल हुए। यह रदीलोव का अध्ययन-कक्ष था। मैंने अपना शिकार का तामझाम उतारा, और अपनी वन्दूक एक कोने में रख दी। लम्वे कोटवाले युवक ने वडी तत्परता से मेरे कपडो की गर्द झाड पोछकर साफ की।

"हा तो चलिये, दीवानखाने में चले," रदीलोव ने हार्दिकता से कहा। "अपनी मा से आपका परिचय करा दू।"

मै उसके साथ हो लिया। दीवानखाने में, वीच के सोफे पर, मझोले कद की एक वृद्धा वैठी थी—दालचीनी रग की पोशाक और सफेद टोपी पहने हुए। उसका दुवला-पतला वृद्ध चेहरा वहुत ही भला था और एक सहमा-सा, उदासी में पगा भाव उसपर छाया हुआ था।

"यह देखो मा, अपने इन पडोसी से आपका परिचय करा दू "

वृद्धा खडी हो गयी और सिर झुकाकर उसने मेरा अभिवादन किया लेकिन अपना ऊनी वटुवा जो कोथली जैसा मालूम होता था, अपने मुरझाये हुए हाथो से अलग नही होने दिया।

"क्या आप अर्से से हमारे पडोस में रहते है?" अपनी आखो को मिचमिचाते हुए क्षीण किन्तु मृदु आवाज में वृद्धा ने पूछा।

"नही, ज्यादा अर्सा नही हुआ।"

"लेकिन अव तो कुछ दिन रहेगे न?"

"शायद जाडो तक।'

वृद्धा ने इससे अधिक और कुछ नही कहा।

"और यह," छरहरे वदन के एक लम्वे आदमी की ओर जिसपर

दीवानखाने मे ग्राने के बाद अब तक मेरी नजर नही गयी थी, इशारा करते हुए बीच में ही रदीलोव ने कहा, "इनका नाम है फ्योदोर मिखेइच. . अरे, जरा इधर ग्राग्रो, फेद्या। मेहमान को अपनी कला की बानगी तो दिखाओ। वहा, उधर कोने मे क्यो छिपे हो?"

फ्योदोर मिखेइच तुरत अपनी कुर्सी पर से उठा, खिडकी पर से एक छोटा-सा दीन-हीन वेला उठाया, कमानी को उसने सभाला—कायदे के अनुसार छोर से नही, बल्कि बीच से। बेला को अपने वक्ष से सटाया, अपनी आखो को मूदा और गीत के बोल छेडते तथा बेला के तारो को झनझनाते हुए नाचना शुरू कर दिया। करीब सत्तर वर्ष का वह मालूम होता था। उसके सूखे-साखे हड्डियो के ढाचे पर नानकिन का फ्रॉक-कोट दयनीय भाव से फडफडा रहा था। नाचते नाचते मिखेइच कभी हुमक कर उछलता, फिर अपने छोटे-से सफाचट सिर को, अपनी गाठ-गठीली गरदन को बाहर निकाले, नीचे कर लेता और कभी धरती पर अपने पाव पटकता—और कभी प्रत्यक्ष कठिनाई से अपने घुटनो को मोडता। उसके पोपले मुह से आयु की मार से जर्जर आवाजें निकल रही थी। मेरे चेहरे के भाव से रदीलोव ने निश्चय ही ताड लिया कि फेद्या की 'कला' में मुझे कोई खास रस नही मिल रहा है।

"बहुत खूब, बुढऊ! बस इतना ही काफी है," उसने कहा। "अब जाओ और अपना गला तर करो।"

फ्योदोर मिखेइच ने फौरन से पेश्तर अपने बेला को खिडकी की ओटक पर रख दिया, मेहमान के नाते पहले मेरे, फिर वृद्धा के, फिर रदीलोव के आगे सिर झुकाया और इसके बाद वहा से खिसक गया।

"यह भी जमीदार था," मेरा नया मित्र कहता गया, "और ज़मीदार भी ऐसा-वैसा नही, खूब सम्पन्न। लेकिन इसने अपने को नष्ट कर डाला। अब मेरे पास रहता है। कभी इसके भी दिन थे, और प्रान्त भर में इसी के साहस की सबसे ज्यादा धाक थी। दो विवाहित स्त्रियो

का उसने हरण किया था, गायको को यह अपने यहा रखता था, खुद भी गाता था और नाचने में बडा कुशल था लेकिन क्या आप वोद्का नही लेगे? भोजन भी बस तैयार ही है।"

एक युवा लडकी, वही जिसकी बाग में मुझे एक झलक दिखाई दी थी, कमरे में आयी।

"और यह लीजिये, ओल्गा भी आ गयी," अपने सिर को किंचित् घुमाते हुए रदीलोव ने कहा। "आपसे परिचय करा दू हा तो चलिये, अब भोजन के लिए चले।"

हम भीतर गये और मेज के पास बैठ गये। दीवानखाने से निकलकर अभी हम अपनी अपनी जगहो पर बैठ ही रहे थे कि फ्योदोर मिखेइच ने–गला तर करने के बाद जिसकी आखें चमक रही थी और नाक लाल हो रही थी–आलाप शुरू कर दिया–'गाओ सब मिल जय, जय, जय!' कोने में रखी एक अलग मेज पर जिस पर मेजपोश भी न बिछा था उसके लिए अलग भोजन परोसा गया। बेचारा वृद्ध शाइस्ता आदतो का धनी नही था, इसलिए उसे हमेशा पगत से कुछ दूर ही रखा जाता था। उसने क्रॉस का चिन्ह बनाया, एक उसास भरी, और शार्क की तरह खाने में जुट गया। भोजन वास्तव में बुरा नही था, और साथ में–रविवार के उपलक्ष्य में–छलछलाती जैली और स्पेनिश पेस्ट्री की तश्तरिया मौजूद थी। रदीलोव एक पैदल सेना में दस साल रह चुका था और तुर्की हो आया था। भोजन की मेज पर उसने अपने सस्मरण सुनाने शुरू कर दिये। मै ध्यान से उसके किस्से सुन रहा था और छिपी नजर से ओल्गा को देख रहा था। वह कोई खास सुन्दर नही थी, लेकिन उसके चेहरे का शान्त और सुदृढ भाव, उसका चौडा गोरा-चिट्टा माथा, उसके घने बाल, और खास तौर से उसकी भूरी आखें–बडी न होने पर भी जिनमें निर्मलता, समझ-बूझ और जिन्दादिली की चमक थी–मुझे ही नहीं, बल्कि जो भी होता उनसे प्रभावित हुए बिना न रहता। ऐसा

मालूम होता था जैसे रदीलोव के मुह से निकले प्रत्येक शब्द को यह ध्यान से सुन रही है। उसके चेहरे पर सहानुभूति का इतना नही, जितना गहन आकर्षण का भाव छाया था। आयु के लिहाज से रदीलोव उसका पिता मालूम होता था। वह उसे तू कहकर पुकारता था, लेकिन मैं तुरत ही भाप गया कि वह उसका पिता नही है। बातचीत के दौरान मे उसने अपनी मृत पत्नी का जिक्र किया। "उसकी बहिन है," ओल्गा की ओर इशारा करते हुए उसने बताया। ओल्गा के गाल तुरत लाल हो उठे और उसने अपनी आखे झुका ली। रदीलोव क्षण-भर के लिए रुका और इसके बाद उसने विषय बदल दिया। भोजन के दौरान मे वृद्धा ने एक भी शब्द मुह से न निकाला। भोजन भी न तो खुद उसने कुछ खाया, न ही मुझसे कुछ और लेने का अनुरोध किया। उसके चेहरे की भाव-भगिमा मे सहमी-सी हताश आकाक्षा का—वृद्धावस्था की उदासी का—एक ऐसा पुट था जो हृदय को बीधता मालूम होता था। भोजन के अन्त में फ्योदोर मिखेइच मेहमानो और मेजबान का यश-गान करने के लिए उठा पर तभी रदीलोव ने मेरी तरफ देखा और उसे चुप रहने का आदेश दिया। बूढे ने होठो पर हाथ फेरा, आखें मिचमिचानी शुरू की, सलामी झुकायी, और फिर बैठ गया, लेकिन केवल अपनी कुर्सी के एकदम छोर पर। भोजन के बाद रदीलोव के साथ मैं फिर उसके अध्ययन-कक्ष मे गया।

उन लोगो मे जो एक ही विचार या भावना में हर घडी गहराई के साथ डूबे रहते है आपस में कुछ समानता, उनके तौर-तरीको में एक तरह की बाह्य एकरूपता, पायी जाती है, चाहे उनके गुणो, उनकी योग्यताओ, समाज मे उनकी स्थिति और उनकी शिक्षा-दीक्षा में कितना ही भेद क्यो न हो। रदीलोव को जितना ही अधिक मैं देखता, उतना ही अधिक मुझे लगता कि वह इसी कोटि के लोगो मे से है। वह खेतीवाडी के बारे में, फसलो, युद्ध, जिले की कानाफूसियो और आगामी चुनावो

के वारे में वेरोक वाते करता, बल्कि कहना चाहिए कि दिलचस्पी तक के साथ। लेकिन वाते करते करते सहसा वह उसास छोडता और कुर्सी मे गहरा वैठ जाता, चेहरे पर अपना हाथ फेरता—उस आदमी की तरह जो किसी कडे काम से थककर चूर हो गया हो। उसकी समूची प्रकृति—अच्छी और मिलनसार होने पर भी—किसी एक भाव में पगी, उसमें पूरी तरह डूबी, मालूम होती थी। मेरे लिए यह एक अचरज की बात थी कि उसमें किसी चीज के प्रति अनुराग नही था—न खाने के प्रति, न मदिरा के प्रति, न शिकार के प्रति, न कूर्स्क बुलबुलो के प्रति, न मिरगी पडे कवूतरो के प्रति, न रूसी साहित्य के प्रति, न दुलकी चाल चलनेवाले घोडो के प्रति, न हगेरियन कोटो के प्रति, न ताश और विलियर्ड के प्रति, न नाच-पार्टियो के प्रति, न प्रदेशीय नगरो या राजधानी की यात्राओ के प्रति, न कागज़ या चुकन्दर की चीनी के कारखानो के प्रति, न रगेचुने मण्डपो के प्रति, न चाय के प्रति, न बाज़ूवाले जिद्दी घोडो के प्रति, न ही कुप्पे की भाति फूले उन कोचवानो के प्रति जो ठीक अपनी वगल के नीचे पेटी कसते है—वे लाजवाब कोचवान जिनकी आखें, जाने किस रहस्यमय कारण से, हर क्षण अटेरन-सी घूमती रहती है और वाहर निकल पडने के लिए वेचैन रहती है "तो फिर," मैंने सोचा, "किस किस्म का ज़मीदार है यह?" इसके साथ साथ, उसकी भाव-भगिमा और मुद्रा से, यह जरा भी नही मालूम होता था कि वह अपने भाग्य से असन्तुष्ट, एक खिन्न आदमी है। उल्टे, वह भेदभाव से मुक्त, सदिच्छा और हार्दिकता का परिचय देता था, यहा तक कि उसकी मिलनसारी—जो भी उसके सम्पर्क में आय उससे घनिष्ठता कायम करने की उसकी तत्परता—को देखकर तबीयत कुछ तग भी आती थी। सच पूछो तो उसे देखकर एकदम ऐसा लगता कि वह किसी का मित्र नहीं हो सकता, न ही किसी के साथ वास्तव में घनिष्ठता कायम कर सकता है—इस कारण नही कि वह आम तौर से स्वतन्त्र था, बल्कि

इस लिए कि उसका समूचा अस्तित्व बहुत कुछ भीतर की ओर उन्मुख, खुद अपने-आप पर ही केन्द्रित था। रदीलोव को देखकर मैं कभी भी यह कल्पना नही कर सकता था कि वह अब, या अन्य किसी समय, सुखी हो सकता है। देखने में भी वह खूबसूरत नही था। लेकिन उसकी आखो में, उसके मुसकराने मे, उसके समूचे अस्तित्व में कुछ था जो रहस्यमय और अत्यन्त आकर्षक था—हा, ठीक रहस्यमय ही उसे कहा जा सकता है। कुछ ऐसा कि आप उसे और अधिक अच्छी तरह जानने और उससे प्रेम करने के लिए ललक उठे। विलाशक, जब-तब जमीदार और स्तेपीय मानव की झलक भी उसमें दिखाई पड जाती थी, लेकिन कुल मिलाकर वह एक बढिया आदमी था।

हम ज़िले के नये मारशल के बारे मे बाते कर ही रहे थे जब, सहसा, दरवाजे पर हमें ओल्गा की आवाज सुनाई दी—"चाय तैयार है।" हम उठकर दीवानखाने मे चले गये। फ्योदोर मिखेइच, पहले की भाति, छोटी-सी खिडकी और दरवाजे के बीचवाले अपने कोने में बैठा था, टागो को, अपने नीचे, कुण्डली मारे हुए। रदीलोव की मा मोजा बुन रही थी। खुली हुई खिडकियो में से शरद की ताजगी और सेबो की महक आ रही थी। ओल्गा प्यालो में चाय डाल रही थी। भोजन के बाद अब उसे अधिक ध्यान से मैंने देखा। देहाती लडकियो की भाति, नियमत, वह भी बहुत कम बोलती थी। लेकिन, फिर भी, उसमे वह उद्विग्नता नही दिखाई दी जो इन लडकियो में अक्सर अपनी मूर्खता और लाचारगी की दुखद चेतना के साथ साथ कोई बढिया बात करने के लिए उनमें कसमसाती रहती है। न तो उसने ऐसी कोई उसास भरी जिससे पता चलता कि अकथनीय भावनाओ के बोझ ने उसे दबा रखा है, न ही उसने आकाश की ओर अपनी आखें उठाकर देखा, और न ही वह धुधले तथा स्वप्निल अन्दाज़ में मुसकरायी। उसकी भाव-भगिमा मे एक शान्त आत्मथिरता का भाव था, मानो वह किसी भारी खुशी या भारी चहल-

पहल के बाद दम ले रही हो। उसकी काठी और चाल सुदृढ और उन्मुक्त थी। मुझे वह खूब अच्छी लगी।

रदीलोव के साथ बातचीत में मै फिर रम गया। बातो ही बातो में–यह याद नही कि किस प्रसग में–हमने इस चिरपरिचित कथन का उल्लेख किया कि बहुधा उन चीजो की अपेक्षा जिन्हे हम अत्यन्त महत्वपूर्ण समझते है, अत्यन्त नगण्य चीजो का लोगो पर ज्यादा प्रभाव पडता है।

"सो तो है," रदीलोव ने कहा–"यह मै खुद अपने मामलो मे भी अनुभव कर चुका हू। आप जानते ही है, मेरा ब्याह हुआ था। अधिक नही, कुल तीन वर्ष हुए होगे, मेरी पत्नी का प्रसव में देहान्त हो गया। मुझे लगा कि उसके विछोह में मै अधिक दिन जिन्दा नही रहूगा। मै अत्यन्त दुखी था। मेरा दिल टूट गया था। लेकिन मेरी आखो से आसू नही फूटे–बस, इस तरह घूमता रहता जैसे मेरे सिर पर कोई भूत सवार हो। उन्होने उसकी मृत देह की साज-सज्जा की, जैसा कि हमेशा किया जाता है, और ठीक इसी कमरे में मेज पर लाकर उसे लिटा दिया। पादरी आया। डीकन आये। भजन और प्रार्थना शुरू हुई। लोहबान की धूनी दी गयी। मैंने धरती पर माथा टेका। लेकिन एक भी आसू आखो से नही गिरा। लगता था जैसे मेरा हृदय–और साथ ही मस्तिष्क भी–पथरा गये हो। मेरा समूचा बदन एक बोझ मालूम होता था। इस तरह मेरा पहला दिन गुजरा। और क्या आप विश्वास करेगे? रात को मै सोया भी। अगली सुबह मै अपनी पत्नी की एक झलक पाने के लिए गया। गर्मियो के दिन थे। मैंने देखा सूरज की धूप उसके सिर से पाव तक पड रही है। सभी कुछ बहुत उजला मालूम होता था। सहसा मैंने देखा " (कहते कहते रदीलोव का बदन अनायास सिहर उठा) "ओह, आप सोच तक नही सकते! मैंने देखा कि उसकी एक आख कुछ कुछ खुली थी, और इस आख के ऊपर एक मक्खी रेग रही

थी.. मैं वही धम्म से ढेर हो गया, और जब मुझे चेत हुआ तो ऐसा रुदन फूटा कि रुकने में ही नही आता था .. मैं अपने को नही रोक सका "

रदीलोव चुप हो गया। मैंने उसकी ओर देखा, और फिर ओल्गा की ओर . उसके चेहरे का भाव मैं कभी नही भूल सकता। वृद्धा ने मोजे को अपने घुटनो पर रख दिया था, और अपने बटुवे में से रुमाल निकालकर चुपचाप अपने आंसुओं को पोछ रही थी। फ्योदोर मिखेइच एकाएक उठा, लपककर अपने वेला को उसने उठाया और बेसुध तथा फटी आवाज़ में गाने लगा। निस्सन्देह, वह हमारी उदासी को दूर करना चाहता था। लेकिन उसके पहले आलाप मे ही हम सब थरथरा उठे। रदीलोव ने उसे चुप रहने का आदेश दिया।

"फिर भी," वह कहता गया, "जो बीत गया सो बीत गया। बीते को हम वापिस नहीं बुला सकते, और, सबसे बढ़कर... इस दुनिया में, हर बात में कुछ न कुछ भलाई है... ऐसा कि, अगर मैं भूलता नही तो, वाल्टेयर ने कहा था।" उतावली मे उसने अपनी बात की पुष्टि की।

"इसमें शक नहीं," मैंने जवाब मे कहा। "इसके अलावा ऐसी कोई मुसीबत नही जिसे सहा न जा सके, और ऐसी कोई भयानक स्थिति नही जिससे छुटकारा न पाया जा सके।"

"तो आपका यह खयाल है?" रदीलोव ने कहा। "शायद आप ठीक कहते हैं। मुझे याद आता है कि एक बार तुर्की के अस्पताल में मैं अधमरा पडा था। मोतीझारे जैसे किसी बुखार ने मुझे जकड लिया था। और हमारे वे क्वार्टर बस नाम के ही क्वार्टर थे—युद्ध के दिन थे, और जो मिल जाता था उसके लिए खुदा का हम शुक्र करते थे। सहसा वे वहा और अधिक बीमारो को ले आये। अब उन्हें कहा रखा जाय? डाक्टर कभी इधर जाता, कभी उधर—खाली जगह कहीं नज़र नहीं आती। तो वह मेरे पास आ खडा हुआ और परिचारक से पूछा—'क्या वह जिन्दा

है?' वह जवाव देता है, 'जी, आज सुबह तक तो जिन्दा था।' डाक्टर नीचे झुकता है, कान लगाकर सुनता है—मै सास ले रहा हू। भला आदमी अपने को रोक नही पाता। कहता है—'देखो न, कितनी सख्त काठी है। मरने जा रहा है, मरना निश्चित है, फिर भी घिसट रहा है, घिसटे जा रहा है, वेकार जगह घेरे हुए है और दूसरो को वाहर किये है!' तो, मैंने मन में सोचा—'सुनो मिखाइल मिखाइलिच, तुम्हारा अब टिकट कटनेवाला है ' लेकिन, अन्त में, मै अच्छा हो गया, और अभी तक, जैसा कि आप खुद देख सकते है जीवित हू। तो, बिलाशक, आपकी वात सही है।"

"हा, हर सूरत में सही है," मैंने जवाब दिया। "अगर आप मर जाते तव भी मेरी बात सही होती—उस हालत में भी आपको अपनी उस भयानक स्थिति से छुटकारा मिल जाता।"

"वेशक, वेशक!" मेज पर जोरो से घूसा पटकते हुए उसने कहा। "किसी न किसी निर्णय पर पहुचे बिना गति नही. किसी एक भयानक स्थिति में पडे रहना भला किस काम का? टालमटोल करने और रीगते रहने से भला क्या लाभ?"

ओल्गा जल्दी से उठी और वगीचे में चली गयी।

"हा तो फेद्या, एक नाच हो जाय!" रदीलोव ने ऊची आवाज़ में कहा।

फेद्या उछलकर खडा हो गया और कमरे में इधर से उधर मडराने-डोलने लगा, उस आदमी की भाति कृत्रिम और विचित्र हरकत करते हुए जो पालतू भालू के साथ 'वकरी' का अभिनय करता है। साथ ही वह गाने भी लगा—"दरवाज़े पर हमारे "

तभी अहाते में वग्घी के पहियो की गडगडाहट सुनाई दी, और कुछ ही मिनट वाद एक लम्वे, चौडे-चकले कधो और मज़वूत काठीवाले आदमी ने—माफीदार ओवस्यानिकोव ने—कमरे में प्रवेश किया। लेकिन

ओवस्यानिकोव का व्यक्तित्व कुछ इतना विलक्षण और मौलिक है कि, अपने पाठको की अनुमति से, उसका जिक्र अगली कहानी के लिए स्थगित कर देना चाहता हू। और अब, जहा तक मेरा सबध है, केवल इतना ही कहना और रह जाता है कि अगले दिन, एकदम तडके ही, येरमोलाई के साथ मै शिकार के लिए निकल गया और दिन-भर शिकार करने के बाद साझ को अपने घर लौटा और यह कि इसके एक सप्ताह बाद मै फिर रदीलोव के यहा गया, लेकिन न तो वह वहा मिला और न ओल्गा ही, और पखवारा बीतते न बीतते मालूम हुआ कि अपनी मा को छोडकर वह अचानक गायब हो गया है, अपनी साली के साथ कही भाग गया है। समूचे प्रदेश मे इस घटना ने एक हलचल मचा दी थी, हर जगह इसकी चर्चा थी, और केवल इस घटना की खबर सुनने के बाद मै ओल्गा के उस भाव को पूर्णतया समझने में समर्थ हो सका जो उस समय उसके चेहरे पर छाया था जब कि रदीलोव अपनी कहानी सुना रहा था। वह केवल सहानुभूतिक वेदना को ही प्रकट नही कर रहा था, बल्कि ईर्ष्या की आग मे भी धधक रहा था।

देहात से विदा होने से पहले मै वृद्धा रदीलोवा से मिलने गया। दीवानखाने मे बैठी फ्योदोर मिखेइच के साथ वह ताश खेल रही थी।

"आपको अपने बेटे की कोई खैर-खबर मिली?" अन्त में जैसे-तैसे मैने उससे पूछा।

वृद्धा ने रोना शुरू कर दिया। इसके बाद रदीलोव के बारे मे और कुछ पूछने की कोशिश मैने नही की।

माफ़ीदार श्रोवस्यानिकोव

प्रिय पाठक, ज़रा अपने मन में इस चित्र की कल्पना कीजिये—गठी हुई देह, लम्बा कद, आयु सत्तर वर्ष, लोक-कथाओ के हमारे लेखक क्रिलोव से मिलता-जुलता चेहरा, स्वच्छ और समझदार आखें जिनके ऊपर घनी भौंहे लटक आयी थी, प्रतिष्ठित अन्दाज, धीमी वाणी, और चाल-ढाल में इत्मीनान का, थिरता का पुट लिये हुए। ऐसा था वह श्रोवस्यानिकोव। एकदम नीले रग और लम्बी आस्तीनो वाला ढीला-ढाला फ्रॉक-कोट पहने, जिसमे नीचे से ऊपर तक बटन थे, गले में बैंगनी रग का रेशमी रूमाल लपेटे, फुन्दनो से सजे बडे बूटो को चमाचम चमकाये। कुल मिलाकर शकल-सूरत में वह एक सम्पन्न सौदागर के समान मालूम होता था। उसके हाथ ख़ूबसूरत थे, मुलायम और सफेद, बातें करते समय वह अक्सर अपने फ्रॉक-कोट के बटनो को छेडता रहता था। गौरव की उसकी भावना और उसकी थिरता, उसकी भली समझबूझ और अलसायी-सी भाव-भगिमा और उसकी ईमानदारी तथा ज़िद पीटर महान से पहले के रूसी बोयारो की याद दिलाती थी। राष्ट्रीय उत्सवो के समय पहनने की पोशाक उसपर खूब फबती थी। वह पुराने ज़माने के उन लोगो में से था जो अभी तक बच रहे थे। उसके सभी पडोसी उसकी बहुत इज्ज़त करते थे, और उससे परिचित होना सम्मान की बात समझते थे। उसके साथी-माफीदार तो जैसे उसकी पूजा करते थे, और उसके सम्मान में दूर से ही अपनी टोपिया उतार लेते थे। उन्हे उसपर गर्व था। यो आजकल,

आम तौर से, यह वताना कठिन है कि कौन माफीदार है और कौन किसान। उसकी खेतीवाडी की हालत किसान की हालत से भी करीब करीब वदतर ही है। उसके वछडो को देखो तो छोटे छोटे, नहूसत के मारे। घोडे जैसे आधे जीते हो, आधे मरे हुए। साज रस्सियो का वना हुआ। लेकिन ओवस्यानिकोव माफीदारो की इस आम श्रेणी से भिन्न–अपवाद-स्वरुप था, हालाकि धनिको मे उसका भी शुमार नही किया जा सकता। एक साफ-सुथरे और छोटे-से आरामदेह घर मे वह अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था, कुछ नौकर-चाकर भी रख रखे थे। उन्हे वह रूमी चन्नन के कपडे पहनाता था और उन्हे अपने कमकर कहकर पुकारता था और उनसे अपनी भूमि जोतवाने का भी काम लेता था। वह न अपने को कुलीन जताने का प्रयत्न करता था, न ही जमीदार दिखने का। जैसा कि कहते हैं, वह कभी अपने-आपको 'भुलावे मे नही रखता था', पहली वार के ही निमन्त्रण पर वह कभी आसन नही जमाता था, और नये मेहमान के आने पर अपनी जगह से उठकर खडे होने में कभी चूकता नही था। लेकिन यह सव वह कुछ इतनी गरिमा और कुछ इतनी राजसी शालीनता के साथ करता था कि मेहमान, वरबस और भी अधिक विनम्रता के साथ उसके आगे झुक जाता। ओवस्यानिकोव पुरानी चाल की चीजो से चिपका था–इसलिए नही कि वह अधविश्वासी था (स्वभाव से वह अपेक्षाकृत स्वतत्र विचारो का आदमी था), बल्कि इसलिए कि उसे ऐसा करने की आदत पड गयी थी। मिसाल के लिए कमानीदार गाडियो से उसे चिढ थी, क्योकि ये उसे आरामदेह नही मालूम होती थी, और वग्घी में सवार होना वह ज्यादा पसद करता था, या फिर, चमडे की गद्दी से युक्त नन्ही-मुन्नी गाडी उसे पसद थी, और अपने वढिया मुश्की घोडे को वह हमेशा खुद ही गाडी मे हाकता था। (उसके पास केवल मुश्की घोडे थे।) उसका कोचवान, लाल गालो वाला एक युवक, वालो को टोपी की शकल मे कटाये, नीले रग का

पेटीदार कोट पहने और भेड की खाल की नीची टोपी सिर पर जमाये, अदव के साथ उसकी वगल में वैठा रहता था। ओवस्यानिकोव दिन के भोजन के वाद हमेशा झपकी लेता था और हर शनिवार को हम्माम में जाकर स्नान करता था। धार्मिक पुस्तको के अलावा वह और कुछ नही पढता था और पढते समय, वडी गम्भीरता के साथ, चादी का अपना गोल चश्मा नाक पर चढा लेता था। वह जल्दी उठता था और जल्दी ही सोने चला जाता था। लेकिन वह अपनी दाढी सफाचट रखता था और जर्मन ढग से अपने वाल काढता था। हमेशा मिलनसारी और हार्दिकता के साथ वह आगन्तुको का स्वागत करता था, लेकिन वह उनके आगे धरती पर विछ नही जाता था, न ही उन्हे लेकर ज्यादा लल्लो-चप्पो करता था, न ही घर में वनी हर प्रकार की सुखाई हुई तथा नमक लगी चीजो को चखने के लिए उनके गले पडता था। "वीवी," अपनी जगह से उठे विना और अपनी पत्नी की दिशा में केवल सिर को थोडा घुमाते हुए वह इत्मीनान के साथ कहता, "इन महानुभावो के लिए कुछ ले आओ।" गेहू वेचना वह पाप समझता था। कारण उसे वह ईश्वर की देन मानता था। सन् ४० में सर्वव्यापी भूखमरी और भयानक अकाल के उन दिनो में, उसने अपना समूचा भण्डार आस-पास के जमीदारो और किसानो के साथ वाटकर खाया। अगले साल कृतज्ञता के साथ, जिन्स के रूप में, उन्होने अपना ऋण चुकता कर दिया। जव भी पडोसियो में कोई झगडा होता, तो पच और मध्यस्थ के रूप में वे अक्सर ओवस्यानिकोव को वुलाते, और उसके फैसले को वे प्राय हमेशा मजूर करते, उसकी सलाह को ध्यान के साथ सुनते। उसके वीच मे पडने की वदौलत हदवन्दी के कितने ही मामले पूर्णतया सुलझ गये। लेकिन दो या तीन वार महिला-जमीदारो से कशमकश होने के वाद उसने निश्चय कर लिया कि स्त्री-जाति के मामलो में वह कभी वीच-वचाव नही करेगा। हडवडी और उत्तेजना, स्त्रियो की काय-

काय और नमेन्ती ने उसे निट थी। एक बार, जाने कैसे, उसके घर में आग लग गयी। एक कमकर "आग! आग!" चिल्लाता और तावड तोड भागता हुआ उनके पास आया। "तो इतना चिल्ला क्यो रहे हो?" ओवस्यानिकोव ने शान्त भाव से कहा। "जरा मेरी बैसाखी और टोपी ले आओ।" अपने घोडो को सीधा करना वह खुद ही पसद करता था। एक बार वह किसी घोडे को साध रहा था। घोडा बहुत तेज था। वह उसे लिये पहाडी ढलुवान पर से गहरे खड्ड की ओर भाग निकला। "बस, बस, अनाडी! क्यो मौत के मुह मे कूदना चाहता है!" ओवस्यानिकोव ने मुलायमियत के साथ उनसे कहा, और अगले ही क्षण बग्घी, पीछे बैठे हुए लडके और घोडे समेत, कगारे पर से गिरी। सौभाग्य से खड्ड की तलहटी में रेत के ढूह पडे थे। सो चोट किसी को नही आयी। केवल घोडे की एक टाग मोच खा गयी। "अब तो देख लिया न," जमीन से उठते हुए ओवस्यानिकोव ने शात स्वर मे कहा, "मैंने कहा था कि नही?" पत्नी भी उसे अपने जोड की ही मिली थी। तत्याना इल्यीनिश्ना ओवस्यानिकोवा लम्बे कद की स्त्री थी, गर्वीली और कम बोलनेवाली, हमेशा सिर पर दालचीनी के रग का रेशमी रूमाल बाधती थी। वह कुछ रूखे स्वभाव की थी, हालाकि उसके कटोर होने की शिकायत किसी को नही थी। उलटे कितने ही दीन-हीन प्राणी उसे अपनी मा और कल्याणी कहकर पुकारते थे। उसके चौकस नखशिख, उसकी बडी बडी काली आखे उसके होठो की मृदु तराश, आज भी उन दिनो की याद दिलाती थी जब उसके सौदर्य की धूम थी। ओवस्यानिकोव के कोई बच्चा नही था।

जैसा कि पाठको को पहले ही मालूम है, रदीलोव के यहा मेरी उससे जान-पहचान हुई थी, और उसके दो दिन बाद मैं उससे मिलने गया। वह घर पर ही था, चमडे की एक बडी आराम-कुर्सी मे बैठा, सन्तो की जीवनिया पढ रहा था। उसके कधे पर एक भूरी बिल्ली गुरगुरा

रही थी। अपनी आदत के अनुसार, राजसी हार्दिकता के साथ उसने मेरा स्वागत किया। बातचीत का सिलसिला चल पडा।

"लेकिन लुका पेत्रोविच," बातो में मैंने उससे पूछा, "सच सच बताना कि पहला जमाना क्या ज्यादा अच्छा नही था?"

"कुछ मानी में, मै कहूगा कि जरूर अच्छा था," ओवस्यानिकोव ने जवाब दिया। "ज़िन्दगी ज्यादा सहज थी, हर चीज़ की कही अधिक बहुतायत थी। फिर भी, अब ज्यादा अच्छा है और परमात्मा ने चाहा तो, आपके बच्चे और भी ज्यादा अच्छा जीवन बितायेंगे।"

"लेकिन, लुका पेत्रोविच, मेरा ख़याल था कि आप पुराने दिनो की प्रशसा करेंगे।"

"नही, पुराने दिनो की प्रशसा करने का मुझे तो ऐसा कोई खास कारण नजर नही आता। मिसाल के लिए देखो न, हालाकि आजकल आप जमीदार है, ठीक वैसे ही जैसे कि आपके दादा थे, लेकिन आपके पास वैसी सत्ता नही है, और, कहने की जरूरत नही, आप खुद भी अब उसी तरह के आदमी नही रहे है। कुछ श्रीमन्त अब भी हमारा उत्पीडन करते है, लेकिन, सच पूछो तो, इससे एकदम बचा भी कैसे जा सकता है। चक्की के पाट जहा चलेगे वहा पिसान होगा ही। नही, मुझे अब वैसा कुछ नही दिखाई देता जैसा किशोरावस्था में मै खुद देख चुका हू।"

"मिसाल के लिए?"

"मिसाल के लिए आपके दादा का ज़िक्र ही मै करता हू। वह बहुत ही रोबदार आदमी थे, और हमारा उत्पीडन करते थे। शायद आप जानते हो–निश्चय ही आप खुद अपनी जागीर से परिचित होगे–ज़मीन का एक टुकडा, जो चेप्लीगिन से मलीनिन्न तक फैला है, वह, जिसमें आजकल जई बोई जाती है, वह दरअसल, हमारी ज़मीन है, सारी की सारी हमारी है। आपके दादा ने उसे हमसे हथिया लिया था। घोडे पर सवार वह उधर से गुज़रे, हाथ से उसकी ओर इशारा किया, और

कहा, "हमारी मिल्कियत", और उसपर कब्जा कर लिया। मेरा बाप (ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे!) इन्साफ पसन्द आदमी था, साथ ही तेज स्वभाव का भी। वह यह सह नही सका—और सच, ऐसा कौन है जो अपनी मिल्कियत यू खो देगा? सो उसने अदालत मे दरख़ास्त कर दी। लेकिन वह एक अकेला जना था। और किसी ने साथ नही दिया—सब डरते थे। सो किसी ने गुप्त रूप से आपके दादा के पास जाकर खबर दी कि आपने जो दया कर उसकी जमीन को अपने दखल में ले लिया है, उसके खिलाफ प्योत्र ओवस्यानिकोव शिकायत कर रहा है। आपके दादा ने अपने शिकारिये वौश को आदमियो का एक टोला देकर उसी दम भेज दिया उन्होने मेरे बाप को दबोच लिया और उसे पकडकर आपकी जागीर मे खीच ले गये। मै तव एक छोटा-सा लडका था। नगे पाव मै अपने बाप के पीछे दौडा। जानते है, फिर क्या हुआ? वे उसे आपके घर ले गये और खिडकियो के नीचे उसे कोडो से पीटने लगे। और आपका दादा छज्जे पर खडा है और देखता जा रहा है, और आपकी दादी खिडकी मे बैठी है और देखती जा रही है। मेरा बाप गुहार करता है—"मालकिन मार्या वसील्येवना, मुझे बचाओ! मुझपर दया करो!" जवाव मे वह उचक उचककर बस उसे देखती रहती है। सो उन्होने मेरे बाप से वचन लिया कि वह जमीन का नाम नही लेगा, और उससे कहा कि जाकर अपना भाग्य सराहो जो हम तुम्हे जिन्दा छोडे दे रहे है। सो तव से वह जमीन आपके कब्जे मे बनी है। अपने किसानो से ही पूछ देखो कि इस जमीन का उन्होने क्या नाम रख छोडा है? वे इसे डडामारी जमीन कहते है, क्योकि डडा मारकर इसे हासिल किया गया था। सो देखा आपने, हम छोटे लोग पुराने राज की याद में ऐसे कुछ ज्यादा आसू नही बहा सकते।"

मुझसे ओवस्यानिकोव को कोई जवाव देते नही बना, और न ही उसके चेहरे की ओर सीधा देखने का मै साहस कर सका।

"हमारा एक पडोसी और था जो उन्ही दिनो हमारे बीच आकर बसा था। उसका नाम था स्तेपान निक्तोपोलिओनिच कोमोव। वह मेरे बाप की जान सासत में किये रहता, कभी एक बात को लेकर और कभी दूसरी बात को लेकर। बडा पियक्कड जीव था, और दूसरो को पिलाने का शौकीन। नशे में जब वह धुत्त होता तो फ्रेंच भाषा मे 'से बो'* कहता, अपने होठो को चाटता और इसके बाद—नेक फरिश्ते तक शर्म से लाल हो जाते। वह सभी पडोसियो के पास अपना बुलावा भेजता। उसके घोडे हमेशा जुते रहते, और अगर आप न जाते तो वह खुद आपकी टोह मे फौरन आ धमकता और बहुत ही अजीब जीव था वह। जब 'होश' में रहता तो कभी बेपर की न उडाता। लेकिन धुत्त होने पर वह तूमार बाधने लगता, कि पीटर्सबर्ग में फोन्तान्का नामक सडक पर उसके तीन घर है। एक लाल, जिसमें एक चिमनी है, दूसरा पीला, जिस मे दो चिमनिया है और तीसरा नीला, जिसमे एक भी चिमनी नही। और यह कि उसके तीन लडके है (हालाकि उसका विवाह भी नही हुआ था), एक पैदल सेना में, दूसरा घोडसवार सेना में, और तीसरा खुदमुख्तार है और वह बताता कि उसके तीनो घरो में तीन लडके अलग अलग रहते है, कि सबसे बडे लडके से मिलने एडमिरल आते है, दूसरे के यहा जेनरल और तीसरे के यहा केवल अग्रेज। इसके बाद वह खडा हो जाता और कहता, "सबसे बडे लडके के स्वास्थ्य के नाम पर जो सबसे ज्यादा अपने फर्ज़ का पाबन्द है।" और यह कहकर रोना शुरू कर देता। और अगर कोई उसके लडके के स्वास्थ्य के नाम पर जाम न छलकाता तो, उसकी तो शामत ही आ जाती। "मै तुझे गोली से उडा दूगा!" वह कहता, "और दफन तक नही होने दूगा!" कभी कभी वह उछलता और चीखकर कहता, "नाचो, खुदा के बन्दो, नाचो! जिससे आपको

---

*अच्छी बात है।

खुशी मिले और मेरा जी बहले!" हा तो अब आपको नाचना पडेगा, चाहे जान पर क्यो न बन आय, लेकिन नाचना पडेगा। अपनी बन्धक दासियो की जान पर भी वह बुरी तरह सवार रहता। कभी कभी सुबह होने तक सारी रात वे मिलकर एक साथ गाती रहती, और जो सबसे ऊची आवाज मे गाती वह इनाम पाती। और अगर वे थकने लगती तो दोनो हाथो मे वह अपना सिर थाम लेता और विलाप करने लगता, "ओह मुझ अनाथ का भाग्य! कोई मुझे पूछनेवाला नही! और अब ये भी मुझे छोड देना चाहती है!" और साईस तुरत लडकियो को बढावा देते। अब मुसीबत यह कि मेरा बाप उसके मन भा गया। इसका अब क्या इलाज हो? मेरे बाप के वह इतना पीछे पडा कि उसे अधमरा कर दिया, और सचमुच वह उसे मार भी डालता, लेकिन (शुक्र है खुदा का) वह खुद ही मर गया। नशे के दौर मे वह कबूतर-घर से नीचे आ गिरा सो देखा आप ने, ऐसे थे हमारे वे पडोसी!"

"ओह ज़माना अब कितना बदल गया है!" मैने राय दी।

"जी हा," ओवस्यानिकोव ने सहमति प्रकट की। "और यह तो मानना होगा कि पुराने जमाने के कुलीन खूब ऐश करते थे। असल श्रीमन्तो की तो बात ही छोडो—उन्हे मास्को मे देखने का मौका मिलता था। कहते है कि वहा भी ऐसे लोग आजकल बिरले ही नजर आते है।"

"क्या आप मास्को मे रहे थे?"

"हा, बहुत बहुत पहले। तिहत्तरवें साल में मै अब पाव रख रहा हू, और मास्को जब मै गया था तब सोलह का था।"

ओवस्यानिकोव* ने उसास भरी।

"वहा किस को देखा?"

"ओह, खूब देखा—बहुत-से श्रीमन्तो को देखा। और सभी उन्हे देखते थे। वे अपना घर खुला रखते थे। दुनिया उन्हे देखे और मुग्ध तथा चकित होती रहे। केवल काउण्ट अलेक्सेई ग्रिगोर्येविच ओर्लोव-चेस्मेन्स्की

के स्तर का यहा कोई नही था। मै अक्सर अलेक्सेई ग्रिगोर्येविच के यहा जाता। मेरा चाचा उनके यहा घर के मुख्य नौकर का काम करता था। कालूगा गेट के पास शावोलोव्का में काउण्ट रौनक अफरोज थे। ओह, कितने शानदार श्रीमन्त थे। वैसा राजसी ठाठ, वैसी शालीनता और औदार्य, आप कल्पना तक नही कर सकते। और उसका वर्णन करना भी असम्भव है। उनका डील-डौल बस देखते ही बनता था, और उनकी ताक्त, और उनके देखने का वह ढग! जो उन्हे जानता नही, वह उनके पास जाने का साहस न करता, उसका हृदय कापता, यो कहिये कि इतने ज्यादा रोब में आ जाता कि सुन्न पड जाता। लेकिन उनके निकट पहुचते ही लगता जैसे सुहावनी धूप सहला रही हो, और हृदय एकदम खिल जाता। हर कोई उनके पास जा सकता था और वह हर तरह के खेल-कूद के शौकीन थे। वह खुद दौडो मे हिस्सा लेते, और सभी को मात करते। शुरू शुरू में वह कभी आगे नही रहते। यह इसलिए कि प्रतिपक्षी को बुरा न मालूम हो। बीच में भी वह उसे न छेकते, बल्कि आखिर में आगे निकल जाते। और वह इतनी भली तबीयत के थे कि प्रतिपक्षी के घोडे की दाद देते जिससे उसका जी हरा हो जाता। वह लोटन कबूतर पालते थे, सबसे बढिया जात के। वह सहन में निकल आते, आरामकुर्सी पर बैठ जाते, और कबूतरो को खुला छोडने का हुकम देते। उनके आदमी बन्दूको से लैस चारो ओर छतो पर खडे रहते। यह इसलिए कि कोई बाज झपट्टा न मारने पाय। पानी से भरा चादी का एक बडा-सा बरतन काउण्ट के पावो के पास रखा रहता और काउण्ट पानी में कबूतरो का अक्स देखा करते। भिखारियो और गरीब लोगो को सैकडो की तादाद में, उनके यहा से भोजन दिया जाता। जाने कितना धन वह यो ही बाट देते और उनका गुस्सा! जैसे बिजली कडकती है। सब की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती। लेकिन रोने-धोने की नौबत न आती। कुछ क्षण बाद ही वह मुसकराते नजर आते। जब वह जशन

मनाते सारा मास्को मदिरा से तर हो जाता। और फिर, देखो न, चतुर वह कितने थे। तुर्कों के छक्के छुडा दिये। कुश्ती के भी वह शौकीन थे। पहलवानो का उनके यहा ताता लगा रहता था—तूला से, खारकोव से, ताम्वोव से—सब कही से वे आते थे। अगर वह किसी को पटकनी देते तो उसे इनाम देते, अगर कोई उन्हे पटकनी देता तो वह उसे उपहारो मे लाद देते और उसके होठो को चूमते एक वार, मै भी तब मास्को में था, उन्होंने एक ऐसी शिकार-पार्टी का आयोजन किया जैसी कि रूस मे पहले कभी नही हुई। समूचे राज्य मे सभी शिकारियो के पास उन्होने न्योते भेजे। शिकार के लिए एक दिन तय कर दिया और तीन महीने पहले सब को खबर कर दी। सब कुत्तो और शिकारियो के वे आये। ओह, क्या पूछते हो, लोगो की एक फौज—बाकायदा फौज वहा जमा हो गयी। पहले तो, दस्तूर के मुताबिक, खान-पान हुआ, फिर वे शहर के बाहर जाने लगे, हजारो की भीड जमा थी। और आप भी क्या कहोगे आपके दादा के कुत्ते ने सब कुत्तो को मात किया।"

"मिलोविद्का ही था न वह?" मैने पूछा।

"मिलोविद्का, हा मिलोविद्का सो काउण्ट ने उससे कहना शुरू किया, 'अपना कुत्ता मुझे दे दो। जो भी चाहो, उसके लिए मुझसे ले लो।'—'नही, काउण्ट,' उसने जवाब दिया, 'मै व्यापारी नही हू। मैने कभी एक चिथडा तक नही बेचा। मान रखने के लिए मै अपनी पत्नी तक से जुदा होने के लिए तैयार हो सकता हू लेकिन मिलोविद्का से नहीं। भले ही मुझे वन्धक बनना पडे।' और अलेक्सेई ग्रिगोर्येविच ने इसके लिए उसकी सराहना की, 'तुमने मुझे मोह लिया', उसने कहा। और आपका दादा कुत्ते को अपनी गाडी मे बैठाकर अपने साथ ले गया, और जब मिलोविद्का मरी तो बाजे-गाजे के साथ उसे बाग में दफनाया और उसकी कब्र के ऊपर अन्त स्मरण के साथ एक पत्थर लगवा दिया।"

"तो यह कहो कि अलेक्सेई ग्रिगोर्येविच किरी का उत्पीड़न नही करते थे?" मैंने कहा।

"सदा यही देखने में आता है कि केवल वही जो ख़ुद मुश्किल से तैरते होते हैं, दूसरो को वही परेशान करते है।"

"और यह बौश किस किस्म का आदमी था?" थोड़ी ख़ामोशी के बाद मैंने पूछा।

"अरे, यह कैसे हुआ कि मिलोविद्का का जिक्र तो आपने सुना और बौश के बारे में कुछ नही जानते? वह आपके दादा का मुख्य शिकारिया था। आपके दादा उसे भी उतना ही चाहते थे जितना मिलोविद्का को। वह बहुत ही जानबाज़ आदमी था और आपके दादा जो भी हुकम देते थे, आनन-फानन वह उसपर अमल करता था। अगर वह कहते तो तलवार की धार पर दौडने में भी वह न चूकता और जब वह हाक लगाता था तो ऐसा मालूम होता जैसे जगल में उसी की आवाज गूज रही हो। और फिर वह यकायक जिद्द पकड लेता, अपने घोडे से उतर पडता और ज़मीन पर पसर जाता और जैसे ही उसकी आवाज कुत्तो के कानो में पहुचना बद होती, सब बण्टाधार हो जाता। शिकार का पीछा करने की ललक चाहे कितनी ही तेज़ क्यो न हो, वे रुक जाते और किसी हालत में आगे न बढते। और बाप रे, आपके दादा ख़ूब आग-बबूला होते। 'लानत है! शैतान को मैंने फासी पर न लटकाया तो मेरा नाम नही। कम्बख़्त की आतें निकालकर रख दूगा, धर्मद्रोही कही का! उसकी एडिया मैंने उसके गले में न ठूसी तो कहना। बदमाश कही का!' लेकिन अन्त में होता यह कि वह यह मालूम करने की कोशिश करते कि वह क्या चाहता है, कुत्तो को हाका क्यो नही देता? आम तौर से, ऐसे मौको पर, बौश वोद्का की माग करता, उसे गले में उडेलता, अपने घोडे पर सवार होता और फिर उसी आवेश तथा आवेग से हाक लगाने लगता।"

"आप भी तो शिकार के शौकीन मालूम होते है, लुका पेत्रोविच?"

"शिकार का शौक जरूर लेकिन अब नही। मेरे दिन अब ढल चले है। लेकिन जब मै जवान था पर आप जानो मेरी जैसी स्थिति के आदमी के लिए यह कोई सहज मामला नही था। हमारे जैसे लोगो के लिए कुलीनो की लीक पर चलना कुछ जचता नही। निश्चय ही हमारी पात मे भी कुछ ऐसे पियक्कड और नाकारा लोग है जो कुलीनो के पुन्छल्ला बने रहते है, लेकिन इसमे कुछ मजा नही, बडी अटपटी बात है। वे केवल अपने मुह पर कालिख पोतते है। एक मरियल-से लडखडाते घोडे पर उन्हे चढा दिया जाता है, उनकी टोपी को बार बार उछाला जाता है, घोडे के चाबुक मारने के बहाने उनकी पीठ पर चाबुक चलती हे, और उन्हे हर बात मे हसते रहना तथा अपने को दूसरो की हसी का वायस बनाना पडता है। नही, मै कहता हू, जितना ही अधिक नीचा आपका स्तर हो, उतना अधिक सिमट सिमटकर आपको रहना चाहिए। अगर आप ऐसा नही करते तो सीधे अपने मुह पर कालिख लगाते है।"

"हा," ओवस्यानिकोव ने एक उसास छोडी और कहता गया, "इस जीवन-काल मे, मेरे देखते न देखते जमाना बदल गया है। अब वह जमाना नही रहा। बहुत कुछ बदल गया है, खास तौर से कुलीनो में। छोटे ज़मीदार, सबके सब या तो सरकारी नौकरी करते या फिर अपनी ज़मीनो पर नही रहते। और जहा तक बडे मालिको की बात है, उनकी तो कोई थाह नही मिलती। उनसे—बडे जमीदारो से—हदबदी के मामलो मे मेरा वास्ता पडा। और, सच पूछो तो, उन्हे देखकर मेरा जी खुश हो जाता है। बहुत ही शाइस्ता और मिलनसार होते है। केवल एक बात मुझे चक्कर में डालती है। वह यह कि सारी विद्याए वे पढे है, इतने फर्राटे और सफाई से बोलते है कि हृदय पिघलने लगता है, लेकिन जो असल काम है उसे वे नही समझ पाते। वे खुद अपने फायदे

तक को नही पकड पाते। वस किसी कारिन्दे के, वन्धक दास के हाथो में खेलते है, चाहे जिधर वह उन्हे मोडता रहे। मिसाल के लिए कोरोल्योव अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच को ही लो। शायद आप उसे जानते हो अव क्या वह सोलहो आने कुलीन नही है? खूबसूरत है, धनी है, यूनिवर्सिटी में पढा है, और मेरे खयाल से दूसरे देशो मे घूमा है। सीधे-सादे और सहज ढग से वाते करता है, और हम सबसे हाथ मिलाता है। क्यो, कुछ जानते है उसके बारे मे? अच्छा तो सुनिये। पिछले हफ्ते की बात है। पच निकीफोर इल्यीच का बुलावा पाकर हम सब बेरेजोव्का में जमा हुए। उसने हमसे कहा, "कितने शरम की बात है हदबदी का मामला हमने अभी तक नही सुलझाया। हमारा जिला सबसे पिछडा हुआ है। हमें इस काम में जुट जाना चाहिए।" सो हम काम में जुट गये। बहसे हुई, विवाद हुए—जैसा कि होता है। हमारे मुख्तार ने एतराज उठाने शुरू किये। लेकिन सबसे पहले हल्ला मचाया पोर्फीरी ओवचीन्निकोव ने और हल्ला मचाने की भला उसे क्या गरज पडी थी? एक इच ज़मीन भी उसके पास नही। अपने भाई का नुमाइन्दा वनकर आया था। चिल्ला उठा, 'नही, तुम मेरे साथ ठिठोली नही कर सकते! मुझे चाहे जहा नही फेंक सकते! नक्शे यहा मेरे सामने रखो! जरीवकश को यहा वुलाओ, उस दगावाज़ को यहा वुलाओ!'—'लेकिन तुम चाहते क्या हो, यह तो मालूम हो?'—'ओह, मुझे इतना वेवकूफ न समझो। वाह! क्या आप सोचते है कि मै यो ही आपके सामने अपने हक खोलकर रख दूगा? नही, पहले नक्शे इधर हवाले करो—वस, मै यही चाहता हू!' और मजा यह कि नक्शे मेज़ पर मौजूद थे और वह वरावर उन्ही पर अपना घूसा पटक रहा था। इसके वाद वह मारफा द्मीत्रियेवना को वुरी तरह लाछित करने लगा। वह चीख उठी, 'तुम कौन होते हो मेरी इज्जत लेनेवाले!'—'वाह रे तुम्हारी इज्जत!' वह कहता है, 'तुम्हारी जैसी इज्ज़त तो मै अपनी मुश्की घोडी में भी वरदाश्त न करूगा!' अन्त में उन्होने उसे

कुछ मदिरा लाकर दी और इस तरह उसे शान्त किया। इसके बाद दूसरे हल्ला मचाने लगे। अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच कोरोल्योव—वह भला आदमी एक कोने में बैठा अपनी छडी की मूठ दातो से कुतर रहा था। उसने केवल अपना सिर हिलाया। मैं शरम मे गड गया। मेरे लिए वहा बैठे रहना मुश्किल हो रहा था। 'जाने क्या सोचता होगा वह हम लोगो के बारे में?' मैंने अपने मन में कहा। तभी, देखता क्या हू कि अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच उठ खडे हुए है और कुछ बोलने की इच्छा प्रकट करते है। पच के मुह में अब कुछ जबान आती है, वह उठकर कहता है—'भले लोगो, सुनो, अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच कुछ कहना चाहते है।' और मुझे इस बात के लिए उन लोगो की प्रशसा करनी चाहिए कि सब के सब एकदम चुप हो गये। सो अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच ने बोलना शुरू किया और कहा—'मालूम होता है जैसे हम उस बात को ही भूल गये जिसके लिए हम लोग यहा जमा हुए थे। हदबन्दियो का तय होना बिलाशक जमीन के मालिको के लाभ की चीज है, इसमे दो राय नही हो सकती। लेकिन इसका असल मक्सद क्या है? किसान को फिलहाल कुछ सहूलियत पहुचाना जिससे कि वह आसानी के साथ काम कर सके और अपना लगान ज्यादा सहूलियत मे अदा कर सके, अब किसान खुद अपनी जमीन से बहुत कुछ बेगाना हो चला है, और काम करने के लिए उसे अक्सर पाच पाच मील दूर जाना पडता है, ऐसी हालत में हम उससे कुछ ज्यादा उम्मीद नही कर सकते।' इसके बाद अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच ने कहा—'यह शरम की बात है कि जमीदार अपने किसानो की खुशहाली मे कोई दिलचस्पी नही लेते, और अन्त में, अगर कायदे से देखा जाय तो, उनके हित और हमारे हित अटूट रूप मे एक-दूसरे से जुडे है, अगर उनकी हालत अच्छी है तो हमारी भी अच्छी होगी, अगर उनके साथ बुरी गुजरती है, तो हमारे साथ भी बुरी गुज़रती है। और इसलिए जरा जरा-सी बातो को लेकर झगडना गलत है और अपनी नासमझी का परिचय देना है ' आदि

ग्रादि   तो कितना ग्रच्छा वह बोला। लगता था जैसे सीधे हृदय को छू रहा हो   जितने भी कुलीन थे, सबने सिर झुका लिये ग्रौर यकीन मानो, मेरी ग्राखो में तो करीब करीब ग्रासू उमड ग्राये। सच वात तो यह है कि ऐसी वाते ग्रापको पुरानी पोथियो तक में नही मिलेगी   लेकिन ग्रन्त में नतीजा क्या निकला? खुद उसने चार एकड दलदली भूमि को नही छोडा, ग्रौर उसे बेचने के लिए भी राजी नही हुग्रा। उसने कहा—'ग्रपने ग्रादमियो से मै दलदल का पानी सुखवा लूगा, ग्रौर नये से नये साज-सामान से लैस कपडे का एक कारखाना उसपर खडा करूगा। 'मैंने पहले ही,' उसने कहा, 'उस जमीन का बन्दोवस्त कर लिया है। इस वारे में ग्रपनी सारी योजना मै तय कर चुका हू।' यह सब भी, गनीमत होता, ग्रगर इसमें कुछ सचाई होती। लेकिन सीधी-सादी तथ्य की बात यह थी कि ग्रलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच का पडोसी ग्रन्तोन करासिकोव कोरोल्योव के कारिन्दे को सौ रूवल देने से भी हिचकिचा रहा था। सो विना कुछ करे-धरे बैठक वरखास्त हो गयी। लेकिन ग्रलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच है कि ग्राज दिन भी ग्रपने को सही समझता है, ग्रौर ग्राज भी कपडे के कारखाने का राग ग्रलापता है, लेकिन दलदल का पानी सुखवाना शुरू नही करता।"

"ग्रौर वह ग्रपनी जागीर की कैसे व्यवस्था करता है?"

"हमेशा नये नये तरीके चालू करता है। किसान उसकी वडाई नही करते, लेकिन उनकी वातो पर कान देना वेकार है। ग्रलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच ठीक कर रहे है।"

"यह कैसे, लुका पेत्रोविच? मै तो समझता था कि तुम पुराने तरीको के हिमायती हो।"

"मै—मेरी वात दूसरी है। देखो न, मै न तो कुलीन हू ग्रौर न जमीदार। मै क्या ग्रौर मेरा वन्दोवस्त क्या? फिर काम करने के दूसरे तरीके मुझे मालूम भी नही। मै तो न्याय ग्रौर कानून के सहारे चलता हू ग्रौर वाकी सव भगवान के भरोसे छोड देता हू। नयी पौध के कुलीन

पुराने ढग पसन्द नही करते और मेरी समझ मे वे ठीक करते है यह जमाना ही नये विचारो को अपनाने का है। दुख केवल यह देखकर होता है—युवा लोग जरूरत से ज्यादा दिमागी हो गये है। किसान उनके लेखे जैसे गुडिया है, उन्हे कभी इस करवट कभी उस करवट उलटते-पलटते है, और फिर फेंक देते है। और उनका कारिन्दा, उनका बन्धक चाकर, या कोई जर्मन ओवरसीयर, उन्हे अपने अगूठे के नीचे दबा लेता है। काश कि कोई कुलीन युवक मिसाल बनकर आय और हमे बताय—'देखो, बन्दोबस्त इस तरह किया जाता है!' जाने क्या अन्त होगा? क्या मेरे मरने तक नया बन्दोबस्त देखने को न मिलेगा? यह क्या कि पुराना तो मर गया, लेकिन नये ने जनम नही लिया!"

मेरी समझ में नही आया कि ओवस्यानिकोव को क्या जवाब दू। उसने अपने चारो ओर देखा, मेरे और निकट खिसक आया, और दबे हुए स्वर मे बोला—

"क्या आपने वसीली निकोलायेविच लुबोज्वोनोव के बारे मे सुना, लोग क्या कहते है?"

"नही, मैने कुछ नही सुना।"

"कृपा कर मुझे समझाइये कि वह किस अनोखी जात का जीव है। मेरे पल्ले तो कुछ नही पडता। उसके किसान उसका खाका खीचते है लेकिन उनके किस्सो से मेरी कुछ समझ में नही आता। वह युवा आदमी है, आप जानो। हाल ही मे उसे अपनी मा से विरासत मिली है। हा, तो वह अपनी जागीर में आया। अपने मालिक को ताकने के लिए सारे किसान इकट्ठा हो गये। वसीली निकोलायेविच उनके सामने आया। किसानो ने उसकी ओर देखा—ओह, अजीब नज़ारा था—मालिक कोचवान की तरह प्लश की पतलून पहने था, और उसके जूते ऊपर से छटे थे, बदन पर लाल रग की कमीज थी और कोचवानो जैसा लम्बा कोट। उसने अपनी दाढी बढा रखी थी, और उसकी टोपी और उसका चेहरा बडा अजीव

था—कही ऐसा तो नही कि नशे में धुत्त हो? नही, वह नशे में नही था। और तिस पर भी वह पूरे होश में नही मालूम होता था। 'सलामत रहो यारो,' वह कहता है, 'खुदा तुम्हारी हिफाजत करे।' किसानो ने धरती तक झुककर सलामी दी, लेकिन बोले कुछ नही। आप जानो, उनमें डर पैठने लगा। और वह खुद भी कुछ सहमा-सा मालूम होता था। उसने उनके सामने भाषण-सा देना शुरू किया। 'मै रूसी हू', उसने कहा, 'और तुम भी रूसी हो। और मुझे रुस की हर चीज पसद है। मेरा हृदय रूसी है, और मेरा खून भी रूसी है ' इसके वाद वह यकायक हुकम देता है, 'तो चलो शुरू करो, अव कोई रूसी लोक-गीत होना चाहिए।' किसानो की टागे डर से लरज उठी। उनकी सुध-बुध एकदम हवा हो गयी। उनमें से एक ने, जो कुछ साहसी था, गाना शुरू भी किया, लेकिन वह उसी दम नीचे जमीन पर बैठ गया और दूसरो की ओट हो गया और सबसे ज्यादा हैरानी की वात जो थी वह यह कि जमीदार तो ऐसे हमारे यहा और भी थे, शैतान की भी परवाह न करनेवाले, कहने की जरूरत नही कि पूरे लफगे। कोचवानो जैसे कपडे पहननेवाले, जो नाच में फिरकी बने रहते, गितार के तार झनझनाते, अपने गृह-दासो के साथ गाते और गिलास खनकाते, और अपने किसानो के साथ बैठकर दावते उडाते। लेकिन यह वसीली निकोलायेविच तो लौंडियो जैसा है। हर घडी कितावो में सिर दिये रहता है या लिखता रहता है, या जोरो से कविता अलापता रहता है। कभी किसी से बात नही करता। शरमाता है। वाग में अकेला टहलता है। मानो ऊव या उदासी में डूबा हो। पुराना कारिन्दा शुरु शुरू में तो एकदम सन्ना गया था। वसीली निकोलायेविच के आने से पेश्तर सभी किसानो के घर जाकर उसने हाजिरी वजायी, उनके आगे माथा झुकाया—जैसे विल्ली जानती हो कि किसका मक्खन उसने चट किया है। मन में सोचते, 'वहुत वनते थे मेरे मित्र! अव सब उगलना पडेगा, दोस्त! नाक पकडकर तुझे अव वे घुमायेंगे, डाकू कही के!' लेकिन सो कुछ नही

हुआ, और जो हुआ सो—ओह, आपको मैं कैसे बताऊ? ईसा मसीह भी उसका रहस्य नही समझा सकते। हा तो वसीली निकोलायेविच कारिन्दे को अपनी हाजिरी मे तलब करता है और कहता है लाज से सकुचाते और, आप जानो, हाफते हुए, 'ईमानदारी से काम करो, और किसी को मत सताना—समझे?' और उस दिन से आज तक फिर कभी उसने उसे अपने सामने तलब नही किया। अपनी ही जागीर मे वह अजनबी की तरह रहता है। सो, कारिन्दे ने फिर अपनी मनमानी करनी शुरू कर दी, और वसीली निकोलायेविच के सामने जाने की किसानो की हिम्मत नही होती—बेचारे डरते है। और देखो एक और अचरज की बात क्या हुई—मालिक सिर झुकाकर किसानो को सलाम तक करता है और इनायत की नजर से उन्हे देखता है, लेकिन किसानो की अन्तडिया डर से मानो उलट-पलट होने लगती है। अब आप ही बताइये, श्रीमान, कि इस अजीब हालत को आप क्या कहेगे? या तो बुढापे के मारे मेरी बुद्धि सठिया गयी है, या फिर जो हो, मेरी समझ मे कुछ नही आता!"

मैंने ओवस्यानिकोव से कहा कि लुबोज्वोनोव को, शायद कोई बीमारी है।

"बीमारी, वाह! वह उतने ही चौडे-चकले है जितने कि लब-तडग और, इतनी कम उम्र होने पर भी, चेहरा खूब रोबदार है भगवान ही जाने!" कहते हुए ओवस्यानिकोव ने एक गहरी उसास ली।

"बस करो, कुलीनो को छोडो," मैंने कहा, "अब यह बताओ, लुका पेत्रोविच, कि माफीदारो के बारे मे तुम क्या कहते हो?"

"ओह नही, उनकी बात मुझसे न पूछो," उसने हडबडी में कहा, "यो सच बताने को तो मै बता सकता हू लेकिन फायदा?" हवा मे हाथ हिलाते हुए ओवस्यानिकोव ने कहा। "अच्छा हो कि अब कुछ चाय-पानी कर लिया जाय हम साधारण किसान है, बस और कुछ

नही। और यो भी सोचकर देखो तो इसके सिवा हम और हो भी क्या सकते है?"

वह चुप हो गया। चाय आयी। तत्याना इल्यीनिश्ना अपनी जगह से उठी और हमारे निकट आकर बैठ गयी। सारी शाम, बिना कोई आवाज किये, अनेक बार वह बाहर उठकर गयी और वैसे ही चुपचाप लौट आयी। कमरे में सन्नाटा छाया था। ओवस्यानिकोव, गम्भीर मुद्रा मे और इत्मीनान के साथ, प्याले के बाद प्याला खाली कर रहा था।

"आज मीत्या हमारे घर आया था," दबी आवाज मे तत्याना इल्यीनिश्ना ने कहा।

ओवस्यानिकोव ने भौहे सिकोडी।

"किस लिए?"

"माफी मागने।"

ओवस्यानिकोव ने सिर हिलाया।

"अब आप ही बताओ," मेरी ओर मुडते हुए उसने कहना जारी रखा, "अपने इन नातेदारो का कोई क्या करे? और उन्हे एकदम छोड देना भी असम्भव है यही देखो, खुदा ने मुझे एक भतीजा दिया है। दिमाग की उसके पास कमी नही है—काफी चुस्त लडका है—इससे मै इन्कार नहीं करता। पढाई मे अच्छा है, लेकिन मै उससे कुछ ज्यादा भले की उम्मीद नहीं करता। सरकारी दफ्तर मे वह गया, अपने पद को लात मारी—ज्यादा तेजी से वहा आगे नही बढ पाया क्या वह कुलीन है? लेकिन कुलीन भी तो एकदम पलक झपकते जेनरल नही बन जाते। तो वह अब बिना काम-धधे के घूमता फिरता है। इतना ही होता तब भी कोई बात नहीं थी, लेकिन उसे तो मुकदमेबाजी का चसका लगा है। किसानो के लिए अर्जिया लिखता है, दरख्वास्ते भेजता है, सोत्स्की* को

---

*थानेदार की मदद करने के लिए किसानो द्वारा चुना गया आदमी।

तस्वीरें बनाता है, अजीवपन्नो को काटो में घसीटता है, दारूघरो मे जाता है, नगर के लोगो और मेहतरो के साथ सरायो में बैठता है। वह दिन दूर नही जब उसे इस सब का मजा चखना पडेगा। कान्स्टेबल अधिकारी और पुलिस इंस्पेक्टर उसे कई बार धमकी भी दे चुके है। लेकिन भाग्य से वह टंटे को सीधा करना जानता है, और वे उससे खुश हो जाते है। लेकिन इसके लिए उसे उनकी चिलम भरनी पडती है .. पर ठहरो, क्या वह तुम्हारे छोटे कमरे में इस वक्त मौजूद तो नही?" अपनी पत्नी की ओर मुडते हुए उसने कहा। "मै तुम्हे जानता हू, समझी! तुम्हारा दिल इतना नरम है कि हमेशा इसी की हिमायत करोगी।"

तत्याना इल्यीनिश्ना ने अपनी आखे झुका ली, मुसकरायी और लाज से लाल पड गयी।

"तो यह कहो कि मैंने ठीक कहा है," ओवस्यानिकोव कहता गया। "तुम उसे और बिगाड रही हो। अच्छा तो जाओ, और उसे यहा ले आओ. तो ठीक, अपने इस नेक मेहमान की खातिर मै उस बेवकूफ को माफ कर दूगा। जाओ, और उससे यहां आने के लिए कहो।"

तत्याना इल्यीनिश्ना दरवाजे के पास गयी और ऊची आवाज मे बोली, "मीत्या!"

मीत्या – अठाईस वर्प का युवक, लम्बा कद, बढिया काठी और घुघराले बाल – कमरे में आया और मुझे देखकर देहली में ही रुक गया। जर्मन चाल के वह कपडे पहने था, लेकिन कधो के ऊपर जो बेडौल फुलावट बनी थी उसे देखकर यही सिद्ध होता था कि किसी रूसी दरजी की कैंची की यह करामात है।

"अरे, आओ, चले आओ," वृद्ध ने कहना शुरू किया, "इतना शरमाते क्यो हो? तुम्हे अपनी चाची का शुक्रगुजार होना चाहिए – तुम्हे माफ कर दिया गया है। हा तो, श्रीमान, जरा इसपर इनायत करे," मीत्या की ओर इशारा करते हुए वह कहता गया। "यह मेरा सगा भतीजा

है, लेकिन मेरी इसके साथ कतई पटरी नही वैठती। जाने दुनिया पर क्या गाज गिरनेवाली है।" (सिर झुकाकर हमने एक-दूसरे का अभिवादन किया।) "ज़रा यह तो वताओ कि अव किस झंझट में अपने को फसाया है? किस वात को लेकर वे तुम्हारे ख़िलाफ शिकायत दर्ज कर रहे हैं? ज़रा सव समझाकर वताओ।"

लेकिन मीत्या ने, प्रत्यक्षत, मेरे सामने मामले को समझाने और अपनी सफाई पेश करने के लिए व्यग्रता प्रकट नही की।

"फिर कभी, चाचा जी," वह वुदवुदाया।

"नही, फिर कभी नही, वल्कि अभी," वृद्ध कहता गया। "तो यह कहो कि इन महानुभाव के सामने तुम्हे शरम मालूम होती है। लेकिन अच्छा है, तुम इसी लायक हो। हा तो वोलो, शुरू करो, हम सुन रहे हैं।"

"शरम वह करे जिसने शरम का काम किया हो," अपने सिर को झटका देते हुए मीत्या ने जोश के साथ कहना शुरू किया। "इस वात का फैसला, चाचाजी, मैं आप पर ही छोडता हू। रेशेतीलोव के कुछ माफीदार मेरे पास आये और कहा, 'भाई, हमारी रक्षा करो।'—'क्यो, हुआ क्या?'—'मामला यह है—हमारे अनाज की खत्तिया एकदम चौकस थी—सच, इतनी चौकस कि कोई उगली नही उठा सकता। अव अचानक सरकारी इन्सपैक्टर फरमान लेकर आता है। कहता है, खत्तियो का मुआयना करेगा। उसने उनका मुआयना किया और वोला—'तुम्हारी खत्तिया गडवड है। भारी लापर्वाही की गयी है। मेरा फर्ज़ है कि अफसरो से रिपोर्ट करू।' 'लेकिन लापर्वाही कैसी, कुछ वताया नही?'—'ज्यादा टाग न अडाओ, मैं अपना काम जानता हू,' उसने कहा . सो हम मिलकर वैठे और तय किया कि अफसर को कुछ दे दिला दिया जाय। लेकिन वृद्ध प्रोख़ोरिच ने हमें रोका, उसने कहा, 'नही, इससे तो उसके मुह और ख़ून लग जायेगा। छोडो, आखिर न्याय क्या एकदम उठ गया है?' हमने वुढऊ

की बात रखी, और अफसर का पारा चढ गया। उसने शिकायत दाखिल कर दी, और रिपोर्ट लिखी। सो अब हमें उसके अभियोगो का जवाब देने के लिए तलब किया गया है। 'लेकिन तुम्हारी खत्तिया क्या सचमुच मे चौकस हैं?' मैंने पूछा। 'ईश्वर जानता है कि वे चौकस हैं, और कानून की रू से जितना अनाज उनमें होना चाहिए उतना मौजूद है।'– 'तब तो,' मैंने कहा, 'तुम्हे डरने की जरूरत नही।' और मैंने उनके लिए एक दस्तावेज तैयार कर दी। यह अभी मालूम नही हुआ कि किस के पक्ष में फैसला होगा। और जहा तक उन शिकायतो का सबध है जो इस मामले को लेकर उन्होने आपसे मेरे बारे में की है–यह आसानी से समझा जा सकता है कि हर आदमी की कमीज उसकी अपनी चमडी के ज्यादा नज़दीक होती है।"

"बेशक, हरेक की–लेकिन तुम्हारी प्रत्यक्षत नही," वृद्ध ने दबे स्वर में कहा। "लेकिन यह तो बताओ कि शुतोलोमोव के किसानो के साथ तुम क्या क्या षड्यन्त्र रचते रहे हो?"

"ओह, आपको वह कैसे मालूम हुआ?"

"इससे क्या, मुझे मालूम है।"

"और इस मामले मे भी मैं सही हू–इसका भी आप खुद फैसला करना।' पडोस के एक जमीदार बेस्पान्दिन ने शुतोलोमोव किसानो की आठ एकड से भी ज्यादा जमीन जोत डाली है। 'यह जमीन मेरी है,' ज़मीदार कहता है। शुतोलोमोव के किसान लगान पर खेती करते हैं। उनका जमीदार विदेश चला गया है। सो उनके लिए कौन खडा हो? खुद आप ही बताइये? लेकिन ज़मीन उनकी है–यह एकदम पक्की बात है। युगो युगो से वे इसके साथ बधे हैं। सो वे मेरे पास आये और बोले, 'हमारे लिए एक दरख़ास्त लिख दो।' सो मैंने लिख दी। बेस्पान्दिन को इसकी खबर लगी और उसने मुझे धमकिया देना शुरू कर दिया। 'उस मीत्या की एक एक हड्डी मैं तोड दूगा, उसका सिर चाक कर दूगा।'

हमें भी देखना है कि वह किस तरह इस सिर को धड़ से अलग करता है। अभी तक तो वह अपनी जगह पर ही बना हुआ है।"

"बस बस, ज्यादा शेखी न बघारो! तुम तो पूरे जनूनी हो मुसीबत बुला रहे हो," वृद्ध ने कहा। "एकदम पागल!"

"क्यो, चाचाजी, खुद आपने मुझे क्या सीख दी थी?"

"जानता हू, जानता हू कि तुम क्या कहना चाहते हो," ओवस्यानिकोव ने उसे रोकते हुए कहा। "बेशक, आदमी को ईमानदारी से रहना चाहिए और उसका कर्तव्य है कि अपने पडोसी की वह मदद करे। और यह कि कभी कभी खुद अपने साथ भी उसे कड़ाई बरतनी चाहिए। लेकिन क्या तुम हमेशा ऐसा व्यवहार करते हो? बोलो, क्या वे तुम्हे शराबखाने में नहीं ले जाते? क्या वे तुम्हारी खातिर-तवाजह नही करते, तुम्हें सलामी नही झुकाते? 'मीत्या,' वे कहते हैं, 'हमारी मदद करो, और तुम देखोगे कि हमारी कृतज्ञता कोरी कृतज्ञता नही है।' और वे चादी का एक रूबल या नोट तुम्हारे हाथ में खिसका देते हैं। क्यो, क्या ऐसा नही होता? बोलो, क्या ऐसा नही होता?"

"बेशक, इसके लिए मैं कुसूरवार हू," मीत्या ने थोडा सकपकाते हुए कहा, "लेकिन मैं गरीबो से कुछ नही लेता, और अपनी आत्मा के खिलाफ कुछ नही करता।"

"ठीक, तुम अब उनसे कुछ नही लेते। लेकिन जब तुम खुद तगहाल होगे, तब लेने लगोगे। तुम अपनी आत्मा के खिलाफ काम नही करते–धत् तेरी! बेशक, वे सब तो जैसे सन्त होगे, जिनकी तुम रक्षा करने जाते हो? क्या बोरिस पेरेखोदोव को भूल गये? उसकी देख-सभार किसने की? बोलो, कौन था वह जिसने उसे अपने दामन में जगह दी?"

"पेरेखोदोव ने, बेशक, अपनी गलती से ही मुसीबत मोल ली।"

"उसने सरकारी खजाने का रुपया गबन किया। यह कोई हंसी ठट्ठा नही है!"

"लेकिन, चाचाजी, जरा सोचो तो। उसकी गरीबी, उसके बाल-बच्चे . "

"गरीबी, गरीबी   पहले दर्जे का वह पियक्कड और झगडालू है। यह है उसकी असलियत ।"

"मुसीबतो में उसे पीने की लत पड गयी," अपनी आवाज को धीमी करते हुए मीत्या ने कहा।

"मुसीबतो के मारे? वाह! ठीक, अगर तुम्हारे हृदय मे उसके लिए इतनी दया थी तो तुम उसकी मदद कर सकते थे। लेकिन उस पियक्कड के साथ खुद शराबखाने में जा जाकर बैठने की भला क्या जरूरत थी? वह बोलता बहुत बढिया था . लेकिन यह कौनसा बडा हुनर है!"

"वह बहुत भला आदमी था।"

"तुम्हारे लेखे तो सभी अच्छे है। लेकिन उसे भेजा था न   तुम खुद जानती हो.." अपनी पत्नी की ओर मुडते हुए ओबस्यानिकोव ने कहा।

तत्याना इल्यीनिश्ना ने सिर हिलाया। "हा तो तुम इधर कहा रम रहे थे?" वृद्ध ने फिर सूत्र पकडा।

"शहर गया हुआ था।"

"और मै शर्त बदता हू, तुम वहा बिलियर्ड खेलने, चाय उडाने, गिटार बजाने, यहा से वहा सरकारी दफ्तरो में दौडने, पिछवाडे की कोठरियो में बैठकर अरजिया लिखने, सौदागरो के बेटो के साथ अकडकर चलने के सिवा और कुछ नही करते रहे? बेशक, यही करते रहे? बोलो, क्या कहते हो?"

"है तो कुछ ऐसा ही," मीत्या ने मुसकराते हुए कहा। "लेकिन . ओह! मै एकदम भूल ही गया, फून्तिकोव अन्तोन पारफेनिच ने अगले रविवार को आपको भोजन की दावत दी है।"

"उस मोटी तोदवाले के यहा कौन जाय। वह कीमती मछलिया परसता है और उनपर बदबूदार मक्खन लगाता है। भगवान उसकी रक्षा करे!"

"और फेदोस्या मिखाइलोवना से भी मैं मिला था।"

"फेदोस्या कौन?"

"वह अब जमीदार गारपेन्चेन्को की बन्धक दासी है वही ज़मीदार जिसने नीलाम में मिकुलीनो जागीर खरीदी थी। फेदोस्या मिकुलीनो की रहनेवाली है। मास्को में दरजी का काम करती थी, सेवा करके लगान चुकाने के बदले धन देती थी और अपनी सेवकाई का यह धन—एक सौ साढे बयासी रूबल प्रति वर्ष—पूरे का पूरा उसने अदा किया और वह अपने धधे की माहिर है, मास्को में उसे खूब आर्डर मिलते थे। लेकिन अब गारपेन्चेन्को उसे यही रखता है, लेकिन उससे कोई काम नही कराता। वह अपनी आज़ादी खरीदने के लिए तैयार है, मालिक से भी उसने इसके लिए कह रखा है, लेकिन वह कोई निश्चित जवाब नही देता। चाचाजी, आपकी गारपेन्चेन्को से जान-पहचान है, सो क्या आप उसकी सिफारिश नही कर सकते? और फेदोस्या अपनी आजादी का मूल्य भी खासा देगी।"

"तुम्हारे पैसो से तो नही? अच्छी बात है, मैं उससे कह दूगा, ज़रूर कह दूगा। हालाकि मुझे भरोसा नही," चेहरे पर परेशानी का भाव लिये वृद्ध कहता गया, "यह गारपेन्चेन्को, खुदा उसे बख्शे, पूरा मगरमच्छ है। वह हुडिया खरीदता है, सूद पर रुपया देता है, नीलाम में जागीरे खरीदता है हमारे इलाके में कौन उसे लाया? उफ, ये नये आनेवाले मुझे बिल्कुल नही सुहाते। किसी बात का जल्दी जवाब देना तो जानते ही नही। फिर भी देखें क्या होगा।"

"आप कोशिश करे तो हो जायेगा, चाचाजी।"

"अच्छी बात है, मैं करूगा। केवल तुम ख्याल रखना, खुद अपना

ख्याल रखना। बस, बस ज्यादा सफाई देने की कोशिश न करो। भगवान तुम्हारी रक्षा करे! केवल आगे का ख्याल रखना, नही तो मीत्या—मेरी बात गांठ-बांध लो—तुमपर मुसीबत आयेगी। सच कहता हू, तुम्हारा बुरा हाल होगा। मै हमेशा तुम्हे अपनी ओट मे नही कर सकता और फिर मै कुछ इतना प्रभावशाली आदमी भी नही हू। अब जाओ, खुदा तुम्हारा भला करे।"

मीत्या चला गया। तत्याना इल्योनिश्ना भी उसके साथ ही उठकर चल दी।

"अब उसे चाय पिला दो," ओवस्यानिकोव ने उससे चिल्लाकर कहा। "लडका ऐसा बेवकूफ नही है," वह कहता गया, "और दिल का भी बहुत अच्छा है। लेकिन मै डरता हू कि कही मगर, मुझे माफ करना, जाने कहा कहा की बाते बकता हुआ इतनी देर से मै आपके कान खा रहा हू।"

हाल का दरवाजा खुला। मखमली फ्रॉक-कोट में पके बालो वाले एक नाटे मुख्तसिर आदमी ने प्रवेश किया।

"ओह, फ्रान्स इवानिच," ओवस्यानिकोव ने जोरो से कहा। "आओ, भाई, आओ! कहो सब कुशल है न?"

सहृदय पाठक मुझे अनुमति दें कि इन सज्जन से आपका परिचय करा दिया जाय।

फ्रान्स इवानिच लेज्योन (Lejeune), मेरा पडोसी और ओरेल प्रात का जमीदार था। रूसी कुलीन के प्रतिष्ठित पद तक वह काफी निराले ढग से पहुचा था। ओरलियन्स में फ्रासीसी माता-पिता से उसका जन्म हुआ था और नेपोलियन ने जब रूस पर आक्रमण किया, तब उसकी सेना के साथ एक ढोलची के रूप में आया था। शुरू शुरू मे तो मामला ठीक चला, और हमारा यह फ्रासीसी, अपना सिर ऊचा उठाये, मास्को पहुच गया। लेकिन वापसी की यात्रा में बेचारा m-r Lejeune पाले

से आधा जमा हुआ और ढोल के वगैर, स्मोलेन्स्क के कुछ किसानों के हाथो में पड गया। किसानो ने रात-भर उसे कपडे की एक गिल में बन्द रखा, और अगली सुवह उसे एक नदी पर ले आये जहा वरफ में एक सूराख हो गया था। इसके वाद उन्होने de la grrande armée* ढोलची से अनुरोध शुरू किया कि जरा अपना करतव दिखाय—दूसरे शब्दो में यह कि सूराख में से नीचे जाकर दिखाय। M-r Lejeune ने यह प्रस्ताव मजूर नही किया, उल्टे स्मोलेन्स्क के किसानो को फ़ासीसी वोली में, फुसलाने लगा कि वे उसे ओरलियन्स जाने दें। "वहा, messieurs," उसने कहा, "मेरी मा, une tendre mère** रहती है।" लेकिन किसानो ने, शायद ओरलियन्स की स्थिति सवधी अपने भौगोलिक अज्ञान के कारण वार वार यही कहा कि नदी के वहाव के साथ साथ तैरते हुए तुम ग्निलोतेरका नदी के रास्ते जो वल खाती हुई जाती है अपने ठिकाने पर पहुच जाओगे, उन्होने उसकी गुद्दी और पीठ पर हल्के आघात देकर उसे वढावा देना भी शुरू कर दिया, लेकिन तभी अचानक घटियो की आवाज सुनाई दी और लेज्योन वेहद खुश हुआ जव एक भीमाकार वर्फ-गाडी वाध पर आ लगी। वर्फ-गाडी के पिछले हिस्से में, जो वेहद ऊचा था, धारीदार कालीन विछा था और तीन चितकवरे घोडे उसमें जुते थे। गाडी में एक जमीदार वैठा था—हट्टा-कट्टा, चुकन्दर-सा लाल मुह और भेडिये की खाल का फरकोट पहने।

"ए, यहा क्या कर रहे हो?" उसने किसानो से पूछा।

"एक फ़ासीसी को नदी के सुपुर्द कर रहे है, श्रीमान।"

"आह!" जमीदार ने उपेक्षा से कहा और मुह फेर लिया।

"Monsieur! Monsieur!" वह वेचारा चीख उठा।

---

*शाहशाही सेना के।

**दयालु मा।

"ओह, ओह!" निजकी के स्वर में भेड़िये की खाल का फरकोट पहने जमींदार ने कहा। "बीस राष्ट्रों का दलबल लेकर तुम रूस में घुस आये, मास्को को जलाया, इवान महान् के घंटाघर के क्रॉस को – कम्बख्त जंगली कहीं के – नोच डाला, और अब – मोशिये, मोशिये – वाह! अब तुम दुम हिलाते हो! यह तुम्हें अपने पापों की सज़ा मिल रही है। चलो, फील्का, आगे बढ़ो।"

घोड़ों ने हरकत की।

"लेकिन रुको ज़रा," जमींदार ने फिर कहा, "ओ मोशिये, तुम कुछ संगीत-वंगीत भी जानते हो?"

"Sauvez moi, sauvez moi, mon bon monsieur!"* लेज्योन ने दोहराया।

"वाह, क्या मनहूस लोग हैं। एक भी तो रूसी नहीं जानता। मूज़ीक, मूज़ीक सावे मूज़ीक वू? सावे? ए, बोलो, बोलो! कौम्प्रेने? सावे मूज़ीक वू? पियानो, ज्हुए सावे?"

आखिर लेज्योन की कुछ समझ में आया कि जमींदार क्या कहना चाहता है, और वह बार बार सिर हिलाने लगा।

"Oui, monsieur, oui, oui, je suis musicien, je joue tous les instruments possibles! Oui, monsieur Sauvez moi, monsieur!"**

"तब ठीक, अपने भाग्य को दुआ दो!" जमींदार ने जवाब दिया। "ए, इसे छोड़ दो। और यह लो बीस कोपेक, वोद्का के लिए!"

"धन्यवाद, जी, धन्यवाद। यह लो, इसे ले जाओ, मालिक!"

---

*मेरी जान बचाइये, मेरी जान बचाइये, भले साहब!

**जी हुज़ूर, जी, जी, मैं संगीतकार हूं, मैं भिन्न भिन्न वाद्य बजा सकता हूं! जी हुज़ूर! मेरी जान बचाइये, हुज़ूर!

उन्होंने लेज्योन को बर्फ-गाडी में बैठा दिया। खुशी के मारे वह हाफ रहा था, आसू बहा रहा था, थरथरा रहा था, वार वार सलाम कर रहा था, जमीदार, कोचवान और किसानो के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा था, गुलावी फीतो से लैस हरी जाकेट के सिवा वह और कुछ नही पहने था, और पाला वुरी तरह उसे सुन्न किये देता था। जमीदार ने चुपचाप उसके नीले और सुन्न हुए अगो पर नजर डाली, अभागे को अपने फरकोट में लपेटा और उसे घर ले गया। घर के सारे लोग बाहर दौडे आये। फ्रासीसी का पाला दूर किया, उसे खिलाया-पिलाया, कपडे पहनाये। जमीदार उसे अपनी लडकियो के पास लिवा ले गया।

"यह देखो, बच्चियो," उसने कहा, "तुम्हारे लिए मास्टर लाया हू। तुम हमेशा मुझे तग करती थी कि तुम्हें सगीत और फ्रासीसी वोली सिखाने के लिए कुछ करू। सो यह लो, तुम्हारे लिए यहा एक फ्रांसीसी मौजूद है, और यह पियानो बजाना भी जानता है इधर आओ, मोशियें," एक छोटे-से नगण्य पियानो की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "अपनी कला का ज़रा नमूना तो दिखाओ, ज्हुए!" यह पियानो पाच साल पहले, एक यहूदी से खरीदा गया था जो दर असल ओडीकोलोन को वेचा करता था।

स्टूल पर बैठते समय लेज्योन का हृदय डूब चला—अपने जीवन में उसने पियानो को कभी छुआ तक नही था।

"ज्हुए, ज्हुए!" जमीदार ने दोहराया।

जब कुछ नही सूझा तो वेचारे ने सुरो पर इस तरह उगलिया पटकनी शुरू की जैसे ढोल बजा रहा हो, एकदम अधाधुध! "मै पूरी उम्मीद करता था," बाद में वह बताया करता, "कि मेरा मुक्तिदाता अभी मेरी गरदन दबोचकर मुझे घर से निकाल बाहर करेगा।" लेकिन, अनमने

वादक को भारी हैरानी हुई जब जमीदार, पहले तो कुछ देर रुका रहा, फिर आगे बढकर प्रसन्न हृदय से उसके कधों को थपथपाया।

"खूब, बहुत खूब!" उसने कहा। "तुम्हारे हुनर की बानगी मिल गयी। अब जाकर आराम करो।"

एक पखवारे के भीतर ही लेज्योन इस जमीदार से एक दूसरे ज़मीदार के पास चला गया। यह ज़मीदार धनी और सुसस्कृत आदमी था। अपनी खुश तबीयत और कोमल स्वभाव की बदौलत वह उसका मित्र बन गया, उसकी एक सरक्षिता से उसने शादी की, सरकारी दफ्तर में प्रवेश किया, तरक्की कर कुलीनो के पात मे पहुच गया, ओरेल के एक ज़मीदार अवकाश-प्राप्त घुडसवार और कविता बनानेवाले जमीदार लोबिजान्येव से उसने अपनी लडकी का विवाह किया और खुद ओरेल मे आकर बस गया।

यह वही लेज्योन—या फ्रान्त्स इवानिच, जैसा कि उसे अब बुलाया जाता है—जो मेरी मौजूदगी में ओवस्यानिकोव से मिलने आया था। इन दोनो में मित्रता का व्यवहार था।

लेकिन मेरे साथ ओवस्यानिकोव के यहा बैठे बैठे शायद पाठक उकता चुके होगे, सो अब मैं मौन धारण करता हू।

ल्गोव

"चलिये, ल्गोव चले," येरमोलाई ने जिससे पाठक पहले ही परिचित है, एक दिन मुझसे कहा। "वहा हम जी भरकर बत्तखो का शिकार कर सकते है।"

हालाकि जगली बत्तखें सच्चे शिकारी के लिए कोई खास आकर्षण नही रखती, फिर भी, अन्य शिकार उन दिनो उपलब्ध न होने के कारण (शुरू सितम्बर का महीना था, स्नाइप-पक्षी अभी नही आये थे और तीतरो के पीछे खेतो में दौडते दौडते मै ऊब गया था) अपने शिकारिये का सुझाव मैने मान लिया, और हम ल्गोव के लिए चल दिये।

ल्गोव स्तेप में स्थित एक काफी बडा गाव है। यहा पत्थर का एक बहुत प्राचीन गिरजा है। गिरजा केवल एक गुम्बदी है। रोसोता के किनारे–जो कि एक छोटी दलदली नदी है–दो पन-चक्किया खडी है। ल्गोव से पाच मील परे यह नदी एक चौडे दलदली जोहड का रूप धारण कर लेती है जिसके किनारो पर, और कही कही बीच में भी, नरकटो के झाड-झखाड उगे है। यहा खाडियो में, या कहिये कि नरसलो के बीच चहबच्चो में, सभी जात और रूप-रग की–क्वैकी, अर्द्ध-क्वैकी, नुकीली दुम, ननकी और डुबकिया आदि–ढेर की ढेर और अनगिनती बत्तखें रहती और अण्डे-बच्चे देती है। छोटे छोटे झुण्डो में वे हर घडी पानी पर इधर से उधर फरफराती और तैरती रहती है, और गोली के दगते ही उनके दल-बादल इस तरह हवा में उठते है कि शिकारी, बरबस ही एक हाथ से अपनी

टोपी को दवोचता और मुह से लम्बी 'हिश!' कह उठता है। येरमोलाई के साथ मैं किनारे किनारे चलने लगा। लेकिन सर्वप्रथम तो यह कि बत्तख का स्वभाव चौकन्ना होता है और तट के काफी निकट वह मिलती नही और दूसरे अगर कोई भूली-भटकी तथा अनुभवहीन ननकिया बत्तख अपने-आपको खतरे में डालकर अपनी जान से हाथ धो भी वैठती है तो हमारे कुत्ते उसे घने नरसलो के वीच में से वाहर नही निकाल पाते। जी-जान से कोशिश करने पर भी न तो वे तैर पाते हैं और न ही तलहटी मे डग-भर पाते हैं। पल्ले कुछ नही पडता, सिवा इसके कि वे—बेकार ही—पैने नरसलो में अपनी कोमल थूथनियो को लहूलुहान कर लेते हैं।

"नही," अन्त में येरमोलाई वोला, "इस तरह काम नही चलेगा। हमारे पास नाव होनी चाहिए। चलिये, ल्गोव वापिस चले।"

हम लौट पडे। केवल कुछ ही डग चले होगे कि सरपत की घनी झाडी की ओट में से एक मनहूस-सी शकल का शिकारी कुत्ता हमारी दिशा में वाहर लपक आया, और उसके पीछे मझोले कद का एक आदमी प्रकट हुआ। वह नीले रग का काफी फटा पुराना फ्रॉक-कोट, पीली वास्कट और बेरग-सी भूरी पतलून पहने था जिसकी मोहरिया, उतावली में, ऊचे बूटो के भीतर खोसी हुई थी। ऊचे बूटो में जगह जगह छेद थे। गले में वह एक लाल रूमाल लपेटे था और कधे पर इकनाली बन्दूक टिकी थी। हमारे कुत्तो ने, अपने जन्मजात स्वभाव के अनुसार, हस्व मामूल अन्दाज में अपने नये साथी को सूघना शुरू किया जो, प्रत्यक्षत, सकपका गया था और अपनी दुम को टागो के वीच दवाये, कानो को पीछे की ओर लटकाये और अपनी बत्तीसी को निपोरता एक के वाद एक बरावर चक्कर काट रहा था। अजनवी इस वीच हमारे निकट आ गया और अत्यन्त शिष्टता के साथ उसने माथा झुकाया। देखने में वह पचीस-एक वर्ष का मालूम होता था। उसके सुनहरे और लम्वे बाल क्वास में पूरी तरह सरावोर हो रहे थे और चीकट गुच्छो में खड़े थे, उसकी छोटी छोटी भूरी आखो में मिलनसारी की

चमक थी, उसके जवडे पर काला रूमाल वधा था—जैसे उसके दातो में दर्द हो, और उसका चेहरा मुसकानो तथा मिलनसारी की प्रतिमूर्ति वना हुआ था।

"अगर इजाज़त हो तो मै अपना परिचय दे दू," मृदु और हृदय को कुरेदनेवाली आवाज़ में उसने कहना शुरू किया। "मेरा नाम व्लादीमिर है, इधर का ही रहनेवाला हू . शिकारी हू मेरे कानो में जब यह पडा कि महानुभाव इधर आये हैं, कि महानुभाव का इरादा हमारे जोहड मे शिकार खेलने का है, तो मैंने तय किया कि—अगर आपको नागवार न गुजरे तो—अपनी सेवाए आपको अर्पित करू।"

शिकारी व्लादीमिर ने ये शब्द कुछ ऐसे ठेठ अन्दाज़ में कहे मानो एक देहात का युवक अभिनेता नाटक के मुख्य प्रेमी की भूमिका में अपना पार्ट अदा कर रहा हो। मैंने उसका प्रस्ताव मान लिया और ल्गोव पहुचते न पहुचते उसका समूचा इतिहास जानने में मै सफल हो गया। वह एक उन्मुक्त हुआ गृह-दास था। जब वह निरा बच्चा ही था तब सगीत का रियाज उसे कराया गया था, फिर अरदली वनाया गया। वह पढ-लिख सकता था और—जहा तक मै मालूम कर सका—कुछ घासलेटी पुस्तके उसने पढी थी, और अब जब कि न तो उसके पल्ले फूटी कौडी थी और न ही वह कोई लगा-वधा काम करता था, आकाश कुसुमो या खुदा की राह मे जो भी मिल जाय उसके सहारे—अगर इसे सहारा कहा ही जा सके—अन्य कतिपय रूसियो की भाति उसका जीवन भी अधर में लटका था। असाधारण नफासत के साथ वह वाते करता था और अपनी सलीकेदारी पर उसका गर्व छिपाये नही छिपता था। स्त्रियो पर भी वह निश्चय ही लट्टू होता रहा होगा, और ज़रूर वे भी उसे चाहती होगी—रूसी लडकिया वढिया वार्तालाप पसद करती हैं। अन्य चीज़ो के अलावा उसकी वातो से मालूम हुआ कि कभी कभी वह आस-पास के जमीदारो के यहा चक्कर लगाता था, नगर में अपने मित्रो के पास जाकर

दिखता था, और उनके साथ ताश खेलता था। राजधानी में भी उसकी जान-पहचान के लोग मौजूद थे। मुसकराने मे उसे कमाल हासिल था और उसकी मुसकान अत्यन्त विविधतापूर्ण होती थी। और उसकी वह विनम्र तथा सभली हुई मुसकान जब वह दूसरे की बात सुन रहा होता, उसके चेहरे पर खास तौर से फबती थी। वह बडे ध्यान से सुनता, पूर्ण सहमति जताता, लेकिन अपनी गरिमा की भावना को ओझल न होने देता। उसे देखकर यह चेत बराबर बना रहता कि मौका पडने पर, खुद वह अपने विश्वासो को भी व्यक्त कर सकता है। येरमोलाई ने, जो कोई खास परिष्कृत आदमी नही है, और बारीकियो से एकदम शून्य, फूहड घनिष्ठता के साथ उसे सम्बोधित करना शुरू किया। जवाब देते समय बडे कोमल व्यग के साथ जब व्लादीमिर 'श्रीमान' शब्द का प्रयोग करता तो देखते ही बनता।

"मुह पर यह पट्टी क्यो बाध रखी है?" मैंने उससे पूछा। "क्या दातो में दर्द है?"

"नही जी," उसने जवाब दिया, "यह लापर्वाही का अत्यन्त घातक नतीजा है। मेरा एक मित्र था, खूब भला, लेकिन शिकार के नाम कोरा, जैसा कि कभी कभी होता है। हा जी, तो एक दिन उसने मुझसे कहा, 'सुनो मित्र, मुझे भी शिकार पर ले चलो। मै यह जानने के लिए उत्सुक हू कि इसमें कैसा मजा आता है।' एक साथी ने जब यह कहा तो मै भला इन्कार कैसे करता। मैंने उसके लिए एक बन्दूक प्राप्त की और उसे लेकर शिकार के लिए चल दिया। हमने अच्छी तरह गोलिया दागी, और अन्त में सोचा कि अब सुस्ता लिया जाय। मै एक पेड के नीचे बैठ गया, लेकिन वह बजाय आराम करने के अपनी बन्दूक से खेलने लगा। बन्दूक का मुह मेरी ओर था। मैंने उसे मना किया, लेकिन अपने अनाडीपन में उसने मेरे शब्दो पर ध्यान नही दिया। बन्दूक दग गयी, और मै अपनी आधी ठोडी तथा दाहिने हाथ की तर्जनी से हाथ धो बैठा।"

हम लोग ल्गोव पहुचे। व्लादीमिर और येरमोलाई दोनो का यह निश्चित मत था कि नाव के विना शिकार पल्ले नही पटेगा।

"सुचोक* के पास चपटी पेंदेवाली नाव है," व्लादीमिर ने कहा। "लेकिन यह नही मालूम कि उसने उसे कहा छिपा रखा है। हमें उसके पास चलना चाहिए।"

"किसके पास?" मैंने पूछा।

"एक आदमी के पास। सुचोक उसका उपनाम रखा हुआ है। यही रहता है।"

येरमोलाई के साथ व्लादीमिर सुचोक के यहा गया। मैंने उनसे कहा कि गिरजे के पास मैं उनका इन्तजार करुगा। कब्रिस्तान में कब्रो पर लगी शिलाओ को देखते देखते एक चौकोर समाधि पर मेरी नज़र पडी, जिसके एक बाजू फ्रेंच भाषा में Ci gît Théophile Henri, vicomte de Blangy** अकित था, और दूसरे बाजू 'यहा फ्रेंच नागरिक काउण्ट ब्लाजी का शव समाधिस्थ है जिसका ६२ वर्ष की आयु में निधन हुआ – जन्म १७३७, मृत्यु १७९९', तीसरे बाजू 'परमात्मा उसे सद्गति प्रदान करे' और चौथे बाजू निम्न पक्तिया अकित थी –

'फ्रेंच प्रवासी एक, शिला के नीचे सोया,
प्रखर-बुद्धि, ऊचे कुल का, कल्मष से धोया।
पत्नी-बन्धु बान्धवो की हत्या पर रोया,
क्रूर हिसको से पीडित, अपने वतन से दूर।
रूस देश की सीमा के भीतर वह आया,
सुभग, सुखद, सौहार्द सभी से उसने पाया।
बालवृद को शिक्षित कर, हो मुक्त भ्राति से,
सोया है, प्रभु की इच्छा से, यहा शाति से।'

---

* टहनी
** तेयोफिल आरी काउट ब्लाजी की समाधि।

येरमोलाई के साथ व्लादीमिर और विचित्र उपनाम सुचोक के आगमन से मेरा ध्यान उचट गया।

नगी टागें, अस्तव्यस्त और खस्ताहाल, सुचोक साठ वर्षीय बरखास्त कर दिये गये गृह-दास की भाति मालूम होता था।

"क्या तुम्हारे पास नाव है?" मैंने उससे पूछा।

"जो है सो नाव तो है," उसने भरभराई और फटी-सी आवाज़ में जवाब दिया, "लेकिन उसकी हालत काफी खराब है।"

"सो कैसे?"

"उसके तख्ते अलग हो गये है, और पेच दरारो में से निकल आये है।"

"यह कोई बडी मुसीबत तो नही," येरमोलाई ने बीच मे ही कहा। "उसे हम सन से बंद कर देंगे।"

"सो तो हो सकता है," सुचोक ने सहमति प्रकट की।

"और तुम कौन हो?"

"मै गढी का मछियारा हू।"

"तुम मछियारे हो, फिर भी तुम्हारी नाव का इतना बुरा हाल है, सो कैसे?"

"हमारी नदी मे मछली नही है।"

"काईदार दलदल मछलियो को नही भाती," अधिकारी की भाति मेरे शिकारिये ने जवाब दिया।

"हा तो अब," मैंने येरमोलाई से कहा, "लपककर कुछ सन-रस्सी ले आओ, और जितनी जल्दी हो सके नाव को दुरुस्त कर दो।"

येरमोलाई चला गया।

"बहुत सम्भव है कि इस तरह हम एकदम जोहड के तले से ही जा लगे," मैंने व्लादीमिर से कहा।

"भगवान दयालु है!" उसने जवाब दिया। "जो हो, हमें मानना चाहिए कि जोहड ज़्यादा गहरा नही है।"

"नही, वह गहरा नही है," सुचोक ने राय दी। उसकी आवाज़ विचित्र-सी कही दूर दराज से आती हुई जान पडती जैसे वह स्वप्न में वोल रहा हो। "तलहटी में काई और घास है, सब कही उनका जाल फैला है, ऊपर सतह पर भी। पर कही कही गहरे गड्ढे भी है।"

"लेकिन अगर घास इतनी घनी है," व्लादीमिर ने कहा, "तो फिर नाव को खेना तो असम्भव होगा।"

"चपटी पेंदेवाली नाव को भला कौन खेता है? उसे तो बस धकेलना होता है। मै तुम्हारे साथ चलूगा। मेरा वास वहा है—या फिर लकडी की कुदाली से भी काम चल जायेगा।"

"कुदाली से इतना आसान नही होगा। हो सकता है कि कई जगह छोटी रह जाय—नीचे तक न पहुच सके," व्लादीमिर ने कहा।

"सो तो सच है। उससे इतनी आसानी नही रहेगी।"

कब्र के एक पत्थर पर बैठकर मै येरमोलाई की वाट जोहने लगा। व्लादीमिर भी, मेरे सम्मान का ख़याल रखते हुए, थोडा हटकर बैठ गया। सुचोक उसी जगह पर खडा रहा अपने सिर को झुकाये और पुरानी आदत के अनुसार हाथो को कमर के पीछे वाधे हुए।

"कृपा करके यह तो वताओ," मैने कहा, "क्या तुम लम्बे अर्से से यहा मछियारे का काम कर रहे हो?"

"सात साल हो गये है," चौककर उसने जवाव दिया।

"और इससे पहले तुम क्या धधा करते थे?"

"पहले मै कोचवानी करता था।"

"कोचवानी से तुम्हे किसने अलग किया?"

"नयी मालकिन ने।"

"कौन मालकिन?"

"अरे वही, जिसने हमे खरीदा था। श्रीमान उसे नही जानते। आल्योना तिमोफेयेवना। मोटी है   जवान नही है।"

"उसने तुम्हे मछियारा बनाने का फैसला क्यो किया?"

"खुदा ही जाने। तम्वोव मे उसकी जागीर है। वही से वह आयी। घर के सब लोगो को जमा होने का उसने हुक्म दिया, और बाहर हम सब के पास निकलकर आयी। हम सबने पहले उसके हाथ को चूमा। वह कुछ नही बोली, गुस्सा नही हुई   फिर उसने, बारी बारी से, हमसे पूछना शुरु किया–'तुम किस काम पर तैनात हो? क्या क्या काम तुम्हारे जिम्मे है?' मेरी बारी आने पर उसने मुझसे पूछा, 'तुम क्या काम करते थे?'–'कोचवान का,' मैने कहा। 'कोचवान! वाह, जरा अपनी शकल तो देखो। कितने बढिया कोचवान हो तुम! नही, तुम कोचवान बनने लायक नही। तुम मेरे मछियारे बन सकते हो। और अपनी यह दाढी मुडा डालो। जब भी मेरा यहा आना हो, तुम्हे दस्तरखान के लिए मछलिया जुटानी होगी–सुन रहे हो न?' सो तब से मछियारो मे मेरा नाम दर्ज है। 'और देखो, जोहड को कायदे से रखना!' लेकिन उसे कायदे से रखना क्या किसी के बस की बात है?"

"इससे पहले तुम्हारे मालिक कौन थे?"

"सेर्गेई सेर्गेइच पेख्तेरेव। विरासत मे उसने हमें पाया था। लेकिन हम उसकी मिल्कियत मे ज्यादा देर नही रहे। कुल जमा छ साल। मै उसका कोचवान था   लेकिन नगर में नही, केवल देहात में। नगर मे उसके पास दूसरे कोचवान थे।"

"और क्या तुम, अपने लडकपन से लेकर बाद तक, हमेशा कोचवान रहे?"

"हमेशा कोचवान? अरे सो नही, कोचवान तो मै सेर्गेई सेर्गेइच के काल मे बना। इससे पहले मै बावर्ची था–लेकिन नगर में नही, केवल देहात मे।"

"हा तो बावर्ची किसके यहां थे?"

"अरे, अपने पहलेवाले मालिक के यहा। अफनासी नेफेदिच, सेर्गेई सेर्गेइच के चचा। ल्गोव उसी ने खरीदा था, अफनासी नेफेदिच ने, और सेर्गेई सेर्गेइच को वह उससे विरासत में मिला था।"

"और उसने किससे खरीदा था?"

"तत्याना वासील्येवना से।"

"कौनसी तत्याना वासील्येवना?"

"वही जिसका परसाल वोल्खोव के नज़दीक सुरगवास हुआ   या करचेव के नज़दीक वही चिर विधुरा   उसने कभी व्याह नही किया। क्या आप उसे नही जानते? हम उसके पिता वासीली सेम्योनिच से उसे विरासत में मिले। ओह, बोत बोत दिनो तक—बीस सालो तक—हम उसकी मिल्कियत में रहे।"

"तो तुम उसी के बावर्ची थे?"

"हा, शुरू में बावर्ची, और फिर कॉफ़ी-बरदार।"

"क्या-आ-आ?"

"कॉफी-बरदार।"

"यह क्या बला है?"

"सो तो नही जानता, मालिक। मै केटीन के पास खडा रहता, और कुज्मा के बजाय अन्तोन नाम से मुझे पुकारा जाता। मालकिन का हुक्म था कि मुझे इसी नाम से पुकारा जाय।"

"तो तुम्हारा असली नाम कुज्मा है?"

"हा।"

"और तुम बराबर कॉफी-बरदार बने रहे?"

"नही, बराबर नही। मै साग भी भरता था।"

"क्या सचमुच?"

"हा, मै साग भी भरता था नाटकघर में साग करता था। हमारी मालकिन ने अपना एक नाटकघर वना रखा था।"

"तुम कैसे पार्ट करते थे?"

"क्या आपने यह क्या फर्माया मालिक?"

"यही कि तुम नाटकघर में क्या करते थे?"

"आपको नही मालूम? अरे, वे मुझे सजाते, और सज-धज कर मै इधर से उधर घूमता, खडा रहता या बैठ जाता–जैसा भी मौका होता, और वे कहते, 'देखो, तुम यह यह कहना'। और मै वही वही कहता। एक बार मैंने अधे आदमी का साग किया उन्होने मेरी आखो की दोनो पलको के नीचे मटर के छोटे छोटे दाने रख दिये सच, ऐसा ही किया उन्होने!"

"और इसके बाद तुम्हे और क्या पद दिया गया?"

"मुझे फिर बावर्ची बना दिया गया।"

"क्यो, तुम्हे बावर्ची के पद पर फिर क्यो धकेल दिया गया?"

"मेरा भाई भाग गया था।"

"और इससे पहले, अपनी मालकिन के पिता के जमाने में, तुम क्या थे?"

"तरह तरह के काम मैंने किये। पहले मुझे नौकर का काम दिया गया, फिर पोस्टिलियन और माली का। शिकारिया भी मै रहा।"

"तो क्या तुम शिकारी कुत्तो के पीछे घोडे पर दौडते थे?"

"हा, मै शिकारी कुत्तो के साथ घोडे पर जाता था, और मरते मरते वचा। मै अपने घोडे से गिर पडा, और घोडा भी घायल हो गया। हमारा पुराना मालिक वडा सख्त था। उसने मुझे कोडे लगाने का हुक्म दिया और धधा सीखने के लिए एक मोची के यहा मुझे मास्को भेज दिया।"

"धधा सीखने के लिए? लेकिन तुम्हारी उम्र तो काफी हो गयी होगी, उस समय जब तुम शिकारिया थे—क्यो, ठीक है न?"

"हा, तब मै एक बीसी से ज्यादा पार कर चुका था।"

"लेकिन बीस साल की उम्र में क्या तुम कोई धधा सीख सकते थे?"

"मेरे खयाल से धधा तो सीखना पडता ही, क्योकि मालिक का हुक्म था। लेकिन तकदीर से इसके बाद जल्दी ही मालिक की मौत हो गयी, और मुझे फिर देहात में भेज दिया गया।"

"और तुम्हे बावर्ची का काम कब सिखाया गया?"

सुचोक ने अपना जर्दीमायल क्षीण चेहरा ऊपर उठाया और मुस्कराया।

"यह भी भला कोई सीखने की चीज है? यह तो औरते भी कर सकती है!"

"सो तो हुआ," मैने टिप्पणी की। "अपने जीवन में बहुत कुछ देखा है तुमने, कुज्मा! लेकिन अब मछियारे का काम तुम क्या करते हो जब मछलिया ही नदी में नही है?"

"ओह, मालिक, मुझे इसका कोई गिला नही। शुकर है परमात्मा का जो उन्होने मुझे मछियारा बना दिया। देखिये न, मेरी ही तरह के एक दूसरे बूढे आदमी—आन्द्रेई पुपीर—को मालकिन ने कागज़ के कारखाने में लगाने का हुक्म दिया, करछुल चलाने के काम पर। 'बिना मेहनत की रोटी खाना,' मालकिन ने कहा, 'गुनाह है।' और पुपीर था कि वह खास रियायत तक की आस बाधे था। उसके भतीजे का लडका मालकिन के मुनीमघर में मुशी का काम करता था। उसने वायदा किया कि वह मालकिन के पास उसकी सिफारिश पहुचा देगा, उसका खयाल रखेगा। और उसने खूब खयाल रखा! ओह, खुद मेरी आखो के सामने पुपीर उसके पैरो पर गिर पडा था!"

"तुम्हारे बाल-बच्चे है? ब्याह किया है तुमने?"

"नही मालिक, मैंने कभी व्याह नही किया। तत्याना वासील्येवना –खुदा उनकी आत्मा को शान्ति दे–किसी को व्याह नही करने देती थी। 'खुदा खैर करे,' वह कहा करती थी, 'देखो न, मैं तो अकेली रहती हू, और इनको रगरलिया सूझी है! क्या फितूर समाया है इनके भेजो में।"

"अव गुज़र-वसर का क्या सहारा है? क्या पगार मिलती है?"

"पगार ओह नही, मालिक दाना-पानी वे मुझे दे देते है। और शुकर है परमात्मा का, मैं वोत सन्तुष्ट हू। परमात्मा मालकिन की उमर दराज करे।"

येरमोलाई लौट आया।

"नाव की मरम्मत तो हो गयी," अक्खड अन्दाज मे उसने ऐलान किया। "ए, अव जाकर अपना वास ले आओ। सुन रहे हो न!"

सुचोक अपना वास लाने के लिए लपक गया। गरीव वृद्ध से वातचीत के समूचे दौरान मे शिकारी व्लादीमिर, हिकारत भरी मुसकान के साथ, उसपर अपनी आखे जमाये था।

"वौडम," उसके चले जाने पर उसने टिप्पणी की। "एकदम *काला अच्छर भैंस वरावर, पूरा दहकान, वस और कुछ नही। उसे* गृह-दास तक नही कहा जा सकता। और शेखी वघारना वन्द ही नही करता। आप खुद ही सोचिये, वह साग क्या करता होगा? आपने नाहक उससे वाते करके अपने को तकलीफ दी!"

पाव घटे वाद हम सुचोक की नाव मे वैठे थे। (कुत्तो को कोचवान की निगरानी में एक झोपडी मे छोड दिया गया था।) नाव कुछ आरामदेह नही थी, लेकिन हम शिकारियो की जात कुछ ज्यादा आरामतलव नही होती। पिछलेवाले चपटे छोर पर सुचोक खडा नाव को धकिया रहा था। मै और व्लादीमिर नाव में चौड़ाई के रुख, विछे तख्ते पर वैठे थे। येरमोलाई आगे की ओर, एकदम छोर पर, आसन जमाये था। सन

के डट्टे लगा देने पर भी हमारे पावो के नीचे जल्दी ही पानी भर आया। सौभाग्य से मौसम शान्त था और जोहड झपकी में डूबा मालूम होता था।

हम अपेक्षाकृत धीमी गति से जा रहे थे। अपने वास को चिपचिपी कीचड में से वाहर निकालने में वृद्ध को काफी कठिनाई का सामना करना पड रहा था। पनीली घास के हरे आल-जाल में उलझा वास वाहर निकलता था। लिली के चपटे गोल पत्ते भी नाव की गति में रुकावट डालते थे। आखिर हम नरसल-झुडो के पास पहुचे, और तव मजा आने लगा। अपने क्षेत्र में हमारे अप्रत्याशित आ घुसने से भयभीत वत्तखें शोर मचाती जोहड से उड चली। गोलियो की तुरत दनादन होने लगी। नाटी-दुम वत्तखो का हवा में कलावाजी खाना और छपाक के साथ पानी में आ गिरना देखते ही वनता था। गोली से गिरी सभी वत्तखो को हम निश्चय ही नही बटोर सके। जिनके घाव हल्के थे, वे पानी के नीचे चली गयी। मरी बत्तखो में से भी कुछ इतने घने नरसलो में जा गिरी थी कि बिज्जू ऐसी आखो वाला येरमोलाई भी उन्हे नही खोज सका। फिर भी, भोजन के समय तक, हमारी नाव ऊपर तक शिकार से भर गयी।

व्लादीमिर का निशाना—और यह देखकर येरमोलाई को वडी खुशी हुई—जरा भी ठिकाने का नही था। हर असफल निशाने के वाद वह आश्चर्य की मुद्रा वनाता, अपनी वन्दूक पर नजरसानी करता, नाली में फूक मारता, खोया-सा भाव जताता और अन्त में निशाना चूकने की सफाई पेश करता। येरमोलाई, सदा की भाति, ठीक निशाने पर गोली दागता। मेरा निशाना भी—सदा की भाति—कुछ अच्छा नही था। सुचोक हमें देखता भर रहा, उस आदमी की भाति जो किशोरावस्था से ही दूसरो का चाकर रहा हो। जव-तव वह चिल्ला उठता, 'अरे, वह वह देखो वहा एक और बत्तख है!' और वह बराबर अपनी पीठ को

रगडता—अपने हाथो से नही बल्कि अपने कधो को विचित्र अन्दाज़ मे उचका-बिचकाकर। मौसम अब भी वैसा ही शानदार था। हमारे सिरो के ऊपर, खूब ऊचे आकाश में, घुघराले सफेद बादल तैर रहे थे, और पानी में उनका खूब साफ प्रतिबिम्ब पड रहा था। चारो ओर नरसल कानाफूसी कर रहे थे। जहा-तहा, सूरज की धूप में, जोहड इस्पात की भाति चमचमा रहा था। हम गाव लौटने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी, सहसा, एक दुर्घटना घट गयी।

इस बात का चेत तो हमे काफी पहले से था कि हमारी नाव धीरे धीरे पानी से भरती जा रही है। ब्लादीमिर के जिम्मे यह काम था कि वह करछुल की मदद से पानी बाहर निकालता रहे। यह करछुल मेरे चतुर शिकारिये ने—यह सोचकर कि सकट पडने पर काम दे सकता है—एक किसान स्त्री से उस समय चुरा लिया था जब वह किसी दूसरी ओर ताक रही थी। जब तक ब्लादीमिर ने अपनी जिम्मेदारी का ध्यान रखा, तब तक सब ठीक चलता रहा। लेकिन अन्त में ऐसा हुआ कि बत्तखो का झुड का झुड, मानो हमे अगूठा दिखाकर विदा होने के लिए कुछ इस तरह उडा कि हमे अपनी बन्दूको को भरने का भी समय नही मिला। शिकार की सरगर्मी में हम अपनी नाव की हालत की ओर ध्यान नही दे सके। तभी येरमोलाई, एक मरी हुई बत्तख तक पहुचने के लिए, अपना समूचा बोझ डालकर अचानक नाव के किनारे पर झुक गया। उसकी इस अति उत्साहपूर्ण कार्रवाई का नतीजा यह हुआ कि हमारी जर्जर नाव एक ओर को झुकी, उसमें पानी भरना शुरू हुआ, और शान के साथ तलहटी की तरफ नीचे बैठने लगी। सौभाग्य से वह जगह ज्यादा गहरी नही थी। हमने शोर मचाया। लेकिन जो होना था सो हो चुका था। पलक झपकते हम गले गले तक पानी में डूबे खडे थे, और बत्तखो के मृत शरीर हमारे चारो ओर तैर रहे थे। अपने साथियो के भय से फक सफेद चेहरो की अब याद करता हू तो हसी रोके नही रुकती

(सम्भवत खुद मेरा चेहरा भी उन क्षणो मे कुछ अधिक सुर्ख नही रहा होगा), लेकिन यह तय है कि आमोद का भाव उस समय मन में नही आया था। हममें से हरेक अपनी बन्दूक को सिर के ऊपर ऊचा उठाये था और सुचोक ने भी, निश्चय ही अपने मालिको का अनुसरण करने की पुरानी आदत के अनुसार, अपने वास को भी ऊचा उठा रखा था। येरमोलाई ने सबसे पहले निस्तब्धता भग की।

"क्या मुसीबत है!" पानी में थूकते हुए वह बुदबुदाया। "सब चौपट हो गया। कम्बख्त बुढऊ यह सब तुम्हारी करतूत है!" गुस्से में आकर सुचोक की ओर मुडते हुए उसने कहा, "यह सब तुम्हारी कारिस्तानी है!"

"मुझसे कुसूर हुआ!" वृद्ध की जबान लडखडायी।

"हा, और तुम—तुम भी खूब हो," व्लादीमिर की ओर सिर घुमाते हुए मेरे शिकारी-चाकर ने कहा, तुम्हारा दिमाग क्या घास चरने चला गया था? तुमने पानी क्यो नही निकाला?"

लेकिन व्लादीमिर से कोई जवाब नही देते बना। वह पत्ते की भाति काप रहा था। उसके दात बज रहे थे और उसकी मुस्कान एकदम बेमानी और बेतुकी थी। उसकी वह नफीस भापा, उसका महीन शऊर और आत्मप्रतिष्ठा की भावना—सब जैसे छूमन्तर हो गयी थी।

कम्बख्त नाव हमारे पावो के नीचे बेदम-सी हिल-डुल रही थी। डुबकी के समय—तत्क्षण—पानी हमें भीपण रूप में ठडा मालूम हुआ था, लेकिन जल्दी हम उसके आदी हो गये। पहले धक्के से उबरने पर मैंने अपने इर्द-गिर्द नज़र डाली। हम से दस डग दूर नरसल घेरा डाले खडे थे। उनकी चोटियो से परे, काफी दूर तट नज़र आ रहा था। "मामला बेढब है," मैंने मन में सोचा।

"तो अब क्या किया जाय?" मैंने येरमोलाई से पूछा।

"जरा हाथ-पाव मारकर देखते है," उसने जवाब दिया। "रात तो यहा बितायी नही जा सकती।" फिर व्लादीमिर से बोला, "मेरी बन्दूक पकड लो।"

व्लादीमिर ने बिना कुछ कहे आदेश का पालन किया।

"देखता हू, छिछला रास्ता कहा है," येरमोलाई बडे विश्वास से कहता गया, मानो हर जोहड मे पैदल पार करने के लिए छिछला रास्ता होना ही चाहिए। सुचोक से उसने बास लिया और तट की दिशा में चल दिया, सावधानी से गहराई की थाह लेते हुए।

"क्या तुम्हे तैरना आता है?" मैंने उससे पूछा।

"नही, तैरना नही आता," नरसलो के पीछे से उसकी आवाज़ आयी।

"तब वह डूब जायेगा," सुचोक ने निरपेक्ष भाव से कहा। पहले वह भयभीत हो उठा था—खतरे से नही बल्कि हमारे गुस्से से—लेकिन अब वह पूर्णतया आश्वस्त था, रह रहकर लम्बी सास खीचता, और अपनी मौजूदा जगह से हिलने की कोई ज़रूरत प्रत्यक्षत महसूस नही कर रहा था।

"और वह नाहक, बिना कोई भला किये, खत्म हो जायेगा," व्लादीमिर ने दयनीय भाव से कहा।

येरमोलाई, एक घटे से भी ज्यादा देर हो गयी, लौटकर नही आया। वह वक्त क्या था, कयामत का पहर था। पहले तो हम बडे उत्साह से उसे आवाजें लगाते रहे, जवाब में वह भी आवाज देता रहा। फिर उसकी आवाजें विरल होती गयी, और अन्त में एकदम खामोशी छा गयी। गाव में सध्या-प्रार्थना की घटिया बजना शुरू हो गयी थी। हम आपस में भी कुछ ज्यादा नही बोल रहे थे। सच पूछो तो एक-दूसरे को न देखने का प्रयत्न कर रहे थे। बत्तखें हमारे सिरो पर मडरा रही थी। कुछ तो इतने निकट आ जाती मानो हमारे सिरो पर ही टिकना चाहती हो,

फिर अचानक ऊची उठ जाती और क्वैक क्वैक करती दूर चली जाती। हम सुन्न हो चले थे। सुचोक ने अपनी आखें मूद ली, मानो नीद का आह्वान कर रहा हो।

आखिर, येरमोलाई को लौटते देखकर हमें अकथनीय खुशी हुई।

"कहो ?"

"मै किनारे तक हो आया हू। छिछला रास्ता मिल गया। चलिये अब चले।"

हम लोग तुरत चल देना चाहते थे। लेकिन इससे पहले उसने पानी में अपनी जेब में से कुछ डोरी बाहर निकाली। शिकार की हुई बत्तखो की टागो को बाधा, डोरी के दोनो छोरो को अपने दातो में दावा और धीरे धीरे आगे की ओर बढ चला। उसके पीछे व्लादीमिर, फिर मै और सब से आखिर में सुचोक। तट करीब दो सौ डग दूर था। येरमोलाई साहस के साथ और बिना ठिठके बढ रहा था (इतनी अच्छी तरह उसने राह को अपने जहन में बैठा लिया था), केवल जब-तब बीच में चिल्लाकर कहता जाता, "जरा बाईं ओर को दबकर, यहा दाहिनी ओर गढा है!" या यह कि "दाहिना बाजू पकडे रहो—बाईं ओर, यहा धस जाओगे!" कभी पानी हमारी गरदनो तक आ जाता और बेचारा सुचोक जो कद में हम सब से छोटा था, दो बार पानी निगल गया और छपछपाने लगा। "बस, बस चले आओ!" येरमोलाई ने रुखाई से चिल्लाकर उससे कहा, और सुचोक, उछलता और फुदकता, जैसे-तैसे कम गहरी जगह पकडने में सफल हुआ। लेकिन बेहद नाजुक हालत में भी वह कभी इतना साहस नही कर पाया कि मेरे फ्राॅक-कोट के छोर को ही पकड ले। अन्त में थककर चूर, कीचड में सने और तर-बतर, हम लोग किनारे लगे।

इसके दो घंटे बाद, हम सूखी घास के एक बडे बाडे में बैठे थे और ब्यालू की तैयारी कर रहे थे। हमारे बदन अब उतने ही सूखे थे

जितने उन परिस्थितियों में हो सकते थे। कोचवान इयेगुदिल, सुस्त और आलसी आदमी, समझदार और उनींदा, फाटक पर खडा था और वडे जोश के साथ सुचोक को हुलास दे रहा था (मैंने देखा है कि रूस मे कोचवान वडी जल्दी मित्रता कायम कर लेते हैं)। और सुचोक अधाधुध हुलास सूघ रहा था। वह थूक रहा था, छीक रहा था और प्रत्यक्षत खूब खुश नज़र आ रहा था। व्लादीमिर उदासीन लगने की कोशिश कर रहा था। उसका सिर एक ओर को झुका था और वहुत कम वोल रहा था। येरमोलाई हमारी वन्दूको को साफ कर रहा था। कुत्ते दलिये की इन्तजार में जोरो से दुम हिला रहे थे। घोडे सायवान के नीचे खडे खुर पटक रहे थे, हिनहिना रहे थे... सूरज छिप रहा था। उसकी आखिरी किरनें प्रशस्त गुलावी कितो में छितरा गयी थी, सुनहरे वादल आकाश के समूचे ओर-छोर में अत्यधिक महीन धागो के रूप मे फैले हुए थे— धुली हुई, कधे से सवारी ऊन की तरह गाव में गाने की आवाज गूज रही थी।

बेजिन चरागाह

जुलाई महीने का एक शानदार दिन—ऐसे दिनो में से एक, जो सिर्फ लगातार कई दिनो तक बढिया मौसम रहने के बाद, अवतरित होते है। आकाश एकदम तडके से ही स्वच्छ है। सूर्योदय में आग जैसी दमक नही। वह मृदु गुलाबी आभा से रजित है। सूरज अग्निमय नही है, दमघोट सूखे के दिनो की भाति लाल-भभूका भी नही, न ही उसमें तूफान के पहले जैसा धुधला गुलाबीपन है। सूरज उजला है और उसकी चमक सुहावनी है। बादल की एक पतली और लम्बी पट्टी की ओट में से वह शान्ति के साथ झाकता है। वह अपनी आभा और ताजगी की वर्षा करता है, फिर दूधिया धुध में छिप जाता है। बादल की पट्टी का ऊपरी किनारा ऐसे चमकता है जैसे उसमें प्रकाश के नन्हे साप लहरा रहे हो, चादी के वर्क की भाति झिलमिलाते हुए। और आलोक का सशक्त पुज, गहरी खुशी से उद्वेलित, पख फैलाये, ऊचाइयो को छूने लगता है। दोपहर के करीब, आकाश में खूब ऊचे, गोल बादलो के दल दिखाई देते है, सुनहरे और भूरे, हल्की दूधिया गोट में टके हुए। किसी प्लावित नदी के वक्ष पर छितरे, करीब करीब थिर, द्वीपो जैसे वे लगते है—गहरी पारदर्शी नीलवर्ण जलराशि का अटूट विस्तार इन्हे पखारता होता है। और भी दूर—आकाश के उतार में—वे गतिशील है, आपस में गुथते जा रहे है। अब उनके बीच नीलिमा नज़र नही आती, लेकिन खुद उनका रग भी करीब करीब उतना ही नीला है जितना कि आकाश का। आलोक और गरमाहट में पगे हुए

है। क्षितिज का रंग, कुमुद जैसी हल्की पीत ग्राभा लिये, दिन-भर एक जैसा रहता है–वदलता नही। न तूफान के कही ग्रासार नजर ग्राते हैं, न काली घटाग्रो के। सिर्फ एकाध जगह नीलवर्ण किरनें ग्राकाश से नीचे की ग्रोर फैली हैं, बूदो की विल्कुल हल्की-सी फुहार छोडती हुई। साझ को ये वादल विलीन हो जाते है, ग्रौर उनके ग्रन्तिम ग्रवशेष–कालापन लिये ग्रौर धुवे की भाति ग्रनिश्चित ग्राकार के–इनमे गुलावी रेखाए खिची हुईं, छिपते सूरज की ग्रोर उन्मुख हो जाते हैं। जिस शान्त भाव से सूरज का उदय हुग्रा था उसी शान्त भाव से वह छिप जाता है ग्रौर एक हल्की गुलावी ग्राभा, उस जगह जहा वह छिपा था, काली होती हुई धरती के ऊपर कुछ देर के लिए हिलगी रह जाती है। साझ के तारे–ध्यान से ले जायी गयी दीपशिखा की भाति–ग्राकाश में टिमटिमाने लगते हैं। ऐसे दिनो में सभी रग मृदु होते हैं, उजले, लेकिन चुभनेवाले नही। हर चीज में हृदय को छूनेवाली एक तरह की कोमलता होती है। ऐसे दिनो मे कभी कभी गर्मी खूब ज़ोर मारती है, वहुधा खेतो के ढलुवानो से 'भाप' तक निकलने लगती है, लेकिन हवा के झोके इस वढती हुई उमस को छितरा देते है ग्रौर धूल के वगूले–थिर ग्रौर वढिया मौसम के पक्के चिन्ह–ऊचे सफेद सतूनो की भाति सडको ग्रौर खेतो को पार करते नजर ग्राते हैं। स्वच्छ खुश्क हवा चिरायते, काटी हुई रई ग्रौर मोथी की सुगध से भरी होती है, ग्रौर रात की पहली घडियो में भी हवा नम नही होती। ऐसे ही मौसम के लिए किसान का हृदय ललकता है, ग्रनाज की ग्रपनी फसल काटने के लिए

ऐसे ही एक दिन, तूला प्रान्त के चेर्न जिला में, मैं ग्राउज-पक्षी का शिकार करने निकला। मैंने शिकार शुरू किया ग्रौर काफी सख्या में पछियो को गिरा लिया। मेरा थैला शिकार से भरा था ग्रौर वेरहमी से मेरे कधो में गड रहा था। लेकिन ग्रन्त में जव मैंने घर लौटने का निश्चय किया तव साझ का गुलाबी धुधलका फैल चुका था, गोधूलि की ठडी ग्राभा

गहरी हो रही थी, और आकाश में फैलनी शुरू हो गयी थी। आकाश छिपते हुए सूरज की किरनो से आलोकित न रहने पर भी, अभी तक उजला था। तेज डगो से झाडियो के लम्बे चौरस को मैंने पार किया, ढलुवान पर चढते हुए पहाडी पर मै पहुचा, और वजाय इसके कि वह परिचित मैदानी दृश्यपट मुझे दिखाई देता, जिसकी कि मै आशा कर रहा था–वही जिसके दाहिने बाजू बलूत-वृक्षो का जगल था और दूर एक गिरजा नजर आता था–एक सर्वथा भिन्न दृश्यपट मेरी आखो के सामने फैला था, ऐसा जो मेरे लिए एकदम नया था। नीचे एक सकरी घाटी फैली थी और ठीक सामने, घनी दीवार की भाति, एस्प-वृक्षो का गहरा जगल सिर उठाये खडा था। हैरानी-परेशानी ने मेरे पाव बाध दिये, नजर घुमाकर मैंने अपने इर्द-गिर्द देखा "ओह," मैंने सोचा, "यह जाने कैसे हुआ? मै तो गलत जगह पर आ गया। दाहिनी ओर को चला तो बस आखें मूदे चलता ही गया," और अपनी गलती पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ मै जल्दी जल्दी पहाडी से नीचे उतरने लगा। यकायक एक अप्रिय चिपचिपी सीलन से मै घिर गया। ठीक ऐसा मालूम हुआ जैसे मै किसी तहखाने में पहुच गया हू। घाटी के तल की ऊची और घनी घास, ओस से एकदम तर, स्वच्छ मेजपोश के समान उजली थी। उसपर चलते कुछ डर-सा मालूम हुआ। सो जल्दी से दूसरे बाजू पहुच, बाई ओर को दाबते हुए, मै एस्प-वृक्षो के जगल के सहारे सहारे चलने लगा। पेडो की निद्रालस चोटियो के ऊपर चमगादडो ने मडराना शुरू कर दिया था। निर्मल स्वच्छ आकाश में रहस्य का सचार करते वे चोटियो के ऊपर फरफरा रहे थे। आकाश में ऊचे, पिछडा हुआ एक किशोर बाज, सीधी और तेज गति से, अपने घोसले की ओर उडा जा रहा था। "बस, इस कोने तक पहुचने की देर है," मैंने मन में सोचा, "सडक एकदम मिल जायेगी। लेकिन अपनी राह से करीब एक मील मै भटक गया।"

आखिर जंगल का छोर आ गया। लेकिन सडक जैसी कोई चीज़ वहा नही थी। आखो के सामने, दाहिने-बाए और सामने, दूर तक, नीची झाडिया उगी थी और पीछे ऊची ऊची घास फैली थी। उनसे परे, बहुत दूर, बजर जमीन का एक खण्ड दिखाई दे रहा था। मै फिर ठिठक गया, "अब बोलो? यह कहा आ पहुचा मै?" मैने अपने दिमाग को कुरेदना शुरू किया—यह याद करने के लिए कि दिन-भर कहा कहा और किस प्रकार मै घूमता रहा था "अरे, यह तो पराखिन की झाडिया है!" आखिर मेरे मुह से निकला। "बेशक, ये वही है। तब तो यह सिन्देयेव का जगल होना चाहिए। लेकिन यहा मै कैसे आ लगा? इतनी दूर? आश्चर्य! अब मुझे फिर दाहिना बाजू पकडना चाहिए।"

झाडियों के बीच से मै दाहिनी ओर चल पडा। इस बीच रात काफी घिर आयी थी और घटा-सी छा गयी थी। ऐसा मालूम होता था जैसे साझ के धुधलके के साथ साथ अधेरा चारो ओर उमड-घुमड रहा हो और सिरो के ऊपर तैर रहा हो। एक छोटी, घास उगी पगडडी पर जिसपर कभी कोई न चला था अब मै पहुच गया था। सामने की ओर आखें गडाये मै उसपर चलने लगा। समय बीतते न बीतते चारो ओर अधेरा और सन्नाटा छा गया। केवल लवा-पक्षी की आवाज जब-तब सुनाई दे जाती थी। कोई छोटा-सा रात्रि-पक्षी, अपने कोमल पखो से धरती के निकट नि:शब्द उडता, करीब करीब मुझसे आ टकराया और भयभीत हो दूर भाग गया। मै झाडियो के दूसरी तरफ निकल आया और एक खेत के बराबर बराबर, मेड से लगा, चलने लगा। दूर की चीजे अब कुछ साफ सुझाई नही देती थी। चारो ओर के खेत धुधले-सफेद दिखाई दे रहे थे। उनसे परे अधकार त्योरिया चढाये था और हर घडी, भारी दल-बल सहित, निकट सरकता मालूम होता था। हवा अधिकाधिक ठडी होती जा रही थी जिसमें मेरे कदमो की आवाज मन्द पडती जा रही थी। पीतवर्ण आकाश अब

गहरी हो रही थी, और आकाश में फैलनी शुरू हो गयी थी। आकाश छिपते हुए सूरज की किरनो से आलोकित न रहने पर भी, अभी तक उजला था। तेज डगो से झाडियो के लम्बे चौरस को मैंने पार किया, ढलुवान पर चढते हुए पहाडी पर मै पहुचा, और बजाय इसके कि वह परिचित मैदानी दृश्यपट मुझे दिखाई देता, जिसकी कि मै आशा कर रहा था – वही जिसके दाहिने बाजू बलूत-वृक्षो का जगल था और दूर एक गिरजा नजर आता था – एक सर्वथा भिन्न दृश्यपट मेरी आखो के सामने फैला था, ऐसा जो मेरे लिए एकदम नया था। नीचे एक सकरी घाटी फैली थी और ठीक सामने, घनी दीवार की भाति, एस्प-वृक्षो का गहरा जगल सिर उठाये खडा था। हैरानी-परेशानी ने मेरे पाव बाध दिये, नज़र घुमाकर मैंने अपने इर्द-गिर्द देखा "ओह," मैंने सोचा, "यह जाने कैसे हुआ? मै तो गलत जगह पर आ गया। दाहिनी ओर को चला तो बस आखें मूदे चलता ही गया," और अपनी गलती पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ मै जल्दी जल्दी पहाडी से नीचे उतरने लगा। यकायक एक अप्रिय चिपचिपी सीलन से मै घिर गया। ठीक ऐसा मालूम हुआ जैसे मै किसी तहखाने में पहुच गया हू। घाटी के तल की ऊची और घनी घास, ओस से एकदम तर, स्वच्छ मेजपोश के समान उजली थी। उसपर चलते कुछ डर-सा मालूम हुआ। सो जल्दी से दूसरे बाजू पहुच, बाई ओर को दाबते हुए, मै एस्प-वृक्षो के जगल के सहारे सहारे चलने लगा। पेडो की निद्रालस चोटियो के ऊपर चमगादडो ने मडराना शुरू कर दिया था। निर्मल स्वच्छ आकाश में रहस्य का सचार करते वे चोटियो के ऊपर फरफरा रहे थे। आकाश में ऊचे, पिछडा हुआ एक किशोर बाज़, सीधी और तेज़ गति से, अपने घोसले की ओर उडा जा रहा था। "बस, इस कोने तक पहुचने की देर है," मैंने मन में सोचा, "सडक एकदम मिल जायेगी। लेकिन अपनी राह से करीब एक मील मै भटक गया।"

आखिर जंगल का छोर आ गया। लेकिन सडक जैसी कोई चीज वहां नही थी। आखो के सामने, दाहिने-बाए और सामने, दूर तक, नीची झाडिया उगी थी और पीछे ऊची ऊची घास फैली थी। उनसे परे, बहुत दूर, बजर ज़मीन का एक खण्ड दिखाई दे रहा था। मै फिर ठिठक गया, "अब बोलो? यह कहा आ पहुचा मै?" मैने अपने दिमाग को कुरेदना शुरू किया – यह याद करने के लिए कि दिन-भर कहा कहा और किस प्रकार मै घूमता रहा था "अरे, यह तो पराखिन की झाडिया है!" आखिर मेरे मुह से निकला। "बेशक, ये वही है। तब तो यह सिन्देयेव का जगल होना चाहिए। लेकिन यहा मै कैसे आ लगा? इतनी दूर? आश्चर्य! अब मुझे फिर दाहिना बाजू पकडना चाहिए।"

झाडियो के बीच से मै दाहिनी ओर चल पडा। इस बीच रात काफी घिर आयी थी और घटा-सी छा गयी थी। ऐसा मालूम होता था जैसे साझ के धुधलके के साथ साथ अधेरा चारो ओर उमड-घुमड रहा हो और सिरो के ऊपर तैर रहा हो। एक छोटी, घास उगी पगडडी पर जिसपर कभी कोई न चला था अब मै पहुच गया था। सामने की ओर आखें गडाये मै उसपर चलने लगा। समय बीतते न बीतते चारो ओर अधेरा और सन्नाटा छा गया। केवल लवा-पक्षी की आवाज जब-तब सुनाई दे जाती थी। कोई छोटा-सा रात्रि-पक्षी, अपने कोमल पखो से धरती के निकट नि शब्द उडता, करीब करीब मुझसे आ टकराया और भयभीत हो दूर भाग गया। मै झाडियो के दूसरी तरफ निकल आया और एक खेत के बराबर बराबर, मेड से लगा, चलने लगा। दूर की चीजे अब कुछ साफ सुझाई नही देती थी। चारो ओर के खेत धुधले-सफेद दिखाई दे रहे थे। उनसे परे अधकार त्योरिया चढाये था और हर घडी, भारी दल-बल सहित, निकट सरकता मालूम होता था। हवा अधिकाधिक ठडी होती जा रही थी जिसमें मेरे कदमो की आवाज मन्द पडती जा रही थी। पीतवर्ण आकाश अब

फिर नीला हो चला था—लेकिन अब यह रात का नीलापन था। छोटे छोटे तारे भी अब उसमें झिलमिला और टिमटिमा रहे थे।

जिसे मै जगल समझे था, वह निकली काली गोलाकार पहाडी। "तो यह जगह कौनसी है, आखिर?" तीसरी वार ठिठककर स्थिर खडे होते हुए मैंने फिर सस्वर दोहराया और अपनी उस स्थिति पर तथा कत्थई रग के अग्रेजी कुत्ते दिग्रान्का पर प्रश्नसूचक नजर डाली। चार-पाववाले जीवो मे, बिलाशक कुत्ता सबसे ज्यादा समझदार है। लेकिन यह अत्यन्त समझदार चार-पावोवाला जीव भी केवल अपनी दुम हिलाकर रह गया। हताश मुद्रा में उसने अपनी थकी हुई आखें मिचमिचायी मतलव कि किसी सूझ-बूझ से मुझे उसने लाभान्वित नही किया। उसकी आखो में अपने-आपको अपमानित अनुभव करते हुए तेज़ डगो से मै आगे बढा, मानो मेरे मस्तिष्क में अचानक यह कौध गया हो कि किस ओर मुझे जाना चाहिए। पहाडी को मैने चक्कर काटकर पार किया और एक घाटी में जा पहुचा जो अधिक गहरी नही थी और जिसके इर्द-गिर्द जोताई की हुई थी।

मै अजीब-सा महसूस करने लगा। वह घाटी क्या थी, एकदम कडाही जैसी मालूम होती थी। चारो ओर से ढलुवा चली गयी थी, और नीचे, तलहटी मे, सफेद रग के कुछ बडे पत्थर सीधे-सतर खडे थे—मानो कोई गुप्त सभा करने के लिए चुपचाप वहा रेग आये हो। घाटी के भीतर सब कुछ इतना अचल और अधा, इतना सपाट और नि शब्द था, और ऊपर लटका हुआ आकाश कुछ इतना भयावह तथा उदास मालूम होता था कि मेरा हृदय बैठने लगा। पत्थरो के बीच कोई छोटा जन्तु मरी-सी और दयनीय आवाज में किकिया रहा था। उतावली के साथ मै फिर पहाडी पर निकल आया। इससे पहले तक घर का रास्ता पाने की आशा ने मेरा साथ नही छोडा था। लेकिन अब पक्के तौर से मेरे दिल में यह समा गया कि राह पाने का अब कतई कोई चारा नही है और मै एकदम

राह भटक गया हूँ। आस-पास की चीजो को, जो पूर्णतया अँधेरे में डूबी हुई थी, पकड़ने-पहचानने का प्रयत्न मैंने छोड दिया और तारो के सहारे, नाक की सीध में, अललटप्पू बढने लगा इस तरह करीब आधे घंटे तक मै चलता रहा, हालाकि मुझमे अब इतनी भी ताकत नही थी कि एक के वाद दूसरा डग उठा सकता। ऐसा मालूम होता था जैसे इतने वीरान प्रदेश मे जीवन मे पहले कभी मैंने पाव नही रखा था। रोशनी का—आग की चमक का—दूर दूर तक कही कोई चिन्ह नही था, न ही कोई आवाज सुनाई देती थी। एक के वाद दूसरा पहाडी ढलुवान आ रहा था। एक के वाद एक, खेतो का अन्तहीन विस्तार फैला था। ठीक नाक के नीचे झाडिया, मानो धरती फोडकर प्रकट हो रही थी। मै चलता गया, और सवेरा होने तक कही पड रहने का विचार कर ही रहा था कि अचानक, एक भयानक कगार के सिरे पर मैंने अपने-आप को पाया।

जल्दी से आगे वढा हुआ पाव मैंने पीछे खीचा। अँधेरे की मोटी, गहरी-सी तह मे से, खूब नीचे, एक सुविस्तृत मैदान पर मेरी नजर पडी। एक लम्वी नदी, अर्द्धवृताकार में, इसके इर्द-गिर्द वह रही थी—जहा मै था उससे दूसरी दिशा मे। पानी के इस्पाती प्रतिविम्ब से, जिसकी धुधली चमक अभी तक जहा-तहा दिखाई दे रही थी, नदी के मार्ग का आभास मिलता था। जिस पहाडी पर मै अव पहुच गया था वह अचानक एकदम आगे को लटक आये कगारे की शक्ल में खत्म होती थी। उसका पार्श्व दृश्य, आकाश के गहरे-नीले शून्य की पृष्ठभूमि मे, एक काले भीमाकार दैत्य की भाति मालूम होता था। और ठीक मेरे नीचे, उस जगह जहा वह खडा कगारा और मैदान मिलकर एक कोण की रचना करते थे, नदी के निकट जो काले और गतिशून्य आईने की भाति वहा मौजूद थी, पहाडी की ओट में, वरावर वराबर दो अलावो से धुवा निकल रहा था और उनकी लपटे उठ रही थी। उनके इर्द-गिर्द लोग हरकत कर रहे

थे, परछाइया मंडरा रही थी और कभी कभी, आग की लपट के आगे, घुघराले वालो वाला एक छोटा-सा सिर – उसका अग्रभाग, चमक उठता था।

आखिर अब समझ में आया कि मै कहा आ गया हू। यह मैदान हमारे इलाको में वेजिन चरागाह कहलाता है लेकिन घर पहुचने की कोई सम्भावना नही थी, खास तौर से रात के इस समय मे। मेरी टागें थककर चूर हो रही थी। मैंने निश्चय किया कि वहा चला जाय जहा अलाव जल रहे हैं और इन लोगो की सगत में – जो मुझे चरवाहे लग रहे थे – सुवह होने का इन्तजार किया जाय। मै सही सलामत नीचे उतर गया, लेकिन आखिरी टहनी जिसका सहारा लिये मै उतर रहा था, मेरे हाथ से अभी पूरी तरह छूट भी न पायी थी कि दो वडे वडे झबरीले सफेद कुत्ते भौंकते हुए गुस्से से भरे मेरी ओर झपटे। आग के पास से लडको जैसी पतली पतली आवाजें आयी। दो या तीन लडके जमीन पर उठकर खडे हुए। उन्होने मुझसे सवाल पूछे जिनके जवाव में चिल्लाकर मैंने उनके सन्देहो को शान्त किया। वे मेरे पास दौडे आये और कुत्तो को उन्होंने तुरत वापिस वुला लिया जो मेरे दिग्रान्का की शकल-सूरत देखकर खास तौर से हैरान हो गये थे।

अलाव के इर्द-गिर्द वैठी हुई आकृतियो को मैंने चरवाहे समझा था। यह गलत था। वे केवल पास के एक गाव के किसानो के लडके थे। घोडो के रेवडो की देख-सभार का काम उनके जिम्मे था। गर्मी के दिनो में घोडो को चराने के लिए वे रात को खुले मैदान मे आ जाते हैं। दिन में मक्खिया और गोमक्खिया उन्हे चैन नही लेने देते। सो वे साझ को घोडो के साथ आते है और तडके ही उन्हे वापिम हाक ले जाते हैं। यह काम गाव के लडको को वहुत पसन्द है। नगे सिर, भेड की खाल के पुराने कोट कसे, सवसे तेजतर्रार मरियल घोडो पर वे सवारी गाठते हैं और खुशी से चिल्लाते तथा हूहा करते, खनखनाती आवाज

में हंसते, अपनी टागो और वाहो को झुलाते और हवा मे उछलते चल पडते है। सडक पर महीन धूल के पीले वादल से छा जाते है, और घोडो की टापो की तालयुक्त आवाज दूर होती हुई सुनाई देती है। घोडे दौड़ में रम जाते है, अपने कानो को ऊपर उठाये, और उन सवसे आगे, अपनी दुम को हवा में ऊचा किये तथा अपनी उलझी हुई अयाल मे गोखरू पिरोये, वार वार अपनी चाल वदलता एक झवराला कत्थई रग का घोडा नाचता और थिरकता वढ रहा होता है।

मैंने लडको को वताया कि मै रास्ता भूल गया हू। उन्होने मेरे लिए जगह कर दी और मै उनके साथ वैठ गया। उन्होने मुझसे पूछा कि मै कहा से आया हू, और इसके वाद चुप हो गये। कुछ देर तक खामोश रहने के वाद फिर थोडी वातचीत हुई। मै एक झाडी के नीचे पसर गया जिसकी कोपले कुतरी हुई थी, और अपने चारो ओर नजर डाली। अद्भुत दृश्य था। अलाव के इर्द-गिर्द आलोक का एक लाल घेरा थरथरा रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह वेसुध होकर अधकार की गोद में गिरनेवाला हो। अलाव की लपटें रह रहकर लपकती और घेरे की परिधि से वाहर तक प्रकाश की द्रुत कौध फैल जाती। आग की एक महीन-सी लौ सूखी टहनियो को चाटती और तुरत वुझ जाती। लम्वी पतली परछाइया, क्षण-भर मे जव उनकी वारी आती, नाचती-थिरकती ठीक आग तक वढ आती। अधकार प्रकाश से जूझ रहा था। कभी कभी उस समय जब आग मन्दी होती और प्रकाश का घेरा सिकुड जाता, उमडते-वढते अधकार में किसी घोडे का सिर सामने आता – मुश्की, धारीदार, या एकदम सफेद – अपनी भावहीन आखे गडाकर हमारी ओर ताकता, लम्वी घास को जल्दी से कुतरता और फिर पीछे हटकर क्षण-भर मे विलीन हो जाता। उसके नथुनो के फरफराने और घास को कचरने की केवल आवाज अव सुनाई देती। प्रकाश के घेरे से यह पता लगाना कठिन था कि अधेरे में क्या हो रहा है, पास की हर चीज़ जैसे काले पर्दे से ढकी थी,

लेकिन खूब दूर–पहाडिया और जगल–क्षितिज पर लम्वे धब्बो की भाति धुधले धुधले नजर आ रहे थे।

काला और बादलरहित आकाश, एकदम ओर-छोर विहीन और विजयी, अपनी समूची रहस्यमयी गरिमा के साथ, हमारे सिरो के ऊपर छाया था। रूस में गर्मियो की रात की एक विचित्र, अभिभूत कर देनेवाली, फिर भी ताजगी से सराबोर सुगध फेफडो में भर रही थी और हृदय एक मीठी कसक का अनुभव कर रहा था। इर्द-गिर्द से कोई आवाज नही आ रही थी। केवल कभी कभी, पास की नदी में, किसी बडी मछली के अचानक उछलने की छपछपाहट, और तट पर लहरियो के स्पर्श से किसी हल्के हल्के झूमते नरकटो की सरसराहट सुनाई दे जाती थी एक आग ही ऐसी थी जिसकी धीमी-सी चरचराहट बराबर सुनाई दे रही थी।

लडके अलाव के चारो ओर बैठे थे। साथ में वे दो कुत्ते भी वही विराजमान थे जो मुझे काट खाने के लिए इतने व्यग्र हो उठे थे। और उस समय भी, काफी देर तक, मेरे साथ वे अपनी पटरी नही बैठा सके। उनीदे से अपनी आखो को मिचमिचाते और कनखियो से आग की ओर देख लेते। असाधारण अभिमान की उनकी भावना उन्हे कचोटती और वे रह रहकर गुर्रा उठते। पहले गुर्राते, फिर कुछ किकियाते, मानो अपनी इच्छापूर्ति असम्भव देखकर क्षोभ प्रकट कर रहे हो। कुल मिलाकर पाच लडके थे–फेद्या, पावलूशा, इल्यूशा, कोस्त्या और वान्या (उनकी बातचीत के दौरान में ही मुझे उनके इन नामो का पता चला, और अब मैं चाहता हू कि पाठको से भी उनका परिचय करा दू)।

पहले फेद्या को लीजिये जो सबसे बडा था। वह करीब चौदह वर्ष का मालूम होता था। वह एक अच्छी काठी का लडका था। देखने में भला, कोमल किन्तु अपेक्षाकृत छोटे नाक-नक्श, सुनहरी घुघराले बाल, चमकती आखें, और आधी प्रसन्न तथा आधी लापर्वाह मुसकान जो कभी उसका साथ नही छोडती थी। शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से वह सम्पन्न परिवार

का मालूम होता था, और किसी आवश्यकता से बाधित होकर नही बल्कि मौज के लिए चरागाह मे चला आया था। वह शोख छीट की कमीज पहने था जिसमें पीली गोट लगी थी। एक छोटा नया कोट उसने ओढ रखा था जो उसके सकरे कधो से खिसका-सा जा रहा था। उसकी नीली पेटी में एक कघा खोसा हुआ था। उसके जूते, जो उसकी टागो मे कुछ ऊपर तक चढे थे, बिलाशक उसके अपने ही थे–उसके पिता के नही। दूसरा लडका, पावलूशा, उलझे हुए काले बाल, भूरी आखे, चौडी कपोलास्थिया, चेचक के दागो से छलनी सफेद चेहरा, बडा लेकिन अच्छे तराशवाला मुह। कुल मिलाकर उसका सिर बडा था–ताडी के पीपे की भाति, जैसा कि लोग कहा करते है–और उसकी काठी चौरस तथा भद्दी-सी थी। वह शकल-सूरत से अच्छा नही था–इससे इन्कार नही किया जा सकता–फिर भी वह मुझे अच्छा लगा। वह बहुत ही समझदार और बेलाग मालूम होता था। और उसकी आवाज मे एक सशक्त स्वर गूजता था। उसकी वेश-भूषा में ऐसा कुछ नही था जिसपर गर्व किया जा सके। केवल घर की कती-बुनी कमीज और थेगलो की पतलून वह पहने था। तीसरे लडके इल्यूशा का चेहरा कुछ आकर्षक नही था–लम्बूतरा, चुधी-सी आखें और तोते जैसी नाक। एक प्रकार की ठस, चिडचिडी बेचैनी का भाव उसके चेहरे से झलकता था। उसके खूब खिचे-तने होठ कडे मालूम होते थे, उसकी सिकुडी हुई भौहे कभी ढीली नही पडती थी, मानो अलाव की रोशनी के मारे वह अपनी आखो को बराबर मिचमिचा रहा हो। सन जैसे करीब करीब सफेद बालो की पतली लटे उसकी पिचकी हुई फैल्ट टोपी के नीचे से बाहर लटक रही थी। अपनी टोपी को दोनो हाथो से पकडकर वह उसे निरन्तर नीचे की ओर, कानो के ऊपर, खीचे जा रहा था। पावो मे वह छाल की नयी चप्पले पहने था और टागो मे उसने पट्टिया बाध रखी थी। एक मोटी डोरी, उसके बदन के इर्द-गिर्द तीन लपेट लगाये, काले रग के उसके साफ-सुथरे झगले को होशियारी

के साथ सभाले थी। पावलूशा ग्रौर वह, दोनो में से कोई भी उम्र मे बारह वर्ष से अधिक नही मालूम होता था। चौथा लडका कोस्त्या दस वर्ष का था। उसकी चिन्ताशील ग्रौर उदास मुद्रा ने मेरी उत्सुकता को चेतन कर दिया। उसका समूचा चेहरा छोटा, पतला, दागो से भरा ग्रौर ठोडी के पास गिलहरी की भाति नुकीला था। उसके होठ यू ही नामालूम-से थे। लेकिन उसकी बडी वडी काली ग्राखें ग्रौर उनकी तरल चमक एक विचित्र प्रभाव डालती थी। वे कुछ ऐसा भाव व्यक्त करती मालूम होती थी जिसे जुबान – कम से कम उसकी जबान – शब्दो में व्यक्त करने में ग्रसमर्थ थी। नाटे कद का ग्रौर कमजोर वदन, उसके कपडे भी गरीबो के से थे। ग्राखिरी लडका वान्या, शुरू मे जो मुझे नजर नही ग्राया था, जमीन पर पडा था, एक चौरस चटाई के नीचे शान्ति के साथ गुडमुडी वाधे हुए। केवल कभी कभी सुनहरी घुघराले वालो वाला ग्रपना सिर वह चटाई के नीचे से वाहर निकालता था। वह ग्रधिक से ग्रधिक सात वर्ष का होगा।

सो मै झाडी के नीचे एक करवट लेटा था ग्रौर लडको की ग्रोर देख रहा था। एक ग्रलाव के ऊपर छोटी-सी हडिया लटकी थी जिसमें ग्रालू उवल रहे थे। पावलूशा उनकी देख-भाल कर रहा था। वह घुटनो के बल वैठा था ग्रौर उवलते पानी में लकडी की एक खपची डालकर उनकी जाच कर रहा था। फेद्या ग्रपनी कोहनी के वल झुका लेटा था ग्रौर ग्रपने कोट के छोरो को सीधा कर रहा था। इल्यूशा कोस्त्या की वगल में वैठा था ग्रौर ग्रपनी ग्राखो को ग्रभी भी विवश मिचमिचाये जा रहा था। कोस्त्या निराश मुद्रा में ग्रपना सिर लटकाये था ग्रौर कही दूर शून्य मे देख रहा था। चटाई के नीचे वान्या चुपचाप लेटा हुग्रा था। मै नीद का वहाना किये पडा था। धीरे धीरे लडको में बातचीत का सिलसिला फिर शुरू हो गया।

पहले तो वे यू ही इधर-उधर की बाते करते रहे – कल के काम के बारे में, घोडो के बारे में। लेकिन अचानक फेद्या इल्यूशा की ओर घूमा और जैसे बीच में छूटे सिलसिले को फिर से पकडते हुए कह उठा –

"हा तो बोलो, क्या तुम्हे भुतना दिखाई दिया?"

"नही, मैंने नही देखा, और कोई देख भी नही सकता," क्षीन और बैठी हुई आवाज़ में इल्यूशा ने जवाब दिया। उसकी आवाज की ध्वनि उसके चेहरे के हाव-भाव से अद्भुत मेल खा रही थी। "हा, मैंने केवल उसकी आवाज सुनी। और सच, अकेले मैंने ही नही, औरो ने भी सुनी!"

"वह डेरा कहा डाले है?" पावलूशा ने पूछा।

"पुराने कागज़ के कारखाने मे।"

"अरे, तो क्या तुम कारखाने मे जाते हो?"

"और नही तो क्या? मेरा भाई आवद्यूश्का और मै, दोनो कागज चिकनाते हैं।"

"ओह, तो तुम फैक्टरी मे काम करते हो!"

"अच्छा तो यह बताओ," फेद्या ने पूछा, "तुमने कैसे-क्या सुना?"

"हा तो सुनो। हुआ यह कि मुझे और मेरे भाई आवद्यूश्का को, और साथ मे फ्योदोर मिखेयेवस्को को, और इवाश्का कोसोई को, और एक दूसरे इवाश्का को जो लाल पहाडी से आता है, और इवाश्का सुखोरूकोव को भी – इनके अलावा कुछ और लडके भी थे – कुल मिलाकर हम दस जने रहे होगे – यानी पूरी-की-पूरी पाली – हा तो हुआ यह कि हमें कागज के कारखाने मे रात बितानी पडी। नही, ऐसा नही, बल्कि यह कहो कि ओवरसीयर नजारोव ने हमें रोक लिया। 'अरे,' उसने कहा, 'घर जाने में क्यो समय बरबाद करते हो, लडको। कल ढेर सारा काम करना है। घर न जाओ।' सो हम वही रुक गये, और सबने एक साथ

जमीन पर डेरा जमा लिया। तभी आवद्यूश्का ने कहना शुरू किया, 'सुनो साथियो, अगर यहा कोई भुतना प्रकट हो जाय तो?' वह अभी अपनी बात कह भी न पाया था कि अचानक ऐसा लगा जैसे हमारे सिरो के ऊपर कोई डग भर रहा हो। हम नीचे पडे थे, और वह ऊपर डग नाप रहा था, वही जहा चक्का लगा है। हमारे कान खडे हो गये। वह टहल रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे तख्ते उसके बोझ से धचक रहे हो। ओह, वे किस तरह चरचरा रहे थे   इसके बाद वह हमारे सिरो के ऊपर से होता गुजर गया। फिर, एकदम अचानक, चक्के के ऊपर टपाटप पानी गिरना शुरू हो गया। चक्का खडखडाता, जोर मारता, और फिर घूमने लगता, हालाकि ऊपर पानी के डट्टे बन्द किये हुए थे। हम हैरान थे। इन डट्टो को किसने खोला जिससे पानी बहने लगा। जो हो, चक्का घूमा, और थोडा घूमकर रुक गया। फिर उसके डग ऊपरवाले दरवाजे की ओर बढे और वह जीने से नीचे उतरने लगा, इत्मीनान के साथ। जीना भी उसके बोझ से कराह रहा था   हा तो वह ठीक हमारे दरवाजे के पास तक चला आया, और वही ठिठककर खडा हो गया, और खडा रहा   और फिर, एकदम अचानक दरवाजा बस पट से खुल गया। हमारी सिट्टी-पिट्टी गुम! देखा तो कुछ नही। अचानक, क्या पूछते हो, एक टकी के जाल ने हरकत शुरू कर दी। वह उठा, उठता गया, हवा में लहराता और डुबकिया लगाता, जैसे कोई उसे फटक रहा हो, और इसके बाद वह फिर अपनी जगह पर जैसे का तैसा बैठ गया। इसके बाद, एक दूसरी टकी में, एक काटा अपनी खूटी में से निकल झूलने लगा और फिर अपनी खूटी पर जा लटका। फिर ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई दरवाजे तक आया, भेड की भाति अचानक खासा-खखारा और मिमियाया, ऐसे-वैसे नही बल्कि खूब जोरो से! हम सब एक-दूसरे से चिपक गये। अरे बाप रे, डर के मारे उस रात जैसे हमारी जान ही निकल जाती!"

"लेकिन सुनो तो," पावलूशा बुदबुदाया, "वह खासा-खखारा क्यो ?"

"पता नही! शायद सीलन थी, इस वजह से।"

कुछ देर के लिए सब चुप रहे।

"हा तो," फेद्या ने पूछा, "आलू उबल गये क्या ?"

पावलूशा ने उन्हे देखा।

"नही, अभी कच्चे है बाप रे, कितने जोरो से छपाका हुआ!" नदी की ओर मुडते हुए उसने फिर कहा, "जरूर कोई बडी मछली है और वह देखो, तारा टूटकर गिर रहा है।"

"इधर देखो, भाइयो, मै एक बढिया बात तुम्हे सुनाता हू," कोस्त्या ने अपनी तेज महीन आवाज में कहना शुरू किया, "कई दिन पहले बप्पा ने यह घटना सुनायी थी।"

"अच्छा तो सुनाओ," सरपरस्ती के अन्दाज मे फेद्या ने कहा, "हम सुन रहे है।"

"गावरीला को तो तुम जानते हो न, वही जो बडे गाव मे बढई का काम करता है ?"

"हा हा, उसे हम जानते है।"

"और क्या तुम्हे यह भी मालूम है कि वह हमेशा इतना उदास क्यो रहता है, कभी बोलता क्यो नही ? क्या तुम्हे मालूम है ? सुनो, मै बताता हू। सुनो भाइयो, एक बार वह—बप्पा कहते थे—एक बार वह जगल मे अखरोट बटोरने गया। सो वह जगल मे अखरोट बटोरने गया और रास्ता भूल गया। बस, वह चलता गया—कहा और किधर, भगवान जाने। सो, भाइयो, वह चलता गया, चलता गया, लेकिन पल्ले कुछ नही पडा—उसे रास्ता नही मिला, और सो रात पड गयी। सो वह एक पेड के नीचे बैठ गया। 'बस, यहा बैठकर सवेरा होने का इन्तजार करूगा,' उसने सोचा। वह बैठ गया और ऊघने लगा। सो,

वह ऊघ रहा था कि अचानक उसे एक आवाज सुनाई दी। उसे कोई पुकार रहा था। उसने सिर उठाकर देखा। वहा कोई नही था। वह फिर ऊघने लगा। फिर किसी ने उसे पुकारा। उसने फिर देखा, आखे फाड-फाडकर देखा। और उसके सामने पेड की टहनी पर, एक जल-परी वैठी झूला झूल रही थी, और उसे अपने पास वुला रही थी, और हसते हसते दोहरी हो रही थी। इतना हस रही थी और चाद खूब चमक रहा था, वहुत ही उजला, और बहुत ही साफ – सुनो भाइयो, उसकी रोशनी मे हर चीज़ साफ दिखाई दे रही थी। सो जल-परी उसे वुला रही थी, और वह खुद भी इतनी उजली और इतनी चिट्टी थी जैसे कोई डेस-मछली, या रोच, या कोई नन्ही कार्प, विल्कुल चादी की भाति उजली और सफेद वढई गावरीला तो जैसे सुध वुध खो वैठा, लेकिन, भाइयो, वह थी कि विना दम लिये हस रही थी, और इस तरह से अपने पास आने के लिए कह रही थी। तव ठीक उस समय जव गावरीला उठ ही रहा था और जल-परी के पास जाना चाहता था कि, भाइयो, सच जानो, भगवान ने उसके दिल मे डाल दी, और वह उसी वक्त क्रॉस का निशान वनाने लगा और क्रॉस का निशान वनाने में, भाइयो, उसे वडी मुश्किल पडी। उसने कहा, 'मेरा हाथ निरा पत्थर बन गया है, हिलाये नही हिलता ' उफ, भयानक डायन कही की! सो जब उसने क्रॉस का निशान वनाया तो, भाइयो, उस जल-परी की हसी को जैसे काठ मार गया, और वह यकायक फूट फूटकर रोने लगी इस तरह कि कुछ न पूछो वह रो उठी, भाइयो, और वालो से उसने अपनी आखो को पोछा, और उसके बाल ऐसे हरे थे जैसे कि सन। सो गावरीला उसे देखता रहा, देखता रहा, और अन्त में उसने उससे पूछ-ताछ शुरू की, 'जगल की वनैली रानी, रोती क्यो हो?' और जल-परी उससे यो वोली – 'अगर तुमने क्रॉस का निशान न वनाया होता,' उसने कहा, 'तो तुम मेरे साथ जीवन की आख़िरी घडी तक मौज से रहते। और मैं रोती

हूं, मै दुखी हू, इसलिए कि तुमने क्रॉस का निशान बनाया। लेकिन अकेले मै ही दुखी नही रहूगी, तुम भी जीवन की आख़िरी घडी तक दुखी रहोगे।' यह कहकर वह गायब हो गयी, और यकायक गावरीला को भी जगल से वाहर निकलने का रास्ता सूझ गया तभी से वह, देखा भाइयो, इतना उदास रहता है।"

"उफ!" कुछ देर की ख़ामोशी के बाद फेद्या ने कहा, "लेकिन जगल की भुतनी एक ईसाई आत्मा को भला कैसे नष्ट कर सकती है–उसने उसकी एक नही सुनी।"

"है न अजीब?" कोस्त्या ने कहा, "गावरीला कहता था कि उसकी आवाज महीन और रोनी-सी थी, मेंढक की भाति।"

"क्या खुद तुम्हारे बप्पा ने तुम्हे यह घटना सुनायी थी?" फेद्या ने फिर पूछा।

"हा, मै तन्दूर पर लेटा था। एक एक बात मैने सुनी।"

"वडी अजीब बात है। वह इतना उदास क्यो है? लेकिन शायद वह उसे चाहती थी, तभी तो वह उसे बुलाती थी?"

"वाह, उसे चाहती थी!" इल्यूशा ने कहा, "चाहती थी! वह उसे गुदगुदाकर मार डालना चाहती थी। इसलिए वह उसे चाहती थी। ये जल-परिया ऐसा ही करती है।"

"ये जल-परिया यहा भी होगी, मेरी समझ में," फेद्या ने कहा।

"नही," कोस्त्या ने जवाब दिया, "यह साफ और खुली जगह है। लेकिन एक बात यहा भी है। वह यह कि पास में ही नदी है।"

सब चुप थे। सहसा कही दूर से एक सुदीर्घ, गूजती हुई, विल्कुल विलाप करने जैसी, आवाज आयी–रात की उन रहस्यमय आवाजो में से एक जो, गहरी निस्तब्धता से आकर टकराती, हवा के साथ उठती, हिलगती और धीरे धीरे अन्त मे विलीन हो जाती है। आप सुनते है। लगता है जैसे वह कुछ नही है, लेकिन उसकी थरथराहट का–गूज का–

आप फिर भी अनुभव करते है। लगता है जैसे ठीक क्षितिज के पास किसी के हृदय से लम्बी, बहुत लम्बी, चीख निकली हो, और जैसे उसके जवाब में कोई और, तुर्श और तेज आवाज में, जगल में हस रहा हो, और नदी के वक्ष पर एक धुधली, मरमरी-सी, फुकार मडराने लगती है। लडको ने, कापते हुए, अपने इर्द-गिर्द देखा

"प्रभु ईसा बल दे," इल्यूशा फुसफुसाया।

"अरे, तुम भी निरे चूजे हो!" पावलूशा ने चिल्लाकर कहा, "डरने की कोई बात भी हो? यह देखो, आलू तैयार हो गये।" (सब के सब हडिया के पास खिसक आये और भाप निकलते आलू खाने लगे, केवल वान्या नही उठा।) "क्यो, क्या तुम नही आ रहे?" पावलूशा ने कहा।

लेकिन वह चटाई के नीचे से नही खिसका। हडिया जल्दी ही पूर्णतया खाली हो गयी।

"सुनो, साथियो," इल्यूशा ने कहा, "क्या तुम्हे मालूम है कि वरनावीत्सा मे हमारे साथ क्या गुजरी?"

"बाध के पास?" फेद्या ने पूछा।

"हा, हा, बाध के पास, उस खडहर बाध के पास। वह भुतहा जगह है, एकदम भुतहा, और एकदम वीरान। चारो ओर गड्ढे ही गड्ढे और खाइया, और उन गड्ढो में हर घडी साप रहते है।"

"हा तो वहा क्या हुआ? हम भी सुने।"

"अच्छा तो सुनो। तुम शायद नही जानते, फेद्या, लेकिन वहा एक आदमी डूब गया था। उसकी कब्र वही बनायी गयी थी। वह बहुत बहुत पहले डूबा था, जब पानी गहरा था। अब तो केवल उसकी कब्र बाकी है। कब्र क्या, कहो कि उसकी कब्र का केवल निशान बाकी है बस, एक छोटा-सा ढूह सो एक दिन कारिन्दे ने शिकारिये येर्मील को बुलाया, और उससे कहा, 'येर्मील, जाओ, डाक ले आओ।' येर्मील

हमेशा हमारे लिए डाक लाता था। उसके सब कुत्ते मर चुके थे। सो वे, कारण जो हो, कभी उसके साथ नही रहते, और न कभी साथ रहे, हालांकि वह एक अच्छा शिकारिया है, और वह सोलहो आने शिकारिया है। हा तो येर्मील डाक लेने शहर गया, और नगर मे थोडा ठहर गया और जब वह अपने घोडे पर वहा से चला तो उस समय वह कुछ नशे में था। रात हो आयी थी, बहुत ही बढिया रात, चाद चमचमा रहा था सो येर्मील बाध पर से गुजरा, उधर से ही उसका रास्ता था। सो वह चला जा रहा था कि उसे, डूबे हुए आदमी की कब्र पर, एक मेमना दिखाई दिया—छोटा-सा, एकदम सफेद, घुघराला और सुन्दर। वह इधर से उधर खिलन्दरी कर रहा था। सो येर्मील ने सोचा, 'इसे साथ ले चलू, बेचारा व्यर्थ मारा जायेगा!' और घोडे पर से उतरकर उसने उसे अपनी बांहो में उठा लिया। लेकिन नन्हा मेमना ऐसा बना रहा जैसे कुछ हुआ ही न हो। सो येर्मील अपने घोडे के पास लौट आया, और घोडे ने घूरकर उसे देखा, फुकार छोडी, और अपनी गरदन हिलायी। यह होने पर भी उसने घोडे से 'वो' कहा, मेमने के साथ उसपर सवार हो गया और फिर चल पडा। मेमने को वह आगे की ओर रखे था। उसने उसकी ओर देखा और मेमने ने भी सीधे उसके चेहरे पर अपनी आखें जमा दी। शिकारिया येर्मील घबरा गया। 'याद नही पडता,' उसने कहा, 'कि पहले कभी किसी मेमने ने इस तरह ताका हो।' फिर भी उसने मेमने की पीठ इस तरह थपथपाना शुरू किया और मुह से 'च-च-च!' कहा और मेमना भी, अचानक अपने दात चमकाते हुए कह उठा, 'च-च-च!"

कहानी कहनेवाला लडका अभी मुश्किल से ही आखिरी शब्द कह पाया था कि अचानक दोनो कुत्ते एकबारगी उठ खडे हुए, और ज़ोर ज़ोर से भौकते हुए अलाव के पास से लपककर अधेरे मे ओझल हो गये। सब के सब चौक पडे। वान्या अपनी चटाई के नीचे से उछलकर खडा

हो गया। पावलूशा चिल्लाता हुआ कुत्तो के पीछे दौड चला। उनका भौकना धीरे धीरे कम होता गया घोडो के भयभीत रेवड की बेचैन टापो की आवाज आ रही थी। पावलूशा जोरो से चिल्लाया, "ओ, सेरी! ओ, जूचका!" कुछ मिनटो के भीतर भौंकना बद हो गया। पावलूशा की आवाज़ अब भी कही दूर से आती सुनाई दे रही थी . कुछ समय और बीता। लडके परेशान से अगल-बगल देख रहे थे, मानो किसी चीज की घटना की आशका कर रहे हो। अचानक तेजी से आते हुए एक घोडे की टाप सुनाई दी। घोडा ठीक अलाव के पास आकर रुका, और उसकी अयाल से झूलता हुआ पावलूशा फुर्ती से नीचे उतर आया। दोनो कुत्ते भी उछलकर रोशनी के घेरे के भीतर आ गये और तुरत जमीन पर बैठ गये। वे अपनी लाल जीभ वाहर निकाले थे।

"क्यो, क्या हुआ? क्या बात थी?" लडको ने पूछा।

"कुछ नही," अपने घोडे की ओर हाथ हिलाकर अलग करते हुए पावलूशा ने जवाब दिया, "लगता है कि कुत्तो ने कुछ खटका सुना। मै समझा कि भेडिया आ गया," जोर जोर से सास लेते हुए बेपरवाही के साथ उसने अपनी बात पूरी की।

पावलूशा ने मुझे बरबस मुग्ध कर लिया। वह उस समय बहुत ही बढिया लग रहा था। उसके बदनुमा चेहरे पर जो घोडा दौडने से उद्वेलित था, कसबल और दृढता दमक रही थी। हाथ में एक टहनी तक लिये बिना, एकदम बेझिझक, रात में वह अकेला लपक गया, भेडिए से लोहा लेने। "कितना शानदार जीव है!" उसकी ओर देखते हुए मैंने अपने मन में कहा।

"तो कोई भेडिया-वेडिया नज़र आया?" कापते हुए कोस्त्या ने पूछा।

"सो तो वे हमेशा ही यहा बहुत-से घूमते रहते है," पावलूशा ने जवाब दिया, "लेकिन वे केवल जाडो में तग करते है।"

वह फिर अलाव के सामने धरती पर बैठ गया। बैठते समय उसने अपना हाथ एक कुत्ते के झबराले सिर पर टिका दिया। चाव में आये कुत्ते ने देर तक अपना सिर नही हटाया, और कृतज्ञतापूर्ण गर्व के साथ कनखियो से पावलूशा की ओर देखता रहा।

वान्या फिर अपनी चटाई के नीचे जा लेटा।

"कितनी भयावनी वाते तुम हमे सुना रहे थे, इल्यूशा," फेद्या ने जो सम्पन्न किसान का लडका होने के नाते बातचीत में अगुवा बनना अपना कर्तव्य समझता था, कहना शुरू किया। (वह खुद कम बोलता था, प्रत्यक्ष ही इस डर से कि कही उसकी प्रतिष्ठा मे बट्टा न लग जाय।) "और फिर किसी बुरे प्रेत ने कुत्तो को भौंकने के लिए उकसा दिया. सच, यह मैंने भी सुना है कि तुम्हारी यह जगह भूतो का अड्डा है।"

"वरनावीत्सी? भूतो का अड्डा तो है ही। लोगो का कहना है, कि कितनी ही वार उन्होंने पुराने मालिक को वहा देखा—स्वर्गीय मालिक को। कहते हैं कि वह लम्बा घेरदार कोट पहने था, और बराबर काखता-कराहता जाता था। और धरती पर कोई चीज़ ढूढता रहता था। एक बार बाबा त्रोफीमिच ने उसे देखा। 'मालिक इवान इवानिच,' उसने कहा, 'धरती पर यह आप क्या खोजने की किरपा कर रहे है?"

"तो उसने यह पूछा?" फेद्या ने अचरज में भरकर कहा।

"हा, उसने उससे पूछा।"

"तब तो त्रोफीमिच को बहादुर कहना चाहिए .. हा तो उसने फिर क्या कहा?"

"'मैं उस बूटी की खोज में हू जो हर चीज़ को काट डाले,' उनने कहा। लेकिन उसकी आवाज इतनी मोटी थी, इतनी मोटी थी कि बिल्कुल ठस। 'और मालिक इवान इवानिच, यह तो बताओ उस बूटी का आप

क्या करोगे जो हर चीज़ को काट सकती है?'–'क़ब्र का बोझ मेरी छाती पर लदा है, वह मुझे कुचले दे रहा है, ग्रोफीमिच, मैं उससे छूटना चाहता हू, निकल भागना चाहता हू।"

"बाप रे!" फेद्या ने कहा, "लगता है, उसकी हवस अभी पूरी नही हुई।"

"भई खूब!" कोस्त्या ने कहा, "मैं तो समझे था कि केवल अखिल सन्तो के दिन ही मरे हुओ से मुलाकात हो सकती है।"

"वे किसी समय भी नज़र आ सकते हैं," इल्यूशा बीच में ही विश्वास के साथ बोला, और उसके अन्दाज़ से मुझे लगा कि गाव के अधविश्वासो के बारे में वह बाकी सबसे ज्यादा जानता है। "लेकिन अखिल सन्तो के दिन तो ज़िन्दो को भी देखा जा सकता है, यानी उन्हे जिनके मरने की बारी उस साल होगी। बस, जाकर गिरजे की ड्योढी में बैठ जाओ और बराबर सडक की ओर देखते रहो। वे सडक पर तुम्हारे सामने से गुजरेगे, यानी वे जो उस साल मरनेवाले होगे। पिछले साल बूढी उल्याना ड्योढी में जाकर बैठी थी।"

"तो उसने किसी को देखा?" कोस्त्या ने उत्सुकता से पूछा।

"बेशक, उसने देखा। पहले तो वह देर तक, बहुत बहुत देर तक, बैठी रही और उसे कोई दिखाई नही दिया, और न ही उसने कुछ सुना केवल ऐसा मालूम होता था जैसे कही कोई कुत्ता काख और किकिया रहा है अचानक उसने सिर उठाया। देखती क्या है कि एक लडका केवल कमीज पहने सडक पर चला आ रहा है। उसने उसे देखा। वह इवाश्का फेदोसेयेव था।"

"वही जो बसन्त के दिनो में मरा?" फेद्या ने पूछा।

"हा, वही। वह आया और उसने एक बार भी सिर नही उठाया। लेकिन उल्याना ने उसे पहचान लिया। इसके बाद वह फिर देखती है कि एक स्त्री चली आ रही है। वह उसे आखें फाडकर देखती है, और देखती

है। हे भगवान! यह तो वह खुद थी जो सडक पर से ग्रा रही थी, खुद उल्याना।"

"वह खुद कैसे हो सकती है?" फेद्या ने पूछा।

"सच, भगवान जानता है, वह खुद ही थी।"

"लेकिन तुम जानो, वह तो अभी तक नही मरी?"

"अभी साल पूरा कहा हुआ है? और जरा देखो तो कि वह हो क्या गयी है। लगता है जैसे उसका जीवन कच्चे धागे से लटका झूल रहा हो।"

अब एक बार फिर सब चुप थे। पावलूशा ने मुट्ठी-भर सूखी टहनिया अलाव में डाल दी। अचानक एक लौ लपकी और देखते न देखते वे काली हो चली। वे चटकी, धुवायी, सिकुडी, उनके जलते हुए छोर छल्ले की भाति मुडे। रोशनी की झाकिया, खडित कौधो के रूप में सभी दिशाओ में झलक उठी—खास तौर से ऊपर की दिशा मे। अचानक एक सफेद फाख्ता उडकर सीधे उजली रोशनी मे आ गयी, और सकपकायी-सी चक्कर पर चक्कर काटने लगी, लाल आभा से दमकती, और फिर फुर्र से ओझल हो गयी।

"लगता है कि यह अपना घर भूल गयी है," पावलूशा ने कहा, "अब यह उडती रहेगी, जब तक कि इसे सवेरा होने तक आराम करने के लिए कोई ठिकाना नही मिल जाता।"

"लेकिन, पावलूशा," कोस्त्या ने कहा, "क्या यह नही हो सकता कि वह केवल कोई भली आत्मा हो, स्वर्ग के लिए अभियान करती हुई?"

पावलूशा ने सूखी टहनियो का एक और मुट्ठा अलाव में डाल दिया।

"हो सकता है," आखिर उसके मुह से निकला।

"लेकिन, पावलूशा, हमें यह बताओ," फेद्या ने कहना शुरू किया, "शालामोवो मे तुमने वह दैवी चमत्कार* भी देखा?"

---

* किसान लोग सूर्यग्रहण के लिए ये शब्द प्रयोग करते है।

"जब सूरज दिखना बद हो गया था? हा, बेशक देखा!"

"और क्या तुम्हे भी डर लगा?"

"हा, और अकेले हमें ही क्यो, कहते है कि खुद हमारे मालिक का भी बुरा हाल हो गया था। यो उन्होने हमें पहले ही बता दिया था कि अधेरा होगा, लेकिन जब अधेरा छाने लगा तो भय ने उन्हें भी दबोच लिया। और गृह-दासो की झोपडी में बूढी दादी ने तो, जैसे ही अधेरा हुआ, तन्दूर में रखी सारी रकाबिया तक चिमटे से तोड डाली। 'अब कौन खाये-पियेगा,' उसने कहा, 'कयामत का दिन आ गया।' सो शोरबा गिरकर बहने लगा। और गाव के किस्सो का तो कुछ कहना ही नही – यह कि सफेद भेडिये धरती को रौंद डालेगे और लोगो को चटकर जायेगे कि कोई हिसक पक्षी आकाश से हम पर टूट पडेगा, और यह कि त्रीश्का* तक प्रकट होगा।"

"त्रीश्का कौन?" कोस्त्या ने पूछा।

"अरे, क्या तुम्हे यह भी नही मालूम?" इल्यूशा ने सहृदयता से टोका, "आखिर, भाई, तुमने क्या किसी और दुनिया में जन्म लिया है जो त्रीश्का को नही जानते? तुम घर के घोघचू हो, गाव में तुम सब घर के घोघचू, सच! त्रीश्का, चमत्कारो से भरा त्रीश्का, वह एक दिन प्रकट होगा, इतना अद्भुत आदमी कि उसे कोई नही पकड सकेगा, और उसका लोग कभी कुछ नही बिगाड सकेगे, इतना अद्भुत आदमी होगा वह। लोग उसे पकडने की कोशिश करेगे, लाठिया लेकर उसके पीछे लपकेगे, वे उसे घेर लेगे, लेकिन वह उनकी आखो को अधा कर देगा और वे एक-दूसरे पर लुढकने लगेंगे। वे उसे जेल में डाल देंगे, मिसाल के लिए, वह पीने के लिए कटोरे में थोडा पानी मागेगा और उसमें डुबकी

---

*'त्रीश्का' सम्बन्धी यह अन्धविश्वास सम्भवत: ईसा विरोधी रूढि की उपज है।

मगर उसकी आखो से ओझल हो जायेगा। वे उसे जजीरो मे जकड देगे, लेकिन वह केवल अपने हाथो से ताली बजायेगा—और जजीरे अलग जा गिरेगी। सो वह त्रीश्का गावो मे जायेगा, नगरो मे घूमेगा, और वह त्रीश्का बडा कुटिल आदमी होगा, वह प्रभु ईसा के भक्तो को उनके पथ से भटकायेगा. और वे उसका कुछ नही बिगाड सकेगे इतना अद्भुत कुटिल आदमी होगा वह!"

"हा तो," पावलूशा ने अपनी सुनिश्चित आवाज में कहना जारी रखा, "ऐसा है वह त्रीश्का। और उन्हे उम्मीद थी कि वह हमारे इलाको में आयेगा। बडे बूढो ने, दैवी करिश्मे के लगते ही, ऐलान कर दिया कि त्रीश्का आयेगा। हा तो दैवी करिश्मा शुरु हुआ। सारे लोग हाट-बाजार में, खेतो में जगह जगह जा खडे हुए, यह देखने के लिए कि क्या होनेवाला है। हमारा गाव, तुम जानो, खुला देहात है। वे देखने लगे, अचानक पहाड़ के ढलुवान पर बडे गाव की ओर से आदमी ऐसा कोई आता दिखाई दिया। वह इतना अजीब था, और उसका सिर इतना अद्भुत था कि सब चिल्ला उठे, 'ओह, त्रीश्का आ रहा है। ओह, त्रीश्का आ रहा है।' और सब सभी दिशाओ में भाग खडे हुए। हमारे गाव का मुखिया खाई में दुबक गया, उसकी घरवाली ने चौखट से ठोकर खायी और जोर से चीख उठी। अहाते का कुत्ता उसकी चीख सुनकर डर गया, उसने अपनी जजीर तुडा डाली और बाडे को छलाग कर जगल में भाग गया। और कुज्का का बाप दोरोफेइच जई में घुस गया और वहा पडा पडा लवा-पक्षी की भाति किकियाने लगा। 'हो सकता है कि दुश्मन,' उसने कहा, 'सर्वनाशी दुश्मन, कम से कम पक्षियो को छोड दे।' सो डर के मारे सब के सब पागल हो रहे थे! लेकिन वह जो चला आ रहा था—वह निकला हमारा पीपे बनानेवाला वावीला। उसने अपने लिए एक नया मटका खरीदा था और उसे सिर पर रखे चला आ रहा था!"

सब लडके हस पडे, और इसके बाद कुछ देर के लिए फिर सन्नाटा छा गया, जैसा कि खुले में बात करते समय अक्सर होता है। मैंने रात की धीर-गम्भीर, राजसी निस्तब्धता में झाककर देखा। गयी साझ की ओसीली ताज़गी की जगह अब मध्य रात्रि की खुश्क गरमाई ने ले ली थी। नीद में डूबे खेतो पर अधकार का मुलायम परदा पडा था और उसके उठने में, ऊपा की पहली फुसफुसाहटो तथा ओस की पहली बूदो के झिलमिलाने में अभी काफी देर थी। आकाश में चाद का कुछ पता नही था, वे दिन उसके देर से निकलने के थे। अनगिनत सुनहरी तारे, टिमटिमाने में होड-सी करते, मृदुगति से आकाश-गगा की ओर प्रयाण करते मालूम होते थे, और उनकी ओर देखते देखते, सच, ऐसा मालूम होता था जैसे हम भवर की भाति घूमती धरती की अन्तहीन गति का अनुभव कर रहे हो . नदी के ऊपर, एक साथ दो बार, एक अजीब, कर्कश, दु ख भरी चीख सुनाई दी, और इसके कुछ ही मिनट बाद, फिर उसकी आवृत्ति हुई, लेकिन और दूर से

कोस्त्या काप उठा—

"यह क्या?"

"यह बगुले की आवाज़ है," पावलूशा ने थिर भाव से जवाब दिया।

"बगुले की," कोस्त्या ने दोहराया। फिर कुछ रुककर बोला, "और पावलूशा, कल साझ मैंने जो आवाज सुनी, वह क्या थी, तुम्हे शायद मालूम होगा "

"क्या सुना तुमने?"

"बताता हू कि क्या सुना। मै कामेन्नाया ग्र्यादा पर से होकर शाश्किनो जा रहा था। पहले अखरोटो वाला जगल पडा, और फिर एक छोटी-सी चरागाह के पास से मै गुजरा—तुम जानो, वही जहा सोह की तरफ रास्ता मुडता है—उस जगह, तुम जानो, पानी का एक गढा है, नरकट के झाड-झखाड से लदा। हा तो, भाइयो, मै इस गढे के पास

पहुचा, और अचानक वहा से ऐसी आवाज आयी जैसे कोई कराह रहा हो, दुखद आवाज़, बहुत ही दुखद आवाज़—ऊ-ऊ-ऊ, ऊ-ऊ-ऊ! डर के मारे मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम, भाइयो। देर हो गयी थी, और आवाज़ इतनी दुख में डूबी थी कि खुद मेरा हृदय रोने को हो आया ओह, वह किसकी आवाज थी भला?"

"इसी जोहड मे दो साल पहले की गर्मियो में चोरो ने जगल के चौकीदार आकीम को डुबा दिया था," पावलूशा ने राय दी, "सो हो सकता है कि उसकी आत्मा बिलख रही हो।"

"हाय, भाइयो, क्या सचमुच?" अपनी आखो से जो पहले ही काफी गोल गोल थी फाड फाडकर देखते हुए कोस्त्या ने जवाब में कहा, "मुझे क्या पता कि उन्होने आकीम को उस जोहड में डुबा दिया था! और अगर जानता होता तब भी क्या डर से मेरा पिंड छूट जाता!"

"लेकिन लोगो का कहना है कि ऐसे छोटे छोटे, नन्हे मेंढ़क भी हैं," पावलूशा कहता गया, "और वे इसी भाति रोते हैं जैसे विलाप कर रहे हो।"

"मेंढक? ओह नही, वे मेंढक नही थे, कतई नही थे।" (नदी के ऊपर बगुले की आवाज़ फिर सुनाई दी।) "उफ, फिर वही!" बरबस कोस्त्या के मुह से निकला, "जैसे जगल का देव चीख रहा हो।"

"जगल का देव गूगा होता है, वह चीखता नही," इल्यूशा ने कहा, "वह केवल हाथो से तालिया बजाता और खडखड करता है।"

"तो यह कहो कि तुमने उसे, जगल के देव को, देखा है, क्यो?" फेद्या ने चुटकी लेते हुए उससे पूछा।

"नही, मैंने उसे नही देखा, और खुदा कभी उसे न दिखाये, लेकिन औरो ने देखा है। और सच, कई दिन पहले हमारे उधर एक किसान को उसने खूब भटकाया, उसे जगल में से ले जाते हुए, एक क्षेत्र में ले गये जहा पर वह चक्कर काटता रहा. वड़ी मुश्किल दिन चटे घर जाकर पहुंचा।"

"तो क्या उसने उसे देखा?"

"हा। उसका कहना है कि वह वडा, बहुत बडा जीव है, अंधियाला, बिना साफ आकार के, जैसे वह किसी पेड के पीछे खडा हो, और पता न चले कि वह कैसा-क्या है। वह चाद से मुह छिपाता मालूम होता था, और अपनी बडी बडी आखो से घूर रहा था, बस घूरे जा रहा था, और उन्हे मिचमिचा रहा था, मिचमिचा रहा था "

"अख!" थोडा कापते और अपने कधो को बिचकाते हुए फेद्या ने दुतकारा, "कम्बख्त!"

"ऐसे नालायक जीवो का बोझ यह धरती कैसे संभालती है," पावलूशा ने कहा, "देखकर ताज्जुव होता है!"

"उसकी बुराई मुह से न निकालो। कही ऐसा न हो कि वह सुन ले!" इल्यूशा ने चेताया।

इसके बाद फिर सव चुप हो रहे।

"अरे देखो, देखो, भाइयो!" अचानक वान्या की बच्चो जैसी आवाज़ सुनाई दी, "भगवान के इन सितारो, नन्हे नन्हे सितारो को तो देखो, जैसे मधुमक्खियो का छत्ता हो!"

चटाई के भीतर से उसने अपना नन्हा प्रफुल्ल मुह वाहर निकाला, अपनी नन्ही मुट्ठियो को जमीन पर टिकाया और धीरे धीरे उसकी बडी वडी मृदु आखें ऊपर की ओर उठ गयी। अन्य सवकी आखें भी आकाश की ओर उठी थी, और वे जल्दी वहा से नही हटी।

"हा, तो वान्या," फेद्या ने दुलार से कहना शुरू किया, "तुम्हारी वहिन आन्यूत्का तो ठीक है?"

"हा, ठीक है, वहुत ठीक," थोडा तुतलाते हुए वान्या ने जवाव दिया।

"उससे पूछना, वह हमें मिलने क्यो नही आती?"

"मुझे पता नही।"

"उससे आने के लिए कहना तो।"

"अच्छा।"

"कहना कि उसके लिए मैंने मिठाई रख छोडी है।"

"और मेरे लिए भी, क्यो?"

"हा, तुम्हारे लिए भी।"

वान्या ने एक उसास भरी।

"नही, मुझे नही चाहिए। उसे ही दे देना। वह बडी नेकदिल है।"

और वान्या ने अपना सिर फिर धरती पर टिका दिया। पावलूशा खड़ा हो गया और ख़ाली हडिया को उसने अपने हाथ में उठा लिया।

"कहा जा रहे हो?" फेद्या ने उससे पूछा।

"नदी पर, पानी लेने। प्यास लगी है।"

कुत्ते भी उठकर उसके साथ चल दिये।

"देखो, नदी मे गिर न पडना!" इल्यूशा ने पीछे से चिल्लाकर चेताया।

"नदी में क्यो गिर पडेगा?" फेद्या ने कहा, "वह चौकस रहेगा।"

"छि, चौकस रहेगा! लेकिन क्या भरोसा, कुछ हो जाय। हो सकता है कि वह झुके, पानी लेने के लिए, और पानी का भूत उसका हाथ झटककर उसे पानी में खीच ले जाय। लोगो का क्या, वे कहेगे, 'वह पानी में गिर पड़ा ..' पानी में गिर पडा, क्या ख़ूब! ओह देखो, वह अब नरकटो में से जा रहा है।" सुनते हुए उसने अन्त में कहा।

और सचमुच, जैसा कि हमारे यहा कहते हैं, नरकटो से शिश की आवाज़ आती थी, जब उन्हे अगल-बगल हटाया जाता था।

"लेकिन क्या यह सच है," कोस्त्या ने पूछा, "कि आकुलीना उस दिन से पागल हुई है जब वह पानी में गिरी थी?"

"हा, तभी से .. कितनी भयावनी लगती है अब यह! लेकिन कहते है कि पहले वह बडी सुन्दर थी। पानी के भूत ने उसपर टोना कर

दिया। शायद उसे उम्मीद नही थी कि लोग उसे इतनी जल्दी बाहर निकाल लेगे। सो उसने वहा, नीचे गहराई में, उसपर टोना कर दिया।"

(इस आकुलीना को मै एक से अधिक वार देख चुका था। चिथडो में लिपटी, वेहद पतली, चेहरा कोयले की तरह काला, पनीली आखें और हर घडी वत्तीसी निकाले, सडक पर घटो एक ही जगह खडी रहती, अपने पावो को पटकती, हाड-से हाथो को छाती पर चिपका लेती, और पिजरे में वद जगली जन्तु की भाति धीरे-से एक पाव का बोझ दूसरे पर वदल कर डालती। वह कुछ न समझ पाती कि उससे क्या कहा जा रहा है, केवल रह रहकर वरवस नि शव्द हसी में गिलगिला उठती।)

"लेकिन लोगो का कहना है कि आकुलीना को," कोस्त्या कहता गया, "उसके प्रेमी ने धोखा दिया था, उसके वाद वह खुद पानी में कूद पडी थी।"

"हा, हुआ तो ऐसा ही।"

"और तुम्हे वास्या की भी याद है?" उदास भाव से कोस्त्या ने कहा।

"कौन वास्या?" फेद्या ने पूछा।

"अरे वही जो इसी नदी में डूब गया था," कोस्त्या ने जवाव दिया, "ओह, कैसा लडका था, वहुत ही वढिया! और उसकी मा फेक्लीस्ता, वह उसे—अपने वास्या को—कितना प्यार करती थी! और लगता है जैसे उसे पहले से ही इसका भास हो। सच, फेक्लीस्ता को मालूम था कि पानी से उसपर मुसीवत आयेगी। गर्मियो में अन्य लडको के साथ जब कभी वास्या नदी पर नहाने जाता था तो वह ऊपर से नीचे तक काप उठती थी। अन्य स्त्रियो को कोई परवाह नही होती थी। अपने कपडे धोने के तश्त लिये वे उधर से निकलती और आगे वढ जाती, लेकिन फेक्लीस्ता अपने कपडे धोने के तश्त ज़मीन पर टिका देती और उसे आवाज़ें देने लगती, 'लौट आओ, लौट आओ मेरे मुन्ने! लौट

आओ, मेरे राजा मुनुवा!' और कोई नही जानता कि वह डूबा कैसे। वह तट पर खेल रहा था, और उसकी मा वही सूखी घास बटोर रही थी। तभी अचानक उसने सुना जैसे पानी मे कोई वुलवुले छोड रहा हो, और देखा तो केवल वास्या की नन्ही टोपी पानी की सतह पर नजर आ रही थी। तुम जानो, फेक्लीस्ता का दिमाग तभी से सनका है। जिस जगह वह डूबा था, वहा जाकर वह धरती पर लोट जाती है, वह धरती पर लोट जाती है, भाइयो, और एक गीत गाती है—तुम्हे याद होगा, भाइयो, कि वास्या हर घडी वैसा ही गीत गाता था, रोती है, कलपती है, और भगवान को अपना दुख सुनाती है..."

"वह देखो, पावलूशा आ रहा है," फेद्या ने कहा।

पावलूशा हाथ में पानी से ऊपर तक भरी हडिया थामे अलाव के पास आ गया।

"साथियो," क्षण-भर चुप रहने के वाद उसने कहना शुरू किया, "वुरा हुआ।"

"सो क्या?" कोस्त्या ने उतावली मे पूछा।

"मैंने वास्या की आवाज सुनी है।"

जैसे सव सिहर उठे।

"यह क्या कहते हो? क्या कहते हो?" कोस्त्या हकलाते हुए वोला।

"मै नही जानता। मै पानी के लिए केवल झुका ही था कि अचानक वास्या की आवाज़ मैंने सुनी, वह मेरा नाम पुकार रहा था। आवाज पानी के नीचे से आ रही मालूम होती थी, 'पावलूशा, पावलूशा, यहा आओ।' जैसे-तैसे पानी लेकर मैं लौटा।"

"ओह, प्रभु हम पर दया करे!" क्रॉस का निशान वनाते हुए लडको ने कहा।

"वह पानी का भूत था जो तुम्हे बुला रहा था, पावलूशा," फेद्या ने कहा, "हम अभी वास्या की ही बात कर रहे थे।"

"ओह, यह बुरा शगुन है," इल्यूशा ने निश्चयात्मक अन्दाज़ में कहा।

"हुआ करे, कोई चिन्ता नही," पावलूशा ने दृढता से कहा और फिर धरती पर जम गया, "भाग्य में जो होगा, सो होकर रहेगा।"

लडके थिर थे। साफ मालूम होता था कि पावलूशा के शब्दो ने उनपर गहरा असर डाला है। वे आग के सामने पसरने लगे, मानो सोने की तैयारी कर रहे हो।

"अरे यह क्या?" अचानक अपना सिर उठाते हुए कोस्त्या ने पूछा।

पावलूशा ध्यान से सुनने लगा।

"ये करल्यु-पक्षी है जो सीटी बजाते उडे जा रहे है।"

"ये कहा उडे जा रहे है?"

"ऐसे देश की ओर जहा, कहते है, कभी जाडा नही पडता।"

"क्या ऐसा देश भी है?"

"हा, हा।"

"क्या यहा से बहुत दूर है?"

"हा, बहुत बहुत दूर, सात समुन्दर पार।"

कोस्त्या ने एक सास भरी और अपनी आखें मूद ली।

लडको के साथ सम्पर्क में आये मुझे तीन से भी ज्यादा घटे हो गये थे। आखिर चाद निकल आया था। बिल्कुल महीन फाक की भाति। शुरू शुरू में उसकी ओर मेरा ध्यान तक नही गया। चांद-विहीन रात मानो अब भी उतनी ही धीर-गम्भीर और निस्तब्ध थी जितनी कि पहले लेकिन तारक-दल, थोडी ही देर पहले जो आकाश की ऊचाइयो में टिमटिमा रहे थे, अब धरती की काली कोर पर उतर आये थे। चारो

ओर की हर चीज़ पूर्णतया थिर थी, उतनी ही थिर जितनी कि वह केवल पौ फटने से पहले हुआ करती है। हर चीज़ नीद में डूबी थी, गहरी अटूट नीद में, जो अंधेरा छटने से पहले आती है। वायु मे छायी गध पतली पड चली थी, और ऐसा मालूम होता था जैसे ओस फिर गिरने लगी हो .. गर्मियो की राते कितनी छोटी होती है! अलाव की आग के साथ साथ लडको की वाते भी शान्त पड गयी थी। कुत्ते तक ऊघने लगे थे। घोड़े भी, अस्पप्ट तारो की धुधली रोशनी मे जहा तक मै भाप सका, सिर लटकाये सो रहे थे . अलस बेसुधी ने मुझे घेर लिया और उसी में पडे पडे मुझे नीद आ गयी।

ताज़ी हवा का एक झोका मेरे चेहरे को सरसराता हुआ निकल गया। मैने अपनी आखें खोली। सवेरा शुरू हो रहा था। ऊषा की लाली ने अभी आकाश में रग नही भरे थे, लेकिन पूरव मे उजाला बढ रहा था। चारो ओर की हर चीज अब नज़र आने लगी थी, हालाकि धुधलापन अभी दूर नही हुआ था। पीला-भूरा आकाश उजला होता जा रहा था, सर्द और नीला। तारे अब धीमी रोशनी मे टिमटिमा रहे थे, या ओझल हो गये थे। धरती भीगी थी, पत्तो पर ओस छायी थी, कही दूर से ज़िन्दगी की और लोगो के बोलने की आवाजे आने लगी थी, और सुबह की हल्की हवा फरफराती हुई धरती के ऊपर से वह रही थी। मेरे बदन में खुशी की एक हल्की सिहरन-सी दौड गयी। मै जल्दी से उठा और लड़को के पास गया। वे सब सो रहे थे, बुझते हुए अलाव के इर्द-गिर्द, जैसे थककर एकदम चूर। केवल पावलूशा आधा उठा और नज़र जमाकर मेरी ओर देखने लगा।

सिर झुकाकर मैंने उससे विदा ली और नदी के किनारे किनारे घर की ओर चल दिया। अभी दो मील चला हूगा कि चारो ओर, ओस से भीगे घास के प्रशस्त हरे मैदानो के ऊपर, और सामने एक के बाद एक जगलो की शृखला के बाद जहा पहाड़िया फिर हरी भरी दिखने लगी

थी, और पीछे लम्बी धूल भरी कच्ची सडक तथा झिलमिलाती झाडियो के ऊपर जो लाल आभा से दमक रही थी, और नदी की हल्की नीलिमा के ऊपर जिसकी धुध अब छटती जा रही थी, ताजे आलोक के झरने छलछला रहे थे। शुरू में गुलाबी, फिर लाल और फिर सुनहरी आभा हर चीज़ स्पन्दित हो रही थी, जाग रही थी, गा रही थी, फरफरा रही थी, बोल रही थी। चारो ओर घनी ओस की बूदें हीरो की भाति चमचमा रही थी। घटी के स्वर साफ-सुथरे और निश्चल, सुबह के निखार की भाति, स्वच्छ, मानो मेरा अभिवादन करते हवा में तैर रहे थे। और तभी, अचानक, तेज गति से, घोडो का रेवड मेरे पास से गुजर गया, ताजादम और थकान से मुक्त। रेवड को वही लडके हाक रहे थे जिन्हे मै पीछे छोड आया था

और अन्त में दुख के साथ कहना पडता है कि उसी साल पावलूशा का अन्त हो गया। वह डूबकर नही, बल्कि घोडे से गिरकर मरा। हृदय कसक उठता है—ओह कितना शानदार लडका था वह!

कसीवया मेच का निवासी कास्यान

धचकोले खाती एक छोटी-सी टमटमिया मे मै शिकार पर से लौट रहा था। गर्मियो के दिन थे और आकाश मे छाये बादलो के कारण दमघोट ऊमस थी (यह सभी जानते है कि उजले दिनो की अपेक्षा, ऐसे दिनो में गर्मी बहुधा अधिक असह्य होती है, खास तौर पर उस समय जब हवा बद हो)। गर्मी से अभिभूत मै ऊघ रहा था और धचकोले खा रहा था। टेढे-मेढे और चरचर करते पहिए सडक पीट रहे थे और सफेद धूल के कण निरन्तर उडा रहे थे। कोई चारा न देख विक्षोभ के साथ मै यह सब अत्याचार सह रहा था। तभी, अचानक, अपने कोचवान की गैरमामूल बेचैनी और झुझलाहट ने मेरा ध्यान खीचा। घडी-भर पहले तक वह मुझसे भी ज्यादा निश्चिन्तता के साथ ऊघ रहा था। लेकिन अब वह रासो को झटक रहा था, अपनी गद्दी पर बेचैनी के साथ करवटें ले रहा था, और एक ही दिशा में आखे जमाये घोडो पर बरस रहा था। मैंने भी उसी तरफ नजर की। हम एक चौडे जोते हुए मैदान मे से गुज़र रहे थे। नीची पहाडिया—उसी भाति जोती हुई—हल्के ढलुवानो के रूप मे लहराती-उभरती चली गयी थी। चार मील दूर तक का इलाका वीरान पडा था। दूर क्षितिज की करीब करीब सीधी रेखा की एकरसता को केवल बर्च-वृक्षो के छोटे झुरमुटो की गोल लट्टूनुमा चोटिया भग करती थी। सकरी पगडडिया खेतो में फैली थी, तलहटियो में ओझल हो गयी थी, और पहाडी टीलो का चक्कर लगाती चली गयी थी। इनमें से एक

पगडंडी पर, जो पांच-एक सौ डग आगे हमारी सडक से आ मिली थी, मुझे एक जलूस-सा आता दिखाई दिया। मेरा कोचवान इसी की ओर ताक रहा था।

यह मातमी जलूस था—आगे, एक गाडी में जिसमें एक घोडा जुता था और जो धीमी पैदल चाल से आ रही थी, पादरी सवार था। उसकी बगल में डीकन बैठा गाडी को हाक रहा था। गाडी के पीछे चार किसान थे, उघड़े सिर। वे सफेद कपडे से ढका ताबूत उठाये थे। दो स्त्रिया ताबूत के पीछे पीछे आ रही थी। उनमें से एक के विलाप की तीक्ष्ण आवाज अचानक मेरे कानो में पडी। मै ध्यान से सुनने लगा। वह स्यापा कर रही थी। स्यापे की एकरस, अत्यधिक शोकपूर्ण ध्वनि सूने खेतो मे बहुत ही उदास मालूम हो रही थी। कोचवान ने चाबुक फटकारा, वह इस शवयात्रा से आगे निकल जाना चाहता था। रास्ते में शव का मिलना बुरा शगुन है। और इससे पहले कि मातमी जलूस पगडडी खत्म कर बडी सडक पर आता, वह तेजी से आगे निकल गया। लेकिन उस जगह से जहा पगडडी सडक से आकर मिलती है, हम मुश्किल से सौ-एक डग ही आगे बढे होगे कि अचानक हमारी टमटम ने बुरी तरह धचकोला खाया, एक बाजू ढुलक गया, बस यह कहो कि उलटते उलटते बचा। कोचवान ने तेजी से दौडते घोडो की रास खीची, और हवा में बाजू हिलाते हुए थूका।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

मेरा कोचवान बिना कुछ बोले या कोई उतावली दिखाये नीचे उतर आया।

"लेकिन हुआ क्या है?"

"धुरी टूट गयी है .. जल गयी है," उसने निराशा से जवाब दिया, और बाजूवाले घोडे का पट्टा अचानक इतनी झुझलाहट के साथ सीधा किया कि घोडा लडखडाते लडखडाते बचा। उसने अपने नथुने

फरफराये, बदन झटका और शान्ति के साथ अपने टखने को दातो से खुजलाने लगा।

मै गाडी से उतर पड़ा और कुछ देर सडक पर खडा रहा। मै बेचैन हो रहा था। दाहिना पहिया गाडी के नीचे जाकर एकदम दोहरा हो गया था और उसकी कीली, मूक निराशा की मुद्रा मे, ऊपर की ओर उठी थी।

"अब क्या किया जाय?" अन्त मे मैने पूछा।

"यह सब उसकी करतूत है," अपने चाबुक से मातमी जलूस की ओर इशारा करते हुए मेरे कोचवान ने कहा जो अभी अभी पगडडी से सडक पर आ गया था और हमारी ओर बढ रहा था। "मैने हमेशा यही देखा है," वह कहता गया, "रास्ते मे मुर्दे का मिलना सच, पक्का अपशकुन समझो!"

और उसने फिर बाजूवाले घोडे को तग करना शुरू कर दिया। घोडे ने जैसे उसकी झुझलाहट को समझ पूर्णतया शान्त रहने का निश्चय कर लिया था और कभी कभी विनम्रता से अपनी दुम हिलाने के सिवा और कोई हरकत नही कर रहा था। कुछ देर तक तो मै इधर से उधर टहलता रहा, और उसके बाद फिर पहिए के सामने आकर खडा हो गया।

इसी बीच मातमी जलूस हमारे पास आ गया था। चुपचाप सडक छोडकर घास पर से होता हुआ मातमी जलूस धीमी गति से आगे बढ गया। कोचवान और मैने अपनी टोपिया उतारी, पादरी को सिर नवाया और शव-वाहको के साथ आखो ही आखो में सवेदन प्रकट किया। बोझ भारी मालूम होता था, वे मुश्किल से उसे ले जा रहे थे, दबाव के मारे उनकी चौडी छातिया उभर आयी थी। ताबूत के पीछे जाती दो स्त्रियो मे से एक बहुत बूढी और पीली थी। उसका स्थिर चेहरा, पत्थर के बुत की तरह विकृत, गम्भीर और कडी गरिमा के अपने भाव को अभी भी कायम रखे था। वह चुपचाप चल रही थी, रह रहकर अपने [illegible]

उठाती थी और पतले खिचे हुए होठो तक ले जाती थी। दूसरी, पचीस-एक वर्ष की युवा स्त्री थी। उसकी आखे गीली और लाल थी, और उसका सारा मुह रोते रोते सूज गया था। हमारे पास से गुजरते समय उसने स्यापा वद कर दिया और आस्तीन से अपना चेहरा छिपा लिया लेकिन मातमी जलूस गाडी के पास से घूमकर जव फिर सडक पर चलने लगा तो उसका दु खजनक, हृदयवेधी विलाप फिर शुरू हो गया। कोचवान की आखे, खामोशी के साथ, समगति से झकोरे खाते तावूत को जाते देखती रही। इसके वाद वह मेरी ओर मुडा।

"यह मार्तीन वढई का जनाजा था," उसने कहा, "र्‌यावाया गाव का रहनेवाला मार्तीन।"

"तुमने कैसे जाना ?"

"इन स्त्रियो को देखकर। वूढी उसकी मा है, और युवा उसकी घरवाली।"

"तो क्या वह वीमार था?"

"हा बुखार आया था। परसो ओवरसीयर ने डाक्टर को बुलाने आदमी भेजा था, लेकिन डाक्टर घर पर नही मिला। वह वहुत वढिया वढई था, थोडा पीता जरूर था, लेकिन कारीगर अच्छा था। देखो न, उसकी घरवाली कैसे विलख रही थी लेकिन छोडो, आप जानो, औरतो के आसुओ का क्या मूल्य निरा पानी होता है सच, निरा पानी!"

और वह नीचे झुककर, वाजूवाले घोडे के साज के तले रेग गया और दोनो हाथो से लकडी के जुए को कब्जे में किया जो घोडो के सिर पर से गुजरता है।

"जो हो," मैने कहा, "अव क्या किया जाय?"

कोचवान ने अपना घुटना बीचवाले घोडे के कूल्हे के साथ टिकाया, जुए को दोवारा झटका और गद्दी को सीधा किया। इसके वाद वह

बाजूवाले घोडे की जोत के नीचे से फिर बाहर रेग आया और बराबर में से गुजरते समय उसकी थूथनी पर घूसा मारते हुए पहिए के पास पहुचा। वह पहिए के निकट गया और, एक घडी के लिए भी उसे अपनी नजर से ओझल न करते हुए अपने लम्बे कोट के पल्ले मे से धीरे से उसने एक डिबिया निकाली, पट्टे की मदद से धीरे से उसका ढक्कन खोला, धीरे से उसमे अपनी दो मोटी उगलिया डाली (जो डिबिया मे बडी मुश्किल से घुस पायी), चुटकी में सुघनी पकडने के लिए देर तक अपनी उगलियो को हिलाता रहा और उसकी पूर्व-कल्पना मे अपनी नाक को सिकोडा। इसके वाद लगातार कई बार उसने सुघनी को सुडका और हर बार काखता रहा। फिर, अपनी पनीली आखो को धीरे धीरे मिचमिचाते हुए, गहरे सोच मे खो गया।

"हा तो?" अन्त में मैंने कहा।

कोचवान ने सावधानी के साथ डिबिया को अपनी जेव के हवाले किया, हाथ का सहारा लिये बिना केवल सिर झटकाकर अपनी टोपी को नीचे भौहो तक ले आया और विचारशील मुद्रा मे अपनी गद्दी पर जा बैठा।

"अरे यह क्या?" कुछ हैरान होकर मैंने उससे पूछा।

"कृपा कर वैठ जाइये," रास सभालते हुए उसने शान्त भाव से कहा।

"लेकिन हम चल कैसे सकते है?"

"अब चले चलेगे।"

"लेकिन धुरी?"

"किरपा कर वैठ जाइये।"

"लेकिन धुरी टूटी है न?"

"हा टूटी है लेकिन हम वस्ती तक पहुच जायेंगे धीरे धीरे। वहा उधर, झुरमुट से परे, दाहिनी ओर एक वस्ती है। यूदिनो नाम की।"

"तो तुम्हारी समझ में क्या हम वहां तक पहुंच सकते है?"

कोचवान ने मेरी ओर कोई ध्यान नही दिया।

"मै तो पैदल चलना पसद करूगा," मैंने कहा।

"जैसी आपकी इच्छा "

उसने अपना चाबुक फहराया, और घोडे चल पडे।

आखिर हम सही-सलामत बस्ती में पहुच गये, हालाकि आगे का दाहिना पहिया करीब करीब अलग हो गया था और अजीव ढग से चक्कर काट रहा था। एक ढलुवान पर तो वह अलग ही जा गिरा होता, लेकिन कोचवान भन्नाकर चिल्लाया, और हम खैरियत के साथ नीचे पहुच गये।

यूदिनो वस्ती में छ छोटी छोटी नीची झोपडिया थी। उनकी दीवारे अभी से टेढी होने लगी थी, हालाकि उन्हे वने कुछ ज्यादा दिन नही हुए थे। कुछ के सहनो में वेंत के वाडे तक नही थे। वस्ती में प्रवेश करते समय एक भी जीवित प्राणी हमने नही देखा। गली में मुर्गिया तक नही दिखाई दी, कुत्ते भी वहा नजर नही आये, सिवा एक काले डुडी दुमवाले लडूरे के। हमारी आहट पाते ही वह एकदम सूखी तथा खाली तश्त में से उछलकर वाहर निकला—निश्चय ही प्यास बुझाने के लिए वह वहा गया होगा—और फौरन, विना भौके, भागकर एक फाटक के नीचे से अन्दर चला गया। मैं पहली झोपडी की ओर वढा, वाहरी कोठे का दरवाज़ा खोला और झोपडी के मालिक को आवाज दी। जवाव में कोई नही वोला। मैंने एक बार फिर आवाज दी। दूसरे दरवाज़े के पीछे किसी विल्ली की भूखी म्याऊ सुनाई दी। पाव से धकेलकर मैंने दरवाजा खोल डाला। पास ही एक सूखी-सडी विल्ली मेरे सामने से भागकर निकल गयी और उसकी हरी आखे अधेरे में चमक रही थी। मैंने कमरे में झाककर देखा—कमरा अन्धेरा और खाली था, और धुए से भरा। पलटकर मैं सहन में आ गया, वहा भी कोई नही था . . वाडे के पीछे एक वछडा

रभा उठा, भूरे रग का एक लगडा कलहस एक तरफ हो गया। मै दूसरी झोपडी की ओर बढा। यहा भी कोई नही था। मै सहन मे दाखिल हुआ

सहन के ठीक बीचोबीच, चौधियाती धूप मे मुह को धरती से चिपकाये और सिर को लबादे से ढके, एक लडका लेटा हुआ था। ऐसा ही मुझे जान पडा। उससे कुछ डग दूर, भूसे के छप्पर के नीचे, एक मरियल-सा नाटा घोडा, जिसका साज चिथडा हो गया था, टूटी-फूटी-सी एक छोटी गाडी के पास खडा था। खस्ताहाल छप्पर की सकरी दराजो मे से छनकर आती सूरज की किरनें घोडे के छितरे कत्थई रग के बदन पर धारिया और रोशनी के छोटे छोटे चित्ते डाल रही थी। ऊपर, ऊचे चलकर, चिडियाखाने में स्टारलिग-पक्षी चहचहा रहे थे और अपने हवादार घर में से कुतूहल से नीचे की ओर झाक रहे थे। मै उस सोते हुए जीव की ओर बढा और उसे जगाने की कोशिश करने लगा।

उसने अपना सिर उठाया, मेरी ओर देखा, और एकदम खडा हो गया "क्यो? क्या चाहिए? क्या हुआ?" उनीदा-सा वह बुदबुदाया।

उसे मै तुरत कोई जवाब नही दे सका। उसकी शकल-सूरत ने मुझे कुछ इतना अभिभूत कर दिया था।

जरा कल्पना कीजिये—पचास वर्ष का एक टुइया-सा बौना, छोटा-सा झुर्रियोदार गोल सावला चेहरा, पैनी नाक, छोटी छोटी भूरे रग की मुश्किल से दिखाई पडनेवाली आखे, और काले रग के घने घुघराले बाल, जो उसके छोटे-से सिर पर इस प्रकार खडे थे जैसे कुकुरमुत्ते की टोपी। उसका समूचा ढाचा अत्यन्त क्षीण और कमजोर था, और उसके चेहरे का भाव कुछ इतना असाधारण और अजीव था कि उसे शब्दो मे व्यक्त करना एकदम असम्भव है।

"क्यो, क्या चाहिए?" उसने फिर पूछा।

मैंने उसके सामने स्थिति स्पष्ट की। धीरे धीरे आखो को मिचमिचाते और बराबर मेरी ओर देखते हुए वह सुनता रहा।

"सो क्या हमे नयी धुरी नही मिल सकती?" अपनी बात ख़त्म करते हुए मैंने कहा, "हम उसका दाम देने को तैयार है।"

"लेकिन तुम हो कौन? शिकारी हो क्या?" ऊपर से नीचे तक मुझे अपनी नजर से छानते हुए उसने कहा।

"शिकारी।"

"सो तुम भगवान के पछियो को गोली से मारते हो, क्यो? और जगल के जीवो को? ख़ुदा के इन जीवो को मारना, नाहक ख़ून बहाना, क्या पाप नही है?"

वह विचित्र आदमी अपने स्वर को ख़ूब खीचकर बोल रहा था। उसकी आवाज की ध्वनि भी विचित्र थी। वृद्धावस्था की क्षीणता का उसमें जरा भी आभास नही था। वह अद्भुत रूप में मीठी, तरुण और लगभग स्त्रियो के कठ सी कोमल मालूम होती थी।

"मेरे पास धुरी-वुरी कुछ नही है," थोडा रुककर उसने कहा। फिर अपनी गाडी की ओर इशारा करते हुए बोला—"उससे तुम्हारा काम नही चलेगा। तुम्हारी बग्घी, मै समझता हू, बडी होगी।"

"लेकिन गाव मे तो मिल जायेगी न?"

"यह भी कोई गावो मे गाव है! न, यहा धुरी किसी के पास नही मिलेगी और लोग घरो मे नही है। सब काम पर गये है। सो आगे का रास्ता पकडो," अचानक उसने ऐलान किया, और फिर धरती पर पसर गया।

बातचीत का इस प्रकार अन्त होगा, इसके लिए मै कतई तैयार नही था।

"सुनो तो, बूढे बाबा," उसके कधे पर हाथ रखते हुए मैंने कहा, "इतने कठोर न बनो, थोडी मदद करो।"

"बस अपना रास्ता देखो, मेरी जान छोडो। मै थका हू। शहर गया था," उसने कहा और अपना लबादा सिर के ऊपर खीच लिया।

"ख़ुदा के लिए मेहरबानी करो," मने कहा, "मै   मै पैसे देने को तैयार हू।"

"नही, मुझे तुम्हारे पैसे-वैसे कुछ नही चाहिए।"

"लेकिन, बूढे बाबा, मेहरबानी करो   "

उसने अपने बदन को आधा उठाया और अपनी पतली पतली टागो को एक दूसरे के ऊपर रखकर बैठ गया।

"शायद वहा ले जाने से तुम्हारा काम बन जाय—जहा जगल मे खुली जगह है। कुछ सौदागरो ने वहा जगल ख़रीदा है—ख़ुदा उनका इनसाफ करे। वे उसे काट रहे है—ख़ुदा उनका न्याय करे—और एक खाताघर उन्होने वहा बनवाया है। उनसे तुम अपनी धुरी बनवा सकते हो, या नयी खरीद सकते हो।"

"बहुत ख़ूब!" मै बेहद ख़ुश हो उठा, "बहुत ख़ूब! तो चलो, वही चले।"

"बलूत की लकडी की धुरी, बहुत बढिया होगी," अपनी जगह पर बैठे ही बैठे वह कहता गया।

"और क्या वह जगह दूर है?"

"दो मील होगी।"

"तो फिर चलो। तुम्हारी गाडी में वहा तक चल सकते है।"

"ओह, नही ."

"अरे चलो भी," मैने कहा, "चलो, बूढे बाबा, चलो। कोचवान सडक पर हमारी बाट मे खडा है।"

बूढा अनमना-सा उठा और मेरे पीछे पीछे सडक पर निकल आया। कोचवान का पारा चढा हुआ था। उसने अपने घोडो को पानी पिलाने की कोशिश की थी, लेकिन मालूम हुआ कि पानी कुवे मे कम था और उसका जायका भी अच्छा नही था, और पानी ऐसी चीज है जिसकी अच्छाई का कोचवान सबसे पहले ध्यान रखते है. फिर भी, बुढऊ को देखते

ही, वह मुस्कराया और अपना सिर हिलाते हुए बोला—"अरे, कास्यान, मजे में तो हो?"

"और तुम, येरोफेई, तुम भी तो मजे में हो न, भले आदमी!" कास्यान ने उदास-सी आवाज में कहा।

कोचवान को उसके सुझाव से मैंने तुरत परिचित करा दिया। यरोफेई ने सुझाव का समर्थन किया और गाडी को हम अहाते में ले गये। कोचवान जान बूझकर तेजी से घोडो को खोलने में जुट गया और वृद्ध, फाटक के सहारे अपने कधो को टिकाये, बेचैन-सा पहले कोचवान की ओर और फिर मेरी ओर देखने लगा। ऐसा मालूम होता था जैसे उसका मस्तिष्क दुविधा मे पड गया हो। मुझे लगा हमारे अचानक आ जाने से वह कुछ खुश नही था।

"सो उन्होने तुम्हे भी यहा ला पटका है, क्यो?" लकडी के जुवे को उठाते हुए येरोफेई ने अचानक पूछा।

"हा।"

"उफ!" मेरे कोचवान ने दातो को भीचते हुए कहा, "मार्तीन बढई को तो तुम जानते हो न अरे वही, र्यावाया का रहनेवाला मार्तीन?"

"हा।"

"हा तो वह मर गया। अभी रास्ते में उसकी अर्थी ले जा रहे थे।"

कास्यान काप उठा।

"मर गया?" कहते हुए उसका सिर शोक से नीचे लटक गया।

"हा, वह मर गया। तुमने उसकी दवा-दारू नही की, क्यो? लोग कहते है, तुम दवा-दारू करते हो, हकीम हो।"

मेरा कोचवान, प्रत्यक्षत, बुढऊ से छेड-छाड कर रहा था, उसका मजाक उडा रहा था।

"और यह बग्घी क्या तुम्हारी है?" कधे बिचकाकर बग्घी की ओर इशारा करते हुए उसने फिर पूछा।

"हा।"

"ओह, यह बग्घी   वाह!" उसने दोहराया, और उसका बम पकडते हुए उसे इस तरह उठाया कि वह करीब करीब उलट गयी। "ऊह, बग्घी   लेकिन तुम इसे खुली जगह ले कैसे जाओगे? इसके बम हमारे घोडो को तो सभाल नही सकते। हमारे घोडे इनके लिए बहुत बडे है।"

"भगवान जाने," कास्यान ने जवाब दिया, "कैसे आप वहा पहुचेगे, शायद यह घोडा काम दे जाय!" उसास भरते हुए उसने कहा।

"ओह, यह!" येरोफेई के मुह से निकला और कास्यान के घोडे के पास जाकर उपेक्षा से अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उगली उसकी ग्रीवा पर फेरने लगा। "देखो न," नाक सिकोडते हुए फिर उसने कहा, "यह तो ऊघ रहा है, अकाल का मारा!"

मैंने येरोफेई से कहा कि फौरन उसे जोत ले। कास्यान के साथ मै खुद गाडी में खुली जगह तक जाना चाहता था। ऐसी जगहो मे ग्राउज-पक्षी खूब मिलते है। छोटी गाडी के एकदम तैयार हो जाने पर मै और मेरा कुत्ता बेत के बने उसके ऐडे-बेंडे ढाचे मे जा बैठे, कास्यान गुडमुडी-सा बना और चेहरे पर अभी भी वैसा ही उतरा हुआ भाव धारण किये अगले हिस्से में बैठ गया। तब येरोफेई मेरे निकट आया और रहस्यमय अन्दाज मे मेरे कान में फुसफुसाकर बोला—

"यह आपने अच्छा किया मालिक, जो खुद इसके साथ जा रहे है। यह बहुत ही अटपटा आदमी है। आप जानो, एकदम सनकी। लोगो ने इसका नाम पिस्सू रख छोडा है। पता नही, आप इसे कैसे समझ पाये   "

मैंने येरोफेई से कहना चाहा कि अब तक मुझे तो कास्यान काफी समझदार आदमी मालूम दिया है, लेकिन मेरा कोचवान अपने उसी सुर में बराबर कहता गया—

"लेकिन इससे चौकस रहना। ऐसा न हो कि आपको कही और ले जाय। और मालिक, किरपा कर, धुरी भी खुद अपनी पसद की ही लेना, ऐसी जो खूब मजबूत हो हा तो पिस्सू," उसने अब ऊची आवाज़ में कहा, "तुम्हारे घर में पेट में डालने के लिए तो कुछ मिल जायेगा न?"

"देख लो, शायद कुछ मिल जाय," कास्यान ने जवाब दिया। इसके बाद उसने घोडे की रास सभाली और हम चल पडे।

उसके टुइया-से घोडे की चाल देखकर मै सचमुच चकित रह गया। चलने में वह बुरा नही था। कास्यान ने मुह बन्द रखने की जैसे हठ पकड ली थी। मै कुछ पूछता तो बेमन से दो टूक जवाब देकर चुप हो जाता। जल्दी ही हम खुली जगह पहुच गये, और खाताघर की ओर हमने रुख किया। छोटे-से नाले के ऊपर—जिसे बाध लगाकर जोहड बना लिया गया था—केवल एक ऊची झोपडी खडी थी। इस खाताघर में सौदागरो के दो युवा कारिन्दो से हमारी मुलाकात हुई। बर्फ की भाति सफेद उनके दात थे, मृदु और मधुर उनकी आखें थी, मधुर और तेज़ वे बोलते थे और मधुर तथा कुटिल मुसकान उनके चेहरो पर खेलती थी। मैंने उनसे धुरा खरीदा और खुली जगह की ओर चल पडा। मेरा ख्याल था कि कास्यान घोडे-गाडी के पास ही खडा मेरी राह देखेगा, लेकिन वह अचानक मेरी ओर चला आया।

"क्यो, आप पक्षियो का शिकार भी तो करना चाहते है न?" उसने पूछा।

"हा, अगर कोई चलते-चलाते मिल जाय।"

"तो मै भी आपके साथ चलता हू इजाज़त है न?"

"क्यो नही, जरूर चलो।"

सो हम एक साथ चल दिये। खुली जगह करीब एक मील लम्बी थी। सच कहता हू, मेरी निगाह अपने कुत्ते से भी ज्यादा कास्यान पर जमी थी। उनका 'पिस्सू' नाम उसपर खूब बैठता था। उसका छोटा-सा काला नगा सिर (हालाकि उसके वाल, बिलाशक, ऐसे थे कि फिर टोपी की जरूरत नही मालूम होती थी) झाडियो मे से क्षण-भर के लिए उचकता और फिर छिप जाता। वह असाधारण तेजी के साथ चल रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह बरावर ऊपर-नीचे होता चल रहा हो। कोई जडी-बूटी तोडने के लिए वह रह रहकर नीचे झुकता, मन ही मन बुदबुदाता, उन्हे अपनी छाती में खोस लेता और एक अजीव पैनी नजर से मेरी तथा मेरे कुत्ते की ओर निरन्तर देखता जाता। नीची झाडियो और खुली जगहो मे भूरे रग के छोटे छोटे पक्षी अक्सर एक पेड से दूसरे पेड पर बरावर लपकते और जब अचानक नीचे कूदते है तो सीटी-सी बजाते है। कास्यान नकल उतारकर उनकी बोली बोलता। एक छोटा-सा लवा-पक्षी चीची करता उसकी टागो के बीच से निकला, और कास्यान भी उसकी नकल मे चिचिया उठा। एक लार्क-पक्षी अपने परो को फरफराता नीचे उतरा और मधुर राग गाते हुए उसके सिर के ऊपर मडराने लगा। कास्यान भी उसके गीत में शामिल हो गया। मुझसे वह कतई नही बोला

मौसम सुहावना था, पहले से भी ज्यादा शानदार। लेकिन ऊमस अभी भी वैसी ही बनी थी। ऊपर निर्मल आकाश में झीने बादल फैले थे—लगभग थिर, पीले-सफेद, वसन्त के अन्तिम चरण मे गिरनेवाली वर्फ की भाति, लपेटे हुए बादवानो की तरह सपाट और खिचे हुए। उनके झालरदार कगारे, रुई की भाति मुलायम और गुलगुले, धीरे धीरे किन्तु स्पष्ट रूप में, हर क्षण अपना रूप बदल रहे थे। ये बादल भी छन रहे थे, और उनकी कोई परछाई नही पड रही थी। काफी अर्से तक कास्यान के साथ मै खुली जगह में घूमता रहा। नये पौधे, जो अभी एक गज से

अधिक ऊचे नही हो पाये थे, अपने चिकने कोमल तनो से काले पडे नाटे ठूठो को घेरे थे, और भूरे कगारेवाले स्पजनुमा फफूद — वही जो आग जलाने के काम आते है — उनके साथ चिपके थे। स्ट्रावेरी के पौधो के गुलावी लता-तंतु उनके ऊपर चढ आये थे, और कुकुरमुत्तो के घने समूह उनके निकट छावनी डाले थे। लम्वी घास में जो झुलसा देनेवाली धूप में चुरमुरा गयी थी, पाव रह रहकर उलझ और फस जाते थे। चारो ओर पेडो के नये लाली-मायल पत्तो की चमक आखो को चौंधिया रही थी। चारो ओर वैच के फूलो के नीले गुच्छे, ब्लूड-वर्ट की सुनहरी प्यालिया, दिलाराम के अर्द्ध-बैंगनी तथा अर्द्ध-पीले फूलो की वहार नजर आती थी। वीरान पडी राहबाटो की उजली घास पर पहियो की लीक के निशान थे। इनके निकट हवा-पानी से काली पडी लकडियो के ढेर जमा थे। लकडिया गज-भर की लम्बान मे चुनी हुई थी और उनकी धुधली, आडी और आयताकार, परछाइया पड रही थी। इसके सिवा और कही छाह नजर नही आती थी। हल्की हवा का झोका उठता, और फिर दव जाता। अचानक वह सीधे मुह से आकर टकराता, लगता जैसे वह उभारा लेने जा रहा है, चारो ओर की हर चीज खुशी से सरसराने लगती, सिर हिलाने और झूमने लगती, फर्न के चपल सिरे नफासत के साथ झुक जाते और हृदय खुशी से लहरा उठता, लेकिन तुरत ही वह फिर नि सत्व हो जाता और हर चीज एक बार फिर शान्त और थिर दिखाई देने लगती। केवल टिड्डियो का सहगान, अध आवेग के साथ, जारी रहता, और उनके गाने की अनवरत, तीखी, रूखी ध्वनि वडी ऊबा देनेवाली मालूम होती, दोपहर की निरन्तर तपन से मेल खाती, जैसे उसी की कोई नातिन हो, जिसे वह स्वय दहकती हुई धरती मे से वाहर खीच लायी हो।

लवा-पक्षियो के एक भी दल से हमारा वास्ता नही पडा, और अन्त में हम एक अन्य खुली जगह में पहुचे जहा पेड काट डाले गये थे। यहा एस्प-वृक्ष अभी हाल में ही काटे गये थे और वे उदास से धरती पर पडे

थे। उनके नीचे की घास तथा छोटी झाडिया कचर गयी थी। इनमें कुछ की पत्तिया अभी भी हरी हरी थी, हालाकि वे बेजान हो चुकी थी और गतिशून्य टहनियो से वेदम-सी लटकी थी। कुछ चुरमुराकर सूख गयी थी। नमदार, उजले ठूठो के इर्द-गिर्द ताजा सुनहरी-सफेद खपचियो के ढेर पडे थे। उनमे से एक विचित्र, सुहावनी और तेज गध निकल रही थी। और भी आगे, जगल के निकट, कुल्हाडी की चोटो की अस्पष्ट आवाज सुनाई दे रही थी और झाडीनुमा पेड, माथा झुकाये और अपनी बाहो को लम्बा फैलाये, धीरे धीरे तथा शान के साथ जब-तब धरती पर गिरते नजर आते थे।

काफी देर तक कोई भी पक्षी दिखाई नही पडा। अन्त में बलूत-वृक्ष के नवजात घने झुरमुट में से जिससे चिरायते की बेले लिपटी हुई थी निकल एक कार्न-क्रैक-पक्षी उड चला। मैंने गोली दागी। हवा में कलाबाजी खाता वह धरती पर आ गिरा। गोली दगने की आवाज़ होते ही कास्यान ने अपने हाथो से तुरत आखो को ढक लिया, और बन्दूक को फिर से भरने तथा पक्षी को उठाने तक वैसे ही सकते की हालत मे निश्चल खडा रहा। मेरे आगे बढने पर वह उस जगह पहुचा जहा घायल पक्षी गिरा था, खून के छीटे पडी घास के ऊपर झुककर उसने अपना सिर हिलाया, और हताश-सी मुद्रा मे मेरी ओर देखा बाद मे उसकी फुसफुसाहट मुझे सुनाई दी – "पाप है यह पाप है!"

गर्मी के मारे आखिर हमें जगल की शरण लेनी पडी। अखरोट की एक ऊची झाडी के नीचे मै पसर गया। झाडी के ऊपर मैपल का एक किशोर वृक्ष कमनीय अन्दाज में अपनी हल्की टहनिया फैलाये था। कास्यान गिरे हुए बर्च-वृक्ष के तने पर बैठ गया। मैंने उसकी ओर देखा। सिर पर पत्ते हल्के-से सरसरा रहे थे, और उनकी हरियाली झीनी परछाइया काले कोट में ढके उसके क्षीण शरीर और उसके टुइया-से चेहरे पर अछुवाई-सी इधर से उधर रेग रही थी। उसने अपना सिर नही उठाया। उसके मौन सन्नाटे

से उकताकर मै फिर पीठ के बल लेट गया और उजले सुदूर आकाश की पृष्ठभूमि में एक-दूसरे से गुथी पत्तियो की शान्त थिरकन को मुग्ध भाव से देखने लगा। जगल में पीठ के बल चित्त लेटकर आकाश की सैर करना भी कितना अद्भुत, कितना मधुर, मालूम होता है! लगता है जैसे अतल सागर में झाक रहे हो, जो नीचे दूर तक फैला है, पेड जैसे धरती मे से उदित नही हुए है, बल्कि भीमाकार सरकडो की जडो की भाति उन स्वच्छ गहराइयो मे डूबते सीधे समाते चले गये है। पेडो के पत्ते किसी किसी वक्त ऐसे दिखते है जैसे पारदर्शी पन्ने की मणिया हो, फिर दूसरे ही क्षण उनका रग हरा, सुनहरा-हराया करीब करीब काला-हरा होने लगता है। कही दूर, किसी कोमल टहनी के छोर पर, पारदर्शी आकाश के एक नीले खण्ड की पृष्ठभूमि में एक एकाकी पत्ती निश्चल लटक रही है, और उसकी बगल मे एक अन्य पत्ती काटे में फसी मछली की भाति काप रही है, मानो हवा के झोके से नही, बल्कि खुद अपनी इच्छा से ही वह हिल रही है। सफेद बादल के गोल टुकडे, शान्त भाव से आकाश में तैरते और शान्ति के साथ जलमग्न द्वीपो की भाति ओझल हो जाते है। अचानक यह समूचा समुद्र, यह उजला आकाश, ये टहनिया और पत्ते—ये सब क्षिप्रगति से प्रकाश में हिलोरे लेते, थरथराते है, और अचानक उद्वेलित लहरियो की निरन्तर लघु छपछप की भाति एक ताजी कापती हुई फुसफुसाहट उमगने लगती है। जी चाहता है कि यहा से न हिले, बस देखते ही रहे, और हृदय में एक ऐसी शान्ति, ऐसा आनन्द, और ऐसा माधुर्य छा जाता है कि उसे व्यक्त करने के लिए शब्द तक नही मिलते। आखें देखने में रम जाती है, गहरी निश्छल नीलिमा होठो पर मुसकान ले आती है—मासूम मुसकान, खुद अपने जैसी निर्दोष। और आकाश में छितरे बादलो की भाति, मानो उनके साथ घुल-मिलकर, सुखद स्मृतियो की शृखला, धीमी गति से चित्त-पटल पर सज जाती है, लगता है जैसे इस गहराई की कोई थाह नही है, दृष्टि उसमें समाती ही

जाती है, उस शान्त और वृहदाकार का साक्षात्कार करती है, लगता है जैसे उस ऊचाई से, उस गहराई से, वापिस नही लौटा जा सकता

"मालिक, सरकार!" अपनी सुरीली आवाज में अचानक कास्यान के मुह से निकला।

आश्चर्य से मै उठ वैठा। अव तक मेरे सवालो का जवाब भी वह मुश्किल से ही देता था, लेकिन अव वह खुद मुझे सम्वोधित कर रहा है।

"क्यो, क्या है?" मैने पूछा।

"आपने किसलिए इस पक्षी की हत्या की?" सीधे मेरी आखो मे देखते हुए उसने कहना शुरू किया।

"किसलिए क्या? कौर्न-क्रेक शिकार है। उसे खाया जा सकता है।"

"नही मालिक, आपने इसे इसी लिए नही मारा। आपने इसे खेल के लिए मारा है।"

"सो कैसे? तुम खुद भी तो, मेरी समझ मे, कलहसो या मुर्गियो को खाते हो न?"

"इन पक्षियो को तो भगवान ने इन्सान के लिए बनाया है, लेकिन कौर्न-क्रेक तो वन में रहनेवाला एक जगली पक्षी है, और अकेला वही नही, वन और खेतो मे, नदियो, दलदलो और झावरो में अन्य वहुत-से जगली विचरते है, ऊपर आकाश मे उडते या नीचे धरती पर रेगते हैं। और उन्हे मारना पाप है। उनके लिए जीवन की जो अवधि नियत है, उसमे हम बाधा क्यो डाले? रही इन्सान की वात, सो उसके लिए खाने का इन्तजाम अलग है। उसका खाना-पीना दूसरा है। रोटी जो भगवान की न्यामत है, और पानी जिसे भगवान आकाश से वरसाता है, और घरेलू जीव-जन्तु जो हमारे पुरखो के, पुराने जमाने से चले आ रहे हैं।"

मैने अचरज से कास्यान की ओर देखा। उसके शब्दो का प्रवाह उन्मुक्त था। किसी भी शब्द के लिए न तो वह अटका, न अचकचाया।

अनुप्राणित थिरता और मृदु गरिमा के साथ वह बोल रहा था, और बीच बीच में अपनी आखो को मूद लेता था।

"तो, तुम्हारी राय में, यह पाप है, और मछली का शिकार करना?" मैंने पूछा।

"मछलियो का रक्त तो ठण्डा होता है," उसने विश्वास के साथ कहा, "मछली तो मूक जीव है। न तो वह डरती है, न खुश होती है। उसके मुह में जबान नही। वह कुछ अनुभव नही करती। उसके खून में जान नही होती खून," कुछ रुककर उसने फिर कहना शुरू किया, "खून एक पवित्र चीज़ है। भगवान के सूरज की भी उसपर नज़र नही पडती। रोशनी से वह छिपा रहता है और दिन की रोशनी में खून को उजागर करना भारी पाप है ओह, भारी पाप है!"

उसने लम्बी उसास भरी, और उसका सिर आगे की ओर झुक आया। और मै, सच जानो, एकदम चकित, इस विचित्र वृद्ध की ओर देखता रहा। उसकी भाषा किसान की भाषा के समान नही थी। ग्राम लोग इस तरह नही बोलते, वह उन लोगो की तरह भी नही बोल रहा था जो बढिया बातो के धनी बनना चाहते हैं। उसके बोलने में सोच का भाव था, गम्भीरता थी, और कुछ ऐसा था जो विचित्र था ऐसी बोली मैंने पहले कभी नही सुनी थी।

"कृपा कर यह तो बताओ कास्यान," थोडा लाल हुए उसके चेहरे पर से अपनी आखो को हटाय बिना ही मैंने कहना शुरू किया, "तुम्हारा धधा क्या है?"

मेरे इस सवाल का उसने तुरत जवाब नही दिया। क्षण-भर के लिए उसकी आखें बेचैनी से कुछ अस्थिर-सी हो उठी।

"भगवान जैसे रखता है, रहता हू," अन्त में उसने कहा, "और रही धधे की बात, सो मै कोई धधा नही करता। छुटपन से लेकर अब तक मै कभी कोई खास होशियार नही रहा। जब बनता है, कुछ कर

देता हू। मै अच्छा कारीगर नही हू। और हो भी कैसे सकता हू? वदन मे जान नही, और मेरे हाथ बडे अटपटे है। वसन्त के दिनो में मै बुलबुल पकडने का काम करता हूं।"

"अरे, तुम बुलबुल पकडते हो? लेकिन अभी तो तुम कह रहे थे कि हमें वन-खेतो और जाने कहा कहा के जीवो में से किसी के भी हाथ नही लगाना चाहिए?"

"उन्हे मारना बिल्कुल नही चाहिए। हमारे बिना भी मौत अपना काम कर लेगी। उस मार्तीन बढई को ही देखो। मार्तीन जीता-जागता था, लेकिन वह मर गया, उसका जीवन लम्बा नही था। उसकी घरवाली अब अपने आदमी के लिए, अपने नन्हे बच्चो के लिए, विलाप करती है आदमी हो, चाहे जानवर, मौत से कोई बचाव नही। मौत जल्दबाजी नही करती, उससे पीछा भी नही छुडाया जा सकता, लेकिन हमें मौत का हाथ नही बटाना चाहिए और मै बुलबुलो की जान नही लेता—खुदा कभी ऐसा न कराय! उन्हे कष्ट देने, उनका जीवन खराब करने के लिए मै उन्हे नही पकड़ता। मै उन्हे पकडता हू इसलिए कि लोग खुश हो, उन्हे सुख और आनन्द मिले।"

"उन्हे पकडने के लिए क्या तुम कूर्स्क जाते हो?"

"हा, मै कूर्स्क जाता हू, और कभी कभी तो और भी आगे। दलदली क्षेत्रो में, या जंगलो के किनारे रात बिताता हू। खेतो मे, झुरमुटो में, मै अकेला होता हू। वनमुर्ग बाग देते है, खरगोश चिचियाते है और वन-बत्तखे शोर मचाती है साझ को मै उन्हे चीन्हता हू, सुबह सुनता हू, दिन निकलने पर झाडियो के ऊपर अपना जाल फैला देता हू कुछ बुलबुलो के गाने में वडी मिठास होती है, और वडा दर्द हा दर्द।"

"और क्या तुम उन्हे बेचते हो?"

"मै उन्हे नेक लोगो के यहा दे आता हू।"

"और इसके अलावा तुम क्या करते हो?"

"मै क्या करता हू?"

"हा, किस धधे में तुम लगे हो?"

कुछ देर तक वृद्ध कुछ नही बोला।

"मै किसी धधे में नही लगा हू   मैं अच्छा कारीगर नही हू। हां, मैं पढ-लिख सकता हू।"

"तुम पढना जानते हो?"

"हा, मैं पढना और लिखना जानता हू। भगवान की दया से और नेक लोगो की मदद से मैने यह सीख लिया है।"

"तुम्हारे परिवार तो होगा?"

"नही, परिवार नही है।"

"सो कैसे? क्या सब जाते रहे?"

"नही, लेकिन   जीवन में भाग्य ने मेरा कभी साथ नही दिया। लेकिन वह सब तो भगवान के हाथ है। हम सब भगवान के हाथ है। बस, इतना ही है कि आदमी को खरा होना चाहिए। भगवान की नजरो में खरा। असल चीज़ यही है।"

"और तुम्हारे सगे-सम्बन्धी कोई नही है?"

"हा   ओह ."

वृद्ध अचकचाकर रह गया।

"कृपा कर यह तो बताओ," मैंने कहना शुरू किया, "मैंने अपने कोचवान को तुमसे यह पूछते सुना था कि तुमने मार्तीन की दवा-दारू क्यो नही की। सो क्या तुम बीमारियो का इलाज करते हो?"

"तुम्हारा कोचवान खरा आदमी है," कास्यान ने विचारशील मुद्रा में जवाब दिया, "लेकिन गुनाहो से एकदम अछूता भी नही है। लोग मुझे हकीम कहते है। मै, और डाक्टर, वाह! और रोगी को चगा कौन कर सकता है? वह सब तो खुदा की देन है। लेकिन हा, कुछ जडी-

वूटिया, और कुछ फूल है जो कार-आमद होते ह। सच, यह पक्की वात है। मिसाल के लिए जैसे प्लान्टेन है। यह इन्सान के लिए काम की जडी है। ऐसे ही वड-मेरी गोल्ड भी है। इनका नाम लेने से पाप नही लगता। ये खुदा की दी हुई पवित्र जडी-वूटिया है। लेकिन सव जडी-वूटिया ऐसी नही है। वे काम की हो सकती हैं, लेकिन यह पाप है, उनका नाम लेने से पाप लगता है। फिर भी, हो सकता है कि जाप करने से सच, ऐसे जाप हैं जिनसे पाप नही लगता जिसके हृदय मे श्रद्धा है, उसे भगवान वचा लेता है," अपनी आवाज को गिराते हुए उसने अन्त में कहा।

"तुमने मार्तीन को कुछ नही दिया?" मैंने पूछा।

"मुझे वहुत देर वाद मालूम हुआ," वृद्ध ने जवाब दिया, "लेकिन इससे क्या? हर आदमी जन्म से ही अपना भाग्य लिखाकर लाता है। वढई मार्तीन के भाग्य मे जीना नही वदा था, उसे इस धरती पर जीवित नही रहना था। यही असल बात थी। नही, जिस आदमी के लिए इस धरती पर जीना नही वदा होता, तब अन्य लोगो की भाति सूरज की धूप उसे गर्मी नही पहुचाती, रोटी उसका पोषण नही करती और ऐसा मालूम होता है जैसे कोई चीज उसे दूर खीचे लिये जा रही हो सच, खुदा उसकी आत्मा को शान्ति दे!"

"क्या तुम हमारे इस इलाके में काफी अर्से से आकर वसे हुए हो?" थोड़ा रुककर मैंने पूछा।

कास्यान चौंक उठा।

"नही, काफी अर्से से नही। करीव चार साल हुए होगे। पुराने मालिक के जमाने मे हम हमेशा पुराने घरो में रहते थे। लेकिन अभिभावको ने हमें यहा वसा दिया। हमारा पुराना मालिक रहमदिल था, अमन-चैन पसन्द करता था—खुदा करे उसे स्वर्ग नसीव हो। अभिभावको ने, विलाशक, ठीक न्याय किया।"

"और पहले तुम कहां रहते थे?"

"ऋसीवया मेच में।"

"क्या यह जगह यहा से बहुत दूर है?"

"पछत्तर-एक मील दूर होगी।"

"हा तो क्या तुम वहा ज्यादा मजे में थे?"

"क्यो नही वहा एक खुला देश था, नदियो से भरा-पूरा। वह हमारा घर था। यहा तो दम घुटता है, और हम सूख गये है. यहा हम अजनबी है। वहा—ऋसीवया मेच में—चाहो तो पहाडी पर चले जाओ—और ओह, मेरे भगवान, कितना बढिया दृश्य दिखता था वहा से! वहा झरने और चरागाहे है और जगल, और एक गिरजा है, और उसके बाद फिर और चरागाहे। बस दूर तक, बहुत दूर तक, देखे जाओ। सच, जितनी दूर तक चाहो, देखते रहो, जी भरकर देखते रहो। और यहा इसमें झूठ नही कि यहा की जमीन अच्छी है। मिट्टी—बढिया मोटी मिट्टी, किसान कहते है। पर मुझे कही भी भरपेट रोटी मिल जायेगी।"

"अच्छा तो बुढऊ, यह बताओ कि क्या तुम्हारा जी अपनी जन्मभूमि को एक बार फिर देखने के लिए नही ललकता?"

"हा, देखने को जी तो करता है। फिर भी, जगह सभी अच्छी है। बिना जोरू-नाते का मै आदमी हू, एक बेचैन प्राणी। और, सच पूछो तो, घर से ही चिपके रहने में ऐसा लाभ भी क्या है? लेकिन, देखो न, जैसे जैसे आगे चलते जाते है, चलते जाते है," अपनी आवाज़ को ऊचा उठाते हुए वह कहता गया, "वैसे वैसे सच, हृदय हल्का होता जाता है। सूरज तुम पर अपनी किरने न्योछावर करता है, और भगवान के तुम अधिक निकट होते हो, गीत की धुन और भी सुरीली बनकर कानो में रस बरसाती है। यहा कौनसी जडी उगती है तुम इसे देखते हो, और तोड लेते हो। यहा पानी बह रहा है, झरने का पानी, स्रोत से निकला साफ पवित्र पानी। सो तुम उसे देखते भी हो और उसे पीते

हो। आकाश में पक्षी गाते हैं   और कूर्स्क से आगे स्तेपी फैले हैं। वह स्तेपीय देश – ओह, कितना अद्‌भुत, देखकर इन्सान का दिल खिल जाता है। कितना उन्मुक्त, खुदा का कितना बडा वरदान! और, लोग कहते हैं, वे और भी आगे तक – उष्ण सागर तक – जाते हैं जहा मधुर-कण्ठी पक्षी हमायून निवास करता है, जहा पेडो के पत्ते कभी नही झरते, न शरद् में और न शीत मे, और रुपहली टहनियो पर जहा सुनहरे सेब उगते हैं, जहा हर आदमी न्याय और सन्तोष के साथ निर्वाह करता है। जी चाहता है कि मै वहा तक जाऊ   और अभी भी क्या मै कुछ कम जगहो की यात्रा कर चुका हू! मै रोमनी और सुन्दर नगर सिम्बीर्स्क हो आया हू, सोने के गुम्बदोवाले नगर मास्को तक की मैने सैर की है। कल्याणी नदी ओका, सुन्दर त्स्ना और वोलगा मैया के मैने दर्शन किये हैं वहुत बहुत-से लोगो से, नेक-हृदय ईसाइयो से, मै मिला हू, तीर्थ नगरो की मैने यात्रा की है . हा तो मै वहा जाऊ   सच   और इसलिए और भी अधिक   और अकेला मै नही, मै जो गुनाहो का पुतला हू   अन्य कितने ही ईसाई भी जाते हैं   छाल की चप्पले पहने, सचाई की खोज करते, दुनिया-भर में घूमते हैं   घर पर क्या रखा है? भलमनसाहत इन्सान से बिदा हो गयी है, सच पूछो तो!"

अपने इन आखिरी शब्दो को कास्यान ने तेजी से कहा, इस तरह कि उन्हे पकडना करीब करीव मुश्किल था। इसके वाद उसने कुछ और भी कहा जिसे मै कतई नही समझ सका, और उसके चेहरे पर एक ऐसा अजीब भाव दौड गया कि मुझे वरबस उसके दिमाग का पुर्जा ढीला होने का ध्यान हो आया। उसने धरती की ओर देखा, अपने गले को साफ किया, और लगा जैसे फिर अपने आपे में आ गया हो।

"वाह, क्या धूप खिली है," धीमी आवाज़ में वह वुदवुदाया, "प्रभु, यह कितनी बडी न्यामत है! कितना सुहावनापन जगल में छाया है!"

उसने अपने कधो को विचकाया और चुप हो गया। अपने इर्द-गिर्द धुधली-सी नजर उसने डाली और मृदु स्वर में गाना शुरू कर दिया। धीमे स्वरो में वह क्या गुनगुना रहा था, यह मै पूरी तरह से पकड नही सका। केवल निम्न बोल मै सुन सका—

यो मेरा नाम कास्यान है,
पर लोग मुझे पिस्सू कहते है!

"ओह," मैंने मन में सोचा, "तो यह तुक जोडना भी जानता है!"

अचानक वह चौका और उसने गाना वद कर दिया। उसकी आखें जगल के एक घने हिस्से पर जमी थी। मै मुडा और एक नन्ही किसान लडकी पर मेरी नजर पडी। आयु करीब आठ साल, नीली सराफान* पहने और सिर पर चारखाने का रूमाल वाधे, और अपने नन्हे-से हाथ में छाल की वुनी हुई डलिया लिये। उसका हाथ उघडा और धूप में सवलाया हुआ था। हम से साक्षात् होने की उसे कतई उम्मीद नही थी। वह, जैसा कि कहते है, 'औचक में' हमारे सामने आ पडी थी और अखरोट की घनी पत्तियो की छाव में मौन खडी हुई अपनी काली आखो से हैरान सी मेरी ओर देख रही थी। मुझे मुश्किल से उसकी एक झलक देखने का ही समय मिला होगा कि वह दुबककर पेड के पीछे छिप गयी।

"आन्नुश्का! आन्नुश्का! अरे, डरो नही, यहा आओ!" वृद्ध ने दुलराती आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

"मुझे डर लगता है," उसकी पैनी आवाज सुनाई दी।

"अरे नही, डरो नही, यहा आओ, मेरे पास!"

आन्नुश्का चुपचाप अपनी ओट मे से बाहर निकली, धीमे धीमे मुडी—उसके छोटे छोटे बचकाना पाव घास पर करीब करीब नि शब्द पड रहे थे—और झाडियो में से वृद्ध के निकट चली आयी। वह आठ वर्ष की मुनिया नही थी, उसके नन्हे आकार-प्रकार को देखकर जैसा

* रूसी स्त्रियो का पहनावा।

कि मैंने शुरू में समझा था, बल्कि तेरह या चौदह साल की लडकी थी। उसका समूचा आकार छोटा और क्षीण होते हुए भी सुगठित और कमनीय था, और उसका गुडिया-सा नन्हा चेहरा खुद कास्यान के चेहरे से अद्‌भुत रूप में मिलता था, हालाकि वह खूबसूरत निश्चय ही नही था। वैसे ही पतले पतले उसके नाक-नक्श थे, और वैसा ही अजीव भाव उसके चेहरे पर छाया था—सकोची और विश्वास की भावना लिये, उदासी में डूबा और चातुर्य का पुट लिये, और उसका हाव-भाव वैठना-उठना—भी वैसा ही था .. कास्यान ने एक वार उसकी ओर देखा। वह उसके वरावर में आकर खडी हो गयी।

"तो तुम कुकुरमुत्ते चुन रही थी, क्यो?" उसने पूछा।

"हा," लाज से मुसकराते हुए उसने कहा।

"जी भरकर वटोर लिये?"

"हा।" (छिपी और तेज़ नज़र से उसने उसकी ओर देखा और फिर मुसकरा दी।)

"उनमें सफेद भी है?"

"हा, है।"

"देखू, जरा मुझे दिखाओ तो " (उसने अपनी बाह में से खिसकाकर डलिया उतार ली और वरडौक के पत्ते को आधा उठा दिया जो कुकुरमुत्तो पर रखा था।)

"ओह!" डलिया के ऊपर झुकते हुए कास्यान ने कहा, "बहुत वढिया! शावाश, आन्नुश्का, शाबाश!"

"यह तुम्हारी लडकी है, कास्यान, क्यो?" मैंने पूछा। (आन्नुश्का के चेहरे पर हल्की लाली दौड गयी।)

"ओह, नही, एक सम्बन्धिन है," बनावटी अलगाव के साथ कास्यान ने जवाब दिया। "अच्छा तो आन्नुश्का अब जाओ।" उसने तुरत जोडा, "जाओ, खुदा तुम्हारा भला करे। और देखो, सभलकर जाना।

"अरे, इसे पैदल क्यो भेज रहे हो?" मैंने बीच में ही टोका, "हम इसे अपने साथ ले चलते है।"

आन्नुश्का पोस्ते के फूल की भाति लाल हो गयी। अपनी डलिया से बधी रस्सी के दस्ते को दोनो हाथो से उसने थामा और उद्वेग के साथ वृद्ध की ओर देखने लगी।

"नही, वह अपने-आप ठीक ठिकाने पर पहुच जायेगी," अपने उसी अलस और अलगावपूर्ण अन्दाज में उसने जवाब दिया। "यह कौन बडी बात है यह वहा पहुच जायेगी हा तो जाओ अब!"

आन्नुश्का तेजी से जगल में बढ गयी। कास्यान उसे जाते देखता रहा। इसके बाद उसने नीचे की ओर देखा और मन ही मन मुसकराया। उसकी इस सुदीर्घ मुसकान में, उन गिने-चुने शब्दो में जो उसने आन्नुश्का से कहे थे, और ठीक उसकी आवाज की ध्वनि तक में गहरे, अकथनीय प्रेम और कोमलता का पुट मिला था। उसने एक बार फिर उधर देखा जिधर वह गयी थी, वह फिर मन ही मन मुसकराया और अपने चेहरे को हाथ से पोछते हुए कई बार अपनी गरदन को हिलाया।

"तुमने उसे इतनी जल्दी क्यो भगा दिया?" मैंने उससे पूछा, "मैं उसके कुकुरमुत्ते ही खरीद लेता।"

"ऊह, सो तो आप घर पर भी खरीद सकते हो, मालिक," उसने जवाब दिया। पहली बार उसने मुझे औपचारिक रूप में 'मालिक' कहकर सम्बोधित किया था।

"बडी सुन्दर है, तुम्हारी यह लडकी।"

"सुन्दर-वुन्दर कुछ नही ऐसे ही है, मामूली," प्रत्यक्ष अनमनेपन के साथ उसने जवाब दिया, और इसके बाद वह फिर पहलेवाली मुह-बद मन स्थिति मे डूब गया।

उससे फिर बातचीत चलाने के अपने सभी प्रयत्नो को निष्फल होता देख मै खुली जगह की ओर निकल गया। इस बीच गर्मी कुछ कम

हो गयी थी, लेकिन मेरा सितारा मन्द ही बना रहा, और एक अदद कार्न-क्रैक तथा एक नये धुरे के अलावा और कुछ न लेकर मैं बस्ती लौटा। ठीक उस समय जब हमारी गाडी अहाते में प्रवेश कर रही थी, सहसा कास्यान मेरी ओर मुडा।

"मालिक, मालिक," उसने कहना शुरू किया, "आप को मालूम है कि मैंने एक कुसूर किया है। मैंने ही सब पक्षियो को दूर भगा दिया था।"

"सो कैसे?"

"ओह, मै ऐसा मन्तर जानता हू। देखो न, आपका यह कुत्ता खूब सधा हुआ और बढिया किस्म का है। लेकिन वह भी कुछ नही कर सका। और यो देखो तो इन्सान क्या है? क्या है वे? और यह कुत्ता तो एक जानवर है तो भी उन्होंने उसे क्या बना डाला है?"

शिकार को मत्र से बाधना एक असम्भव चीज है। कोशिश करने पर भी मै कास्यान को इसका यकीन न करा सकता था। सो मैंने कोई जवाब नही दिया। इसी बीच गाडी अहाते में मुड गयी थी।

आन्नुश्का झोपडे में नही थी। वह हमसे पहले ही आ पहुची थी और कुकुरमुत्तो की अपनी डलिया वहा छोड गयी थी। येरोफ़ेई ने नये धुरे को फिट किया, शुरू में उसमे दोष निकाले और उसकी अत्यन्त असगत आलोचना करते ही हुए। इसके घटा-भर बाद मै वहा से चला। कास्यान के सामने मैंने एक छोटी-सी रकम पेश की, जिसे लेने मे पहले तो उसने आनाकानी की, लेकिन बाद मे—उसे हाथ में थामे क्षण-भर कुछ सोचने के बाद—उसने उसे अपनी फतुही के भीतर रख लिया। इस एक घटे के भीतर मुश्किल से ही कोई शब्द उसके मुह से निकला होगा। वह पहले की भाति फाटक के साथ टिका खडा रहा। उसने मेरे कोचवान के ताने-तिश्नो का भी कोई जवाब नही दिया, और बडी सर्द मोहरी के साथ उसने मुझे विदा दी।

जैसे ही मैं लौटकर आया, येरोफेई पर मेरी नजर पडी। उसकी उदास मन स्थिति साफ नजर आ रही थी निश्चय ही गाव में उसे खाने को कुछ नही मिला था। घोडो के पीने का पानी अच्छा नही था। हम चल पडे। असन्तोष की छाप उसकी गरदन तक पर झलक रही थी। वह कोचवान की गद्दी पर बैठा था और मुझसे बातचीत शुरू करने के लिए तिलमिला रहा था। दबे स्वर मे कुछ बुदबुदाता और घोडो को अपेक्षाकृत तीखे आदेश देता। वह इस बात की प्रतीक्षा में था कि बातचीत का सिलसिला मेरे ही किसी सवाल से शुरू हो। "गाव, इसे कौन गाव कहता है," वह बुदबुदाया, "भला, यह भी कोई गाव है? पीने के लिए जहा एक बूद क्वास तक नसीब न हो। हे भगवान और पानी–एकदम गन्दा!" (उसने जोर से थूका।) "न खीरा, न क्वास, न और कुछ भी तो नही अरे ओ," दाहिने बाजूवाले घोडे की ओर मुडते हुए उसने ऊचे से कहा, "मैं तुझे खूब पहचानता हू, कामचोर कही का!" (और उसने एक चाबुक उसके रसीद कर दी।) "यह घोडा अब एकदम कामचोर बन गया है, लेकिन एक जमाना था जब यह इशारे पर चलनेवाला जानवर था। हा तो अब जरा तेजी दिखाओ!"

"कृपा कर यह तो बताओ, येरोफेई," मैंने कहना शुरू किया, "कास्यान किस तरह का आदमी है?"

येरोफेई ने तुरत जवाब नही दिया। आम तौर से वह चिन्तनशील और धीर प्रकृति का आदमी है। लेकिन मैंने साफ अनुभव किया कि मेरे सवाल से उसे खुशी और कुछ गुदगुदी हुई है।

"अरे वह पिस्सू!" रास समेटते हुए अन्त में उसने कहा, "वह अजीब जीव है, सच, सनकी। इतना अजीब कि उस जैसा आदमी जल्दी से और कही नही मिलेगा। वह भी, मेरे इस चितकबरे घोडे की तरह, काबू से बाहर हो गया है। वह भी किसी एक चीज पर, किसी एक

काम पर नही टिक पाता। लेकिन यो वह कर भी क्या सकता है? उनका वदन ही ऐसा है कि अब गिरा, अब गिरा लेकिन फिर भी, आप जानो . छुटपन से ही वह ऐसा है। पहले वह अपने चाचाओ के कारवार में लगा रहा। उसी को इसने अपना धवा वनाया। उनके पास तीन घोडो की गाडिया थी लेकिन आप जानो, यह उससे ऊब उठा—और दुलत्ती झाडकर अलग हो गया। अब उसने घर पर रहना शुरू किया, लेकिन वहां भी ज्यादा नही टिक सका। निश्चल रहना तो जानता ही नही। सच, एकदम पिस्सू की भाति। भाग्य से उसे एक अच्छा मालिक मिल गया। उसने उसे परेशान नही किया। सो तब से वह यो ही घूमता रहता है, भटकी हुई भेड की भाति। और फिर वह कुछ इतना अजीव है कि उसे कोई समझ नही सकता। कभी वह इतना चुप हो जायेगा जैसे पत्थर हो। और इसके वाद वह जो वोलने लगेगा तो बोलता ही जायेगा। खुदा भी नही वता सकता कि क्या उसके मुह से निकलेगा। आप ही वताओ, यह कहा का ढंग है? वह विल्कुल वेढगा आदमी है। सच, एकदम फजूल। लेकिन जी हा, वह गाता वहुत अच्छा है।"

"और क्या वह सचमुच लोगो की दवा-दारू करता है?"

"दवा-दारू? वह भला क्या दवा-दारू करेगा? ऊह, वह कहा का डाक्टर है! हालाकि, यह मानना पडेगा, कि उसने मुझे चगा किया। कंठमाला मुझे हो गयी थी लेकिन छोडो, उसके बस का कुछ नही। वौड़म आदमी है वह, सच, एकदम वौडम!" क्षण-भर रुककर उसने अन्त में कहा।

"क्या तुम उसे बहुत दिनो से जानते हो?"

"हा, वहुत दिनो से। ऋसीवया मेच मे, सिचोवका में, मै उसके पडोस में ही रहता था।"

"और वह लडकी—जो हमें जगल में मिली थी—आन्नुश्का—वह उसकी क्या लगती है?"

येरोफेई ने अपने कधे पर से मेरी ओर देखा, और उसका समूचा चेहरा खिलखिला उठा।

"हो-हो . अरे हा, सम्बन्धी। वह अनाथ है। उसकी मा नही है, और उसकी मा कौन थी, यह कोई नही जानता। लेकिन वह जरूर उसकी कुछ लगती है। वह उससे इतना मिलती है। जो हो, वह उसके साथ रहती है। यह मानना पडेगा बडी मुस्तैद लडकी है। बडी अच्छी लडकी है। और वह बुढऊ, उसकी आखो की तो बस वह पुतली है। बडी अच्छी है वह। और क्या आपको मालूम है—आप बिसवास नही करोगे कि वह शायद आन्नुश्का को पढाना भी शुरू कर देगा। और सच, यह वही कर सकता है। इतना निराला जीव है वह। छिन में कुछ, छिन में कुछ। सच, उसका कोई ठिकाना नही एह! एह!" मेरे कोचवान ने सहसा अपने-आपको रोका, घोडो की रास खीची, और एक ओर झुककर नाक को फरफराने लगा। "क्या जलने की गध नही आ रही? हो न हो, मेरी बात मानो, यह नये धुरे से आ रही होगी . मेरा खयाल था कि मैंने इसे अच्छी तरह चिकना दिया है.. कही से पानी लाना होगा। अरे, वह रहा गढा! बस, बिल्कुल ठीक!"

और येरोफेई धीरे-से अपनी गद्दी पर से उतरा, डोल को उसने खोला, गढे के पास पहुचा और वापिस लौटकर, निश्चित सन्तोप के साथ, अचानक पानी के सम्पर्क से पहिए की धुरी में से आनेवाली सनसन की ध्वनि सुनता रहा करीब सात मील के रास्ते में, और भी कुछ नही तो छ बार तपे हुए धुरे पर पानी डालना पडा और अन्त में काफी सांझ गये हम घर आकर लगे।

कारिन्दा

आर्कादी पावलिच पेनोचकिन से मेरी जान-पहचान है। वह गार्ड-सेना का अवकाश-प्राप्त अफसर है और हमारे घर से बारह मील दूर अपनी जागीर में रहता है। उसकी जागीर शिकारियो के लिए मजे की जगह है—शिकार की वहा खूब भरमार है। उसका घर फ्रासीसी नमूने पर बना है, और उसके नौकर-चाकर अग्रेजी चाल की वर्दी में लैस रहते हैं। उसकी दावतें शानदार होती हैं, हृदय से आगन्तुको की आव-भगत करता है, लेकिन यह सब होने पर भी लोग उससे मिलने से अचकचाते हैं। समझदार और व्यवहार-कुशल आदमी है, वढिया शिक्षा प्राप्त है, अफसरी कर चुका हे, उच्चतम समाज में उठता-बैठता रहा है और अब, बडी सफलता के साथ, अपनी जागीर की देख-भाल कर रहा है। आर्कादी पावलिच, खुद उसके अपने शव्दो मे, कठोर किन्तु न्यायप्रिय है। अपनी रैयत का वह भला चाहता है और जो उन्हे सजा भी देता है तो उनकी भलाई के लिए ही। "वे तो मानो बच्चे हैं। वच्चो की भाति ही उनके साथ व्यवहार करना होता है," ऐसे मौको पर वह कहता है, "उनका अज्ञान, mon cher, ıl faut prendre cela en consıdératıon!"* जब कभी ऐसी मजबूरी उठ खडी होती है तो वह ऊची आवाज मे नही बोलता, न ही उसकी भाव-भगिमा में कोई हिसा की भावना होती है। वस अपराधी के मुह पर सीधे प्रहार करता हुआ शान्त मुद्रा में कहता है—

*मेरे प्यारे, उसको भी जरा ध्यान में रखना होता है।

"मुझे याद पडता है कि मैंने तुमसे कुछ करने के लिए कहा था, मेरे मित्र!" या "बात क्या है, बेटा? किस सोच में पडे हो?" अपने दात उस समय वह थोडे-से पीसता है और उसके होठ खिच जाते हैं। उसका कद लम्बा नही है, लेकिन उसकी काठी सुघर है और देखने मे खूब जचता है। उसके हाथो और नाखूनो की नफासत बस देखते ही बनती है और उसके लाल गालो तथा होठो से स्वास्थ्य जैसे फूटा पड़ता है। ठहाका मारकर वह हसता है और अपनी भूरी निर्मल आखें भीचकर बडे सुहावने ढग से देखता है। कपडे बहुत बढिया पहनता है, फ्रासीसी तस्वीरे और पत्र-पत्रिकाए उसके यहा आती हैं, हालाकि वह खुद पढने का कोई खास शौकीन नही है—'खानाबदोश यहूदी' के पन्नो को, ब-मुश्किल तमाम, उसने पढा हो तो शायद पढा हो। ताश खेलने में माहिर है। कुल मिलाकर यह कि आर्कादी पावलिच को प्रान्त का एक अत्यन्त सलीकेदार कुलीन माना जाता है और लडकियो के लिए तो वह एक बढिया वर है। स्त्रिया उसपर लट्टू है और उसके तौर-तर्ज को खास तौर से पसन्द करती है। बहुत ही कायदे से व्यवहार करनेवाला और बिल्ली की भाति चौकस। जन्म से लेकर अब तक कभी उसने अपने को कुत्सा का पात्र नही बनने दिया, हालाकि रोब गाठने में उसे रस मिलता है, और मौका मिलने पर कमजोर जान लोगो को धकियाने या डाट-डपटने से नही चूकता। सन्दिग्ध सोसायटी से उसे बेहद घृणा है, डरता है कि कही उसकी इज्जत में बट्टा न लग जाय। हल्के-फुल्के क्षणो में अपने-आपको एपीक्यूरस का समर्थक घोषित करता है, यो आम तौर से दर्शन की वह खिल्ली उड़ाता है, जर्मन मस्तिष्को के लिए उचित खुराक की उसे सज्ञा देता है या, कभी कभी, निरी बकवास कहकर उसे रद्द कर देता है। सगीत का भी वह शौकीन है। ताश की मेज पर, दातो को भीचे लेकिन भावना के साथ, वह गुनगुनाना शुरू कर देता है। लूचिया और ला सोम्नाम्बूला के कुछ अश उसे हिफ्ज याद हैं, लेकिन उसका गाना थोड़ा कर्कश हो जाता है। जाडो में वह पीटर्सबर्ग

चला जाता है। घर को वह खूब, असाधारण रूप में, सजा कर रखता है। साईसो तक उसका यह असर पहुचता है। वे केवल अपने कोटो और घोडो के असवाब सफाई ही नही करते, वल्कि अपने चेहरो तक को पखारते है। आर्कादी पावलिच के गृह-दास, इसमे शक नही, कुछ मुह-लटकाये-से नजर आते है। लेकिन हम रूसियो के वारे में यह तमीज करना कठिन है कि वे मुह-लटकाये है या ऊघ रहे है। मृदु और सुहावनी आवाज मे, बल देते हुए, और जैसे सन्तोष के साथ, आर्कादी पावलिच वात करता है। उसकी सुन्दर सुगधित मूछो के बीच से प्रत्येक शब्द एक एक करके प्रकट होता है, और उसकी भाषा में "Mais c'est impayable!", "Mais comment donc!"* जैसे कतिपय फ्रासीसी वाक्याशो की वहुलता रहती है। इस सब के वावजूद मुझे खुद—औरो की बात छोडिये—उसके यहा जाने के लिए कभी बहुत खाहिश नही होती, और अगर ग्राउज तथा तीतरो का मोह न होता तो शायद मै उससे कतई कोई वास्ता नही रखता। उसके घर में एक अजीब अटपटापन-सा मालूम होता है, वहा के आराम और आसाइश तक से तबीयत घबराती है, और हर साझ जब खानदानी बटन लगी नीली वर्दी से लैस घुघराले वालो वाला अरदली नमूदार होता और चिपचिपाती दासता के साथ पावो से जूते उतारना शुरू करता तो लगता कि अगर उसकी पीतवर्ण क्षीण आकृति, किसी हृष्ट-पुष्ट चौडे गाल और मोटी नाकवाले युवा किसान की सी हो उठती जो अपने हल की मूठ छोडकर सीधा खेत से आया हो और जिसके नानकिन के नये लम्बे कोट की लगभग हर सीवन उधड चुकी हो तो मेरे दिल को बेहिसाब खुशी होती, फिर चाहे वह जूतो के साथ साथ समूची टाग को ही क्यो न खीच डाले!

इसके वावजूद कि आर्कादी पावलिच मुझे नही भाता था, एक वार मुझे उसके यहा रात बितानी पडी। अगले दिन, तडके ही, मैंने अपनी गाडी को जोतने का आदेश दिया, लेकिन वह मेरे पीछे पड गया कि ठेठ

---

* दिलचस्प बात है!, क्यो नही!

अग्रेजी ढग से नाश्ता किये विना मै रवाना नही हो सकता, और वह मुझे अपने अध्ययनकक्ष में लिवा ले गया। चाय के साथ कटलैट, उवले हुए अडे, मक्खन, शहद, पनीर आदि आदि परसे गये। साफ-सुथरे सफेद दस्ताने पहने दो अरदली हमारी उडती हुई इच्छाओ तक को, फुर्ती से और चुपचाप लपक लेते। एक ईरानी दीवान पर हम बैठे थे। आर्कादी पावलिच रेशमी पतलून, काली मखमली जाकेट, नीला फुन्दना लगी लाल फैज टोपी और विना एडी के पीले चीनी स्लीपर पहने था। वह चाय पीता जाता, हसता, अपनी उगलियो के नाखूनो को जाचता, सिगरेट का कश खीचता, तकियो के सहारे वदन को सीधा करता—गरज यह कि वह वेहद खुश था। प्रत्यक्ष सन्तोप के साथ जी-भर नाश्ता करने के वाद आर्कादी पावलिच ने एक गिलास में लाल शराव ढाली, उसे अपने होठो तक ले गया, और अचानक उसकी भौंहे सिकुड गयी।

"मदिरा को गरमाया नहीं, क्यो?" अपेक्षाकृत तेज आवाज में उसने एक अरदली से सवाल किया।

अरदली घवराहट में एकदम स्तव्ध खडा रह गया, और उसका चेहरा फक पड़ गया।

"क्यो, मेरे भाई, क्या सुना नहीं, मैंने कुछ तुमसे पूछा था," शान्त मुद्रा में आर्कादी पावलिच ने फिर कहा, और उसकी आखें बरावर अरदली पर जमी रही।

बेचारा अरदली, अपनी जगह पर खडा सकपका रहा था, अगोछे को उमेठ रहा था, और उसके मुह से शब्द तक नही निकल रहा था।

आर्कादी पावलिच ने अपना सिर झुका लिया और सोच की मुद्रा में पलको के नीचे से उसकी ओर देखा।

"Pardon, mon cher,"* मेरे घुटने को दुलार से थपथपाते हुए उसने कहा और फिर, कुछ क्षण चुप रहने के बाद, अपनी

---

* माफ करना, मेरे प्रिय!

भौंहे उठाते हुए उसने एक बार फिर प्यादे की ओर देखा और कहा, "तुम जा सकते हो।" और साथ ही उसने घंटी बजायी।

मोटे-ताजे, धूप में सवलाये और काले बालोवाले एक आदमी ने कमरे में प्रवेश किया। उसका माथा नीचा था और आखें चर्बी मे एकदम गुम हो गयी थी।

"प्योदोर के बारे में आवश्यक बन्दोबस्त कर दो," दबे स्वर में और पूर्ण थिरता के साथ आर्कादी पावलिच ने कहा।

"अच्छा, मालिक," मोटे गावदुम आदमी ने कहा और चला गया।

"Voilà, mon cher, les désagréments de la campagne,"* आर्कादी पावलिच ने छलछलाते हुए कहा, "लेकिन अरे, यह आप चल कहा दिये? ज़रा रुकिये, थोडी देर तो ठहरिये!"

"नही," मैंने जवाब दिया, "मुझे अब तक चल देना चाहिए था।"

"बस, शिकार ही शिकार! ओह, तुम शिकारी लोग! लेकिन यह तो बताइये, इतनी तुर्ताफुर्ती से जा किधर रहे है?"

"यहा से तीसेक मील दूर, र्‍यावोवो नाम की एक जगह है।"

"र्‍यावोवो? भाई खूब! तब तो मै भी साथ चल सकता हू। र्‍यावोवो से मेरा गाव शिपीलोवका केवल तीन ही मील तो दूर है, और शिपीलोवका गये मुझे एक मुद्दत हो गयी। कभी समय ही नही निकाल सका। जो हो, इसे कहते है सयोग – दिन-भर तुम शिकार करना, और साझ को मेरे गांव चले आना। Ce sera charmant!** दोनो एक साथ व्यालू करेगे, बावर्ची हमारे साथ चला चलेगा, और रात को वही मेरे पास टिकना। सच, यह अच्छा रहेगा, बहुत अच्छा!" मेरे जवाब का इन्तज़ार किये बिना ही उसने अन्त मे कहा, "C'est arrangé***.

---

* देखो, मेरे प्रिय, ये ही देहात की मुसीबते है।

** यह सुन्दर होगा!

*** तय हुआ।

ए, इधर कोई है? गाडी बाहर निकलवाओ, और जरा फुर्ती से। शिपीलोवका तो आप कभी न गये होगे, क्यो? यो यह कहते शर्म तो बडी मालूम होती है कि रात को मेरे कारिन्दे के बगले में डेरा लगाना, लेकिन मै जानता हू कि आप इन सब बातो का कोई खास खयाल नही करते, और र्‌यावोवो में तो शायद पुवाल की ढेरी में ही आपको रात बितानी पडती तो तय रहा, हम चलेगे!"

और आर्कादी पावलिच कोई फ्रेंच गीत गुनगुनाने लगा।

"और सच, आप सोच भी नही सकते कि वहा," टागो पर झूलते हुए वह फिर कहने लग गया, "मेरे कुछ किसान है जो लगान देते है। ऐसा ही कानून है, मै क्या कर सकता हू? लेकिन लगान देने में वे बडे चौकस है, बराबर वक्त पर दे जाते है। यो, मै मानता हू कि बेगार की लीक पर मुझे उन्हे डालना चाहिए था, लेकिन ज़मीन इतनी कम है कि कुछ पूछो नही। सच, मुझे आश्चर्य होता है कि वे दोनो जून कैसे पेट भरते होगे। जो हो, c'est leur affaire!* मेरा वहा कारिन्दा एक बहुत ही बढिया जीव है, une forte tête,** सच्ची प्रशासनिक शक्ति से लैस! खुद अपनी आखो से देखना सच, भाग्य से सब कुछ कितना अच्छा हो गया है!"

कोई चारा नही था। सुबह के नौ बजे के बजाय दोपहर के दो बजे हम रवाना हुए। जो शिकारी है, वे मेरी अधीरता पर सहानुभूति प्रकट करेगे। आर्कादी पावलिच, खुद उसी के शब्दो में नाहक तकलीफ उठाने के पक्ष में नही था। ओढने-बिछाने की चीजो, अन्य नफासतो, पहनने के कपडो, तेल-फुलेलो, तकियो-गद्दियो और सभी काट-छाट के शृगार-बक्सो की इतनी बडी लादी लादकर चला कि सोच-समझकर चलने तथा अपने को अकुश में रखनेवाला कोई जर्मन साल-भर तक उससे अपना काम

---

*यह तो उनकी फिक्र है।

**बढिया दिमाग़।

चला सकता था। हर वार जव भी हम किसी गहरी पहाडी के ढलुवान पर से नीचे उतरते, आर्कादी पावलिच के मुह से कोचवान को लक्ष्य कर सक्षिप्त तथा सशक्त टिप्पणिया प्रकट होती जो इस वात की सूचक थी कि मेरा आदरणीय मित्र एकदम डरपोक आदमी है। जो हो, यात्रा सही-सलामत समाप्त हुई, सिवा इसके कि हाल ही मे मरम्मत हुए एक पुल पर से गुज़रते समय जिस गाडी में वावर्ची था वह उलट गयी और वावर्ची की तोद पिछले पहिये के साथ पिचक गयी।

पाक-कला के माहिर कारेम की इस कलावाजी से आर्कादी पावलिच सचमुच घवरा गया, और उसने फौरन आदेश दिया कि जाकर पता लगाओ, उसके हाथो पर चोट तो नही आयी। और यह मालूम होने पर कि ऐसा कुछ नही हुआ, वह तुरत आश्वस्त हो गया, उसकी वेचैनी जाती रही। इन सव वातो की वजह से रास्ता पार करने मे काफी देर लग गयी। मै उसी गाडी मे वैठा था जिसमे कि आर्कादी पावलिच था, और यात्रा के अन्तिम दौर में—खास तौर से उन घडियो में जवकि मेरे साथी की वातो का जखीरा एकदम चुक गया था, यहा तक कि राजनीति के वारे मे अपने उदारपथी विचारो को प्रकट करने पर वह अव उतर आया था—जानलेवा ऊव ने मुझे दवोच लिया। आखिर हम ठिकाने पर पहुचे—र्‌याबोवो में नही, वल्कि शिपीलोवका में। किस्मत की वात है, और क्या। जो हो, शिकार का तो उस दिन समय रहा नही था, सो भीतर ही भीतर रोते हुए मैंने अपने आपको भाग्य के भरोसे छोड दिया।

वावर्ची हमसे कुछ पहले ही पहुच गया था और, प्रत्यक्षत चीजो को ठीक-ठाक करने तथा सवधित लोगो को चेताने का उसे समय मिल गया था। कारण, गाव की सीमाओ मे पाव रखते ही गाव का मुखिया (कारिन्दे का लडका) हमारी अगवानी के लिए वढ आया। वह लम्वा-चौडा, सात फुट ऊचा, किसान था। उसके सिर के वाल लाल थे। वह घोडे पर सवार था—नगे सिर, नया कोट पहने जिसके वटन खुले थे। "और सोफरोन कहां

है?" आर्कादी पावलिच ने उससे पूछा। मुखिया चपलता के साथ पहले तो घोडे से नीचे उतर आया, मालिक को सलामी देते हुए झुककर दोहरा हो गया, और बोला, "अच्छी तरह तो है, मालिक!" इसके बाद उसने अपना सिर उठाया, बदन को चौकस किया और बताया कि सोफ़रोन पेरोव को गया है, लेकिन उसे बुलाने के लिए आदमी भेज दिया गया है।

"अच्छा तो हमारे पीछे चले चलो," आर्कादी पावलिच ने कहा। मुखिया ने नियमानुसार अपने घोडे को एक ओर कर लिया, उसपर सवार हो गया, और गाडी के पीछे पीछे दुलकी चाल से चलने लगा। टोपी को वह अपने हाथ में लिये था। हम गाव के अन्दर से होकर गये। राह में कुछ किसानो से भेंट हुई। वे खाली गाडियो मे खलिहान से लौट रहे थे। वे गीत गाते आ रहे थे, आगे-पीछे की ओर झूम रहे थे और अपनी टागो को हवा में झुला रहे थे। हमारी गाडी पर और मुखिया पर नजर पडते ही वे एकदम चुप हो गये, जाडो की अपनी टोपियो को (यह गर्मियो का मौसम था) उन्होने सिर से उतार लिया और इस तरह उठ खडे हुए जैसे हुकम पाने का इन्तज़ार कर रहे हो। आर्कादी पावलिच ने, अभिवादन में, दयालुता के साथ अपनी गरदन हिला दी। साफ मालूम होता था कि गाव में हलचल की एक लहर-सी दौड गयी है। चारखाने कपडो के घाघरे पहने किसान स्त्रियो ने बेसमझ या अति उत्साही कुत्तो को छेपटियो से भगा दिया। एक बूढे ने जो टाग से लगडा था और जिसकी दाढी ठीक उसकी आखो के नीचे से उगी मालूम होती थी, पानी पीते अपने घोडे को अधबीच में ही कुदे से अलग खीच लिया और, जाने किस अज्ञात प्रेरणा से उसकी पसलियो में घूसा मारा, और अभिवादन में झुककर खडा हो गया। लम्बी लम्बी कमीज़ें पहने लडके चिल्लाकर झोपडियो में दौड गये, पेट के बल अपनी ऊची चौखट से जा लटके—सिरो को नीचा किये और टागो को हवा में ऊचा उठाये, और कलाबाज़ी-सी खाकर अत्यन्त ताबडतोड गति से अधेरी ड्योढियो में जा छिपे, जहा से वे फिर प्रकट नही हुए। मुखिया

तक भगदड-सी मचाती फाटक की ओर लपक चली। एक साहसी मुर्ग जिसकी काली गरदन ऐसी मालूम होती थी जैसे वह साटिन की जाकेट पहने हो और जिसकी लाल दुम उसकी कलगी को छूआ चाहती थी, बाग तक देने के लिए तैयार हुआ, लेकिन फिर एकाएक डरकर भाग खडा हुआ। कारिन्दे का बगला अन्य सबसे अलग, सन के एक हरे-भरे घने खण्ड के बीचोबीच था। हम फाटक पर पहुचकर रुक गये। मि० पेनोचकिन उठा, नाटकीय अन्दाज़ मे अपने लबादे को उसने उतार डाला, और अपने इर्द-गिर्द सुहावनी नजर डालते हुए गाडी से नीचे उतर आया। कारिन्दे की पत्नी ने सलीके से घुटने झुकाकर हमारा अभिवादन किया और मालिक का हाथ चूमने के लिए आगे बढ आयी। आर्कादी पावलिच ने उसे जी भरकर अपना हाथ चूमने दिया और इसके बाद पैड़ियो पर चढने लगा। बाहर की ड्योढी मे, एक अधेरे कोने में, मुखिया की पत्नी खडी थी। उसने अभिवादन में घुटने झुकाये, लेकिन हाथ चूमने के लिए आगे बढने का साहस न कर सकी। शीतल बगले मे—जैसा कि उसे कहा जाता था—ड्योढी के दाहिनी ओर—दो अन्य औरते अभी भी काम मे जुटी थी। वे दुनिया-भर का कबाड, खाली टब, तख्तो की भाति सख्त भेड की खाल के कोट, चीकट बरतन, पालना जिसमें रगबिरगे चीथडो का ढेर जमा था और उनपर एक बच्चा लेटा था, बाहर उठा उठाकर ला रही थी और झाड़ुओ से गर्द साफ कर रही थी। आर्कादी पावलिच ने उन्हे खदेड दिया और देव-प्रतिमाओ के नीचे एक बेंच पर आसन जमाकर बैठ गया। कोचवानो ने ट्रक, बैग और अन्य सामान लाकर भीतर रखना शुरू किया। हर बार जब वे भीतर आते तो इस बात की कोशिश करते कि उनके भारी-भरकम जूतो की आवाज़ दबी रहे।

इस बीच आर्कादी पावलिच ने फसल, बोवाई तथा खेती सम्बन्धी अन्य विषयो के बारे में मुखिया से पूछताछ शुरू कर दी। मुखिया के जवाब सन्तोषप्रद थे, लेकिन वह एक प्रकार के बोझिल अटपटेपन से

साथ बोल रहा था, जैसे सुन्न हुई उगलियो से अपने कोट के बटन बद कर रहा हो। वह दरवाजे में खडा था, अपने इर्द-गिर्द बराबर ताक लगाये, फुर्तीले अरदली के लिए रास्ता छोडने के लिए चौकस। उसके सबल कधो की दीवार के उस पार, ड्योढी में, मुझे कारिन्दे की घरवाली की एक झलक दिखाई दी जो किसी अन्य किसान स्त्री को चोरी-छिपे पीट रही थी। सहसा एक गाडी खडखडाती हुई आयी और पैंडियो के पास आकर रुक गयी। कारिन्दे ने भीतर प्रवेश किया।

आर्कादी पावलिच के शब्दो में असली प्रशासनिक शक्ति से लैस इस आदमी का कद नाटा था, कधे चौडे, बाल पके हुए, काठी मजबूत, लाल नाक, छोटी छोटी नीली आखें और दाढी पखे की भाति फैली हुई थी। लगे हाथ यहा यह बता दें कि जब से रूस का अस्तित्व कायम हुआ है, तब से एक भी मिसाल आपको ऐसी नही मिलेगी जिसमें कोई धनी और खुशहाल आदमी, बिना बडी तथा झाडीनुमा दाढी के हो। कभी कभी ऐसा भी होता है कि एक आदमी की दाढी जो जीवन-भर पतली और खूटीनुमा रही, अचानक बढने-फैलने लगती है, आलोक-मण्डल की भाति उसके चेहरे को चारो ओर से घेर लेती है, और देखकर आश्चर्य होता है कि इतने बाल कहा से निकल आये! कारिन्दे की पेरोव में निश्चय ही मजे से छनती होगी। उसका चेहरा असदिग्ध रूप मे गुले लाल बना हुआ था, और उसके शरीर से मदिरा की गध आ रही थी।

"ओह, हमारे माई-बाप, हमारे किरपानिधान!" उसने सुरीली आवाज़ में कहना शुरू किया। उसकी मुख-मुद्रा इतनी गहरी भावना से उद्वेलित थी कि हर घडी ऐसा लगता था जैसे वह अभी आसुओ मे फूट पडेगा। "हमारे तारनहार, आखिर आपने किरपा की, आखिर आप हमारे यहा पधारे आपका हाथ, अन्नदाता, आपका हाथ," उसने कहा और मालिक का हाथ चूमने की पेशवाई में उसके होठ बाहर को निकल आये। आर्कादी पावलिच ने उसकी इच्छा पूरी की और मित्रतापूर्ण आवाज़ में पूछा—

"हा तो भाई सोफरोन, कहो, कैसी गुजर रही है?"

"ओह, माई-बाप!" सोफ़रोन चहका, "सब ठीक गुजर रही है, मालिक। और ठीक क्यो न गुजरे, मालिक, जबकि आप, हमारे माई-बाप, हमारे तारनहार, जीवन के आखिरी छन तक हमे खुशी से सराबोर करने के लिए, किरपा कर पधारे है? भगवान से धन्यवाद करते है, मालिक, भगवान से धन्यवाद करते हैं। आपकी किरपा से सब ठीक है, सब अच्छी तरह चल रहा है।"

इतना कहकर वह कुछ रुक-सा गया, अपने मालिक की ओर उसने देखा, और जैसे भावनाओ की बाढ मे आकर (नशे की झोक का भी इसमें कुछ हाथ था) उसने एक बार फिर मालिक का हाथ चूमने के लिए बिनती की, और पहले की तुलना में और भी ज्यादा चिचियाना शुरू किया।

"ओह आप, हमारे माई-बाप, हमारे खेवैया और हा, और ओह, खुदा बख्शे मुझे खुशी ने मुझे कितना उल्लू बना दिया है. ओह खुदा बख्शे मुझे मै देख रहा हू और अपनी आखो पर मुझे विश्वास नही हो रहा है . ओह, हमारे माई-बाप!"

आर्कादी पावलिच ने एक नजर मेरी ओर देखा, मुसकराया, और पूछा—"N'est-ce pas que c'est touchant?"*

"लेकिन, आर्कादी पावलिच, मेरे मालिक," हार न माननेवाले कारिन्दे ने फिर कहना शुरू किया, "आप भी खूब है मालिक! आप तो सरकार, मेरा दिल ही तोड डालेगे! अपने आने की खबर देने की किरपा तक आपने नही की, मालिक। रात को आप आराम कहा करेगे? देखिये न, यहा सब कितना गदा है, एकदम कूडा-कर्कट!"

"बस, सोफरोन, बस," आर्कादी पावलिच ने मुसकराते हुए जवाब दिया, "ज्यादा बको नही। यह जगह ठीक है।"

---

*क्या यह देखकर तुम्हारे दिल में दया नही उमड पडती है?

"ठीक तो है, माई-वाप, लेकिन किसके लिए? हम जैसे किसानो के लिए यह ठीक है, लेकिन आपके लिए . ओह, हमारे माई-वाप, हमारे किरपानिधान ओह, आप हमारे माई-वाप मुझ जैसे बूढे खूसट को माफ करना, मालिक। खुदा वख्शे, मेरा दिमाग ठिकाने नही। मै एकदम वहक गया हू।"

इस वीच साझ का भोजन परस दिया गया। आर्कादी पावलिच ने खाना शुरू किया। वृद्ध ने अपने वेटे को खदेडकर भगा दिया, यह कहते हुए कि उससे कमरे में घुटन है।

"अच्छा तो बूढे वावा, अव यह वताओ कि जमीन की तकसीम का मामला तो निवट गया न?" आर्कादी पावलिच ने मेरी ओर आख मारते तथा, प्रत्यक्षत गाव की वोली में वतियाने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"हां मालिक, आपकी किरपा से, जमीन के हिस्से हमने तय कर लिये है। परसो इसकी फेहरिस्त वना ली गयी। ख्लीनोवो के लोगो ने शुरु शुरू मे टटा किया सच, उन्होने टटा किया हम यह चाहते है और हम वह चाहते है खुदा जानता है, ऐसी कोई चीज नही जिसे वे न चाहते हो लेकिन वे वेवकूफ है, मालिक, विल्कुल जाहिल। लेकिन हमने, मालिक, आपकी किरपा से, अपनी शुक्रिया अदा की, और वह जो पच था – मिकोलाई मिकोलाइच – उसको हमने खुश कर दिया। आपके आर्डर के मुताविक हमने सारा काम किया, मालिक। ठीक वैसे ही, जैसे कि आपने आर्डर देने की किरपा की थी। येगोर दिमीत्रिच को तो सव मालूम है। उसके सिवा हमने और कुछ नही किया।"

"येगोर से मुझे रिपोर्ट मिल गयी थी," आर्कादी पावलिच ने शान के साथ कहा।

"ठीक मालिक, येगोर दिमीत्रिच, विल्कुल ठीक!"

"हा तो, मेरी समझ में, अव तो तुम सन्तुष्ट हो न?"

सोफरोन जैसे इसी की प्रतीक्षा में था।

"ओह, आप माई-बाप है हमारे किरपानिवान," पहले की भाति सुरीली आवाज़ मे उसने कहना शुरु किया, "बेशक, मालिक बस क्या कहे, मालिक, आप हमारे माई-बाप है, और आपके लिए दिन-रात भगवान से दुआ करते है . लेकिन मालिक, ज़मीन बहुत थोडी है, इसमे शक नही "

आर्कादी पावलिच ने उसे बीच में ही काट दिया।

"बस बस, सोफरोन, बहुत हुआ। मै जानता हूं कि मेरी चाकरी में तुम सरगर्म हो। हा तो अनाज गाहने का काम कैसा चल रहा है?"

सोफरोन ने एक उसास भरी।

"हा तो, माई-बाप, गाहने का काम कुछ ज्यादा अच्छा नही चल रहा है। लेकिन मालिक, मै एक छोटी-सी घटना के बारे में आपको बताना चाहता हू जो यहा घटी। (यह कहते हुए वह आर्कादी पावलिच के और निकट सरक आया, अपनी बाहो को अलग किये, नीचे झुका हुआ और अपनी एक आख को सिकोडे।) हमारी जमीन में एक लाश मिली।"

"सो कैसे?"

"यह तो मालिक, मेरे दिमाग को भी नही पता चलता। माई-बाप, लगता है जैसे यह किसी शैतान की करनी हो। लेकिन, भाग्य से, लाश हदबदी के पास मिली। सच पूछो तो हमारे बाजू। मैने फौरन हुकम दिया कि समय रहते उसे खीचकर पडोसी की ज़मीन की पट्टी पर डाल दो। और वहा मैने चौकी बैठा दी, और अपने सब लोगो को हुकम दे दिया। कहा कि बस, मुह बन्द रखो। लेकिन मैने इस ख्याल से कि मामला कही औंधा न पड जाय, पुलिस अफसर को समझा दिया कि कैसे क्या हुआ। 'हा तो बात यह हुई,' मैने कहा। और आप जानो, मुझे उसको चाय पिलानी पडी, उसकी मुट्ठी भी गरम करनी पडी . हा तो मालिक, ठीक किया न मैने? दूसरो के कधो पर हमने बला डाल दी। आप जानो, लाश का मामला, दो सौ रूबल से कम कभी न लगते। यह उतना ही निश्चित है जितना कि मौत!"

मि० पेनोचकिन अपने कारिन्दे की चालाकी पर खुलकर हसा और गरदन से उसकी ओर सकेत करते हुए कई बार मुझसे कहा–"Quel gaillard, ah!"*

इस बीच बाहर काफी अधेरा घिर आया था। आर्कादी पावलिच ने मेज को साफ करने और पुवाल भीतर लाने का आदेश दिया। अरदली चाकर ने हमारे लिए चादरे बिछा दी और तकिए लगा दिये। हम लेट गये। अगले दिन के लिए आदेश लेकर सोफरोन चला गया। सोने से पहले आर्कादी पावलिच ने रूसी किसानो के बेहतरीन गुणो के बारे में कुछ देर और बातचीत की, और इसी प्रसग मे बताया कि जब से सोफरोन ने इस जगह का बन्दोबस्त सभाला है, शिपीलोवका के किसानो ने एक कोपेक भी कभी बाकी नही चढने दिया चौकीदार ने अपनी मूगरी बजायी। एक बच्चा जिसमें जाहिर था, आत्म-नियन्त्रण की भावना अभी पूर्ण रूप से नही जागी थी, किसी कुटिया में रोने लगा धीरे धीरे हम सो गये।

दूसरे दिन सुबह हम अपेक्षाकृत तडके ही उठ खडे हुए। मैं र्यावोवो के लिए रवाना होने की तैयारी कर रहा था, लेकिन आर्कादी पावलिच मुझे अपनी जागीर दिखाने के लिए व्यग्र था और रुकने के लिए उसने मुझसे अनुरोध किया। मुझे भी यह ख्वाहिश हुई कि देखू, प्रशासनिक शक्ति से लैस इस आदमी के–सोफरोन के–विशिष्ट गुण किस तरह असली काम में प्रकट होते हैं। कारिन्दा हाजिर हुआ। वह नीले रग का कोट पहने था, और उसके ऊपर लाल पेटी कसे था। पिछली साझ की अपेक्षा इस वक्त वह कुछ कम बातूनी था, चौकन्ना और एक-टक नजर से अपने मालिक के चेहरे की ओर देख रहा था, और मुमम्बद्ध तथा सुघर जवाब दे रहा था। उसके साथ हम खलिहान की ओर चल दिये। सोफरोन का लडका भी सात फुट ऊचा मुखिया, जो हर बाहरी लक्षण से कुन्द-बुद्धि जान पडता था, हमारे साथ हो लिया, और कुछ आगे चलकर गाव का

* कितना चालाक है!

कान्स्टेवल फेदोसेइच भी हमारे साथ आ मिला। वह अवकाश-प्राप्त सैनिक था। उसकी मूछें भीमाकार थी और चेहरे पर एक ऐसा असाधारण भाव छाया था, मालूम होता जैसे बहुत पहले उसे कोई चौंका देनेवाला सदमा लगा हो, और उससे वह अभी तक पूरी तरह छुटकारा नही पा सका हो। हमने खलिहान पर नजर डाली, अनाज के पूलो, आउट हाउसो, पवन-चक्की, मवेशियो के बाडे, नवाकुरित खेती और सन के खेतो को देखा। हर चीज, वाकई, एकदम बढिया हालत में थी। एक ही चीज थी जो कुछ चक्कर में डालती थी। और वह चीज थी किसानो के लटके हुए चेहरे। सोफरोन ने दोनो ही चीजो पर नजर रखी थी—सजावट पर भी और उपयोगिता पर भी। सभी खाइयो के किनारे किनारे उसने सरपत बो रखे थे, खलिहान में चारे के ढेरो के बीच उसने छोटी छोटी पगडंडिया बना रखी थी और उनके ऊपर महीन बालू छितराया हुआ था। पवन-चक्की के ऊपर उसने हवा का रुख बतानेवाली एक पखी लगा रखी थी, पखी भालू की शकल की थी, उसका जबडा खुला था और उसकी लाल जीभ बाहर निकली हुई थी। ईंटो के मवेशीघर का अगवाडा यूनानी ढग का बना मालूम होता था और उसपर सफेद अक्षरो में ये शब्द अकित थे—'मवेशी का बाडा, बनाया एक हजार आठ सौ चालीस ईसवी'। आर्कादी पावलिच का हृदय एकदम उमगा था, और उन्होंने फ्रेंच भाषा में बोलते हुए मुझे लगान लेने की पद्धति के फायदे बताने शुरू कर दिये, लगे हाथ यह भी जताते हुए कि बेगार से जमींदारो को ज्यादा फायदा है—"लेकिन, आखिरकार, वही सब कुछ नही है।" उन्होंने कारिन्दे को सलाह देनी शुरू की कि आलू कैसे लगाने चाहिए, मवेशियो के लिए चारा कैसे तैयार करना चाहिए, इत्यादि। सोफरोन मालिक की टिप्पणियो को ध्यान से सुनता रहा, कभी कभी जवाब में कुछ कह देता, लेकिन आर्कादी पावलिच को अब यह माई-बाप किरपानिधान कहकर सम्बोधित नही कर रहा था, और बराबर इस पर बल दे रहा

था कि ज़मीन बहुत थोडी है, और यह कि कुछ और खरीदना अच्छा होगा। "तो फिर खरीद लो न कुछ," आर्कादी पावलिच ने कहा, "वेशक, मेरे नाम में। मुझे कोई उज्र नही।" इसपर सोफरोन ने कोई जवाव नही दिया, वह केवल अपनी दाढी को सहलाता रहा। "अच्छा तो चलिये, अव ज़रा अपने जगल की ओर निकल चले," आर्कादी पावलिच ने कहा। जीन कसे घोडे फौरन वाहर निकाल लाये गये, और हम जगल की ओर—या 'घेर' की ओर जैसा कि उसे इधर कहा जाता है—चल दिये। यह 'घेर' क्या थी, एक घना अछूता जगल था। इसके लिए आर्कादी पावलिच ने सोफरोन को शावाशी दी और उसके कधे थपथपाये। जगलात के मामले में आर्कादी पावलिच रूसी विचारो से चिपका था और इस सम्बन्ध में उसने मुझे—खुद उसके ही शब्दो में—एक मनोरजक किस्सा सुनाया कि किस प्रकार एक हसोड भूस्वामी ने जगल के अपने रखवाले को अच्छा सवक देने के लिए उसकी आधी दाढी उखाड डाली थी—यह सावित करने के लिए कि उखड जाने पर जव दोबारा वाल उगेंगे तो ज्यादा घने नही होगे। लेकिन अन्य वातो में सोफरोन या आर्कादी पावलिच, दोनो में से कोई भी नये तरीको के खिलाफ नही थे। गाव लौटने पर कारिन्दा हमें अनाज को ओसाने की एक मशीन दिखाने के लिए ले गया जिसे उसने हाल ही में मास्को से मगवाया था। यह मशीन, इसमें शक नही, वडी सफाई से काम करती थी। लेकिन अगर सोफरोन को यह मालूम होता कि खुद उसके लिए, और उसके मालिक के लिए, इस मुआइने में कितनी अप्रिय घटना घटनेवाली है, तो वह, विलाशक, हमे लेकर घर से वाहर पाव न रखता।

हुआ यह कि आउट हाउस से निकलते ही अधोलिखित नजारा हमें दिखाई दिया। दरवाजे से कुछ डग दूर, एक गदे जोहड के पास जिसमें तीन वत्तखें दीन-दुनिया से वेखवर छपछपा रही थी, दो किसान घुटनो के वल खडे थे—एक साठ वर्ष का वूढा था, और दूसरा वीस वर्ष का

लडका। दोनों घर की कती-बुनी टाकिया लगी कमीज़ें पहने थे, उनके पाव नगे थे और कमर मे रस्सिया कसे थे। गाव का कान्स्टेबल फेदोसेइच उनके साथ उलझ रहा था। अगर हम आउट हाउस मे कुछ क्षण और हिलगे रहते तो शायद वह उन्हे खिसकाने मे सफल हो गया होता। लेकिन अब हमे देखकर उसने अपने बदन को चौकस किया और टैन्शन खडा हो गया। पास ही मुह बाये मुखिया खडा था, उसकी मुट्ठिया बेजान-सी लटकी हुई थी। आर्कादी पावलिच ने अपनी भौहे सिकोड ली, होठ में दात गडाये और प्रार्थियो के निकट पहुचा। वे दोनो, मुह बद, उसके पावो पर पसर गये।

"अरे, तुम चाहते क्या हो? बात क्या है?" उसने कडी आवाज़ में थोडा गुनगुनाते हुए पूछा। (किसानो ने एक-दूसरे की ओर देखा, मुह से आधा शब्द तक नही निकाला, केवल अपनी आखो को थोडा भीचा—जैसे सूरज उनके मुह के सामने हो, और उनके सास की गति तेज़ हो चली।)

"हा तो वात क्या है?" आर्कादी पावलिच ने फिर पूछा, और तुरत सोफरोन की ओर घूमकर देखा, "ये किस घराने के है?"

"तोवोलेयेव घराने के," कारिन्दे ने धीरे से जवाब दिया।

"हा तो तुम क्या चाहते हो?" आर्कादी पावलिच ने फिर कहा, "क्या तुम्हारी जुवान को लकवा मार गया है, या कुछ और वात है? बोलो, तुम क्या चाहते हो?" अन्त में, वृद्ध की ओर सिर से इशारा करते हुए, उसने कहा, "और देखो, डरो नही, वेवकूफ!"

वृद्ध की झुर्रियां-पडी गहरी सावली गरदन आगे को खिच आयी। उसके वल खाते हुए नीले-से होठ खुले। वुदवुदाती आवाज़ में उसके मुह से निकला—"हमारी रक्षा करो, मालिक!" और उसका माया फिर धरती पर जा टिका। युवक किसान भी धरती पर पसर गया। आर्कादी पावलिच ने गर्व के साथ उनकी झुकी गरदनो पर एक नजर डाली, अपने सिर को

पीछे की ओर फेंका, और अपनी टागो को पुल-सा वनाये खडा रहा।

"वात क्या है? क्या तुम्हे किसी से शिकायत है?"

"दया, मालिक, दया! हमें सास लेने दो ओह, इस जुल्म से हम मर जायेंगे!" (वृद्ध के मुह से वडी मुश्किल से शब्द निकल रहे थे।)

"तुम्हे कौन सताता है?"

"सोफरोन याकोवलिच, मालिक!"

आर्कादी पावलिच कुछ क्षण तक चुप रहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"अन्तीप, मालिक।"

"और यह कौन है?"

"मेरा लडका, मालिक।"

आर्कादी पावलिच फिर चुप हो गया। अपनी मूछो को उसने खीचा।

"हा तो उसने तुम्हे क्या सताया है?" उसने फिर पूछा, अपनी मूछो के ऊपर से वृद्ध की ओर देखते हुए।

"क्या कहे, मालिक, उसने हमें एकदम वरवाद कर दिया है। दो लडको को, मालिक, उनकी वारी नही थी, उसने रगरूट वनाकर भर्ती करा दिया। और अव वह तीसरे को भी ले जा रहा है। और मालिक, कल हमारी रही-सही आखिरी गाय वाडे में से खदेड ली गयी, और मेरी वूढी घरवाली को, यह जो सरकार यहा मौजूद है, इन्होने पीटा।" (उसने मुखिया की ओर इशारा किया।)

"हु!" आर्कादी पावलिच ने टिप्पणी की।

"हमारे रक्षक, उससे हमें वचाओ। नही तो वह विल्कुल हमारा नाश कर डालेगा।"

आर्कादी पावलिच ने भौंहे सिकोड ली।

"यह सव क्या है?" धीमी आवाज में, नाराजी का भाव जताते हुए, उसने अपने कारिन्दे से पूछा।

"यह नशा करता है, मालिक," कारिन्दे ने जवाब दिया, विनम्रता का पहले से भी ज्यादा प्रदर्शन करते हुए, "तिस पर काहिल भी है। और मालिक, पिछले पाच साल से यह बराबर बाकी चढाये है।"

"सोफरोन याकोवलिच ने मेरी ओर से बाकी अदा कर दिया, मालिक," वृद्ध कहता गया, "पाच साल हुए जब उसने मेरा बाकी अदा किया था। उसने अदा कर दिया, मालिक, और बदले में मुझे अपना बन्धक दास बना लिया, और अब "

"लेकिन तुमने बाकी चढने क्यो दिया?" आर्कादी पावलिच ने धमकी के स्वर मे पूछा। (वृद्ध का सिर लटक आया।)

"तुम्हे पीने की लत है, शराबखानो मे मडराते रहते हो, इसमें शक नहीं।" (वृद्ध ने बोलने के लिए अपना मुह खोला।)

"मैं तुम्हे जानता हूं," आर्कादी पावलिच चिढकर कहता गया, "तुम समझते हो कि पीने के सिवा तुम्हे और कुछ नही करना-धरना – पीना और तन्दूर पर लम्बे पड रहना, और अपना काम कर्मठ किसानो के जिम्मे छोड देना।"

"और यह गालिया भी बकता है," कारिन्दे ने आहुति छोडी।

"सो तो पक्की बात है। हमेशा यही होता है। जाने कितनी बार मैं यह देख चुका हू। बारहो महीनो पीता और गालिया बकता है, और फिर आकर पाव पकडता है।"

"दया करो, हमारी रक्षा करो, मालिक, आर्कादी पावलिच," वृद्ध ने हताश मुद्रा मे कहना शुरू किया, "मैंने कब बुरा बोल मुह से निकाला? खुदा जानता है, मुझमे इतना दम कहा जो बेअदबी करता। सोफरोन याकोवलिच के जी मे गाठ पड गयी है – जाने क्यो वह मुझसे नाराज है – खुदा ही इसका न्याव करेगा। वह मुझे बिल्कुल तहस नहस कर डालेगा, मालिक आखिरी यह आखिरी . मेरा लडका. उसे भी वह (वृद्ध की झुर्रियोदार पीली आखो मे एक आसू चमक आया।) दया करो, किरपानिधान, हमारी रक्षा करो "

"और केवल हमें ही नही " युवा किसान ने कहना चाहा

आर्कादी पावलिच एकदम गुस्से में भडक उठा।

"तुझसे राय देने के लिए किसने कहा था? अपनी यह थूथनी बद रख जब तक मै तुझसे वोलने के लिए न कहू! हिम्मत तो देखो! वस खामोश, कह देता हू, एकदम खामोश! वाह, जरा सोचो तो, निरी बगावत नही तो यह और क्या है! नही, मेरे भाई, मेरे प्रवन्ध में तुम बगावत नही कर सकते . हा, मेरे प्रबन्ध में (आर्कादी पावलिच आगे बढ आया, लेकिन शायद उसे मेरी उपस्थिति की याद हो आयी, सो वह घूम गया और हाथो को उसने अपनी जेवो में डाल लिया।) "Je vous demande bien pardon, mon cher," * अपनी आवाज को अर्थभरे अन्दाज मे धीमा करते हुए वाधित मुसकान के साथ उसने कहा। "C'est le mauvais côté de la médaille ** बस, इतना ही काफी है, कुछ और कहने की जरूरत नही, मै उससे कहू," किसानो की ओर देखे विना ही वह कहता गया (किसान नही उठे।) "अरे, क्या तुमने सुना नही बस, इतना ही काफी है। मै उससे कहू . अब तुम जा सकते हो।"

आर्कादी पावलिच ने उनकी ओर से मुह फेर लिया। "परेशानी, बस और कुछ नही," दातो के बीच से वह बुदबुदाया, और लम्बे डगो से घर की ओर चल दिया। सोफरोन भी उसके पीछे हो लिया। गाव के कान्स्टेबल ने अपनी आखो को इस तरह खोला मानो वह अभी शून्य में भारी छलाग मारनेवाला हो। मुखिया ने बत्तखो को जोहड से खदेड दिया। प्रार्थी कुछ देर उसी मुद्रा में बने रहे फिर उन्होने एक दूसरे की ओर देखा और, अपने सिरो को मोडे बिना, अपनी राह थामी।

इसके दो घटे बाद र्याबोवो पहुच मै शिकार की तैयारी कर रहा

---

* इसके लिए मुझे माफ कीजिये, प्रिय।

** यह तस्वीर का वुरा पहलू है।

था। अनपादीस्त नाम का एक किसान जिससे मैं अच्छी तरह परिचित था, मेरे साथ था। विदा होने के समय तक आर्कादी पावलिच सोफरोन से नाराज़ था। शिपीलोवका के किसानो और आर्कादी पावलिच के बारे में मैंने अनपादीस्त से बातचीत शुरू की, और मैंने उससे पूछा कि क्या वह वहा के कारिन्दे को जानता है।

"सोफरोन याकोवलिच? छि!"

"वह कैसा आदमी है?"

"वह आदमी नही, कुत्ता है। यहा से लेकर कूर्स्क तक उस जैसा वहशी आपको ढूढे नही मिलेगा।"

"क्यो क्या?"

"कोई नही कहता कि शिपीलोवका गाव, उस क्या नाम है उसका पेनोचकिन का है। वहा पर मालिक वह नही है, मालिक सोफरोन है।"

"क्या सच?"

"वही मालिक है, जैसे यह खुद उसकी जागीर हो। सब के सब किसान उसके कर्जदार हैं। दासो की भाति उसके लिए काम करते हैं। एक को पकडकर वह गाडियो के साथ नत्थी कर देगा, दूसरे को कही और जोत देगा वह उनकी जान सासत मे किये रहता है।"

"लगता है, उनके पास जमीन कुछ काफी नही है?"

"ज़मीन काफी नही है! दो सौ एकड तो वह अकेले ख्लीनोवो किसानो से निकासी पर लिये है, और दो सौ अस्सी एकड हम लोगो से। कुल मिलाकर तीन सौ पिछत्तर एकड ज़मीन उसके पास है। और वह केवल जमीन का ही व्यापार नही करता, वह घोडो और ढोर-डगरो का भी व्यापार करता है। साथ ही अलकतरा, मक्खन, सन के रेशो तथा और भी कितनी ही चीज़ो का भी वह बहुत ही तेज़ है, बेहिसाब तेज़ है, और धनी भी, वहशी कही का! लेकिन सबसे बुरा

तो यह कि वह उन्हे पीटता है। वह वहशी है, इन्सान नही। मैंने कहा न, कुत्ता, गली का कुत्ता, विल्कुल नकारा। सच, ऐसा है वह!"

"लेकिन यह क्या वात है कि वे उसकी शिकायत नही करते?"

"जव कोई बकाया नही, मालिक खुश है, सो उसके लेखे कुछ भी हुआ करे। किसकी हिम्मत है जो शिकायत करे," कुछ रुककर उसने अन्त में कहा, "न वावा, वह मिजाज ठीक करके रख देगा सो अच्छा यही है कि तुम दवाकर वैठे रहो न-न, वह जान को आ जाय "

मुझे अन्तीप का ध्यान आया, और जो कुछ मैंने देखा था उसे बताया।

"देखा आपने," अनपादीस्त ने टिप्पणी की, "वह अव उसे चवा जायेगा, वह उसे कच्चा निगल जायेगा। मुखिया उसकी मरम्मत करेगा। जरा सोचो तो, कितना निरीह, भाग्य का मारा है वह! और उसका कसूर क्या है गाव की पचायत में उसकी कारिन्दे से कुछ कहा-सुनी हो गयी, और वह, एकदम झुझला उठा। भला वह क्यो बरदाश्त करे इतना बडा मामला, बना दिया! सो उसने उसे अन्तीप को, कोचना शुरू किया। उसे अब वह समूचा ही निगल जायेगा। देखा आपने, इतना कमीना है वह। कमीना कुत्ता—खुदा मेरी गुमराहियो को माफ करे—वह जानता है कि किसका गला दबोचना चाहिए। उस बूढो को जो कुछ अमीर हैं, जो काम करनेवाले बडे परिवारो के स्वामी हैं, उन्हे वह नही छूता, गजा शैतान कही का! एक इसी से सारा भेद खुल जाता है। उस पत्थर-दिल बदमाश ने, कमीने कुत्ते ने, बारी न होने पर भी अन्तीप के लडको को भर्ती के लिए क्यो भेज दिया? ओह, खुदा मेरी गुमराहियो को माफ करे!"

हम शिकार करने चल पडे।

ज़ाल्त्सब्रून्न, साइलेशिया, जुलाई १८४७

खाता-घर

शरद् के दिन थे। अपनी बन्दूक उठाये खेतो मे मडराते मुझे कई घटे बीत चुके थे, और कूर्स्क राजमार्ग पर स्थित सराय मे—जहा त्रोइका गाडी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी—मै साझ तक न लौटता अगर अत्यन्त महीन और निरन्तर बारिश न हो रही होती जो सुबह से ही मुझे किसी चिरकुमारी की जिद और निर्ममता से परेशान न किये होती। अन्त में आस-पास में जहा भी जगह मिले कुछ देर के लिए सिर छिपाने के लिए मै मजबूर हो गया। उस समय जबकि मै अभी सोच ही रहा था कि किस दिशा में मुझे प्रयाण करना चाहिए, अचानक मटर के एक खेत के निकट एक धसी हुई सी झोपडी पर मेरी नजर पडी। मै झोपडी के पास पहुचा, भूसे के छप्पर के नीचे झाककर देखा, तो एक वृद्ध आदमी पर मेरी नजर पडी। वह इतना जरा-जीर्ण था कि मुझे एकाएक उस मरणासन्न बकरे की याद हो आयी जो राबिन्सन क्रूजो को अपने द्वीप की एक खोह में मिला था। वृद्ध उकडू होकर बैठा था, उसकी छोटी छोटी चुधी आखें आधी मुदी थी और वह, जल्दी जल्दी लेकिन सावधानी के साथ, खरगोश की भाति, सूखी और कडी मटर के दाने को चबा रहा था, (बेचारे के मुह में एक भी दात बाकी नही बचा था)। मटर के दाने को वह कभी एक गाल मे और कभी दूसरी गाल में निरन्तर घुमाता। इस काम में वह इतना व्यस्त था कि मेरे आगमन की ओर उसका ध्यान तक नही गया।

"वावा, वूढे वावा!" मैंने कहा। उसने मुह चलाना वद कर दिया, अपनी भौहो को खूब ऊचा उठाया और सप्रयास अपनी आखो को खोला।

"क्या है?" फटी-सी आवाज मे वह वुदवुदाया।

"इधर पास में ही कोई गाव है क्या?" मैंने पूछा।

वृद्ध ने फिर मुह चलाना शुरु कर दिया था। उसने मेरी वात सुनी नही। मैंने, पहले से ज्यादा ऊची आवाज़ मे अपना सवाल दोहरा दिया।

"ओह, गाव? लेकिन तुम चाहते क्या हो?"

"देखते तो हो, वारिश से वचने की कोई जगह।"

"क्या?"

"वारिश से वचने की जगह!"

"ओह!" (धूप में सवलायी अपनी खोपडी को उसने खुजलाया।) "अच्छा तो उधर से जाओ," अनिश्चित दिशा में हाथ हिलाते हुए उसने अचानक कहा, "सो जव तुम जगल के पास से गुजरोगे—समझे, जव तुम उधर जाओगे—तो वहा एक सडक मिलेगी। तुम उसे छोड देना, और ठीक दाए चलते जाना, दाए एकदम दाए दाए वस, अनान्येवो गाव जा लगोगे। या सीतोव्का पहुच जाओगे।"

वृद्ध की वात मुश्किल से पकड में आ रही थी। उसकी आवाज़ वही मूछो में उलझकर रह जाती थी, और उसकी ज़ुवान भी कुछ उसके वस में नही थी—वार वार अटपटा जाती थी।

"तुम किस गाव के हो, वावा?" मैंने उससे पूछा।

"क्या?"

"तुम किस गाव के हो?"

"अनान्येवो का।"

"यहा क्या कर रहे हो?"

"क्या ?"

"यहा क्या कर रहे हो ?"

"चौकीदारी।"

"चौकीदारी, किसकी ?"

"मटरो की।"

मै बरबस मुसकरा उठा।

"सच! बाबा, तुम्हारी उम्र क्या होगी ?"

"भगवान जाने!"

"तुम्हारी आखे तो जवाब दे चली है, क्यो ?"

"क्या ?"

"यह कि तुम्हे अब क्या दिखाई देता होगा ?"

"हा, जवाब दे चली है, कभी कभी तो कुछ सुनाई भी नही देता।"

"तो तुम चौकीदारी क्या खाक करते होगे ?"

"ओह, यह मेरे मुखिया जाने।"

"मुखिया!" मैने सोचा, और बडी अनुकम्पा के साथ इस निरीह वृद्ध की ओर मैने देखा। उसने कुछ इधर-उधर टटोला, कपडो के भीतर से बासी रोटी का एक टुकडा बाहर निकाला और बच्चे की भाति उसे चूसने लगा। अपने धसे हुए गालो को वह मुश्किल से चला पा रहा था।

मै जगल की दिशा में चल दिया, दाहिनी ओर मुडा, और जैसा कि वृद्ध ने मुझे सलाह दी थी, बराबर दाहिने हाथ बढता गया, और आखिर एक बड़े गाव में पहुचा। गाव मे एक गिरजा था, पत्थर का बना और नये ढग का—यानी खभो वाला और एक खुली-सी गढी भी। यह गढी भी खभो से लैस थी। अभी कुछ दूर ही था कि बारिश के महीन आल-जाल के बीच से एक बगला मुझे दिखाई दिया जिसकी छत तख्तो से पटी थी और जिसकी दो चिमनिया अन्य सब से ऊची नज़र आ रही थी। हो न हो, यह गाव के मुखिया का घर होगा। मेरे [illegible]

उसकी दिशा में ही बढ चले, इस आशा से कि इस बगले में समोवार, चाय, चीनी और मलाई जो एकदम खट्टी न हो, मिल सकेगी। अपने सर्दी से सिकुडे कुत्ते को लिये मै पैडियो पर चढा, दालान के पास पहुच उसका दरवाजा खोला और बजाय इसके कि एक बगले का ताम-झाम—जैसा कि आम तौर से होता है—वहा दिखाई देता, कागजो से लदी कई मेजो, दो लाल अलमारियो, स्याही-बिखरे दवातो, स्याही सोखने के रेत से भरे टिन के पचीस-तीस सेर के बोझल बकसो, लम्बे कलमो, आदि आदि पर मेरी नजर पडी। एक मेज़ पर बीस-एक वर्ष का कोई युवक बैठा था—सूजा हुआ रुग्ण-सा चेहरा, छोटी छोटी आखें चिकनाया हुआ सा माथा, लम्बे लम्बे गलमुच्छे, और कायदे के अनुसार नानकिन का भूरा लम्बा कोट वह पहने था जो गले और कमर के पास से चिकना हो गया था।

"क्या चाहते हो?" उसने मुझसे पूछा उस घोडे की भाति जिसकी औचक में थूथनी पकड ली गयी हो।

"क्या कारिन्दा यही रहते है या "

"यह जमीदारी का मुख्य खाता-घर है," उसने बीच में ही कहा, "और मै ड्यूटी कर रहा हू। क्या तुम ने तख्ती नही देखी? इसी लिए तो उसे वहा लगा रखा है।"

"मुझे अपने कपडे सुखाने है। यह कहा हो सकता है? क्या गाव में समोवार है?"

"समोवार बेशक है," भूरे लम्बे कोटवाले युवक ने शान से कहा, "पादरी तिमोफेई के यहा चले जाओ, या गृह-दासो की झोपडी में, या नजार तारासिच के यहा, या अग्राफेना के यहा जो मुर्गिया पालने का काम करती है।"

"यह किससे बाते कर रहा है, काठ के उल्लू? क्या मुझे सोने नही देगा, मिट्टी के माधो!" बराबरवाले कमरे में से किसी ने चिल्लाकर कहा।

"यहा एक सज्जन आये है। पूछते है कि वह अपने कपडे कहा सुखा सकते है।"

"कैसा सज्जन?"

"पता नही। बन्दूक और एक कुत्ता लिये है।"

बराबरवाले कमरे में पलग के चरचराने की आवाज सुनाई दी। दरवाज़ा खुला और एक हट्टा-कट्टा जीव अन्दर चला आया—नाटा कद और पचास वर्ष की आयु, साड जैसी गरदन, उभरती आखें, असाधारण रूप में गोल-मटोल गाल, समूचा चेहरा जैसे एकदम पालिश से चमचमाता।

"क्या चाहते हो?" उसने मुझसे पूछा।

"अपने कपडे-लत्ते सुखाना चाहता हू।"

"यहा तो ठीक नही है।"

"मुझे पता नही था कि यह खाता-घर है। लेकिन मै पैसे देने को तैयार हू "

"अच्छा तो देखो, यहा कुछ बन्दोबस्त हो जायेगा," उस मोटे-ताज़े आदमी ने फिर कहा, "चलिये न, भीतर चलिये।" (वह मुझे दूसरे कमरे में ले गया, लेकिन उसमें नही जिस में से वह आया था।) "कहिये, इससे काम चलेगा?"

"बहुत ठीक क्या कुछ चाय और मलाई भी मिल सकती है?"

"क्यो नही, तुरत मिल जायेगी। इधर आप अपना यह ताम-झाम उतारेंगे और उधर, घडी-भर में, चाय तैयार हो जायेगी।"

"यह जमीदारी किसकी मिल्कियत है?"

"श्रीमती लोसन्यकोवा, येलेना निकोलायेवना की।"

वह बाहर चला गया। मैंने चारो ओर नज़र डाली। मेरे कमरे को दफ्तर से अलग करनेवाले पार्टीशन से सटा हुआ चमड़े का एक बहुत बड़ा सोफा रखा था। दो ऊची पीठवाली कुर्सिया—ये भी चमडे से मढी

थी—एकमात्र खिडकी के अगल-बगल रखी थी। खिडकी गाव की सडक की ओर खुलती थी। दीवारो पर हरे रग का कागज लगा था जिस पर गुलाबी रग के फूल छपे थे। कमरे में तीन बडे बडे तैल-चित्र टगे थे। इनमें से एक किसी शिकारी कुत्ते का था जिसके गले में नीला पट्टा बधा था। चित्र के नीचे लिखा था—'मेरा सुख', कुत्ते के पाव के निकट एक नदी बह रही थी। नदी के दूसरे तट पर, सनोबर के एक पेड के नीचे, अपने कान को खडा किये, बहुत बडे आकार का एक खरगोश बैठा था। दूसरे चित्र मे दो वृद्ध तरबूज खाते नजर आ रहे थे। तरबूज के पीछे, खूब दूर, एक यूनानी ढग का बना द्वार-मण्डप दिखाई पड रहा था जिसके नीचे लिखा था—'सन्तोष का मन्दिर', तीसरे चित्र में, लेटी हुई मुद्रा में, en raccourci, एक अर्द्ध नग्न स्त्री अकित थी। उसके घुटने लाल थे और एडिया खूब मोटी मोटी। मेरा कुत्ता, कल्पनातीत कोशिशो के बाद, सोफे के नीचे रेग गया था और, प्रत्यक्षत: वहा धूल का भारी अम्बार पाकर जोर जोर से छीके मार रहा था। मैं खिडकी के पास जा खडा हुआ। सडक के आर-पार आडे रुख में, सिरे से लेकर [illegible] तक, तख्ते बिछे थे। यह अच्छी व्यवस्था थी। क्योकि हमारी मशहूर काली मिट्टी और निरन्तर वर्षा के कारण कीचड बेहद था। [illegible] के पास, जो सडक की ओर पीठ किये थी, लोगो का आना-जाना बराबर जारी था, जैसा कि आम तौर पर होता है। [illegible] रही थी। [illegible]

हम्माम था, हाथ मे गितार लिये एक लडका बैठा था और कुछ आवेग के साथ सुपरिचित गीत गा रहा था—

छोडकर सुन्दर मनोरम यह जगह
जा रहा मैं आज रेगिस्तान को

मोटे-ताज़े आदमी ने कमरे में प्रवेश किया।

"आपके लिए चाय आ रही है," मृदु मुस्कराहट के साथ उसने मुझे बताया।

भूरे लम्बे कोटवाले युवक ने, उस मुशी ने जो ड्यूटी पर था, ताश खेलने की एक पुरानी मेज पर समोवार, चायदानी, टूटी हुई तश्तरी मे एक गिलास, मलाई से भरा एक जग, और चकमक पत्थर की भाति सख्त बोल्खोवो के छल्लेनुमा बिस्कुटो का एक गुच्छा रख दिया। मोटा-ताजा आदमी बाहर चला गया।

"यह कौन है?" मैंने मुशी से पूछा, "कारिन्दा तो नही?"

"नही, श्रीमान। वह बडा खजाची था, लेकिन अब उसे तरक्की मिली है और वह मीर-मुशी बन गया है।"

"तो क्या तुम्हारे यहा कार्यचालक कोई नही है?"

"नही, श्रीमान। एक कारिन्दा—मिखाइल विकूलोव तो है, लेकिन कार्यचालक कोई नही।"

"तो फिर ओवरसीयर है, क्यो?"

"हा। वह जर्मन है—लिडमाडोल, कार्लो कार्लिच। लेकिन वह जागीर का बन्दोबस्त नही करता।"

"तो फिर जागीर का कौन बन्दोवस्त करता है?"

"खुद हमारी मालकिन।"

"समझा। और खाता-घर मे क्या तुम बहुत-से आदमी काम करते हो?"

युवक कुछ सोच मे पड गया।

"हम छ है।"

"वे सब कौन है?" मैंने पूछा।

"सबसे पहले बडे खजाची को लीजिये। उसका नाम है वासीली निकोलायेविच। फिर प्योत्र है। वह मुशी है। प्योत्र का भाई इवान है। वह भी मुशी का काम करता है। एक दूसरा इवान है। वह भी मुशी है। इनके अलावा एक मुशी और है, कोन्स्तन्तीन नारकोजोव, और मैं तो आपके सामने ही हू—हमारी सख्या इतनी ज्यादा है कि आप गिनती नही कर सकते।"

"मै समझता हू कि तुम्हारी मालकिन के घर पर भी दासो की एक अच्छी-खासी फौज होगी?"

"नही, कुछ इतने ज्यादा तो नही कहे जा सकते "

"तो फिर कितने है?"

"यही कोई डेढ सौ के करीब होगे।"

कुछ देर हम दोनो चुप रहे।

"मै समझता हू कि तुम्हारे हाथ की लिखावट बहुत खूबसूरत होगी, क्यो?" मैंने फिर सिलसिला शुरू किया।

युवक की बत्तीसी इस कान से उस कान तक खिल गयी। और सिर हिलाकर वह खाता-घर में गया और लिखावट दिखाने के लिए एक कागज उठा लाया।

"यह देखिये मेरी लिखावट," उसने घोषित किया। उसके चेहरे पर अब भी वैसी ही मुस्कराहट खेल रही थी।

मैंने उसपर नजर डाली। बादामी रंग के कागज के एक चौकोर टुकडे पर, खूबसूरत और मोटी मोटी लिखावट में निम्न हुक्मनामा अंकित था—

हुक्मनामा नम्बर २०६
अनान्येवो गढी के मुख्य खाता-घर की तरफ से
कारिन्दे मिखाइल विकूलोव के नाम

'चूकि कल रात अनान्येवो के बाग मे किसी गुमनाम आदमी ने नशे की हालत मे प्रवेश किया, और वेहूदा गाने गाकर फ्रासीसी अध्यापिका मदाम एनजेनी को जगा दिया और यह कि उन चौकीदारो ने कुछ नही देखा था, जो बाग में निगरानी के लिए मौजूद थे और जिनके रहते यह गडबड हुई, ऊपर लिखे इन सब मामलो के बारे मे तुम्हे विस्तार के साथ जाच करने और फौरन खाता-घर मे रिपोर्ट करने का हुक्म दिया जाता है।

मीर-मुंशी, निकोलाई ख्वोस्तोव।'

इस हुक्मनामे पर एक भीमाकार खानदानी मुहर लगी थी। मुहर में निम्न शब्द अकित थे—'अनान्येवो गढी के मुख्य खाता-घर की मुहर', और नीचे दस्तखत बने थे—'पूरी तरह अमल किया जाय। येलेना लोसन्यकोवा।'

"तुम्हारी मालकिन ने खुद दस्तखत किये है, क्यो?" मैंने पूछा।

"बिल्कुल। वह हमेशा खुद दस्तखत करती है। इसके बिना हुक्मनामा बेकार होगा।"

"और इस हुक्मनामे को तुम अब कारिन्दे के पास भेज दोगे, क्यो?"

"नही, श्रीमान। वह खुद यहा आयेगा और इसे पढ लेगा। यानी यह कि उसे पढकर सुना दिया जायेगा। आप जानो, वह लिखा-पढा तो नही है।" (कुछ क्षणो के लिए मुशी फिर चुप हो गया।) "लेकिन यह तो बताइये," दात निपोरते हुए अन्त में उसने कहा, "लिखावट अच्छी है न?"

"बहुत अच्छी है।"

"लेकिन इसका मजमून, अगर सच पूछो तो, मेरा बनाया हुआ नही है। इस काम में कोन्स्तन्तीन का मुकावला कोई नही कर सकता।"

"यह क्या? क्या तुम्हारा मतलब है कि हुक्मनामो के पहले तुम लोग मजमून तैयार करते हो?"

"सो तो है ही। इसके सिवा और हो भी क्या सकता है। विना साफ मजमून तैयार किये उन्हे एकदम सीधे तो लिखा नही जा सकता।"

"और तुम्हे तनखाह क्या मिलती है?" मैने पूछा।

"पैंतीस रूवल, और पाच रूवल ऊपर से, जूतो के लिए।"

"और तुम इससे सन्तुष्ट हो?"

"वेशक मै सन्तुष्ट हू। हमारे जैसे खाता-घर में जगह पाना हर किसी के वस की वात थोडे ही है। मेरे मामले में तो, सच, भगवान की किरपा रही। मेरा एक चाचा है जो वटलर के ओहदे पर तैनात है।"

"और तुम्हारी मजे में गुजर हो जाती है?"

"हा, श्रीमान। लेकिन, अगर सच पूछो तो," एक उसास भरते हुए वह कहता गया, "हम जैसे लोगो के लिए तो, मिसाल की तौर पर, किसी सौदागर के यहा काम करना ज्यादा अच्छा है। सौदागर के यहा लोग ज्यादा मजे में रहते है। कल साझ वेन्योव से एक सौदागर यहा आया था, और उसका आदमी मुझसे वातें करने लगा   सच, सौदागर के यहा काम करना अच्छा है, इसमें शक नही, वहुत ही अच्छा।"

"क्यो? क्या सौदागर ज्यादा तनखाह देते है?"

"खुदा की पनाह! अरे नही, तनखाह का सवाल जरा उठाकर तो देखो, सौदागर तुम्हे तुरत गरदनिया देकर वाहर निकाल देगा। सो कुछ नही, सौदागर के यहा तो बस विश्वास और भय के भरोसे रहना पडता है। वह तुम्हे खाना देगा, कपडे देगा—सभी कुछ देगा। अगर तुम उसे सन्तुष्ट कर सके तो वह और भी ज्यादा करेगा   तनखाह की वात, वाह! उसकी जरूरत भी क्या है? और फिर सौदागर का रहन-सहन भी हमारी

भाति सीधा-सादा, रूसी ढग का होता है। तुम उसके साथ सफर पर आओ—वह चाय पीता है, और तुम्हे भी देता है जो वह खाता है, वही तुम खाते हो। सौदागर. सौदागर कुलीन लोगो से बिल्कुल भिन्न होता है। सौदागर सनकी नही होता। पारा गरम होने पर यह हो सकता है कि वह मार बैठे, लेकिन इसके बाद बात खत्म हो जाती है। वह न तो पीछे पडता है, न खिल्ली उडाता है। लेकिन कुलीन तो पूरी सासत कर देते है। उन्हे कोई चीज नही जचती—यह ठीक नही है, वह ठीक नही है। तुम उसे पानी का एक गिलास या खाने की कोई चीज लाकर देते हो। 'ऊह, पानी गधाता है! रकाबी से बदबू आती है!' तुम उसे वापिस लेकर वाहर चले जाते हो, दरवाजे से परे एकाध क्षण खडे रहते हो, और उसी को वापिस ले आते हो—'हा, अब यह ठीक है। अब यह नही गधाता।' और जहा तक उनकी औरतो का सबध है, उनसे तो बस हर चीज पनाह मागती मालूम होती है और युवती स्त्रियो से तो सबसे ज्यादा "

"फेद्युश्का!" खाता-घर मे से मोटे आदमी की आवाज आयी।

मुशी तेजी से चला गया। मैने चाय का एक गिलास पिया, सोफे पर लेट गया, और नीद ने मुझे घेर लिया। दो घटे तक मै सोया रहा।

आखे खुलने पर मैने उठना चाहा, लेकिन अलसाहट ने मुझे अभिभूत कर लिया। मैने अपनी आखे मूद ली, लेकिन फिर नीद नही आयी। पार्टीशन के दूसरी ओर खाता-घर में, कोई दबी आवाज में वाते कर रहे थे। अनजाने मै उनकी वाते सुनने लगा।

"ठीक, विल्कुल ठीक, निकोलाई येरेमेइच," एक आवाज़ कह रही थी, "विल्कुल ठीक, उसे ध्यान में रखे विना भला कैसे रहा जा सकता है। सच, विल्कुल ठीक ऊह!" (वक्ता ने खखारा।)

"मेरा यकीन करो, गावरीला अन्तोनिच," मोटे आदमी की आवाज़ सुनाई दी, "क्या मै नही जानता कि यहा का काम किस प्रकार चलता है? तुम खुद ही सोचकर देखो।"

"आप नही जानेंगे तो फिर कौन जानेगा, निकोलाई येरेमेइच? आप तो, सच पूछो तो, यहा की धुरी है, हा तो फिर कैसे किया जाय?" अनजानी आवाज कहती गयी, "निकोलाई येरेमेइच, इजाजत हो तो पूछू कि अब फैसला क्या होगा?"

"फैसला क्या, गावरीला अन्तोनिच? सच पूछो तो मामला खुद तुम पर निर्भर करता है। लेकिन तुम्हे कुछ ज्यादा चिन्ता हो तव न?"

"ओह नही, यह आप क्या कहते है, निकोलाई येरेमेइच? हमारा धधा ही व्यापार करना है—खरीदना। खरीद करना ही हमारा धधा है। इसी के सहारे, सच पूछो तो, हमारी रोजी चलती है, निकोलाई येरेमेइच।"

"आठ रूवल," मोटा आदमी आहिस्ता आहिस्ता बोला।

उसास भरने की आवाज सुनाई दी।

"निकोलाई येरेमेइच, यह तो आप भारी दाम माग रहे है।"

"असम्भव, गावरीला अन्तोनिच, अन्यथा नही हो सकता। खुदा गवाह है, यह नामुमकिन है!"

उसके वाद खामोशी छा गयी।

मै धीमे मे उठा, और पार्टीशन की एक दरार मे से झाककर देखा। मोटा आदमी मेरी ओर पीठ किये वैठा था। उसके सामने की ओर रुख किये एक सौदागर था। चालीस-एक साल का दुवला-पतला पीतवर्ण आदमी, ऐसा मालूम होता था जैसे उसे तेल से चिकनाया गया हो। उसकी उगलिया दाढी को निरन्तर खुजला रही थी, और वडी तेजी के साथ वह मिचमिचा तथा अपने होठो को फरफरा रहा था।

"इस साल नयी फसल खूव है—वल्कि कहना चाहिए कि वहुत अच्छी है," उसने फिर कहना शुरू किया, "देखकर तवीयत खुश हो गयी। वोरोनेज से लेकर समूचे विस्तार मे ही वढिया फसल हुई है, जैसा कि कहते है, औवल दर्जा की।"

"बेशक, फसल काफी अच्छी है," मीर-मुशी ने जवाब दिया, "लेकिन, गावरीला अन्तोनिच, यह कहावत तो आप जानते होगे – पतझड हुआ रवाना, वसन्त का क्या ठिकाना?"

"बेशक, है तो ऐसा ही, निकोलाई येरेमेइच। सब खुदा की मर्जी पर है। एकदम सच, वह जो आपने अभी कहा लेकिन शायद आपका मेहमान अब जाग गया हो।"

मोटा आदमी घूमा कान लगाकर सुना

"नही, वह सोया है। फिर भी कौन जाने "

वह दरवाजे तक आया।

"नही, वह सो रहा है," उसने दोहराया और फिर अपनी जगह पर लौट आया।

"हां तो, निकोलाई येरेमेइच, बोलो अब क्या कहते हो," सौदागर ने फिर कहना शुरू किया, "ऐसा सौदा ही क्या है। जल्दी से इससे तय कर डालना चाहिए। अच्छा तो ऐसा करो, निकोलाई येरेमेइच, ऐसा करो," वह कहता गया, निरन्तर मिचमिचाता हुआ, "दो भूरे और एक सफेद नोट आपकी सेवा मे हाजिर है, और वहा," (गढी की दिशा में सिर से इशारा करते हुए) "छ और एक अद्धा। क्यो, तय रहा न?"

"चार भूरे नोट," कारिन्दे ने जवाब दिया।

"अच्छा, तो तीन सही।"

"चार भूरे, सफेद का नाम न लो।"

"तीन, निकोलाई येरेमेइच।"

"तीन और एक अद्धा, इससे कौडी कम नही।"

"तीन, निकोलाई येरेमेइच।"

"यह तुम बेकार जिद्द कर रहे हो, गावरीला अन्तोनिच।"

"बाप रे, क्या खरदिमाग आदमी है यह," सौदागर बडबडाया। "तब तो खुद मालकिन से ही तय करना अच्छा होगा।"

"जैसी मर्जी," मोटे आदमी ने जवाब दिया, "यह बहुत अच्छा होगा, कही ज्यादा अच्छा होगा, मै कहता हू। बेकार यहा सिर क्यो खपाते हो? वही जाकर करो, कही ज्यादा अच्छा होगा, बेशक!"

"बस, बस, निकोलाई येरेमेइच! तुम अभी नाराज हो गये, क्यो? वह तो मै यो ही कह रहा था "

"यो ही कैसे, क्यो "

"कहता तो हू। बकवास थी वह सच, मै हसी कर रहा था। लो तुम्हारी ही बात रही। तीन और एक अद्धा ही सही, बस। तुम से पार पाना मुश्किल है।"

"मुझे चार पर हाथ मारना चाहिए था, लेकिन मैंने गधे की भाति जरूरत से ज्यादा जल्दबाजी की!" मोटा आदमी बुदबुदाया।

"तो वहा, गढी पर, छ और एक अद्धा, निकोलाई येरेमेइच। अनाज साढे छ के हिसाब से बेचा जायेगा।"

"साढे छ हम कह चुके है।"

"अच्छा तो पक्का रहा, अपना हाथ इधर लाओ," (सौदागर ने अपनी खुली हुई उगलियो को मुशी की हथेली मे सटा दिया) "खुदा का नाम लेकर।" (सौदागर उठ खडा हुआ।) "हा तो, निकोलाई येरेमेइच, श्रीमान, अब मै तुम्हारी मालकिन के पास चलू और नौकर से कहूगा कि मेरा नाम ऊपर भेज दे, और मालकिन से अर्ज करूगा—'निकोलाई येरेमेइच के साथ,' मै कहूगा, 'साढे छ के हिसाब से मेरा सौदा तय हो गया है।"

"ठीक, गावरीला अन्तोनिच, तुम्हे यही कहना चाहिए।"

"अच्छा तो अब लो।"

सौदागर ने मुशी को नोटो का एक छोटा-सा बण्डल थमा दिया, अभिवादन मे झुका, सिर हिलाया, दो उगलियो से पकडकर अपना हैट उठाया, अपने कधो को सिकोड़ा और हिलोर लेता हुआ बाहर चला

गया। उसके जूते चरमर की आवाज कर रहे थे। निकोलाई येरेमेइच दीवार तक गया और, जहा तक मै अन्दाज कर सका, सौदागर द्वारा दिये गये नोटो को छाटने लगा। तब लाल लाल बालो वाला एक सिर, घने गलमुच्छो से युक्त, कमरे के अन्दर झाका।

"कहो," उसने पूछा, "सब ठीक हुआ न?"

"हा।"

"कितना मिला?"

मोटे आदमी ने झुझलाकर हाथ हिलाया, और मेरे कमरे की ओर इशारा किया।

"ओह, समझा!" उस सिर ने जवाब मे कहा और ओझल हो गया।

मोटा आदमी मेज तक गया, बैठा, एक किताब खोली, गिनने का चौखटा निकाला, और गोलियो को इधर से उधर सरकाकर गिनने लगा। तर्जनी से नही, बल्कि दाहिने हाथ की तीसरी उगली से जो देखने मे ज्यादा रोबदार मालूम होती है।

मुशी ने भीतर प्रवेश किया।

"क्या है?"

"गोलोपल्योकी से सीदोर आया है।"

"ओह! उसे अन्दर भेज दो। लेकिन जरा ठहरो, थोडा रुको पहले जाकर यह देखो कि वह अजनबी कुलीन अभी सो रहा है या जाग गया।"

मुशी सावधानी से डग रखता मेरे कमरे में आया। मैंने अपना सिर शिकार के अपने थैले पर टिका दिया जिससे मै तकिये का काम ले रहा था, और अपनी आखें मूद ली।

"वह सोया है," खाता-घर मे लौटकर मुशी ने कहा।

मोटा आदमी जाने क्या बुदबुदाया। अन्त में बोला—

"अच्छा तो अब सीदोर को भेज दो।"

मै फिर उठ खडा हुआ। तीसेक वर्ष का एक किसान, देवो जैसा डील-डौल, भीतर आया। लाल भभूके गाल, देखने मे हृष्ट-पुष्ट, सुनहरे बाल और छोटी-सी घुघराली दाढी। उसने देव-प्रतिमा के सामने क्रॉस का चिन्ह बनाया, मीर-मुशी के आगे सिर झुकाया और दोनो हाथो से आगे की ओर अपनी टोपी को थामे सीधा-सतर खडा हो गया।

"अच्छे तो हो, सीदोर," गिनने के चौखटे की गोलियो को ठोकर देते हुए मोटे आदमी ने कहा।

"और आप तो अच्छी तरह है, निकोलाई येरेमेइच।"

"कहो, सडको का क्या हाल है?"

"काफी अच्छा है, निकोलाई येरेमेइच। थोडी कीचड ज़रूर है।" (किसान धीरे धीरे और धीमी आवाज में बोल रहा था।)

"घरवाली तो मजे मे है?"

"बिल्कुल ठीक है।"

किसान ने एक उसास छोडी और एक पाव आगे की ओर बढाया। निकोलाई येरेमेइच ने अपने कान के ऊपर कलम खोसकर नाक साफ की।

"हा तो कैसे आना हुआ?" अपने चारखाने रूमाल को जेब में रखते हुए उसने पूछना शुरु किया।

"यह क्या, निकोलाई येरेमेइच, कि वे हम से बढई माग रहे है?"

"तो क्या हुआ? तुम्हारे यहा बढई नही है, क्यो?"

"होने को नो है क्यो नही, निकोलाई येरेमेइच। हमारा गाव ही जगल के बीच बसा है, लकडी से ही हमारी रोज़ी है। इसमे शक नही। लेकिन, निकोलाई येरेमेइच, आजकल काम के दिन है। हम वक्त कहा से लायेगे?"

"काम के दिन है! वक्त कहा से आयेगा? गैरो के लिए काम करने को तो खूब उतावले रहते हो, लेकिन अपनी मालकिन के लिए काम करने की तुम्हे कोई परवाह नही। वह जैसे काम थोडे ही है।"

"काम तो वेशक है, निकोलाई येरेमेइच, लेकिन "

"लेकिन क्या?"

"पगार वहुत "

"यह और सुनो! तुम लोग विगड गये हो। असल वात यह है!"

"एक वात और, निकोलाई येरेमेइच। काम तो केवल सात दिन का होगा, लेकिन महीने-भर तक वे हमे लटकाये रखेंगे। कभी काफी मसाला नही मिलेगा, कभी वे हमें वाग की पगडडिया साफ करने भेज देंगे।"

"तो इससे क्या? खुद हमारी मालकिन ने यह हुकम जारी करने की किरपा की है। सो इसके वारे मे तुम्हारा और मेरा बाते करना वेकार है।"

सीदोर चुप हो गया, और एक पाव का वजन बदलकर दूसरे पर डालने लगा।

निकोलाई येरेमेइच ने अपना सिर एक वाजू झुका लिया और सरगर्मी के साथ गिनती की गोलियो से गिनने लगा।

"हमारे किसानो ने, निकोलाई येरेमेइच " सीदोर ने आखिर कहना शुरु किया, हर शब्द पर अटकते हुए, "आप के नाम एक सन्देसा भेजा है, मालिक देखिये यह रहा " (उसने अपना बडा हाथ कोट के भीतर डाला और लिनेन के एक तह किये हुए तौलिए को, जिसमे लाल कन्नी लगी थी, खीचकर वाहर निकालने लगा।)

"अरे, तुम्हारी मशा क्या है? भेजे मे कुछ दिमाग भी है या नही, बेवकूफ!" मोटे आदमी ने उतावली के साथ टोका, "जा, मेरे घर जा," सकपकाये हुए किसान को करीब करीब धकियाते हुए वह कहता गया, "वहा मेरी घरवाली होगी वह तुम्हारे लिए कुछ चाय तैयार कर देगी। मैं भी अभी वहा पहुचता हूं। जाओ, मैं कहता हू, खुदा के लिए जाओ!"

सीदोर चला गया।

"उफ! भालू कही का!" अपने सिर को हिलाते हुए मीर-मुशी उसके पीछे बुदबुदाया और फिर गिनने मे व्यस्त हो गया।

अचानक गली में और पैडियो पर "कूपरिया! कूपरिया! कूपरिया को कोई नही दवा सकता!" की चीख-चिल्लाहट सुनाई दी, और इसके थोडी देर बाद ही खाता-घर में रोगी जैसी शकल के एक नाटे आदमी ने प्रवेश किया। उसकी नाक असाधारण रूप में लम्बी थी और अपनी बडी बडी आखो से वह ताकता मालूम होता था। उसकी चाल-ढाल और अन्दाज़ से भारी अहम्मन्यता टपकती थी। वह एक पुराना खुरदरा-सा फ्रॉक-कोट पहने था जिसके गले पर मखमल लगी थी और छोटे छोटे बटन टके थे। अपने कधे पर वह लकडियो का एक गट्ठा लादे हुए था। पाच गृह-दास उसे चारो ओर से घेरे थे, और सब के सब चिल्ला रहे थे "कूपरिया! कूपरिया को कोई नही दबा सकता! कूपरिया भाड झोकनेवाला बन गया है, कूपरिया भाड झोकने लगा है!" लेकिन मखमली गलेवाला फ्रॉक-कोट पहने वह आदमी इन सगियो के शोर-शराबे की ओर जरा भी ध्यान नही दे रहा था और उसका चेहरा जरा भी विचलित नही मालूम होता था। नपे-तुले डगो से वह स्टोव के पास पहुचा, अपना वोझ नीचे पटककर अपनी कमर सीधी की, अपनी पीछे की जेब में से सुघनी की डिब्बी निकाली और अपनी आखो को गोल-मटोल बनाये, राख और सूखी तिपत्तियो के चूरे को चुटकी में लेकर सूघने लगा।

इस हल्ला मचाती मण्डली ने जब भीतर प्रवेश किया तब मोटे आदमी की भौहो ने पहले तो बल खाया, वह अपनी जगह से उठने को भी हुआ, लेकिन फिर यह देखकर कि मामला क्या है, वह मुस्कराया और केवल इतना कहा कि शोर मत मचाओ। "बराबरवाले कमरे में एक शिकारी सोया है।"

"शिकारी कैसा?" उनमे से दो ने एक आवाज़ में पूछा।

"कोई ज़मीदार है।"

"ओह!"

"बेशक हल्ला मचायें," अपने हाथो को फहराते हुए मखमली गलेवाले उस आदमी ने कहा, "मेरा क्या बिगड़ता है, जब तक वे मुझे हाथ नहीं लगाते। मुझे भाड झोकनेवाला बना दिया गया है "

"भाड झोकनेवाला, हा भाड झोकनेवाला!" दूसरो ने हसते हुए स्वर में स्वर मिलाया।

"जानते हो, यह मालकिन का हुकम है," अपने कधो को बिचकाते हुए वह कहता गया, "लेकिन जरा ठहरो सभव है तुम्हे सुअरो की देखरेख का काम दिया जाय। लेकिन मैं दर्जी रह चुका हू, सो भी बहुत अच्छा दर्जी, मास्को की सबसे बढिया दूकान मे मैंने अपना धधा सीखा, जेनरलो के कपडे मैंने सिये कोई माई का लाल मुझ से यह हुनर नही छीन सकता। और तुम तुम भला अपने को किस खेत की मूली समझते हो? काहिलो की औलाद, अपने मा-बाप का नाम डुबानेवाले, यह लो तुम! मुझे निकालोगे! मैं भूखा नही मरूगा। मैं मजे में रहूगा। मुझे पासपोर्ट दिलवा दो। मैं लगान भी खासा भेजता रहूगा, और मालिको को खुश कर दूगा। लेकिन तुम क्या करोगे? तुम मक्खियो की भाति मर जाओगे—यही करोगे तुम!"

"कैसा बढिया झूठ बोलते हो!" चेचक के दागवाले एक लडके ने बीच में ही कहा। उसके बाल और पलके सफेद थी, गले मे लाल नेकटाई डाले था और कोहनियो पर से उसका कोट कटा-फटा था। "गये तो थे बडे तम-तराक के साथ पासपोर्ट बनवाकर, लेकिन लगान एक फूटी कौडी का भी नही भेजा था, और न खुद अपने लिए ही एक कौडी कमा सके। गनीमत समझो जो तुम जैसे-तैसे घर लौटकर आ गये। कभी तुम्हारे बदन पर कोई नया कपडा दिखाई नही दिया।"

"अच्छा, अच्छा, लेकिन कोई करे भी क्या, कोन्स्तन्तीन नारकीजिच," कूपरिया ने जवाब दिया, "प्रेम ऐसी ही बला है आदमी उसमें फसा

नही कि गया। मुझपर जो बीती, उसमें से सभलकर निकलो, तब दोष देना।"

"और प्रेम में फसने के लिए भी तुमने अच्छी चीज चुनी—आदमी देखे तो डर जाय, एकदम भुतनी।"

"नही, तुम्हे ऐसी बात नही कहनी चाहिए, कोन्स्तन्तीन नारकीज़िच!"

"भला, कौन इस पर यकीन करेगा? तुम जानो, मैंने उसे देखा है। पिछले साल मास्को में खुद अपनी आखो से देखा है।"

"पिछले साल वह ज़रा ढचरा गयी थी," कूपरिया ने कहा।

"नही, भाइयो, सुनो मै तुम्हे एक बात बताता हू," एक लम्बे सीकिया आदमी ने कहा जिसका चेहरा मुहासो से भरा था। वह अपने घुघराले और खुशबूदार बालो के कारण अरदली जान पडता था। लापर्वाही के साथ और उपेक्षा भरे अन्दाज़ में कहने लगा, "कूपरिया अफानासिच हमें एक गीत गाकर सुनाइये। हा तो कूपरिया अफानासिच, झटपट शुरू कर दो।"

"हा, हा," औरो ने भी स्वर मे स्वर मिलाया, "शाबाश, अलेक्सान्द्रा! शाबाश, कूपरिया सच ज़रा लो तो सही अलाप, कूपरिया . वाह, अलेक्सान्द्रा, खूब सुझाया तुमने!" (गृह-दास लोग बहुधा प्यार जताने के लिए स्त्री-वाचक सम्बोधन इस्तेमाल करते ह।) "हा तो शुरू करो अपना गाना!"

"यह गाने की जगह नही है," कूपरिया ने दृढता से जवाब दिया, "यह गढी का खाता-घर है।"

"हुआ करे, तुमसे मतलब? तुम भी मुशी बनने की इच्छा अपने हृदय में सजोये हो, क्यो?" भद्दी हसी हसते हुए कोन्स्तन्तीन ने जवाब दिया, "बस-बस, यही बात है!"

"यह सब तो मालकिन के हाथो में है, चाहे जो करे!" निरीह अभागे ने कहा।

"तो देखा तुमने, इसके हौसलो की ऊचाई को! अपना मुह तो देखो!"

और वे सब ठहाका मारकर हसने लगे, कुछ तो हसी के मारे लोट-पोट हो गये। पन्द्रह साल का एक लडका सबसे ज्यादा जोरो से हस रहा था। गृह-दासो में भी रईस होते है। वह शायद उन्ही मे से किसी एक का साहबजादा था। तावे-कासे के बटन लगी वास्कट पहने था, गले में बैंगनी रग का गुलूबद डाले था और वास्कट से बाहर फूटा पडता था।

"अच्छा तो कूपरिया, अब झटपट कह डालो," निकोलाई येरेमेइच का जी प्रत्यक्षत गुदगुदा उठा था और तरग मे बह चला था, इतमीनान के साथ कहा, "सच सच बताओ, भाड झोकनेवाला बनना बुरा है? उसका कोई लाभ तो नही?"

"निकोलाई येरेमेइच," कूपरिया ने कहना शुरू किया, "हम लोगो के बीच तुम मीर-मुशी हो, इसमे शक नही। कोई इससे इन्कार नही कर सकता। लेकिन तुम जानो, खुद तुम भी धरती पर लोट चुके हो, और एक दिन था जब तुम किसान की झोपडी मे रहते थे।"

"जवान सभालके बोलो जी, मत भूलो कि किसके सामने बात कर रहे हो," मोटे आदमी ने बीच में ही चिढकर कहा, "तुम जैसे अकल के कोल्हू से मजाक करते है। तुम्हे, कुछ समझना और कृतज्ञ होना चाहिए कि हम तुम जैसे अकल के कोल्हू को नज़रन्दाज़ नही करते!"

"मेरे मुह से निकल गया, निकोलाई येरेमेइच। मै माफी चाहता हू"

"ऊह, मुह से निकल गया, वाह"

दरवाजा खुला और एक छोकरा नौकर भागा हुआ आया।

"निकोलाई येरेमेइच, तुम्हे मालकिन बुला रही है।"

"मालकिन के पास और कौन है?' उसने छोकरे से पूछा।

"अक्सीनिया निकीतिश्ना और वेन्योव का एक सौदागर।"

"अभी आया, इसी दम, और तुम, साथियो," समझाने के स्वर में उसने कहना जारी रखा, "अपने इस नये भाड झोकनेवाले को साथ लेकर यहा से चलते वनो। इसी में भला है। अगर कही जर्मन आ टपका तो पक्का समझो, वह शिकायत किये विना नही रहेगा!"

मोटे आदमी ने अपने वालो को सीधा किया, अपनी हथेली में खखारा जो उसके कोट की आस्तीन में करीब करीब पूर्णतया छिपी थी, बटन वद किये और लम्बे डग भरता हुआ मालकिन के सामने हाजिर होने के लिए चल दिया। उसके वाद ही, देखते-न-देखते समूची मण्डली भी मय कूपरिया के वाहर निकल गयी। मेरा पुराना मित्र, वह मुशी जो ड्यूटी पर था, अकेला रह गया। वह कलमो को ठीक-ठाक करने में लगा रहा, और इसके वाद अपनी कुर्सी में वैठा वैठा ऊघने लगा। कुछ मक्खियो ने तुरत इस मौके से फायदा उठाया और उसके मुह पर आकर वैठ गयी। एक मच्छर उसके माथे पर उतर आया और नियमित हरकत के साथ अपनी टागो को चौडा जमाते हुए, उसके गुदगुदे मास में धीरे से अपना डक गडा दिया। गलमुच्छो से युक्त वह लाल सिर फिर दरवाजे में प्रकट हुआ, भीतर झाका—एक वार, फिर दूसरी वार, और इसके वाद अपनी अपेक्षाकृत वदनुमा देह के साथ खाता-घर में चला आया।

"फेद्युश्का! ए, फेद्युश्का! हमेशा सोते रहते हो!" उसने कहा।

मुशी ने अपनी आखें खोली, और कुर्सी पर से उठ खडा हुआ।

"निकोलाई येरेमेइच मालकिन के पास गये है?"

"हा, वासीली निकोलायेविच।"

"ओह, ठीक," मैने मन में कहा, "तो यह है बडा खजाची।"

खजाची कमरे में इधर से उधर टहलने लगा। सच पूछो तो वह चल नही रहा था, वल्कि धरती पर घिसट रहा था। और देखने में

विल्ली की भाति मालूम होता था। काले रग का एक पुराना फ्रॉक-कोट उसके कधो मे लटका था जिसके पल्ले काफी छोटे थे। एक हाथ वह अपने सीने में खोंसे था और दूसरा उसके ऊचे कसे हुए, घोडे के वालो के वने गुलूवन्द से निरन्तर उलझ रहा था, और अपनी गरदन को वह मुश्किल से ही घुमा पाता था। नर्म चमडे के जूते पहने था जिनसे चीची की आवाज नही आती थी और वहुत ही धीमे धीमे पाव रख रहा था।

"जमीदार यागुश्किन आज तुम्हे पूछ रहा था," मुशी ने कहा।

"हू-ऊ, पूछ रहा था? क्या कहता था?"

"कहता था कि वह आज साझ त्युत्युरेव के यहा जा रहा है। सो तुम्हारी वाट देखेगा। कहता था, 'मुझे वासीली निकोलायेविच से कुछ काम की वाते करनी है,' लेकिन यह नही वताया कि वह काम क्या है। 'वासीली निकोलायेविच अपने-आप समझ जायेगा,' उसने कहा।"

"हू-ऊ!" वडे खजाची ने जवाव दिया और वह खिडकी के पास जा खडा हुआ।

"क्या निकोलाई येरेमेइच खाता-घर में मौजूद है?" ड्योढी में किसी की जोरदार आवाज सुनाई दी, और एक लम्वे आदमी ने चौखट के भीतर पाव रखा। वह प्रत्यक्षत झुझलाया हुआ मालूम होता था। उसका चेहरा-मोहरा वेढगा किन्तु स्थूल और प्रभावशील था। उसके कपडे अपेक्षाकृत साफ थे।

"यहा नही है?" चारो ओर तेजी से नजर डालते हुए उसने पूछा।

"निकोलाई येरेमेइच मालकिन के पास गये है," खजाची ने जवाव दिया, "कहो, पावेल आन्द्रेइच, क्या काम है। तुम मुझे वता सकते हो कहो, तुम क्या चाहते हो?"

"मै क्या चाहता हू? तुम जानना चाहते हो कि मै क्या चाहता हू?" (खजाची ने मरे-से अन्दाज मे सिर हिलाया।) "मै उसकी, उस मोटे थलथल चर्वी-चढे वदमाश की, अकल ठिकाने लगाना चाहता हूं।

लोगो के कान भरता है। सो मैं उसे और कान भरने के लिए कुछ मसाला देना चाहता हू।"

पावेल धम से एक कुर्सी में जा बैठा।

"अरे, यह तुम क्या कह रहे हो, पावेल आन्द्रेइच? अपने को ठडा करो तुम्हे शरम नही आती? तुम्हे इतना भी होश नही कि किसके बारे में तुम बात कर रहे हो?" खजाची ने हकलाते हुए कहा।

"ऊह, इतना भी होश नही कि किसके बारे में बाते कर रहा हू? मेरी बला से, भले ही वह मीर-मुशी बन गया हो। वाह, अच्छे आदमी को तरक्की दी उन्होने। क्या शक है इसमें। मानो, साग-भाजी की क्यारियो में बकरी को छुट्टा छोड दिया गया है!"

"बस, बस, पावेल आन्द्रेइच, बस! बन्द करो यह सब... क्या वाहियात बाते मुह से निकाल रहे हो?"

"लोमडी की औलाद ने चापलूसी करना शुरू कर दिया। अच्छी बात है, आने दो उसे," पावेल ने आवेग के साथ कहा और मेज पर ज़ोर से घूसा मारा। "ओह, यह लो, वह आ रहा है," खिडकी की ओर देखते हुए उसने फिर कहा, "शैतान को याद किया नही कि आ मौजूद हुआ। स्वागतम! स्वागतम!" (वह उठ खडा हुआ।)

निकोलाई येरेमेइच खाता-घर मे आ गया। उसका चेहरा सन्तोष से चमक रहा था। लेकिन पावेल आन्द्रेइच को देखकर वह कुछ सकपका सा गया।

"अच्छे हो, निकोलाई येरेमेइच," पावेल ने भेद भरे अन्दाज़ में कहा, खुद उसे मिलने के लिए आगे बढते हुए।

मीर-मुशी ने कोई जवाब नही दिया। तभी दरवाजे में सौदागर का चेहरा नमूदार हुआ।

"अरे यह क्या, मुझे जवाब देने की भी किरपा नही करोगे क्या?"

पावेल कहता गया, "लेकिन नही   नही," उसने फिर कहा, "सो नही। चिल्लाने और कोसने से कुछ नही बनेगा। हा, तो तुम्हे, निकोलाई येरेमेइच, एक मित्र की भाति मुझे बताना चाहिए कि तुम क्यो मेरी जान सासत में किये हो? क्यो तुम मुझे तहस-नहस करने पर तुले हो? हा, तो बोलो, मुझे बताओ।"

"समझाने-बुझाने के लिए यह कोई माकूल जगह नही है," मीर-मुशी ने थोडा उद्वेलित होते हुए कहा, "न ही इसके लिए यह कोई माकूल समय है। लेकिन यह मैं जरूर कहूगा कि तुम्हारी एक बात सुनकर मुझे अचरज हुआ। तुमने यह कैसे समझ लिया कि मैं तुम्हे तहस-नहस करना या तुम्हारी जान सासत मे रखना चाहता हू? मे तुम्हे परेशान कैसे कर सकता हू? तुम मेरे खाता-घर में तो हो नही।"

"परमात्मा न करे कि ऐसा हो," पावेल ने जवाब दिया, "तव तो आसमान ही फट पडेगा। लेकिन, निकोलाई येरेमेइच, यह सव छल क्यो करते हो? तुम्हे सब मालूम है मै क्या कह रहा हू।"

"नही, मैं नही समझता।"

"बेशक, तुम समझते हो।"

"नही, भगवान साक्षी है, मै नही समझता।"

"ओह, भगवान को भी खीच लाये! अच्छी वात हे। जव इसी पर उतर आये तो यह बताओ, क्या तुम्हे खुदा से डर नहीं लगता? उस बेचारी लडकी को तुम चैन की सास क्यो नही लेने देते? आखिर तुम उससे चाहते क्या हो?"

"अरे, यह किसकी वात करने लगे?" मोटे आदमी ने बनावटी अचरज से पूछा।

"ओह, जैसे जानते ही नही। मै तत्याना की वात कर रहा हू। खुदा से कुछ तो डरो, आखिर किस चीज का बदला निकालना चाहते हो? तुम्हे शर्म आनी चाहिए, तुम जैसे शादी-शुदा आदमी को, जिसके

बच्चे मेरे कद-चुत के हैं। मेरी बात दूसरी है मेरी मन्शा है विवाह–मैं कोई धोखे का खेल नही खेल रहा।"

"इसमें मेरा क्या दोष है, पावेल आन्द्रेइच? मालकिन तुम्हे विवाह करने की इजाजत नही देती। मालिक होने के नाते यह उनका फरमान है। इससे भला मेरा क्या वास्ता?"

"वास्ता क्यो नही? क्या तुम उस चुडैल, भण्डारिन से साठ-गाठ नही करते रहे? क्या तुमने कान नही भरे? बोलो, उस निहत्थी लडकी के खिलाफ क्या तुमने तरह तरह की कहानिया नही गढी? क्या मैं यह मान लू कि कपडे धोनेवाली के पद से गिराकर कोठरी में बरतन माजनेवाली बनाने में तुम्हारा कोई हाथ नही है? और उसे जो यह पीटा जाता है तथा टाट के कपडे पहनने को दिये जाते हैं, सो यह सब भी अपने-आप हो रहा है–बिना तुम्हारे इशारे के? तुम्हे शर्म आनी चाहिए, तुम्हे शर्म आनी चाहिए–तुम जैसे बडे-बूढे आदमी को! तुम जानते हो कि किसी घडी भी तुम्हे लकवा मार सकता है खुदा के सामने तुम्हें जवाब देना है।"

"तुम तो गाली-गुफ्तार करने लगे, पावेल आन्द्रेइच, तुम गाली-गुफ्तार पर उतर आये। लेकिन बस, अब और ज्यादा बदजुबानी करने का मौका तुम्हे नही मिलेगा!"

पावेल आग बबूला हो गया।

"क्या कहा? तुम्हारा यह साहस कि मुझे धमकी दो!" उसने आवेग के साथ कहा, "यह न समझना कि मैं तुमसे डरता हू। नही, भाई, मैं अभी उस हालत को नही पहुचा। मैं क्यो डरू? जहा भी जाऊगा, अपनी रोटी पैदा कर लूगा। लेकिन तुम तुम्हारी बात दूसरी है। तुम्हारे लिए केवल यही एक ठौर है। यहा रहकर ही तुम लनतरानिया हाक सकते हो और माल मार सकते हो "

"अरे बाप रे, इतना घमड!" मुशी ने बीच में ही कहा, जिसके

सब्र का बांध भी अब टूट चला था, "और इसकी हैसियत क्या है—दवाखाने का सहायक केवल दवाखाने का चाकर—नालायक हकीम! और इसकी बाते सुनो—आक्थू! तीस मारखा बनता है!"

"हा, दवाखाने का सहायक और इस दवाखाने के सहायक की बदौलत ही तुम यहा दिखाई पड रहे हो, नही तो कब्र मे पडे सड रहे होते। जरूर शैतान ने मुझसे तुम्हारा इलाज करवाया," दात पीसते हुए उसने कहा।

"तुमने मेरा इलाज किया? नही, तुमने मुझे जहर देने की कोशिश की, तुम मुझे मुसब्बर घोल घोलकर पिलाते रहे," मुशी ने कहा।

"मुसब्बर के सिवा तुम्हे कुछ लगे ही नही तो मै क्या करू?"

"मुसब्बर के इस्तेमाल पर महकमा-सेहत ने मनाही कर रखी है," मुशी कहता गया, "देखते जाओ, तुम्हारे खिलाफ मैं शिकायत करूगा तुमने मुझे मार डालने की कोशिश की, हा, तुमने यही किया। लेकिन भगवान को यह मजूर नही था।"

"चुप भी करो अब, बहुत हो लिया," खजाची ने कहना शुरू किया।

"बीच मे टाग न अडाओ!" मुशी चिल्लाया, "इसने मुझे ज़हर देने की कोशिश की! आया समझ मे?"

"मुझे क्या फायदा? लेकिन सुनो, निकोलाई येरेमेइच," हताश स्वरो में पावेल ने कहना शुरू किया, "मै तुम से विनती करता हू। आखिरी बार तुमने ही मुझे इस पर मजबूर किया—मेरी बरदाश्त से बाहर है यह। हमे तुम अकेला छोड़ दो, सुन रहे हो न? नही तो, खुदा जानता है, हम तुम में से किसी न किसी के साथ बुरी बीतेगी।'

मोटा आदमी गुस्से से भभक उठा।

"मै तुमसे नही डरता," उसने चिल्लाकर कहा, "सुना, तुमने! तुम्हारे बाप को मैं सीधा कर चुका हू। मैंने उनके सीग तोड डाले। तुम्हे भी मै कहे देता हू, सभलकर चलना!"

"मरे वाप को न घसीटो, निकोलाई येरेमेइच!"

"वाह, खूव कही! मुझे आदेश देनेवाले तुम कौन?"

"मैं कहता हू, उसका नाम न लो!"

"और मैं कहता हू, तुम अपनी असलियत को न भूलो। तुम अपने-आपको चाहे जितना वडा समझते हो, लेकिन अगर मालकिन को हम दोनो में से किसी एक को चुनना पडे तो वह तुम्हे नही रखेगी, मेरे मुनुवा! वलवा करने की यहा किसी को इजाजत नही है, समझे!" (पावेल गुस्से से थरथरा रहा था।) "और जहा तक उस छिनाल तत्याना का सवध है, वह इसी लायक है जरा देखते जाओ, अभी तो उसकी और भी दुर्गत होना वाकी है।"

अपनी मुट्ठियो को ऊचा ताने पावेल तेजी से झपटा, और मुशी धम्म से फर्श पर लुढक गया।

"हथकडी लगा दो इसे, हथकडी लगा दो," निकोलाई येरेमेइच कराहता हुआ वोला।

इस दृश्य के अन्त का वर्णन मैं नही करूगा। मुझे लगता है कि पाठको की कोमल भावनाओ को ऐसे ही मैं काफी चोट पहुचा चुका हू।

मैं उसी दिन घर लौट आया। एक सप्ताह वाद मैंने सुना कि श्रीमती लोसन्यकोवा पावेल और निकोलाई दोनो को अपनी सेवा में रखे है, लेकिन तत्याना को उसने दूर भेज दिया है। तागा जैसे वही फालतू थी।

बियूंक

एक साझ की बात है। बग्घी मे मै बैठा अकेला शिकार से लौट रहा था। घर अभी लगभग छ मील दूर था। मेरी बढिया दुलकी घोडी अपने कानो को खडा किये और नथुनो से जब-तब फुकारती हुई धूल भरी कच्ची सडक पर सरपट दौड रही थी, थकान से चूर मेरा कुत्ता पिछले पहियो से सटा साथ साथ आ रहा था, लगता था जैसे उसे वहा चसपा कर दिया गया हो। तूफान के आसार नजर आ रहे थे। सामने, जगल की ओट में से, एक रक्तवर्ण भीमाकार तूफानी बादल धीरे धीरे उभर रहा था, बारिश के लम्बे धुधले बादल सिर के ऊपर से गुजर रहे थे जैसे मुझसे मिलने आ रहे हो। बेंत के पेड साय-साय कर रहे थे। दमघोट गर्मी अचानक नमदार ठण्ड में बदल गयी थी और अधेरा तेजी से गहरा हो रहा था। मैंने घोडी की पीठ पर रासो से चाबुक मारी, एक गहरे ढलुवान पर से उतरा, एक सूखे नाले को पार किया जिसमे छोटी छोटी झाडिया उग रही थी, पहाडी पर चढा और जगल में दाखिल हुआ। सडक सामने फैली थी, अखरोट की घनी झाडियो के बीच डुबकी लगाती, और अब अधेरे मे लिपटी। मै धीरे धीरे बढ रहा था। बलूत और लीपा के पुराने पेडो की सख्त जडो से टकराकर—जो पहियो की गहरी लीको में निरन्तर अपने पजे फैलाये थी—बग्घी उछल और गिर रही थी और घोडी ने ठोकरे खाना शुरू कर दिया था। अचानक भयानक अधड सिर के ऊपर चीखने-चिघाडने लगा, पेडो ने कोलाहल शुरू कर दिया, बारिश

की बडी बडी बूदें पत्तों पर एकदम टपाटप तथा छपछपाहट के साथ गिरने लगी, बिजली कौंधी और बादल गडगडा उठे। धुआधार बारिश बरसने लगी। मैंने पैदल चाल से बढना शुरू किया, लेकिन शीघ्र ही रुक जाना पडा। मेरी घोडी लडखडा गयी। सामने हाथ को हाथ सुझाई नही देता था। जैसे-तैसे एक फैली हुई झाडी की मैंने शरण ली। गुडमुडी-सा बना और अपने चेहरे को ढके, चुपचाप मै तूफान के थमने की प्रतीक्षा करने लगा। तभी, अचानक, बिजली की कौंध मे सडक पर एक लम्बी आकृति मुझे दिखाई दी। मै आखे गडाये उधर ही ताकता रहा, और एक बार फिर मेरी बग्घी के निकट, वह आकृति जैसे धरती फोडकर प्रकट होती मालूम हुई।

"ए, कौन है उधर?" गूजती आवाज में किसी ने पूछा।

"और तुम—तुम कौन हो?"

"मै यहा इस जगल का पहरुवा हू।"

मैंने अपना नाम बताया।

"ओह, मै जानता हू। क्या आप अपने घर जा रहे है?"

"हा, लेकिन तुम जानो, इस अधड-पानी मे "

"हा, अधड-पानी तो है," आवाज ने जवाब दिया।

बिजली की एक पीतवर्ण कौंध ने पहरुवे को सिर से लेकर पाव तक आलोकित कर दिया, इसके तुरत बाद ही बिजली कडकने की एक सक्षिप्त गरज सुनाई दी। बारिश दूने जोर से छपाके मारने लगी।

"और यह अभी खत्म होता नजर नही आता," पहरुआ कहता गया।

"तो क्या करे!"

"चाहे तो मै आपको अपनी झोपडी मे ले चल सकता हू,"

एकाएक उसने कहा।

"यह तो बहुत बडी कृपा होगी।"

"तो गाडी मे बैठिये।"

वह घोडी के सिर के पास आ गया, उसकी लगाम पकडी और खीचकर उसे सीधा खडा कर दिया। हम चल पडे। मैं बग्घी की गद्दी से चिपक गया जो 'सागर में नाव' की भाति धचकोले खा रही थी और अपने कुत्ते को पुकारा। मेरी घोडी—बुरा हाल था उसका—बडी मुश्किल से कीचड मे लथपथ चल रही थी, फिसलती और ठोकरे खाती हुई। पहरुवा बमो के आगे, कभी दाहिने तो कभी बाए, भूत की भाति मडरा रहा था। काफी देर तक हम चलते रहे। आखिर हमारा पथ-प्रदर्शक रुका। "यह लीजिये श्रीमान, हम घर आ पहुचे," उसने शात आवाज़ में कहा। दरवाजा चरचराया, कुछ पिल्लो ने भौककर हमारी अगुवानी की। मैंने अपना सिर उठाया और मुझे बिजली की कौध मे बडे-से अहाते के बीच जो बेत वृक्षो के वाडे से घिरा था, एक छोटी झोपडी दिखाई दी। एक छोटी-सी खिडकी मे से धुधली रोशनी आ रही थी। पहरुवा घोडी को पैडियो तक ले गया और उसने दरवाज़ा खटखटाया। "आयी, आयी!" की पैनी आवाज और नगे पावो की चाप हमें सुनाई दी। ताला खटका और बारह-एक वर्ष की एक लडकी, छोटा-सा झगला पहने जिसपर कमरबन्द कसा था, हाथ में लालटेन लटकाये दरवाजे पर आ खडी हुई।

"हुजूर को जरा रोशनी तो दिखा," उसने लडकी से कहा। फिर मुझ से बोला, "मैं आपकी बग्घी छप्पर के नीचे खडी किये देता हू।"

लडकी ने मेरी ओर देखा और झोपडी के भीतर चली गयी। मैं भी उसके साथ हो लिया।

पहरुवे की झोपडी में केवल एक कोठा था—धुवे से भरा, नीचे को धसा, और सूना, पार्टीशन या तन्दूर पर सोने के स्थान से वचित। दीवार पर भेड की खाल का चियडा कोट लटका था। बेंच पर एक इकनली बन्दूक पडी थी, कोने में चियडो का ढेर लगा था और तन्दूर के पास दो बडे बडे मटके रखे थे। मेज पर एक लपनी धीमे धीमे जल रही थी।

कभी उसकी लौ तेज़ हो जाती थी और कभी एकदम मन्द। झोंपडी के ठीक बीचोबीच आडे लम्बे बास के छोर से एक पालना लटका था। लड़की ने लालटेन बुझा दी, एक छोटे-से स्टूल पर बैठ गयी और दाहिने हाथ से पालना झुलाने लगी। साथ ही, बाए हाथ से, जलती हुई खपची को भी ठीक करती जाती थी। मैंने अपने इर्द-गिर्द देखा—और मेरा हृदय भीतर ही भीतर बैठने लगा। किसान की झोपड़ी में रात के वक्त जाने से मन खुश नही होता। पालने मे पडा बच्चा तेज़ गति से सास ले रहा था।

"क्या यहां तुम एकदम अकेली रहती हो?" मैंने लडकी से पूछा।

"हा," उसने कहा। उसकी आवाज़ मुश्किल से सुनाई पड रही थी।

"तुम पहरुवे की लडकी हो न?"

"हा," वह फुसफुसायी।

दरवाज़ा चरचराया और पहरुवे ने, अपना सिर नीचा करते हुए, चौखट के भीतर पाव रखा। उसने लालटेन को फर्श पर से उठाया, मेज़ के पास गया, और मोमबत्ती जलायी।

"खपची की रोशनी के आप भला क्या आदी होगे। क्यो, ठीक है न?" उसने कहा और सिर झटककर अपने घुघराले बालो को पीछे कर लिया।

मैंने उसपर नज़र डाली। ऐसी वीर आकृति को देखने का सौभाग्य विरले ही मुझे प्राप्त हुआ होगा। लम्बा कद, चौडे कधे, अद्भुत काठी—एक एक अग जैसे साचे में ढला हुआ। उसके सबल पुट्ठे घर की कती-बुनी और भीगी हुई कमीज़ को चीरकर जैसे बाहर निकले पडते थे। उसका कडा और मरदाना चेहरा काली घुघराली दाढी से आधा ढका था। उसकी भौहे खूब चौडी और बीच मे एक-दूसरे से मिली थी। उनके

नीचे से उसकी छोटी छोटी भूरी आखें निर्द्वन्द्व झांक रही थी। वह मेरे सामने खडा था, अपनी बाहो को बगल में दाबे हुए।

मैंने उसका शुक्रिया अदा किया और नाम पूछा।

"मेरा नाम फोमा है," उसने जवाब दिया, "यो लोग मुझे विर्यूक * कहते हैं।"

"ओह, तो तुम्ही बिर्यूक हो!"

मैंने और भी दूनी उत्सुकता से उसकी ओर देखा। अपने येरमोलाई तथा अन्य कितने ही लोगो से जगल के पहरुवा विर्यूक के बारे में अक्सर किस्से सुन चुका था। आसपास के जिलो के किसान उससे इतना ही डरते थे जितना कि आग से। उनके कथनानुसार उस जैसा अपने काम का धनी दुनिया में दूसरा नही होगा। "क्या मजाल जो तुम एक तिनका भी जगल से उठा सको। चाहे जो भी समय हो—आधी रात ही क्यो न हो—वह तुम पर टूटकर गिरेगा और उसका मुकाविला करने की बात तो सोची ही नही जा सकती—वह मजबूत और शैतान की भाति चतुर है .. और उसे किसी तरह अपने वस मे नही किया जा सकता, न शराब से और न धन से, कोई लासा ऐसा नही है जिसमें उसे फसाया जा सके। कई बार लोगो ने उसका सफाया करना चाहा, लेकिन नही—कोई भी तरकीब कारगर नही हुई।"

विर्यूक के बारे में आसपास के सभी किसान यही कहते थे।

"सो तुम्ही विर्यूक हो," मैंने दोहराया, "मैंने तुम्हारी चर्चा सुनी है, भाई। लोग कहते हैं कि तुम किसी पर रहम नहीं करते।"

"मैं अपना फर्ज पूरा करता हूं," उसने गम्भीर भाव से जवाब दिया, "मालिक की रोटी निठल्ले बैठकर खाना ठीक नहीं है।"

---

*ओरेल प्रात में एकाकी उदास आदमी को विर्यूक नाम से पुकारा जाता है।

उसने अपनी पेटी में से एक कुल्हाडी निकाली और खपचियां चीरने लगा।

"क्या तुम्हारी घरवाली नही है?" मैंने उससे पूछा।

"नही," उसने जवाब दिया, आवेग के साथ अपनी कुल्हाडी को चलाते हुए।

"मर गयी, शायद?"

"नही हा हा, मर गयी," उसने कहा और मुह दूसरी ओर फेर लिया।

मैं चुप हो गया। उसने आखे उठाकर मेरी ओर देखा।

"वह शहर के एक आदमी के साथ भाग गयी जो इधर से गुजर रहा था," कटु मुस्कराहट के साथ उसने कहा। लडकी ने अपना सिर लटका लिया। बच्चा जाग गया और रोने लगा। लडकी पालने के पास गयी। "यह लो, इसे पिला दो," दूध की एक गदी-सी बोतल उसके हाथ में देते हुए बिर्यूक ने कहा, और बच्चे की ओर इशारा करते हुए दबे स्वर में बोला—"इसे भी छोड गयी।" वह दरवाजे के पास पहुचा, रुका और घूमकर मुड गया।

"मालिक," उसने कहना शुरू किया, "आपको भला हमारी रोटी क्या रुचेगी, और सिवा रोटी के घर में "

"मुझे भूख नही है।"

"सो तो आप जाने। मैं समोवार ही गरमा देता, लेकिन घर में चाय की पत्ती नही है जाकर देखता हू, आपकी घोडी का क्या हाल है।"

वह दरवाजे को पट से बद करता बाहर चला गया। मैंने फिर अपने इर्द-गिर्द देखा। झोपडी मुझे अब और भी ज्यादा उदास मालूम हुई। बासी धुवे की तीखी गध बडे अनचीते रूप में दम घोट रही थी। छोटी लडकी बिना हिले-डुले अपनी जगह पर बैठी थी। उसने अपनी आखें नही उठायी। रह रहकर वह पालने को झकोला देती और अपने

फिसलते हुए झगले को सहमे-से अन्दाज में खीचकर कधो पर कर लेती। उसकी उघडी हुई टागे निश्चल लटक रही थी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" मैने उससे पूछा।

"उलीता," उसने कहा, और उदासी मे डूबा उसका छोटा-सा चेहरा और भी ज्यादा झुक गया।

पहरुवा भीतर आया और वेच पर आकर वैठ गया।

"अधड खत्म हो रहा है," सक्षिप्त मौन के वाद उसने कहा, "इच्छा हो तो चलिये, मै जगल से वाहर तक आपको छोड आऊ।"

मै उठ खडा हुआ। वियूंक ने अपनी वदूक उठायी और उसको हरखा-परखा।

"यह किस लिए?" मैने पूछा।

"जगल मे गडवड है घाटी में कोई पेड काट रहा है," मेरी जिज्ञासापूर्ण मुद्रा को देखते हुए उसने कहा।

"क्या तुम्हे यहा सुनाई दे रहा है?"

"नही, वाहर सुनाई देता था।"

हम दोनो एक साथ वाहर निकले। बारिश बन्द हो गयी थी। तूफानी वादलो के भारी दल अभी भी आकाश के छोर पर जमा थे। रह रहकर बिजली की लम्वी वर्छिया कौंध जाती थी। लेकिन ऊपर जहा-तहा गहरा नीला आकाश दिखाई देने लगा था। तेजी से लपकते वादलो को वेधकर कही कही तारे टिमटिमा रहे थे। बारिश मे भीगे और हवा द्वारा झकझोरे हुए पेडो पर से अधेरे का आवरण उतरने लगा था। हमने सुनने की कोशिश की। पहरुवे ने अपनी टोपी उतारी और सिर झुका लिया—"उधर " अचानक उसने कहा, और उसने अपना हाथ फैलाया, "देखो न, इस काम के लिए कैसी रात उसने चुनी है!" पत्तो की सरसराहट के सिवा मुझे और कुछ सुनाई नही दे रहा था। वियूंक छप्पर के नीचे से घोडी बाहर निकाल लाया और बोला—"नही तो पकडाई नही देगा।"

"अगर ऐतराज न हो तो मैं भी तुम्हारे साथ चलू?" —"बेशक," उसने जवाब दिया, और उसने घोडी को फिर पीछे कर दिया। "अभी मिनटो में हम उसे पकड लेगे, और इसके बाद मैं आपको लिवा ले चलूगा। चलिये, अब चले।"

हम चल पडे, विर्यूक आगे आगे और मैं उसके पीछे। खुदा ही जानता है, कि अपनी राह की कैसे वह टोह लेता था। केवल एक या दो बार ही वह ठिठका होगा, सो भी केवल कुल्हाडी की चोटो की टोह लेने के लिए। "उधर," वह बुदबुदाया, "आपको कुछ सुनाई देता है? सुन रहे है कुछ?"—"नही तो, किधर?" विर्यूक ने अपने कधे बिचकाये। हम घाटी में उतरे। हवा क्षण-भर के लिए थिर हो गयी। कुल्हाडी की चोटो की समध्वनि मुझे अब साफ सुनाई दी। विर्यूक ने मेरी ओर देखा और अपना सिर हिलाया। भीगी हुई घास के बीच से हम आगे बढे। एक धीमे धुधले धमाके की आवाज सुनाई दी

"पेड कट गया," विर्यूक ने बुदबुदाकर कहा।

इस बीच आकाश अधिकाधिक साफ हो गया था। जगल में धुधला उजाला फैल गया था। आखिर हम घाटी से बाहर निकल आये।

"यहा कुछ देर ठहरिये," पहरुवे ने मुझ से फुसफुसाकर कहा। वह नीचे झुका, और अपनी बन्दूक को सिर के ऊपर ऊचा उठाये झाडियो में ओझल हो गया। मैं व्यग्र भाव से सुनने लगा। मेरी नसे तन गयी। हवा की निरन्तर गरज को पारकर कुछ धुधली आवाजें पास ही मुझे सुनाई दी। टहनियो पर कुल्हाडी का सतर्क आघात, पहियो की गडगडाहट, घोडे के नथुनो की फरफराहट.

"ए, कहा भागे जाते हो? ठहरो!" अचानक विर्यूक की आवाज गरज उठी। एक दूसरी आवाज, फदे मे फसे खरगोश की दयनीय चिचियाहट की भाति, सुनाई दी कशमकश शुरू हो गयी।

"नही, सो नही होगा," बिर्यूक ने हाफते हुए कहा। "तुम बचकर नही भाग सकते "

मैं आवाज़ की दिशा मे लपका, और दौडता हुआ लडाई की जगह पहुचा, कदम कदम पर ठोकर खाते हुए। धरती पर एक पेड कटा पडा था, और उसके पास ही बिर्यूक चोर को जोरो से दबोचे था और उसके हाथो को पेटी से उसकी पीठ के पीछे जकड रहा था। मैं खिसककर और नज़दीक आ गया। बिर्यूक उठा और उसने उसे भी अपने पावो पर खडा किया। मैंने उसकी ओर देखा। वह एक किसान था, बारिश में भीगा, चिथडो में लिपटा, अस्तव्यस्त-सी लम्बी दाढी। पास मे ही एक मरियल-सी नाटी घोडी, कठोर-सी चटाई से आधी ढकी, एक अनगढ-सी गाडी के साथ, खडी थी। पहरुआ एक शब्द भी अब मुह से नही निकाल रहा था, किसान भी चुप था और उसका सिर हिल रहा था।

"इसे छोड दो," मैंने बिर्यूक के कान में फुसफुसाकर कहा, "पेड का पैसा मै दे दूगा।"

बिना कुछ कहे अपने बाए हाथ से बिर्यूक ने घोडे की अयाल थामी, दाहिने हाथ से चोर को उसकी पेटी से पकडा। "चूहे की दुम, अब इधर को रुख़ करो!" उसने क्रूर आवाज में कहा। "मेरी वह कुल्हाडी, उसे तो उठा लो," किसान बुदबुदाया। "बेशक, इसे क्यो छोडा जाय," पहरुवे ने कहा और कुल्हाडी को उठा लिया। हम चल पडे। मैं पीछे पीछे चल रहा था. बारिश की बौछार फिर पड़नी शुरू हो गयी, और शीघ्र ही धुआधार हो उठी। मुश्किल से रास्ता बनाते हम झोपडी तक पहुचे। घोडे को बिर्यूक ने अहाते के बीच में खदेड दिया, किसान को कोठडी में ले आया, पेटी की गांठ ढीली की और उसे एक कोने में बैठा दिया। छोटी लडकी जो तन्दूर से लगी सो गयी थी, उछलकर उठ खडी हुई और भय से मौन हमारी ओर ताकने लगी। मैं बेंच पर बैठ गया।

"कितनी तेज़ बारिश है," पहरुवे ने टिप्पणी कसी, "इसके थमने तक आपको रुकना पड़ेगा। थोडी देर लेट जाइये।"

"शुक्रिया।"

"आपके आराम के लिए मैं इसे ड्योढी में बद कर देता," किसान की ओर इशारा करते हुए वह कहता गया, "लेकिन देखिये, कुडी लगी है "

"इसे यही रहने दो। इसे हाथ न लगाना," मैंने बीच में ही कहा।

किसान ने अपनी भौंहो के नीचे छिपी आखो से मेरी ओर देखा। मैंने मन ही मन तय किया चाहे जो हो, इसे छुडाकर रहूगा। वह बेंच पर निश्चल बैठा था। लालटेन की रोशनी में मैं अब उसका घिसा-पिटा झुरियोदार चेहरा, नीचे तक लटकी उसकी पीली भौंहे, उसकी बेचैन आखे और क्षीण अग देख सकता था छोटी लडकी फर्श पर, ठीक उसके पावो के पास लेट गयी और फिर सो गयी। बिर्यूक मेज पर बैठा था। अपना सिर वह हाथो में थामे था। कोने में एक टिड्डा ची-ची कर रहा था . छत पर बारिश टपाटप गिर रही थी और खिडकियो पर से बहकर नीचे आ रही थी। हम सब चुप बैठे थे।

"फोमा कुज़मीच," अचानक किसान ने मोटी टूटी हुई आवाज़ में कहा, "फोमा कुजमीच।"

"क्या है?"

"मुझे जाने दो।"

बिर्यूक ने कोई जवाब नही दिया।

"मुझे जाने दो भूख ने मुझ से यह करवाया मुझे जाने दो।"

"मैं तुम्हे जानता हू," पहरुवे ने उदास आवाज में पलटकर जवाब दिया, "तुम सब के सब एक-से हो—सब के सब चोर!"

"मुझे जाने दो," किसान ने दोहराया, "हमारा कारिन्दा हम बरबाद हो गये बरबाद हो गये मुझे जाने दो!"

"बरबाद हो गये—वाह, चोरी करना मना है।"

"मुझे जाने दो, फोमा कुज़मीच मुझे बरबाद न करो। तुम्हारा कारिन्दा, तुम खुद जानते हो, ज़रा रहम नही करेगा। सच, बिल्कुल रहम नही करेगा।"

विर्यूक ने मुह फेर लिया। किसान इस तरह काप रहा था जैसे उसे जूडी चढी हो। उसका सिर हिल रहा था और वह हाफ हाफकर सास ले रहा था।

"मुझे जाने दो," उदासी भरी निराश आवाज़ मे उसने कहा, "मुझे जाने दो, खुदा के लिए मुझे छोड दो। मै अदा कर दूगा, खुदा की कसम, मै अदा कर दूगा। सच, भुखमरी ने मुझे मजबूर कर दिया बच्चे कलप रहे है, तुम खुद जानते हो। सच, बुरा हाल है हम लोगो का।"

"लेकिन इस सब का मतलब यह थोडे ही है कि चोरी करो।"

"मेरा घोडा," किसान कहता गया, "एक वही तो जानवर हमारे पास है उसे छोड दो कम से कम।"

"सुनो, यह मेरे बस की बात नही। मै अपने आप कुछ नही कर सकता हू। मेरे सिर ज़िम्मेदारी है। फिर, तुम्हे कुराह क्यो चलने दिया जाय।"

"मुझे जाने दो। तगी ने मुझसे यह कराया, फोमा कुजमीच, और किसी चीज़ ने नही, केवल तगी ने मुझे मजबूर कर दिया। मुझे जाने दो!"

"मै तुम लोगो को जानता हू!"

"ओह, मुझे जाने दो!"

"उफ, तेरे साथ तो मुह लगना ही बुरा है। चुपचाप बैठा रह, नही तो अभी सीधा कर दूगा। देखता नही, यहा श्रीमान मौजूद है।"

बेचारे गरीब ने अपना सिर झुका लिया विर्यूक ने जुमहाई ली और अपना सिर मेज़ पर टिका दिया। बारिश अभी भी जोर बांधे थी। मै यह जानने की बाट मे था कि अब क्या होगा।

अचानक किसान सीधा खड़ा हो गया। उसकी आखें चमक रही थीं, और उसका चेहरा गहरा लाल हो गया था।

"अच्छी बात है, कर लो जितना भी बुरा तुम कर सको। मुझे कच्चा चबा जाओ और जाओ जहन्नुम में," उसने कहना शुरू किया। उसकी आखें सिकुड़ गयी थीं और होठों के छोर लटक आये थे। "यह लो, मैं तुम्हारे सामने मौजूद हू, आदमखोर! तुम ईसाई का खून पीना चाहते हो—यह लो, पियो!"

पहरुवा घूम गया।

"जगली, खून चूसनेवाले, मैं तुमसे कह रहा हू!"

"बहुत ज्यादा चढ़ा गये हो क्या जो लगे हो गाली बकने?" चकित मुद्रा में पहरुवे ने कहना शुरू किया, "तुम्हारी अक्ल तो ठिकाने है, क्यों?"

"चढ़ा गया तो क्या, तेरी जेब से तो नहीं पी, लोगो की जान के दुश्मन, वहशी, वहशी, वहशी!"

"ओह तुम   अभी दिखाता हू।"

"और क्या दिखाओगे? मेरे लिए सब बराबर है। अब रहा ही क्या, घोड़े के बिना मैं क्या करूंगा? मुझे मार डालो इसमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आखिर यही होगा। चाहे भूख से मारो, चाहे इस तरह—सब बराबर है। सब को बरबाद कर डालो—परायों को, सभी को, सब को एकबारगी मार डालो। पर, तुम्हें इसका भुगतान करना पड़ेगा, आज न सही, पर वह दिन दूर नहीं!"

खिद्रा उठ खड़ा हुआ।

"मार डालो, मुझे मार डालो!" [illegible] आवाज में [illegible] "मार डालो, [illegible], मार डालो" ([illegible]) "मार [illegible], मुझे मार डालो।"

"[illegible] बन्द कर!" [illegible]

"बस, फोमा, बस," मैंने चिल्लाकर कहा, "रहने दो, इसे अपने हाल पर छोड दो।"

"मै क्यो मुह बन्द करू," भाग्य का मारा कहता गया, "मेरे लिए सब बराबर है–मुझे बरबाद ही होना है, ऐसे भी और वैसे भी–लेकिन तुम, लोगो की जान के दुश्मन, वहशी, तुम अभी बरबाद नही हुए लेकिन ठहरो, तुम भी बहुत दिन नही जियोगे, वे तुम्हारी गरदन भी मरोड डालेगे। ज़रा देखते जाओ।"

बिर्यूक ने उसके कधे को जकड लिया। मै किसान की मदद करने के लिए लपका .

"तुम बीच में मत आओ, मालिक!" पहरुवे ने चिल्लाकर मुझसे कहा।

मै उसकी धमकियो से डरनेवाला नही था, और मेरी मुट्ठी हवा में तन भी गयी थी, लेकिन मै गहरे अचरज में खडा रह गया। एक ही झटके में उसने किसान की कोहनियो से पेटी को खीच लिया, उसके गले का टेंटुवा पकडा, नीचे आखो तक खीचकर उसकी टोपी उसके सिर मे खोस दी, दरवाजा खोला और उसे धकियाकर बाहर निकाल दिया।

"अपने घोडे को लेकर जाओ जहन्नुम मे!" वह उसके पीछे, चिल्लाया "लेकिन ध्यान रखना, अगर फिर किया "

वह झोपडी मे लौट आया और कोने में कुछ उलट-पलट करने लगा।

"वाह, बिर्यूक," मैंने अन्त में कहा, "तुमने तो मुझे चकित कर दिया। देखता हू, तुम तो बहुत अच्छे आदमी हो!"

"ओह, रहने दो, मालिक," चिढकर उसने बीच में ही कहा, "किरपा कर इसका जिक्र न करो। लेकिन अच्छा हो कि अब मै आपको रास्ते तक छोड आऊ," अन्त में कहा, "मेरी समझ में, वारिश के रुकने की तो अब आप क्या बाट देखेंगे . ."

अहाते में किसान की गाडी के पहियो की खडखड सुनाई दी।

"गया!" वह बुदबुदाया, "मै उसे मज़ा चखाऊंगा . ."

आध घटा बाद जगल के छोर पर उसने मुझसे भी विदा ली।

दो जमींदार

सहृदय पाठक, अपने पडोसियो में से कई-एक से आपका परिचय कराने का सम्मान मुझे पहले से प्राप्त है। इजाजत हो तो अब मैं, यह अनुकूल अवसर देखकर (यो तो हम लेखको के लिए हर अवसर अनुकूल होता है) दो और श्रीमन्तो से आपका परिचय करा दू, जिनके इलाके मे मेरा अक्सर शिकार के लिए जाना हुआ करता था। वे बहुत ही योग्य और सदाशय जीव है और दूर दूर तक लोग उनका आदर करते है।

सबसे पहले मै आपके सामने अवकाश-प्राप्त मेजर-जेनरल व्याचेस्लाव इलरिओनोविच ख्वालीन्स्की का वर्णन करूगा। एक लम्वे और सुडौल आदमी का चित्र अपनी कल्पना में मूर्त्त कीजिये जो अव, किसी कद्र, मोटा हो चला है। यो वह वडी उम्र का आदमी है, लेकिन जर्जरता का—यहा तक वुढापे का भी—चिन्ह उसमें कतई नही नजर आता। जैसा कि कहते हैं, वह अपने पूरे जीवन पर मालूम होता है। यह सच है कि उसके चेहरे-मोहरे में जो कभी आकर्षक था और अभी भी अपेक्षाकृत सुन्दर है, अव कुछ परिवर्तन आ गया है—उसके गाल गुलगुला गये हैं, आखो के इर्द-गिर्द महीन झुर्रिया किरनो की भाति नजर आने लगी है और जैसा कि, पुश्किन के कथनानुसार, सादी कहा करता था—कुछ दात ओझल हो गये हैं। उसके हल्के सुनहरे वाल, कम से कम, जो कुछ भी उनका अव बाकी वच रहा है—अव बैंगनी-से रग के नजर आने लगे हैं। यह उस मसाले का नतीजा है जिसे उसने रोमनी में हुए घोडो के मेले में एक यहूदी से खरीदा

था और जो अपने-आपको आर्मीनिया का बताता था। लेकिन, इस सबके बावजूद व्याचेस्लाव इलरिओनोविच चाल-ढाल मे चुस्त है, उसकी हसी में गूज है, एडियो को खनकाता और अपनी मूछो मे छल्ले डालता है, और अन्त मे यह कि अपने को एक बूढा घोडसवार सैनिक कहता है, जब कि हम सभी जानते है कि असल मे बूढे लोग अपने बुढा जाने की बात कभी नही करते। आम तौर से वह फ्रॉक-कोट में कसे रहता है जिसके बटन ऊपर तक बन्द होते है। ऊचा गुलूबद, कलफदार कालर, फौजी काट की भूरी रोबदार पतलून। टोपी नीचे माथे तक खिची हुई, जिससे सिर का पिछला हिस्सा सारा खुला रहता है। स्वभाव का अच्छा है, लेकिन अपनी धारणाओ और सिद्धान्तो की दृष्टि से कुछ अजीब और अटपटा। मिसाल के लिए उन कुलीनो के साथ वह कभी बराबरी का व्यवहार नही कर सकता जो धनी या हैसियतवाले नही है। जब उनसे बाते करता है तो वह बगल से उनपर नजर डालता है और उसका कडा सफेद कालर उसके गाल मे गडने लगता है। फिर, अचानक, अपनी साफ पथरीली नजर से उन्हे बीधने लगता है, और ऐसा करते समय उसके बालो के नीचे सिर की समूची खाल हरकत मे आ जाती है। यहा तक कि शब्दो का उच्चारण भी वह खास अपने ढग से करता है। मिसाल के लिए वह सीधे सीधे यह कभी नही कहेगा, "शुक्रिया, पावेल वसीलिच," या "मेहरबानी करके, इधर से, मिखाइलो इवानिच," बल्कि हमेशा यही कहेगा–"फुक्रिया, पाल असीलिच," या "अरबानीकरके इद्र से, मिल वानिच"। समाज के निचले स्तर के लोगो के साथ उसका व्यवहार और भी अजीब होता है। वह कभी उनकी ओर देखता ही नही, और अपनी इच्छा प्रकट करने या उन्हे आदेश देने से पहले चकित और खोये-से अन्दाज में लगातार कई बार, दोहरा-तिहराकर, पूछेगा–"क्या नाम है तुम्हारा? क्या नाम है तुम्हारा?" पहले शब्द पर असाधारण रूप में बल देते हुए, जिसकी वजह से यह वाक्य बहुत-कुछ ऐसा मालूम होता है जैसे पक्षी की पुकार हो। वह बहुत ही मीन-मेखी

और भयानक रूप से गांठ का पक्का है, लेकिन वह अपनी जमीन का ठीक से बन्दोबस्त नही कर पाता। एक अवकाश प्राप्त क्वार्टर-मास्टर को जो एक उक्रइनी और असाधारण रूप से मूर्ख है, उसने अपनी जागीर का ओवरसीयर चुना है। यो जमीन के बन्दोबस्त का जहा तक सबध है, हम सब पीटर्सबर्ग के उस महानुभाव से सदा हार मानते है जिसने, अपने कारिन्दे से यह रिपोर्ट सुनकर कि उसकी जागीर में अनाज सुखानेवाले बाडो में अक्सर आग लग जाती है जिसकी वजह से अनाज का भारी नुक्सान होता है, सख्त आदेश जारी कर दिया था कि भविष्य में अनाज को उस समय तक भीतर न रखा जाय जब तक कि आग पूर्णतया न बुझा ली गयी हो। अपने खेतो मे पोस्त उगाने की शानदार सूझ भी इसी महापुरुष के दिमाग मे से निकली थी। उसने बहुत ही सीधा-सादा और साफ हिसाब लगाया था। पोस्त रई से महगी होती है—उसने तर्क किया—फलत पोस्त बोने से ज्यादा मुनाफा होगा। पीटर्सबर्ग से प्राप्त हुए किसी नमूने के आधार पर अपनी स्त्री-दासो को सिलमे-सितारेवाले छज्जे पहनने का आदेश भी इसी महानुभाव ने दिया था, और उसके इलाके की किसान स्त्रिया सचमुच आज दिन तक ऐसे सितारेवाले छज्जे पहनती है, केवल वे उन्हे अपने रूमालो के ऊपर पहनती है . लेकिन छोडिये उन्हे, और अपने व्याचेस्लाव इलरिओनोविच की बात करे। व्याचेस्लाव इलरिओनोविच कोमल वर्ग के गहरे प्रशसक है। अपने जिला-नगर में सैर-सपाटा करते हुए जैसे ही उन्हे कोई सुन्दर स्त्री दिखाई देती है, वे तुरत उसके पीछे लपकते है, लेकिन फौरन ही लगडाती चाल में चलने लगते है—यह उनमें एक खास बात है। वह ताश खेलने के शौकीन है, लेकिन केवल अपने से नीची हैसियतवाले लोगो के साथ जो हर वाक्य के साथ 'महामहिम' कहकर उनकी लल्लो-चप्पो करते रहे जबकि वह खुद उन्हे झिडके और जी भरकर उनमें नुक्स निकाल सके। जब कभी गवर्नर या अन्य किसी सरकारी विभूति के साथ उन्हे ताश खेलने का अवसर मिलता है तब एक अद्भुत परिवर्तन

उनमें आ जाता है—मुसकराहटों का वन्दनवार सजाये वह एकदम जी हुजूर बन जाते है, आखें उनके चेहरो का अनुसरण करती है और वह बाकायदा शहद की नदी बहाने लगते है। यहा तक कि हारने पर भी वह बडबडाते नही। व्याचेस्लाव इलरिओनोविच पढने से ज्यादा वास्ता नही रखते, और जब वह पढते है तो उनकी मूछे और भौहे बराबर ऊपर-नीचे होती रहती है, लगता है जैसे कोई लहर नीचे से ऊपर की ओर उनके चेहरे पर हिलोरें ले रही हो। व्याचेस्लाव इलरिओनोविच के चेहरे पर लहरियो का यह समारोह उस समय खास तौर से उभरा हुआ नजर आता है जब कि वह (निश्चय ही मण्डली के सामने) 'Journal des Débats'* के कालम पढते होते है। गुबर्निया के चुनावो में वह महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है, लेकिन कजूसी के कारण मारशल के सम्मानपूर्ण पद को स्वीकार नही करते। "महानुभावो," उक्त पद को स्वीकार करने के लिए उनपर दबाव डालनेवाले कुलीनो से वह अक्सर कहते है, अपनी आवाज मे सरक्षण और खुदमुख्तारी की भावना का पुट लिये हुए, "इस सम्मान के लिए मै अत्यन्त कृतज्ञ हू, लेकिन मैंने अपना अवकाश-काल एकान्तवास में बिताने का निश्चय कर लिया है।" और इन शब्दो को उच्चारित करते समय अपने सिर को वह अनेक बार दाए से बाए और बाए से दाए घुमाते है और इसके बाद, गर्वीले अन्दाज़ में, अपनी ठोडी और गाल को अपने गुलूबद के ऊपर ठीक से बिठाते है। जवानी के दिनो में उन्होंने किसी बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी की एजूटैण्टी की थी। और अब उस आदमी की जब भी चर्चा करते है तो उसका पूरा नाम लेकर। लोगो का कहना है कि एजूटैण्टी के अलावा वह अन्य काम भी सरजाम देते थे। मिसाल के लिए जैसे यह कि उनका चीफ जब गुसल करता था तो वह परेड की पूरी वर्दी में लैस, नीचे से ऊपर ठोडी तक बटनो को कसे हुए, उसे साबुन लगाते थे। लेकिन लोगो की सभी बातो पर यकीन नही किया जा सकता।

---

* 'वादानुवादी पत्रिका'।

जो हो, जेनरल ख्वालीन्स्की अपने फौजी जीवन की चर्चा करने के लिए कभी उतावले नही रहते, जो कि एक अजीब बात है। ऐसा मालूम होता है कि उन्हे सक्रिय सर्विस में जाने का कभी अवसर नही मिला। अब वह अकेले एक छोटे-से घर में रहते है। विवाहित जीवन के सुखो का उन्होने कभी अनुभव नही किया, फलत अब भी भावी वर के रूप में वह घूमते है और सचमुच वह बहुत उपयुक्त वर हो सकते है, लेकिन उन्होने एक भण्डारिन रख छोडी है—पैंतीसेक वर्ष की एक ताजा-दम स्त्री, काली आखें, काली भौहे, गुदगुदी, जिसकी मूछे भी है। सप्ताह के दिनो मे भी वह कलफदार कपडे पहनती है, और रविवार के दिन मलमल की आस्तीने लगा लेती है। व्याचेस्लाव इलरिओनोविच अपने पूरे निखार पर उस समय होते है जब गवर्नर तथा अन्य बडी विभूतियो के सम्मान में पडोस के श्रीमन्त कोई जियाफत करते है। तब वह, जैसा कि कहते है, अपने प्रकृत रग में होते है। ऐसे मौको पर वह अगर गवर्नर के दाहिने बाजू नही तो कम से कम उससे दूर भी नही बैठते। दावत के शुरू में उन्हे निजी प्रतिष्ठा को बनाये रखने का ज्यादा ध्यान रहता है, और अपनी कुर्सी की पीठ से टिके, अपने सिर को घुमाये बिना मेहमानो की खोपडियो और खडे कालरो पर ऊचाई से नजरसानी करते है, लेकिन भोज का अन्त होते न होते चारो ओर मुसकराना शुरू करते है (गवर्नर की ओर तो वह शुरू से ही मुस्कान-स्वरूप बने हुए थे), यहा तक कि कभी कभी कोमलागियो के सम्मान मे जाम तक पीने का प्रस्ताव करते जिन्हे वह हमारे इस नक्षत्र की शोभा के नाम से पुकारते है। तमाम गुरु-गम्भीर सार्वजनिक समारोहो, परीक्षणो, अधिवेशनो और प्रदर्शनियो में भी जेनरल ख्वालीन्स्की का सितारा बुलन्द रहता है। गिरजे में जिस अन्दाज से वह आशीर्वाद लेने जाते है, उसका जवाब नही। व्याचेस्लाव इलरिओनोविच के नौकर-चाकर स्थानो पार करने के जगहो पर या भीड भरे रास्तो में कभी हल्ला और आपाधापी नही मचाते। भीड में से उनके लिए रास्ता बनाते या उनकी गाडी का

है। और [illegible], [illegible], [illegible] अधिकारी का काम करते है। आजकल के लोगों का सबसे बड़ा अवगुण यही है कि अपने से बड़ों के प्रति सम्मान और शिष्टता को भूल जाने के लिए वे जैसे हमेशा तैयार रहते है। ऊचे ओहदेवाले लोगों की मौजूदगी में [illegible] ज्यादातर चुप रहते है, जबकि निचले स्तर के लोगों के बीच—जिनसे वह घृणा करते मालूम होते है, हालांकि बराबर उनसे मिलते-जुलते है—उनकी टिप्पणिया तेज और कटु होती है, और इस तरह के वाक्य रह रहकर निरन्तर उनके मुह से निकलते है—"तुम्हारी इस मूर्खता का जवाब नही," या "जरा होश मे बाते करे, श्रीमान," या "तुम्हे मालूम होना चाहिए कि किससे गुफ्तगू कर रहे हो," आदि आदि। पोस्ट-मास्टर, स्थानिक बोर्ड के स्थायी अफसर, पोस्टीग स्टेशनो के निरीक्षक उनसे विशेष रूप से भय खाते है। वह किसी को अपने घर दावत नही देते और, प्रचलित अफवाह के अनुसार, कजूस-मक्खीचूस की भाति जीवन बिताते है। लेकिन यह सब होने पर

भी वह एक बहुत बढिया भूस्वामी है। "पुराना सैनिक, निस्स्वार्थ जीव, सिद्धान्त का धनी, और 'vieux grognard"* यह पडोसी उनके बारे में कहते है। प्रान्त का प्रासीक्यूटर ही अकेला ऐसा आदमी है जो, जेनरल ख्वालीन्स्की के बढिया तथा ठोस गुणो का बखान होने पर, मुसकराता नजर आता है, लेकिन छोडिये, ईर्ष्या लोगो से जो न कराये थोडा

जो हो, अब हम दूसरे भूस्वामी से भी आपका परिचय करा दें।

मार्दारी अपोलोनिच स्तेगुनोव ख्वालीन्स्की से कतई नही मिलते-दोनो में कोई साम्य नही है। यह सोचना तक कठिन है कि वह सरकार की सेवा में रहे होगे। खूबसूरत भी वह कभी नही रहे। नाटा बूढा आदमी, चर्बी चढी हुई, खल्वाट सिर, दोहरी ठोडी, छोटे छोटे मुलायम हाथ और प्रतिष्ठा के अनुकूल तोद। खूब मेहमाननिवाज और खुशमिजाज, और आराम के साथ रहनेवाले। गर्मी हो, चाहे जाडा, वही एक धारीदार रुई भरा लबादा वह पहनते है। केवल एक ही चीज मे वह जेनरल ख्वालीन्स्की से मिलते है-वह भी अनव्याहे है। पाच सौ जीवो के वह मालिक है। अपनी जागीर में वह कुछ ऊपरी ढग की दिलचस्पी लेते है। जमाने से पीछे न रहे, इसलिए उन्होने दस साल पहले मास्को मे बुतेनोप के यहा से गाहने की एक मशीन मगाई, उसे एक कोठडी में डालकर ताला लगा दिया, और फिर इस ओर से निश्चिन्त हो गये। कभी कभी, गर्मियो में जब मौसम सुहावना होता है, वह अपनी बग्घी बाहर निकलवाते है, और फसलो को देखने तथा फूल बटोरने के लिए अपने खेतो की ओर निकल जाते है। उनका जीवन, रहन-सहन, बिल्कुल पुराने ढग का है। उनका घर पुराने ढग का बना है। घर की ड्योढी में क्वास, चर्बी की मोमबत्तियो और चमडे की गध खूब आती है। बराबर में ही, दाहिनी ओर, काले झींगुरो और तौलियो से भरी एक खाने की चीजों

---

* बूढा झक्की।

की अलमारी है। भोजन करने का कमरा परिवार के लोगो के चित्रो, मक्खियो, जिरेनियम फूलो के एक बडे गुलदान और एक चरमर पियानो से सजा है। दीवानखाने मे तीन सोफे, तीन मेजे, दो आईने और जग खाये एनामेल का घरघर की आवाज करता एक घटा लगा है जिसकी कासे की बनी सुइयो पर खोदाई का काम किया हुआ है। अध्ययन-कक्ष में कागजो की ढेर लगी एक मेज, नीले-से रग की टट्टिया जिनपर पिछली शताब्दी की किताबो मे से तस्वीरे काट काटकर लगायी गयी है। किताबदान जो जर्जर पुस्तको, मकडियो और काली धूल से अटे है, एक गुदगुदी आरामकुर्सी, एक इटालियन खिडकी, एक बन्द दरवाजा जिसका रुख बाग की ओर है सक्षेप मे यह कि हर चीज ठीक वैसी ही है जैसी कि होनी चाहिए। नौकर-चाकरो की मार्दारी अपोलोनिच के यहा भरमार है, सबके सब पुरानी चाल के कपडो से लैस है। नीले रग के लम्बे ऊचे कालरो वाले, कोट मटमैले रग की पतलूने, और छोटी पीली वास्कटे। वे आनेवालो को श्रीमान कहकर सम्बोधित करते है। जागीर की निगरानी का काम एक कार्यचालक करता है। वह एक किसान है जिसकी दाढी उसके भेड की खाल के बने हुए कोट पर छायी रहती है। घर की देख-भाल एक मक्खीचूस झुर्रियोदार बुढिया करती है जो सिर पर हमेशा दालचीनी के रग का रूमाल बाधे रहती है। उनके अस्तबल मे विभिन्न प्रकार के तीस घोडे है। सवारी के लिए जागीर मे ही बनायी गयी चार टन वजन की एक गाडी है। मेहमानो का बडी हार्दिकता से स्वागत और जी खोलकर उनकी खातिर तवाजा करते है। दूसरे शब्दो में यह कि—भला हो रूसी पाकविद्या की मूर्च्छाकारक शक्ति का—प्रिफरेन्स खेलने के अलावा मेहमान और कुछ करने योग्य नही रहते। जहा तक उनका अपना सबध है, वह कुछ नही करते। उन्होने 'सपने' पुस्तक तक पढना छोड दिया है। लेकिन रूसी कुलीनो मे वह अकेले ही नही है। ठीक उन जैसे लोग काफी सख्या मे है। आप पूछ सकते है, "तब उनका जिक्र करने का मेरा क्या उद्देश्य है?"

ठीक, लेकिन इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए मार्दारी अपोलोनिच के साथ अपनी मुलाकातो में से एक का वर्णन करने की मै इजाजत चाहूगा।

गर्मियो की साझ थी। सात वजे मै उनके यहा पहुचा। सध्या-प्रार्थना अभी हो चुकी थी। पादरी जो एक युवा आदमी था और अभी हाल ही मे धार्मिक विद्यालय से आया था, दरवाजे के पास ही दीवानखाने में बैठा था, प्रत्यक्षत बहुत ही सहमा-सा, कुर्सी के एकदम छोर पर। मार्दारी अपोलोनिच ने सदा की भाति, बहुत ही हार्दिकता के साथ, मेरा स्वागत किया। कोई भी आय, उन्हे हार्दिक खुशी होती थी। और कुल मिलाकर, इसमें शक नही, वह अत्यन्त भले स्वभाव के आदमी थे। पादरी उठ खडा हुआ, और अपनी टोपी सभालने लगा।

"जरा ठहरो श्रीमान," मेरे हाथ को अभी भी अपने हाथ में थामे हुए मार्दारी अपोलोनिच ने कहा, "जाओ नही। मैंने तो तुम्हारे लिए वोद्का मगवायी है।"

"नही श्रीमान, मै कभी नही पीता," पादरी ने सकपकाते हुए कहा। उसके गाल एकदम कानो तक लाल हो उठे थे।

"सो कुछ नही!" मार्दारी अपोलोनिच ने जवाब दिया, "पादरी हो तो क्या! मीश्का! यूश्का! पादरी साहिब के लिए वोद्का लाओ!"

यूश्का लगभग अस्सी वर्ष का एक लम्बा, दुबला-पतला आदमी, काली-सी रकाबी पर वोद्का का छोटा गिलास रखे हाजिर हो गया। रकाबी पर जहा-तहा चमडे के रग के कुछ धब्बे दिखाई देते थे।

पादरी ने ना-नुकर करनी शुरू की।

"अरे बस, तकल्लुफ न करो, पी जाओ, श्रीमान," भूस्वामी ने शिकायत के लहजे मे कहा, "यह बुरी बात है जो तुम इन्कार करते हो।"

बेचारे युवक को मानना पडा।

"ठीक, अब तुम जा सकते हो, श्रीमान।"

पादरी ने विदा होने के लिए माथा नवाना शुरू किया।

"वस, वस, हो गया, अव जाओ! आदमी वढिया है," उसे जाता देखते हुए मार्दारी अपोलोनिच कहने लगे, "मुझे वेहद पसद है। केवल एक ही वात है—अभी अधकचरा है। वन्दना-प्रार्थना मे इतना समय गवा देता है कि वोद्का पीना नही सीख सका। लेकिन आप अपनी कहे, श्रीमान, कि क्या हालचाल है? इन दिनो क्या करते रहे? तबीयत तो ठीक है न? अरे चलिये, छज्जे पर चले—वडी सुहावनी साझ है!"

हम वाहर छज्जे पर निकल आये, और वैठकर वाते करने लगे। मार्दारी अपोलोनिच ने नीचे झाककर देखा, और अचानक वुरी तरह उत्तेजित हो उठे।

"ए, किसकी मुर्गिया है वे? किसकी मुर्गिया है?" उन्होने चिल्लाकर कहा, "वगीचे मे वे किसकी मुर्गिया छुट्टा घूम रही है? यूश्का! यूश्का! पूछो, किसकी है वे मुर्गिया? जाने कितनी वार मै इसकी मनाही कर चुका हू? कितनी वार मै कह चुका हू!"

यूश्का दौडा हुआ वाहर आया।

"क्या वदइन्तजामी है!" मार्दारी अपोलोनिच ने विक्षोभ प्रकट किया, "उफ, भयानक!"

अभागी मुर्गिया, दो चित्तियोदार और एक सफेद जिसके मत्थे पर शिखा थी—जैसा कि मुझे अव तक याद है—सेव के पेडो के नीचे शान्ति से विचर रही थी। और रह रहकर अपने भावो को सुदीर्घ कुडकुडाहट मे व्यक्त कर रही थी। तभी यूश्का, नगे सिर और हाथ मे लाठी लिये, प्रौढावस्था के तीन अन्य गृह-दासो के साथ, सहसा और एकवारगी उनकी ओर झपटा, और एक अच्छा-खासा तमाशा शुरू हो गया। मुर्गिया कुडकुडा उठी, अपने पखो को उन्होने फडफडाया, फुदकी और वह शोर मचाया कि कान सुन्न हो गये। गृह-दास दौड रहे थे, गिरते-पडते और ठोकरे खाते, और उनका मालिक छज्जे से चिल्ला रहा था, विल्कुल दीवानो

की तरह, "पकडो, पकड लो उन्हे! पकडो, पकड लो उन्हे, पकड लो! पकड लो! किसकी है ये मुर्गियां? किसकी है ये मुर्गियां?"

आखिर एक नौकर शिखावाली मुर्गी को पकडने मे कामयाव हो गया, वह उसके ऊपर ही जा गिरा, और ठीक उसी क्षण ग्यारहेक वर्ष की एक लडकी गाव की सडक की ओर से वगीचे की वाड पर से कूदकर भीतर आ गयी। उसके वाल अस्तव्यस्त थे और अपने हाथ मे वह एक टहनी लिये थी।

"ओह, अव मालूम हुआ कि ये किसकी मुर्गियां है!" विजयी अन्दाज में भूस्वामी ने चिल्लाकर कहा, "ये येर्मीला कोचवान की मुर्गियां है। अपनी नताल्का को उसने उनके लिए भेजा है। पराशा को नही आने दिया।" भेद भरी मुसकान के साथ धीमी आवाज मे भूस्वामी ने अन्त मे जोडा। "ए यूश्का, मुर्गियो को छोडो, और इस नताल्का को मेरे पास पकड लाओ!"

लेकिन इससे पहले कि हाफता हुआ यूश्का भय से त्रस्त लडकी के पास पहुच पाता, अचानक भण्डारिन वहा नमूदार हो गयी, बाह पकड़कर उसने लडकी को घसीटा और उसकी पीठ पर कई एक थप्पड जमा दिये।

"ठीक, विल्कुल ठीक!" मालिक चिल्लाया, "तक-तक-ना और मुर्गियो को अपने पास रखो, अवदोत्या!" जोरदार आवाज में उसने कहा और फिर खुशी मे चमकते अपने चेहरे को मेरी ओर उसने मोडा, "कहिये श्रीमान, कितनी मजे की धर-पकड थी वह? ओह, मै तो बिल्कुल पसीना पसीना हो गया!"

और मार्दारी अपोलोनिच बार बार ठहाका मारकर हसने लगे।

हम छज्जे पर ही बैठे रहे। शाम सचमुच असाधारण रूप से सुन्दर थी।

चाय आ गयी।

"मार्दारी अपोलोनिच," मैंने कहना शुरू किया, "खाई से परे राजमार्ग पर जो झोपडिया नजर आ रही हैं, क्या वे तुम्हारे किसानो की हैं?"

"हा लेकिन यह तुम क्यो पूछते हो?"

"तुम्हे देखकर हैरानी होती है, मार्दारी अपोलोनिच। यह सचमुच गुनाह है। किसानो को दी गयी ये झोपडिया छोटी छोटी खोहे हैं, दमघोट और मनहूस। उनके आस-पास एक भी पेड नजर नही आता, यहा तक कि जोहड भी वहा नही है, केवल एक कुआ है, सो भी किसी काम का नही। उन्हे बसाने के लिए क्या वास्तव मे तुम्हे और कोई जगह नही मिली? और लोग कहते है कि सन की पुरानी जमीने भी तुम उनसे छीन रहे हो?"

"और जमीनो की इस तकसीम का क्या किया जाय?" मार्दारी अपोलोनिच ने जवाब दिया, "क्या आप जानते है कि यह तकसीम मुझे हर वक्त परेशान किये रहती है, और मुझे उससे कोई भला होता नजर नही आता। और जहा तक मेरे सन के खेतो को हथियाने तथा उनके लिए कोई जोहड न खोदने आदि का सबध है—सो श्रीमान, यह सब मुझे बताने की जरूरत नही, मैं अपना काम जानता हू। मैं सीधा-सादा पुरानी चाल का आदमी हू। मेरे विचारो के मुताबिक—अगर कोई मालिक है, तो वह मालिक है, और अगर कोई किसान है, तो वह किसान है। बस, मैं तो यह जानता हू।"

इतनी साफ और दिल में बैठ जानेवाली दलील का बिलाशक कोई जवाब नही था।

"और इसके अलावा," वह कहता गया, "ये किसान बडे गये-बीते लोग हैं, मनहूस। खास तौर से दो परिवार। सच, मेरे स्वर्गीय पिता—भगवान शान्ति दे उनकी आत्मा को—उन्हे सह नही सकते थे, कतई बरदाश्त नही कर सकते थे। और आप जानो, मेरा मकूला है—

अगर पिता चोर है, तो बेटा भी चोर है, अब आप चाहे जो कहे खून, खून–ओह, खून का असर बहुत बडी चीज है! मुझे आपको यह बताने में कोई सकोच नही कि मैंने उन दो परिवारो के कई एक लोगो को यहा से भर्ती करवाके भेज दिया है जबकि अभी उनकी बारी नही आयी थी और अन्य तरीको से भी उनसे छुटकारा पाने की कोशिश की है। लेकिन कम्बख्त इतनी तेजी से अपनी नसल बढाते हैं कि इन्हें समेटना मुश्किल हो जाता है।"

इस बीच वायु मे पूर्ण थिरता आ गयी थी। केवल विरले ही हवा का कोई झोका आता था और हमारे घर के पास आतेनआते खो जाता था। आखिरी झोके के साथ, अस्तबल की ओर से, समगति से दोहराये गये घूसो की ध्वनि हमारे कानो से आकर टकरायी। मार्दारी अपोलोनिच चाय से भरी तश्तरी को अपने होठो से छुवाने जा ही रहे थे और उसकी सुगधि लेने के लिए उनके नथुनो ने अभी फरफराना शुरू ही किया था–सच्चा जाया कोई भी रूसी, जैसा कि हम सभी जानते हैं। इस प्रारम्भिक क्रिया के बिना चाय नही पी सकता–कि एकाएक ठिठक गये, कान लगाकर सुना, अपने सिर को झटका दिया, चाय की चुस्की ली, और तश्तरी को मेज पर रखते हुए कल्पनातीत भली मुसकराहट के साथ कुछ इस तरह बुदबुदाये जैसे बरबस आघातो के सग ताल दे रहे हो–"चुकी-चुकी-चुक! चुकी-चुक!"

"यह क्या?" मैंने हैरानी के साथ पूछा।

"ओह, मेरे हुक्म से, वे एक लफगे आदमी को सजा दे रहे हैं क्या आपको वास्या की याद है, वह जो केटीन में हाजिरी देता है?"

"वास्या कौन?"

"अरे वही जो अभी भोजन के समय हमारी हाजिरी दे रहा था। लम्बे गलमुच्छो वाला।"

अकस्मात् जोरों की सार्दोगी अपोलोनिच की उस गिरती हुई मृदु नज़र की याद नहीं आ सकता था।

"अरे, यह क्या भाई मेरे, यह क्या?" अपने सिर को हिलाते हुए उसने कहा, "इस तरह क्यों मेरी ओर ताक रहे हो, जैसे मैंने कोई खून या अपराध किया हो? 'जो प्यार करता है, वही मारता भी है', पर आपने किया भोले ही है।"

कोई पन्द्रह मिनट बाद मैंने सार्दोगी अपोल्लोनिच से विदा ली। मेरी गाड़ी गाँव को पार कर ही रही थी कि वास्या पर मेरी नजर पडी। वह गाँव की सड़क पर से चला आ रहा था, दातो से गिरिया फोडता हुआ। मैंने अपने कोचवान से घोडो को रोकने के लिए कहा, और उसे आवाज दी।

"कहो, बचुवा, तो आज वे तुम्हे सजा दे रहे थे?"

"आपने कैसे जाना?" वास्या ने जवाब दिया।

"तुम्हारे मालिक ने बताया।"

"खुद मालिक ने?"

"बात क्या थी, उसने तुम्हे सजा देने का हुक्म क्यो दिया?"

"ओह, श्रीमान, मै इसी जोग था। वे हमे यो ही नही सजा देते—छोटी-मोटी बातो के लिए। नही, हमारे यहा ऐसा नही है। हमारे मालिक ऐसे नही है, हमारे मालिक ओह, आप सारे सूबे मे घूम आइये, हमारे मालिक जैसा दूसरा कोई नही मिलेगा।"

"ए, चलो!" मैंने कोचवान से कहा। "तो ऐसा है हमारा पुराना रूस!" घर की ओर प्रयाण करते समय मै यही सोचता रहा।

लेबेद्यान

शिकार के मुख्य लाभो में से एक लाभ, प्रिय पाठको, यह है कि वह आपको बराबर एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए बाध्य करता है। निठल्ले आदमी को इससे बडा आनन्द मिलता है। यह सच है कि कभी कभी, खास तौर से बरसात के दिनो में, कच्ची सडको को नापना, देहात को पार करना, राह में मिले हर किसान को रोककर उससे यह पूछना—"क्यो भाई, यह तो बताओ कि मोरदोवका पहुचने के लिए किस रास्ते जाना होगा?" और मोरदोवका पहुचने के बाद किसी कमसमझ किसान स्त्री से (काम करनेवाले सब लोग खेतो में गये होते हैं) खोद खोदकर यह जानने का प्रयत्न करना कि सडक पर की सराय क्या बहुत दूर है, और यह कि वहा कैसे जाना होगा—और इसके बाद, कोई पाच-छ मील चलने पर भी जब सराय के बजाय आप जमींदार के दरिद्र खुदोवूब्नोवो नामक छोटे गाव से जा टकराते हैं जहा सडक के बीचोबीच काली कीचड में लोटते सुअरो का समूचा रेवड चौक उठता है जो बिना किसी खटके की सम्भावना के वहा लेटे थे—यह सच है कि तब दिल को बहुत खुशी नहीं होती। न ही उस समय कोई भारी खुशी मिलती है जब पाव के नीचे डगमग करते तख्तो पर से गुजरना होता है, नीचे खाई-खड्डो मे उतरना और दलदली नदियों को पैदल पार करना पडता है। लगातार चौबीस चौबीस घटे तक हरियाली के सागर मे आच्छादित राहो में सवारी करना या (खुदा न करे) नाटो पर

मील के पत्थर के सामने जिसकी एक ओर २२ और दूसरी ओर २३ का अक बना है, घटो कीचड मे धसे रहना भी अति आनन्दप्रद नही होता। न ही एक साथ कई कई सप्ताह तक अमूल्य रई की रोटी, अडो और दूध पर गुजर करना

लेकिन इन सारी असुविधाओ तथा तकलीफो के मुकाबले मे एक दूसरी प्रकार की जो सुविधाए तथा खुशिया मिलती है, उनसे सारी क्षतिपूर्ति हो जाती है। लेकिन छोडिये, हमे अब अपनी कहानी का सिलसिला पकडना चाहिए।

इतना सब कुछ कहने के बाद पाठको को अब यह बताने की आवश्यकता नही कि पाच साल पहले उस समय जबकि मेला पूरे जोरो पर था, मै लेबेद्यान कैसे जा पहुचा। हम शिकारियो के साथ ऐसा ही होता है—किसी भी सुहावनी सुबह हम अपने कमोबेश पैतृक घर से निकल पडते है, पूरी तरह से यह इरादा करके कि दूसरे दिन साझ को घर लौट आयेगे पर धीरे धीरे स्नाइप-पक्षी का पीछा करते करते, अन्त मे अनायास ही कही दूर उत्तर में पेचोरा नदी के पावन तट से जा लगते है। इसके अलावा बन्दूक और कुत्ते का प्रत्येक प्रेमी दुनिया के सबसे श्रेष्ठ जानवर घोडे को जी-जान से चाहता है। सो मै लेबेद्यान की ओर मुड चला, एक होटल में मैने पडाव डाला, अपने कपडे बदले, और मेले मे पहुच गया। (बैरे ने जो बीस वर्ष का एक दुबला-पतला युवक था, अपनी गुनगुनी मधुर आवाज मे पहले ही मुझे बता दिया था कि महा-महिम प्रिन्स न० भी—जो *** रेजीमेण्ट के लिए घोडे खरीदते है—यही इसी होटल में ठहरे है और भी अन्य कितने ही महानुभाव आये हुए है, कि शाम को जिप्सियो का गाना होता है, नाटक-घर मे पान त्वारदोवस्की का खेल होने जा रहा है, कि घोडो के अच्छे दाम उठ रहे है, और यह कि उनकी नुमाइश देखने लायक है।)

बाजार के चौक में गाडियो की अन्तहीन पाते लगी थी, और गाडियो के पीछे हर किस्म के घोडे थे—घुडदौडी, बीजाश्व, बोझा खीचनेवाले, गाडियो में जुतनेवाले, डाक घोडे, और किसानो के सीधे-सादे मामूली घोडे। कुछ मोटे-ताजे और चमकीले, चुनिन्दा रगो के घोडे, धारीदार कपडो से ढके हुए, ऊचे खम्भो से सटकर बधे हुए, मुड मुडकर चोरी-छिपे अपने मालिको—घोडे के सट्टेबाजो—की अति परिचित चाबुको को देख रहे थे। जमीदारो के घोडे, जीर्ण-शीर्ण वृद्ध कोचवानो तथा दो या तीन हट्टे-कट्टे साईस-लडको के साथ, जिन्हे सौ या दो-दो सौ मील दूर से स्तेप के कुलीनो ने मेले मे भेजा था, अपनी लम्बी गरदने हिला रहे थे, अपने खुरो को पटक रहे थे और बाडे की टट्टियो मे दात मार रहे थे। व्यात्का के चितकबरे घोडे, एक-दूसरे से सटे जा रहे थे। घुडदौडी घोडे, चित्तीदार-भूरे, काले और लाल मुश्की, जिनके पिछले हिस्से खूब बडे थे, दुमें हिलती हुईं और टागो पर घने बाल थे, शेरो की भाति शाही थिरता से खडे थे। पारखी बडे आदर से उनके सामने ठिठककर खडे हो जाते। गाडियो की पातो से बनी वीथिकाओ मे हर श्रेणी, आयु और रग-रूप के लोगो की भीड जमा थी। नीले लम्बे कोट पहने तथा ऊची टोपिया लगाये घोडो के सट्टेबाज, अपने काइया चेहरो से, खरीदारो की ताक-झाक कर रहे थे। बडी बडी आखो और घुघराले बालो वाले जिप्सी, बेचैन आत्माओ की भाति, इधर से उधर लपक रहे थे—घोडो के मुहो मे आखे डालकर देखते, उनके खुरो या दुमो को उठाते, चीखते-चिल्लाते, गालिया बकते, बिचौलिये का काम करते, पर्चिया डालते, या छज्जेदार टोपी तथा बीवर कालर से युक्त फौजी ग्रेटकोट पहने घोडो के किसी फौजी खरीदार के साथ हिलते रहते। एक लम्बतडग कज्जाक हिरण की सी गरदनवाले एक आल्ता घोडे पर सवार उसे 'एक मुश्त' बेचने के लिए इधर से उधर घूम रहा था—अर्थात् काठी और लगाम समेत।

किसान, भेड की खाल के कोट पहने जो बगलो पर से उधड उधड रहे थे, भीड को चीरकर दीवानावार आगे बढते, या बीसियो की सख्या में एक गाडी मे चढ बैठते जिसमे, परीक्षा करने के लिए एक घोडा जुतता, या किसी एक बाजू, किसी काइया जिप्सी की मदद से सौदा करने के लिए उलझते-जूझते, थककर चूर हो जाते, सैकडो वार एक-दूसरे के हाथ को दबोचते, दोनो अपनी अपनी वोलियो पर डटे रहते, जवकि उनके इस विवाद का पात्र, चुरमुर चटाई ओढे हुए एक मरियल-सा टुइया घोडा, एकदम भावना विहीन अपनी आखो को मिचमिचाता रहता, मानो उसका इस सब से कोई वास्ता न हो और सच पूछो तो, सौदा चाहे ऐसे पटे या वैसे, इससे क्या फर्क पडता है। उसे तो आखिर जुतना ही पडेगा। चौडे माथेवाले भूस्वामी, मूछो को रगे हुए तथा अपने चेहरो पर गर्व की भावना लिये, पोलिश टोप लगाये तथा सूती लवादा आधे वदन पर खीचे, हरे दस्ताने तथा रोएदार टोपियो से लैस सौदागरो के साथ दयालुतापूर्ण अन्दाज मे वाते कर रहे थे। विभिन्न रेजीमेटो के अफसर जहा देखो वही जमघट लगाये थे। एक जर्मन नसल का असाधारण रूप से दुवला घोडसवार सैनिक अलस अन्दाज मे एक लगडे सट्टेवाज से पूछ रहा था – "यह मुश्की किन दामो वेच पाओगे?" सुनहरे वालो वाला एक युवा हुस्सार, उन्नीस वर्ष का एक लडका, कदम चाल चलनेवाले एक छरहरे घोडे के लिए बाजूवाले घोडे को पसद कर रहा था। ऊपर से पिचका हुआ हैट लगाये तथा उसके इर्द-गिर्द मोर का पख लपेटे, भूरा कोट पहने तथा चमडे के दस्ताने हरे रग के कमरबंद के पीछे [illegible], एक साईस गाडी मे जोतने लायक घोडे की टोह कर रहा था। कोचवान घोडो की दुमो को गूथ रहे थे, उनकी अयालो को भिगो रहे थे और [illegible] के साथ श्रीमानो को सलाह-मशविरा दे रहे थे। जो सौदा कर चुके थे, वे होटल या सराय की ओर – अपनी अपनी हैसियत के मुताबिक – [illegible] जा रहे थे . . और यह समूची भीड-भाड हरकत कर रही थी, [illegible]

रही थी, उमड रही थी, झगड रही थी और फिर सुलह कर रही थी, कोस और हस रही थी, और एक सिरे से घुटनो तक कीचड में लथपथ हो रही थी। अपनी वग्घी के लिए मै तीन घोडो का एक सैट ख़रीदना चाहता था, मेरे पुराने घोडे अब ढचरा हो चले थे। दो तो मैंने खोज लिये थे, लेकिन तीसरे को पाने मे मै अभी सफल नही हुआ था। दिन का भोजन करने के बाद, जिसका वर्णन करने का मेरा मन नही मानता (अतीत के दु खो की याद अगस तक को कष्टकर मालूम हुई थी) मैंने तथाकथित कहवाख़ाने की शरण ली जहा, साझ को, घोडसवार सेना के वाहनो के खरीदार, घोडा-पालक और अन्य लोग जमा होते थे। बिलियर्ड रूम में, जो तम्बाकू के धुवे के भूरे बादलो से घिरा था, करीब बीस आदमी जमा थे। इनमें बेफिक्रे और मौजी स्वभाव के युवा भूस्वामी थे, हगेरियन कोट और भूरी पतलून कसे, चेहरो पर लम्बी लम्बी छाइया और अपनी मूछो को मोम से सवारे हुए। कुलीनो के उद्धत्तपन के साथ अपने इर्द-गिर्द नजर डाल रहे थे। इनमे कुलीन थे, कज्जाक पोशाक पहने हुए जिनके गले असाधारण रूप में छोटे थे। उनकी आखे चर्बी की तहो में खोयी थी और वे इतनी स्पष्टता के साथ ऊचा ऊचा सास ले रहे थे कि बहुत बुरा मालूम होता था। इनमें सौदागर थे जो सबसे अलग चुपचाप बैठे थे। अफसर थे जो आजादी के साथ आपस मे बतिया रहे थे। बिलियर्ड की मेज पर प्रिन्स न० जमे थे, बीस-बाईस वर्ष के युवा आदमी, सजीव चेहरा, लेकिन कुछ हिकारत का भाव लिये हुए। वह फ्रॉक-कोट पहने थे जो खुला लटक रहा था, साथ में लाल रेशमी कमीज और मखमल की ढीली-ढाली पतलून। वह अवकाश-प्राप्त लेफ्टेनट वीक्तर खलोपाकोव के साथ बिलियर्ड खेल रहे थे।

अवकाश-प्राप्त लेफ्टेनट वीक्तर खलोपाकोव तीस वर्ष का दुबला-पतला मुख्तसर-सा आदमी था, सावला रग, काले बाल, भूरी आखें और मोटी पिचकी-सी नाक, चुनावो और मेलो में घूमनेवाला। चलता है तो

इस तरह जैसे फुदक रहा हो, अपने गावदुम हाथो को शान के साथ फहराता है, टोपी को टेढा रखता है और अपने फ्रॉक-कोट की आस्तीनो को ऊपर चढाये रहता है, जिससे नीचे का काला-नीला सूती अस्तर दिखाई देता रहता है। पीटर्सवर्ग के धनी निठल्लो को खुश करने की कला वह जानता है। उनके साथ वह सिगरेट पीता है, शराब उडाता है, ताश खेलता है और तू कहकर उन्हे सम्वोधित करता है। उन लोगो को क्या चीज इसमे पसन्द आती है, यह कहना कठिन है। न तो वह चतुर है, न ही वह दिलचस्प है, यहा तक कि वह भाड भी नही है। यह सच है कि वे उससे मेल-मिलाप तो रखते है, मगर घनिष्टता नही है, उसे एक ऐसा आदमी समझते है जो स्वभाव का अच्छा है, लेकिन वेवकूफ है। दो या तीन सप्ताह तक वे उसके साथ खेलते-खाते है, और फिर एकदम अचानक हाट-वाज़ार में मिलने पर उसे पहचानते तक नही, और वह खुद भी, अपनी ओर से, उन्हे नही पहचानता। लेकिन लेफ्टेनट खलोपाकोव की मुख्य विशिष्टता यह है कि वह लगातार एक साल तक, और कभी कभी तो लगातार दो साल तक, वक्त वेवक्त की कोई पर्वाह किये विना, एक अपना तकिया-कलाम वनाये रहता है जो, वावजूद इसके कि उसमें हास्य का कतई कोई पुट नही होता, जाने किस वजह से सुननेवालो को हसा देता है। आठ साल पहले उसका तकिया-कलाम था 'वा अदव मा वुलाहिज़ा' जिसे वह हर मौके पर इस्तेमाल करता था, और उस समय के उसके प्रेमी इसे सुनकर हसी के मारे हमेशा दोहरे हो जाते थे और उससे वार वार दोहराकर कहलाते थे—'वा अदव मा वुलाहिजा'। इसके वाद उसने एक और तकिया-कलाम अपनाना शुरु किया जो ज्यादा पेचीदा था—'नही, यह वेहिसाव, वेहिनाव वेहिस्सावनाना है', और इसमें भी उसे उतनी ही सफलता मिली। दो वर्ष वाद उसने एक ताजा कथन का आविष्कार किया—'ने सा या, भेड की खाल मे सिला, गुनाह का पुतला, विलविला' आदि आदि। और आश्चर्य

तो यह कि इन तकिया-कलामो की बदौलत—जो कि, जैसा कि आप देख सकते है, ऐसा नही है कि हास्य से सराबोर हो—उन्हे न खाने की कमी होती है, न पीने की, न कपडो की। (अपनी मिल्कियत से हाथ धोये उसे एक मुद्दत गुजर चुकी है, और एकमात्र मित्रो के सहारे वह जीता है।) इसके सिवा, आप ही देखो, उसमें अन्य कोई आकर्पण कतई नही है। यह सच है कि वह एक दिन मे जुकोव तम्वाकू के सौ पाइप पी सकता है, और बिलियर्ड खेलते समय अपनी दाहिनी टाग को सिर से भी ज्यादा ऊचा उठा ले जाता है और निशाना साधते समय नुमाइशी अन्दाज में अपने क्यु को हिलाता है, लेकिन सच पूछो तो उसके ये गुण ऐसे नही है कि हरेक का दिल मोह सके। वह पीना भी जानता है लेकिन रूस में पीने के मामले मे विशिष्टता प्राप्त करना कठिन है। थोडे में यह कि उसकी कामयाबी मेरे लिए एक पूर्ण मुइम्मा है। लेकिन उसमें शायद, एक बात है यह कि वह चौकस है। घर से वाहर खुले आम लोगो की छिपी कुचेष्टाओ की चर्चा वह कभी नही करता, किसी के खिलाफ कभी एक शब्द अपने मुह से नही निकालता।

"ओह," खलोपाकोव को देखकर मैंने सोचा, "खुदा जाने, आजकल इसका तकिया-कलाम क्या है?"

प्रिन्स ने सफेद अण्डे पर चोट की।

"तीस लव," तपेदिक के मरीज़-सा मार्कर भनभनाया, जिसका चेहरा सावला था और आखो के नीचे स्याह छल्ले पडे थे।

प्रिन्स ने पीले अण्डे को, खटाक की आवाज़ के साथ, सबसे दूरवाली विलियर्ड की थैली में रवाना कर दिया।

"ओह!" एक हट्टा-कट्टा सौदागर जो कोने में एक टागवाली छोटी ढचरा मेज़ पर बैठा था, मुग्ध होकर अपने हृदय की गहराइयो में से चहक उठा, और फिर अपनी इस हरकत पर फौरन ही सकपका गया।

लेकिन भाग्य से उसे किसी ने नही देखा। उसने एक लम्बा सास खीचा और अपनी दाढी को सहलाने लगा।

"छत्तीस लव!" मार्कर गुनगुनी आवाज़ मे चिल्लाया।

"बोलो, तुम्हे कैसा लगा, बुढऊ," प्रिन्स ने खलोपाकोव से पूछा।

"क्या-आ! बेशक, रररकालिऊऊऊन, एकदम रररकालिऊऊऊन!"

प्रिन्स हसी के मारे लोटपोट हो गया।

"क्या? क्या? ज़रा फिर कहना!"

"रररकालिऊऊऊन!" अवकाश-प्राप्त लेफ्टेनट ने आत्मतुष्टि के लहजे में कहा।

"सो यह है अब तकिया-कलाम!" मैने सोचा।

प्रिन्स ने लाल अडे को थैली मे रवाना कर दिया।

"ओह, यह ठीक नही, प्रिन्स, यह ठीक नही," सुनहरे बालो वाले एक युवा अफसर ने तुतलाते हुए कहा। उसकी आखे लाल थी, नाक टुइया-सी और उनीदा-सा बचकाना चेहरा। "आपको इस तरह नही खेलना चाहिए आपको नही, इस तरह नही।"

"तो किस तरह?" प्रिन्स ने जरा सिर घुमाकर पूछा।

"आपको यह ट्रिप्लेट मे करना चाहिए!"

"ओह, सचमुच?" प्रिन्स ने बुदबुदाकर कहा।

"हा, तो प्रिन्स, क्या राय है आपकी? आज साझ जिप्सियो का गाना सुनने चलेगे न?" सकपकाकर युवा उतावली में कहता गया, "स्तेश्का गायेगी इल्यूश्का "

प्रिन्स ने कोई जवाब नही दिया।

"रररकालिऊऊऊन, प्यारे!" बाई आख मारते हुए खलोपाकोव ने कहा।

और प्रिन्स फिर फूट पडा। "उनतालीस लव!" मार्कर ने मुरदार आवाज में कहा।

"लव! जरा देखते जाओ, उस पीले अण्डे के साथ क्या गुल खिलाता हू।" क्यु को अपने हाथ में इधर से उधर करते हुए खलोपाकोव ने निशाना साधा, पर चूक गया।

"अरे, रररकालिऊऊऊन!" वह खीझकर चिल्ला उठा।

प्रिन्स फिर हसा।

"क्या, क्या, क्या?"

लेकिन खलोपाकोव ने, नखरा करते हुए, अपने तकिया-कलाम को दोहराना नही चाहा।

"महामहिम, आप चूक गये," मार्कर ने टिप्पणी की। "लाइये, क्यु मे खडिया लगा दू चालीस लव!"

"हा तो महानुभावो," किसी एक को लक्ष्य में रखकर नही, वल्कि समूची मण्डली को सम्वोधित करते हुए प्रिन्स ने कहा, "आप जानते है, आज रात थियेटर में वेर्जेम्वीत्स्काया को पर्दे के सामने वुलाना चाहिए।"

"वेशक, वेशक, विलाशक!" एक-दूसरे से होड-सी लेते और प्रिन्स के सम्भाषण की जी हुजूरी करने के अवसर से अद्भुत रूप में लालायित कई आवाजें एक साथ कह उठी। "वेर्जेम्वीत्स्काया, वेशक"

"वेर्जेम्वीत्स्काया वहुत वढिया एक्ट्रेस है, सोपन्यकोवा से लाख दर्जे अच्छी," कोने में वैठे एक वदनुमा टुइया-से आदमी ने हिनहिनाते हुए कहा। वह मुछैल था, और आखो पर चश्मा चढाये था। हतभागा मरदूद! मन ही मन सोपन्यकोवा के पावो की धूल वनने के लिए छटपटा रहा था। लेकिन प्रिन्स ने उसकी ओर नजर तक उठाकर नही देखा।

"वैन-ड-न, एक, पाइप लाओ!" लम्वे कद के एक कुलीन ने अपने बैस्ट में गुनगुनाता रहा। उसका चेहरा-मोहरा जैसे साचे में ढला था और

उसका अन्दाज अत्यन्त शाहाना था, बल्कि सच पूछो तो अपने बाहरी रग-रूप से वह अच्छा-खासा पत्तेबाज नजर आता था।

एक बैरा पाइप के लिए दौड गया और जब वह वापिस लौटकर आया तो उसने महामहिम को सूचना दी कि साईस बाक्लागा श्रीमान को पूछ रहा था।

"ओह, उससे कहो कि एकाध मिनट ठहरे, और उसके लिए कुछ वोद्का लेते जाओ।"

"अच्छा, श्रीमान।"

बाक्लागा, मुझे बाद में पता चला, एक युवा, सुन्दर और अत्यन्त मुह-चढे साईस का नाम था। प्रिन्स उसे चाहते थे, भेट मे उसे घोडे देते थे, उसके साथ शिकार पर निकलते थे, समूची राते उसके साथ गुजार देते थे। अब इन्ही प्रिन्स को आप देखे तो कभी न पहचान पाय, कि यही वह है जो कभी इतने नाकारा और व्यसनो मे गडगच्च रहते थे। लेकिन अब तो उनका नाम बोलता है, एकदम बेदाग, अपनी नाक को ऊचा उठाये हुए, सरकार के पक्के खैरख्वाह—और सबसे बढकर बहुत ही दूरन्देश और न्यायप्रिय।

जो हो, तम्बाकू के धुवे से मेरी आखें जलने लगी थी। खलोपाकोव के चहकने और प्रिन्स की नि शब्द खिलखिलाहट को आखिरी बार और सुनने के बाद मै अपने कमरे के लिए रवाना हो गया जहा एक तग सोफे पर, जिसकी गद्दी में बाल भरे थे और लोगो के बैठने से गढे पडे थे और जिसकी पीठ ऊची तथा खमदार थी, मेरे आदमी ने पहले से ही मेरा बिस्तर लगाया हुआ था।

अगले दिन अस्तबलो में घोडे देखने के लिए मै बाहर निकला, और घोडो के प्रसिद्ध सट्टेबाज सीत्निकोव से मैंने शुरुआत की। फाटक को पार कर मैंने अहाते में पाव रखा जिसमें बालू छितरा हुआ था। अस्तबल के दरवाजे बिल्कुल खुले थे और उनके सामने खुद मालिक खडा था—एक

लम्बा हृष्ट-पुष्ट आदमी जो अपनी जवानी को पार कर चुका था। वह खरगोश की खाल का कोट पहने था जिसका पलटदार कालर ऊचा उठा था। मुझे देखते ही अगवानी के लिए धीमी गति से वह मेरी ओर बढा। अपनी टोपी को दोनो हाथो में थामे वह उसे सिर से ऊचे उठाये था। सुरदार आवाज में बोला—

"ओह आइये, हमारा सलाम कबूल हो! शायद आप घोडो पर एक नजर डालना चाहेगे, ठीक है न?"

"हा, मैं घोडो को देखने आया हू।"

"और कैसे घोडे चाहिए आपको, क्या मैं यह जान सकता हू?"

"तुम्हारे पास जो हो, दिखा दो।"

"ओह, बडी खुशी से।"

हमने अस्तबल में प्रवेश किया। कुछ छोटे सफेद कुत्ते, अपनी दुमें हिलाते घास में से निकलकर हमारे पास दौड आये, और एक लम्बी दाढीवाला बूढा बकरा, जो नाराज़ नजर आता था, वहा से खिसक गया। तीन साईस जो मज़बूत किन्तु चीकट भेड की खाल के कोट पहने हुए थे, बिना कुछ कहे हमारे अभिवादन में झुक गये। दाहिनी और बाईं ओर, जमीन से ऊचे उठे कटघरो में, करीब तीस घोडे खडे थे, पूरी तरह निखारे-सवारे हुए। छत की कडियो के इर्द-गिर्द कबूतर फडफडा और गुटरगू कर रहे थे।

"हा तो, किस मतलब के लिए आपको घोडा जरूरत है? सवारी के लिए, या नसल तैयार करने के लिए?" सीतिनकोव ने मुझसे पूछा।

"सवारी और नसल, दोनो के लिए।"

"बेशक, बेशक," हर शब्दाश का साफ साफ उच्चारण करते हुए घोडे के सट्टेबाज ने अपना अभिमत प्रकट किया। "पेत्या, श्रीमान को 'गोर्नोस्ताई' दिखलाओ।"

हम बाहर अहाते में आ गये।

'हुगन हो तो वे झोपडी में से वेंच उठा लाय   ओह, तो आप बैठना नहीं चाहते   जैसी आपकी मर्जी।"

तख्तों पर खुरों की चाप सुनाई दी, चावुक की आवाज आयी और गावना चेचक मुह-दाग, चालीस वर्षीय पेत्या एक अपेक्षाकृत अच्छे डील-डौल के घोडे को साथ लिये अस्तवल मे से प्रकट हुआ। उसने घोडे को पिछले पावों के वल खडा किया, उनके साथ दौड़कर अहाते के दो चक्कर लगाये, और फुर्ती के साथ लगाम खीचकर उसे ऐन ठीक जगह पर खडा कर दिया। 'गोर्नोस्ताई' ने अपना वदन सीधा किया।

नथुनो को फरफराया, अपनी पूछ को ऊचा उठाया, सिर को झटका दिया और कनखियो से हमारी ओर देखा।

"जानवर सीखा हुआ है," मैने सोचा।

"घोडे को खुला छोड दो!" सीत्निकोव ने कहा, और मेरी ओर ताककर देखा।

"कहिये, क्या राय है?" अन्त में उसने पूछा।

"घोडा वुरा नही है—अगली टागें कुछ एकदम चौकस नही मालूम होती।"

"उसकी टागें एक नम्वर की है," विश्वासपूर्ण अन्दाज मे सीत्निकोव ने जवाव दिया, "और उसके पीछे के पुट्ठे   देखिये न श्रीमान   तन्दूर की भाति चौडे है   चाहो तो वहा सो सकते हो!"

"इसके टखने वहुत लम्वे है।"

"लम्वी! खुदा रहम करे! जरा चलाकर दिखाओ, पेत्या, चलाकर दिखाओ, लेकिन दुलकी चाल से, विल्कुल दुलकी   सरपट नही।"

'गोर्नोस्ताई' के साथ पेत्या ने एक बार फिर अहाते का चक्कर लगाया। कुछ देर हम दोनो में से कोई न वोला।

"वस ठीक, अव इसे वापिस ले जाओ," सीत्निकोव ने कहा, "और 'सोकोल' को दिखलाओ।"

'सोकोल' डच नसल का दुवला-पतला जानवर था–गोवरैले की भाति स्याह, पिछले पुट्ठे ढलुवा। वह 'गोर्नोस्ताई' से कुछ अच्छा था। वह उन जानवरो में से था जिनके वारे में घोडो के प्रेमी आपसे यह कहते नजर आयेंगे कि "वे थिरकते, मटकते और खूब नाचते है", मतलब यह कि वे खूब फुदकते और अपनी अगली टागो को दाए-वाए फेकते है, लेकिन कुछ आगे वढते नजर नही आते। मझोली आयु के सौदागर ऐसे घोडो को बहुत पसन्द करते है। उनकी चाल को देखकर किसी चतुर वैरे की अकडदार चाल की याद आती है। दिन के भोजन के वाद हवाखोरी के लिए अकेली जोत मे वे अच्छे रहते है। छोटे छोटे डगो से और गरदन को तिर्छी किये वडे उछाह से वे अटपटी वग्घी को खीचते है जिसपर खूव खाया-पिया कोचवान, वदहजमी का मारा सौदागर और नीले रग का रेशमी ढीला-ढाला कोट ओढे और सिर पर बैंगनी रुमाल वाधे उसकी मोटी पत्नी बैठी होती है। 'सोकोल' भी मुझे नही जचा। सीत्निकोव ने अनेक घोडे मुझे दिखाये आखिर एक, जो वोयेइकोव नसल का चितकवरा भूरे रग का घोडा था, मुझे पसन्द आ गया। मै अपने चाव को काबू में नही रख सका और मुग्ध भाव से उसकी अयाल को मैंने थपथपाया। सीत्निकोव ने फौरन एकदम उपेक्षा का रूप धारण कर लिया, जैसे उसे कतई कोई वास्ता न हो।

"हा तो," मैने पूछा, "जोत में यह ठीक चलता है, न?"

"हा," घोडो का सट्टेवाज बोला।

"क्या मै उसे देख सकता हू?"

"वेशक, अगर आप चाहे। ए, कूज्या, 'दोगोन्याई' को वग्घी में जोत दो।"

कूज्या–घोडसवारी की कला का असली माहिर–सडक पर तीन वार हमारे सामने इधर से उधर गुजरा। घोडे की चाल अच्छी

थी। न उसने अपने कदम बदले, न लचका खाया। उन्मुक्त सचरण, पूछ ऊची उठी हुई मज़े में रास्ता नापता था।

"हा तो क्या मागते हो इसका?"

सीत्निकोव ने असम्भव दाम मागे। हम वही सडक पर खडे हुए सौदाबाजी करने लगे। तभी, एकदम अचानक, तीन घोडो की खूब मिलती हुई एक शानदार टुकडी आवाज करती हुई कोने के उधर से मुडी और तेजी से सीत्निकोव के घर के फाटक के सामने रुक गयी। बाकी शिकारी टमटम में प्रिन्स न० बैठे थे, और उनके बराबर में खलोपाकोव। बाक्नागा हाक रहा था और उसका हाकना! क्या कहने, वह उन्हे कान की बाली में से भी निकाल ले जाता! बाजूवाले मुश्की घोडे, नाटे, धुनी, काली आख और काली टागोवाले जानवर, जैसे मचले जाते थे। वे बराबर अपने पिछले पावो पर खडे हो रहे थे—बस, सिसकारने की देर थी, और वे एकदम हवा हो जाते। गहरा मुश्की जोतवाला घोडा दृढता से खड़ा था, गरदन हस की भाति मेहराबदार, सीना आगे को तना हुआ, टागें जैसे तीर हो। वह अपना सिर हिला रहा था और गर्वीले अन्दाज मे आखें सिकोड़े था क्या खूब घोड़े थे वे! जार इवान वासील्येविच भी अपनी ईस्टर की सवारी के लिए इनसे बढिया जोडी की कामना नही कर सकता था!

"आइये, महामहिम, किरपा कर भीतर पधारिये," सीत्निकोव ने पुकारकर कहा।

प्रिन्स उछलकर टमटम से बाहर निकल आये। खलोपाकोव दूसरे बाजू आहिस्ता से नीचे उतरा।

"अच्छे तो हो, मित्र . कहो, कुछ घोड़े है?"

"बेशक, महामहिम के लिए हमारे पास घोड़े नही होगे तो फिर किसके लिए होगे! कृपया भीतर चले आइये। पेत्या, 'पवलीन' को बाहर लाओ, और उनसे कहो कि 'पोख्वालनी' को भी तैयार रखे। और आपके

साथ श्रीमान," मेरी ओर मुडते हुए उसने कहा, "फिर किसी वक्त बात करूगा ए फोमका, महामहिम के लिए बेच तो ले आओ।"

एक खास अस्तबल में से जिसकी ओर पहले मेरा ध्यान नही गया था, वे 'पवलीन' को बाहर ले आये। गहरा मुश्की रग, बहुत ही दमदार। ऐसा मालूम होता था जैसे 'पवलीन' अपनी चारो टागो को हवा में उठाये अहाते में उडा जा रहा हो। सीत्निकोव ने उधर से अपना मुह तक हटा लिया और अपनी आखें बद कर ली।

"ओह, ररकालिऊन!" खलोपाकोव ने सुर छेडा। "ज्हाइमसाह!"

प्रिन्स हस पडे।

'पवलीन' बडी मुश्किल से रुकने मे आया। साईस को अपने साथ वह अहाते में इधर से उधर खीचता रहा। अन्त में धकियाकर दीवार के सहारे उसे रोका गया। वह नथुने फरफरा रहा था, चमक रहा था और अपने पिछले पावो के बल खडा हो रहा था, और सीत्निकोव उसके आगे चाबुक फहराते हुए उसे अभी तक चिढाये जा रहा था।

"ए, उधर क्या देख रहा है? बस बस, एइयू!" दुलार भरी ताडना के साथ घोडे के सट्टेबाज ने खुद भी अपने घोडे पर बरबस मुग्ध होते हुए कहा।

"क्या मागते हो?" प्रिन्स ने पूछा।

"आपकी खातिर, महामहिम, पाच हजार।"

"तीन।"

"नामुमकिन, महामहिम, कसम से।"

"बस तीन, ररकालिऊन," खलोपाकोव ने जोर डाला।

सौदा पटने तक रुके बिना मै वहा से चल दिया। सडक के एकदम दूसरे छोर पर कागज का एक बडा-सा इश्तहार दिखाई दिया जो एक छोटे-से भूरे घर के फाटक पर चिपका था। इश्तहार के ऊपर के हिस्से स्याही और कलम से घोडे का एक चित्र बना था जिसकी दुम पादप की शक्ल

री नी और गल्दन का तो जैसे कोई अन्त ही नही था। खुरो के नीचे पुरानी चाल की लिखावट मे निम्न शब्द लिखे थ–

"यहा भाति भाति के रगो के घोडे बेचे जाते हैं। ये घोडे ताम्बोव प्रान्त के भूस्वामी अनस्तासी इवानिच चेर्नोबाई की सुविख्यात स्तेप की घोडशाला मे लेबेद्यान के मेले मे लाये गये है। ये घोडे बढिया जात के, पूर्णतया सधाये हुए और ऐबो से अछूते है। खरीदार कृपया खुद अनस्तासी इवानिच से आकर बात करे। अगर वह मौजूद न हो तो कोचवान नजार कुबीस्किन से मिले। खरीदने की इच्छा रखनेवाले महानुभाव अपने दर्शनो से एक वृद्ध का गौरव बढाने की किरपा करे।"

मै ठिठक गया। "चलो," मैने सोचा, "स्तेप के इस विख्यात घोडा-पालक चेर्नोबाई के घोडो पर भी एक नजर डालते चले।"

मै फाटक के भीतर जाने ही वाला था कि देखा, आम दस्तूर के खिलाफ, उसमे भीतर से ताला बद था। मैने खटखटाया।

"कौन है? कोई गाहक है क्या?" किसी स्त्री की किकियाती हुई सी आवाज़ आयी।

"हा।"

"आयी, श्रीमान, अभी आयी!"

दरवाजा खुला। पचास वर्ष की एक किसान स्त्री मेरे सामने खडी थी, सिर उघरे, बडे बूट पहने और भेड की खाल का कोट डाले हुए जो आगे से खुला था।

"किरपा कर भीतर चले आइये, दयालु श्रीमान। मै अभी जाकर अनस्तासी इवानिच को खबर करती हू नजार, अरे ओ नजार!"

"क्या है?" अस्तवल से सत्तर बरस की उम्र के एक वृद्ध की मिमियाती आवाज आयी।

"घोडा तैयार कर लो। देखो, एक गाहक आय है।"

वृद्ध स्त्री घर के भीतर दौड गयी।

"गाहक, गाहक," नज़ार जवाब में बुदबुदाया, "अभी तो मै इन सबकी दुमें तक नही धो पाया!"

"ओह, सुन्दर देहात!" मैंने मन में कहा।

"अहोभाग्य, श्रीमान, आपसे मिलकर बडी खुशी हुई," पीठ के पीछे मुझे एक समृद्ध, सुहानी आवाज सुनाई दी। मैंने घूमकर देखा। मेरी आखो के सामने, लम्बा घेरेदार नीला ग्रेटकोट पहने मझोले कद का एक वृद्ध आदमी खडा था। उसके बाल सफेद थे, चेहरा मुसकरा रहा था और उसकी नीली आखें बडी सुन्दर थी।

"तो आपको घोडे की दरकार है? ज़रूर मिलेगा, श्रीमान, ज़रूर मिलेगा। लेकिन ज़रा भीतर न चले आइये और मेरे साथ पहले एक प्याला चाय पीने की किरपा कीजिये।"

मैंने उसे धन्यवाद दिया और चाय पीने से इन्कार किया।

"अच्छा, अच्छा, जैसी आपकी मर्जी। माफ करना श्रीमान, आप जानो, मै ठहरा पुरानी चाल का आदमी।" (चेर्नोवाई शब्दाश पर ज़ोर देते हुए बाते कर रहा था।) "मै तो, आप जानो, हर काम सीधे-सादे ढग से करने का आदी हू। नज़ार, अरे ओ नजार," अन्त में उसने कहा, अपनी आवाज़ को ऊचा उठाने के बजाए हर शब्दाश को सुदीर्घ बनाते हुए।

नज़ार, एक बूढा आदमी, झुर्रिया पड़ी हुई, बाज़ जैसी छोटी नाक और खूटे की शक्ल की दाढी, अस्तबल के दरवाज़े पर आकर खडा हो गया।

"हा तो श्रीमान, आपको किस किस्म के घोडे चाहिए?" चेर्नोवाई ने फिर कहना शुरू किया।

"ज्यादा महगे नही, जो मेरी छतवाली टमटम में हाकने लायक हो।"

"बेशक, आपके काम लायक घोडे हमारे पास है। नज़ार, नज़ार, श्रीमान को वह भूरा आल्ता घोडा तो दिखाओ, वह जो एकदम दरवाजे

के पास खडा है, और वह मुश्की लाल जिसके माथे पर तारा है,या दूसरा मुश्की लाल – जानते हो न, वह 'क्रसोत्का' की नस्ल में से है।"

नज़ार फिर अस्तबल में लौट गया।

"और मय पगहे के उन्हे ले आना, ठीक उसी हालत मे जैसे कि वे है," चेर्नोबाई ने उसके पीछे चिल्लाकर कहा। "मेरे यहा आप वह सब कुछ नही पायेंगे, समझे श्रीमान," अपनी स्वच्छ कोमल नजर मेरे चेहरे पर डालते हुए वह कहता गया, "वह सब जो घोडे के सट्टेबाज़ो के यहा चलता है छरछन्दी कही के! दुनिया-भर की दवाइया – अदरक, नमक, और अनाज के फोक* ओह, खुदा न कराये! मेरे यहा, श्रीमान, आपको हर चीज खुली और खरी मिलेगी! चालबाजी कुछ नही!"

घोडे भीतर लाये गये। मेरे मन नही चढे।

"अच्छा, अच्छा, खुदा के लिए इन्हे वापिस ले जाओ," अनस्तासी इवानिच ने कहा। "हमे दूसरे दिखलाओ।"

दूसरे दिखलाये गये। आखिर मैंने एक को चुना, जो अपेक्षाकृत सस्ता था। दामो को लेकर भाव-ताव हुआ। चेर्नोबाई उत्तेजित नही हुआ। इतनी समझ के साथ उसने बाते की, कुछ इतनी गरिमा के साथ कि मै वृद्ध आदमी का सम्मान किये विना नही रह सका। मैंने उसे बयाना दे दिया।

"हा तो अब," अनस्तासी इवानिच ने कहा, "पुरानी चाल के मुताबिक, इजाज़त हो तो हाथ के हाथ घोडा आपको सौप दू। उसे पाकर आप मुझे धन्यवाद देंगे – इतना ताज़ा है वह, स्तेप का सच्चा छौना। चाहे जिस गाडी में जोत दीजिये, एकदम फिट बैठेगा!"

---

*अनाज का फोक खाकर घोड़ा जल्दी जल्दी मोटा हो जाता है।

उसने क्रॉस का निशान बनाया, अपने ग्रेटकोट का पल्ला हाथ के ऊपर रखा, पगहे को थामा और घोडे को मेरे हाथ में दे दिया।

"अब आप इसके मालिक हो, खुदा की बरकत से। और आप क्या अब भी चाय न पियेंगे, क्यो?"

"नही, इसके लिए हृदय से धन्यवाद। घर लौटने का समय हो गया है।"

"जैसा आप ठीक समझें। कहे तो कोचवान को साथ कर दू? वह घोडे को आपके पीछे पीछे लिवा ले चलेगा।"

"ठीक है। अगर मुमकिन हो तो।"

"खुशी से, श्रीमान, खुशी से। वसीली, अरे, वसीली! जरा श्रीमान के साथ घोडे को लिवा ले जाओ, और इनसे दाम लेते आना। अच्छा तो विदा, श्रीमान, खुदा आपको सलामत रखे।"

"विदा, अनस्तासी इवानिच!" उसका आदमी घोडे को मेरे घर तक लिवा ले गया। अगले दिन पता चला कि उसका घोडा पखा-उखडा है और टाग लग मारती है। मैंने उसे जोतवाने की कोशिश की, वह पीछे हट गया, और जब उसे चाबुक छुवाया गया तो वह चमका, उसने दुलत्तिया झाडी और बाकायदा जमीन पर पसर गया। मैं फौरन चेर्नोवाई की ओर रवाना हुआ। पूछा—"घर पर है?"

"हा।"

"क्या मतलब है इसका?" मैंने कहा, "तुमने मेरे सिर पखा-उखडा घोडा मढ दिया है।"

"सास उखडी हुई है? खुदा न करे!"

"हा, साथ में लगडा भी, और इसके अलावा कुटिल तबीयत का।"

"लगडा? यह मैंने कभी नही जाना। हो न हो, आपके कोचवान ने उसके साथ जरूर गडबड की होगी। खुदा साक्षी है मैं . "

"इधर देखो, अनस्तासी इवानिच, जैसी हालत है, उसमें तुम्हे उसे वापिस ले लेना चाहिए।"

"नही, श्रीमान, गुस्सा न करे। एक वार अहाते से बाहर हुआ कि फिर यह हमारा नही रहता। आपको पहले ही देख लेना चाहिए था, श्रीमान।"

उसके आशय को मैंने समझा, अपने भाग्य के आगे मैंने सिर झुकाया, दिल ही दिल मे हसा और वहा से चल दिया। सौभाग्य से इस सबक के लिए मुझे कोई भारी मूल्य अदा नही करना पडा था।

दो दिन वाद मै वहा से रवाना हो गया, और सात दिन के बाद वापिस लौटते समय मुझे फिर लेवेद्यान में रुकना पडा। कहवाखाने में करीव करीव वही लोग मुझे मिले, और प्रिन्स न० से फिर मुलाकात हुई—विलियर्ड की मेज पर। लेकिन इस वीच खलोपाकोव की स्थिति मे ह्स्वमामूल परिवर्तन हो गया था—प्रिन्स का कृपापात्र अब उसकी जगह सुनहरे वालो वाला युवा अफसर हो गया था। वेचारे भूतपूर्व लेफ्टेनट ने अपने तकिया-कलामो को मेरी मौजूदगी मे एक वार फिर आजमाने की कोशिश की, इस उम्मीद मे कि हो सकता है कि पहले की भाति फिर कुछ सफलता हाथ लग जाय, लेकिन मुसकराना तो दूर, प्रिन्स ने नाक-भौ सिकोडी और अपने कधो को विचकाया। खलोपाकोव का चेहरा लटक आया, एक कोने में वह सिमट गया और छिपी नजर से अपना पाइप भरने लगा

तत्याना बोरीसोवना और उसका भतीजा

सहृदय पाठक, आइये, अपना हाथ मेरे हाथ में दीजिये और मेरे साथ चले चलिये। सुहावना मौसम है। मई का महीना, आकाश स्वच्छ नीलिमा में रगा है। वेंत-वृक्ष की नवजात चिकनी पत्तिया ऐसी चमचमा रही हैं जैसे उनको धोया गया हो। प्रशस्त समतल सडक पर लालीमायल डण्ठलो वाली छोटी छोटी घास पूर्णतया आच्छादित है, जिसे भेडें इतने चाव से चरती हैं। दाहिने और वाए दीर्घ पहाडी ढलुवानो पर हरी रई हल्के हल्के झूम रही है, और छोटे छोटे वादलो की परछाइया लम्वी पतली धारियो में उनके ऊपर तैर रही हैं। दूर नज़र डाले तो जगलो के काले समूह, जोहडो की चमचमाहट और गावो के पीले पेवन्द नजर आते हैं। लार्क-पक्षी, सैकडो की सख्या में, आकाश की ऊचाइया नाप रहे है, चहचहा रहे हैं, सिर के बल डुबकिया लगा रहे हैं, अपनी गरदनो को फैलाये मिट्टी के ढोको के इर्द-गिर्द फुदक रहे हैं। कौवे सडक पर रुककर खडे हो जाते हैं, आपकी ओर देखते हैं, धरती पर दबकर वैठे वैठे आपको अपने पास से गुजर जाने देते हैं, और फिर दो-एक फुदकिया लेकर अलस भाव से अलग हट जाते हैं। खाई के उधर एक पहाडी पर किसान हल चला रहा है। घोडे का एक चितकबरा छौना, डगमगाती टागो से अपनी मा के पीछे दौड रहा है। उसकी दुम के बाल छटे है और छोटी अयाल उलझी हुई है। उसके हिनहिनाने की पैनी आवाज सुनाई देती है। वर्च-वृक्षो के जगल में अब गाडी प्रवेश करती है और ताज़ा गध,

मधुर और तेज़ हम अपने फेफडो में भरते है। हम गांव के छोर पर पहुंच जाते हैं। कोचवान नीचे उतरता है, घोडे अपने नथुने फरफराते है, बाजू के घोड़े इर्द-गिर्द नज़र डालते हैं, वीचवाला घोडा अपनी दुम घुमाता और अपनी गरदन जुए से टेक लेता है चरचर की आवाज के साथ भीमाकार फाटक खुलता है, कोचवान फिर अपनी जगह सभालता है गाडी बढ चलती है। सामने ही गाव है। पाच-एक घरो को पार करने तथा दाहिनी ओर घूमने के वाद एक घाटी मे हम प्रवेश करते है और बाध के किनारे किनारे, एक छोटे जोहड के दूसरे वाजू की ओर गाडी बढ चलती है। वकाइन और सेव के पेडो की गोल चोटियो के पीछे लकडी की एक छत, जो कभी लाल रही होगी, और उसके दो धुवाकश नजर आते है। कोचवान गाडी को वाईं ओर वाडे के साथ साथ रखता है, और तीन बूढे कुत्तो के भौकने की कर्कश तथा चुरमुर आवाज के साथ चौपट खुले फाटक में से गाड़ी को भीतर ले जाता है और चौडे अहाते में तेजी से घूमकर पहले अस्तवल और फिर कोठडी को पीछे छोडता हुआ, बूढी भण्डारिन को सलाम करता है जो भण्डारे की खुली ड्योढी मे आडे रुख जा रही है, और अन्त में रोशन खिडकियो वाले एक अधियारे घर की सीढियो के सामने जाकर रुक जाता है यही तत्याना वोरीसोवना का घर है। और यह देखिये, वह खुद खिडकी खोलकर तथा सिर हिला हिलाकर हमारा अभिवादन कर रही है नमस्कार, श्रीमतीजी!

तत्याना वोरीसोवना पचास वर्ष की महिला है। बडी वडी खूब उभरी हुई भूरी आखें, अपेक्षा से अधिक कुन्दा-सी नाक, लाल गुलावी गाल और दोहरी ठोडी। चेहरा मित्रता और सहृदयता से छलछलाता हुआ। किसी जमाने में विवाह हुआ था, लेकिन जल्दी ही विधवा हो गयी। तत्याना बोरीसोवना बहुत ही विलक्षण महिला है। अपनी छोटी-सी जागीर में रहती है, कभी उसे छोडती नही, अपने पडोसियो से वहुत कम मिलती-जुलती है, सिवा युवा लोगो के न तो अन्य किसी को पसन्द करती है, न ही और

किसी से मिलती है। बहुत ही गरीब भूस्वामियो के घर वह जन्मी थी, और कोई शिक्षा उसने प्राप्त नही की थी। दूसरे शब्दो में यह कि वह फ्रेंच नही जानती, वह कभी मास्को नही गयी – और इन तमाम त्रुटियो के बावजूद, उसका व्यवहार इतना भला और सरल है, अपनी सहानुभूतियो तथा विचारो मे वह इतनी उदार है, और यह देखकर कि देहात की अल्प साधनो वाली महिलाओ के पक्षपातो से वह इतनी मुक्त है कि उसको देखकर अचरज होता है और सचमुच, एक ऐसी महिला जो बारहो महीने देहात में रहे और गपशप न करे, न अपना दुखडा रोती फिरे और न ही किसी की खुशामद करे, न जिज्ञासा से उत्तेजित हो, न उदासी में डूबी रहे और न कौतुक से उमगती-छलछलाती फिरे – तो ऐसी स्त्री सचमुच एक अजूबा है। आम तौर से वह भूरे टाफ्टा का गाउन, सिर पर सफेद टोपी जिसके साथ लम्बे बैगनी फीते लगे होते हैं, पहनती है। अच्छा भोजन वह पसन्द करती है, लेकिन अति की सीमा तक नहीं। अचार-मुरब्बे डालने, फल सुखाने और सब्जियो को नमक लगाने आदि का काम उसने भण्डारिन पर छोड़ रखा है। "तो फिर," आप पूछ सकते हैं, "वह दिन-भर क्या करती है? पढा करती है?" नही, वह पढा नहीं करती, और सच पूछो तो, पुस्तके उसके लिए लिखी ही नही गयी हैं। जब उसके पास मेहमान नही होते, तब तत्याना बोरीसोवना अपने-आप अकेली खिडकी के पास बैठी हुई जाडो में मोजे बुना करती है। गर्मियो में वह बाग में चली जाती है, पौधो को लगाती और फूलो को सींचती है, घंटो तक अपनी बिल्लियो के साथ खेलती और कबूतरो को चुग्गा डालती है। अपनी जागीर की देख-रेख का काम वह ज्यादा नही करती। लेकिन जब कोई मेहमान उसके यहा आ जाता है – कोई युवा पडोसी जिसे वह पसन्द करती है – तब तत्याना बोरीसोवना में एक स्फूर्ति की लहर दौड जाती है। वह उसे बैठाती है, उसके लिए चाय ढालती है, उसकी बाते सुनती है, हंसती-हसाती है, कभी कभी उसके गालो को थपथपाती है,

नसीहत भी बहुत कम बांटती है। मुसीबत या शोक में वह ढारस बधाती है और अच्छी सलाह देती है। जाने कितने लोगो ने अपने पारिवारिक झगड़ो और अपने हृदय की वेदनाओ को उनके सामने उडेलकर रखा है, उसके कधो पर सिर रखकर उन्होने आसू बहाये है! अनेक बार ऐसा होता है कि वह अपने आगन्तुक के सामने बैठ जाती है, मृदु भाव से अपनी कोहनियो पर झुकी हुई, और इतनी सहानुभूति से वह उसके चेहरे की ओर देखती है, इतने दुलार के साथ वह मुसकराती है, कि वह दिल ही दिल मे कहे बिना नही रह सकता—"तत्याना बोरीसोवना, तुम कितनी प्यारी, और कितनी भली हो! जी चाहता है, तुम्हारे सामने अपना हृदय उडेलकर रख दू।" उसके छोटे, सुहावने कमरे देखकर हृदय आनन्द और स्निग्धता से भर उठता है। उसके घर में, यदि मैं कह सकता हू, हमेशा सुहावना मौसम रहता है। तत्याना बोरीसोवना एक अद्भुत स्त्री है, लेकिन वह किसी को अचम्भे में नही डालती। उसकी सुसगत सहज बुद्धि, उसकी उदारता और दृढता दूसरो के सुख-दुख में उसकी हार्दिक सहानुभूति—एक शब्द मे उसके ये सब गुण उसमें इतने स्वाभाविक है कि वे जन्मजात मालूम होते है, जैसे उन्हे प्राप्त करने में उसे कोई प्रयास न करना पडा हो। कभी खयाल तक नही होता कि वह कुछ और भी हो सकती है, और इसलिए उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की आवश्यकता कभी महसूस नही होती। युवा लोगो की चुहलो और शरारतो को वह खास तौर से मुग्ध भाव से देखती है—अपने हाथो को जोडकर वक्ष के नीचे सटा लेती है, सिर को पीछे की ओर झटका देती है, अपनी आखो को सिकोडती और बैठी हुई उन्हे देखती और मुसकराती रहती है, और फिर—अचानक—उसास लेते हुए कह उठती है—"ओह, बच्चो, मेरे बच्चो!" कभी कभी जी करता है कि लपककर उसके पास पहुच जाऊ, उसके हाथो को अपने हाथो में लू और उससे कहू—"सुनो, तत्याना बोरीसोवना, तुम नही जानती कि तुम क्या हो? अपनी इस सारी सादगी और शिक्षा के अभाव के बावजूद

तुम एक अद्भुत स्त्री हो!" उसके नाम तक में एक परिचित मधुर गूज मालूम होती है। उसका उच्चारण हृदय में खुशी का सचार करता है, और आखो के सामने तुरत एक मृदु मुसकान तैरने लगती है। मिसाल के लिए, जाने कितनी वार, किसानो से मुझे यह पूछने का इत्तफाक हुआ है—"क्यो भाई, ग्राचोवका पहुचने के लिए कैसे-कहा जाना होगा?"—"सुनो श्रीमान, पहले आप व्याजोवोये जाय, और वहा से तत्याना वोरीसोवना के यहा पहुचे, और तत्याना वोरीसोवना के यहा कोई भी आपको आगे का रास्ता वता देगा।" और तत्याना वोरीसोवना का नाम जव किसान लेता है तो उसका सिर एक खास अन्दाज में हिलता है। उसके पास नौकर-चाकर वहुत कम है, जैसे कि उसके साधन। घर, लॉण्ड्री, स्टोर और रसोई की देख-रेख भण्डारिन अगाफ्या करती है, जो कभी उसकी आया थी। वह स्वभाव की भली, आसू भरी और दात-विहीन जीव है। उसके तहत में दो हृष्ट पुष्ट लडकिया है जिनके भरे-पूरे गुलावी गाल अन्तोनोव सेवो की याद दिलाते है। अरदली, वटलर और वुफे के कर्मचारी की ड्यूटी पोलिकार्प निवाहता है। वह सत्तर वर्ष का एक असाधारण वृद्ध है, वहुत ही मौजी आदमी, कितावी ज्ञान से भरपूर, किसी जमाने में वायोलिन वजाता था, विग्रोत्ती का उपासक है, नेपोलियन को—या वोनापार्ती को जैसा कि वह उसे कहता था—अपना निजी शत्रु समझता है और वुलवुलो का वेहद शौकीन है। उसके कमरे में हमेशा पाच या छ वुलवुलें रहती है। वसन्त के शुरू में वह लगातार कई कई दिन तक पिजरो के पास वैठा रहता है, उनकी पहली कूक सुनने के लिए, और सुनने के वाद अपने चेहरे को दोनो हाथो से ढक लेता है और कराह उठता है—"ओह, वेदना, कितनी वेदना!" और उसकी आखो से छलछल आसू गिरने लगते है। पोलिकार्प का पोता वास्या काम में उसका हाथ वटाता है। घुघराले वाल, पैनी आखें। वारह वर्ष के अपने पोते को पोलिकार्प खूव चाहता है, और सुवह से लेकर रात तक उसपर भुनभुनाता है। वह उसकी शिक्षा-दीक्षा

भी करता है। "वास्या," वह कहता है, "कहो–बोनापार्ती डाकू है"। "तो मुझे तुम क्या दोगे, बाबा?"–"क्या दूगा? कुछ भी नही बोलो, तुम कौन हो? रूसी हो कि नही, क्यो?"–"मै तो अमचेन्स्की हू, बाबा, अमचेन्स्क* में मै पैदा हुआ था।"–"ओह, गधे की दुम! लेकिन अमचेन्स्क कहा है?"–"मुझे क्या पता?"–"ऊह, बेवकूफ, अमचेन्स्क रूस में ही तो है।"–"रूस मे ही सही तो फिर?"–"तो फिर? स्वर्गीय प्रिन्स महामहिम मिखइल इलारिओनोविच गोलेनीश्चेव-कुतूजोव स्मोलेन्स्की ने, भगवान की मदद से शान के साथ बोनापार्ती को रूस से खदेड बाहर किया था। उसी घटना पर तो यह गीत रचा गया है–'भूल गया नाच-गान, भूल गया छकडी' क्यो, समझ मे आया कुछ? उसने तुम्हारी पितृभूमि को उन्मुक्त किया था।"–"किया होगा, मुझे इससे क्या!"–"ओह, गोबर-गणेश! अरे बुद्धू, अगर महामहिम प्रिन्स मिखइल इलारिओनोविच ने बोनापार्ती को निकाल बाहर न किया होता तो कोई फ्रासीसी इस समय तुम्हारी खोपडी पर डडे से नगाडा बजाता होता। वह आकर तुम्हारे सिर पर सवार हो जाता और कहता–'कोमान वू पोर्ते वू?'** और तुम्हारी कनपटी पर पटाक से जड देता!"–"लेकिन मैं ऐसा घूसा जमाता कि उसकी तोद पिचक जाती!"–"लेकिन वह बोलता–'बोनजूर, बोनजूर, वेनें इसी!'*** और सिर के बालो को खीचता।"–"और मैं उसकी टागें तोड देता, अटेरन-सी टागे!"–"ठीक, बिल्कुल ठीक, उनकी टागें तो सचमुच अटेरन-सी होती हैं लेकिन अगर, मान लो, वह तुम्हारे हाथ बाध लेता तो?"–"मै बाधने दू तब न, मदद

---

*साधारणजन म्त्सेन्स्क शहर को अमचेन्स्क कहते हैं और उसके निवासियो को–अमचेन्स्की। म्त्सेन्स्क निवासी बहुत चतुर होते हैं इसलिए हमारे यहा कहावत है कि 'शत्रु के घर अमचेन्स्की जाकर रहे'।

**तुम कैसे हो?

***नमस्ते, नमस्ते, इधर आओ।

के लिए मैं कोचवान मिखेई को बुला लेता।"—"लेकिन, वास्या, मिखेई के आ जाने पर फ्रासीसी उससे जबर पडे तो?"—"ऊह, जबर कैसे पडेगा? देखते नही, मिखेई कितना तगडा है।"—"अच्छा, अच्छा, तो तुम उसके साथ क्या करते?"—"हम उसकी पीठ पर घूसा जमाते।"—"और वह चिल्ला उठता—'पार्डो, पार्डो, सीवूपले।"*—"हम उससे कहते—'वन्द करो अपना यह सीवूपले, फ्रासीसी कही का।'"—"शावाश, वास्या। हा तो अब जोरदार आवाज मे कहो—'वोनापार्ती डाकू है।'"—"तो वावा, तुम मुझे कुछ शक्कर दो।"—"ओह, वदमाश कही का।"

पडोस की महिलाओ से तत्याना वोरीसोवना का वहुत ही कम उठना-बैठना है। वे उससे मिलने के लिए उत्सुक नही रहती, और न ही यह उन्हे मिलना चाहती है और वह उन्हे खुश करना नही जानती। उनकी टे-टे सुनकर वह ऊघने लगती है। वह चौंक उठती है, अपनी आखो को खुला रखने की कोशिश करती है, पर फिर ऊघने लगती है। सच तो यह है कि सामान्यत तत्याना बोरीसोवना स्त्रियो को पसन्द नही करती। उसका एक मित्र था, बहुत ही भला, निष्कण्टक, युवा। उसकी एक बहिन थी, अडतीस वर्षीया चिर-कुमारी। स्वभाव की भली, लेकिन अतिरजित, बनावटी और उन्मत्त। उसका भाई अक्सर उससे अपनी पडोसिन का जिक्र किया करता था। एक दिन—सुबह का सुहावना वक्त था—हमारी इस चिर कुमारी ने अपना घोडा कसवाया और किसी से कुछ कहे बिना तत्याना बोरीसोवना के घर की ओर चल पडी। अपना लम्बा गाउन पहने, सिर पर टोपी रखे, हरी जाली ओढे और घुघराले बालो को लहराये, उसने हाल में प्रवेश किया और भय से त्रस्त वास्या के पास से गुजरती—वह उसे जल-परी समझ बैठा था—भागती हुई दीवानखाने में जा धमकी। तत्याना बोरीसोवना ने भी भयभीत हो उठने की कोशिश की, लेकिन उसकी टागो ने जवाब दे दिया। "तत्याना वोरीसोवना," आगन्तुका ने विनम्र आवाज में कहना

---

*माफ कीजिये, माफ कीजिये, कृपया।

शुरू किया, "मेरी बेतकल्लुफी माफ करना। मैं तुम्हारे मित्र अलेक्सेई निकोलायेविच क० की बहिन हूं, और मैंने तुम्हारे बारे मे उससे इतना कुछ सुना कि मैं रह न सकी, और मैंने तुमसे मिलने का निश्चय कर लिया।"–"बडी कृपा अहोभाग्य," आश्चर्यचकित मालकिन ने बुदबुदाकर कहा। आगन्तुका ने अपना टोप उतारा, अपने घुघराले बालो को झटका दिया, तत्याना बोरीसोवना के पास आ विराजी और उसका हाथ उसने अपने हाथ में थाम लिया। "तो यह है वह," भावो से ओतप्रोत आवाज में उसने कहना शुरू किया, "तो यह है वह मधुर, स्वच्छ, शुभ्र और पवित्र आत्मा! यह है वह, एक ऐसी महिला जो एकबारगी इतनी सरल और इतनी गहरी है! ओह, कितनी खुश हू मैं! कितनी खुश हू मैं! ओह, खूब प्यार करेंगे हम दोनो एक दूसरे को! अब मैं आखिर चैन की सास ले सकती हू। मेरी कल्पना ठीक निकली–ठीक इसी रूप मे मैं सदा इसे देखा करती थी," फुसफुसाते हुए उसने अन्त में कहा, अपनी आखो को एकटक तत्याना बोरीसोवना की आखो मे जमाये हुए। "क्यो, आप मुझसे नाराज तो नही है न, मेरी प्यारी सहृदय मित्र?"–"नही, मैं सचमुच खुश हू। चाय तो लेगी न?" इसपर आगन्तुका सरक्षण के भाव से मुसकरायी–"Wie wahr, wie unreflectiert,"* जैसे वह मन ही मन अपने-आपसे बुदबुदायी। "आओ, तुम्हे अपने गले से तो लगा लू, मेरी प्रिय!"

चिर-कुमारी तीन घटो तक तत्याना बोरीसोवना के यहा जमी रही, और एक क्षण के लिए उसकी जुबान ने विश्राम नही लिया। उसने अपनी नवपरिचिता को यह समझाने में कोई कसर नही छोडी कि मानवता के लिए वह कितनी बडी वरदान है। इस अप्रत्याशित आगन्तुका के विदा होते ही बेचारी जमीदारिन ने स्नान किया, लीपा के फूलो से बनी चाय पी और अपने बिस्तरे पर जाकर पड रही। लेकिन अगले दिन चिर-कुमारी फिर आ विराजी, चार घटे तक जमी रही और जाते समय वादा कर गयी कि

* कैसा सच्चा, कैसा सरल हृदय!

वह रोज़ तत्याना बोरीसोवना के दर्शन करने आया करेगी। उसका इरादा – ज़रा ध्यान तो दीजिये – खुद उसी के शब्दो में, इतनी समृद्ध प्रकृति को विकसित करना, उसकी शिक्षा को पूर्णता तक पहुचाना था, और शायद सचमुच वह उसकी जान ही ले लेती अगर वह, प्रथमत एक पखवारे के भीतर अपने भाई की इस मित्र के बारे में 'पूर्णतया' निराश न हो जाती, और दूसरे अगर वह एक युवा विद्यार्थी के साथ – जो कुछ दिनो के लिए आया था – प्रेम-जाल में न फस जाती। उसके साथ उसने, बडी उत्सुकता और कर्मठता के साथ, एकबारगी पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया। अपने पत्रो मे वह उसे – जैसा कि होता है – ऊचे और पवित्र जीवन का वाहक मानती थी, उसके लिए एकमात्र बलि के रूप मे अपने-आपको न्योछावर करने के लिए तैयार थी, केवल इतना चाहती थी कि वह उसकी बहिन बनी रहे। अपने इन पत्रो में वह प्रकृति का अन्तहीन वर्णन करती थी, ग्येटे, शिलर, बेत्तिना और जर्मन दर्शन के हवाले देती थी, यहा तक कि अन्त में उसने उस अभागे युवक को निराशा की घोरतम स्थिति में पहुचा दिया। लेकिन युवावस्था ने उभार लिया, एक सुहावनी सुबह जब वह उठा तो 'अपनी बहिन और श्रेष्ठतम मित्र' के प्रति उसका हृदय इतनी तीव्र घृणा से उद्वेलित था कि आवेग में आकर उसने अपने अरदली को मार ही डाला होता, और इसके बाद भी एक लम्बे अर्से तक उसका क्रोध बना रहा। उच्च और निस्वार्थ प्रेम का हल्के से हल्का आभास भी उसे भडकाने के लिए काफी होता। तब से तत्याना बोरीसोवना और भी ज्यादा सचेत रहने लगी कि पास-पडोस की महिलाओ के साथ किसी भी प्रकार की घनिष्ठता न होने पाय।

लेकिन शोक, इस धरती पर चिरस्थायी कुछ भी नही होता। अपनी सहृदय पडोसी महिला के जीवन के जिस ढग का यहा मैंने वर्णन किया है, वह सब अतीत की चीज बन चुका है। वह शान्ति जो उसके घर में विराजती थी सदा के लिए नष्ट हो चुकी है। एक साल से भी अधिक

अर्से से अब उसके साथ एक भतीजा रह रहा है, पीटर्सबर्ग का एक कलाकार। यह परिवर्तन इस प्रकार हुआ।

आठ साल हुए तत्याना बोरीसोवना के साथ बारह वर्ष का एक लडका रहता था। वह अनाथ था, उसके भाई का सुपुत्र। अन्द्रयूशा उसका नाम था। बडी-बडी स्वच्छ नमदार आखे, छोटा-सा मुह, सुघर नाक, और सुन्दर ऊचा माथा। धीमी मीठी आवाज में वह बोलता था, साफ सुथरे कपडे पहनता था और शिष्टता से व्यवहार करता था। आगन्तुको को ध्यान से देखता और लाड जताता था, एक अनाथ की सवेदनशीलता के साथ अपनी बुआ का हाथ चूमता था, और इससे पहले कि कोई अपने-आपको व्यक्त करने का मौका पा सके, वह उसके लिए आरामकुर्सी लाकर रख देता था। शैतानी हरकतो से वह बेगाना था और कभी शोर नही मचाता था। हाथ मे किताब लिये वह कोने मे अकेला बैठा रहता, बहुत ही शान्ति और सलीके के साथ, यहा तक कि कभी अपनी कुर्सी की पीठ तक का सहारा न लेता। जब कोई मेहमान आता तो अन्द्रयूशा उठकर खडा हो जाता, कायदे से मुसकराता तो उसके गाल लाल हो जाते, और जब आगन्तुक चला जाता तो वह फिर बैठ जाता, अपनी जेब में से एक ब्रुश और एक आईना निकालता, और अपने बालो को संवारता। एकदम शुरू के सालो में ही वह चित्र बनाने की अपनी रुचि का परिचय देने लगा था। जब कभी कागज का कोई टुकडा उसके हाथ पड़ जाता, तो अगाफ्या भण्डारिन के पास जाकर वह तुरत कैंची की माग करता, सावधानी के साथ काटकर कागज का एक चौरस टुकडा तैयार करता, उसके चारो ओर हाशिया खीचता और काम मे जुट जाता। वह एक आख बनाता जिसकी पुतली भीमाकार होती, या यूनानी नाक या कोई घर बनाता जिसकी चिमनी में से डाट निकालने के पेचकश की भाति धुवा निकलना होता या फिर कुत्ते का चित्र बनाता जिसमे कुत्ते का मुह सामने की ओर होता जो कुत्ते से अधिक बेंच की भाति नज़र आता, या पेड का चित्र

खीचता जिसपर दो कबूतर बैठे होते और नीचे दस्तखत करता—'अमुक वर्ष में अमुक दिन अन्द्रेई बेलोवज़ोरोव द्वारा मालिये ब्रीकि गाव में अकित'। तत्याना बोरीसोवना के जन्मदिन से पहलेवाले पखवारे में वह खास अध्यवसाय से परिश्रम करता, सबसे पहले वह अपनी बधाइया देता और गुलाबी फीते से बधा कागज का एक पुलिन्दा उसको भेट करता। तत्याना बोरीसोवना अपने भतीजे को चूमती, फीते की गाठ खोलती, पुलिन्दे को खोलती और दर्शक की उत्सुक आखो के सामने उसे पेश कर दिया जाता—सीपिया रग में साहस के साथ बनाया हुआ मन्दिर का एक चित्र, सतूनो-खभो के साथ, और बीच में एक वेदी। वेदी के ऊपर एक जलता हुआ हृदय और एक हार रखा होता, और ऊपर, एक लहरिया पट्टी पर, सुस्पष्ट अक्षरो में लिखा होता—'अपनी बुआ और हितैषिणी तत्याना बोरीसोवना को, उनके फरमानबरदार और प्रिय भतीजे की ओर से, अत्यन्त प्रेम से भेंट'। तत्याना बोरीसोवना एक बार फिर उसे चूमती और चादी का एक रूबल उसे देती। यो, सच पूछो तो, वह उसके प्रति कोई हार्दिक प्रेम अनुभव नही करती थी। अन्द्रयूशा का चापलूसी का तौर-तर्ज उसे बहुत अच्छा भी न लगता था। उस बीच अन्द्रयूशा बडा होता जा रहा था। तत्याना बोरीसोवना ने उसके भविष्य के बारे में सोचना शुरू किया। तभी एक अप्रत्याशित घटना ने इस समस्या को हल कर दिया।

आठ साल पहले एक दिन श्री बेनेवोलेन्स्की, प्योत्र मिखाइलिच नाम के एक सज्जन उससे मिलने आये। वह एक सम्मान-प्राप्त कोलीजिएट कौन्सिलर थे। श्री बेनेवोलेन्स्की, किसी ज़माने में, जिला के एक निकटतम कस्बे में सरकारी पद पर नियुक्त थे और बडी तत्परता के साथ तत्याना बोरीसोवना के यहा हाज़िरी दिया करते थे। इसके बाद वह पीटर्सबर्ग चले गये, किसी मत्रालय में उन्होने प्रवेश किया और एक अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण ओहदे पर वह पहुच गये। अपने सरकारी काम के सिलसिले में वह अक्सर दौरा किया करते। ऐसे ही एक दौरे के दौरान में उन्हे अपनी पुरानी मित्रता

की याद हो आयी और वह उससे मिलने के लिए आये। उनका इरादा था कि अपने सरकारी झझटो को ताक पर रख, दो एक दिन वह 'प्रकृति की शान्तमयी गोद में' विश्राम करेगे। तत्याना वोरीसोवना ने अपनी हस्वमामूल हार्दिकता के साथ उनका स्वागत किया और श्री बेनेवोलेन्स्की

लेकिन, प्रिय पाठको, इससे पहले कि हम कहानी के बाकी हिस्से को लेकर आगे बढें, आइये, इन नयी विभूति से आपका परिचय करा दें।

मि० बेनेवोलेन्स्की स्थूल काय, मझोले कद और मृदु शक्ल-सूरत के आदमी थे। छोटी और टुइया-सी उनकी टागें थी, और छोटे तथा मोटे मोटे उनके हाथ थे। वह एक खुला-सा और अत्यन्त बना-चुना फ्रॉक-कोट पहनते थे, ऊचा और चौडा गुलूबद लगाते थे, बर्फ की भाति सफेद बनयान पहनते और उनकी रेशमी वास्कट पर सोने की जजीर झूलती रहती थी। अपनी बडी उगली में हीरे की अगूठी पहनते थे तथा सिर पर सफेद बनावटी बाल लगाते थे। वह आत्म-विश्वास के साथ तथा समझाते हुए से बोलते थे, दबे पाव चलते थे। सुहावने अन्दाज में वह मुसकराते थे, सुहावनी नजर से देखते थे और सुहावने अन्दाज़ मे अपनी ठोडी को अपने गुलूबद पर टिकाये रहते थे। कुल मिलाकर यह कि वह, सचमुच, सुहावने व्यक्तित्व के धनी थे। खुदा ने उन्हे हृदय भी दिया था, कोमलतम हृदय। न उन्हे आसू बहाते देर लगती, न आनन्दातिरेक में हिलोरे लेने में। इसके अलावा उनका रोम-रोम कला के प्रति निस्वार्थ अनुराग से ओत-प्रोत था — हा, एकदम निस्वार्थ। यह इसलिए कि, अगर सच पूछो तो, मि० बेनेवोलेन्स्की कला के बारे में कतई कुछ नही जानते थे। और सचमुच, अचरज होता है यह देखकर कि कहा से, किन रहस्यमय और अज्ञात शक्तियो की प्रेरणा से, यह अनुराग उनमें आ समाया। वह एक सज्जन, करीने से रहनेवाले आदमी थे, परन्तु उनमें प्रतिभा का अभाव था। एक साधारण-सा आदमी जिस जैसे लोग हमारे यहा रूस में प्रचुर संख्या में पाये जाते है।

कला और कलाकारो के प्रति इन लोगो का अनुराग एक ऐसी छिछली भावुकता का सचार करता है कि उसे व्यक्त करना कठिन है। उनके साथ उठते-बैठते और बाते करते बडी कोफ्त होती है। लगता है जैसे वे निरे काठ के उल्लू हो, शहद मे लिपे-पुते। वे मिसाल के लिए, रेफाइल को रेफाइल या कोरेंजिओ को कोरेंजिओ कभी नही कहते। "दैवी सानज़ियो, अनुपम आल्लेर्गी," वे बुदबुदाते है, सो भी स्वरो को हमेशा चिकडाते हुए। हर दम्भी, बनावटी और अत्यन्त साधारण तलछटिये को वे प्रतिभा कहकर पुकारते है। "इटली का नील आकाश", "दक्खिन के लीमू", "ब्रेन्ता के तटो पर सुहावने समीर के झोके" हर घडी उनकी ज़ुबान पर नाचा करते है। "ओह, वान्या, वान्या।" या "ओह, साशा, साशा।" गहरी भावुकता के साथ वे एक-दूसरे से कहते है, "चलो, दक्षिण चले. हमारे हृदयो में यूनान की, प्राचीन यूनान की, आत्मा बसती है।" प्रदर्शनियो में उन्हे देखा जा सकता है, किन्ही रूसी चित्रकारो की कृतियो के सामने खडे हुए (ये महानुभाव, ध्यान देने की बात है, अधिकाशत यो गहरे देशभक्त होते है)। पहले वे दो-एक डग पीछे हटते है, अपने सिरो को पीछे की ओर फेंकते है। इसके बाद वे फिर चित्र के निकट जाते है। उनकी आखो में चिकनी तरलता तैरती है। "क्या चीज है, ओह मेरे भगवान।" अन्त में, भावुकता से चूर आवाज़ में वे कहते है—"इनमें आत्मा है, आत्मा। ओह, क्या भाव है, कितनी भावना है। ओह, जैसे आत्मा निकालकर रख दी है। भरपूर और घनी आत्मा। और इसकी सूझ-बूझ। ओह, पहुचा हुआ कलाकार ही ऐसी सूझ-बूझ दिखा सकता है!" और ओह, वे चित्र जो खुद उनके दीवानखानो को सुशोभित करते है। ओह, वे कलाकार जो साझ को उनके यहा आते है, चाय पीते है, और उनकी बाते सुनते है। और खुद उनके कमरो के दृश्यचित्र जो कि वे प्रस्तुत करते है—दाई ओर झाड़ू पडा हुआ, पालिश किये हुए फर्श पर धूल का एक छोटा-सा ढेर, खिडकी के पास मेज़ पर पीतवर्ण

समोवार, और सिर पर टोपी तथा ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए खुद गृहस्वामी, सूरज की धूप की एक उज्ज्वल रेखा उनके गाल पर तैरती हुई! ओह, लम्बे वालो वाले कला के वे लाले जो, अपने चेहरो पर बल खाती तथा दूसरो के प्रति नफरत भरी मुसकान सजोये, उनके इर्द-गिर्द मडराते है! ओह, वे युवती सुन्दरिया हरी आभा से युक्त अपने चेहरो को लिये पियानो पर चिचियाती है! और क्यो न हो, यही हम रूसियो का चिरप्रचलित कायदा है। आदमी केवल एक ही कला का प्रेमी वनकर नही रह सकता—उसे तो सभी चाहिए। और सो, इसमे अचरज की वात नही अगर ये महानुभाव अपने सवल सरक्षण मे रूसी साहित्य को भी समेटते नजर आय—खास तौर से नाटक साहित्य को 'जाकोब सन्नाजार्स' जैसी पुस्तके उन्ही के लिए लिखी गयी है। अप्रशसित प्रतिभा का समूची दुनिया के खिलाफ सघर्ष—जो हजारो वार चित्रित हो चुका है—उनके हृदयो को अभी भी गहराई से छूता है

मि० वेनेवोलेन्स्की के आगमन के अगले दिन, चाय के समय, तत्याना वोरीसोवना ने अपने भतीजे से कहा कि मेहमान को ज़रा अपने चित्र तो लाकर दिखाये। "अरे, तो क्या यह चित्र वनाता है?" अचरज का भाव दिखाते हुए मि० वेनेवोलेन्स्की ने कहा और फिर दिलचस्पी के साथ अन्द्रयूशा की ओर घूम गया। "हा, यह चित्राकन करता है," तत्याना वोरीसोवना ने कहा, "चित्रो का इसे खूब शौक है। और अकेले वह यह सव करता है, विना किसी मास्टर के!"—"ओह, तो दिखाओ भाई, मुझे दिखाओ!" मि० वेनेवोलेन्स्की ने वरवस कहा। अन्द्रयूशा, मुसकराता और लजाता, अपनी स्कैचवुक लेकर आगन्तुक के निकट आ गया। मि० वेनेवोलेन्स्की ने, पारखी के अन्दाज़ में, उसके पन्ने पलटने शुरू किये। "खूव, मेरे युवा दोस्त," अन्त में उसने राय प्रकट की—"खूव, वहुत खूव!" और उसने अन्द्रयूशा का सिर सहलाया। अन्द्रयूशा ने उसके हाथ को वीच में रोककर उसे चूमा। "सोचो तो, कितनी प्रतिभा

है इसमें। मै तुम्हे बधाई देता हू, तत्याना बोरीसोवना!"—"लेकिन मैं भी क्या करू, प्योत्र मिखाइलिच? इसके लिए यहा कोई मास्टर नही मिलता। और नगर से किसी को बुलाना बडा खर्चीला होगा। हमारे पडोसी अरतामोनोव के यहा एक ड्राइग-मास्टर है, और लोग कहते है कि बहुत ही अच्छा है, लेकिन उसकी मालकिन ने पाबन्दी लगा रखी है कि वह बाहरवालो को न सिखाये—कहती है कि उसकी रुचि खराब हो जायेगी।"—"हू-ऊ," मि० बेनेवोलेन्स्की ने कहा, कुछ सोचा, और कनखियो से अन्द्रयूशा की ओर देखा। "अच्छा, यह हम तय कर लेगे," अपने हाथो को मलते हुए उसने कहा। उसी दिन उसने तत्याना बोरीसोवना से अनुरोध किया कि वह अकेले में उससे बात करने की इजाजत चाहता है। दरवाजे बन्द कर दोनो एक कमरे में बैठ गये। आधे घटे बाद उन्होने अन्द्रयूशा को बुलाया। अन्द्रयूशा ने भीतर प्रवेश किया। मि० बेनेवोलेन्स्की खिडकी के पास खडा था। उसका चेहरा कुछ लाल हो उठा था और खुशी से उसकी आखें चमक रही थी। तत्याना बोरीसोवना एक कोने में बैठी अपनी आखो को पोछ रही थी।

"इधर आओ, अन्द्रयूशा," अन्त में उसने कहा—"और देखो, प्योत्र मिखाइलिच का शुक्रिया अदा करो। वह तुम्हे अपने सरक्षण में रखेंगे, और तुम्हे पीटर्सबर्ग ले जायेंगे।"

अन्द्रयूशा को जैसे एकदम काठ मार गया।

"मुझे सच-सच बताओ," गौरव और सरक्षण की भावना से भरी आवाज मे मि० बेनेवोलेन्स्की ने कहना शुरू किया, "बोलो, मेरे युवा मित्र, क्या तुम कलाकार बनना चाहते हो? क्या तुम कला की पवित्र सेवा में अपने-आपको न्योछावर कर सकते हो?"

"मै कलाकार बनना चाहता हू, प्योत्र मिखाइलिच," अन्द्रयूशा ने कापती हुई आवाज़ मे घोषणा की।

"बडी खुशी हुई, यह सुनकर। इसमें शक नही," मि० बेनेवोलेन्स्की

कहते गये, "अपनी आदरणीय बुआ से अलग होना तुम्हारे लिए कठिन होगा। तुम्हे उनका जी-जान से बहुत बहुत कृतज्ञ होना चाहिए।"

"मैं अपनी बुआ को बहुत चाहता हू," अन्द्रयूशा ने बीच में ही अपनी आखो को मिचमिचाते हुए कहा।

"बेशक, बेशक, यह सहज ही समझा जा सकता है, और यह तुम्हारे लिए बड़े गौरव की बात है, लेकिन, दूसरी ओर, भविष्य में अपने उस सुख का सफलता का . "

"आओ, मुझे गले से लगाओ, अन्द्रयूशा!" नेकदिल जमीन्दारिन बुदबुदायी, और अन्द्रयूशा उसके गले से लिपट गया। "बस, बस, अब अपने इन हितैषी का शुक्रिया अदा करो।"

अन्द्रयूशा ने मि० बेनेवोलेन्स्की के पेट का आलिगन किया और पजो के बल खडा होकर उनके हाथ तक—जिसे हटाने मे उसके हितैषी ने कोई उतावली प्रकट नही की—जैसे तैसे अपना मुह ले गया, और उसे चूमा। उसे, बिलाशक, बच्चे का मन रखना था, और सच पूछो तो, वह अपना मन परचाना चाहता था भी। इसके दो दिन बाद बेनेवोलेन्स्की विदा हो गया, और अपने इस नये 'धरोहर' को, शरणागत को, अपने साथ लेता गया।

अपनी अनपस्थिति के पहले तीन वर्षों मे अन्द्रयूशा अक्सर पत्र लिखता, और कभी कभी साथ मे खत में चित्र भी डाल देता। बीच बीच मे मि० बेनेवोलेन्स्की भी अपने दो-चार शब्द जोड देता, अधिकतर अनुमोदन प्रकट करते हुए। इसके बाद पत्रो की सख्या अधिकाधिक कम होती गयी, और अन्त में उनका आना बिल्कुल ही बन्द हो गया। इस तरह पूरे एक साल से उसे अपने भतीजे की कोई खैर-खबर नही मिली थी। तत्याना बोरीसोवना चिन्तित होने लगी, जबकि एक दिन, अचानक, उसे निम्न पुर्जा मिला—

"प्रियतम बुआ!

मेरे संरक्षक प्योत्र मिखाइलिच का, तीन दिन हुए देहान्त हो गया। लकवे के गहरे आघात ने मुझे अपने एकमात्र सहारे से वचित कर दिया।

बेशक, मै अब बीस वर्ष का होनेवाला हू, और पिछले सात सालो में मैंने काफी तरक्की की है। अपनी प्रतिभा मे मुझे अन्यतम विश्वास है, और उसके सहारे मैं अपनी रोजी कमा सकता हू। मैं निराश नही हू। फिर भी, अगर हो सके तो, शुरू की जरूरतो के लिए ढाई सौ रूबल मुझे भेज दो। अपने हाथ पर मेरा चुम्बन स्वीकार करो। मैं हू तुम्हारा वही "
आदि आदि।

तत्याना बोरीसोवना ने अपने भतीजे को ढाई सौ रूबल भेज दिये। दो महीने बाद उसने और रकम की माग की। उसके पास जो कुछ था, एक एक कोपेक बटोरकर उसने उसे भेज दिया। छ सप्ताह भी न बीते होगे कि उसने तीसरी बार पैसे की फिर फरमाइश की, प्रत्यक्षत' रगो के लिए। प्रिन्सेस तेर्तेरेशेनेवा का वह छवि-चित्र बना रहा था। सो इसके लिए रग खरीदने थे। तत्याना बोरीसोवना ने इन्कार कर दिया। "ऐसी हालत में," उसने उसे लिखा, "मेरा इरादा है कि तुम्हारे पास आकर देहात में अपना स्वास्थ्य ठीक करू।" और उसी साल मई महीने में अन्द्रयूशा, सचमुच, मालियें ग्रीकि में लौट आया।

तत्याना बोरीसोवना एकाएक, कुछ क्षणो तक, उसे पहचान नही सकी। उसके पत्रो से तो ऐसा लगता था कि वह एकदम दुबला हो गया होगा, लेकिन उसने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट, चौडे-चकले कधो वाला जीव उसके सामने खडा है। खूब बडा लाल चेहरा, और चिकने घुघराले बाल। पीतवर्ण दुबला-पतला अन्द्रयूशा लम्बा-चौडा अन्द्रेई इवानोविच बेलोवज़ोरोव बन गया था। और केवल उसका बाह्याकार ही नही बदला था। प्रारम्भिक वर्षो की वह विनम्र कोमलता, वह सावधानी और वह सुघरपन विदा हो गया था और उसकी जगह लापर्वाही, उद्धतता और औघडपन ने ले ली थी, जो एकदम असह्य थी। दाए-बाए झूमता हुआ वह चलता था, आरामकुर्सियो में ज़ोर से बैठता था, मेज पर कोहनिया टेकता था, बदन को तानता और जम्हाइया लेता था, अपनी बुआ और नौकरो के साथ

मनचलेपन से पेश आता था। "मै कलाकार हू," वह कहता, "आजाद कलाकार! ऐसी है हमारी जाति!" कभी कभी, लगातार कई कई दिन तक, वह ब्रुश को छूता तक नही था। इसके बाद प्रेरणा—जैसा कि वह उसे कहता था—उसपर सवार होती, और तब वह इधर उधर से मडराता, जैसे नशे मे हो, भोडा, अटपटा, और शोर मचाता हुआ। उसके गालो पर भद्दी-सी लाली आ जाती, आखें धुधली हो जाती। वह लम्बे भाषण झाडना शुरू करता—अपनी प्रतिभा, अपनी सफलता के वारे मे तथा अपने विकास और प्रगति के वारे में लेकिन असलियत यह प्रकट हुई कि उसमें इतनी भी प्रतिभा नही थी कि साधारण छवि-चित्र तक वना सकता। वह बिल्कुल अज्ञानाचार्य था, उसने कुछ नही पढा था। और कलाकार पढे भी क्यो, भला? प्रकृति, आजादी, कविता उसके उपयुक्त तत्त्व हैं। अपनी जुल्फो को हिलाने, गप्पे हाकने और अपने चिरन्तन सिगरेट के कश खीचने के अलावा उसे और कुछ करने की जरूरत नही। रूसी मनचलापन एक अच्छी चीज है, लेकिन वह हरेक को शोभा नही देता। और पोलेजाएवो के नकली संस्करण, प्रतिभा से शून्य, सहन नही होते। अन्द्रेई इवानिच अपनी बुआ के साथ चिपका रहा। दान की रोटी, कहावत के वावजूद—उसे कडवी लगती मालूम नही होती थी। आगन्तुको के लिए वह एक जानेवाला खुराफत है। वह पियानो पर बैठ जाता है (आपको मालूम होना चाहिए कि तत्याना वोरीसोवना के यहा पियानो भी था) और एक उंगली से बजाना शुरू करता है—'त्रोइका-गाडी उडी जाय रे!' वह सुरो को झनझनाता है और लगातार घटो तक वारलामोव के गीतो—'एकाकी सनोबर' या 'नही डाक्टर, नही, आना' चिघाडता रहता है, अत्यन्त कष्टकर ढग से। उसकी आखे जैसे एकदम गायव हो जाती है और उसके गाल ढोल की भाति फूल जाते है। इसके बाद वह एकाएक शुरू करता है—'रुक जा, प्रेम के तूफान, रुक जा!' और तत्याना वोरीसोवना निश्चित रूप से काप उठती है।

"अजीव वात है," एक दिन उसने मुझसे कहा, "आजकल जाने कैसे गीत वे वनाते हैं। उन्माद और निराशा से भरे हुए। हमारे जमाने के गीत इनसे भिन्न थे। उदास गीत तव भी होते थे, लेकिन उन्हे सुनना सुखद मालूम होता था। जैसे—

आ जा सजना! मै जोहू वाट खडी मैदानो में।
आ जा, नैना बहाये बडा नीर सजन, मैदानो में!
हाय! कर दी है बहुत अवेर, मिलू न मैदानो में!

तत्याना वोरीसोवना वक्र अन्दाज में मुसकरायी।

"मेरी आह-कराह, मेरी आह-कराह!" उसका भतीजा वरावरवाले कमरे में चीख रहा था।

"वस करो, अन्द्रयूशा!"

"जला डाला तेरी जुदाई ने!" अनथक गायक चीखे जा रहा था।

तत्याना वोरीसोवना ने अपना सिर हिलाया।

"ओह, ये कलाकार, ये कलाकार!"

तव से एक साल वीत चुका है। वेलोवज़ोरोव अभी भी अपनी वुआ के साथ रह रहा है, और अभी भी पीटर्सवर्ग लौटने की वाते करता रहता है। देहात में रहकर वह उतना ही चौडा हो गया है जितना कि वह लम्वा है। उसकी वुआ—कौन कल्पना कर सकता था कि ऐसा भी होगा—उसपर मुग्धभाव से न्योछावर है, और पडोस की युवा लडकिया उसके प्रेम में खिच रही हैं

तत्याना वोरीसोवना के पुराने मित्रो में से कितनो ने ही उसके यहा जाना तर्क कर दिया है।

मृत्यु

मेरा एक पडोसी है, जमीदार और शिकारी, उम्र का जवान। जुलाई का महीना था और सुबह का सुहावना समय, घोडा कसवाकर मै उसके पास जा पहुचा और उसके सामने प्रस्ताव रखा कि चलिये, हम दोनो एक साथ ग्राउज्र-पक्षी के शिकार के लिए चले। वह तैयार हो गया। "लेकिन इस शर्त पर," उसने कहा, "कि आप हमारे झाड-वन मे चले जो जूशा मे है। इस बहाने मुझे चापलीगिनो पर भी—वह हमारा ओक-वृक्षो का जगल है—नजर डालने का मौका मिल जायेगा। वहा इमारती लकडी के लिए कटाई चल रही है।"—"मुझे मजूर है, वही चलो।" उसने अपने घोडे को कसवाने का आदेश दिया, बदन पर हरे रग का कोट डाला जिसमे कासे के बटन लगे थे जिनपर सूअर के सिर की तस्वीर थी, शिकारियो का थैला लिया जिसपर बटे हुए सूत की कसीदाकारी बनी थी, और चादी की एक सुराही। फिर एक बिल्कुल नयी फ़्रासीसी बन्दूक कधे से लटकाते हुए इत्मीनान के साथ वह आईने की ओर मुडा और अपने कुत्ते को उसने पुकारा। कुत्ते का नाम एस्पेरास था जो उसे अपनी चिरकुमारी चचेरी बहिन ने भेट किया था। यह बहिन दिल की बहुत अच्छी थी, लेकिन उसके सिर पर के बाल गायब थे। हा तो हम चल पडे। मेरे पडोसी ने गाव के कान्स्टेबल अरखीप तथा एक कारिन्दे को भी अपने साथ ले लिया। कान्स्टेबल एक हृष्ट-पुष्ट, नाटा और मोटा किसान था। उसका चेहरा चौरस तथा कपोलास्थिया बाबा आदम की

सी मालूम होती थी। कारिन्दा एक दुबला-पतला उन्नीस वर्ष का युवक था। उसे उसने हाल ही में वाल्टिक प्रान्त से बुलाकर अपने यहा रखा था। सन जैसे उसके बाल थे, आखो से कम दिखता था। उसके कधे ढलुवा और गरदन लम्बी थी, और नाम हेर्र गोत्लिव फोन-देर-कोक था। मेरे पडोसी को हाल ही में यह जागीर विरासत में मिली थी। यह जागीर उसे अपनी एक चाची मदाम कारदोन-कतायेवा से विरासत मे मिली थी जो एक बडे पदाधिकारी की विधवा थी। वह एक अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट स्त्री थी जो बिस्तर में पडी पडी भी काखती-कराहती रहती थी। हम झाड-वन जा पहुचे। "तुम लोग," आरदालियोन मिखाइलिच (मेरे पडोसी) ने अपने साथियो को सबोधित करते हुए कहा, "यहा इस खुली जगह में रुककर हमारा इन्तजार करो।" जर्मन ने सिर नवाया, अपने घोडे पर से नीचे उतरा, अपनी जेव से एक किताब निकाली —शायद शोपनहार का कोई उपन्यास था वह—और एक झाडी की छाव में बैठ गया। अरखीप बिना हिले-डुले, घटा-भर तक धूप में ही खडा रहा। हम इधर से उधर झाडियो में सिर मारते रहे, लेकिन ग्राउज-पक्षियो का कही कुछ पता नही। आरदालियोन मिखाइलिच ने कहा कि चलो, अब जगल की ओर चला जाय। लेकिन खुद मुझे, जाने क्यो, अपने भाग्य में यकीन नही था कि आज कुछ हाथ लगेगा। मै भी उसके पीछे पीछे घूमता रहा। हम लौटकर खुली जगह आ गये। जर्मन ने पन्ने का नम्बर देखा, उठकर खडा हो गया, पुस्तक को अपनी जेब के हवाले किया और अपने दुमकटे, दम-उखडे घोडे पर जो जरा-सा भी छूने पर हिनहिनाने और दुलत्तिया झाडने लगता था, जैसे-तैसे सवार हुआ। अरखीप ने अपने-आपको झटककर चौकस किया, एक साथ दोनो रासो को झटका, अपनी टागो को हिलाया और अन्त में अपने मरियल तथा नाकस घोडे को हरकत में लाने में सफल हुआ। हम चल पडे।

आन्दालियोन मिगाउलिच के जंगल से मैं छुटपन से ही परिचित था। अपने फ्रेंच मास्टर m-r Désiré Fleury* के साथ मैं अक्सर चारनोगिनों के चक्कर लगाता था। मेरा वह मास्टर अत्यन्त सहृदय आदमियों में से था, हालांकि हर मास नेरोय का काढा पिलाकर जीवन-भर के लिए करीब करीब उसने मेरा स्वास्थ्य खराब कर दिया था। नमूने जगल में कुल मिलाकर वहुत वडे वलूत और ऐश के दो या तीन सौ पेड थे। पहाडी ऐश और अखरोट झाडियो की पारदर्शी स्वच्छ हरियावल की पृष्ठभूमि में उनके मोटे मोटे तनो का स्याह रंग वहुत ही शानदार मालूम होता था। ऊपर, स्वच्छ नीले आकाश की पृष्ठभूमि मे, कमनीय रेखाओ की भाति, उनकी गाठदार टहनिया छितरी थीं। पेडो की निश्चल छतरियों के नीचे वाज़, हनी-वजर्ड और श्येन-पक्षी अपने परो को फडफडाते उड रहे थे, विविध रगी कठफोडे मोटी छाल पर जोरो से खुटखुट कर रहे थे। अचानक घनी पत्तियो मे से ओरियोल के हर घडी बदलते हुए स्वर के वाद ही श्याम-पक्षी की लय सुनाई दी। नीचे झाडियो मे वार्बलर, सिस्किन और पीविट ची-चरर कर रहे थे। पगडडियो के साथ साथ फिन्च-पक्षी तेजी से दौड रहे थे। जगल के छोर से सटा, एक खरगोश चुपचाप भागा जा रहा था। चौकन्ना होकर वह रुका, और फिर लपक गया। एक गिलहरी, मानो खेलती हुई, एक पेड से दूसरे पेड पर फुदकती है, फिर एकाएक थिर वैठ जाती है, अपनी पूछ को चवर की भाति सिर के ऊपर किये हुए। चीटियो की ऊची वावियो के वीच, सुन्दर-सुहावनी, परदार, गहरी छिदी फर्न की कोमल छाव में, वायोलेट और लिली खिले है, और कुकुरमुत्ते—भूरे, पीले, कत्थई लाल और गुलाबी। घास के छोटे छोटे मैदानो पर, फैली हुई झाडियो के बीच, लाल स्ट्राबेरी दिखाई

---

*मोशिये देजिरे फ्लेरी।

देती है . और ओह, जगल की छाव! यो अत्यन्त दमघोट गर्मी, ठीक दोपहर, लेकिन जगल में रात का समा छाया हुआ—कितनी शान्ति, कितनी महक, और कितनी ताजगी .. बहुत ही सुखद क्षण चापलीगिनो में मै बिता चुका था, और इसलिए मुझे स्वीकार करना चाहिए कि जब मैंने इस जगल मे प्रवेश किया तो मेरा मन उदास हो उठा। १८४० की विनाशकारी तथा वर्फ-विहीन सर्दियो ने मेरे पुराने सगी-साथियो को—बलूत और ऐश के वृक्षो को—नही बख्शा था। मुरझाये हुए, नगे-बूचे, जहा-तहा मरी-सी पत्तिया हिलगाये उदास भाव से खडे थे। उनकी जडो मे नयी पौध उगी थी जो 'उनका स्थान लिये थी, लेकिन कभी उनके स्थान की पूर्ति नही कर सकती थी'।*

कुछ पेड जिनके निचले हिस्सो में अभी भी पत्तिया दिखाई देती थी, अपनी बेजान, नष्टप्राय शाखो को—जैसे निराशा और शिकायत के अन्दाज में—ऊपर की ओर उठाये हुए थे। कुछ अन्य पेडो में, अभी भी घनी पत्तियो के बीच से—हालाकि हरियाली के पहलेवाले प्रचुर उभार का अब कुछ शेप नही रहा था—मोटी, बेजान, सूखी शाखे बाहर निकली

---

*१८४० में गहरा पाला पडा था, और एकदम दिसम्बर के अन्त तक नाम को भी वर्फ नही गिरी थी। जाडो की समूची फसलो को पाला मार गया था, और ओक-वृक्षो के कितने ही शानदार जगलो को उस वर्प क्रूर जाडे ने नष्ट कर दिया था। उनके स्थान की पूर्ति करना कठिन होगा, धरती की उत्पादन शक्ति प्रत्यक्षत घटती जा रही है, 'निपिद्ध' ऊसर भू-खण्डो मे (जिन्हे देव-प्रतिमाओ के जलूसो, रथयात्राओ के स्थल होने के कारण हाथ नहीं लगाया जा सकता था) पहले के शुभ्र वृक्षो की जगह वर्च और एस्प अपने आप उग रहे है और, कहने की आवश्यकता नही जगल लगाने का खयाल तो हम लोगो को कभी आया ही नही।

थी। कुछ पेड़ो पर से छाल गिर पडी थी और कुछ पेड एकदम गिर गये थे और लाशो की भाति सडगल रहे थे। और—पहले क्या कोई इसकी कल्पना कर सकता था—अब कही भी छाह नही थी, चापलीगिनो में छाह की कही कोई ठौर नजर नही आती थी! "ओह," मृतप्राय पेडो की ओर देखते हुए मैंने मन ही मन कहा—"कितना कटु और अपमानजनक है यह तुम्हारे लिए?" कोल्त्सोव की निम्न पक्तिया मुझे याद हो आयी—

मौन हो गया क्यो
वन का रव भैरव?
कहा रुद्र दृढता वह
कहा विगत शुभ गौरव?
कहा खो गया सारा
सघन वृक्षो का वैभव?

"एक बात तो बताओ, आरदालियोन मिखाइलिच," मैंने कहना शुरू किया, "इन पेडो को अगले साल ही क्यो नही काट दिया गया? देखो न, अब तो उसका दसवा हिस्सा भी उनके पल्ले नही पडेगा जितना उस वक्त काटने से उन्हे मिल जाता?"

उसने केवल अपने कधो को बिचका दिया।

"यह तो आपको मेरी चाची से पूछना चाहिए। लकडी के व्यापारी आये, नकद दाम पेश किये, बल्कि सच पूछो तो इस पर काफी जोर दिया।"

"Mein Gott! Mein Gott!"* फोन-देर-कोक हर कदम पर कह उठता—"कितना अफसोस, ओह कितना अफसोस!"

"अफसोस क्या?" मेरे पडोसी ने मुसकराते हुए कहा।

---

*ओ खुदा, ओ खुदा!

"यानी अफसोस की बात्त, अम कैना चात्ता!" (जान पडता है कि जो जर्मन हमारी भाषा के 'त' अक्षर का उच्चारण करना सीख लेता है, वह बोलते वक्त सदा उसी पर बल देता रहता है।)

खास तौर से धरती पर पडे बलूत उसके हृदय को ज्यादा मथते थे। और इसमें शक नही, कितने ही चक्कीवाले उनके लिए अच्छी रकम दे देते। लेकिन कान्स्टेबल अरखीप ने अपनी थिरता को विचलित नही होने दिया, कोई शोकोद्‌गार उसके मुह से प्रकट नही हुआ। इतना ही नही बल्कि एक तरह के सन्तोष के साथ वह उनके ऊपर से कूद रहा जान पडा था, और अपने चाबुक से उनकी मिजाजपुर्सी भी करता जाता था।

अब हम उस जगह के निकट पहुच चले थे जहा वे पेडो को काट रहे थे। तभी, अचानक, गिरते हुए पेड की चरचराहट सुनाई दी और हमें किसी के चिल्लाने और जल्दी जल्दी बोलने की आवाज सुनाई दी, और कुछ क्षण बीतते न बीतते एक युवा किसान, अस्तव्यस्त चेहरे का रग उडा हुआ, हमारी दिशा में तेजी से भागता हुआ आया।

"क्या हुआ? कहा भागे जा रहे हो?" आरदालियोन मिखाइलिच ने उससे पूछा।

वह एकदम रुक गया।

"ओह, आरदालियोन मिखाइलिच, मालिक गजब हो गया!"

"क्या हुआ?"

"मालिक, मक्सीम पेड के नीचे आ गया।"

"मक्सीम ठेकेदार? सो कैसे?"

"हा मालिक, ठेकेदार। ऐश का एक पेड हमने काटना शुरू किया, और वह खडा देख रहा था। थोडी देर वह वहा खडा रहा। इसके बाद कुवे पर चला गया—उसे प्यास लगी थी शायद। तभी अचानक पेड

चरचराया और बिल्कुल उसी की सीध मे गिरने लगा। हम सब चिल्ला पडे—"भागो, भागो, भागो!" उसे एक बाजू भागना चाहिए था, पर सीधा नाक की सीध में वह भागा। एकदम घबडाकर, इसमे शक नही। पेड की ऊपर की शाखो के नीचे दब गया। लेकिन, भगवान जाने, इतनी जल्दी पेड क्योकर गिर पडा। शायद वह भीतर तक खोखला हो गया था।"

"तो मक्सीम कुचल गया?"

"हा, मालिक।"

"क्या मर गया?"

"नही मालिक, अभी ज़िन्दा है; लेकिन मरे के बराबर। उसकी बाहे और टागें मलीदा हो गयी है। मै डाक्टर सेलिवेरस्तिच को बुलाने जा रहा हू।"

आरदालियोन मिखाइलिच ने कान्स्टेबल से कहा कि घोडे पर दौडा जाय और सेलिवेरस्तिच को गाव से बुला लाय, और खुद दुलकी चाल से उस दिशा मे बढ चला जहा पेड गिराये जा रहे थे। मै भी उसके पीछे पीछे चल पडा।

हमने देखा कि अभागा मक्सीम धरती पर पडा है। दस-बारह किसान उसके इर्द-गिर्द खडे थे। हम अपने घोडो पर से उतर आये। उसके मुह से कराहने तक की आवाज नही निकल रही थी। जब-तब वह अपनी आखो को पूरा खोलता, चारो ओर देखता—जैसे अचरज से उसकी आखें फटी हो—अपने होटो को वह काटता, जो नीले पड रहे थे। उसकी ठोडी ऐंठ रही थी, उसके बाल उसके माथे से चिपके थे, उसकी धौंकनी उखडी हुई चल रही थी—वह मर रहा था। लीपा के एक नवजात पेड की हल्की छाया उसके चेहरे पर धीमे से तैर रही थी।

हम उसके ऊपर झुके। उसने आरदालियोन मिखाइलिच को पहचान लिया।

"किरपा, श्रीमान," लडखडाती-सी आवाज में उसने कहा—"किरपा कर पादरी बुलवा ले कहना प्रभु ने मुझे सजा दी वाह, टागे, सव मलीदा हो गयी आज . इतवार और मैं .. मै मैंने आप जानो आदमियो को छुट्टी नही दी।"

वह रुक गया। उसका दम साथ नही दे रहा था।

"और मेरी कमाई घरवाली को दे दें इसमे से कम करके ओनिसिम यहा जानता है किसका . मुझे . कितना देना है वह निकालकर "

"सुनो मक्सीम, डाक्टर के लिए आदमी गया है," मेरे पडोसी ने कहा, "मुमकिन है तुम बच जाओ।"

उसने अपनी आखें खोलने की कोशिश की, और जैसे-तैसे अपनी पलको और भौहो को उठाया।

"नही, मैं मर रहा हू। यह देखो वह आ रहा है वह आ मुझे माफ करना, साथियो, अगर मुझसे कोई "

"खुदा तुम्हे माफी देगा, मक्सीम अन्द्रेइच," किसानो ने एक आवाज में कहा। उन्होने अपनी टोपिया उतार ली, और बोले, "तुम हमें माफ करना।"

अचानक, गहरी छटपटाहट के साथ, उसने अपना सिर झटका, बडे कष्ट के साथ उसने अपना वक्ष उभारा, और फिर ढह गया।

"अरे, तो क्या इसे यही पडे पडे मर जाने दोगे," आरदालियोन मिखाइलिच चिल्लाया—"जाकर गाडी में से चटाई ले आओ, और इसे उठाकर अस्पताल ले चलो।"

दो आदमी भागे हुए गाडी की ओर गये।

"मैंने एक घोडा खरीदा कल," लडखडाती आवाज में मरते हुए आदमी ने कहा, "येफीम से सिचोवका मे बयाना दिया . सो घोडा मेरा है उसे मेरी घरवाली को दे देना "

उन्होंने उसे चटाई पर लिटाना शुरू किया। उसका समूचा बदन घायल पक्षी की भांति, थरथराया, और कडा हो गया।

"मर गया है," किसानो ने बुदबुदाकर कहा।

खामोशी में हम अपने घोडो पर सवार हुए, और वहा से चल दिये।

अभागे मक्सीम की मृत्यु देखकर मैं सोचने लगा। इसमे शक नही कि रूसी किसान का अन्त—उसका मरना—अद्भुत होता है, बहुत ही अद्भुत! मन की जिस स्थिति मे वह अपने अन्त से भेंटता है, उसे उदासीनता या जड़ता नहीं कहा जा सकता। वह मरता है जैसे कोई धार्मिक कृत्य सम्पन्न कर रहा हो, शान्ति से, सरलता से।

कई साल पहले की बात है। मेरे एक अन्य पडोसी के खलिहान में आग लगी और एक किसान जल गया। (वह उसी मे पडा रहता, लेकिन उधर से एक शहरी आदमी गुजर रहा था जिसने उसे मृतप्राय हालत में बाहर खीच निकाला। पानी से भरी एक टकी में वह कूद पडा, और जलते हुए गोदाम का दरवाजा तोड डाला।) मैं उसे देखने के लिए उसकी झोपडी में पहुचा। झोपडी मे अधेरा था, धुवा भरा था, और दम घुटता था। मैंने पूछा—"रोगी कहा है?"—"वहा पडा है, मालिक, तन्दूर के ऊपर," शोकग्रस्त किसान स्त्री ने सुरीली आवाज में जवाब दिया। मैं उसके पास पहुचा। किसान भेड की खाल के कोट से ढका पडा था, और उसका सास भारी हो रहा था। "कहो, कैसा जी है?" आहत तन्दूर के ऊपर हिला। वह समूचा जल गया था, लगता था जैसे मरने पर हो। उसने उठने की कोशिश की। "अरे नही, हिलो-डुलो नही, हिलो-डुलो नही थिर पडे रहो। हा तो क्या हाल है?"—"हाल तो जरूर खराब है," उसने कहा। "क्या दर्द है?"—उसने कोई जवाब नही दिया। "तुम्हे कुछ चाहिए?"—कोई जवाब नही। "तुम्हारे लिए

चाय भेजू, या कुछ और जो तुम चाहो?"—"कोई ज़रूरत नही।" मैं उसके पास से खिसककर एक वेंच पर वैठ गया। वहा मैं पाव घटे तक वैठा रहा, आधे घटे तक बैठा रहा। झोपडी में कब्र का सा सन्नाटा था। मेज के पीछे कोने में, देव-प्रतिमाओ के नीचे, पाच साल की एक लडकी सिकुडी-सिमटी वैठी थी और रोटी का एक टुकडा लिये खा रही थी। बीच बीच में उसकी मा उसे डपट देती थी। वाहरवाले दालान में लोग आ-जा रहे थे, बाते और शोर कर रहे थे। भाई की घरवाली गोभी काट रही थी। "ए, अक्सीन्या!" आहत आदमी के मुह से आखिर आवाज आयी। "क्या?"—"थोडी क्वास।" अक्सीन्या ने उसे थोडी क्वास दे दी। इसके बाद फिर ख़ामोशी छा गयी। मैंने फुसफुसाकर पूछा—"प्रायश्चित तो करा दिया है न?"—"हा।" सो, मतलव यह, कि हर चीज ठीक-ठाक थी—वह मरने की वाट देख रहा था, और बस। मुझसे यह सहन नही हुआ, और वहा से चल दिया .

इसी प्रकार, मुझे एक और दिन की याद आती है कि किस प्रकार मैं अपने एक परिचित तथा जोशीले शिकारी चिकित्सा-सहायक कपितोन से मिलने क्रास्नोगोर्ये गाव के अस्पताल में कुछ देर के लिए रुक गया था।

यह अस्पताल गढी के एक भूतपूर्व उपगृह में था। ख़ुद जागीर की मालकिन ने इसकी नीव रखी थी। दूसरे शब्दो में यह कि उसने फरमान जारी किया कि दरवाज़े के ऊपर एक नीली तख़्ती लगा दी जाय। तख़्ती पर सफेद अक्षरो में लिखा था—'क्रास्नोगोर्ये अस्पताल'। और मालकिन ने, ख़ुद अपने हाथो से, रोगियो के नाम दर्ज करने के लिए कपितोन को एक ख़ूबसूरत-सा अलवम भेंट किया था। अलवम के पहले पन्ने पर लक्ष्मी स्वरूप देवी जी के ख़ुशामदी टट्टुओ में से एक ने निम्न पक्तिया टाक दी थी—

Dans ces beaux lieux, où règne l'allégresse,
Ce temple fut ouvert par la Beauté,
De vos seigneurs admirez la tendresse,
Bons habitants de Krasnogorié!*

इसी के नीचे एक अन्य महानुभाव ने यह लिख छोडा था—

Et moi aussi j'aime la nature!

Jean Kobyliatnikoff!**

चिकित्सा-सहायक ने खुद अपनी जेब से छ खाटे खरीदी और भगवान का नाम लेकर खुदा के वन्दो को निरोग करने के काम मे जुट गया। उसके अलावा अस्पताल के कर्मचारियो में दो व्यक्ति और थे—एक तो नक्काश पावेल जिसे पागलपन के दौरे पडते थे, दूसरी एक बाहवाली एक किसान स्त्री मेलिकत्रीसा जो बावर्चिन का काम करती थी। दोनो दवाइया घोलते तथा भिगोयी हुई जडी-बूटियो को सुखाते थे। साथ ही, रोगियो के उद्भ्रान्त होने पर, उन्हे काबू मे रखने का काम भी उन्ही के ज़िम्मे था। पागल नक्काश हमेशा उदास रहता था और बहुत कम बोलता था। रात होने पर वह 'सुन्दर वीनस' वाला गीत गाता और जो भी मिलता उसी के सिर पड जाता, और अनुरोध करता कि वह उसे मलान्या नाम की एक लडकी से शादी करने की इजाजत दे, हालाकि इस लडकी को मरे एक मुद्दत गुजर चुकी थी। एक बाहवाली किसान

---

*इस मनोरम स्थान में, जहा जीवन का राज्य है,
सुन्दरता ने स्वय अपने करो से महल यह बनाया था,
क्रास्नोगोर्ये के सहृदय निवासियो,
अपने अधिष्ठाताओ की उदारता को देखो!

**और मुझे भी प्रकृति से प्रेम है!

जान कोबील्यात्निकोव।

स्त्री अक्सर उसकी मरम्मत करती और टर्की मुर्गिया ताकने के काम पर उसे लगा देती।

हा तो एक दिन मै कपितोन के यहा गया हुआ था। पिछले शिकार के बारे मे हमने बाते करना शुरू ही किया था कि तभी अचानक, अहाते मे एक गाडी दाखिल हुई। गाडी को एक असाधारण रूप से तगडा घोडा खीच रहा था। केवल पन-चक्कीवालो के पास ही ऐसे घोडे दिखाई देते है। गाडी में मजबूत काठी का एक किसान बैठा था। वह नया कोट पहने था और उसकी दाढी रग-बिरगी थी।

"वसीली द्मीत्रिच!" कपितोन खिडकी में से चिल्लाया, "अरे आओ, भीतर चले आओ।" और फिर मेरे कान मे फुसफुसाया—"ल्युवोवशिनो की चक्की का मालिक है।"

किसान गाडी में से कराहता हुआ उतरा, चिकित्सा-सहायक के कमरे में आया, और देव-प्रतिमाओ की टोह लेने के बाद क्रॉस का निशान बनाया।

"हा तो, वसीली द्मीत्रिच, कहो, क्या खबर है? लेकिन तुम तो बीमार मालूम होते हो। कुछ ठीक नही दिखते।"

"हा, कपितोन तिमोफेइच, हा, कुछ ठीक नही हू।"

"क्यो, क्या तकलीफ है?"

"तो सुनो, कपितोन तिमोफेइच। बहुत दिन नही हुए मैने नगर में चक्की के लिए कुछ पाट खरीदे, सो उन्हे लेकर मै घर आया, और जब मै उन्हे गाडी में से उतारने लगा तो कोई नस चटख गयी या जाने क्या हुआ। कमर में चटका-सा आया, लगा जैसे कोई चीज टूटकर अलग हो गयी हो। तभी से यह गडबड चल रही है। और आज तो सब दिन से ज्यादा बुरा हाल है।"

"हू-ऊ!" कपितोन ने कहा और एक चुटकी सुघनी सूघते हुए

बोला, "निश्चय ही तुम्हारी आत उतर गयी है। लेकिन क्या इसे काफी दिन हो गये?"

"दस दिन पहले की बात है।"

"दस दिन ?" (चिकित्सा-सहायक ने एक लम्बा सास लिया और अपना सिर हिलाया।) "जरा दिखाओ तो हा तो वसीली द्मीत्रिच," अन्त मे उसने घोषित किया, "मुझे तुमसे सहानुभूति है, हार्दिक सहानुभूति है, लेकिन हालत तुम्हारी कतई अच्छी नही है। तुम सख्त बीमार हो। तुम यही मेरे पास रुको। अपनी ओर से मै कोई कसर नही छोडूगा, हालाकि मै जिम्मावारी नही ले सकता।"

"तो क्या हालत इतनी खराब है?" पन-चक्कीवाला हैरान-सा होकर बुदबुदाया।

"हा, वसीली द्मीत्रिच, हालत खराब है। अगर तुम मेरे पास एक या दो दिन पहले और आ जाते तो बात इतनी न बिगडती, चुटकियो में मै तुम्हे अच्छा कर देता। लेकिन अब तो सूजन शुरू हो गयी है, और इससे पहले कि हमें पता चले कि हम कहा है, खून में जहर फैल जायेगा।"

"लेकिन यह नही हो सकता, कपितोन तिमोफेइच!"

"कहता तो हू कि ऐसा ही है।"

"लेकिन क्यो—सो कैसे?"

चिकित्सा-सहायक ने अपने कधे बिचकाये।

"और इतनी-सी बात के लिए मुझे मरना होगा?"

"यह मै नही कहता केवल तुम्हे यहा रुकना पडेगा।"

किसान सोचता रहा, सोचता रहा। उसकी आखे धरती पर टिकी थी। अन्त मे सिर उठाकर उसने हमारी ओर देखा, अपनी खोपडी को खुजलाया और अपनी टोपी हाथ में उठा ली।

"अरे, यह तुम कहा चले, वसीली द्मीत्रिच?"

"जाऊगा कहा? अपने घर, अगर हालत इतनी गयी-बीती है। मुझे सब ठीक-ठाक करना होगा, ऐसी हालत मे।"

"लेकिन वसीली द्मीत्रिच, इससे तो तुम खुद अपना नुकसान करोगे। सच, अपने को नुकसान पहुचाओगे। मुझे तो यही देखकर ताज्जुब होता है कि तुम यहा तक आ कैसे सके? नही, तुम्हे रुकना चाहिए।"

"नही, भाई कपितोन तिमोफेइच, अगर मुझे मरना ही है तो मै घर पर मरूगा। यहा मरने से क्या लाभ? खुदा ही जानता है कि मेरे घर का क्या बनेगा और घरवालो की क्या दशा होगी?"

"यह कोई कैसे कह सकता है, वसीली द्मीत्रिच, कि कैसे इसका अन्त होगा। बेशक, खतरा है, काफी खतरा है, इससे कोई इन्कार नही कर सकता   और ठीक इसी लिए तुम्हे यहा रुकना चाहिए।"

किसान ने अपना सिर हिलाया। "नही, कपितोन तिमोफेइच, मै रुक नही सकता   लेकिन शायद आप मेरे लिए कोई दवाई तजवीज़ कर सके।"

"अकेली दवाई कुछ भला नही करेगी।"

"मै रुक नही सकता, यह तय है।"

"अच्छा तो जैसी तुम्हारी मर्जी। बस इतना है कि इसके लिए बाद में मुझे दोष न देना।"

चिकित्सा-सहायक ने अलबम में से एक पन्ना फाडकर अलग दिया और नुस्खा लिखते हुए उसे समझाया कि इसके अलावा उसे और क्या क्या करना चाहिए। किसान ने कागज के उस पुर्जे को ले लिया, आधा रूबल कपितोन को भेंट किया, और कमरे से बाहर निकल अपनी गाडी में बैठ गया। "अच्छा तो अब विदा, कपितोन तिमोफेइच। देखो, मेरी ओर से बुरा न मानना, और अगर कुछ हो जाय तो मेरे अनाथ बच्चो   "

"ओह, रुक जाओ, वसीली!"

किसान ने केवल अपना सिर हिलाया, घोडे को रास से झटकारा और गाडी अहाते से बाहर चली गयी। मैं बाहर आ गया और उसे जाते देखता रहा। सडक कीचड और खाई खड्डो से भरी थी। पन-चक्कीवाला सावधानी से गाडी हाक रहा था, बिना किसी उतावली के, अपने घोडे को दक्षता से चलाते तथा राह मे मिलनेवाले जान-पहचानवालो से सिर हिलाकर दुआ-सलाम करते हुए। इसके तीन दिन बाद वह मर गया।

रूसी लोग सामान्यत , अद्भुत रूप मे मृत्यु से भेट करते है। अनेक मरनेवालो की इस समय मुझे याद आ रही है। मुझे तुम्हारी, मेरे पुराने मित्र की, याद आ रही है जिसने, पढाई के अपने कोर्स को पूरा किये बिना ही, विश्वविद्यालय छोड दिया था। अवेनीर सोरोकोऊमोव, बहुत ही ऊचा और श्रेष्ठतम जीव। तुम्हारा रुग्ण, क्षयग्रस्त चेहरा, तुम्हारे पतले पतले सुनहरे बाल, तुम्हारी कोमल मुस्कान, तुम्हारी उत्साहपूर्ण दृष्टि, तुम्हारे लम्बे अग-प्रत्यग मेरी आखो के सामने मूर्त्त हो उठे हैं। तुम्हारी क्षीण दुलार भरी आवाज मुझे सुनाई दे रही है। तुम एक रूसी भू-स्वामी – गूर क्रुप्यानिकोव – के यहा रहते थे, उसके बच्चो फोफा और ज्योज्या को रूसी व्याकरण, भूगोल और इतिहास पढाते थे, धीरज के साथ गूर के बोसीदा मजाको, बटलर की भोडी घनिष्ठताओ और नकचढे बच्चो की बेहूदा शैतानियो को सहन करते थे, हा तीखी मुस्कान लिये हुए लेकिन बिना किसी शिकायत के उनकी उकतायी हुई मालकिन की सनको को पूरा करते थे, और इन सब के बावजूद कितने आनन्द-विभोर, कितने शान्त मालूम होते थे तुम, उस समय जब शाम को, ब्यालू करने के बाद अन्तत सभी दायित्वो से मुक्त, खिडकी के सामने बैठकर खोये खोये-से तुम सिगरेट पीते थे या किसी मोटी पत्रिका के पिछले मुडे-मुडे अक के पन्नो को ललचकर पलटते होते थे जो तुम्हे जर्गीवान ने – जो तुम्हारी ही भाति एक और घर-बार विहीन अभागा था – [illegible] नगर से लाकर तुम्हे दी थी। इन पत्रिका के पन्नो को तुम पलटते, और शायद

किसी भी कविता या उपन्यास को पाकर कितनी खुशी से तुम छलछला उठते, कितनी तत्परता के साथ तुम्हारी आखो में आसू भर आते, और कितनी प्रसन्नता के साथ तुम हसने लगते। दूसरो के लिए कितना सच्चा प्रेम, और हर भली तथा शुभ चीज के लिए कितनी उदार सहानुभूति, तुम्हारे निश्छल युवा हृदय में हिलोरे लेती थी। जो सच है, वह कहना चाहिए–तुम्हारी वुद्धि विशेषत तेज नही थी। प्रकृति ने न तो तुम्हे याददाश्त दी थी न उद्यमशीलता। विश्वविद्यालय मे तुम्हारी गिनती लायक छात्रो में भी नही थी। लैक्चरो के समय तुम ऊघते थे, परीक्षाओ के समय तुम गम्भीर मौन धारण कर लेते थे। लेकिन जव कोई मित्र सफलता प्राप्त करता था, जव कोई मित्र विजयी होता था, तो छलछलाती हुई खुशी तथा उछाह से कौन वेदम हो जाता था? अवेनीर अपने मित्रो के यशस्वी भविष्य में कौन इतना आखें वद करके विश्वास करता? कौन इतने गर्व के साथ उन्हे आकाश में उछालता था? कौन इतनी उत्तेजना और आवेग के साथ उनके पक्ष की हिमायत करता था? ईर्ष्या और साथ ही दम्भ से भी कौन अछूता था? अत्यन्त नि स्वार्थमय आत्म-वलिदान के लिए कौन इतना तत्पर रहता था? कौन इतनी तत्परता से उन लोगो के लिए भी रास्ता छोडने को तैयार रहता था जो उसके पाव के जूते खोलने लायक भी नही थे तुम, केवल तुम, भले अवेनीर, तुम! मुझे याद है कि कितने उदास से तुम अपने साथियो से विदा हुए थे, उस समय जव तुम शिक्षक वनने के लिए देहात जा रहे थे। अनिष्ट की आशका तुम्हारा पीछा नही छोड रही थी

और, इसमें शक नही, देहात में तुम्हारे साथ वुरी वीती। वहा कोई न था जिसकी वात तुम मान से सुनते, जिसको तुम सराहते, प्यार करते जमीदार–वे भी जो स्तेप की अशिक्षित सन्तान थे, और वे भी जो पढे लिखे कुलीन थे–निरे मास्टर के रूप मे तुम्हारे साथ व्यवहार करते थे। कुछ अक्खडपन और उपेक्षा के साथ, और कुछ लापर्वाही के साथ।

इसके अलावा, तुम उन लोगो मे से नही थे जो दूसरो पर रोब गाठे रहते हैं। तुम सकोची थे, शरमा जानेवाले। तुम्हारे गाल तमतमाने लगते थे और ज़बान हकलाने लगती थी तुम्हारा स्वास्थ्य भी देहात के वातावरण में बेहतर नही हो पाया। तुम, निरीह जीव, बुझती मोमबत्ती की भाति शेष हो गये। यह सच है कि तुम्हारा कमरा बाग की ओर खुलता था। बन-चेरी, सेब और लीपा के पेड तुम्हारी मेज पर, तुम्हारी दावात और तुम्हारी पुस्तकों पर अपने प्रथम पुष्पो की वर्षा करते थे। दीवार पर एक नीली रेशमी घडी की गद्दी लटकी थी – वही जो भूरे बालो तथा नीली-सी आखो वाली एक सहृदय भावुक जर्मन अध्यापिका ने विदाई-भेट के रूप मे तुम्हे दी थी, कभी कभी कोई पुराना मित्र मास्को से तुम्हारे पास आ टपकता था और नयी कविताओ से – जो कभी कभी उसकी अपनी होती थी – तुम्हे आत्मविभोर कर देता था। लेकिन, ओह, एकाकीपन, और वह असह्य रास्ता जो एक मास्टर के भाग्य मे बदा होता है। छुटकारे की आशा नही, अन्तहीन शरद् और सर्दिया, और रोग जो कम होने मे नही आता ओह अवेनीर, अभागे मित्र।

उसकी मृत्यु के कुछ दिन पहले मैं सोरोकोऊमोव से मिलने गया था। तब वह चलने-फिरने योग्य भी नही रहा था। भूस्वामी गूर क्रुप्यानिकोव ने उसे घर से तो नही निकाला था, लेकिन तनख्वाह देना बन्द कर दिया था, और ज्योज़्या के लिए नया मास्टर उसने रख लिया था फोफा कैडटो के एक स्कूल में भर्ती हो गया था। अवेनीर खिडकी के पास एक पुरानी आरामकुर्सी मे बैठा था। बहुत ही सुहावना मौसम था। लीपा के वृक्षो की गहरी भूरी रेखा के ऊपर शरद् का स्वच्छ उजला नीला आकाश फैला था। वृक्षो के पत्ते झड गये थे, केवल जहा-तहां इक्के-दुक्के आखिरी पत्ते, उजले और सुनहरे, सरसरा और अपने इर्द-गिर्द कानाफूसी कर रहे थे। धरती पर पाला जमा था और सूरज की गुलाबी किरनो मे, जो पीली घास पर तिर्छी पड रही थी, अब ओस की बूदो के रूप में पिघल

रहा था। वायु में एक धुधली करारी गूज व्याप्त थी और बाग में मजदूरो की आवाजें सुस्पष्ट तथा पृथक रूप मे सुनाई पड रही थी। अवेनीर एक फटा बोखारा ड्रेसिंग गाउन पहने था, और हरे रग का गुलूबद भयानक कृशकाय चेहरे पर मृत्यु जैसी छाया डाल रहा था। मुझे देखकर वह बेहद खुश हुआ, उसने अपना हाथ बढाया, एकसाथ बाते करना और खासना शुरू किया। बोलने से मैंने उसे मना किया और उसके पास बैठ गया .. अवेनीर के घुटने पर कोल्त्सोव की कविताओ की एक हस्तलिखित पुस्तक रखी थी। बडी सावधानी से कविताओ को उसमें उतारा गया था। मुसकराते हुए उसने उसे सहलाया – "खूब है यह कवि," प्रयास के साथ अपनी खासी को दबाते हुए हकलाती-सी आवाज में उसने कहा, और मुश्किल से सुनाई पडनेवाली आवाज में कविता पढने लगा –

क्या बाज़ के पख बधन मे बधे है?
क्या नभ के पथ में भी ये बधन लगे है?

मैंने उसे रोका। डाक्टर ने उसे बोलने से मना किया था। किस चीज़ से वह खुश होगा, यह मै जानता था। आज के विज्ञान की प्रगति की जानकारी नही रखता, लेकिन यह जानने के लिए वह हमेशा व्यग्र रहता था कि अग्रणीय प्रतिभाओ की साधना के क्या परिणाम हुए है। कभी कभी अपने किसी मित्र को वह अलग कोने में ले जाता और उससे पूछने लगता। वह सुनता और आश्चर्यचकित रह जाता, हर शब्द को सच मानता और बाद में ऐसे ही कहकर दोहराता। जर्मन दर्शन में वह खास तौर से दिलचस्पी लेता था। मैंने उसे हेगेल के बारे में भाषण देना शुरू किया (आप समझ ही गये होगे, यह बहुत पहले की बात है)। अवेनीर ने सहमति से सिर हिलाया, अपनी भौंहो को उठाया, और मुसकराकर फुसफुसा उठा – "ओह, समझा, समझा! बढिया, बहुत बढिया!" इस अभागे, मरते हुए, घर-बार विहीन, उपेक्षित बालक की उत्सुकता देखकर,

मुझे स्वीकार करना चाहिए, मेरी आखे भर आयी। यहा यह बात भी ध्यान देने की है कि अवेनीर, क्षय के आम मरीजो की भाति, अपने रोग के बारे में किसी भ्रम में नही था। लेकिन इससे क्या? उसने आह नही भरी, न रोया-झीका, अपनी हालत का उसने एक बार भी जिक्र तक नही किया ...

अपनी शक्ति बटोरते हुए उसने बोलना शुरू किया – मास्को के बारे में, अपने पुराने मित्रो के बारे मे, पुश्किन के बारे मे, थियेटर और रूसी साहित्य के बारे में। उसे हमारे छोटे-मोटे सध्या-भोजो की याद आयी, हमारे मण्डल मे चलनेवाली सरगर्म बहसो को याद किया। खेद के साथ उसने दो या तीन मित्रो को याद किया जो अब इस दुनिया में नही रहे थे

"दाशा की तो तुम्हे याद है न?" वह कहता गया, "ओह, खरा सोना थी। कितना अच्छा हृदय था उसका! और कितना वह मुझे चाहती थी जाने उसका अब क्या हुआ? निश्चय ही सूखकर काटा हो गयी होगी, बेचारी!"

बीमार आदमी के भ्रम को तोडने का मुझे साहस नही हुआ। और सच पूछो तो यह जानने की उसे जरूरत भी क्यो हो कि दाशा अब उतनी ही मोटी-चौडी हो गयी है जितनी कि वह लम्बी थी, और यह कि वह किन्ही सौदागरो के सरक्षण में रहती है – कोन्दाचकोव बन्धुओ के, अपने गालो को रगती-सवारती रहती है, हर घडी बोलती और गालिया बकती है।

"लेकिन," उसके सूखे हुए चेहरे की ओर देखते हुए मैंने सोचा, "क्या इसे यहा से और कही नही ले जाया जा सकता? शायद यह अभी भी अच्छा हो सके।"

लेकिन अवेनीर ने मेरे सुझाव को बीच में ही काट दिया।

"नही, भाई, नही," उसने कहा, "बहुत बहुत धन्यवाद, लेकिन इससे कोई फर्क नही पड़ता कि कोई कहा मरता है। देखो न, जाड़ो तक

मै खत्म हो जाऊगा। नाहक क्यो किसी को तकलीफ दू? इस घर का मै आदी हो गया हू। यह सच है कि यहा के मालिक ”

“क्रूर है, क्यो?” मैंने बीच मे ही कहा।

“नही, क्रूर नही, बल्कि हृदयहीन है। जो हो, मै उनकी शिकायत नही कर सकता। पडोसियो को ही लो जमीदार कसातकिन की लडकी सलीकेदार, सहृदय और मोहक गरूर जरा भी नही ”

सोरोकोऊमोव को फिर खासी ने घेर लिया।

“किसी चीज का गिला नही,” कुछ दम लेकर उसने फिर कहना शुरू किया, “बस, इतना ही है कि वे मुझे अपना पाइप पीने दें मरने से पहले भी मै उसे नही छोड सकता।” अपनी एक आख को धूर्तता से पिचकाते हुए अन्त में उसने कहा। “खुदा का शुक्र है, काफी जीवन मैंने देखा। एक से एक अच्छे लोगो से मेरा सम्पर्क हुआ .”

“लेकिन तुम्हे, कम से कम, अपने सगे-सबधियो को तो खबर कर देनी चाहिए।”

“बेकार है उन्हे लिखना। वे मेरी क्या मदद कर सकते है? जब मर जाऊगा, तो उन्हे पता चल जायेगा। लेकिन छोडो, यह सब क्या ले बैठे अच्छा हो कि तुम दुनिया का कुछ हाल सुनाओ। क्या क्या देखा?”

मैंने उसे अपने अनुभव सुनाने शुरू किये। साफ मालूम होता था कि वह सब रस लेकर सुन रहा है। साझ होते मै वहा से चल दिया, और उसके दस दिन बाद मुझे मि० क्रुप्यानिकोव का निम्न पत्र मिला—

‘आपकी सेवा मे, श्रीमान, सूचित करना है कि आपका मित्र, वह छात्र जो मेरे यहा रह रहा था—मि० अवेनीर सोरोकोऊमोव—तीन दिन हुए दोपहर मे दो बजे मर गया, और उसे आज बस्ती के गिरजे मे, मेरे खर्च पर, दफना दिया गया है। उसने मुझसे कहा था कि पुस्तकें तथा कापिया आपके पास भेज दू। वे पत्र के साथ भेजी जा रही है। साढे बाईस रूबल उसके पास निकले थे, जो, अन्य सामान के साथ, उसके सबधियो

को मिल जायेंगे। आपका मित्र पूर्णतया सचेत अवस्था मे मरा और, इजाजत हो तो कहू, इतने निरपेक्ष भाव से मरा कि उस समय जबकि हम सब के सब उनसे आखिरी विदा ले रहे थे, खेद या शोक का उसने जरा-सा भी चिन्ह प्रकट नही किया। मेरी पत्नी क्लेओपात्रा अलेक्सान्द्रोवना आपको अपना अभिवादन भेजती है। आपके मित्र की मृत्यु ने, कहने की आवश्यकता नही, उसके स्नायुओ को झझोड दिया है। जहा तक मेरा सबध है, शुक्र है खुदा का, मै अच्छी तरह हू। मै हू आपका विनम्र सेवक

गूर क्रुप्यानिकोव।'

इस तरह की और भी कितनी ही मिसाले याद आती है, लेकिन सबका वर्णन कर सकना सम्भव नही। केवल एक तक ही यहा मै अपने-आपको सीमित रखूगा।

देहात की एक वृद्ध जमीदारिन की मृत्युशैया के पास मै मौजूद था। पादरी ने मरने के समय की प्रार्थना पढना शुरू कर दी थी, लेकिन अचानक ऐसा कुछ आभास पाकर कि रोगिणी के प्राण वास्तव मे निकला ही चाहते है, चूमने के लिए उसने जल्दी से उसकी ओर क्रॉस बढाना चाहा। महिला ने नाराजगी के अन्दाज मे अपना मुह फेर लिया। अस्फुट आवाज मे उसने कहा—"आप बहुत जल्दी में मालूम होते है, पादरी, फिर समय काफी है।" उसने क्रॉस का चुम्बन किया, अपने तकिए के नीचे हाथ रखा, और मर गयी। तकिए के नीचे चादी का एक रूबल था। खुद अपनी मृत्यु-समय के प्रार्थना-पाठ के लिए वह पादरी का देना-पावना चुकता करना चाहती थी

यह सच है, रूसियो के मरने का ढग अद्भुत होता है।

गायक

कोलोतोवका एक छोटा-सा गाव है जो बीते ज़माने में एक ज़मीदारिन की मिल्कियत था, जो अपने गहरे बनियापन की वजह से, पास-पडोस में मक्खीचूस के नाम से प्रसिद्ध थी (उसका असली नाम अधकार के गर्भ में खोया है)। लेकिन इधर कुछ समय से वह गाँव पीटर्सबर्ग के एक जर्मन की मिल्कियत में आ गया है। एक बजर पहाडी के ढलुवान पर वह बसा है। एक भारी खाई, ऊपर से लेकर नीचे तक, इस पहाडी को दो हिस्सो में काटती है। खाई क्या है, जैसे अतल गर्त मुह बाये है। उसके इधर-उधर के बाजुओ को बारिश और बर्फ ने खोखला कर दिया है और यह बल खाती गाव की राह के ठीक मध्य तक चली गयी है। अभागे गाव के दो हिस्सो को इसने नदी से भी ज्यादा अलग कर दिया है, कारण कि नदी को तो फिर भी कम से कम, पुल के ज़रिये पार किया जा सकता है। कुछ क्षीणकाय बेंत-वृक्ष सहमे-से इसके रेतीले ढलुवानो से चिपके है, और एकदम नीचे–सूखे और पीतवर्ण तले पर–आर्गिलेश्यस पत्थर की भीमाकार शिलाए पडी हैं। उछाह को नष्ट करनेवाली स्थिति है, इसमें सन्देह नही, फिर भी आसपास के सभी लोग कोलोतोवका की राह से अच्छी तरह परिचित है, वे वहा अक्सर जाते है, और वहा जाकर हमेशा खुश होते है।

खाई की एकदम चोटी पर, उस स्थल से कुछ डग दूर जहा से वह खाई धरती में एक तग फाक के रूप में शुरू होती है, एक छोटी-सी

चौरन झोपडी खडी है। वह अकेली खडी है, अन्य सबसे अलग-थलग। बेंत की इसकी छत है, और धुवाकश भी इसमें मौजूद है। एक खिडकी, एक पैनी आग की तरह खाई की ओर देखती रहती है। जाडो की साझ में जबकि झोपडी में रोशनी होती है, पाले की धुधली धुध के बीच वह दूर से दिखाई देती है, और उसकी रोशनी राह-चलते अनेक किसानो के लिए मार्गदर्शक तारे की भाति टिमटिमाती रहती है। उसके दरवाजे के ऊपर कीलो से एक नीली तख्ती जडी है। यह झोपडी एक शराबखाना है, जो 'स्वागत-गृह' नाम से प्रसिद्ध है। यहा शराब बिकती है, और सम्भवत आम दामो से कुछ सस्ती नही मिलती, लेकिन आसपास की इस तरह की अन्य जगहो के मुकाबिले, यहा कही ज्यादा सख्या मे लोग आते है। इसका कारण इस शराबखाने का मालिक निकोलाई इवानिच है।

निकोलाई इवानिच – जो कभी दुबला-पतला, घुघराले बाल और गुलाबी गालो वाला युवक था, अब एक अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट वयस्क है – सफेद बालवाला, थलथल चेहरा, टुइया-सी भली और चण्ट आखें, चिकना माथा जिसके समूचे हिस्से में रेखाओ की भाति झुर्रिया खिची है। वह बीस साल से भी अधिक अर्से से कोलोतोवका में रह रहा है। निकोलाई इवानिच, अधिकाश शराबखाना-मालिको की भाति, गाठ का पक्का और तेज़ आदमी है। हालाकि वह लोगो को खुश करने या उनसे बतियाने की कोई खास कोशिश नही करता, फिर भी वह अपने गाहको को आकर्षित करने तथा हिलगाने की कला जानता है। उन्हे भी अपने इस सुस्त मेजबान की शात तथा कोमल, लेकिन चौकस नजर के नीचे उसके शराबखाने में समय बिताना बडा अच्छा मालूम होता है। वह काफी सूझ-बूझ का धनी है, भू-स्वामियो, किसानो और शहरियो के जीवन की परिस्थितियो की पूर्ण समझ रखता है। कठिन मामलो में, अगर वह चाहे तो, ढग की सलाह दे सकता है, लेकिन, एक चौकस तथा स्वार्थी आदमी की भाति, अलग रहना ही पसन्द करता है, और अधिक से अधिक – सो भी केवल

अपने घनिष्टतम गाहकों के लिए—उडते इशारो से, जैसे अनजाने और अनायास ही, उन्हे ठीक रास्ते के बारे में सुझाता है। रसियो के लिए दिलचस्पी या महत्त्व की हर चीज की जानकारी रखता है—घोडो और मवेशियो की, इमारती लकडी और ईंटो की, मिट्टी के बरतनो, कपडो, चमडे तथा नाच और गानो की। जब उसके यहा गाहक नही होते तो वह, आम तौर से, अपनी झोपडी के द्वार के सामने धरती पर बोरे की भाति बैठा रहता है, दुबली-पतली टागो को अपने बदन के नीचे समेटे, हर राह-चलते से अभिवादन के मीठे बोल बोलता रहता है। अपने जीवन में उसने बहुत कुछ देखा है। पचीसियो छोटे कुलीन, जो उसके यहा वोद्का लेने आया करते थे, उसके देखते-देखते रुखसत हो गये। सौ मील के एटे-पेटे में हर चीज की उसे खबर रहती है, लेकिन किसी के भेद नही बताता और कभी आभास तक नही देता कि वह उन चीजो को भी जानता है जिनका अत्यन्त चतुर पुलिस अफसर तक गुमान नही कर सकते। वह अपना भेद छिपाये रखता है, हसता है, और अपने गिलास को खनकाता रहता है। उसके पडोसी उसका आदर करते है। गैर फौजी जेनरल—श्चेरेपेतेन्को जिले के भू-स्वामियो में जिसका दर्जा सबसे ऊचा है—जब कभी उसकी छोटी झोपडी के पास से गुजरता है तो दयालुतापूर्ण अन्दाज से सिर हिलाकर उसका अभिवादन करता है। निकोलाई इवानिच असर-रसूखवाला आदमी है। घोडो का एक नामी चोर था। उसने निकोलाई इवानिच के एक मित्र के अस्तबल से घोडा चुरा लिया। निकोलाई इवानिच के असर से वह घोडा वापिस आ गया। पास के एक गाव के किसानो ने जब किसी कारिन्दे को अपने ऊपर मानने से इन्कार कर दिया था, तो उसने उनके होश ठिकाने लगा दिये, आदि आदि। लेकिन यह समझना गलत होगा कि यह सब वह अपनी न्यायप्रियता की वजह से, पडोसी के प्रति अपने आदर-भाव की वजह से, करता है—नही! वह तो केवल हर उस चीज़ को जो, किसी भी रूप मे, उसके आराम और आसाइश में खलल डाल सकती

है, रोकने का प्रयत्न करता है। निकोलाई इवानिच विवाहित है, और उनके बाल-बच्चे है। उनकी घरवाली चपल और चुस्त, पैनी नाक और पैनी नजरवाली गहरी आंख है। इधर कुछ सालो से, अपने पति की भाति, वह भी मोटा गयी है। वह हर चीज़ के लिए उसपर निर्भर रहता है। कैश-बक्स की कुजी उसी के पास रहती है। नशे में उत्पात करनेवाले उससे डरते है। वह उन्हे पसन्द नही करती। पल्ले उनसे कुछ पडता नही, और दुनिया-भर का शोर वे मचाते है। पीने पर भी अपनी जबान और शालीनता को कायम रखनेवाले उसे अच्छे लगते है। निकोलाई इवानिच के बच्चे अभी छोटे है। पहले सब मर गये। लेकिन जो बचे है, वे अपने माता-पिता पर पडे है। उनके छोटे-छोटे स्वस्थ तथा समझदार चेहरे बडे प्यारे लगते है।

जुलाई का महीना था। असह्य गर्मी पड रही थी। तभी, एक दिन, अपने पावो को जैसे-तैसे घसीटता, कोलोतोवका की खाई के किनारे किनारे, अपने कुत्ते के साथ मै 'स्वागत-गृह' की ओर बढ रहा था। सूरज, जैसा कि कहते है, क्रोधोन्मत्त, आकाश से आग बरसा रहा था और निर्ममता के साथ धरती को भून रहा था। हवा में दमघोट धूल भरी थी। चमकीले कौवे अपनी चोचो को फाडे, उदासी के साथ राह-चलतो की ओर ताक रहे थे, जैसे रहम की भीख माग रहे हो। केवल गौरैये उदास नही थे, बल्कि अपने परो को फैलाये, और दिनो से भी अधिक जोश के साथ, चहक रहे थे, बाडो पर झगडते, धूल भरी सडक पर से एक साथ उडते और सन के हरे खेतो के ऊपर भूरे बादलो के रूप मे मडराने लगते। प्यास के मारे मेरा बुरा हाल था। आसपास में पानी का कुछ पता नही था। कोलोतोवका में, और इसी प्रकार स्तेप के अन्य कतिपय गावो मे भी लोग जोहड मे से एक तरह की पतली कीचड पीते है। कारण, न तो वहा झरने है, न कुवें। और इस घिनौने पेय को भला पानी कौन कहेगा? सो एक गिलास बीयर या क्वास पीने की आशा में मैं निकोलाई इवानिच की ओर बढ रहा था।

यो तो साल के बारहो महीने—और यह मानना पडेगा—कोलोतोवका कभी भी कोई बहुत आकर्षक स्थल नही मालूम होता, लेकिन उस समय तो वह खास तौर से उदास मालूम होता है जब जुलाई के चौंधिया देनेवाले सूरज की निर्मम किरनें आग बरसाती है। गहरी खाई और घरो की भूरी लडखडाती छतो पर, और झुलसी धूल भरी चरागाह पर क्षीणकाय तथा लम्बी टागो वाली मुर्गिया निराश भटकती नजर आती है। पुरानी गढी के अवशेषो पर जिसका अब केवल खोखला, एस्प लकडी का भूरा ढाचा-भर बाकी रह गया है और खिडकियो की जगह छेद नजर आते है। उसके इर्द-गिर्द बिछुआ, चिरायता और जगली घास बुरी तरह उग आयी है और जोहड काला पड गया है। हसो के परो से छितरा हुआ, किनारो पर अधसूखी कीचड जमी हुई है, और उसका टूटा-फूटा-सा बाध जिसके निकट, पावो से महीन रौंदी हुई राख जैसी धरती के ऊपर भेडें, गरमी के मारे बेदम और हाफती, नाचारगी में एक-दूसरे से सटी खडी रहती है, ऊब से थकी और अपने सिरो को लटकाये जैसे इस असह्य गर्मी के आखिर खत्म होने की प्रतीक्षा कर रही हो। थककर चूर पावो को घसीटता मैं निकोलाई इवानिच के घर के निकट पहुचा। गाव के लडको के लिए मैं जैसे एक अजूबा था। जैसा कि होता है, बेमतलब और एकटक नजर से वे मुझे ताकते रहे। और कुत्तो ने, अपना क्षोभ प्रकट करते हुए, गला फाडकर और इतने जोरो से भौंकना शुरू किया कि लगता था जैसे उनकी आतें ही निकल जायेंगी—यहा तक कि वे बेदम होकर हाफने लगे। तभी, अचानक, शराबखाने के दरवाजे में एक आदमी प्रकट हुआ—लम्बा कद, नगा सिर, ग्रेटकोट पहने जो कमर के नीचे एक नीले कमरबद से कसा था। वह गृह-दास-सा मालूम होता था। उसके मुरझाये हुए, झुर्रियोदार चेहरे के ऊपर घने सफेद बाल अस्तव्यस्त खडे थे। अपनी बाहो से—जो प्रत्यक्षत जरूरत से ज्यादा हिल रही थी—वह किसी को इशारे करके पुकार रहा था। साफ मालूम होता था कि वह पिये हुए है।

"अरे, आओ, चले आओ!" लडखडाती आवाज में उसने कहा, अपनी घनी भौंहो को मुश्किल से चढाते हुए, "अरे आओ, जल्दी आओ, झपकौआ! ओह, भाई, तुम भी क्या चीटी चाल से रेग रहे हो, सच! गज़ब करते हो, भाई, गज़ब! वे भीतर तुम्हारा इन्तजार कर रहे है, और तुम अभी रेग ही रहे हो। आओ, जल्दी आओ।"

"अच्छा अच्छा, आया, अभी आया!" फटी-सी आवाज़ आयी और झोपडी के पीछे से एक टुइया-सा आदमी प्रकट हुआ—नाटा कद, मोटा, थलथल, लगडा। वह अपेक्षाकृत साफ-सुथरा ऊनी कोट एक ही आस्तीन से लटकाये था और सिर पर एक ऊची नोकदार टोपी लगाये था जो नीचे भौंहो तक खिची थी। इससे उसका गोल गावदुम चेहरा बड़ा चण्ड और हास्यजनक मालूम होता था। उसकी छोटी छोटी पीली आखें बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थी और उसके पतले होठ बराबर एक बाधित मुसकान धारण किये थे। उसकी पैनी और लम्बी नाक, पतवार की भाति, निर्लज्ज अन्दाज में आगे को बढी हुई थी। "आया, भाई, आया।" लगडाता हुआ वह शराबखाने की ओर बढा। "मुझे किस लिए पुकार रहे हो? कौन मेरी इन्तज़ार कर रहा है?"

"मै क्यो तुम्हे पुकार रहा हू?" ग्रेटकोट पहने आदमी ने ताने के लहजे में कहा। "तुम भी अजीब जीव हो, झपकौआ! हम तुम्हे शराबखाने में आने के लिए पुकार रहे है, और तुम पूछते हो कि क्यो पुकार रहे हो? यहा भले लोग सब के सब, तुम्हारी बाट देख रहे है—याकोव-तुर्क, और बन-मास्टर और जीज़द्रा का ठेकेदार। याश्का ने ठेकेदार के साथ बाजी बदी है, एक कुल्हड बीयर का, जो एक नम्बर रहेगा, जो सबसे अच्छा गायेगा समझे?"

"क्या याश्का गाने जा रहा है?" झपकौआ के नाम से सम्बोधित आदमी ने सजग दिलचस्पी के साथ कहा। "लेकिन कही यह तुम हवाई तो नही चला रहे हो, बकबक?"

"मै बकवास नही कर रहा," बकबक ने गर्व के साथ कहा, "बकवास तो तुम करते हो। जब बाजी लगी है तो सोचना चाहिए कि वह गायेगा। कुछ आया समझ में मेरे बेनजीर बुद्धू, गोबर दिमाग, झपकौए!"

"अच्छा अच्छा, तो चलो, भीतर चले, मेरे भोले!" झपकौवे ने पलटकर कहा।

"इसी बात पर कम से कम एक चुम्मा तो दो प्यारे!" अपनी बाहो को चौडा फैलाते हुए बकबक ने कहा।

"दूर हो, बडा आया है प्यार करनेवाला!" अपनी कोहनी से उसे धकियाते हुए झपकौवे ने घृणा से कहा, और दोनो ने झुककर नीचे दरवाजे में प्रवेश किया।

उनकी बातचीत ने, जो मुझे अनायास ही सुनाई पड गयी थी, मेरी उत्सुकता को बेहद जगा दिया। याकोव-तुर्क के बारे में एक से अधिक बार मै सुन चुका था कि वह इधर के इलाके में सबसे अच्छा गायक है, और अब अचानक उसे सुनने का–सो भी कला के एक अन्य माहिर के साथ प्रतियोगिता में–अवसर मेरे सामने प्रस्तुत था। मैंने अपने कदम तेज किये और घर के भीतर पहुच गया।

हमारे पाठको में सम्भवत बहुत ही कम ऐसे होगे जिन्हे गाव के किसी शराबखाने को देखने का मौका मिला हो, लेकिन हम शिकारी लोग सभी जगह पहुच जाते है! उनकी बनावट बहुत ही सीधी सादी होती है। उनमें आम तौर से एक अधियारा दालान और एक भीतरी कमरा होता है जो बीच की दीवार द्वारा दो हिस्सो में बटा होता है। पीछेवाले हिस्से में किसी गाहक को जाने का अधिकार नही होता। बीच की दीवार में, बलूत की एक चौडी मेज के ऊपरवाले हिस्से में, एक चौडा छेद कटा है। इस मेज या काउटर पर शराब बेची जाती है। छेद के ठीक सामने खानो में विभिन्न आकार की बद बोतले सजी है। कमरे के अगले

हिस्से मे, जो गाहको के काम आता है, वेंचे, दो या तीन खाली पीपे और एक कोने मे मेज़ रखी है। गाव के शराबखाने ज्यादातर अधियारे होते है, और उनकी दीवारो पर रग-विरगे सस्ते चित्र कम देखने में आते है जोकि गाव के घरो में जरूर लगे होते है।

जव मै 'स्वागत-गृह' के भीतर पहुचा तो वहा काफी वडी मण्डली जमा थी।

काउटर के पीछे अपनी उसी जगह पर, वीच की दीवार के छेद को करीव करीव पूरी तरह ढके हुए, धारीदार छीट की कमीज पहने निकोलाई इवानिच खडा था। अपने मोटे गालो वाले चेहरे पर अलस मुसकान के साथ झपकौआ और वकवक के लिए—उस समय जब कि वे भीतर दाखिल हुए—अपने मोटे थलथल गोरे हाथ से दो गिलासो मे वोद्का ढाल रहा था। उसके पीछे, खिडकी के निकट एक कोने में, पैनी नज़रवाली उसकी पत्नी नज़र आती थी। कमरे के बीचोवीच याकोव-तुर्क खडा था—तेईसेक वर्ष की आयु, दुबला-पतला और सुडौल। वह नीले नानकिन का लम्वे पल्लेवाला कोट पहने था। देखने मे एक चुस्त-चपल फैक्टरी-मजदूर मालूम होता था और आकार-प्रकार से वह कुछ ज्यादा अच्छे स्वास्थ्य का धनी नही जान पडता था। उसके धसे हुए गाल, उसकी वडी वडी वेचैन-सी भूरी आखे, सीधी-सतर नाक और कोमल गतिशील नथुने, उसके पीत-सुनहरे घुघराले वाल जो गोरे-चिट्टे ढलुवा माथे के ऊपर पीछे की ओर उलटकर सवारे हुए थे, उसके भरे हुए किन्तु सुन्दर, भावपूर्ण होठ और उसका समूचा चेहरा अनुराग भरी तथा सवेदनशील प्रकृति का सूचक था। वह काफी विह्वल मालूम होता था। वह अपनी आखे टिमटिमा रहा था, उसकी सास तावडतोड चल रही थी, उसके हाथ थरथरा रहे थे, जैसे उसे वुखार चढा हो, और सचमुच उसे वुखार चढा भी था—विह्वलता का आकस्मिक वुखार जिसमे वे सभी अच्छी तरह परिचित है जो श्रोताओ के सामने वोलने या गाने के लिए खड़े होते

है। उसके निकट चालीसेक साल का एक और आदमी खडा था—चौडे कधे और चौडी कपोलास्थि, सकरा माथा, सकरी तातार आखें, छोटी चपटी नाक, चौरस ठोडी और चमकीले काले बाल, सुअर के बालो की भाति कडे। सावले, सीसे जैसा रग लिये, उसके चेहरे और खास तौर से पीले होठो का भाव, अगर वह इतना थिर और स्वप्निल न होता, तो निरा बनैला बनकर रह जाता। वह अपना एक पुट्ठा तक नही हिला रहा था, जुए में जुते बैल की भाति धीमे अन्दाज में बस अपने इर्द-गिर्द ताक रहा था। चिकने तावे के बटन लगा फ्रॉक-कोट-सा कुछ वह पहने था जो नया कतई नही था, और अपनी भारी-भरकम गरदन के इर्द-गिर्द काले रेशम का एक पुराना रूमाल लपेटे था। उसे लोग बन-मास्टर कह रहे थे। उसके ठीक सामने, देव-प्रतिमाओ के नीचे एक बेंच पर, याश्का का प्रतिद्वन्दी, जीज्द्रा का ठेकेदार बैठा था। तीसेक वर्ष का आदमी, नाटा कद, मजबूत काठी, चेचक मुहदाग, घुघराले बाल, टुटी, ऊपर को उठी नाक, सजीव भूरी आखे और खसरा दाढी। वह पैनी नजर से इधर-उधर देख रहा था, हाथो को अपने नीचे दावे था, टागो को लापर्वाही से हिला रहा था और पावो को—जो किनारोदार तर्जदार बडे बूटो से लैस थे—थपथपा रहा था। मखमली कालर से युक्त भूरे ऊनी कपडे का एक नया झिनझिना कोट वह पहने था। इसके नीचे एक लाल कमीज नज़र आती थी जिसके बटन गले से सटकर वद थे, और जिसका रग कोट के अनुपात मे, और भी ज्यादा चटक मालूम होता था। सामने के कोने में, दरवाजे के दाहिनी ओर, मेज़ पर एक किसान बैठा था—एक तग फटा ग़गला पहने जो कधे पर फटा हुआ था। दो छोटी छोटी खिडकियो के धूल से अटे परलो मे से सूरज की रोशनी की एक पतली पीतवर्ण धारा भीतर पड रही थी, बल्कि कहिये कि कमरे के चिर-निवासी अधकार से निष्फल सघर्ष कर रही थी। कमरे की हर चीज धुधली नज़र आती थी, जैसे आशिक रोशनी के धब्बे छितरे हो। लेकिन, दूसरी ओर,

कमरा बहुत कुछ ठंडा मालूम होता था और चौखट को लाघते ही दमघोट गर्मी उस तरह जाती रही जैसे सिर पर से थका देनेवाला बोझ उतार लिया गया हो।

मेरा प्रवेश—और यह मैं साफ देख सकता था—निकोलाई इवानिच के गाहकों को पहले-पहल कुछ अखरा, लेकिन यह देखकर कि वह मित्र की भाति मेरा अभिवादन कर रहा है, वे आश्वस्त हो गये और इसके बाद जैसे मुझे भूल गये। मैंने थोडी बीयर की फरमाइश की और एक कोने में बैठ गया, उस किसान के पास जो फटा हुआ झगला पहने था।

"हा तो," बकबक ने सुरदार आवाज मे कहा, शराब के अपने गिलास को एक ही घूट मे यकायक अपने गले मे उडेलते तथा अपने उद्गार के साथ हाथो को अजीब अन्दाज में हिलाते हुए—जिसके बिना उसके लिए एक भी शब्द जुबान पर लाना सम्भव नही मालूम होता था—"अब क्या देर है? जब शुरू ही करना है तो कर डालो। हा तो, याश्का!"

"हा, हो जाय, शुरू हो जाय!" निकोलाई इवानिच ने भी उछाह से सुर में सुर मिलाया।

"बेशक, शुरू हो जाय," आत्मविश्वास से भरी मुसकान के साथ ठेकेदार ने थिर भाव से कहा, "मै तैयार हू।"

"और मैं भी तैयार हू," विह्वलता से उमगती आवाज मे याश्का ने घोषणा की।

"अच्छा तो शुरू करो," झपकौआ चिचियाया।

लेकिन, सर्वसम्मति से व्यक्त इस इच्छा के बावजूद, दोनो मे से एक ने भी शुरू नही किया। ठेकेदार तो अपनी बेंच से उठा तक नही। लगता था जैसे वे किसी चीज की प्रतीक्षा में हो।

"शुरू करो!" तेजी के साथ और मुह फुलाकर वन-मास्टर ने कहा।

याकोव चौक पडा। ठेकेदार उठा, अपनी पेटी को ठीक किया और गले को साफ किया।

"लेकिन शुरु कौन करे?" वन-मास्टर से, थोडे वदले हुए लहजे में, उसने पूछा। वन-मास्टर कमरे के वीचोवीच अभी भी वैसे ही निश्चल खडा था, अपनी जवर टागो को चौडा फैलाये और अपनी सवल वाहो को लगभग कोहनी तक शलवार की जेवो मे खोसे।

"तुम, बिलाशक तुम," वकवक ने हकलाते हुए ठेकेदार से कहा, "समझे भाई, तुम।"

वन-मास्टर ने भौंहो के नीचे से उसकी ओर ताका। वकवक ने एक हल्की-सी ची की, अचकचाकर छत की ओर देखा, अपने कधो को बिचकाया, और इसके बाद कुछ नही वोला।

"चित्त-पट्ट कर लो," वन-मास्टर ने दो-टूक आवाज़ मे घोपित किया। "और वोयर के कुल्हड को मेज पर रखो।"

निकोलाई इवानिच नीचे की ओर झुका, हाफकर फर्श पर से वीयर का कुल्हड उठाया और उसे मेज पर जमा दिया।

वन-मास्टर ने याकोव की ओर देखा, और कहा—"हा तो।"

याकोव ने अपनी जेव को टटोला, एक कोपेक निकाला, अपने दातो से उसपर निशान लगाया। ठेकेदार ने अपने लम्वे कोट के घेरे के भीतर से चमडे का एक नया वटुवा निकाला, धीरे धीरे उसकी डोरी खोली, उसे हिलाकर अपनी हथेली पर ज्यादा रेजगारी वाहर निकाली, और एक नया कोपेक चुनकर उठा लिया। वकवक ने अपनी मैली टोपी आगे वढायी जिसकी कलगी टूटी थी और अलग लटक आयी थी। याकोव ने अपना सिक्का उसमें डाल दिया, और ठेकेदार ने अपना।

"देखो, एक ही उठाना," वन-मास्टर ने झपकीवे से कहा।

झपकौआ आत्मतुष्टि से मुसकराया, दोनो हाथो में टोपी को उसने थामा, और उसे हिलाने लगा।

एकाएक गहरा सन्नाटा छा गया। सिक्के, एक-दूसरे से टकराकर, धीमी आवाज़ में खनक रहे थे। मैंने ध्यान से अपने इर्द-गिर्द देखा। हर चेहरे पर गहरी उत्सुकता का भाव छाया था। खुद वन-मास्टर तक में व्यग्रता के चिन्ह प्रकट हो रहे थे। यहा तक कि मेरा पडोसी किसान भी, जो फटा हुआ झगला पहने था, उत्सुकता से अपनी गरदन को आगे की ओर खीचे था। झपकौवे ने टोपी के भीतर अपना हाथ डाला और ठेकेदार का सिक्का उसने निकाला। हरेक ने एक लम्बी सास भरी। याकोव का चेहरा गुलावी हो उठा, और ठेकेदार ने अपने बालो पर हाथ फेरा।

"देखा, मैंने तो पहले ही कहा था कि तुम शुरू करो," बकबक चहका, "क्यो, कहा था न?"

"बस, बस!" वन-मास्टर ने घिनाकर कहा। फिर ठेकेदार की ओर सिर से इशारा करते हुए, "हा तो शुरू करो!"

"कौनसा गीत शुरू करू?" ठेकेदार ने पूछा, थोडा घबराहट का अनुभव करते हुए।

"जो तुम्हे पसन्द हो," झपकौवे ने जवाब दिया, "जो भी तुम चुनो।"

"बेशक, जो तुम चुनो," सीने पर जुडे अपने हाथो को धीरे धीरे बगलो के नीचे दबाते हुए निकोलाई इवानिच ने स्वर में स्वर मिलाया। "तुम्हे इसकी पूरी छूट है। जो चाहो गाओ, शर्त यही है कि बढिया गाना, और हमारा जो सही फैसला होगा, वह हम बाद मे देंगे।"

"सही फैसला, बिलकुल ठीक!" अपने खाली गिलास को चाटते हुए बकबक ने कहा।

"अच्छा तो साथियो, ज़रा मुझे अपना गला साफ कर लेने दो," अपने कोट के कालर में उगली घुमाते हुए ठेकेदार ने कहा।

"बस, बस, ज्यादा नख़रे न दिखाओ, शुरू कर दो!" वन-मास्टर ने कहा और नीचे की ओर देखने लगा।

ठेकेदार ने एक क्षण कुछ सोचा, फिर अपने सिर को झटका दिया, और आगे आ गया। याकोव की आखें उसपर चिपकी थी।

लेकिन इससे पहले कि मै खुद प्रतियोगिता का वर्णन करना शुरू करू, मेरी समझ में यह कुछ वेजा न होगा कि मै अपनी कहानी में हिस्सा लेनेवाले पात्रो में से प्रत्येक के वारे में दो-चार शब्द कह दू। इनमें से कुछ के जीवन से तो मै उन्हे 'स्वागत-गृह' में देखने से पहले ही परिचित था। अन्य के वारे में मुझे कुछ तथ्य वाद में मालूम हुए।

तो वकवक से हम शुरू करे। इस आदमी का असली नाम येवग्राफ इवानोव था, लेकिन आसपास के तमाम लोग सिवा वकवक अन्य किसी नाम से उसे नही पुकारते थे। और वह खुद भी इसी उपनाम से अपना उल्लेख करता था, इतनी अच्छी तरह से यह नाम उसके साथ चसपा हो गया था। और सचमुच, उसकी नगण्य, सदा वेचैन शकल-सूरत को देखते हुए इससे अधिक उपयुक्त नाम उसके लिए और कोई हो भी नही सकता था। वह एक निश्चित अन-व्याहा गृह-दास था, जिसे खुद उसके मालिको ने एक मुद्दत हुई निकाल वाहर किया था और जो बिना किसी काम-धधे के, बिना एक कोपेक भी कमाये, दूसरे लोगो के खर्चे पर प्रतिदिन नशे में धुत्त होने की जुगत भिडाना जानता था। उसके जान-पहचानियो की सख्या काफी वडी थी जो शराब और चाय से उसकी खातिर करते थे, हालाकि यह वे खुद नही बता सकते थे कि वे ऐसा क्यो करते है। कारण, मण्डली का मनोरजन करना तो दूर, अपनी वेमानी वकवक से, अपनी असह्य घनिष्टता से, अपने अनियन्त्रित अग-सचालन तथा कभी न रुकनेवाली अस्वाभाविक हसी से सवको ऊवा देता था। न वह गा सकता था, न नाच सकता था। अपने जीवन में उसने कभी कोई दक्षतापूर्ण या तुक की वात नही कही थी। वह केवल वकवक करता था, हर चीज के वारे में झूठ वोलता था। वह पूरा वकवक था। फिर भी, वीस-पच्चीस मील के ऐटे-पेटे में एक भी दारू-पार्टी ऐसी

नही हुई जिसमें मेहमानो के बीच, अपने पतले-लम्बे आकार के साथ वह न मौजूद हो। यहा तक कि उसके वे अब आदी हो गये थे, और एक अनिवार्य बुराई के रूप मे उसे सहन कर लेते थे। वे सब के सब—यह सच है—उसे नीची नजर से देखते थे। लेकिन उनमें केवल बन-मास्टर ही एक ऐसा था जो उसकी मूर्खतापूर्ण बकबक को काबू में रखना जानता था।

झपकौवे में और बकबक मे ज़रा भी समानता नही थी। उसका उपनाम भी उसपर लागू होता था, हालाकि वह अन्य लोगो की अपेक्षा अपनी आखो को कुछ ज्यादा नही टिमटिमाता था। यह एक जानी-मानी बात है कि रूसी लोग अच्छे उपनाम देने में माहिर होते है। बावजूद इसके कि इस आदमी के अतीत के बारे में विस्तार से जानने की मैंने कोशिश की, फिर भी उसके जीवन के कितने ही स्थल मेरे लिए—और शायद अन्य कितने ही लोगो के लिए भी—बराबर अधकार के धब्बे बने हुए है। उसके जीवन की घटनाए—जैसा किताबवाले कहते है—विस्मृति के गर्त में खोयी है। मै केवल इतना ही जान सका कि वह कभी एक सन्तानहीन वृद्धा मालकिन के यहा कोचवान के रूप मे नौकरी करता था, और तीन घोडो के साथ—जो उसकी देख-रेख में थे—नौ-दो-ग्यारह हो गया था। पूरे एक साल तक वह गायब रहा और, इसमें शक नही, कि आवारा जीवन की त्रुटियो तथा कठिनाइयो के अनुभव से उसने कान पकडे और वह लौटकर फिर वही पहुचा। परन्तु तब वह पगु हो चुका था। अपनी मालकिन के पावो पर जा गिरा। अपने अनुकरण-योग्य व्यवहार से, कुछ ही सालो में, उसने अपने अपराध को धो दिया और धीरे धीरे अपनी मालकिन की नज़रो में ऊचा उठा और उसका पूर्ण विश्वास प्राप्त करते हुए अन्त में कारिन्दे के पद पर पहुच गया। इसके बाद अपनी मालकिन की मृत्यु हो जाने पर—कैसे, यह कभी नही मालूम हो सका—उसे कम्मीगिरी से आज़ादी मिली। उसने

अब शहरियो की श्रेणी में पाव रखा, पडोसियो से लगान पर साग-भाजी की कुछ क्यारिया ली, धन कमाया और अब अमन-चैन से दिन बिता रहा था। वह अनुभवी आदमी था। माल काटना जानता था। भलाई या बुराई की भावना से अधिक जिसमें अपना फायदा देखता था वही करता था। उसने काफी पापड बेले थे। वह लोगो को समझता और उनसे अपना काम निकालना जानता था। वह लोमडी की भाति चौकस था, और साथ ही उसमे व्यावहारिक सूझ भी थी। हालाकि खुर्राट स्त्रियो की भाति कानाफूसी में वह रस लेता था, फिर भी वह अपना भेद कभी नही प्रकट होने देता था, जबकि अन्य लोगो से वह सभी कुछ उगलवा लेता था। भोला बनने या दिखने का वह कभी प्रयत्न नही करता था, जैसा कि उस जैसे चालाक लोग ज्यादातर करते है। साथ ही ऐसा करना उसके लिए कठिन था। उस जैसी छोटी छोटी आखें—काइया पटवीजनो से अधिक पैनी और भीतर तक पैठ जानेवाली आखें मैंने कभी नही देखी। वे कभी देखती मात्र नही थी, बल्कि उलटती-पुलटती और कोना कोना छानती मालूम होती थी, जैसे कुछ भी उनसे छिपा नही रह सकता। कभी, प्रत्यक्षत किसी मामूली बात को लेकर, एक साथ कई कई हफ्ते तक वह सोचता रहता, और फिर कभी अचानक जोखिम में कूदने का निश्चय कर लेता, लगता जैसे वह अपने को नष्ट ही कर डालेगा। लेकिन फिर सब कुछ ठीक होता नज़र आता, और हर चीज कायदे से चलने लगती। भाग्य का वह सिकन्दर था, अपनी तकदीर में वह विश्वास करता था, और शगुनो-अपशगुनो को मानता था। मोटे तौर से वह बेहद अधविश्वासी था। उसे लोग बहुत पसन्द नहीं करते थे, क्योंकि वह किसी से कोई खास लगाव नहीं रखता था, लेकिन लोग उसकी इज्जत करते थे। परिवार के नाम, ले-देकर, उसका एक छोटा लड़का था जिसे वह जी-जान से चाहता था और जो, ऐसे पिता के हाथों पलकर, दुनिया में अपनी जगह बनाने की सहज ही आशा

कर सकता था। "छोटा झपकौआ बिल्कुल अपने बाप जैसा निकलेगा," बड़े बूढे इसके बारे मे अभी से कहते है, दबे स्वरो मे, उस समय जबकि गर्मियो मे, साझ के समय, कच्ची मिट्टी की अपनी मुडेरो पर बैठकर वे गपशप करते हैं, और उनमे हरेक इसका आशय समझता है। कुछ और कहने की जरूरत नही।

याकोव-तुर्क और ठेकेदार का जहा तक सबध है, सो उनके बारे में ज्यादा कहने की आवश्यकता नही। याकोव का उपनाम तुर्क इसलिए पडा कि वह सचमुच एक तुर्की स्त्री के रक्त से पैदा हुआ था, जो युद्ध मे बन्दी बन गयी थी। प्रकृति से वह कलाकार था, हर मानी मे, पेशे से कागज बनाने के एक कारखाने मे लेडलर का काम करता था। कोई सौदागर इस कारखाने का मालिक था। जहा तक ठेकेदार का सबंध है, सो उसकी किस्मत के बारे में—मुझे स्वीकार करना चाहिए—मैं कुछ नही जानता। वह मुझे एक चपल शहरी-सा लगा, हर चीज़ पर हाथ आजमाने के लिए प्रस्तुत। लेकिन बन-मास्टर—सो उसका वर्णन अधिक विस्तार से करने की ज़रूरत है।

इस आदमी को देखते ही पहली छाप जो आपके हृदय पर पडेगी, उससे एक अनगढ, बोझिल और दुर्दमनीय शक्ति का बोध आपको होगा। उसका ढाचा बहुत ही अटपटा बना था—एक ही खण्ड का बना हुआ, जैसा हमारे यहा लोग कहते है। लेकिन वह अपने इर्द-गिर्द एक विजयी तेज का प्रसार करता मालूम होता था, और—भले ही यह अजीब मालूम हो—उसके इस भालू-से आकार-प्रकार में भी एक तरह की कमनीयता थी जो, सम्भवत अपनी शक्ति मे उसके दृढ विश्वास से प्रस्फुटित हुई थी। एकाएक यह निश्चय करना कठिन था कि किस श्रेणी से इस देव का सबध है। न तो वह गृह-दास मालूम होता था, न शहरी दिवता था, न काम से अलग हुआ फटेहाल क्लर्क, न छोटा दीवालिया कुलीन जो, कुछ न रहने पर शिकारिया या झगडालू का धधा शुरू कर देता

है। सच पूछो तो वह एकदम निराला था। कहा से वह आया है या किस चीज ने उसे हमारे जिले में बसने के लिए प्रेरित किया है, यह कोई नही जानता। लोगो का कहना है कि वह माफीदारो की जाति का है, और यह कि बीते जमाने में वह कही सरकारी नौकरी करता था। लेकिन इस बारे में निश्चय के साथ कुछ नही कहा जा सकता। और बिलाशक ऐसा कोई नही था जिससे कुछ मालूम किया जा सकता —खुद उससे तो बिल्कुल ही नही। वह बेहद चुप रहनेवाला और उदास स्वभाव का आदमी था। और तो और, यह निश्चय से कोई नही जानता था कि वह गुजर कैसे करता था। वह कोई धधा नही करता था, किसी के पास आता-जाता नही था। शायद ही किसी से उसकी घनिष्टता या मेल-मिलाप हो। फिर भी खर्च करने के लिए उसके पास पैसा था। यह सच है कि अधिक नही, फिर भी कुछ तो था ही। रंग-ढग में, अपने व्यवहार में, वह एकदम विनम्र हो, ऐसा नही था। न! विनम्र शब्द उसके लिए नही इस्तेमाल किया जा सकता। वह इस तरह रहता था जैसे अपने आसपास के लोगो से बेखबर हो। और वह किसी की पर्वाह भी नही करता था। वन-मास्टर (यही उपनाम लोगो ने उसका रख छोडा था, यो उसका असली नाम पेरेव्लेसोव था) समूचे ज़िले में उसका भारी रोब था। बडी तत्परता के साथ लोग उसका कहना मानते थे, हालाकि किसी को हुक्म देने का उसे कोई अधिकार नही था, न ही वह खुद कभी लोगो पर—जिनसे मिलने का उसे इत्तफाक होता था—अपना अधिकार जताने का जरा भी प्रयत्न करता था। वह जो कहता—वे मानते। शक्ति का भी सदा अपना एक प्रभाव होता है। वह दारू को मुश्किल से ही कभी मुह से लगाता था, स्त्रियो से कोई वास्ता नही रखता था, और गाने का बेहद शौकीन था। बहुत कुछ उसमें रहस्यमय था। ऐसा मालूम होता था जैसे व्यापक शक्तिया, विक्षोभ से भरी, उसके भीतर बसेरा डाले है। ऐसा लगता जैसे एक बार जाग्रत हो जाने

[illegible], [illegible] , मैं [illegible] उसे और उसके [illegible] जायेगी। मैं यह समझता हूँ कि [illegible] कोई [illegible] हो चुका है, और [illegible] से बाल बाल बचने के [illegible] अपनी मुट्ठी में रखता है। [illegible] कि उसमें एक तरह की जन्मजात सहज-[illegible] के साथ साथ उसमें ही सहज-स्वाभाविक रूप में [illegible] —एक ऐसा मिश्रण जो अन्य किसी आदमी में मुझे कभी दिखाई नहीं दिया।

[illegible] आगे बढ़ आया और अपनी आँखों को आधा मूंदते हुए [illegible] ऊँची आवाज में गाने लगा। काफी मीठी और सुहावनी, [illegible] कुछ फटी हुई, उसकी आवाज थी। लवा-पक्षी की भांति—[illegible] में—वह गा रहा था, निरन्तर मुरकियां लेते, आरोह-अवरोह के साथ स्वरों को उठाते-गिराते और हर बार सप्तम तक पहुँचाते हुए, सहज वह, बड़ी सावधानी से, टिककर उसे और भी लम्बा खींचता था। इसके बाद वह उसे छोड़ देता, और अचानक फिर शुरू से स्वरों को पकड़ता, अद्भुत आवेग और उद्वेग के साथ। उसकी लयकारी कभी अपेक्षाकृत साहसिक रूप धारण कर लेती थी, और कभी अपेक्षाकृत हास्यपूर्ण। पारखी उसे सुनकर भारी सन्तोष प्रकट करते और जर्मन बुरी तरह खीज उठते। यह था इसी tenore di grazia, ténor léger*। उसने बहुत ही सजीव नृत्य-धुन पर एक गीत गाया। अन्तहीन गलकारियों, तान और अलापों, उद्बोधनों तथा पुनरावृत्तियों के आल-जाल के बीच उसके जो थोड़े-बहुत बोल मैं पकड़ सका, वे इस प्रकार थे—

---

*सुरीली हल्की आवाज।

जोतूगी धरती,
बोऊगी लाल लाल फूल।
बोऊगी लाल लाल फूल।

वह गा रहा था। सब बहुत ही एकचित हो उसे सुन रहे थे। उसे भी जैसे इसका अनुभव प्रतीत होता था कि वास्तव में सगीतप्रिय लोगो की सगत में बैठा है, और अपनी तरफ से कोई कसर नही छोड रहा है। हमारे इलाके के लोग सचमुच में सगीतप्रेमी है। ओरेल राजमार्ग पर स्थित सेर्गियेव्रकोये गाव अपने सुस्वर सह-गान के लिए ठीक ही रूस के एक छोर से दूसरे छोर तक प्रसिद्ध है। ठेकेदार बहुत देर तक गाता रहा, लेकिन अपने श्रोताओ में किसी खास उछाह का सचार नही कर सका। उसे सह-गान का सग प्राप्त नही था। लेकिन अन्त में, खास तौर से आवेगपूर्ण आलाप के बाद, जिसे सुनकर बन मास्टर तक के होठ खिल गये, बकबक खुशी से चीखे बिना नही रह सका। सभी उछाह से लहरा उठे। बकबक और झपकौवे ने भी दबी आवाज़ में हाथ बढाया और वाह वाह करने लगे – "भई खूब, वाह। यह ले शैतान की दुम। गाये जा, सपोलिये। बाधे रह। फिर लडखडाया, कुत्ते। हैरड तेरी आत्मा को जहन्नुम रसीद करे।" निकोलाई इवानिच काउटर के पीछे मुग्ध भाव से इस बाजू से उस बाजू अपना सिर हिला रहा था। बकबक अन्तत अपनी टागो को झुला रहा था, अपने पावो से ताल दे रहा था, अपने कधो को बिचका रहा था, जबकि याकोव की आखें अगारे की भाति खूब लाल दमक रही थी, वह पत्ते की भाति ऊपर से नीचे तक थरथरा रहा था, और विह्वलता से मुसकरा रहा था। केवल बन-मास्टर ही एक ऐसा आदमी था जिसकी मुद्रा में कोई अन्तर नही पडा था और वह पहले की भाति निश्चल खडा था। लेकिन उसकी आखें जो ठेकेदार पर जमी थी, कुछ मुलायम हो आयी थी, हालाकि उसके होठो पर

अभी भी हिकारत का भाव छाया था। आम उछाह से उत्साहित होकर ठेकेदार ने आलाप का वह समा वाधा, ऐसे ऐसे आलाप लेने शुरू किये, अदाकारी के वे जोड-तोड़ दिखाये और अपने गले के साथ इतने जोरो से उठका-पटकी की कि अन्त में, पीतवर्ण और थकान से चूर, पसीने में नहाया हुआ, जव उसने क्षीण अन्तिम सुर खीचा और अपने समूचे वदन को पीछे की ओर फेंका तो सव के सव वडे जोश से एक साथ वाह-वाह कर उठे। वकवक उसकी गरदन से जा लिपटा और अपनी लम्वी हडियल वाहो में लेकर उसे दवोचने लगा। निकोलाई इवानिच का चिकना चेहरा लाल हो गया, ऐसा मालूम होता था जैसे वह जवान हो गया हो। याकोव पागलो की भाति चिल्लाया—"लाजवाव, अद्भुत!" यहा तक कि मेरा पडोसी भी—फटा झगला पहने वह किसान अपने को नही रोक सका और मेज पर घूसा पटकते हुए चिल्ला उठा—"भई वाह ओह, शैतान उठा ले जाय मुझे भई वाह!" और निश्चयात्मक अन्दाज में एक वाजू मुह मोडकर उसने थूक की पिचकारी छोडी।

"वाह, भाई, तुमने तबीयत खुश कर दी," वकवक चहका। थककर चूर ठेकेदार को अपने आलिगनो से अभी तक उसने मुक्त नही किया था। "तुमने तवीयत खुश कर दी, इससे इन्कार नही किया जा सकता! वाजी तुम्हारे हाथ रही, भाई, वाजी तुम्हारे हाथ रही। वधाई, कुल्हड अब तुम्हारा है! याकोव तुमसे कोसो पीछे है सच, कोसो चाहे मेरी बात गाठ वाध लो!" (और उसने एक वार फिर ठेकेदार को अपने सीने से सटा लिया।)

"वस वस, रहने दो, उसकी जान छोडो। ओह, तुमसे तो पीछा छुडाना मुश्किल है" झपकौवे ने कुछ खीज के साथ कहा, "उसे बेंच पर वैठने दो। देखते नही, कितना थक गया है। मूर्ख कही का! गीले पत्ते की तरह उसके साथ ही चिपक गया है!"

"अच्छा तो यह वैठकर सुस्ताये, तव तक मैं इसके स्वास्थ्य का जाम खनकाता हू," वकवक ने कहा और काउटर के सामने पहुच गया।

"तुम्हारे खाते में, सुना भाई!" ठेकेदार को सम्वोधित करते हुए फिर उसने कहा।

ठेकेदार ने सिर हिलाकर हामी भरी, वेंच पर बैठ गया, अपनी टोपी के भीतर से तौलिया निकाला, और उससे अपना मुह पोछने लगा। उधर वकवक ने, लालच भरी उतावली के साथ, वोद्का का गिलास खाली किया, काखा और चेहरे पर, पक्के पियक्कडो की भाति, चिन्ताग्रस्त उदासी का भाव धारण कर लिया।

"तुम वहुत सुन्दर गाते हो, भाई, वहुत सुन्दर!" निकोलाई इवानिच ने दुलराते हुए कहा, "और याकोव, अव तुम्हारी वारी है। और देखो, डरना नही। देखें, कौन जीतता है, हा, कौन जीतता है। हालाकि ठेकेदार वहुत सुन्दर गाता है, सच, वहुत सुन्दर गाता है।"

"हा, वहुत सुन्दर!" निकोलाई इवानिच की पत्नी ने भी कहा, और मुसकराहट के साथ याकोव की ओर देखा।

"सुन्दर, वाह!" मेरे पडोसी ने दवे स्वर में दोहराया।

"ओह, जगली कही का!" अचानक वकवक उवल पडा और मेरी वगल में बैठे कधे पर से फटा झगला पहने किसान के पास जाते हुए उगली से उसकी ओर इशारा किया, और उसके इर्द-गिर्द फुदकते हुए हसने लगा। "दफा हो यहा से! जगल का, जगली आदमी! यहा क्यो आ मरा?" ठहाको के वीच वह चिघाड उठा।

वेचारा किसान सिटपिटा गया, और अभी उठकर जल्दी जल्दी खिसकने ही जा रहा था कि अचानक, वन-मास्टर की लौह *आवाज़* सुनाई दी –

"नाक में दम कर दिया कम्वख्त ने! आखिर चाहता क्या है?" अपने दातो को पीसते हुए उसने दो टूक आवाज़ में कहा।

"मै   मै . मै कुछ नही," वकवक वुदवुदाया, "कुछ भी तो नही मै केवल   "

"वस वस, सुन लिया, मुह वद कर!" वन-मास्टर ने पलटकर जवाव दिया, "हा तो याकोव, शुरू करो!"

याकोव ने अपने गले को हाथो से पकडा।

"हा तो, सच, भाइयो मैं नही जानता ओह, पता नही, कसम से, जाने क्या. "

"वस वस, रहने दो। डरो नही। शरम करो पीछे क्यो रहते हो? खुदा की देन से गाओ, जितना भी बढिया गा सको!"

और वन-मास्टर ने इन्तज़ार में आखें झुका ली।

याकोव कुछ क्षण चुप रहा, अपने इर्द-गिर्द उसने नज़र डाली और हाथो से अपना मुह ढक लिया। सवकी आखें जैसे उसपर जमकर रह गयी थी, खास तौर से ठेकेदार की, जिसके चेहरे पर, आत्मविश्वास की चिर भावना तथा सफलता से उत्पन्न विजयी उल्लास को वेधकर वेचैनी की एक धुधली झलक वरवस उभर आयी थी। वह दीवार से पीठ टिकाये वैठा था, और दोनो हाथो को उसने फिर अपने नीचे कर लिया था, लेकिन पहले की भाति अपनी टागो को अव वह नही झुला रहा था। आखिर याकोव ने जव चेहरे पर से अपने हाथ हटाये तो उसका चेहरा मुर्दे की भाति पीला मालूम होता था। झुकी हुई पलको के नीचे उसकी आखें कुछ पथरा-सी गयी थी। उसने एक गहरी सास भरी और गाना शुरू कर दिया उसकी आवाज़ की पहली ध्वनि धुधली और असम थी। ऐसा मालूम होता था जैसे वह उसकी छाती से नही, वल्कि कही दूर से आ रही हो, और तैरती हुई सयोगवश कमरे में आ पहुची हो। उसके इस थरथराते गूजते हुए स्वर ने हम सव में एक अजीव भावना का सचार किया, हमने एक दूसरे की ओर देखा और निकोलाई इवानिच की पत्नी अपने-आपको चौकस करती मालूम हुई। पहले के वाद ही उसने दूसरे स्वर का छोर उठाया, अधिक सवल और लम्वा, लेकिन प्रत्यक्षत अभी भी थरथराता, साज़ के उस तार की भाति जो, सवल उगली से झनझनाये

जाने पर, अब अपनी आखिरी–तेजी से क्षीण होती हुई–थरथराहट में शेष हो रहा हो। दूसरे के बाद तीसरा–और फिर, क्रमश, अधिकाधिक आवेग तथा व्यापकता धारण करते हुए एक करुण रागिनी के रूप में वे उमड चले। 'खेत में नही थी एक ही डगरिया' वह गा रहा था, और गीत के स्वर एक अजीब मिठास तथा उदासी का हमारे कानो में सचार कर रहे थे। ऐसी आवाज़, मुझे स्वीकार करना चाहिए, मैंने विरले ही कभी सुनी थी। उसकी आवाज़ फटी और टूटी हुई सी थी और इसमें एक तरह की वेदना स्पर्श था। इतना ही नही बल्कि वह, शुरू शुरू में, कुछ विकारग्रस्त तक मालूम हुई। लेकिन उसमें सच्चे अनुराग की गहराई थी, यौवन था, माधुर्य था, और एक तरह की मोहक, चिन्तायुक्त तथा करुण उदासी थी। रूसी आवेगपूर्ण और सच्ची भावना उस आवाज में गूज रही थी और हिलोरे ले रही थी, और सीधे हृदय को–हृदय में जो कुछ भी रूसी था उस सबको–छूती मालूम होती थी। गीत उमड-घुमड और प्रवाहित हो रहा था। याकोव, प्रत्यक्षत अब पूरे रग में था। उसकी वह झिझक अब लोप हो गयी थी, और अपनी कला के आनन्दोल्लास में–उसके प्रवाह में–उसने अपने आपको पूर्णतया छोड दिया था। उसकी आवाज़ में अब वह थरथराहट नही थी। उसमें कम्पन था, लेकिन आन्तरिक अनुराग का कम्पन, मुश्किल से पकड में आनेवाला, ऐसा जो तीर की भाति श्रोताओ के अन्तर्तम को वेधता चला जाता है। और उसका ज़ोर, दृढता, और विस्तार धीर गति से वढता जाता है। मुझे वह दृश्य याद आता है जो मैंने एक सपाट रेतीले तट पर सूर्यास्त के समय देखा था। ज्वार का उभार कम था और समुद्र की गरज, भारी और आतकप्रद, कही दूर से आ रही थी। सफेद रग की एक समुद्री चिडिया निश्चल वैठी थी, उसका रेशमी वक्ष छिपते हुए सूरज की गुलावी आभा से दमक रहा था और वह, अपने सुपरिचित समुद्र का अभिवादन करने के लिए, डूवते हुए लाल भभूका सूरज का अभिवादन करने के लिए, केवल जब-तब

अपने लम्बे परों को चौड़ा फैला लेती थी। याकोव को सुनते समय मुझे उसकी याद हो आयी। वह गा रहा था, अपने प्रतिद्वन्दी और हम सबके अस्तित्व से एकदम बेखबर। गाहनी तैराक के लिए जिस प्रकार लहरें सम्बल बनती हैं वैसे ही हमारी गहरी, अनुरागपूर्ण सवेदना उसका सम्बल थी। वह गा रहा था, और उनकी आवाज़ की प्रत्येक ध्वनि मे ऐसा अनुभव होता था जैसे कुछ है जो हमारे अत्यन्त निकट है, जो हमें प्रिय है, कुछ ऐसा जिसमें व्यापकता है, विस्तार है, जैसे हमारे जाने-पहचाने स्तेप हमारी आखो के सामने खुलते और अन्तहीन विस्तारो मे फैलते जा रहे हो। मुझे लगा जैसे मेरे हृदय में आसू उमड-घुमड रहे हो, और आखो में तैरने के लिए ऊपर उठ रहे हो। अचानक घुटली, दबी हुई, सुबकियो ने मेरा ध्यान खीचा मैंने घूमकर देखा—शराबखाने के मालिक की घरवाली रो रही थी, अपने वक्ष को खिडकी की ओटक से सटाये। याकोव ने उडती नज़र से उसकी ओर देखा, और वह और भी ज्यादा मिठास के साथ, और भी ज्यादा सुरीली आवाज मे, गाने लगा। निकोलाई इवानिच ने आखें नीची कर ली, झपकौवे ने मुह फेर लिया, बकबक—बिल्कुल द्रवीभूत—खडा था, मूर्खो की भाति अपना मुह बाये, बेचारा किसान कोने में धीमी धीमी सुबकिया ले रहा था और रुआसी आवाज़ के साथ अपना सिर हिला रहा था, और बन-मास्टर के लौह चेहरे पर—उसकी तनी हुई भौहो की छाव में—धीरे धीरे एक बड़ा-सा आंसू थिरक रहा था, और ठेकेदार अपनी कसी हुई मुट्ठी को माथे तक उठाये थिर खडा था अगर याकोव अपने स्वर को खूब ऊचे, असाधारण रूप में कटीले स्तर तक ले जाकर—इस तरह जैसे उसकी आवाज़ टूट गयी हो—अचानक पूर्ण विराम पर न आ जाता, तो मैं नही जानता कि किस रूप में इस आम भावावेश का अन्त होता। किसी ने कोई उद्गार व्यक्त नही किया, कोई हिला तक नही। सब के सब जैसे इस

इन्तजार में थे कि वह फिर गाना शुरू करता है या नही। लेकिन उसने अपनी आखें खोली, कुछ इस तरह जैसे हमारी इस निस्तब्धता ने उसे अचरज में डाल दिया हो। जिज्ञासा-भरी मुद्रा में उसने हम सब पर नजर डाली . और देखा कि जीत उसकी है।

"याकोव," उसके कधे पर अपना हाथ रखते हुए वन-मास्टर ने कहा, और इससे अधिक वह और कुछ नही कह सका।

हम सब खडे थे, जैसे हमें काठ मार गया हो। ठेकेदार धीमे से उठा और याकोव के पास पहुचा।

"तुम तुम्हारी जीत तुम्हारी!" आखिर जैसे-तैसे उसने अपनी बात को व्यक्त किया, और लपककर कमरे से बाहर चला गया।

उसकी इस द्रुत और निश्चित हरकत ने जैसे उस मोहिनी को भग कर दिया। अचानक हम खुशी से चहकने और बाते करने लगे। बकबक गेंद की भाति उछल-उचक रहा था, अस्फुट आवाज में बोल और बाहो को पनचक्की के पखो की भाति नचा रहा था। झपकौआ लगडाता हुआ याकोव के पास पहुच उसे चूमने लगा। निकोलाई इवानिच उठकर खडा हुआ और ऐलान किया कि बीयर का दूसरा कुल्हड वह खुद अपनी ओर से भेंट करेगा। वन-मास्टर एक तरह की सहृदय, सरल हसी हसा, ऐसी जिसे उसके चेहरे पर देखने की मैं कभी आशा नही करता था। बेचारा किसान आस्तीनो से आखो, गालो, नाक और दाढी को पोछता हुआ अपने कोने में बारबार दोहरा रहा था—"ओह, सुन्दर, खुदा की कसम, बहुत सुन्दर! मुझे कुत्ते की औलाद कह चाहे, लेकिन सुन्दर, बहुत सुन्दर!" और निकोलाई इवानिच की घरवाली, जिसका चेहरा लाल हो गया था, जल्दी से उठी और वहा से खिसक गयी। गायक छोटे बच्चे की भाति अपनी विजय का आनन्द ले रहा था। उसके गम्भीर चेहरे की जैसे कायापलट हो गयी थी और उसकी आखें खुशी से चमक रही थी। वे उसे खींचते हुए काउटर के पास ले गये, रोते हुए किसान

को पास आने का इशारा किया और शराबखाने के मालिक के छोटे लडके को ठेकेदार की टोह मे रवाना कर दिया, लेकिन वह मिला नही। मौज-मेले का दौर शुरू हुआ। "तुम्हे फिर हमे अपना गाना सुनाना होगा। खूब जमकर, गयी रात तक!" हवा में अपने हाथो को ऊचा उठाते हुए बकबक ने रट लगायी।

मैने याकोव की ओर एक बार फिर देखा, और बाहर निकल आया। मै अब रुकना नही चाहता था, मुझे डर था कि कही वह पहला असर बिगड न जाय जो मेरे हृदय पर पडा था। लेकिन गर्मी अभी भी उतनी ही असह्य थी जितनी कि पहले। ऐसा मालूम होता था जैसे उसकी एक मोटी भारी तह ठीक धरती के ऊपर टगी हो। लगता था मानो गहरे नीले आकाश की सतह पर नन्ही नन्ही उजली चिगारिया अत्यन्त महीन, करीब करीब काली, धूल को आर-पार करती लपक रही थी। हर चीज खामोश थी। और थकान से निढाल हुई प्रकृति की इस गहरी खामोशी में कुछ था जो आशाओ को चूर और हृदय को उत्पीडित करता था। आगे डग रखता सूखी घास की एक कोठरी में मै जाकर ताजा कटी घास पर जो अभी भी करीब करीब सूख चली थी, लेट गया। बहुत देर तक मुझे नीद नही आयी, बहुत देर तक याकोव की अदम्य आवाज मेरे कानो में गूजती रही . आखिर गर्मी और थकान ने अपना कब्जा जमाया, और मै गहरी नीद मे खो गया। जब जागा तो देखा, हर चीज़ अधेरे में लिपटी है। इर्द-गिर्द छितरी घास से तेज़ गध उठ रही है, और वह कुछ नम मालूम होती है। अधखुली छत की धरनियो में से पीतवर्ण तारे धुधले टिमटिमा रहे थे। मै बाहर निकला। सूरज छिपने की दमक कभी की विला चुकी थी, और उसकी आखिरी निशानी क्षितिज पर धुधली-सी रोशनी के रूप में दिखाई दे रही थी। लेकिन रात की ताज़गी पर वायुमण्डल में—जिसे सूरज अभी हाल तक

झुलसाता रहा था—अभी भी गर्मी का अहसास था, और हृदय ठडी हवा के एक झोके के लिए अभी भी अकुला रहा था। हवा का पता नही था, बादल भी कही नजर नही आते थे। आकाश चारो ओर से साफ था, पारदर्शी काला—मृदुभाव से टिमटिमाते अनगिनत तारो से युक्त, जो मुश्किल से ही दिखाई देते थे। गाव के इर्द-गिर्द रोशनिया टिमटिमा रही थी, और निकट ही झिलमिल करते शराबखाने में से उलझी हुई तथा बेमेल आवाजो का शोर सुनाई दे रहा था जिसके बीच मुझे लगा जैसे याकोव की आवाज मेरी पहचान में आ रही हो। कभी कभी तूफानी हसी की एक बाढ वहा से फट पडती थी। मै छोटी खिडकी के पास पहुचा और उसके शीशे से मैने अपना चेहरा सटा लिया। एक आह्लाद-विहीन, लेकिन विविधतापूर्ण और सजीव दृश्य मुझे दिखाई दिया। सब के सब नशे में धुत्त थे—सब, याकोव समेत। अपना वक्ष उघारे वह बेंच पर बैठा था, और नृत्य की धुन पर कर्कश आवाज में कोई बाजारू गीत गा रहा था। उसकी उगलिया अलस भाव से गिटार के तारो को झनझना रही थी। उसके गीले बालो के गुच्छे उसके चेहरे पर लटक आये थे जो भयानक रूप में पीला लग रहा था। कमरे के बीच में पूर्णतया धुत्त तथा बिना लम्बा कोट पहने, बकबक, किसान के सामने जो भूरे रग का कोट पहने था, उछल उछलकर नाच रहा था। किसान, अपनी ओर से, कठिनाई के साथ अपने पाव से थिरक और ताल दे रहा था, और अपनी अस्तव्यस्त दाढी के भीतर से निरर्थक हसी में खीसे निपोर रहा था। रह रहकर वह अपना एक हाथ हवा में लहरा रहा था, मानो वह कह रहा हो—"कुछ भी हो!" और उसका चेहरा अत्यन्त हास्यजनक था। अपनी भौहो को वह चाहे जितना तोडता-मरोडता, उसकी आखो के भारी ढक्कन खुलने का नाम न लेते, ऐसा मालूम होता था जैसे वे उसकी मुश्किल से दिखाई पडनेवाली, चुधी और बेजान-सी आखो के ऊपर चिपक गये हो।

वह नशे मे पूरी तरह गड़गच्च आदमी की मुग्ध दशा मे पहुचा हुआ था जिसमें कि हर राह-चलता उसके चेहरे को देखकर कहता है–"वाह भाई, यह क्या हुलिया बना रखा है तुमने!" झपकौआ केकडे की भाति लाल सुर्ख, अपने नथुनो को खूब चौडा फैलाये, एक कोने मे कुत्सा से हस रहा था। केवल निकोलाई इवानिच ने, जैसा कि शराबखाने के एक अच्छे मालिक के अनुकूल है, अपने सन्तुलन को डिगने से बचाये रखा था। कमरे में अनेक नये चेहरो की भरमार थी, लेकिन उनमे मुझे बन-मास्टर नही दिखाई दिया।

तेज डगो से मै उस पहाडी पर से नीचे उतरने लगा, जिसपर कि कोलोतोवका बसा है। इस पहाडी के पदतल मे एक चौडा मैदान फैलता चला गया है। साझ के झुटपुटे की धुधियाली लहरो मे डूबा वह और भी भीमाकार मालूम होता था, और जैसे काले पडते आकाश मे एकाकार हुआ जा रहा था। खाई की किनारेवाली सडक पर मै तेज डगो से चल रहा था, तभी एकाएक मैदान में कही दूर से किसी लडके की साफ आवाज़ सुनाई दी–"अनत्रोप्का! अनत्रोप्का-आ-आ!" वह हठीली और अश्रुपूर्ण निराशा से चिल्ला रहा था, अन्तिम अक्षर को बहुत बहुत लम्बा खीचता हुआ।

कुछ क्षणो के लिए वह चुप हो रहा, इसके बाद उसने फिर चिल्लाना शुरू कर दिया। उसकी आवाज थिर, हल्की अलसायी हुई हवा मे साफ गूज रही थी। और भी कुछ नही तो तीस बार उसने अनत्रोप्का नाम पुकारा होगा। तभी, मैदान के एकदम दूसरे छोर से, मानो किसी दूसरी दुनिया मे से, जवाब मे करीब करीब अस्पष्ट-सी आवाज तैरती हुई आयी–

"क्या-आ-आ?"

लडके ने खुशी से छलछलाते और साथ ही गुस्से के साथ जवाब में तुरत चिल्लाकर कहा–

"यहा आओ, शैतान! जगली भूत!"

"किस लि-ए?" लम्बे वक्फे के वाद उधर से जवाब आया।

"इसलिए कि पिताजी तुम्हारी चमडी उधेडना चाहते हैं!" पहली आवाज ने पलटकर उतावली मे जवाब दिया।

इसके बाद दूसरी आवाज ने जवाब में फिर कुछ पलटकर नही कहा, और लडके ने एक बार फिर अनत्रोपूका चिल्लाना शुरू कर दिया। उसकी चिल्लाहट, उत्तरोत्तर धुधली और अधिकाधिक अन्तर के साथ, अभी भी मेरे कानो में तिरती आ रही थी उस वक्त भी जब एकदम अधेरा छा गया। मैं जगल के कोने से मुडा जो मेरे गाव को घेरता हुआ फैला है और कोलोतोवका से तीन मील से कुछ अधिक दूर पडता है "अनत्रोपूका-आ-आ!" रात की परछाइयो से घिरी वायु में अभी भी वह आवाज़ सुनाई पड रही थी।

प्योत्र पेत्रोविच करातायेव

पांच साल पहले की बात है। शरद् के दिन थे जब, सयोगवश, मास्को से तुला जानेवाली सडक पर, घोडो के इन्तजार मे, करीव करीव सारा दिन मुझे एक घोडा-चौकी (पोस्टिग स्टेशन) पर विताना पडा। मैं शिकार के अपने एक दौरे से वापिस लौट रहा था, और इसे मेरी असावधानी ही समझिये कि अपनी त्रोइका-गाडी* को मैंने पहले ही आगे रवाना कर दिया था। घोडा-चौकी का मैनेजर एक उदास वडी उम्र का आदमी था। उसके बाल उसकी नाक तक लटक रहे थे और उनीदी-सी छोटी छोटी आखें थी। मेरी तमाम शिकायतो-मनुहारो का असम्वद्ध वडवडाहट के रूप मे वह जवाव देता, झुझलाकर फटाक से दरवाज़ा वद करता, ऐसा मालूम होता जैसे वह जीवन मे अपने पेशे को कोस रहा हो, और वाहर पैडियो पर निकलते हुए गाडीवानो को गालिया सुनाता था जो लकड़ी के भारी जुवो को अपनी वाहो पर लादे इतमीनान के साथ कीचड में इधर उधर आ जा रहे थे, या वेंच पर वैठे जम्भाइया ले रहे थे और अपना वदन खुजला रहे थे, और अपने मैनेजर के रोषपूर्ण उद्गारो की ओर कोई ख़ास ध्यान नही दे रहे थे। मैं ख़ुद भी अव तक तीन वार चाय पी चुका था, और सोने की वेकार कोशिश कर चुका था, दीवारो और खिडकियो पर टकी सारी लिखावटो को पड चुका था। भयानक ऊव मुझे जकडे थी। शीत और असहाय निराशा मे मैं अपनी

---

* त्रोइका – तीन घोडो वाली गाडी।

गाडी के ऊपर को उठे हुए बमो की ओर ताक रहा था जब, अचानक, मुझे टुनटुन की आवाज सुनाई दी और एक छोटी बग्घी, जिसमे तीन थके-हारे घोडे जुते थे, पैडियो के पास आकर खडी हो गयी। नवागन्तुक गाडी में से कूदकर बाहर आया और चिल्ला उठा—"घोडे! झटपट!" फिर कमरे के भीतर लपक गया। इसी बीच जब वह अजीब अचरज के साथ—जैसा कि ऐसी स्थिति में होता है—मैनेजर के जवाबो को सुन रहा था कि घोडे नही है, मैने इस नये साथी पर नज़र डाली और बुरी तरह ऊबे आदमी की भूखी उत्सुकता के साथ सिर से एडी तक उसे छान डाला। देखने में वह करीब तीस वर्ष का मालूम होता था। चेचक उसके चेहरे पर अमिट दाग छोड गयी थी। चेहरा रूखा और पीतवर्ण था, और उसमें ताबे जैसे रग की एक झलक थी जो अच्छी नही मालूम होती थी। काले-नीले रग के उसके लम्बे बाल, छल्लो में, पीछे कालर पर गिर रहे थे, और कनपटी पर बल खाये थे। उसकी छोटी सूजी हुई आखें एकदम भावशून्य थी। मूछो की जगह कुछ एक बाल उग आये थे। गाव के किसी निश्चिन्त जमीदार और घोडो के मेलो के शौकीन कुलीन जैसी उसकी साज-सज्जा थी। अपेक्षा से अधिक चिकनी, धारीदार, काकेशी जाकेट, फीकी-सी बैगनी गुलाबी टाई, पीतल के बटन लगी वास्कट और भूरे रग की पतलून, जो नीचे से बहुत चौडी थी, पहने था। पतलून के भीतर से उसके अनपोछे जूतो की नोको की केवल झलकमात्र दिखाई देती थी। वह तम्बाकू और वोद्का से बुरी तरह गधा रहा था। उसके मोटे-थलथल लाल हाथो में, जो करीब-करीब आस्तीनो के भीतर छिपे थे, तुला में बनी चादी की अगूठिया झलक रही थी। ऐसे व्यक्ति, दस-बीस नही, बल्कि सैकडो की सख्या में रूस में मिलते है। उनसे परिचित होकर, अगर सच पूछो तो, कोई खास खुशी नही होती। लेकिन, उस दुराग्रह के बावजूद जो नवागन्तुक के प्रति मेरे हृदय में मौजूद था, उसके चेहरे पर कुछ ऐसा लापरवाह और जिन्दादिली और अनुराग का भाव छाया था कि मै उसे नजरन्दाज नही कर सका।

"इन महानुभाव को भी यहा एक घंटे से अधिक इन्तजार करते हो गया," मेरी ओर इशारा करते हुए मैनेजर ने कहा।

"एक घंटे से भी अधिक!"—मरदूद मेरे साथ मजाक कर रहा था।

"लेकिन शायद उन्हे उतनी जल्दी न हो, जितनी कि मुझे," नवागन्तुक ने जवाब दिया।

"इस बारे मे मैं कुछ नही जानता," मैनेजर ने बडबडाते हुए कहा।

"तो क्या यह सचमुच असम्भव है? क्या घोडे सचमुच नही मिल सकते?"

"असम्भव। कसम खाने को भी यहा घोडा नही है।"

"अच्छा तो मेरे लिए समोवार भेज दो। थोडा इन्तज़ार किये लेता हू। इसके सिवा और कोई चारा नही।"

नवागन्तुक बेंच पर बैठ गया, टोपी उतारकर मेज पर पटक दी, और बालो पर अपना हाथ फेरा।

"क्या आप चाय पी चुके है?" उसने मुझसे पूछा।

"हा।"

"लेकिन थोडी और सही, साथ के लिए, क्यो?"

मैं राजी हो गया। स्थूलकाय लाल समोवार चौथी बार फिर मेज़ पर आ विराजा। मैंने रम की बोतल बाहर निकाली। अपने इस नव-परिचित के बारे मे मैंने गलत अन्दाज नही लगाया था कि वह देहात का एक कुलीन है, और उसकी मिल्कियत कुछ अधिक नही है। प्योत्र पेत्रोविच करातायेव उसका नाम था।

हमने बातचीत का सिलसिला शुरू किया। अपने आने के आध घंटे के भीतर ही, अत्यन्त सरल स्पष्टवादिता के साथ, वह अपना समूचा जीवन मेरे सामने खोलकर रख रहा था।

"मैं अब मास्को जा रहा हू," अपने चौथे गिलास की चुसकी लेते हुए उसने कहा, "देहात में करने के लिए कुछ है भी नही।"

"सो क्यो?"

"हा, हालत ही कुछ ऐसी हो गयी है। मेरी मिल्कियत का हाल बेहाल है, और—सच पूछो तो—अपने किसानो को मैने बरवाद कर डाला है। कई कई साल बुरे निकले, बुरी फसले, और तरह तरह की मुसीवते, आप जानो   ऊह, जैसे मै," निराशा से दूसरी ओर देखते हुए अन्त मे उसने कहा, "मेरे जैसा आदमी जागीर का वन्दोवस्त कर ही कैसे सकता था!"

"ऐसा क्यो?"

"लेकिन, नही," वह बीच ही में बोला, "मेरे जैसे लोगो में वह योग्यता नही है कि अच्छे मालिक बन सके। देखा न," अपने सिर को एक बाजू घुमाते तथा लगन के साथ अपने पाइप से कश खीचते हुए उसने कहना जारी रखा, "मेरी ओर देखकर आपको यह निश्चय करते देर नही लगेगी कि मै कुछ   क्या कहते है   झूठ क्यो वोलू—मुझे वहुत ही, औसत दर्जे की शिक्षा मिली। मै कोई खुशहाल तो था नही। ओह, माफ करना, मै खुलकर बात करनेवाला आदमी हू और अगर सच पूछो तो   "

उसने अपना वाक्य पूरा नही किया, और अपने हाथ को हवा मे फहराकर चुप हो गया। मैने उसे इत्मीनान दिलाना शुरू किया कि उसने गलत समझा, कि उससे मिलकर मुझे भारी खुशी हुई है, आदि आदि, और अन्त में अपनी राय प्रकट की कि मिल्कियत का अच्छा वन्दोवस्त करने के लिए भरपूर शिक्षा कोई वहुत ज़रूरी चीज नही है।

"माना," उसने जवाव दिया। "मै आपकी बात मानता हू। लेकिन फिर भी इसके लिए एक खास किस्म का स्वभाव जरूरी है। कुछ लोग होते है जो किसानो का खून निचोड लेते है   और सब ठीक रहता है! लेकिन मै   माफ कीजिये क्या मै जान सकता हू कि आप कहा रहते है—पीटर्सवर्ग, या मास्को में?"

"पीटर्सवर्ग में।"

उसने अपने नथुनो में से धुवें का एक लम्बा चक्कर छोडा।

"और मैं सरकारी अफसर बनने की टोह मे मास्को जा रहा हू।"

"किस महकमे में जाने का इरादा है?"

"सो नही जानता। जैसा भी सयोग हो। आपसे क्या छिपाना है, सरकारी नौकरी से मैं डरता हू। फौरन जिम्मेदारी लद जाती है। मैं सदा देहात में रहा हू, और आप जानो, उसका आदी हो गया हू लेकिन अब, किया भी क्या जाय गरीबी जो न कराय! ओह, गरीबी, कितनी घृणा है मुझे उससे!"

"लेकिन अब तो तुम राजधानी में जाकर रहोगे।"

"राजधानी में राजधानी में ऐसा क्या सुख है, मैं नही जानता। चलो, यह भी पता चल जायेगा। शायद वहा भी सुख हो। लेकिन मेरी समझ में तो, देहात का कोई मुकाबिला नही कर सकता।"

"तो क्या तुम्हारे लिए अपने गाव में रहना सचमुच असम्भव है?"

उसने एक उसास छोडी।

"एकदम असम्भव। अब वह, जैसा कि कहते है, मेरा नही रहा।"

"अरे, सो कैसे?"

"एक भले आदमी की बदौलत पडोसी वह आया एक हुडी।"

बेचारे प्योत्र पेत्रोविच ने चेहरे पर अपना हाथ फेरा, क्षण-भर तक कुछ सोचा, फिर अपना सिर हिलाया।

"तो फिर? मुझे मानना चाहिए, हालाकि," क्षण-भर चुप रहकर उसने फिर कहा, "मैं दोष किसी को नही दे सकता। दोष तो खुद मेरा अपना है। मुझे शान से रहने की लत थी, शान से रहने का मैं शौकीन हू, खुदा गारत करे मुझे!"

"तो यह कहो कि देहात मे मौज से जीवन बिताते थे?" मैंने उससे पूछा।

"हा, श्रीमान," उसने धीरे से कहा, सीधे मेरे चेहरे की ओर देखते हुए—"मेरे पास हैरियर कुत्तो के वारह झुड थे—वारह झुड, और आपसे क्या वताऊ, ऐसे कि विरले ही आपके देखने में कही आय।" (अन्तिम शब्दो का उसने विलम्बित में और सन्तोष के साथ उच्चारण किया।) "पलक झपकते वे भूरे खरगोश को दवोच लेते। और लाल लोमडी के पीछे—ओह, वे शैतान थे, पूरे साप। और मेरे ग्रे हाउड भी कुछ कम नही थे। झूठ क्यो वोलू, ये सब अव अतीत की वाते वनकर रह गयी है। मै शिकार के लिए निकला करता था। मेरे पास एक कुतिया थी—कोन्तेस्का—पीछा करने मे अद्भुत, गध पकडने मे एक नम्वर—क्या मजाल जो कोई वचकर निकल जाय। कभी-कभी मै किसी दलदली इलाके की ओर निकल जाता और पुकारता, 'शेर्शे।' अगर वह मुह फेर लेती तो फिर चाहे कुत्तो की पूरी फौज ही क्यो न ले आओ, क्या मजाल जो कुछ पल्ले पडे। लेकिन जब वह किसी के पीछे लगती थी—ओह, तव देखते ही वनता था। और घर में इतने सलीके से रहती थी कि कुछ न पूछो। अगर आप अपने वाए हाथ में रोटी लेकर उससे कहे—'यह यहूदी की जूठी है,' तो वह उसे छुवेगी तक नही, लेकिन अगर आप रोटी को अपने दाहिने हाथ में लेकर उससे कहें—'इसे एक लडकी ने चखा है,' तो वह उसे तुरत ले लेगी और चटकर जायेगी। मेरे पास उसका एक पिल्ला था—वहुत ही शानदार पिल्ला। मै उसे अपने साथ मास्को लाना चाहता था, लेकिन एक मित्र ने उसके लिए मुझसे कहा, और साथ में वन्दूक के लिए भी। वोला—'मास्को में आपके लिए और वहुत से शगल होगे।' सो मैने उसे वह पिल्ला और वन्दूक दे दी, और अब—आप जानो—पूरी तरह सव कुछ छोड छाडकर मै चल पडा हू।"

"लेकिन मास्को में भी तो आप शिकार के लिए जा सकते है।"

"नही, वेकार है सव। मै अपने पर अकुश नही रख सका, सो

अव मुझे अपनी वत्तीसी कसनी होगी और सव कुछ सहना होगा। लेकिन छोडिये, और मुझे मास्को मे जीवन का कुछ हाल-चाल वताइये। क्या वहा वहुत महगा है?"

"नही, वहुत नही।"

"वहुत महगा नही और कृपा कर यह वताइये कि क्या मास्को मे जिप्सी भी है?"

"जिप्सी कैसे?"

"अरे वही, जो मेलो-ठेलो मे दिखाई पडते है।"

"हा, मास्को मे भी है "

"ओह, यह अच्छी बात है। जिप्सी मुझे अच्छे लगते है, खुदा गारत करे मुझे!"

और प्योत्र पेत्रोविच की आखो में वेवाक खुशी की एक चमक दौड गयी। लेकिन अचानक वह बेंच पर घूमा, कुछ सोचता-सा मालूम हुआ, उसने अपनी आखे झुकायी, और अपना खाली गिलास मेरी ओर वढाया।

"अपनी रम में से मेरे लिए थोडी और उडेल दो," उसने कहा।

"लेकिन चाय सव खत्म हो गयी।"

"पर्वाह नही। ऐसे ही दो, विना चाय के, ओह-ह!"

करातायेव ने हाथो मे अपना सिर थामा और कोहनियो को मेज पर टिका लिया। बिना कुछ कहे मैंने उसकी ओर देखा, और हालाकि मै भावुकतामय उद्गारो की, यहा तक कि शायद आसुओ की भी आशा कर रहा था जिन्हे ढुरकाने मे नशा करनेवाले लोग वडी उदारता का परिचय देते है, लेकिन जव उसने अपना सिर उठाया तो मै—सच कहता हू—उसके चेहरे पर गहरी उदासी मे पगा भाव देखकर स्तव्ध-सा रह गया।

"क्यो, क्या कुछ गडवड है?"

"कुछ नही। मुझे वीते दिनो की याद आ गयी थी। एक घटना वताने मे उज्र नही लेकिन आपको तकलीफ देते शर्म मालूम होती है ."

"नही, नही, यह औपचारिकता कैसी? जो मन में आय कहो।"

"हा," एक उसास छोडते हुए उसने कहना जारी रखा, "कभी-कभी ऐसी घटनाए . मिसाल के लिए, जैसे मेरी . अच्छा, अगर आपको बुरा न लगे, तो बता दूगा। हालाकि, सच पता नही कि "

"बताओ भी, प्रिय प्योत्र पेत्रोविच, बताओ न।"

"अच्छी बात है। लेकिन, हालाकि, यह एक. देखो न " उसने कहना शुरू किया। "लेकिन, सच मानो, मैं नही जानता "

"बस बस, बहुत हो चुका, प्रिय प्योत्र पेत्रोविच!"

"अच्छी बात है। हा तो सुनो, मेरे साथ क्या गुजरी। मैं देहात मे रह रहा था। बिल्कुल अचानक, एक लडकी पर मेरा मन आ गया। ओह, क्या लडकी थी वह! सुन्दर, होशियार, और इतनी अच्छी और मीठी। उसका नाम मत्र्योना था। लेकिन वह कुलीना नही थी। यानी, आप समझ गये न, वह एक दासी थी, निरी कम्मीगिरी करनेवाली। सो भी मेरी नही, वह किसी और की मिल्कियत थी। यही मुसीबत थी। हा तो मैं उसे प्यार करता था—और सच, यह एक ऐसी बात है जिसपर कोई हा तो, वह खुद भी मुझे प्यार करती थी। सो मत्र्योना ने मुझसे मनुहार करनी शुरू की कि मैं उसे उसकी मालकिन से खरीद लू। यो, सच पूछो तो, यह बात खुद मेरे दिमाग में भी आयी थी। लेकिन उसकी मालकिन पैसेवाली थी, बूढी खूसट, एकदम भयानक। उसका घर मेरे यहा से कोई दस मील दूर था। सो एक दिन, शुभ मुहरत में, जैसा कि कहते हैं, अपनी बग्घी मे मैंने तीन घोडो की तिगड्डी जोतने का आदेश दिया—बीच में बढिया, एक नम्बर चालवाला ग़ैर मामूली तौर पर तेज़ घोडा था—इतना कि उसका नाम ही लामपुरदोस पड गया था। मैंने बढिया से बढिया कपडे पहने और मत्र्योना की मालकिन की ओर चल दिया। वहा पहुचा। भारी बडा घर था—उपगृहो और बाग से लैस। मत्र्योना रास्ते के मोड पर मेरी राह देख

[illegible] गुमान
[illegible] किया और पता [illegible] कि यहां मालकिन
[illegible] गया—'उनसे [illegible]
[illegible] दिया 'रूसा, भाई, कि
[illegible] में आता है।' [illegible] चला
गया। [illegible] मैंने सोचा—'कौन
[illegible] कि किसी बुढ़िया [illegible]
[illegible] पेशगी न! [illegible] भी
[illegible]।' [illegible] लौटा। बोला—'चलिये,
[illegible]।' मैं उसके साथ चल दिया। दीवानखाने
में पहुंचा। [illegible] हुआ—आरामकुर्सी
में बैठी [illegible] थी। 'कहिये, क्या काम है?
बताइये।' [illegible] उचित समझा कि आप से मिलकर
मुझे भारी खुशी हुई है। 'आप गलत समझे। मैं यहां की मालकिन नहीं
हूं। मैं उसकी [illegible] हूं। आप क्या चाहते हैं?' इसपर मैंने कहा—
'मुझे गृह मालकिन से बात करनी है।'—'मारिया इल्यीनिश्ना आज
किसी से नहीं मिल रहीं। उनकी तबीयत ठीक नहीं है। कहिये, आप
क्या चाहते हैं?'—'अब कोई चारा नहीं,' मैंने मन में सोचा। सो
मैंने उसे अपनी स्थिति बतायी। वृद्धा सुनती रही। अन्त में बोली—
'सश्योंना? कौन सश्योंना?'—'सश्योंना पयोदोरोवा, कुलीक की लडकी।'
'पयोदोर कुलीक की लडकी लेकिन तुम्हारी उससे कैसे जान-पहचान
हुई?'—'संयोग से।'—'और क्या वह तुम्हारे इरादे से परिचित है?'
—'हां।' वृद्धा क्षण-भर चुप रही। इसके बाद—'ओह, मैं उसे बताऊंगी,
घूरे की कुतिया!' उसने कहा। मैं स्तब्ध रह गया, सच। 'सो किस
लिए? देखिये न, मैं अच्छी रकम देने को तैयार हूं, अगर आप बताने
की कृपा करें।'

"बुढिया निश्चित रूप में मुझपर फुकार उठी। 'वाह, यह खूब सोचा तुमने। मानो हम तुम्हारे धन की भूखी हो। मै उसे ठीक करूगी, उसे बताऊगी। सारा फतूर निकाल दूगी।' घृणा से वृद्धा का दम घुटा जा रहा था। 'यहा हमारे साथ क्या वह मजे मे नही थी? ओह, भुतनी कही की! खुदा मेरे अपराधो को क्षमा करे!' मेरे वदन में आग लग गयी, सच। 'उस बेचारी लडकी की जान पर क्यो आ रही हो? उसने भला क्या कसूर किया है?' वृद्धा ने क्रॉस का निशान बनाया। 'ओह, प्रभु मुझपर रहम करे! क्या तुम समझते हो कि मै अपने दासो की मालकिन नही—उनके साथ चाहे जो नही कर सकती?'—'लेकिन आप जानती है, वह आपकी नही है!'—'ओह, यह बात मारिया इल्यीनिश्ना स्वय समझ सकती है। समझे श्रीमान, आपको इसमें दखल देने की जरूरत नही। लेकिन मै इस मत्र्योना को वता दूगी कि वह किसकी मिल्कियत है।' और सच मैंने उस बुढिया को दबोच ही लिया होता, यदि मुझे मत्र्योना का खयाल न आ गया होता, और मेरे हाथ ढीले पड गये। मै इतना डर गया कि कह नही सकता। मैंने वृद्धा से मनुहार करना शुरू की। 'जो चाहो मुझसे ले लो,' मैंने कहा। 'लेकिन तुम उसे लेकर करोगे क्या?'—'मै उसे चाहता हू, ज़रा अपने-आपको मेरी स्थिति में रखकर देखिये। इजाज़त हो तो मै आपका हाथ चूमना चाहता हू।' और मैंने सचमुच उस चमरचट्टो का हाथ चूमा। 'अच्छी बात है,' बूढी चुड़ैल बुदबुदायी, 'मै मारिया इल्यीनिश्ना से कहूगी—वही इसका फैसला कर सकती है। दो-चार दिन में आना।' भारी बेचैनी के साथ मै घर लौटा। मुझे सन्देह होने लगा कि कुछ ढग से काम नही किया, कि मैंने उसे अपनी मनस्थिति का परिचय देकर गलती की, लेकिन अब क्या हो सकता था। यह सब तो पहले ही सोचना चाहिए था। दो दिन वाद मै फिर मालकिन मे मिलने गया। एक निजी कक्ष में मुझे ले जाया गया। वहा फूलो और शानदार

फर्नीचर की भरमार थी। खुद मालकिन एक वहुत ही बढिया आरामकुर्सी में वैठी थी, उसका सिर पीछे एक तकिये पर टिका हुआ था, और उसकी वह नातेदार भी वहा मौजूद थी। इनके अलावा वहा एक युवा स्त्री और थी, सफेद वाल, आडा तिर्छा-सा अटपटा मुह, हरा गाउन पहने हुए—शायद कोई सगी-साथिन। वृद्ध महिला ने गुनगुनी आवाज मे कहा—'कृपा कर वैठ जाइये।' मै वैठ गया। उसने मुझसे पूछ-ताछ शुरु की—यह कि मै कितना वडा हू, और कहा किस जगह मै काम कर चुका हू, और आगे क्या करना चाहता हू। यह सव पूरी गम्भीरता और अक्खडपन के साथ उसने पूछा। एक एक वात का वारीकी के साथ मैने जवाव दिया। वृद्धा ने मेज पर पडा रूमाल उठाया, और उसे लहराया और पखे की भाति झलने लगी। 'कातेरीना कारपोवना ने,' उसने कहा, 'मुझे आपकी योजना के वारे मे बताया, मुझे उससे सूचित किया। लेकिन मैने यह नियम बना लिया है कि,' उसने कहा, 'अपने आदमियो को अपनी चाकरी न छोडने दूगी। यह ठीक नही है, और कतई मुनासिव नही है कि एक सुव्यवस्थित घराने में ऐसा हो। यह वद-इन्तजामी है। मै अपने आदेश भी जारी कर चुकी हू,' उसने कहा, 'इसके लिए आपको और अधिक तकलीफ उठाने की जरूरत नही,' उसने कहा। 'ओह, तकलीफ काहे की, सच। लेकिन क्या मत्र्योना फ्योदोरोवा की सचमुच आपको इतनी जरूरत है?'—'नही,' उसने कहा, 'वह जरूरी नही है।'—'तो फिर आप क्यो नही मुझे ले लेने देती?'—'इसलिए कि मै ऐसा नही चाहती। मै नही चाहती, और वस। मै अपने आदेश दे चुकी हू—स्तेप के एक गाव के लिए उसका परवाना काटा जा रहा है।' उसने कहा। मुझपर जैसे विजली गिरी। वृद्धा ने फ्रासीसी भाषा मे उस महिला से कुछ कहा जो हरा गाउन पहने थी। वह वाहर खिसक गयी। 'मेरे अपने सिद्धान्त है,' उसने कहा, 'और मेरा स्वास्थ्य नाजुक है। मै परेशान होना वरदाश्त नही

कर सकती। तुम अभी जवान हो, और मेरे बाल पक चुके है, और मै तुम्हे सीख देने का दावा कर सकती हू। तुम्हारे लिए क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि अब थिर होकर बैठो, शादी कर लो। अपने लिए कोई अच्छी-सी वहू देखो। पैसेवाली दुलहिने तो कम है, लेकिन कोई गरीब लडकी, एकदम ऊचे चरित्र की, मिल सकती है।' मै, आप जानो, वृद्धा की ओर ताक रहा था, और मेरी समझ में नही आ रहा था कि वह क्या कह रही है। यह तो मैने सुना कि वह विवाह के बारे में कुछ कह रही है, लेकिन मेरे कानो में तो बराबर स्तेप का वह गाव गूज रहा था। विवाह कर लो ओह, शैतान की खाला!"

कहते कहते वह अचानक रुक गया और उसने मेरी ओर देखा।

"आप शादी-शुदा नही है, शायद?"

"नही।"

"ठीक, सो तो—बिलाशक—मुझे पहले ही नजर आ रहा था। खैर, मै बरदाश्त नही कर सका। 'आप यह सब कह क्या रही है? शादी का इसके साथ क्या सम्बन्ध है? मै तो आपसे केवल इतना जानना चाहता हू कि आप अपनी बन्धक-लडकी मत्र्योना को अपने से अलग करने के लिए तैयार है या नही?' वृद्धा ने आह-ऊह करना और काखना-कराहना शुरू कर दिया। 'ओह, यह तो मेरी जान खा रहा है! ओह, इसे यहा से हटाओ! ओह!' नातेदार लपककर उसके पास पहुची, और मुझे झिडकने लगी। वृद्धा बराबर काख और कराह रही थी। 'मैने किसी का क्या बिगाडा है? लगता है जैसे मै खुद अपने घर की भी मालकिन नही? ओह, ओह!' मैने झपटकर अपना हैट उठाया और पागल की भाति भागकर घर से बाहर आ गया।

"हो सकता है," उसने फिर कहना शुरू किया, "नीचे दरजे की एक लडकी के साथ इतना आन्तरिक लगाव रखने के लिए आप मुझे दोषी ठहराय। और ठीक मै खुद भी अपने आपको सही ठहराना नही

जानता लेकिन हुआ ऐसा ही। शायद आप यकीन न करे, लेकिन न मुझे दिन मे चैन पडता था, न रात को। यातना का अन्त नही था। क्यो मैंने उस गरीब लडकी का जीवन नष्ट कर दिया? कभी खयाल आता, वह एक खाल का कोट पहने हसो को हाक रही होगी, मालकिन के आदेश से उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता होगा, और गाव का मुखिया—तारकोली बूट पहने एक किसान—उसे गालियो से लाछित करता होगा। सच मेरा सचमुच बुरा हाल था। आखिर मुझसे नही रहा गया। मैंने पता लगाया कि किस गाव में उसे भेजा गया है, अपने घोडे पर सवार हुआ, और निकल पडा। अगले दिन कही साझ को मै वहा जा पहुचा। प्रत्यक्षत उन्हे उम्मीद नही थी कि मै ऐसी कोई कार्रवाई करूगा, और मेरे बारे मे उन्होने कोई आदेश जारी नही कर रखे थे। मै सीधा गाव के मुखिया के पास पहुचा जैसे पडोसी हू। मैंने अहाते में प्रवेश किया और अपने इर्द-गिर्द नजर डालकर देखा। अपनी कोहनी पर झुकी मत्र्योना पैडियो पर बैठी थी। उसके मुह से चीख निकलना ही चाहती थी, कि मैंने उगली उठायी और बाहर की ओर, खुले खेत की ओर, इशारा किया। मै झोपडी के भीतर पहुचा। गाव के मुखिया से कुछ देर बातचीत की, दस हजार झूटो का अम्बार लगाया और उपयुक्त मौका देख बाहर मत्र्योना के पास खिसक गया। वह, अभागी लडकी, करीब करीब मेरी गरदन से लिपट गयी। उसका बदन छीज गया था, रग सफेद पड गया था—ओह, मेरी नन्ही गुडिया! और, आप जानो, मेरे मुह से बार बार यही निकलता रहा—'बस करो, मत्र्योना, बस करो। ठीक है, सब ठीक है। अरे नही, रोओ नही, मत्र्योना!' मै यह कहता जाता था और खुद अपने आप आसू बहा रहा था, बहाये जा रहा था। हा तो आखिर, जैसे शरमाते हुए, मैंने उससे कहा—'मत्र्योना, जब सिर पर आ पडी हो तो आसुओ से काम नही चलता। तब, जैसा कि कहते है, अमल करना चाहिए, मजबूती

के साथ। चलो, मेरे साथ भाग चलो। यही हमें अब करना चाहिए।' मत्र्योना के तो जैसे होश ही उड गये। 'यह कैसे हो सकता है! मैं मारी जाऊगी। वे मुझे एकदम जीता नही छोडेंगे!'—'बिल्कुल पगली हो तुम! भला, तुम्हारी टोह किसको मिलेगी?'—'ओह, वे पता लगा लेंगे, बिल्कुल लगा लेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद, प्योत्र पेत्रोविच—तुम्हारी मेहरबानी मैं कभी नही भूलूगी। लेकिन अब मुझे छुट्टी दो। लगता है, मेरे भाग्य में ऐसा ही बदा है।'—'ओह, मत्र्योना, मत्र्योना, मैं तो समझा था कि तुम मे कुछ दम होगा।' और सचमुच, उसमें काफी साहस था। उसका हृदय ऐसा था जैसे खरा सोना! 'तुम्हे यहा क्यो छोडा जाय? कुछ फर्क नही पडेगा। भला इससे ज्यादा बुरा और क्या होगा? बोलो, सच सच कहो—क्या गाव के मुखिया के लात-घूसो का तुम्हे अनुभव हो गया है?' मत्र्योना के गाल करीब करीब लाल हो गये और उसके होठ कापने लगे। 'मेरे पीछे वे मेरे घरवालो का जीवन दूभर कर देंगे।'—'क्यो, तुम्हारे घरवालो से क्या मतलब, क्या वे उन्हे भी भेज देंगे?'—'हा, वे मेरे भाई को भेज देंगे।'—'और तुम्हारे बाप को?'—'नही, वे बाप को नही भेजेंगे। हम सबमें एक वही तो दर्जी का बढिया काम जानता है।'—'तब तो, देखो न, तुम्हारे भाई की जान पर कोई मुसीबत नही आयेगी,' मैंने उससे कहा। शायद आप यकीन न करे, लेकिन उसे समझाने में आकाश-पाताल एक कर देना पडा। उसने तो यहा तक कहा कि इसके लिए मुझे जिम्मेवार ठहराया जायेगा। 'लेकिन इसके लिए तुम क्यो चिन्ता करती हो,' मैंने कहा। जो हो, मैं उसे ले ही आया उसी समय नही, बल्कि दूसरे समय। एक रात गाडी लेकर मैं पहुचा और उसे वहा से निकाल लाया।"

"निकाल लाये?"

"हा। तो वह मेरे घर में रहने लगी। छोटा-सा घर था, गिने-चुने नाम के ही नौकर थे। मेरे आदमी, तुमसे भला क्या छिपाना है,

मेरी इज्जत करते थे। इनाम के लालच में भी वे मेरे साथ दगा न करते। मैं इतना सुखी था जैसे कि कोई राजा हो। मत्र्योना को आराम मिला, और उसकी सेहत सुधरने लगी। मैं उसे हृदय से प्यार करने लगा। ओह, क्या लडकी थी वह! ऐसा मालूम होता था जैसे प्रकृति ने खुद अपने हाथो से उसे घडा हो। वह गाती थी, नाचती थी, और गितार बजाती थी—सभी कुछ जानती थी मैंने पडोसियो तक उसकी हवा नही पहुचने दी। मुझे डर था कि वे दो की चार लगायेगे। लेकिन एक जीव था, मेरा दिली दोस्त गोरनोस्तायेव पान्तेलेई—आप उसे नही जानते, क्यो? वह जैसे उसपर लट्टू था। वह उसका हाथ चूमता, इस तरह जैसे वह कुलीन घर की रानी हो। सच, वह इसी तरह उसका हाथ चूमता। और आप जानो, गोरनोस्तायेव मेरे जैसा नही था, वह पढा-लिखा आदमी था—सुसस्कृत। उसने पुश्किन की सब किताबे पढ डाली थी। कभी कभी वह मत्र्योना और मुझे ऐसी ऐसी बाते बताता कि हम दत्तचित्त होकर सुनते। उसने उसे लिखना सिखाया। सच, इतना अजीब जीव था वह! और कैसे कपडे मैं उस लडकी को पहनवाता था—सच, एकदम गवर्नर की बीवी से भी अच्छे। गुलाबी मखमल का एक चुगा मैंने उसके लिए बनवाया था जिसके किनारो पर फर लगी थी। ओह, कितनी फबती थी वह उसके बदन पर! मास्को की एक महिला ने उसे बनाया था। बिल्कुल नये फैशन की, कमर से सटी हुई। और खुद मत्र्योना—ओह, कितनी अद्भुत थी वह! कभी वह मन ही मन कुछ सोचने लगती, और धरती पर नजर गडाये घटो बैठी रहती, क्या मजाल जो बदन का कोई भी हिस्सा हिले या डुले। और मैं भी बैठ जाता, उसे देखता रहता और देखते रहने से कभी जी नही भरता। ऐसा लगता जैसे मैं उसे पहली बार ही देख रहा हूं। इसके बाद वह मुसकराती, और मेरा हृदय इस तरह उछल पडता जैसे किसी ने उसे गुदगुदा दिया हो। या फिर अचानक हसने लगती, ठिठोली करती, नाचती-थिरकती।

वह मुझे इतनी गरमाहट से, इतने अनुराग से, अपनी बांहों में बाधती कि मेरा सिर घूम जाता। सुबह से लेकर साझ तक सिवा इसके मैं और कुछ नही सोचता कि उसे खुश रखने के लिए क्या कुछ न मैं कर डालू। और क्या आप यकीन करेगे? मैं उसे—ओह, मेरी गुडिया—उपहार भेंट करता था, केवल यह देखने के लिए कि वह उन्हे लेकर कितनी खुश होती है। खुशी से छलछलाकर वह एकदम लाल हो जाती। मेरी भेंटो को पहन पहनकर देखती, अपनी इन नयी चीजो मे सजी मेरे सामने प्रकट होती, और मेरा मुह चूमती। उसके पिता कुलीक को, जाने कैसे, इसकी गध मिल गयी। बूढा हमारे यहा आया, और ओह, आसुओ में नहा गया पाच महीने इस तरह बीत गये, और मैं खुशी के साथ चिरकाल तक इसके सग बना रहता, लेकिन यह कमबख्त दुर्भाग्य कुछ होने दे तब न!"

प्योत्र पेत्रोविच रुक गया।

"क्यो, फिर क्या हुआ?" मैंने सहानुभूति से पूछा।

उसने हवा में अपना हाथ हिलाया।

"हर चीज पर शैतान का साया पडा। मैंने उसका भी नाश कर दिया। मेरी गुडिया—मेरी मत्र्योना—बर्फ-गाडी में घूमने की बेहद शौकीन थी। और वह खुद उसे हाका करती थी। वह अपना चुगा बदन पर डालती, हाथो में अपने कामदार तोरजोक दस्ताने पहनती, और घोडो को ललकारती। हम हमेशा साझ को बर्फ-गाडी में सैर करने जाते थे ताकि, आप जानो, किसी से मुठभेड न हो। सो एक दिन—ओह—बहुत ही बढिया दिन था वह—पाला पडा था मगर आसमान साफ था, आंधी-वांधी बिल्कुल नही थी हम घूमने निकले। रास मत्र्योना के हाथ में थी। मैंने ताककर देखा—किधर का रुख वह लिये है। कहीं ऐसा तो नही कि वह कुकुयेवका की—अपनी मालकिन के गाव की—ओर लपक रही हो? हा, वह कुकुयेवका गाव की ओर ही जा रही थी।

मैंने उससे कहा—'क्या पागल हो गयी हो? यह कहां जा रही हो?' उसने कधे के ऊपर से मेरी ओर देखा, और हस पडी। 'चलने दो,' उसने कहा, 'मजा रहेगा!'—'अच्छी वात है,' मैंने सोचा, 'जो होगा, देखा जायेगा!' अपनी मालकिन के घर के पास से गुजरना—क्यो थी न वढिया सूझ? आप खुद ही वताइये—थी न वढिया सूझ? सो हम वढ चले। वीचवाला घोडा ऐसा मालूम होता था जैसे हवा में तैर रहा हो, और वाजूवाले घोड़े—ओह, कुछ न पूछो—बाकायदा वगूला वने हुए थे। आखिर कुकुयेवका गिरजा दिखाई देने लगा। तभी, अचानक हरे रग की एक पुरानी कोच-गाडी रेगती हुई नजर पडी जिसके पायदान पर पीछे दास खडा था। यह मालकिन थी—मालकिन जो गाडी मे सामने से हमारी ओर आ रही थी! मेरा हृदय वैठ गया। लेकिन मत्र्योना—ओह, किस तरह वह घोडो को रासो से पीट रही थी! वह सीधी कोच की दिशा मे उड चली! कोचवान, आप समझो, कोचवान ने देखा कि हमारी गाडी सीधी उसकी ओर उडी जा रही है, सो—आप जानो—वह एक वाजू हटने लगा, और इतनी तेजी से मुडा कि कोच वर्फ के एक ढूह में उलट गयी। खिडकी टूट गयी और मालकिन चीखी—'ऐ-ऐ-ऐ-ऐ-ऐ!' सगी ने गुहार की—'पकडो! पकडो!' और हम, भरसक तेज गति से, पास से निकल गये। हम तेजी से लपके जा रहे थे, लेकिन मैंने सोचा—'इसका नतीजा वुरा होगा। मैंने गलती की जो उसे कुकुयेवका की ओर वढने दिया।' और आप क्या सोचते है? सोचना क्या, मालकिन ने मत्र्योना को पहचान लिया था, और साथ ही मुझे भी, बूढी डायन कही की! और उसने मेरे खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी। 'मेरी लापता वन्धक लडकी,' उसने कहा, 'मि० करातायेव के यहा रह रही है!' साथ ही उसने माकूल नज़राना भी भेंट किया। फिर क्या था, देखते न देखते पुलिस अफसर मेरे सामने आ मौजूद हुआ। वह मेरी जान-पहचान का आदमी था, स्तेपान सेर्गेइच कुज़ोवकिन, यारवाश

जीव, यानी, सचमुच में बाकायदा टुच्चा। सो वह मेरे पास आया, कुछ इधर-उधर की बाते की, और फिर बोला—'आपने यह कैसे किया, प्योत्र पेत्रोविच? मामला सगीन है, और कानून इस मामले में बहुत ही स्पष्ट है।' मैंने उससे कहा—'अच्छा, अच्छा, इसके बारे में भी बात करेगे लेकिन अभी सफर से चले आ रहे हो, ताज़ा होने के लिए पहले कुछ ले लो!' कुछ लेने के लिए वह राजी हो गया, लेकिन उसने कहा—'न्याय का भी कुछ दावा होता है, प्योत्र पेत्रोविच, सो अपनी फिक्र रखना।'—'न्याय, बेशक, बेशक,' मैंने कहा, 'लेकिन मैंने सुना है कि आपके पास एक काला घोडा है। क्या आप मेरे लामपुरदोस की उससे अदल-बदल करना पसद करेगे? लेकिन सुनो, मत्र्योना फ्योदोरोवा नाम की लडकी तो कोई मेरे यहा है नही।'—'बस, रहने दो, प्योत्र पेत्रोविच,' उसने कहा, 'लडकी तुम्हारे पास है। तुम जानो, हम कोई स्विजरलैण्ड के रहनेवाले तो है नही हालाकि मेरे घोडे की लामपुरदोस से अदल-बदल की जा सकती है, मै तुम्हारे लामपुरदोस को एक तोहफे के रूप में भी स्वीकार कर सकता हू।' लेकिन उस बार जैसे तैसे मैंने उससे पीछा छुडा लिया। लेकिन वृद्धा चुप नही बैठी, उसने पहले से भी ज्यादा वावैला मचाया। दस हज़ार रूबल, उसने कहा, और वह सौदा करने से मुह नही मोडेगी। और आप जानो, जब उसने मुझे देखा था तो अचानक उसके दिमाग में यह ख़याल पैदा हुआ था कि हरा गाउन पहने अपनी उस युवा सगिनी-महिला से वह मेरा विवाह करा देगी। यह मुझे बाद मे मालूम हुआ, और इसी लिए वह इतनी गुस्सा से भर गयी थी। इन श्रीमन्ताओ के दिमागो का भला क्या ठिकाना, कुछ भी वे सोच सकती है! मेरी समझ में यह सब अकर्मण्यता की करामात है। उधर मेरा बुरा हाल था। मैंने पैसे को पैसा नही समझा, और मत्र्योना को छिपाये रखा। उन्होंने मुझे परेशान किया, खूब अलटा पलटा। मै कर्ज़ से दब गया। मेरा स्वास्थ्य गिर गया।

सो एक रात, उस समय जबकि मै बिस्तर में पडा सोच रहा था, 'हे भगवान, यह सब मैं किस लिए सहू? तुम्ही बताओ, मै क्या करू, ऐसी हालत में जबकि मै उसे प्यार किये बिना नही रह सकता? हा, यह मेरे बस का नही, और बस!'–तभी मत्र्योना ने कमरे में प्रवेश किया। फिलहाल अपने घर से डेढ-एक मील दूर एक गाव में मैंने उसे छिपा दिया था। मै डरा। 'अरे यह क्या? क्या उन्होंने तुम्हे वहा भी खोज निकाला?'–'नही, प्योत्र पेत्रोविच,' उसने कहा, 'बुबनोवो में मुझे कोई दिक नही करता। लेकिन कब तक? मेरा हृदय, छलनी हो गया है, प्योत्र पेत्रोविच। तुम्हारे लिए मै दु खी हू, मेरे प्रिय बन। तुम्हारी भलमनसाहत को मैं कभी नही भूल सकती, प्योत्र पेत्रोविच, लेकिन इस समय मैं तुमसे विदा लेने आयी हू।'–'यह क्या कहती हो तुम, क्या मतलब है तुम्हारा, पागल लडकी? विदा–विदा कैसी?' 'हां, मै अपने को सौंपने जा रही हू।'–'लेकिन मै तुम्हे अटारी में बद करके ताला डाल दूगा, पागल कही की! क्या तुम मुझे नष्ट करने पर तुली हो? क्या तुम मुझे मार डालना चाहती हो?' लडकी चुप थी। नीचे फर्श पर नजर जमाये थी। 'बोलो, कहो, क्या कहना चाहती हो तुम!'–'मैं तुम्हे अब और कष्ट नही देना चाहती, प्योत्र पेत्रोविच।' अब चाहे वह कुछ भी क्यो न करे .. 'लेकिन क्या तुम्हे मालूम है पगली, क्या तुम जानती हो, पागल लडकी ..'"

और प्योत्र पेत्रोविच बुरी तरह सुबक उठा।

"हा तो क्या सोचते है आप?" मेज पर घूसा पटकते और अपनी भौहों को सिकोड़ने का प्रयत्न करते हुए उसने कहना जारी रखा। जबकि उसके गाल तमतमा रहे थे और आसू अभी तक उनपर से ढुरक रहे थे। "लड़की ने अपने को सौंप दिया वह गयी और अपने-आपको उसने सौंप दिया..."

"घोडे तैयार है," कमरे में प्रवेश करते हुए मैनेजर ने विजयी अन्दाज़ में कहा।

हम दोनो उठ खडे हुए।

"मत्र्योना का फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा।

करातायेव ने हवा में अपना हाथ हिलाया।

* * *

करातायेव से मिले एक साल हो चुका था। सयोगवश मुझे मास्को जाना पडा। एक दिन, भोजन से पहले, जाने कैसे मै ओखोतनी र्याद के पार स्थित कहवाखाने में पहुचा। यह एक मास्को का मौलिक कहवाखाना था। वहा, बिलियर्ड रूम में, धुवें के बादलो की झिलमिल में से तमतमाये हुए चेहरो, मूछो, कलगी की तरह खडे बालो, पुरानी चाल के हगेरियन कोटो और नयी काट-छाट के स्लाव लिबासो की झलक दिखाई दे रही थी।

टुइया-से दुबले-पतले वृद्ध साधारण लबादा पहने रूसी समाचारपत्र पढ रहे थे। बैरे तश्तरिया लिये हुए, हरे कालीनो पर अछुवाये-से डग रखते, अदा के साथ इधर से उधर तैर रहे थे। सौदागर, कष्टप्रद एकाग्रता के साथ, चाय पी रहे थे। अचानक बिलियर्ड रूम में से एक आदमी बाहर निकला, अपेक्षाकृत अस्तव्यस्त, पाव कुछ डगमगाते हुए। उसने जेबो में अपने हाथ डाले, अपना सिर झुकाया, और निरुद्देश्य भाव से अपने चारो ओर नजर डालकर देखा।

"ओ . ओ! प्योत्र पेत्रोविच! कहो, कैसे हो?"

प्योत्र पेत्रोविच करीब करीब मेरी गरदन पर ढह गया और लडखडाते ढगो से, मुझे खींचता हुआ अपने साथ एक छोटे-से खाली कमरे में ले गया।

"हा इधर," सावधानी के साथ मुझे एक आरामकुर्सी में बैठाते हुए उसने कहा, "यहा तुम आराम से बैठोगे। ए बैरा, कॉफी लाओ! [illegible],

मतलब यह कि शैम्पेन! भई खूब, सच जानो, मुझे उम्मीद नही थी, कतई उम्मीद नहीं थी   यहा क्या काफी दिनो से हो? क्या काफी दिन हो गये तुम्हे यहा आये हुए? भई वाह, जैसा कि कहते है, खुदा ने फिर हम दोनो को मिला दिया!"

"हा, तुम्हे याद है न   "

"बेशक, याद है, मुझे याद है   बेशक मुझे याद है!" उतावली में उसने मुझे टोका, "एक मुद्दत हो गयी   "

"हा, तो यहा अब क्या कर रहे हो, प्रिय प्योत्र पेत्रोविच?"

"जिन्दा हू, जैसा कि तुम देख ही रहे हो। मजे से कट रही है। बडे खुशमिजाज लोग है यहा। अब जी शान्त है।"

उसने एक उसास छोडी और आखे उठाकर छत की ओर देखा।

"क्या सरकारी नौकरी करते हो?"

"नही, अभी तक तो नौकरी नही करता, लेकिन उम्मीद है कि मिल जायेगी। लेकिन नौकरी में क्या रखा है? मुख्य चीज तो लोग है। और कितने बढिया लोगो से मिलना होता है यहा!"

काली तश्तरी में शैम्पेन की बोतल लिये एक लडके ने भीतर प्रवेश किया।

"यह भी एक बढिया जीव है। क्यो, सच है न वास्या, कि तुम बढिया जीव हो? तुम्हारे स्वास्थ्य के नाम पर।"

लडका क्षण-भर खडा रहा, अन्दाज के साथ उसने अपना सिर हिलाया, मुसकराया और बाहर चला गया।

"हा, लोग यहा बहुत ही बढिया है," प्योत्र पेत्रोविच ने कहना जारी रखा। "ऐसे लोग जिनके दिल है, जो महसूस करना जानते है। चाहो तो मै उनसे आपका परिचय करा सकता हू। ओह, बहुत ही खुशबाश आदमी है! वे सब आपसे मिलकर खुश होगे। सच, मै जो कहता हू ·
बोबरोव मर गया। बुरा हुआ।"

"वोबरोव कौन?"

"सेर्गेई बोबरोव। क्या आदमी था वह! निरा जगली बेवकूफ उसने मुझे समझकर अपने बाजू में ले लिया था। और पान्तेलेई गोरनोस्तायेव भी मर गया। सब मर गये, सब के सब!"

"क्या तब से बराबर मास्को में ही रह रहे हो? कभी देहात जाना नही हुआ?"

"देहात? मेरा देहात बिक गया।"

"बिक गया?"

"नीलामी में। सच, बडा अफसोस है तुमने उसे नही खरीद लिया।"

"गुजारे के लिए तुमने क्या सोचा है, प्योत्र पेत्रोविच?"

"मै भूखा नही मरूगा। जब मेरे पास कुछ न होगा, खुदा देगा। अगर पैसा नही, मित्र तो होगें। फिर धन क्या है? धूल और मिट्टी। सोना हाथ का मैल है।"

उसने अपनी आखें मूद ली, अपनी जेब को टटोला, और अपने हाथ को मेरी ओर वढाया। उसकी हथेली पर दो पन्द्रह कोपेक के और एक दस कोपेक का—तीन सिक्के रखे थे।

"ये क्या हैं? धूल और मिट्टी ही न?" (और सिक्के फर्श पर लुढकने लगे।) "लेकिन छोडो, यह बताओ, क्या तुमने पोलेजायेव को पढ़ा है?"

"हा।"

"और हैमलेट में मोचालोव को अभिनय करते देखा है?"

"नही, उसे नही देखा।"

"अरे, उसे नही देखा, तुमने उसे नही देखा!" (और करातायेव का चेहरा सफेद हो चला, उसकी आखें बेचैनी से अस्थिर हो उठी, उसने मुह घुमा लिया और उसके होंठो पर एक वेदना का हल्का-सा बल पड़ गया।) "ओह, मोचालोव! मोचालोव! 'मर जाय—सो जाय!'" उसने भरभराई आवाज में कहा।

बस बस, यदि चिर निद्रा मे डूबकर हम कहे
कि इससे हृदय की पीडा शान्त होगी, और सहस्रो यातनाओ
का अन्त होगा
जिनसे हमारा शरीर पीडित है, तो हम ऐसे अन्त की
हृदय से कामना करेगे। मृत्यु का आलिगन, चिर निद्रा!

"चिर निद्रा, चिर निद्रा!" वह कई बार बुदबुदाया।

"कृपा कर यह तो बताओ," मैंने कहना चाहा, लेकिन वह आवेग के साथ कहता गया—

कौन है वह, जो समय की मार और उपेक्षा को सहन करेगा,
जालिम के जुल्म को, घमडी की घृणा को,
न्याय की धूर्तता को, और मूर्ख की दुतकार को—
जिसे शान्ति से, योग्य व्यक्ति सहन करता है
जब वह अपने को ही
नगी कटार से शान्त कर सकता है।
सुन्दरी, अरुणोदय वेला में प्रार्थना के समय
मेरे पापो के लिए क्षमा मागना।

और उसने अपना सिर मेज़ पर गिरा लिया। अस्फुट और असम्बद्ध शब्द वह बुदबुदा रहा था।

"सिर्फ एक ही माह में!"—नये उद्वेग के साथ उसने उनका पाठ किया।

सिर्फ एक माह, या कहो,
वे जूतिया भी पुरानी नही पडी होगी
जिनको पहन वह मेरे पिता की अर्थी के पीछे पीछे गयी थी,
आसू वहाती हुई, विल्कुल निओवी वनी, वह ही, अरे वही—

हे प्रभो! पशु भी एक, जिसमें कुछ बुद्धि नही होती है,
अधिक दिनो तक मृत का शोक करता है!

शैम्पेन का गिलास उठाकर वह अपने होठो तक ले गया, लेकिन उसने उसे पिया नही, और पढता गया—

हेक्यूबा के लिए!
कौन है हेक्यूबा उसकी, कौन लगता है वह हेक्यूबा का
जो इतना अधिक रोता-तडपता है?
लेकिन मै हू अल्पबुद्धि, अपने मे उलझा हुआ निरा मूर्ख,
कौन कहता है बुज़दिल मुझे? झूठ को मेरे गले मढता है?
नही, मुझे मानना ही चाहिए, है भी शायद यही बात
मेरा दिल नाज़ुक है, मुझमे नही है वह विष
यातना को और भी जो कडुवा बना देता हैं

करातायेव ने गिलास नीचे रख दिया और अपने सिर को पकड लिया। मुझे लगा जैसे मैंने उसकी वेदना को समझ लिया हो।

"जो हो," अन्त में उसने कहा, "अतीत को कुरेदने से कोई लाभ नही। क्यों, ठीक है न?" (वह हसा) "तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये!"

"तो क्या मास्को में ही रहोगे?" मैंने उससे पूछा।

"हा, मास्को में ही मैं मरूगा।"

"करातायेव!" बराबरवाले कमरे में से किसी ने पुकारा, "करातायेव, अरे कहा हो तुम? यहा आओ, मेरे भाई!"

"वे मुझे बुला रहे है," अपनी जगह से बोझिल-से अन्दाज़ से उठते हुए उसने कहा। "अच्छा, अब विदा। हो सके तो कभी मिलना। मैं *** में रहता हू।"

लेकिन अगले ही दिन, कुछ अप्रत्याशित कारणो से, मुझे मास्को से चल देना पडा, और इसके बाद प्योत्र पेत्रोविच करातायेव से फिर कभी भेंट नही हुई।

मिलन-वेला

शरद् के दिन थे। लगभग सितम्बर महीने का मध्य रहा होगा। बर्च-वृक्षो के एक वनखड में मै वैठा था। तडके से ही हल्की हल्की बौछार पड रही थी। बीच बीच मे, जब-तब, सुहावनी धूप निकल आती थी। मौसम में अस्थिरता थी। कभी आकाश सफेद मुलायम बादलो से छा जाता था, कभी सहसा—आशिक रूप में—जैसे कुछ क्षणो के लिए, खुल जाता था, और तब छटते हुए वादलो की ओट मे से, किसी की सुन्दर आख की भाति, उजली और कोमल नीलिमा झलक उठती थी। मै वैठा था, अपने इर्द-गिर्द देख और सुन रहा था। सिर के ऊपर पत्तो में हल्की हल्की सरसराहट थी। अकेले उनकी ध्वनि ही यह बताने के लिए काफी थी कि कौनसी ऋतु चल रही है। वसन्त का वह आह्लादपूर्ण छलछलाता कम्पन उसमें नही था, न ही वह मन्द फुसफुसाहट थी—वह सुदीर्घ कानाफूसी जो ग्रीष्म की विशेपता होती है, न वह ठडी और सहमी-सी फरफराहट जो शरद् के उत्तरार्द्ध में सुनाई देती है, बल्कि एक अस्पष्ट—मुश्किल से सुनाई पडनेवाली—और उनीदी-सी मर्मर ध्वनि थी। पेडो के ऊपरी हिस्सो में हल्की हवा की मृदु—धूधली—गूज भरी थी। वर्षा से भीगा वनखड, अपनी आन्तरिक गहराइयो में, सूरज के चमक उठने या किसी बादल की ओट में हो जाने के साथ, हर घडी बदल रहा था और धूप-छाव के रगो में रग रहा था। एक क्षण वह समूचा उमग उठता, जैसे उसकी हर चीज़ अचानक मुसकरा रही हो—छोटे छोटे बर्च-वृक्षो के कोमल तने,

एकाएक, सफेद रेशम की मृदु आभा से चमकने लगते, धरती पर पडे नन्हे पत्ते अचानक ऐसे चमकने लगते जैसे किसी ने गुलाबी सोने के पत्तर छितरा दिये हो, और घुघराले ऊचे फर्न की कमनीय टहनिया–अति पके अगूर के से अपने शारदीय रगो से सज्जित–आपस में गुथी ऐसी मालूम होती जैसे कोई अन्तहीन जाल बुन रही हो। इसके बाद, अचानक, हर चीज फिर धुधली नीलिमा मे डूब जाती। शोख रग पलक झपकते तिरोहित हो जाते, बर्च-वृक्ष एकदम सफेद और आभा-शून्य हो जाते, ताज़ा गिरी बर्फ की भाति सफेद, जिसे जाडो के सूरज की ठडी किरनो ने अभी दुलराना शुरू नही किया हो। और चतुराई के साथ, मानो चोरी-छिपे से, महीन महीन वर्षा की झडी और फुसफुसाहट शुरू हो जाती। बर्च-वृक्षो के पत्ते अभी प्राय सबके सब हरे थे, हालाकि उनमें पीलेपन की झलक आ चली थी। केवल कही कही इक्के-दुक्के नन्हे नन्हे पत्ते, एकदम लाल या सुनहरे, हिलगे थे और सूरज की रोशनी में उनकी लपक देखते ही बनती थी जब सूरज की किरनें, चमचमाती बारिश से सद्यस्नात कोमल टहनियो के आल-जाल और रोशनी के चिन्दो के भवर को छेदती अचानक उनका स्पर्श करती थी। एक भी पक्षी चहचहा नही रहा था। सबके सब नज़र से ओझल और चुप थे, सिवा इसके कि कभी कभी खिल्ली-सी उडाते टामटिट की धातुवी, घटी जैसी, आवाज गूज उठती थी। बर्च-वृक्षो के इस बनखड में रुकने से पहले, अपने कुत्ते के साथ, ऊचे एस्प-वृक्षो के एक वन में से मुझे गुज़रना पडा था। मैं मानता हू कि इस पेड के लिए–एस्प-वृक्ष के लिए–मेरे मन में कोई खास चाह नही है, जो अपने हल्के बैगनी रग के तने को लिये हुए अपनी भूरी-हरी धातुवी पत्तियो को भरसक ऊचे फेंकता और कापते पखे की भाति ऊपर हवा में खुलता मालूम होता है। लम्बे डठलो से अटपटे ढग से हिलगी उसकी गोल भद्दी पत्तियो का चिर-कम्पन मुझे मुग्ध नही करता। वह केवल तभी कुछ सुहावना लगता है जब, ग्रीष्म ऋतु की किसी साझ को, नीची हरियाली से एकाकी ऊचा उठा

हुआ, छिपते हुए सूरज की लाल पडती किरनो की ओर मुह किये, चमकता और थिरकता है, ऊपर से नीचे तक एक अखडित आभा से निखरा हुआ, या फिर उस समय जव दिन खुला और हवादार होता है, और उसका रोम रोम हिलोरे लेता, सरसराता और नीले आकाश से कानाफूसी करता है, और उसका प्रत्येक पत्ता जैसे उससे अलग होने की लालसा से अभिभूत हो, उडकर मडराता हुआ कही दूर चला जाना चाहता है। लेकिन, यो नियमत, यह पेड मेरे जी को नही भाता, और इसलिए एस्प के पेडो के झुरमुट में रुककर सुस्ताने की वजाय मै वर्च-वृक्षो के बनखड में चला आया, और एक पेड की छाया मे मैंने डेरा जमाया जिसकी टहनिया धरती के निकट काफी नीचे अपनी वाहे फैलाये थी, और फलत वर्षा से मेरा वचाव करने मे समर्थ थी। चारो ओर की दृश्यावली की कुछ देर सराहना करने के वाद मै एक वहुत ही मीठी और निर्विघ्न नीद की गोद मे ढुरक गया जिसके सुख से केवल शिकारी ही परिचित होते है।

नही कह सकता कि कितनी देर तक मै सोता रहा, लेकिन जव मैंने आखें खोली तव वनखड की तमाम गहराइयो मे सूरज की रोशनी फैली हुई थी, और सभी दिशाओ मे—खुशी से सरसराते पत्तो के झरोखो में से—गहरा नीला आकाश झाकता और जैसे अपनी आभा की दमक दिखाता मालूम होता था। वादल गायब हो गये थे, मुखरित हवा के झोके उन्हे अपने साथ भगा ले गये थे, मौसम खुल गया था और हवा मे एक विशेष प्रकार की खुश्क ताजगी का अनुभव होता था, एक ऐसी ताजगी का जो हृदय मे आह्लाद का सचार करती है और प्राय अदवदाकर—वर्षा के दिन के वाद—और भी अधिक उजली साझ की निश्चित सूचना देती है। मै उठने और एक वार अपना भाग्य आजमाने की कोशिश करने जा ही रहा था कि, अचानक, एक निश्चल मानवीय आकृति पर मेरी नजर पडी। मैंने ध्यान से देखा। वह एक किसान लडकी थी। वह मुझ से वीसेक डग दूर वैठी थी। उसका सिर जैसे किसी सोच में झुका था।

उसके हाथ उसके घुटनो पर पडे थे। उनमें से एक में जो अधखुला था, वह जगली फूलो का एक गुलदस्ता थामे थी जो, हर सास के साथ, चारखाने के उसके पेटीकोट से लगा हिल रहा था। उसका साफ-सुथरा सफेद झगला, जिसके गले और कलाइयो के बटन बद थे छोटी छोटी मृदु सिलवटो में उसके बदन से लिपटा था। बडे बडे पीतवर्ण मनको की दो लडिया उसके गले को छूती उसके वक्ष पर झूल रही थी। वह बहुत ही सुन्दर थी। बहुत ही प्यारे, करीब करीब खाकी आभा से युक्त उसके घने सफेद बाल सावधानी से सवारे हुए दो अर्द्ध-वृत्तो में विभाजित थे और उनके ऊपर गुलाबी रग का एक सकरा फीता बधा था जो काफी नीचे, उसके हाथीदात के से सफेद माथे पर से होता हुआ, गुजरता था। उसके बाकी चेहरे का रग सुनहरा गेहुवा था, ठीक वैसा ही जैसा कि मृदु त्वचा के सवलाने पर हो जाता है। उसकी आखें मैं नही देख सका, वह उन्हे नीचे ही झुकाये रही, लेकिन उसकी कमान-सी ऊची भौहे और लम्बी पलके दिखाई दे रही थी। वे भीगी थी और उसके एक गाल पर सूरज की रोशनी में तेजी से सूखते हुए आसुओ के अवशेष — जो ठीक अपेक्षा से अधिक पीतवर्ण उसके होठो तक ढुरक आये थे — झिलमिला रहे थे। नन्हा-सा उसका चेहरा, कुल मिलाकर, बहुत ही मुग्ध कर देनेवाला था। यहा तक कि उसकी मोटी और बैठी हुई सी नाक भी भद्दी नही मालूम होती थी। उसके चेहरे के हाव-भाव ने — मुख की मुद्रा ने — मुझे खास तौर से प्रभावित किया। वह कुछ इतना सरल और कोमल था, कुछ इतना उदास और अपनी इस उदासी पर कुछ ऐसे बालसुलभ अचरज से भरा था कि देखते ही बनता था। साफ था कि वह किसी का इन्तजार कर रही है। किसी चीज के चटकने की धुधली-सी आवाज़ सुनाई दी। उसने तुरत अपना सिर उठाया और अपने इर्द-गिर्द देखा। पारदर्शी छाव में उसकी बडी बडी, स्वच्छ और हिरनी की भाति सहमी-सी आखो की मुझे एक द्रुतगामी झलक दिखाई दी। कुछ क्षणो तक वह टोह लेती रही,

उस रयन की ओर अपनी पूरी खुली आंखों से, बिना डिगे देखते हुए जहां से कि वह अस्पष्ट-सी आवाज आयी थी। फिर उसने एक उसास भरी, धीरे-से अपना सिर घुमाया, और भी ज्यादा नीचे झुक गयी, और अपने फूलों को छांटने-चुनने लगी। उसकी पलकें लाल हो गयी थीं, होठों में हल्के बल पड चले थे, और उसकी घनी पलकों की ओट में से एक आंसू ढुरक आया था, और उसके गाल पर थिर होकर चमक रहा था। इस प्रकार काफी से ज्यादा समय हो गया, बेचारी लडकी हिली-डुली तक नहीं, सिवा इसके कि उसके हाथ, बीच बीच में, गहरी निराशा से कसमसा उठते थे, और वह बराबर सुन रही थी, बराबर टोह में लगी थी एक बार फिर जंगल में कडकड की आवाज हुई। वह चौंकी। आवाज़ बन्द नहीं हुई, उत्तरोत्तर ज्यादा स्पष्ट होती और निकट आती गयी। आखिर तेज तेज और सुनिश्चित डगों की चाप सुनाई दी। उसने अपने-आपको चौकस किया, और लगा जैसे कुछ सहम गयी हो। उसकी एकटक दृष्टि जैसे कांप रही थी, आशा से उमगी पड रही थी। झुरमुट में से एक पुरुष का आकार प्रकट हुआ। उसने उसकी ओर देखा, सहसा उसके गालों पर लाली दौड गयी, होठों पर एक उजली, उल्लास में पगी, मुसकान खेलने लगी, उसने उठने की कोशिश की, लेकिन जैसे उठी थी वैसे ही फिर बैठ भी गयी, सकपकायी-सी, चेहरे का रंग उडा हुआ। केवल उसकी आखें, जो थरथरा और करीब करीब याचना-सी करती मालूम होती थीं, निकट आते हुए आदमी की ओर उठीं। वह आया और उसके बराबर में आकर खडा हो गया।

अपनी ओट की जगह से मैंने उत्सुकता के साथ उसे देखा। सच मानिये, मुझे वह आदमी कोई बहुत पसन्द नहीं आया। बाहरी टीमटाम से वह किसी धनी युवा कुलीन का मुंहचढा अरदली मालूम होता था। उसकी साज-सज्जा से तरहदारी और फैशनेबल लापर्वाही की बू आती थी। वह छोटी काट का कोट पहने था, कत्थई रंग का, शायद ही उसके

मालिक की उतरन, बटन ऊपर तक बन्द किये, गुलाबी क्रैवट जिसके छोर हल्के बैगनी रग के थे, और सिर पर सुनहरी फीते से लैस काली मखमली टोपी वह पहने था जिसे उसने आगे की ओर ठीक भौंहो तक नीचे खींच रखा था। उसकी सफेद कमीज़ का गोल कालर निर्ममता के साथ उसके कानो तक उठा हुआ था और उसके गालो में चुभ रहा था, और उसकी आस्तीन के कलफदार कफ उसके समूचे हाथ को—उसकी टेढी-तिर्छी लाल उगलियो समेत—ढके थे। उगलियो मे वह सोने और चादी की अगूठिया सजाये था जिनमें एक तरह के फूल की शकल के फीरोज़े जडे थे। उसका लाल, ताज़ा और उद्धत-सा दिखनेवाला चेहरा—जहा तक तजुर्बा है—उन चेहरो की कोटि का था जो प्राय हमेशा मर्दों को घिनौने और दुर्भाग्यवश स्त्रियो को अक्सर आकर्षक मालूम होते है। वह अपनी औघड मुखाकृति पर, प्रत्यक्षत हिकारत और ऊब का भाव धारण करने का प्रयत्न कर रहा था। वह अपनी दूधिया-कजी आखो को, जो पहले से ही काफी छोटी थीं, निरन्तर सिकोडे था। वह नाक-भौ सिकोडता, होठो के छोर नीचे गिरा लेता, जमुहाई लेने का अभिनय करता और लापर्वाही—लेकिन एकदम सहज लापर्वाही नही—के साथ अपनी तरहदार घुघराली लाल कनपटी के बाल को पीछे की ओर फेकता, या अपने उपरले मोटे होठ पर उगी लाल लाल मूछो को मरोडता—गर्ज़ यह कि उसका हाव-भाव एकदम असह्य था। ज्यो ही उसकी नजर उस युवा किसान लडकी पर पडी, जो उसकी इन्तज़ार कर रही थी, उसने अपनी पैतरेबाज़ी शुरू कर दी। धीमे, झूमते डगो से वह उसके निकट पहुचा, क्षण-भर अपने कधो को बिचकाये खडा रहा, कोट की जेबो में अपने दोनो हाथ डाले, और बेचारी लडकी के सामने उडती हुई तथा उपेक्षापूर्ण नजर से एक बार देख भर लेने के बाद धरती पर बैठ गया।

“हा तो,” उसने कहना शुरू किया, अब भी इधर उधर देखते, अपनी टाग को झुलाते और जमुहाई लेते हुए, “क्या बहुत देर हो गई तुम्हें यहा बैठे?”

उसकी एकाएक उदास नहीं हो गयी।

"हां, आनी देर हो गयी, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच," आखिर मुश्किल से कुछ थरथराती आवाज में उसने कहा।

"ओह!" (उसने अपनी टोपी उतारी, शाहाना अन्दाज में अपने घने, कड़े घुंघराले बालों पर हाथ फेरा जो नीचे करीब करीब उसकी भौंहों तक उग आये थे, फिर गर्व के साथ अपने चारो ओर नजर डाली और सावधानी के साथ अपने बेशकीमती सिर को ढक लिया।) "मुझे तो एकदम भूल ही गया था। इसके अलावा, बारिश हो रही थी!" (उसने फिर जम्हाई ली।) "काम इतना था कि बाप-रे! किसका ध्यान रखे, और किसका नहीं, तिस पर हर घडी की डाट-डपट। तो हम कल जा रहे हैं..."

"कल?" किशोर लड़की के मुह से निकला, और उसकी हैरान आंखें उसपर जम गयीं।

"हा, कल। अरे बस, बस!" उसके समूचे वदन को सुबकता और उसके सिर को धीरे धीरे नीचे झुकता हुआ देखकर चिढ के स्वर मे उसने कहा। "देखो, रोओ नही, आकुलीना। तुम जानती हो, मुझसे यह बरदाश्त नही हो सकता।" (और अपनी टुटी-सी नाक को उसने सिकोडा।) "नही तो मैं तुरत चल दूगा क्या मूर्खता है, रोना-बिसूरना!"

"अच्छा तो नही, मैं नही रोऊगी!" जैसे-तैसे अपने आसुओ को रोकते हुए आकुलीना बोली। "तो कल जा रहे हो?" कुछ देर रुककर उसने फिर कहा, "भगवान खैर करे, एक-दूसरे से जाने फिर कब मिलना होगा वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच!"

"मिलेगे, हम जरूर मिलेगे। अगर अगले साल नही, तो फिर कभी। लगता है, मालिक पीटर्सबर्ग सरकारी नौकरी करना चाहते है," वह कहता गया, अपने प्रत्येक शब्द के—उपेक्षापूर्ण कृपालुता के अन्दाज में—गुनगुनाकर कहते हुए। "और शायद हमें विदेशो में भी जाना पडे।"

"तुम मुझे भूल जाओगे, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच," आकुलीना ने उदास स्वर में कहा।

"नही, भूल क्यो जाऊगा? मैं तुम्हे नही भूलूगा। तुम बस चौकस रहना, कोई बेवकूफी न करना। बप्पा का कहना मानना .. और मैं तुम्हे नही भूलूगा, न-हीं!" (और उसने इतमीनान के साथ बदन को फिर सीधा किया और जमुहाई ली।)

"मुझे भूलना नही, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच," याचना के स्वर में वह कहती गयी, "जितना मैं तुम्हे चाहती हू, सच, उतना और कोई नही चाह सकता। मैंने सभी कुछ तुम्हे सौंप दिया है। तुम कहते हो, मैं अपने बप्पा का कहना मानू। लेकिन, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच, मैं अपने बप्पा का कहना कैसे मान सकती हू?"

"क्यो?" (उसने इस शब्द का जैसे अपने पेट के भीतर से उच्चारण किया, कमर के बल लेटते और अपने हाथो को सिर के नीचे लगाते हुए।)

"नही, यह कैसे हो सकता है, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच? तुम खुद भी जानते हो "

उसकी आवाज टूट गयी। वीक्तोर अपनी घडी की इस्पाती जजीर से खेल रहा था।

"तुम मूर्ख नही हो, आकुलीना," उसने अन्त में कहा, "सो फिजूल की बात न करो। मैं तुम्हारा भला चाहता हू, समझ रही हो न? बिलाशक, तुम मूर्ख नही हो, एकदम निरी गवार, जैसा कि कहते हैं। और तुम्हारी मा भी हमेशा देहातिन नही थी। फिर भी तुम पढ़ी-लिखी नही हो—सो तुम से जो कह रहा हू, वह तुम्हे मानना चाहिए।"

"लेकिन मुझे तो डर लगता है, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच।"

"ओह-ह! सो कुछ नही, मेरी गुड़िया! डर की बात भी तुमने खूब कही! भला डर काहे का?" उसने कहा और फिर उसके निपट खिसकते हुए बोला, "यह क्या है, फूल?"

"हा," आकुलीना ने भरी-सी आवाज़ में कहा और इसके बाद कुछ खिलते हुए बोली—"यह देखो, वन-तैन्सी के फूल मैंने चुने हैं जो बछड़ो के लिए अच्छे रहते है। और यह कशीदार गेंदा है—कण्ठमाला से बचानेवाला। कितना ख़ूबसूरत यह फूल है! इतना ख़ूबसूरत फूल मैंने पहले कभी नही देखा। और ये मुझे-न-भूलना है, और ये मा-के-छौने और ये—इन्हे मैंने तुम्हारे लिए बटोरा है।" पीतवर्ण तैन्सी के नीचे से नीलपोयो का एक गुच्छा, जो घास की एक महीन पत्ती से बधा था, निकालते हुए अन्त में उसने कहा, "क्यो तुम्हे पसन्द है न?"

वीक्तोर ने अलस भाव से हाथ बढाया, फूलो को लिया, लापर्वाही के साथ उन्हे नाक से लगाया और फिर, ऊपर की ओर देखते हुए, उन्हे अपनी उगलियो मे मरोड़ने लगा। आकुलीना उसे देख रही थी। उसकी उदास आखे मृदु भक्ति, मुग्ध समर्पण और प्रेम मे पगी थीं। वह उससे डर रही थी, रोने का साहस उसमें नही था, उससे विदा ले रही थी, और मुग्धा की भाति आखिरी बार उसे देख रही थी। और वह, धरती पर लेटा, सुलतान की भाति झटकता शाही उदारता और अनुकम्पा के अन्दाज़ में, उसकी सराहना को सहन कर रहा था। और, मुझे कहना चाहिए कि, मै बडे गुस्से से उसके लाल चेहरे को देख रहा था जिसपर हिकारत भरी उपेक्षा का नक़ाब चढा था, और उसके नीचे उसका तुष्ट तथा दुलराया हुआ अहम् प्रकट होता था। और आकुलीना उस समय कितनी प्यारी, कितनी मधुर मालूम होती थी। उसकी समूची आत्मा, विश्वास और अनुराग में पगी, निरावरण उसके आगे बिछी थी आशा-आकाक्षा और दुलार भरी कोमलता से [illegible] [illegible] उसने नीलपोयो को नीचे गिरा दिया, अपने कोट की [illegible] जेब में से आख का एक गोल शीशा निकाला जो फीते के सिरे से लगा था, और उसे अपनी आख में चिपकाने का प्रयत्न करने लगा। [illegible] सिकोड़कर, अपने गाल और नाक को ऊपर की ओर [illegible] [illegible],

उसने बहुत कोशिश की कि शीशा वहां जमा रहे, लेकिन जितना ही वह कोशिश करता, उतना ही वह बार बार उसके हाथ में आ गिरता।

"यह क्या है?" अन्त में आकुलीना ने अचरज से पूछा।

"ऐनक का शीशा," उसने गर्व के साथ जवाब दिया।

"क्या होता है इससे?"

"अरे, खूब साफ दिखता है।"

"ज़रा देखू।"

वीक्तोर ने भौंहे चढायी, लेकिन शीशा उसे दे दिया।

"देखो, इसे तोड न डालना।"

"डरो नही। नही तोडूगी।" (उसने उसे अपनी आख से लगाया।) "मुझे तो कुछ दिखाई नही देता," भोलेपन के साथ उसने कहा।

"लेकिन तुमने अपनी आख तो बद की नही," नाराज हुए शिक्षक के स्वर में उसने जवाब दिया। (उसने अपनी वही आख मूद ली जिसके सामने शीशा था।)

"यह नही, यह नही, बल्कि दूसरी—मूर्ख कही की!" वीक्तोर ने चिल्लाकर कहा और इससे पहले कि वह अपनी गलती ठीक कर पाती, उसने उसके हाथ से शीशा छीन लिया।

आकुलीना के गालो पर हल्की लाली दौड गयी, धीमे से वह मुसकरायी, और अपना मुह दूसरी ओर फेर लिया।

"साफ बात तो यह कि यह हम जैसे लोगो के लिए नही है," उसने कहा।

"बेशक, सो तो मालूम ही होता है।"

बेचारी लडकी चुप हो गयी, और उसने एक उसास भरी।

"ओह, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच, तुम्हारे बिना जाने मेरा क्या हाल होगा!" अचानक उसके मुह से निकला।

वीक्तोर ने शीशे को अपने कोट के पल्ले से साफ किया और उसे फिर अपने जेब के हवाले कर दिया।

"सो तो है," अन्त मे उसने कहा, "शुरू शुरू में, इसमें शक नही, तुम्हे वडा कठिन मालूम होगा।" (मेहरबाना अन्दाज में उसने उसके कधे को थपथपाया। उसके हाथ को लडकी ने धीमे से अपने कधे पर से हटाया और डरते डरते उसे चूमा।) "अरे वस, वस, देखो, कितनी अच्छी लडकी हो तुम, सच!" आत्मसन्तुष्ट मुसकान के साथ वह कहता गया, "लेकिन किया भी क्या जाय? तुम खुद ही देखो। मै और मेरे मालिक सदा तो यहा रह नही सकते। जाडा अब आया ही चाहता है, और जाडो में देहात – तुम खुद जानती हो – बस, तबीयत घिन्ना जाती है। और पीटर्सबर्ग – वहा की तो बात ही दूसरी है। वहा . वहा ऐसी ऐसी चीज़े है कि तुम्हारे जैसी मूर्खा लडकी सपने में भी उनकी कल्पना नही कर सकती। ऐसे ऐसे घर और सडके, और सभा-समाज, और अदब-कायदे – वस, एकदम अद्‌भुत!" (आकुलीना अति व्यग्र आकुलता से – एकाग्रता से – सुन रही थी, उसके होठ बच्चो की भाति अधखुले थे।) "लेकिन बेकार," धरती पर करवटें बदलते हुए अन्त में उसने कहा, "तुम्हे यह सब बताने से क्या फायदा? तुम्हारी समझ में यह बाते कहा आयेगी?"

"ऐसा क्यो, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच! मै समझती हू, मैं हर चीज़ समझती हू।"

"अरे बाप-रे, क्या लडकी है यह!"

आकुलीना ने आखें झुका ली।

"वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच, एक समय था जब तुम मुझसे इस तरह की बाते नही करते थे," उसने कहा और अपनी आखो को नीचे झुकाये रही।

"एक समय? एक समय! ओह भगवान!" उसने जैसे क्षोभ से कहा।

दोनो चुप थे।

"अच्छा तो अब चलना चाहिए," उसने कहा और कोहनी के बल उठना भी शुरू कर दिया।

"अरे नही, थोड़ा और ठहरो," याचना के स्वर में आकुलीना ने मनुहार की।

"किस लिए? क्यो, तुमसे विदा तो ले ही चुका हू।"

"थोडा और ठहरो," आकुलीना ने दोहराया।

वीक्तोर फिर लेट गया और सीटी बजाने लगा। आकुलीना ने क्षण-भर के लिए भी अपनी आखें इधर-उधर नही की – बराबर उसे देखती रही। साफ मालूम होता था कि वह क्रमश भावो से अभिभूत होती जा रही है। उसके होठो मे बल पड़ रहे थे, और उसके पीले गालो मे एक हल्की दमक दौड गयी थी.

"वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच," टूटी हुई आवाज में आखिर उसने कहना शुरू किया, "यह तुम बहुत बुरा कर रहे हो, बेशक, यह तुम बहुत बुरा कर रहे हो, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच!"

"बुरा क्या कर रहा हू?" उसने भौंहे चढाते हुए पूछा, थोडा-सा सिर उठाया और उसकी ओर उन्मुख हो गया।

"यह बहुत बुरा है, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच। विदा के समय कम से कम सहानुभूति का एकाध शब्द तो तुम कह सकते थे, मुझ अभागी, बेसहारा और गरीब के लिए कुछ तो तुम्हारे मुह से निकल सकता था."

"लेकिन मैं तुमसे कहू क्या?"

"मैं नही जानती। यह तुमसे ज्यादा और किसे मालूम होगा, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच। तुम यहा से जा रहे हो, और एक छोटा-सा शब्द भी ऐसा मैंने क्या किया है जिसकी मुझे तुम यह सजा दे रहे हो?"

"तुम भी अजीब हो! भला मैं क्या कर सकता हू?"

"कम से कम एक शब्द."

"बस, वही एक रट!" उसने खीजकर कहा और उठ खडा हुआ।

"गुस्सा न करो, वीक्तोर अलेक्सान्द्रिच," उसने हडबडाकर कहा, अपने आसुओ को मुश्किल से दबाते हुए।

"गुस्सा-वुस्सा कुछ नही, केवल तुम्हारी यह मूर्खता आखिर तुम चाहती क्या हो? तुम जानती हो कि मै तुमसे विवाह नही कर सकता—ठीक है न? नही, मै नही कर सकता। तो फिर, बोलो, तुम क्या चाहती हो?" (उसने अपना मुह आगे की ओर कर लिया जैसे उसके जवाब को लपकना चाहता हो, और अपने हाथो की उगलिया फैला ली।)

"मै कुछ नही चाहती . नही, कुछ नही," उसने लडखडाती-सी आवाज़ में कहा, और साहस बटोरते हुए अपना कापता हुआ हाथ उसकी ओर बढाया। "बस, विदा के समय केवल एक शब्द "

और आसू उसकी आखो से फूट पडे।

"यह देखो, मतलब यह कि अब इसने आसुओ की नदी बहानी शुरू कर दी," वीक्तोर ने कहा, स्थिर भाव से, अपनी टोपी को नीचे आखो तक खीचते हुए।

"मै कुछ नही चाहती," वह कहती गयी, सुबकते और अपने चेहरे को हाथो से ढकते हुए। "घर में मेरे लिए क्या है? क्या है मेरे सामने? क्या बनेगा मेरा? किस घाट जाकर लगूगी मै अभागिन? किसी चडूल के गले से वे मुझे बाध देंगे मेरा कोई नही. मुझ अभागिन का कोई नही!"

"अलापे जाओ, अपना यह राग अलापे जाओ!" दबी आवाज में वीक्तोर बुदबुदाया, बेसब्री से वही अपनी जगह पर कसमसाते हुए।

"कुछ तो वह अपने मुह से कह सकता था, एक शब्द केवल इतना—आकुलीना मै "

हृदय को चूर कर देनेवाली सुबकियो की बाढ उठी और वह अपना वाक्य पूरा नही कर पायी। धरती पर गिरकर घास में उसने

अपना मुह दुबका लिया और बुरी तरह, फूट फूटकर, रोने लगी उसका समूचा शरीर बुरी तरह हिल रहा था, उसकी गरदन धौंकनी की भाति उठ-गिर रही थी . जाने कब से दबा हुआ उसका दु ख, उसकी वेदना, आखिर बाध तोडकर फट चली। वीक्तोर उसके ऊपर झुका खडा था, क्षण-भर खडा रहा, फिर मुडा और डग नापता वहा से चल दिया।

कुछ क्षण गुज़र गये। वह अब थिर हुई, सिर ऊचा किया, उछलकर उठ खडी हुई, इर्द-गिर्द देखा, और अपने हाथो को मसला। उसने उसके पीछे लपकने की कोशिश की, लेकिन उसकी टागें जवाब दे गयी—वह घुटनो के बल गिर पडी.. मुझसे रहा नही गया। लपककर उसके पास पहुचा। लेकिन ठीक इससे पहले कि वह मुझे देख भी पाती, इतरमानवीय साहस करके हल्की-सी चीख के साथ वह उठी और पेडो के पीछे गायब हो गयी। उसके फूल धरती पर बिखरकर वही छूट गये।

मैं क्षण-भर खडा रहा, झुककर नीलपोथो का गुच्छा उठाया और जगल से निकल खुले खेत में आ गया। पीतवर्ण निर्मल आकाश में सूरज नीचे उतर गया था, उसकी किरने भी पीली और ठडी पड गयी मालूम होती थी। उनमें चमक नही थी। वे अनटूटे, पीले आलोक में समा गयी थी। सूरज को छिपे आध घटा भी नही हुआ होगा, लेकिन साझ की दमक मुश्किल से ही कही नज़र आती थी। हवा के झोके, पीले झुलसे हुए ठूठो को पार करते मेरी ओर बढे आ रहे थे। चुरमुराकर दोहरी हुई छोटी छोटी पत्तिया, भवर बनी हुई, झोको के साथ आगे आगे आती और सडक को पार करती और वनखड के किनारे किनारे उड चलती। वन के पेडो की वह पात जो दीवार की भाति खेतो की ओर उन्मुख थी, समूची हिल रही थी और प्रकाश की लघु रेखाओ से आलोकित थी। प्रकाश की रेखाओ में उजलापन था, लेकिन दमक नही थी। लाली मायल पौधो पर, घास पर, इर्द-गिर्द के घास-फूस पर, शरदकालीन

मकडी के जालो के अनगिनत सूत चमचमा और थिरक रहे थे। मैं ठिठककर खडा हो गया। मेरा हृदय भारी था। धुधली पडती प्रकृति की उजली किन्तु ठडी मुस्कराहट के आवरण में आसन्न शीत का उदास भय धीमे पगो से सरकता मालूम होता था। खूब ऊचे सिर के ऊपर कोई चौकन्ना कौवा, अपने परो से हवा को चीरता—सप्रयास और तेजी से राह-मग्न रहा था। उसने अपना सिर मोडा, कनखियो से मेरी ओर देखा, अपने परो को फडफडाया और, एकाएक काव की आवाज करता जगल में ओझल हो गया। कबूतरो का एक भारी झुड, मगन भाव से, खलिहान से हवा में उडा, और दलबद्ध रूप में अचानक चक्कर लगाता हुआ, व्यस्तता के साथ, खेत में इस-उस ओर बिखर चला। शरद् का असन्दिग्ध चिन्ह! पहाडी के नगे-बूचे ढलुवान पर से कोई गाडी को हाकता चला आ रहा था। गाडी खाली थी, और उसके पहिए जोरो से खटखड की आवाज कर रहे थे.

मैंने घर का रुख किया। बेचारी आकुलीना का चेहरा बहुत देर तक मेरी आखो के सामने तैरता रहा, और नीलपोथो का उसका वह गुच्छा—जो जाने कब का मुरझा चुका है—आज दिन भी मेरे पास सुरक्षित है..

शिग्री ज़िले का हैमलेट

अपने भ्रमण में एक बार मुझे एक धनी ज़मीदार तथा शिकारी अलेक्सान्द्र मिखाइलिच ग० के यहा भोज का निमत्रण मिला। उसकी मिल्कियत उस छोटे-से गाव से तीनेक मील दूर थी जहा कि उस समय मैं टिका हुआ था। मैंने फ्रॉक-कोट पहना, एक ऐसी चीज़ जिसके बिना यात्रा पर निकलने की—यहा तक कि शिकार के लिए भी जाने की—मैं किसी को सलाह नही दूगा, और अलेक्सान्द्र मिखाइलिच के घर की ओर चल दिया। भोज का समय छ बजे नियत था। मैं पाच बजे पहुचा, और देखा कि पहले से ही काफी कुलीन वहा मौजूद है। कितने ही वर्दिया पहने थे, अनेक मामूली लिबास में थे, बाकी पचमेली साज-सज्जा में आये थे। मेजबान ने बडे तपाक से मेरा स्वागत किया, लेकिन जल्दी ही बटलर के भडारखाने की ओर लपक गया। वह किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के आने की प्रतीक्षा कर रहा था और काफी उद्विग्न हो उठा था, हालाकि समाज में उसकी स्वतत्र स्थिति थी और उसकी सम्पत्ति को देखते हुए उसका इतना उद्विग्न हो उठना कुछ अटपटा-सा मालूम होता था। अलेक्सान्द्र मिखाइलिच ने कभी विवाह नही किया था, और स्त्रियो से वह कोई लाग-लगाव नही रखता था। उसका घर चिर-कुमारो का अड्डा था। वह राजसी ठाट से रहता था। अपने पूर्वजो की गद्दी का उसने विस्तार कर लिया था और शान के साथ नये सिरे से उसे सजाया था। मास्को से मदिरा मगाने पर वह हर साल पन्द्रह

हजार रूबल खर्च करता था और उच्चतम सार्वजनिक प्रतिष्ठा का उपभोग करता था। सर्विस से अवकाश ग्रहण किये उसे एक मुद्दत हो चुकी थी और सरकारी मान-मर्यादा पाने की कोई इच्छा उसमे नही थी। तव फिर क्या वात थी जो, अपनी लीक से हटकर, उसे उच्च सरकारी पद के मेहमान को बुलाने की जरूरत महसूस हुई, और भोज के दिन सुवह से ही उद्विग्नता ने उसे घेर लिया? लेकिन यह एक ऐसा रहस्य है जो अज्ञात के गर्भ में छिपा है, जैसे कि मेरा एक अटार्नी मित्र कहा करता था। जव कोई उससे पूछे कि वह घूस लेता है या नही तो उसका भी यही जवाव होता था।

मेज़वान के खिसक जाने के वाद मैंने कमरो का रौद लगाना शुरू किया। प्राय सव के सव मेहमान मेरे लिए एकदम अनजाने थे। करीब वीसेक लोग ताश की मेजो पर पहले से ही आसन जमाये थे। प्रिफरेन्स (ताश का खेल) के इन भक्तो मे दो योद्धा थे, जिनके चेहरे रईसाना लेकिन कुछ नि सत्व-से मालूम होते थे, कुछ गैरफौजी लोग थे, गलो में ऊचे तथा तग क्रैवट कसे हुए और खिजाव लगी मूछें नीचे को झुकी हुई—ऐसी जो केवल दृढ चरित्र पर हितैषी व्यक्तियो में पायी जाती है। घमड के साथ वे अपने ताशो को उठाते थे और, विना अपनी गरदन को जुम्बश दिये, कनखियो से हर आनेवाले को अपनी नजर में उतारते जाते थे। इनके अलावा पाच या छ प्रातीय अधिकारी थे—गोल तोदे, छोटे छोटे थलथल नम हाथ, और गुरू-गम्भीर, छोटी छोटी, निश्चल टागें। ये महानुभाव दवी आवाजो में वोलते थे, कृपापूर्ण अन्दाज़ में चारो ओर अपनी मुसकानो की वर्षा करते थे, ताश के पत्तो को वहुत निकट एकदम अपनी कमीज़ो के अग्रभाग से सटाकर थामते थे, और जव वे तुरुप चलते तो अपने ताशो को मेज़ पर पटकते नही थे, वल्कि—इसके प्रतिकूल—लहराते हुए उन्हे मेज के हरे कपडे पर तैराते थे, और एक हल्की तथा अलकारिक ध्वनि के साथ जीत के पैसे सभालते थे।

वाकी सब लोग सोफो पर वैठे थे, या टुकडियो के रूप में दरवाजो अथवा खिडकियो के पास हिलगे थे। स्त्रियो जैसी शकल-सूरत के एक महानुभाव—जो अब युवा नही रहे थे—एक कोने में खडे काप रहे थे, शरमा-सकुचा रहे थे और घडी की अपनी सील को, अन्यमनस्कता में, अपने पेट पर झुलाते जा रहे थे, हालाकि उनकी ओर कोई नजर तक नही डाल रहा था। कुछ अन्य लोग जो चिडैया-दुमवाले फ्रॉक-कोट तथा चारखाना पतलून पहने थे—उनके ये कोट और पतलून दर्जियो की कार्पोरेशन के अध्यक्ष मास्को के दर्जी फीर्स क्लयूखिन की कारीगरी का नमूना थे—असाधारण सहज भाव और जिन्दादिली के साथ आपस में बतिया रहे थे और वातो के दौरान में, विना किसी प्रयास के, अपने सफाचट तथा चिकने सिरो को इस वाजू से उस वाजू मोड रहे थे। लघु-दृष्टि और सुनहरे वालो वाला वीस वर्ष का एक युवा, सिर से पाव तक काले कपडो से सजा, प्रत्यक्षत सलज्ज, व्यग से मुसकरा रहा था .

मैंने ऊवना शुरू ही किया था कि तभी, अचानक, एक युवक मुझसे आ मिला। वोइनित्सिन उसका नाम था। वह एक छात्र था—विना किसी डिग्री का छात्र। वह अलेक्सान्द्र मिखाइलिच के यहा रहता था किस हैसियत से, यह ठीक से कहना कठिन है। वह एक नम्बर का निशानेवाज था, और कुत्तो को साधना, उन्हे ट्रेन करना जानता था। मै उसे पहले से जानता था, मास्को में मेरा उससे सम्पर्क रह चुका था। वह उन युवको में से था जो हर परीक्षा के मौके पर 'मूक भूमिका का निर्वाह' करते है, मतलव यह कि परीक्षक के सवालो के जवाव में एक शब्द भी मुह से नही निकालते। ऐसे लोगो को 'दढियल छात्रो' की भी सज्ञा दी जाती थी। (आप समझ गये होगे कि यह बहुत पहले की वात है।) उन दिनो यह इस तरह होता। मिसाल के लिए वे वोइनित्सिन का नाम पुकारते। वोइनित्सिन, जो सिर से पाव तक पसीने में नहाया हुआ अपनी जगह पर सीधा-सतर और निश्चल वैठा

रहता था, धीरे धीरे और निरुद्देश्य भाव से अपने इर्द-गिर्द देखता, उठकर खडा होता, हडबडी मे अण्डरग्रेजुएट की अपनी वर्दी के बटन बद करता, और जैसे-तैसे परीक्षक की मेज के किनारे जा खडा होता। "कृपा कर एक प्रश्न-पत्र उठा लीजिये," परीक्षक प्रसन्न भाव से कहता। वोइनित्सिन अपने हाथ फैलाता और कापती उगलियो से प्रश्न-पत्रो के ढेर में टटोलता। "छाटिये नही, मेहरबानी करके," खरखरी आवाज में सहायक-परीक्षक टिप्पणी जडता। वह चिडचिडे स्वभाव का एक वृद्ध था, किसी अन्य विभाग का प्रोफेसर। अभागे 'दढियल छात्र' को देखकर वह अचानक खीज से भर जाता। वोइनित्सिन भाग्य के भरोसे अपने-आपको छोड देता, कोई एक प्रश्न-पत्र उठाता, उसपर अंकित नम्बर दिखाता, और खिडकी के पास जाकर बैठ जाता, जबकि उससे पहले नम्बरवाला छात्र अपने सवालो के जवाब दे रहा होता। खिडकी के पास बैठा वोइनित्सिन एक क्षण के लिए प्रश्न-पत्र से—बदन का एक भी पुट्ठा हिलाये बिना—अपनी नज़र न हटाता, केवल उस समय को छोडकर जब वह—पहले की भाति—धीमे धीमे अपने इर्द-गिर्द नज़र डालता था। आखिर उससे पहलेवाला छात्र छुट्टी पाता और, जैसी भी उसकी योग्यता होती—"ठीक, अब तुम जा सकते हो," या "बेशक ठीक, बहुत ठीक!" तक कहकर उसे विदा कर दिया जाता। इसके बाद वोइनित्सिन को बुलाया जाता। वोइनित्सिन उठकर खडा होता और डग जमा जमाकर मेज़ के पास पहुचता। "अपना प्रश्न-पत्र पढो," वे उससे कहते। वोइनित्सिन पर्चे को दोनो हाथो में लेकर ठीक अपनी नाक तक ऊचा उठाता, धीरे धीरे उसे पढता और फिर अपने हाथो को धीरे धीरे नीचे गिरा लेता। "हा तो कृपया अब जवाब देना शुरू करो," वही प्रोफेसर अलस भाव से कहता, अपनी नज़र को पीछे की ओर फेकता और बाहो को अपने वक्ष पर से ले जाकर बगलो में दबा लेता। श्मशान जैसा सन्नाटा। "अरे, तुम चुप क्यो हो?" वोइनित्सिन को

भी गूगा बना रहता। सहायक-परीक्षक खुदफुदाना शुरू करता। "कुछ कहते क्यो नही!" वोइनित्सिन अब भी वैसे ही मुर्दे की भाति सुन्न खडा रहता। उसके तमाम साथी जिज्ञासा से उसकी मोटी, महीन बाल-छटी, निश्चल गुद्दी की ओर ताकते। सहायक-परीक्षक की आखें जैसे अपने कोटरो से बाहर निकल पडना चाहती। वोइनित्सिन से वह निश्चित रूप में घिन्ना उठता। "ओह, यह अजीब तमाशा है, सच!" दूसरा परीक्षक अपना मत प्रकट करता। "गूगे की भाति क्यो खडे हो? बोलो, क्या तुम्हे जवाब नही मालूम? बोलो, न हो तो यही कह दो!" —"मुझे दूसरा प्रश्न-पत्र लेने की अनुमति दें," अभागे के मुह से भरभरायी-सी आवाज़ निकली। प्रोफेसरो ने एक-दूसरे की ओर देखा। "अच्छी बात है, लो, उठा लो," प्रमुख परीक्षक ने हवा में हाथ हिलाते हुए जवाब दिया। वोइनित्सिन ने फिर एक पर्चा उठाया, फिर खिडकी के पास गया, फिर मेज़ के पास आकर खडा हुआ, और फिर श्मशान की भाति सन्नाटा छाया रहा। सहायक-परीक्षक तो जैसे उसे ज़िन्दा ही निगल जाता। अन्त में उन्होने उसे विदा कर दिया और उसके नाम के आगे गोल अण्डा बना दिया। आप सोच सकते है कि अब, कम से कम, वह अपना रास्ता नापेगा। लेकिन नही, उसने कतई ऐसा नही किया। वह अपनी जगह पर गया, परीक्षा के अन्त तक वैसे ही निश्चल बैठा रहा, और बाहर निकलते समय कह उठा—"एकदम चौपट!" और उसने समूचा दिन मास्को में इधर-उधर भटकते बिता दिया। बीच बीच में, जब-तब, वह अपना सिर पकडता, और बुरी तरह अपनी भाग्यहीनता को कोसता। वह, कहने की आवश्यकता नही, कोई पुस्तक उठाकर न देखता, और अगले दिन भी फिर उसी कहानी की आवृत्ति होती।

सो यही वह वोइनित्सिन था जो भोज में मुझसे टकरा गया। हमने मास्को के बारे में बाते की, शिकार की चर्चा चलायी।

"अगर आप चाहें तो," सहसा फुसफुसाकर उसने मुझसे

कहा, "इस इलाके के एक नम्बर मसखरे से मैं आपका परिचय करा सकता हू।"

"ज़रूर, कृतज्ञ हूंगा।"

वोइनित्सिन मुझे एक टुइया-से आदमी के पास ले गया जिसके माथे पर के वाल कलगी की तरह उठे हुए थे और मूछे थी। वह कत्थई रग के फ़्रॉक-कोट तथा धारीदार क्रैवट से लैस था। उसका गतिशील और चिडचिड़ा चेहरा, इसमे शक नही, कुशाग्रबुद्धि और क्रोध का सूचक था। उसके होठ, स्थायी रूप से, एक उडती हुई व्यगमय मुस्कान मे वल खाकर रह गये थे। उसकी काली और भिची आखे, उद्धतपन के साथ, वरुनियो की छाव में चमक रही थी। उसकी वगल मे देहात के एक श्रीमन्त खडे थे—चौडे-चकले, मुलायम और मधुर, चीनी और शहद की साकार प्रतिमा, और एकाक्षी। टुइया-से आदमी के मसखरेपन की पेशवाई में यह पहले ही हस पडते थे और खुशी के मारे एकदम जैसे पिघल रहे थे। वोइनित्सिन ने मसखरे आदमी के सामने मुझे पेश किया। प्योत्र पेत्रोविच लुपीखिन उसका नाम था। हमारा परिचय हुआ, प्रारम्भिक शिष्टाचार का हमने आदान-प्रदान किया।

"यह लीजिये, अपने जिगरी दोस्त से आपका परिचय करा दू," चीनी-शहद के पुतले को वाह से खीचते हुए लुपीखिन ने कर्कश आवाज़ में कहा। "अरे आओ, ज्यादा खिचो नही, किरीला सेलिफानिच," उसने फिर कहा, "वे तुम्हे काट नही खायेंगे। हा तो यह लीजिये, इनसे मिलकर आप खुश होगे," वह कहता गया, जवकि परेशानी में पड़े किरीला सेलिफानिच ने लगभग कुछ उतने ही भद्देपन से माथा नवाया जैसे कि उसका पेट गिरनेवाला हो। "यह श्रेष्ठो में श्रेष्ठ महानुभाव हैं। पचास वर्ष की आयु तक उसका स्वास्थ्य ऐसा रहा जैसे कुन्दन। इसके वाद अचानक अपनी आखो का इलाज करने की धुन सवार हुई, नतीजा यह कि एक आख खो वैठे। तव से वह उतनी ही नम्रता

के साथ, अपने किसानो का इलाज कर रहे है। वे भी, इसमें शक नही, उसी आदरभाव से इसका ऋण चुकाते है।"

"कितना विचित्र आदमी है यह!" किरीला सेलिफानिच बुदबुदाया और हस पडा।

"बोलो, मेरे मित्र, अपनी जुबान का कुछ तो जौहर दिखाओ!" लुपीखिन ने फिर कहना शुरू किया। "अरे, वे तुम्हें जज चुन सकते है। अचरज की बात नही, देख लेना, वे तुम्हे जरूर अपना जज बनायेंगे। यो, बिलाशक, तुम्हे अपने दिमाग पर जोर देने की जरूरत नही पडेगी —यह काम तुम्हारे असेसर किया करेगे। क्यो, ठीक है न? लेकिन, फिर भी, तुम्हे अपनी जुबान से तो काम लेना ही पडेगा—भले ही यह काम दूसरो के विचारो को ही अपने मुह से बोलना हो। समझो कि गवर्नर आता है, और पूछ बैठता है—जज हकलाता क्यो है? और वे, मान लो, कहते है, 'लकवे का असर है'।—'ठीक,' वह कहता है—'इसका लहू निकालो।' तब, यह तुम्हे मानना पडेगा। कितनी भद्द होगी तुम्हारी—एकदम बुरी!"

शहद-चीनी का वह पुतला हसी के मारे बिल्कुल लोटपोट हो रहा था।

"देखा आपने, यह हसता है," किरीला सेलिफानिच के धौकनी बने पेट पर हिकारत भरी नजर फेंकते हुए लुपीखिन ने कहना जारी रखा, "और वह हसे क्यो नही?" मेरी ओर मुडते हुए फिर बोला, "खाने को बहुत है, स्वास्थ्य अच्छा है, और बाल-बच्चो के झझट से मुक्त है। इसके किसान रहन नही रखे है—और वह उनकी दवा-दारू करता है—और इसकी घरवाली के दिमाग का पुर्जा ढीला है।" (किरीला सेलिफानिच ने थोडा मुह फेर लिया, जैसे कुछ सुन ही न रहा हो, हालाकि वह अभी भी हस रहा था।) "मैं भी हसता हू, और उधर मेरी घरवाली किसी पटवारी के सग लापता हो जाती है।" (वह बत्तीसी निपोरता है।) "अरे, तो क्या तुम्हे यह नही मालूम?

कुछ न पूछो, मौका देख एक दिन वह उसके सग भाग गयी और मेरे लिए चिट्ठी छोड गयी। 'प्यारे प्योत्र पेत्रोविच,' खत मे उसने लिखा था, 'मुझे माफ करना। प्रेम के वश अपने एक प्यारे के सग मैं जा रही हू..' और पटवारी पर उसके मुग्ध होने का कारण केवल यह था कि वह अपने नाखून नही काटता था और तग मोहरी की पतलून पहनता था। क्यो, तुम्हे अचरज होता है इस पर? 'अजब आदमी है यह,' तुम सोचते होगे, 'सभी कुछ उगल देता है!' लेकिन खुदा रहम करे, हम जैसे देहाती लोग कुछ ज़रूरत से ज्यादा सच कहने के आदी हैं, एकदम लट्ठमार ढंग से। लेकिन चलो, थोडा यहा से खिसक चले हम क्यो भावी जज की बगल में खडे हो ."

उसने मेरी बाह थामी, और हम एक खिडकी के पास खिसक गये।

"यहा मसखरे के रूप में मेरी शोहरत है," बातचीत के दौरान में उसने मुझसे कहा। "लेकिन तुम्हे इसपर विश्वास करने की जरूरत नही। मै केवल खार खाया आदमी हू, और खुले मुह अपनी जलन निकालता हू। इसी लिए मै इतना खुलकर और बिना किसी अटकाव के अपनी बात कहता हू। और यो सच पूछो तो, लाग-लपेट के फेर में मैं क्यो पडू? तिनका-भर भी मै किसी की राय की पर्वाह नही करता, न ही मै कोई अपना उल्लू सीधा करना चाहता हू! मै क्रोध से भरा हू, लेकिन इससे क्या? क्रोध से भरे आदमी को कम से कम, तेज़ दिमाग की कोई ज़रूरत नही। और तुम विश्वास नही करोगे कि यह कितनो ताज़गी प्रदान करता है और नही तो अब अपने इन मेज़बान को ही लो! देखो न, क्या इधर से उधर लपक-झपक रहा है? आखिर किस लिए? बाप रे, किस तरह अपनी घडी को बराबर देखे जा रहा है, मुसकरा रहा है, पसीना इसका चू रहा है, चेहरे को गम्भीर बनाये है और हम सबको भोज की आस मे भूखा मार रहा है! है न अद्भुत! असली दरबारी श्रीमन्त! अरे देखो, देखो, वह फिर दौड रहा है—एकदम चौकडी भरता हुआ—देखो!"

और लुपीखिन कर्कश हसी हसा।

"अफसोस इतना ही है कि स्त्रिया यहा नही हैं," गहरी उसास छोडते हुए उसने फिर कहना शुरू किया—"यह चिर-कुमारो की पार्टी है, वरना आपका यह दास रग में आ गया होता। अरे देखो, देखो," सहसा उसने चिल्लाकर कहा, "वह प्रिन्स कोज़ेल्स्की पधार रहे हैं—वही जिनका कद लम्बा है, दाढी से सुशोभित, और पीले दस्ताने पहने हुए। देखते ही पता चल जाता है कि विदेश से आये हैं . और हमेशा ऐसे ही देर करके आते हैं। और वह, सच कहता हू, उतने ही कुन्द दिमाग़ है जितने कि किसी सौदागर के घोडे, और तुम देखना, किस दयालुतापूर्ण अन्दाज़ से वे हम जैसे छोटे लोगो के साथ बातें करते हैं, किस उदारतापूर्ण अन्दाज़ में वह हमारी भूखी मा-बेटियो की नफासत पर मुसकराने की कृपा करते हैं! और कभी कभी वह हसी-दिल्लगी भी करते हैं, बावजूद इसके कि वह थोडी देर ही यहा टिकेगे, और उनकी हसी-दिल्लगी—ओह! एकदम ऐसा मालूम होता है जैसे कुठित चाकू से किसी रस्सी को काटने की कोशिश की जा रही हो। वह मुझे सहन नही कर सकते अच्छा तो यह लो, मैं उनका आदाब बजा लाऊ!"

और लुपीखिन प्रिन्स से मिलने लपक गया।

"वह देखो, उधर, वह मेरा निजी दुश्मन चला आ रहा है," एकाएक मेरे पास आकर उसने कहा, "वह मोटा थलथल आदमी, गेहुवा रग, बाल सूअर की भाति सिर पर खडे हुए, वही जो टोपी अपने हाथ में दबोचे दीवार के सहारे रेग रहा है और भेडिये की भाति घूर घूरकर चारो ओर ताक रहा है। इसके हाथो अपना एक हजार का घोडा चार सौ रूबल में मैंने बेचा था, और इस काठ के उल्लू को अब पूरा अधिकार है कि मुझे घृणा की दृष्टि से देखे। हालाकि इसका दिमाग हर घडी घास चरा करता है, खास तौर से सुबह के समय चाय से

पहले, या भोजन के बाद, इस हद तक कि अगर तुम उससे 'नमस्ते!' कहो तो वह जवाब में कहेगा, 'क्या है?' और वह देखो, जेनरल चला आ रहा है," लुपीखिन कहता गया, "गैरफ़ौजी जेनरल, अवकाश-प्राप्त और दीवालिया जेनरल। इसके एक लड़की है, चुकन्दर की चीनी से बनी और एक फैक्टरी जिसे कण्ठमाला का रोग है ओह, माफ करना, मैं भी क्या उलटी बात कह गया.. लेकिन छोडो, मतलब तो तुम समझते ही हो। ओहो, यह इमारती नक्शे बनानेवाला भी यहा आ धमका! जर्मन, मूछदार, और धंधे के नाम कोरा, कुछ नही जानता—अजीब बात है! यों, सच पूछो तो, इसे अपने धंधे को जानने की ज़रूरत भी क्या है, जब तक कि घूस का बाज़ार गर्म है और हमारे समाज के स्तम्भो की रुचि के मुताबिक हर कहीं स्तम्भ खड़े करना वह जानता है!"

लुपीखिन फिर हसा लेकिन तभी अचानक, इस छोर से उस छोर तक सारे हाल में हलचल की एक लहर-सी दौड गयी। बडा रईस आ पहुंचा था। मेज़बान लपककर ड्योढी में जा पहुचा। उसके पीछे घराने के कुछ अन्य लग्गू सदस्य तथा उत्साही मेहमान भी दौड चले। शोरशराबे के साथ बातचीत ने धीमी सुहावनी चर्चा का रूप धारण कर लिया, जैसे वसन्त के दिनो में मधु-मक्खिया अपने छत्तो में भनभना रही हों। केवल मुहज़ोर लुपीखिन और शानदार भौरे कोज़ेल्स्की ने अपना स्वर नीचा नही किया और आखिर, रसराज भी आ विराजा—महान विभूति ने प्रवेश किया। उससे मिलने के लिए हृदय उछले, बैठे हुए आकार उठे, यहा तक कि लुपीखिन से घोडा सस्ते दाम खरीदनेवाले महानुभाव की ठोड़ी भी अपने वक्ष से आ लगी। महान विभूति अपनी महानता को बेजोड ढग से ऊचा उठाये थे—वह अपने सिर को अभिवादन करने के अन्दाज़ मे पीछे की ओर फेंकते, अनुमोदन में दो-चार शब्द मुह से निकालते, विलम्बित गुनगुनी आवाज़ में हर शब्द आ-आ से शुरू करते हुए। विक्षोभ के साथ, जैसे निगल जाना

चाहते हो, उन्होने प्रिन्स कोजेल्स्की की दाढी की ओर ताका, और फैक्टरी तथा एक लडकी के बाप दीवालिया गैरफौजी जेनरल के आगे अपने बायें हाथ की तर्जनी उगली पेश की। कुछ मिनट बाद—जिनके दौरान में महान विभूति ने दो बार इस बात पर खुशी प्रकट की कि भोज के लिए ऐसी कुछ देर से वह नही आया—सारी मण्डली बाकाइदगी से भोज के कमरे में दाखिल हुई। बडी नाकवाले सबसे आगे।

पाठको के सामने यह सब वर्णन करने की ज़रूरत नही कि महान विभूति को किस प्रकार उन्होने गैरफौजी जेनरल तथा जिले के मारशल के बीच सबसे महत्वपूर्ण स्थान पर बैठाया। मारशल महोदय चेहरे से आज़ाद और रोबदार मालूम होते थे, और उनकी कमीज़ का कलफदार अग्रभाग, उनकी वास्कट का फैलाव, और फ़ासीसी सूघनी से भरी उनकी गोल डिबिया भी उतनी ही रोबदार थी। न ही इस बात का वर्णन करने की ज़रूरत है कि मेजबान किस प्रकार लट्टू की तरह चक्कर काट रहे थे, इधर से उधर लपक रहे थे, आडम्बर कर रहे थे और मेहमानो पर खाने के लिए ज़ोर दे रहे थे, आते आते महान विभूति की पीठ पर मुसकान न्योछावर कर रहे थे, और स्कूली बच्चो की भाति छिपकर कोने में शोरबे की तश्तरी या गोश्त के कतले उतावली के साथ निगल रहे थे, किस प्रकार बटलर फूलो से सजायी हुई गज़-भर लम्बी मछली ले आया और किस प्रकार वर्दी से लैस देखने में कठोर और उदास प्यादे हर महानुभाव को शराब हाजिर कर रहे थे—कभी मलागा, कभी खुश्क मदिरा, और यह कि करीब करीब सभी कुलीन, खास तौर से वे जो बडी उम्र के थे, कुछ ऐसे अन्दाज़ में मानो मजबूरन अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हो, गिलास के बाद गिलास ढाल रहे थे, और सबसे अन्त में यह कि किस प्रकार वे शैम्पेन की बोतलो के काग उडा रहे थे और शुभ-कामनाओं के साथ गिलासो को खनका रहे थे। ये सब बाते ऐसी नही जिनसे पाठक खूब अच्छी तरह से परिचित न हो। लेकिन जो चीज मुझे सबसे

उल्लेखनीय मालूम हुई, वह एक चुटकुला था जिसका वर्णन खुद महान विभूति ने किया था और जिसे सबने, आह्लादपूर्ण खामोशी के साथ, सुना था। किसी ने—अगर मैं भूलता नहीं तो फटेहाल जेनरल ने जो आधुनिक साहित्य से परिचित था—खास तौर से सभी पुरुषों पर और युवा लोगो पर खास तौर से, स्त्रियों के प्रभाव का जिक्र किया। "हा, हा," महान विभूति ने स्वर में स्वर मिलाया, "यह सच है। लेकिन युवा लोगों को कड़ी निगरानी में रखना चाहिए, नहीं तो—बहुत सम्भव है कि वे हर पेटीकोट को देखकर जामे से वाहर होना शुरु कर दें।" (बाल-सुलभ खुशी की मुस्कान से सभी मेहमानो के चेहरे खिल उठे, और एक महानुभाव की आखे तो एकदम कृतज्ञता से चमकने लगी।) "कारण, युवा लोग जाहिल होते है।" (महान विभूति, सम्भवत अधिक रोब डालने के लिए, कभी कभी प्रचलित परिपाटी से भिन्न रूप में शब्दों के उच्चारण का प्रयोग करते थे।) "मिसाल के लिए मेरे लडके इवान को ही लो," वह कहते गये, "वह मूर्ख अभी केवल उन्नीस ही साल का तो है, लेकिन एकवारगी वह मेरे पास आया और बोला, 'मै शादी करना चाहता हू, पिताजी'। मैंने उसे वताया कि वह पागल है, कहा कि पहले उसे सरकारी नौकरी में लगना चाहिए। वस, फिर क्या था, उसने हाय-तोवा की, आसू वहाये, लेकिन मैं मेरे साथ कोई .." (ऐसा मालूम होता था जैसे 'कोई' शब्द गले से ज्यादा उनके पेट में से निकल रहा हो। वह रुक गये और शान के साथ अपने पडोसी पर—जेनरल पर—उन्होने नजर डाली, अपनी भौंहो को इतना ऊचा चढाते हुए कि कोई सोच भी नही सकता था। गैरफौजी जेनरल ने वडी मृदुता से सिर हिलाया, और फिर सहसा अपनी वह आख मिचमिचाने लगा जो महान विभूति की ओर थी।) "और क्या आप कल्पना कर सकते है?" उसने फिर कहना शुरू किया, "अव वह खुद मुझे लिखता है, और धन्यवाद देता है कि नादानी के दिनो मैंने उसे ठीक

रास्ते पर चलाये रखा। यह है काम करने का तरीका।" सारे के सारे मेहमान, विलाशक, वक्ता से पूर्णतया सहमत थे, और उससे मिले सुख तथा सीख से एकदम खुश नजर आते थे। भोजन के बाद सब के सब उठे और खूब चहचहाते हुए, जैसे इस मौके के लिए स्वच्छन्द हों लेकिन अदब-कायदे के साथ, दीवानखाने में दाखिल हुए। वहा पहुचकर वे ताश की मेजो पर जम गये।

जैसे-तैसे मैंने साझ तक का समय व्यतीत किया और अपने कोचवान को अगली सुबह पाच बजे गाडी तैयार रखने का आदेश देकर मैं अपने कमरे में चला गया। लेकिन उसी दिन, भाग्य से, एक अन्य शानदार आदमी से मेरा परिचय होना बदा था।

मेहमान काफी सख्या में मौजूद थे, इसलिए किसी को भी अकेला सोने का अलग कमरा नही मिला था। अलेक्सान्द्र मिखाइलिच का बटलर मुझे जिस छोटे, हरियाली-मायल और सीलन भरे कमरे में लिवा ले गया, उसमें एक मेहमान पहले से ही मौजूद था, एकदम कपडे उतारे हुए। मुझे देखते ही उसने जल्दी से बिस्तरे में डुबकी लगायी, नाक तक अपने-आपको ढका, परो के मुलायम बिस्तर पर थोडा कसमसाया और चुपचाप पड रहा। वह रात की सूती टोपी पहने था और उसकी गोल झालर के नीचे से बराबर बाहर का अता-पता ले रहा था। मैं दूसरे बिस्तर के पास गया (कमरे में दो ही बिस्तर थे) कपडे उतारे और सीले हुए बिछावन पर पड रहा। मेरे पडोसी ने बिस्तर पर करवट बदली। मैंने उससे गुड-नाइट की।

आध घटा गुजर गया। बहुत कोशिश करने के बाद भी मुझे नीद नही आयी। एक के बाद एक, निरुद्देश्य और धुधले विचार एक अडिग और एकरस क्रम में, जल निकालनेवाली मशीन में लगी डोलचियो की भाति, मेरे मन में घूमते रहे।

"लगता है, तुम्हे नीद नही आयी, क्यो?" मेरे पडोसी ने कहा।

"नही, तुम देख ही रहे हो," मैंने जवाब दिया। "और उनीदे तो खुद तुम भी नही मालूम होते—क्यो, ठीक है न?"

"उनीदा तो मैं कभी नही होता।"

"तो फिर?"

"ओह, जाने कैसे। बस, बिस्तर पर पडा रहता हू, पडा रहता हू, और फिर नीद आ जाती है।"

"लेकिन नीद लगने से पहले तुम बिस्तर पर जाते ही क्यो हो?"

"और नही तो मैं क्या करू, तुम्ही बताओ?"

अपने पडोसी के इस सवाल का मैंने कोई जवाब नही दिया।

"आश्चर्य होता है," थोडी खामोशी के बाद उसने फिर कहना शुरू किया, "कि यहा पिस्सू क्यो नही हैं? अगर यहा पिस्सू न होंगे तो फिर और कहा होगे, समझ में नही आता।"

"उनका अभाव शायद तुम्हे खल रहा है," मैंने टिप्पणी की।

"नही, मुझे उनका अभाव खल नही रहा। लेकिन मैं हर चीज़ को क्रमबद्ध देखना पसद करता हू।"

"ओह," मैंने मन में कहा, "क्या शब्द इस्तेमाल करता है।"

मेरा पडोसी फिर खामोश हो गया।

"क्या तुम मुझसे शर्त लगाना पसद करोगे?" उसने फिर कहा। इस बार उसकी आवाज़ अपेक्षा से अधिक तेज़ थी।

"किस बात पर?"

मुझे वह मज़ेदार आदमी मालूम हुआ।

"हू-ऊ... किस बात पर? अच्छा तो सुनो—मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि तुम मुझे मूर्ख समझते हो।"

"नही तो," मैं बुदबुदाया, चकित और स्तब्ध।

"एकदम निरक्षर, स्तेप का गंवार। दोनों, सच सच

"मुझे तुम्हे जानने का कभी सौभाग्य नही मिला," मैंने जवाब दिया, "जाने कैसे तुमने यह अन्दाज़ लगाया .."

"क्यों, तुम्हारा लहजा ही इसके लिए काफी है। कितनी लापर्वाही से तुम मुझे जवाब देते हो। लेकिन तुमनें जैसा समझा है, वैसा मैं कतई नही हू।"

"अरे, सुनो तो.. "

"नही, सुनो तुम। पहली बात तो यह कि मैं भी वैसी ही फ्रेंच बोल लेता हू जैसी कि तुम, और जर्मन तो तुम से भी अच्छी तरह। दूसरे यह कि मैं तीन साल विदेशो में बिता चुका हू, अकेले बर्लिन में ही मैं आठ महीने तक रहा था। और माननीय श्रीमान, हीगल का मैंने अध्ययन किया है, ग्येटे मुझे जुबानी याद है। इसके अलावा एक लम्बे अर्से तक एक जर्मन प्रोफेसर की लडकी से मैं प्रेम करता रहा, और अपने देश में तपेदिक की मरीज़ एक युवती से मेरी शादी हुई। उसके सिर के बाल सफाचट थे, लेकिन व्यक्तित्व उसका शानदार था। सो मैं तुम्ही लोगो की जात का हू, स्तेप का गवार नही जैसा कि तुम सोचते हो। मैं भी चिन्ताशील आदमी हू, और मुझमें ऐसा कुछ नही है जो सतही कहा जा सके।"

मैंने अपना सिर उठाया और दुगने ध्यान से इस अजीब जीव की ओर देखा। लैम्प की धुधली रोशनी में उसका नाक-नक्शा पहचानना मुश्किल था।

"ओह, तो तुम अब मेरी ओर देख रहे हो," अपनी रात की टोपी को सीधा करते हुए वह कहता गया, "और शायद तुम मन ही मन सोच रहे होगे, 'इस आदमी पर कैसे आज मेरी नज़र नही गयी?' मैं तुम्हें बताता हू कि क्यो मैं तुम्हारी नजर से ओझल रहा। इसलिए कि मैं ऊची आवाज़ में नही बोला, इसलिए कि मैं दरवाजे के पीछे खडा दूसरो की ओट में छिपा रहा, इसलिए कि जब बटलर मेरे पास से गुज़रता था तो अपनी कोहनियो को मेरे वक्ष के स्तर पर उठा लेता था . और यह

सब किस लिए, क्यो यह सब होता है? इसके दो कारण है। पहला, मै गरीब हू, और दूसरे, मै विरक्त हो चुका हू बोलो, सच सच बताओ, क्या तुमने मुझे देखा था, क्या मुझपर तुम्हारी नजर गयी थी?"

"सचमुच, मुझे यह सौभाग्य नही .."

"वही तो, वही तो," उसने बीच मे ही टोका, "मै पहले ही जानता था।"

वह उठ बैठा और अपनी बाहो को उसने जोड लिया। उसकी टोपी की विलम्बित छाया दीवार पर से मुडकर छत तक फैली हुई थी।

"और यह मानने में भी तुम्हे अब कोई उज्र नही होना चाहिए," एकाएक कनखियो से मेरी ओर देखते हुए उसने कहा, "कि मै तुम्हे कुछ अजीब, मौलिक, जैसा कि कहा जाता है, जीव मालूम होता हू—या फिर तुम मुझे इससे भी बुरा समझते हो—शायद यह कि मै अपने-आपको मौलिक जताने का प्रयत्न कर रहा हू।"

"मै फिर वही दोहराना चाहता हू कि मै तुम्हे नही जानता "

क्षण-भर के लिए उसने अपनी आखे नीची कर ली।

"पता नही कि मै तुमसे—एकदम अजनबी आदमी से—इस तरह अचानक क्यो बाते करने लगा? भगवान, केवल भगवान ही यह जानता है!" (उसने एक उसास भरी।) "इसलिए नही कि हम दोनो की आत्माओ में सहज साम्य है! हम दोनो—तुम और मै—प्रतिष्ठित जाति के लोग है, यानी अहवादी है। न तुम और न मै, दोनो मे से कोई भी एक-दूसरे से कतई लगाव नही रखता। क्यो, ठीक है न? लेकिन हम दोनो मे से किसी एक को नीद भी नही आ रही है—न तुम्हे, न मुझे। सो क्यो न बातचीत ही की जाय? मेरा जी चाहता है, और विरले ही मेरे साथ ऐसा होता है। आप जानो, मै सकोची हू। सकोची इसलिए नही कि मै देहात का रहनेवाला हू, मेरी कोई हैसियत नही है और यह कि मै गरीब हू। नही, बल्कि इसलिए कि मै भयानक रूप में स्वाभिमानी

हू। लेकिन कभी कभी, जब परिस्थितिया अनुकूल होती है, पहले से अनजाने और अनचीते मौको पर ऐसा भी होता है कि मेरा सकोच एकदम गायब हो जाता है, मिसाल के लिए जैसा कि इस समय। इस समय चाहे तुम मुझे लामा महान के सामने मुह दर मुह खडा कर दो, उससे एक चुटकी सुघनी मागने में मुझे जरा भी सकोच नही होगा। लेकिन छोडो, शायद तुम्हे नीद आ रही है?"

"बिल्कुल नही," मैने तुरत जवाब दिया, "उलटे तुम से बातचीत करने में आनन्द आ रहा है।"

"यानी मै तुम्हे दिलचस्प मालूम होता हू, यही तुम कहना चाहते हो न! चलो, अच्छा है। और सो, मै तुम्हे बता दू, वे मुझे यहा मौलिक कहते है। हा वे यही मुझे कहते है, गपशप के दौरान में जब कभी यो ही मेरा जिक्र आ जाता है। मेरी हालत को लेकर कोई खास परेशान नही होता। वे सोचते है कि इससे मुझे चोट लगेगी। ओह, मेरे भगवान! अगर वे केवल यह जानते ओह, ठीक यही तो मेरा दुर्भाग्य है, कि मुझमें कतई कुछ मौलिकता नही है—बिल्कुल नही है, सिवा ऐसी अनोखी बातो के जैसी कि, मिसाल के लिए, इस समय मै तुमसे कर रहा हू। लेकिन ऐसी अनोखी बातो का मूल्य क्या है, कुछ भी नही। यह मौलिकता है, लेकिन सबसे सस्ती, और सबसे निचले दर्जे की।"

मुडकर उसने मेरी ओर मुह किया, और हवा में अपने हाथ हिलाये।

"माननीय श्रीमान," उसने जोरो से कहा, "मेरा यह मत है कि इस धरती पर, नियमत, जीवन केवल उन्ही के लिए कोई मानी रखता है जो मौलिक है। केवल उन्हे ही जीवित रहने का अधिकार है। Mon verre n'est pas grand, mais je bois dans mon verre*, किसी ने कहा है। सो देखा आपने," स्वर को धीमा करते हुए वह बोला,

---

*मेरा प्याला बडा नही, लेकिन पीता हू मै अपने ही प्याले में।

"फ्रेंच का मेरा उच्चारण कितना अच्छा है। लेकिन इससे किसी को क्या गरज़ अगर किसी का मस्तिष्क विशाल है, अगर कोई हर चीज़ समझता और बहुत कुछ जानता है, अगर कोई ज़माने के साथ चलता है पर उसका कोई व्यक्तित्व नही! उसका भी दिमाग घिसी-पिटी आम कहावतो से भरा पड़ा है, बस। उससे औरो को क्या फायदा? नही, इससे तो मूर्ख होना ही अच्छा, लेकिन अपने खास ढंग से। आदमी मे उसकी एक अपनी रमक होनी चाहिए, खास अपनी रमक। यही मुख्य चीज़ है। लेकिन यह न समझना कि इस रमक के मामले में मै किसी वहुत ही खास चीज पर ज़ोर देता हू। खुदा न करे! जिस तरह के मौलिक लोगो से मेरा मतलब है, वैसे अनगिनत मिल जायेगे। चाहे जिधर नज़र डालो – मौलिकता दिखाई देगी। हर जीवित आदमी मौलिक होता है। लेकिन मेरा उनमें शुमार नही हुआ!"

"जो हो," थोडी खामोशी के वाद वह कहता गया, "अपनी युवावस्था में लोगो को कैसी कैसी आशाए मुझमें थी। विदेश-यात्रा से पहले, और वहा से लौटने के वाद भी – शुरू शुरू में–अपने व्यक्तित्व को कितना मूल्यवान मै समझता था, कितनी ऊची राय थी मेरी अपने वारे में! हा तो विदेश में सदा सावधान रहा, सवसे अलग-थलग रहा, जैसा कि मेरे जैसे आदमी के लिए मौजू था जो सदा खुद अपने-आप चीजो को आर-पार देखने का आदी हो और अन्त में मालूम यह हो कि उसने कुछ भी नही देखा!"

"मौलिक, मौलिक!" शिकायत के अन्दाज़ में अपने सिर को हिलाते हुए वह कहता गया। "वे मुझे मौलिक कहते है। लेकिन असल में निकलता यह है कि दुनिया में एक भी जीव ऐसा नही है जो तुम्हारे इस विनम्र सेवक से कम मौलिक हो। यहा तक कि मेरा जन्म भी किसी अन्य की नकल पर हुआ होगा। भगवान की कसम! ऐसा मालूम होता है कि मेरा जीने का ढंग भी उन विभिन्न लेखको की नकल है जिनका

मैं अध्ययन कर चुका हू। मै खून-पसीना एक करता हू। मैंने अध्ययन किया है, प्रेम किया है, और शादी की है, लेकिन सच पूछो तो अपनी निजी इच्छा से नही—जैसे कोई कर्त्तव्य सिर पर आ पडा जिसे पूरा किया जा रहा है, अथवा भाग्य का लेखा अपना रग दिखा रहा है, यह कौन जाने?"

उसने अपने सिर से रात की टोपी खीचकर उतारी और उसे बिस्तर पर पटक दिया।

"क्या तुम मेरे जीवन की कहानी सुनना पसद करोगे?" दो-टूक आवाज में उसने मुझसे पूछा, "या कहो तो कुछ घटनाए ही सुना दू?"

"जरूर सुनाओ।"

"या, नही, अच्छा यह होगा कि मै तुम्हे अपने विवाह का किस्सा सुनाऊ—यह कि कैसे मेरा विवाह हुआ। तुम जानते हो, विवाह एक महत्त्वपूर्ण चीज है, एक ऐसी कसौटी जिस पर समूचा मानव परखा जाता है—इसमें, जैसे कि आईने में .. लेकिन छोडो, यह काफी घिसी-पिटी तुलना है अगर इजाजत हो तो थोडा हुलास ले लू।"

उसने अपने तकिए के नीचे से सुघनी की एक डिबिया निकाली, उसे खोला, और खुली हुई डिबिया को फहराते हुए फिर कहना शुरु किया।

"माननीय श्रीमान, अपने-आपको जरा मेरी स्थिति में रखकर देखिये और खुद इस बात का फैसला कीजिये कि क्या, हा क्या, कृपा कर मुझे यह बताइये कि हीगल के ज्ञान-कोष से मेरा क्या भला हो सकता था? उस ज्ञान-कोष में और रूसी जीवन में, आप ही बताइये, क्या साम्य है? और यह कि आपकी राय मे, उसे अपने जीवन में कैसे काम में लाया जा सकता है, और उसे ही नही—केवल उस ज्ञान-कोष को ही नही—बल्कि सामान्यत समूचे जर्मन दर्शन को। बल्कि मै तो और भी आगे बढकर कहना चाहूगा—खुद ज्ञान-विज्ञान को?"

आवेग के साथ वह बिस्तर पर उछला और गुस्से से अपने दातो को पीसता हुआ मन ही मन कुछ बुदबुदाया–

"यह बात है, यह बात है . तब विदेशो की धूल छानने मैं क्यो गया? अपने ही घर मे बैठकर चारो ओर के जीवन का, वहा का वही, अध्ययन क्यो नही किया? उसकी जरूरतो और भविष्य का तब शायद मैं कोई ओर-छोर पा सकता, अपने लक्ष्य को स्पष्टता से समझ सकता। लेकिन," वह कहता गया, अपने स्वर को कुछ इस तरह बदलते हुए जैसे दबे दबे अपने को सही ठहराने का प्रयत्न कर रहा हो, "तुम ही बताओ जिसे कोई द्रष्टा अभी तक किसी पुस्तक मे नही अकित कर सका, उसका कैसे अध्ययन किया जाय? बेशक, मुझे उससे–मतलब रूसी जीवन से–सीखकर खुशी होती। लेकिन वह तो गूगा है, बेचारा! वह जैसा है, उसे उसी तरह होना चाहिए। लेकिन यह मेरे बस की बात नही। मुझे तुक चाहिए, निष्कर्ष चाहिए। यह लो, निष्कर्ष भी यहा मौजूद है–मास्को के पडितो की वाणी सुनो–क्या कोयल-राग अलापते है वे? क्यो, ठीक है न? और यही अफसोस की बात है, यह कि वे कूर्स्क की कोयल की भाति सुर अलापते हैं, इस तरह बाते नही करते जैसे कि साधारण लोग करते हैं। और मैंने सोचा, बहुत बहुत सोचा–'विज्ञान, विलागक,' मैंने सोचा, 'सब जगह एक-सा है, और सत्य सदा एक-सा है'। सो मैंने बघना-बोरिया उठाया और भगवान का नाम लेकर चल पडा–विदेशो की धूल मैंने छानी, नास्तिको के बीच मैं घूमा लेकिन हुआ क्या? युवावस्था और घमड का जोर था और मैं, आप जानो, समय से पहले मोटियाना नही चाहता था, हालाकि लोग इसे स्वास्थ्य की निशानी मानते हैं। यो, सच पूछो तो, यह कुदरत की बात है। अगर वह तुम्हारी हड्डियो पर मास न चढाये, तो चर्बी कहा से चढेगी!"

"लेकिन ओह," क्षण-भर सोचने के बाद उसने फिर कहा, "यह सब मैं क्या कहने लगा। मैंने तो तुम्हे अपने विवाह का किस्सा सुनाने

का वायदा किया था। अच्छा, सुनो। सबसे पहले तो तुम्हें यह बताना जरूरी है कि मेरी पत्नी अब जीवित नही है। और दूसरे . दूसरे अपनी युवावस्था के बारे में तुम्हे कुछ जरूर बताना चाहिए, वरना तुम कुछ समझ नही पाओगे लेकिन ऐसा तो नही कि तुम्हे नीद आ रही हो?"

"नही, मुझे नीद नही आ रही।"

"तब अच्छा है। अरे सुनो बराबरवाले कमरे में कितने भद्दे ढग से मि० कान्ताग्रयुखिन खर्राटे भर रहा है! मेरे माता-पिता छोटी मिल्कियत के आदमी थे। मैंने कहा माता-पिता -- इसलिए कि परिपाटी के अनुसार मेरे एक पिता भी था। पिता की मुझे कुछ याद नही। सुना है कि वह सकुचित विचारवाला आदमी था। लम्बी नाक, चितयल और लाल बाल। अपनी नाक की एक ही नासिका में वह हुलास लेने का आदी था। मेरी मा के शयनकक्ष में उसकी एक तस्वीर टगी रहती थी, और उसमें वह कानो तक खिचा काला कालर लगाये लाल वर्दी पहने बहुत ही विकराल मालूम होता था। वे मुझे उस चित्र के सामने ले जाकर कोडो से पीटते थे, और मेरी मा ऐसे मौको पर उसकी ओर इशारा करते हुए हमेशा कहा करती थी, 'अगर वह होता तो तुम्हारी और भी ज्यादा चमड़ी उधेडता!' अब आप ही सोचिये कि इसका कितना उत्साहवर्द्धक असर मुझपर पडता होगा। भाई-बहिन मेरे कोई नही था, यानी यह, अगर एकदम ठीक जानना चाहो तो, किसी जमाने में मेरा एक भाई था जिसके सिर में कोई अग्रेजी रोग था, लेकिन वह जल्दी ही मर गया। और सच, ताज्जुब होता है यह देखकर, कि यह इग्लिस्तान का रोग कूर्स्क प्रान्त के श्चिग्री जिले में किस लिए आ पहुचा? लेकिन छोडो, यह बेमतलब की बात है। स्तेप की एक जमीदारिन के से उत्साह के साथ मेरी मा ने मेरी शिक्षा-दीक्षा का बीडा उठाया, और मेरे जन्म के शुभ दिन से लेकर सोलह वर्ष की आयु तक वह इसमें जुटी रही .. क्यो, सुन रहे हो न?"

"हा हा, कहे जाओ।"

"अच्छी बात है। हा तो जब मैं सोलह वर्ष का हुआ तो मेरी मां

ने फ़्रेंच पढ़ानेवाले मेरे शिक्षक को तुरत बरखास्त कर दिया। वह जर्मन था, नाम फिलिपोविच, नेजिन का यूनानी। उसे बरखास्त करने के बाद वह मुझे मास्को लिवा ले गयी, विश्वविद्यालय में मुझे भर्ती करा दिया, और मुझे मेरे चाचा के हाथो में सौंपकर खुद भगवान की शरण में चली गयी। मेरे चाचा कोल्तून-बाबूर अटार्नी थे और उनकी सुख्याति केवल श्चिग्री जिले तक ही सीमित नही थी। मेरे चाचा अटार्नी कोल्तून-बाबूर ने, परिपाटी के अनुसार आखिरी पाई तक मुझे लूट लिया—मेरे पल्ले एक पाई नही छोडी। लेकिन यह भी बेमतलब की बात है, मैं फिर भटक गया। हा तो मैंने विश्वविद्यालय में प्रवेश किया, और भला हो मेरी मा का—उसे उचित श्रेय देना ही होगा—कि उसने मेरी ज़मीन काफी मज़बूत बना दी थी, लेकिन मौलिकता का अभाव तब भी नज़र आता था। मेरा बचपन, किसी मानी में भी, अन्य युवा कुलीनो के बचपन से भिन्न नही था। उतने ही बेजान तथा टस तरीके से मैं बडा हुआ था—एकदम जैसे मुलायम कम्बल में लिपटा हुआ। ठीक उतनी ही कम उम्र में मैंने भी कविताओ को ज़बानी पढना और सपनीले अन्दाज़ मे आवारागर्दी करने का आडम्बर शुरू कर दिया . किस लिए?—ओह, सौन्दर्य के लिए . आदि आदि। तो उन्ही की भाति मैंने विश्वविद्यालय में पाव रखा, और तुरत एक मण्डल में शामिल हो गया। वह ज़माना ही दूसरा था लेकिन शायद तुम्हे यह न मालूम हो कि छात्रो का यह मण्डल किस बला का नाम है? मुझे शिलर की याद आती है। उसने कहीं कहा था—

Gefährlich ist's den Leu zu wecken,
Und schrecklich ist des Tigers Zahn,
Doch das schrecklichste der Schrecken
Das ist der Mensch in seinem Wahn!*

---

* सिह को जगाना आपत्ति को बुलाना है,
दुष्कर अति सिह के दातो की गणना है,
किन्तु इन सबसे भयानक और दुष्कर तो
अपने प्रति भ्रम में पडे मानव से लड़ना है।

"लेकिन उसका आशय, आप विश्वास करे, यह नही था। वह कहना चाहता था—"Das ist ein 'मण्डल' in der Stadt Moskau!"*

"लेकिन मण्डल में ऐसी क्या बात थी जो वह तुम्हे इतना भयावह मालूम हुआ?" मैंने पूछा।

मेरे पडोसी ने झपटकर अपनी टोपी को पकडा और उसे नीचे नाक तक खीच लिया।

"मुझे वह क्यो इतना भयावह मालूम हुआ?" उसने ज़ोर के साथ कहा, "तो सुनो, मण्डल का मतलब है सम्पूर्ण व्यक्तिगत विकास पर कुठाराघात। समाज, नारी और जीवन का स्थान यह घिनौना मण्डल लेता है। मण्डल ओह, जरा ठहरो, मै तुम्हे बताता हू कि मण्डल क्या है। मण्डल नाम है एक ऐसे निठल्ले और नीरस सामुदायिक जीवन का जिसके ऊपर भारी महत्त्व तथा युक्तियुक्त क्रियाशीलता का प्रदर्शन करनेवाली तख्ती लगी रहती है। मण्डल में बातचीत—वार्तालाप—की जगह बहसें होती है, निष्फल विवादो में आपको ट्रेन करता है, एक निष्ठ उपयोगी श्रम से आपको दूर खीचता है, लेखक बनने की आप में हविस जगाता है, सच पूछो तो, सारी ताज़गी तथा आत्मा के अछूते उछाह से आपको वचित कर देता है। मण्डल .. भाईचारे और मित्रता की ओट में गदगी और ऊब का वह घर है, सवेदन और खुलेपन के नाम पर गलतफहमियो और झूठी निन्दाओ का वहा तूमार बाधता है। प्रत्येक मित्र को प्राप्त इस अधिकार की बदौलत कि वह, हर समय और हर घडी, अपने साथी की आत्मा के अन्तर्तम कोनो में अपनी गदी उगली डाल सकता है—मण्डल में एक भी जीव ऐसा नही मिलेगा जिसकी आत्मा का रत्ती-भर भी अश निर्मल और अविकृत कहा जा सके। मण्डल में उसी के सामने सब माथा नवाते है जो छिछली, शेखी-भरी और चलती हुई बातो का

---

*यह एक 'मण्डल' है मास्को शहर में।

कोरा है, स्वाभिमान पंडित होता है, समय से पहले बूढा होता है वही तुक्कड़ वहा पूजा जाता है जो कवित्व से शून्य और 'सूक्ष्म' विचारो से लैस होता है। मण्डल मे सत्रह सत्रह वरस के कमसिन छोकरे स्त्रियो और प्रेम के वारे मे इस तरह जुवान के घोडे दौडाते हैं जैसे वहुत वडे जानकार हो, लेकिन जव स्त्रियो के सामने आते है तो गूगे वन जाते है या किताव की भाति वोलते है—और वाप रे, वे वोलते क्या है? मण्डल में ज़ुबान ऐसे चलती है जैसे कतरनी चल रही हो। मण्डल मे वे एक दूसरे की खुफियागीरी करते है, पुलिस अफसरो की भाति. ओह, मण्डल! तू मण्डल नही, वल्कि मत्र फूका हुआ जाल है। जाने कितने भले जीवो को तू गारत कर चुका है!"

"अरे नही, यह तुम वढा-चढाकर कह रहे हो," मैंने टोका।

उस साथी ने खामोशी के साथ मुझपर नज़र डाली।

"हो सकता है, खुदा जाने, तुम्हारी बात शायद सही हो। लेकिन, देखो न, तुम्हारे इस विनम्र सेवक के लिए जीवन में सिवा इसके और रस भी क्या रह गया है—सिवा अतिरजना के। हा तो मास्को में चार साल मैंने इस तरह विताये। मै कह नही सकता, श्रीमान, कि कितनी जल्दी—कितने भयानक रूप में जल्दी—वे दिन गुजरे। उनकी याद हृदय में दुख और झुझलाहट का सचार लिये बिना नही रहती। सुवह उठो तो दिन इस तरह गुज़रता है जैसे बर्फ-गाड़ियो में पहाडी ढलुवानो पर से फिसल रहे हो इससे पहले कि नज़र दौडाने का मौका मिले, नीचे जा पहुचे। साझ हो आती है, और ओघाया-सा प्यादा आपको फ्रॉक-कोट पहनाता नज़र आता है। कपडे पहने, और किसी मित्र के यहा चल दिये। पाइप से धुवां उडाया, गिलासो हल्की हल्की चाय पी, जर्मनी के दर्शन, प्रेम, आत्म के चिरन्तन उल्लास और दीन-दुनिया से दूर अन्य विपयो की चर्चा की। लेकिन मौलिक और मौलिक लोग मुझे वहा भी दिखाई दिये।

"लेकिन उसका आशय, आप विश्वास करें, यह नही था। वह कहना चाहता था—"Das ist ein 'मण्डल' in der Stadt Moskau!"*

"लेकिन मण्डल में ऐसी क्या बात थी जो वह तुम्हे इतना भयावह मालूम हुआ?" मैंने पूछा।

मेरे पडोसी ने झपटकर अपनी टोपी को पकडा और उसे नीचे नाक तक खीच लिया।

"मुझे वह क्यो इतना भयावह मालूम हुआ?" उसने जोर के साथ कहा, "तो सुनो, मण्डल का मतलब है सम्पूर्ण व्यक्तिगत विकास पर कुठाराघात। समाज, नारी और जीवन का स्थान यह घिनौना मण्डल लेता है। मण्डल ओह, जरा ठहरो, मैं तुम्हे बताता हू कि मण्डल क्या है। मण्डल नाम है एक ऐसे निठल्ले और नीरस सामुदायिक जीवन का जिसके ऊपर भारी महत्त्व तथा युक्तियुक्त क्रियाशीलता की प्रदर्शन करनेवाली तख्ती लगी रहती है। मण्डल में बातचीत—वार्तालाप—की जगह बहसें होती हैं, निष्फल विवादो में आपको ट्रेन करता है, एक निष्ठ उपयोगी श्रम से आपको दूर खीचता है, लेखक बनने की आप में हविस जगाता है, सच पूछो तो, सारी ताजगी तथा आत्मा के अछूते उछाह से आपको वचित कर देता है। मण्डल . भाईचारे और मित्रता की ओट में गदगी और ऊब का वह घर है, सवेदन और खुलेपन के नाम पर गलतफहमियो और झूठी निन्दाओ का वहा तूमार बाधता है। प्रत्येक मित्र को प्राप्त इस अधिकार की बदौलत कि वह, हर समय और हर घडी, अपने साथी की आत्मा के अन्ततंम कोनो में अपनी गदी उगली डाल सकता है—मण्डल में एक भी जीव ऐसा नही मिलेगा जिसकी आत्मा का रत्ती-भर भी अश निर्मल और अविकृत कहा जा सके। मण्डल में उसी के सामने सब माथा नवाते हैं जो छिछली, शेखी-भरी और चलती हुई बातो का

---

*यह एक 'मण्डल' है मास्को शहर में।

कोरा है, स्वाभिमान पडित होता है, समय से पहले बूढा होता है वही तुक्कड वहा पूजा जाता है जो कवित्व से शून्य और 'सूक्ष्म' विचारो से लैस होता है। मण्डल मे सत्रह सत्रह वरस के कमसिन छोकरे स्त्रियो और प्रेम के वारे में इस तरह जुवान के घोडे दौडाते है जैसे वहुत बडे जानकार हो, लेकिन जव स्त्रियो के सामने आते है तो गूगे बन जाते है या किताव की भाति वोलते है—और वाप रे, वे बोलते क्या है? मण्डल में जुबान ऐसे चलती है जैसे कतरनी चल रही हो। मण्डल में वे एक दूसरे की खुफियागीरी करते है, पुलिस अफसरो की भाति . ओह, मण्डल! तू मण्डल नही, वल्कि मत्र फूका हुआ जाल है। जाने कितने भले जीवो को तू गारत कर चुका है!"

"अरे नही, यह तुम वढा-चढाकर कह रहे हो," मैने टोका।

उस साथी ने खामोशी के साथ मुझपर नज्र डाली।

"हो सकता है, खुदा जाने, तुम्हारी वात शायद सही हो। लेकिन, देखो न, तुम्हारे इस विनम्र सेवक के लिए जीवन में सिवा इसके और रस भी क्या रह गया है—सिवा अतिरजना के। हां तो मास्को में चार साल मैने इस तरह विताये। मै कह नही सकता, श्रीमान, कि कितनी जल्दी—कितने भयानक रूप मे जल्दी—वे दिन गुजरे। उनकी याद हृदय में दुख और झुझलाहट का सचार लिये बिना नही रहती। सुवह उठो तो दिन इस तरह गुज्रता है जैसे वर्फ-गाडियो में पहाडी ढलुवानो पर से फिसल रहे हो इससे पहले कि नज्र दौडाने का मौका मिले, नीचे जा पहुचे। साझ हो आती है, और ओघाया-सा प्यादा आपको फ़ॉक-कोट पहनाता नज्र आता है। कपडे पहने, और किसी मित्र के यहा चल दिये। पाइप से धुवा उडाया, गिलासो हल्की हल्की चाय पी, जर्मनी के दर्शन, प्रेम, आत्म के चिरन्तन उल्लास और दीन-दुनिया से दूर अन्य विषयो की चर्चा की। लेकिन मौलिक और मौलिक लोग मुझे वहा भी दिखाई दिये।

कुछ लोग चाहे जितनी भी वेतुकी वाते करे और चाहे जितने भी अटपटे बाने मे वे नज़र आय लेकिन उनकी सहज प्रकृति फिर भी उभर ही आती है। केवल मै ही एक ऐसा अभागा था जिसने मुलायम मोम की भाति अपने-आपको ऐसा ढाला कि मेरी तुच्छ जान ने भूलकर भी कभी प्रतिरोध नही किया। इस तरह इक्कीस साल की आयु तक मै पहुच गया। मेरी विरासत, या अधिक सही शब्दो में मेरी विरासत का यह अश जिसे मेरे सरक्षक ने मेरे लिए छोडना मुनासिव समझा था, मेरे अधिकार में आ गयी। उन्मुक्त हुए एक गृह-दास वासीली कुद्र्याशेव के हाथो में मैंने अपनी समूची पैतृक सम्पदा की देख-भाल का काम सौपा और खुद वर्लिन के लिए रवाना हो गया। विदेश में, जैसा कि मै पहले आपको वता भी चुका हू, तीन साल तक रहा। हा तो वहा, विदेश में भी, मै जैसा का तैसा अमौलिक जीव बना रहा। कहने की आवश्यकता नही, कि युरोप के वारे मे, युरोपीय जीवन के बारे मे, वास्तव में मैंने कोई जानकारी हासिल नही की। मै जर्मन प्रोफेसरो को, और जर्मन पुस्तको को, उनके अपने जन्म-स्थान में सुनता और पढता था। बस इतना ही अन्तर था। मै साधुओ की भाति एकाकी जीवन विताता था। अवकाश-प्राप्त रूसी लेफ़्टीनेन्टो के साथ मेरी अच्छी पटती थी। मेरी ही भाति उनपर भी ज्ञान की भूख सवार थी। लेकिन वे हमेशा इतने मन्दबुद्धि होते कि उनका दिमाग कुछ पकड नही पाता था। वाणी के भी वे धनी नही थे। पेंजा के तथा अन्य कृषिप्रधान प्रान्तो के कुन्द दिमाग परिवारो से मेरी दोस्ती थी, कहवाखानो में जाता था, पत्रिकाए पढता था, और साझ को थियेटरों की रौनक बढाता था। देशज लोगो से मेरा वहुत कम वास्ता था। उनसे बात करते मेरी जुवान अटकती थी, और उनमें से किसी को भी मै अपने घर नही बुलाता था, सिवा उन दो या तीन मान न मान मै तेरा मेहमान किस्म के यहूदी जीवो के जो जव देखो तव मुझसे आ टकराते और—भला हो मेरे रूसी भोलेपन का—मुझसे वरावर उधार झटक ले जाते। अन्त में, एक विचित्र सयोग

ही इसे कहिये, अपने प्रोफेसरो में से एक के घर मै जा लगा। यह इस प्रकार हुआ। मै एक पाठ्यक्रम मे अपना नाम लिखाने उस प्रोफेसर के पास गया था। उसने, एकदम अचानक, अपने यहा एक सध्या-भोज में शामिल होने का निमत्रण दे दिया। उसके दो लडकिया थी, लगभग सत्ताईस वर्ष की, नाटी और गुदगुदी – भगवान की उनपर कृपा हो – राजसी नाक, लच्छेदार घुघराले वाल, हल्की नीली आखे, और लाल हाथ जिनके नाखून हाथीदात की भाति सफेद थे। इनमे एक का नाम था लिनखेन और दूसरी का मिनखेन। मैने प्रोफेसर के यहा जाना शुरू कर दिया। यहा आप यह और जान ले कि प्रोफेसर एकदम वुद्धू तो नही, लेकिन कुछ हक्का-वक्का-सा था। जब वह पढाता था तो काफी सुसम्वद्ध रूप मे वोलता था, लेकिन घर आते ही तुतलाने लगता था और चश्मे को हमेशा अपने माथे के ऊपर चढाये रहता था। यो वह वहुत विद्वान आदमी था। हा तो एकाएक मुझे मालूम हुआ कि मै लिनखेन से प्रेम करने लगा हू, और पूरे छ महीने तक मै इस खयाल में मुब्तिला रहा। यह सच है कि मैं उससे वाते बहुत कम करता था, ज्यादातर उसे देखता ही रहता था। लेकिन मै उसे पुस्तको में से विभिन्न हृदयस्पर्शी अश, ऊचे ऊचे पढकर सुनाया करता था, नजर वचाकर उसका हाथ भी दवाता था, और साझ के समय, चाद की ओर एकटक देखते या अपनी आखो को यो ही ऊपर उठाये, उसके पास वैठा हुआ सपनो में खो जाता था। इसके अलावा, वह बहुत ही वढिया कॉफी वनाती थी! कोई पूछे – भला इससे अधिक और क्या चाहिए? लेकिन एक चीज़ थी जो मुझे परेशान करती थी। जैसा कि कहते हैं, आनन्दातिरेक के ठीक उन अकथनीय क्षणो मे, ऐसा मालूम होता था जैसे मेरा अन्तर, भीतर ही भीतर, किसी अतल गहराई में समाता जा रहा हो, और एक ठंडी सुरसुरी-सी मेरी रीढ मे दौड जाती थी। आखिर इस सुख को मैं सह नहीं सका और वहा से भाग खड़ा हुआ। उसके वाद पूरे दो साल मै विदेशो में घूमता रहा। मैं इटली गया।

रोम मे ट्रासफिगरेशन और फ़्लोरेन्स में वीनस की प्रतिमा के सामने, मैं खडा हुआ सहसा अतिरजित भावातिरेक में उमड पडता, ऐसा मालूम होता जैसे क्रोध ने मुझे जकड लिया हो। साझ को मैं तुकवन्दिया करता, डायरी लिखता। मतलब यह कि वहा भी मेरा व्यवहार वैसा ही था जैसा कि अन्य सबका। फिर भी ज़रा देखिये न, मौलिक बनना कितना आसान है। मिसाल के लिए, चित्र और शिल्प-कला की मुझे कोई समझ नही। लेकिन इससे क्या, केवल जोरो से घोषणा करने पर नही, मेरे लिए यह असम्भव था। इसके लिए जरूरी था कि किसी पारखी को मैं अपने साथ लू और भित्तिचित्रो को जाकर देखू।"

उसने फिर नीचे की ओर देखा, और अपनी रात की टोपी को फिर खीचकर उतार लिया।

"हा तो, अन्त में मैं अपने देश लौटा," थकी-सी आवाज़ में वह कहता गया। "मैं मास्को गया। मास्को में मुझमें एक अद्भुत परिवर्तन हुआ। विदेशो में मैं ज्यादातर चुप रहता था, लेकिन यहा अचानक—अप्रत्याशित चपलता के साथ—मेरी जबान खुल चली। और साथ ही अपने बारे में तरह तरह के विचार तत्त्व भी मेरे दिमाग में आने लगे। ऐसे मेहरबान लोगो की कमी नही थी जिन्हे मैं एकदम प्रतिभा का पुज मालूम होता था। कुलीन महिलाए सहानुभूति के साथ मेरी लनतरानियो को सुनती थी। लेकिन अपने गौरव के इस शिखर पर मैं टिका नही रह सका। एक दिन मैंने देखा कि मेरे बारे में गपशप का उदय हो गया है (कह नही सकता, किसने इसकी शुरूआत की। निश्चय ही पुरुष जाति के किसी खूसट विधुर ने इसकी शुरूआत की होगी। मास्को में ऐसे विधुरो की कमी नही है।) हा तो गपशप का उदय हुआ और स्ट्रॉबेरी के पौधे की भाति उसने अपनी शाख-प्रशाखाए फैलानी शुरू कर दी। मैं सन्न रह गया। मैंने उसमें से निकलने और उसके लेसदार फन्दो को तोड फेंकने की कोशिश की, लेकिन बेकार. मैं वहा से चला गया। हा तो इसमें भी, मैंने अपने-

आपको मूर्ख सिद्ध किया। मुझे धीरज से इन्तज़ार करना चाहिए था। तूफान अपने-आप ठडा पड जाता, जैसे जुलपित्ती का दौरा ठडा पड जाता है, और वही मेहरवान लोग मेरे लिए फिर अपनी वाहो को फैला देते, वही कुलीन महिलाए मुग्ध मुसकान के साथ फिर मेरी टिप्पणियो को सुनती। लेकिन असल मुसीवत तो यह है कि मैं मौलिक आदमी नही हू। मेरी अन्तरात्मा ने, कृपया ध्यान से सुनो, मुझे कचोटना शुरू कर दिया। वाते करते – जाने क्यो – मुझे शर्म आने लगी। वाते करते, विना रुके वाते करते, निरी वाते करते – कल अरवात मे, आज त्रूवा मे, कल सिवत्सेव-व्राजेक में, और हर वार एक उसी चीज के वारे मे लेकिन इसका क्या इलाज अगर लोग यही मुझसे चाहे? जरा उन लोगो पर नजर डालिये जो इस दिशा मे वास्तव मे सफल हुए है। वे इस फेर मे नही पडते कि यह उपयोगी है या नही। इसके प्रतिकूल, वे केवल बातो से वास्ता रखते हैं। कुछ तो लगातार वीस वीस साल जुबान के घोडे दौडाये जाते है, और हमेशा एक ही दिशा में। सब आत्मविश्वास और स्वाभिमान की वदौलत। यो उससे – स्वाभिमान से – मैं भी शून्य नही था। सच पूछो तो वह अव भी एकदम मर नही गया है। लेकिन असल मुसीबत यह थी कि – मैं फिर दोहराता हू – कि मुझमें मौलिकता नही थी। मैं अधवीच में ही अटका था। चाहिए यह था कि प्रकृति मुझे और अधिक स्वाभिमानी वनाती या फिर विल्कुल वचित रखती। लेकिन शुरू शुरू मे यह परिवर्तन मुझे वहुत भारी मालूम हुआ। इसके अलावा, प्रवास ने भी, मेरे साधनो को खोखला कर दिया था। फिर सौदागर की एक युवा तथा जैली की भाति गिलगिली लडकी से विवाह करने के लिए मैं तैयार नही था। सो मैंने अपने देहात में आकर शरण ली। लेकिन सोचता हू कि," कनखियो से मेरी ओर देखते हुए उसने फिर कहा, "देहाती जीवन के पहले प्रभावो को, प्रकृति के सौन्दर्य और एकाकी जीवन की मृदु रमणीयता आदि आदि को, मैं यहा दरगुजर कर जाऊ।"

"बेशक, वह सब छोड सकते हो," मैंने कहा।

"और भी अधिक इसलिए" वह कहता गया, "कि वह सब फिजूल है, कम से कम मुझे ऐसा ही मालूम होता है। देहात मे मैं वैसे ही ऊब गया जैसे ताले मे बन्द पिल्ला ऊब जाता है। लेकिन मुझे स्वीकार करना चाहिए कि घर लौटते समय जब मैं बर्च-वृक्षो के पहली बार अपने परिचित जगल में से गुजरा—वसन्त के दिन थे—मेरे मस्तिष्क मे एक नशा-सा छा गया और मेरा हृदय एक धुधली, मधुर आशा से थिरकने लगा। लेकिन ये धुधली आशाए—जैसा कि आप खूब जानते होगे—कभी पूरी नही उतरती। उलटे, उनसे बिल्कुल भिन्न चीजें सामने आती हैं, जिनकी कि आप कतई आशा नही करते थे, जैसे डगरो की महामारी, बकाया, नीलाम, आदि आदि। अपने कारिन्दे याकोव की मदद से—भूतपूर्व मैनेजर की जगह अब वही काम कर रहा था—जैसे-तैसे आये दिन के काम का मैंने ढर्रा बैठाया। लेकिन वह भी, आगे चलकर ज्यादा नही तो उतना ही बडा लुटेरा सिद्ध हुआ। इसके अलावा अपने कोलतारी बूटो की गध से उसने मेरे जीवन को जो विषैला बनाया सो अलग। इसी बीच एक दिन, अचानक, मुझे अपने एक परिचित पडोसी परिवार की याद आयी। यह एक अवकाश-प्राप्त कर्नल की विधवा पत्नी और उसकी दो लडकियो का परिवार था। मैंने अपनी बग्घी जुतवायी और उनसे मिलने चल दिया। वह दिन मेरे लिए हमेशा स्मरणीय रहेगा—छ महीने बाद अवकाश-प्राप्त कर्नल की दूसरी लडकी के साथ मैं विवाह-सूत्र में गुथ गया!"

वक्ता ने अपना सिर लटका लिया और उसके हाथ हवा मे ऊचे उठ गये।

"और अब," वह उद्वेग के साथ कहता गया, "अपनी स्वर्गीय पत्नी के बारे मे कोई बुरा शब्द मुह से निकालना मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। नही, खुदा न करे ऐसा हो! वह अत्यन्त उदार और मधुरतम

जीव थी। प्यार भरा स्वभाव, हर प्रकार का आत्मत्याग करने के लिए तैयार। यो, और यह अपने बीच की बात है, मुझे स्वीकार करना चाहिए, अगर उसे खोने का यह दुर्भाग्य मेरे साथ न घटता, तो शायद आज मै तुमसे यहा बाते करता नजर न आता। मेरी कोठडी मे वह कडी आज भी मौजूद है जिससे लटककर जान देने का इरादा मै वारहा कर चुका था ”

“कुछ नाशपातियो को,” थोडा विराम लेकर उसने फिर कहना शुरू किया, “कहते है कि जव तक कुछ दिनो तक जमीनदोज तहखाने में नही रखा जाता तव तक उनका असली जायका नही खुलता। मेरी पत्नी भी, ऐसा मालूम होता है, प्रकृति की ऐसी ही देन थी। यह तो केवल अब मै उसके साथ न्याय कर सका हू। केवल अव ऐसा हुआ है कि उन सध्याओ की याद करते समय जो विवाह से पहले मैंने उसके साथ वितायी थी, मेरे हृदय मे अब जरा भी कटुता नही उठाती, वल्कि मेरी आखें प्राय नम हो आती हैं। वे धनी लोग नही थे। वहुत ही पुराने ढग का लकडी का वना हुआ उनका घर था। लेकिन था आरामदेह। एक पहाडी पर झाड-झखाड भरे सहन और जगल वने वगीचे के वीच वह स्थित था। पहाडी की तलहटी में एक नदी वहती थी। घनी पत्तियो के वीच से उसकी झलक-भर दिखाई देती थी। घर से वगीचे तक एक चौडा वरामदा खिचा था। वरामदे के सामने फूलो की एक लम्वी क्यारी थी जिसमे गुलाब खिले थे। क्यारी के दोनो छोरो पर ववूल के दो पेड उगे थे। स्वर्गीय स्वामी ने इन्हे इस तरह साधा था कि वे पेंच के आकार में उगते मालूम होते थे। कुछ और आगे चलकर, रसभरी की उपेक्षित तथा मनमानी उगी झाडियो के ठीक वीचोवीच, एक लतामण्डप था, भीतर से खूव रगा-चुना, लेकिन वाहर से इतना जीर्ण और जर्जर कि देखने तक को जी न चाहे। वरामदे मे काच का एक दरवाजा था जो दीवानखाने में खुलता था। एक कुतूहली दर्शक की नजर दीवानखाने में

किन चीज़ो पर पडती थी, वे ये है—कोनो में डच टाइलो की अगीठिया, दाहिनी ओर चरमर करता एक पियानो जिसके ऊपर स्वर-पाण्डुलिपियो का ढेर लगा था, एक सोफा जिसपर सफेदी-मायल फूलो से युक्त नीला कपडा चढा था। कपडे का रग उड चुका था। एक गोल मेज़, दो छोटी अलमारिया जो कैथरीन के समय के चीनी की छुट-पुट चीज़ो तथा मनको से लदी थी। दीवार पर सुनहरे बालो वाली एक लडकी का प्रचलित चित्र जो अपने वक्ष से कबूतर सटाये आकाश की ओर देख रही है। मेज़ पर गुलाव के ताज़ा फूलो का एक गुलदस्ता.. सो देखा आपने, कितनी बारीकी के साथ मै उसका वर्णन करता हू। इस दीवानखाने में, उस बरामदे में, मेरे प्रेम के सभी दृश्य—दुखद भी और सुखद भी—घटित हुए थे। कर्नल की पत्नी स्वय एक चुडैल थी। ओछी और चिडचिडी—कुत्सा से भरी इतना टर्राती थी कि उसका गला हमेशा वैठा रहता था। लडकियो में से एक, वेरा, विल्कुल वैसी ही थी जैसी कि देहात की लडकिया हुआ करती है—हर तरह से साधारण। दूसरी, सोफ्या—उसने ही मेरे हृदय में घर किया। दोनो बहिनो के पास एक छोटा कमरा और था। इसी में समान रूप से वे सोती भी थी। कमरे में दो छोटे छोटे, मासूम-से, लकडी के पलग विछे थे। पीली पडी अलवमें, मिगनोनेट के फूल, पेन्सिल से खीचे हुए मित्रो के रेखा-चित्र जो कुछ अच्छे नही वने थे, (इनमें से एक महानुभाव के चेहरे पर असाधारण स्फूर्ति का भाव छाया था, और उससे भी अधिक स्फूर्ति के साथ चित्र के नीचे दस्तखत बने थे। युवावस्था ने अनुपात से कही अधिक आशाए जगायी, लेकिन अन्त में, हम सव की भाति, शून्य के सिवा कुछ पल्ले नही पडा) शिलर और ग्येटे के वस्ट, जर्मन पुस्तके, सूखे हुए हार तथा अन्य चीज़ें जिन्हे यादगार के रूप में सजोकर रखा हुआ था। लेकिन इस कमरे में मै विरले ही पाव रखता था और सो भी वेमन। जाने क्यो, उसमें मेरा दम घुटता था। और, कहते अजीव

मालूम होता है, सोफ्या भी मुझे तभी सबसे अच्छी लगती थी जबकि मैं उसकी ओर पीठ करके बैठा होता था। या इससे भी अधिक शायद उस समय जब मैं बरामदे मे उसके बारे में सोचता था और सपनो के जाल बुनता होता था। छिपते हुए सूरज की ओर मैं देखा करता, पेडो और नन्ही नन्ही हरी पत्तियो की ओर ताका करता, अधेरे में काली पड जाने पर भी जो गुलाबी आकाश की पृष्ठभूमि मे स्पष्ट नजर आती। दीवानखाने में सोफ्या पियानो पर बैठी निरन्तर कोई प्रिय धुन—बीटहोवन की कृति—बजाती रहती, चिडचिडी बुढिया सोफे पर बैठे बैठे आराम से खर्राटे लेती। लाल आलोक से प्लावित भोजन के कमरे में बेरा चाय के लिए खटर-पटर करती। समोवार आनद में आकर सिसकारी छोडता—जैसे किसी चीज से प्रसन्न हो उठा हो। कुरकुरे बिस्कुट करारेपन के साथ चटकते और चम्मचे प्यालो से टकराकर खनखनाती। पिंजरे का पक्षी जो दिन-भर बेरहमी से टिटियाता रहा था, अचानक चुप हो जाता और केवल जब-तब ही उसकी चिचियाहट सुनाई देती। ऐसा मालूम होता जैसे किसी चीज की याचना कर रहा हो। एक हल्के पारदर्शी बादल से कुछ उडती हुई सी-बूदें गिरती और मैं बैठा रहता, बस बैठा रहता, मेरे कान सुनते रहते, सुनते रहते, और आखें देखती रहती, बस देखती रहती। मेरा हृदय फैलता और मैं एक बार फिर अनुभव करता कि प्रेम से मैं अभिभूत हू। हा तो ऐसी ही एक साझ के प्रभाव मे एक दिन मैंने उस चिडचिडी बुढिया के सामने प्रस्ताव रखा कि मैं उसकी लडकी से विवाह करना चाहता हू, और इसके दो मास बाद मेरा विवाह हो गया। मुझे ऐसा मालूम होता था जैसे मैं उससे प्रेम करता हू. अब तक, बिलाशक, मुझे कभी का मालूम हो जाना चाहिए था, लेकिन खुदा साक्षी है, मैं आज दिन भी नही जानता कि क्या मैं सचमुच सोफ्या से प्रेम करता था। वह बडी मधुर जीव थी—चतुर, खामोश और सहृदय, लेकिन केवल खुदा ही बता सकता है कि किस वजह से—देहात में

दीर्घकाल तक रहने या अन्य किसी वजह से—उसकी आत्मा की अन्ततंम तह में (अगर आत्मा की ऐसी तह होती हो तो) कोई गुप्त जख्म था, या अधिक सही शब्दो में एक नन्हा-सा खुला नासूर था जो किसी चीज से नही अच्छा हो सकता था, और जिसे न तो वह कोई नाम दे सकती थी और न ही मैं। इस नासूर के अस्तित्व के बारे मे, कहने की आवश्यकता नही, केवल विवाह के बाद ही मैं कुछ अन्दाज़ लगा सका। उफ, कितनी कशमकश थी लेकिन सब बेकार। बचपन मे मेरे पास एक छोटी-सी चिडिया थी। उसे एक बार बिल्ली ने अपने पंजो में दबोच लिया था। जान तो उसकी बचा ली गयी, देख-संभार भी उसकी की गयी, लेकिन बेचारी फिर चगी होकर नही जी। वह आखें मूदे बैठी रहती, वह क्षीण होती गयी, उसका चहचहाना बद हो गया अन्त में एक रात उसके खुले हुए पिजरे में एक चूहा घुस गया और उसने उसकी चोच कुतर डाली। इसके बाद, अन्तत उसने मरने की ठान ली। मैं नही जानता कि मेरी पत्नी को किस बिल्ली ने अपने पजो में दबोचा था, लेकिन वह भी ठीक उस अभागी चिडिया की भाति ही आखें मूदे घुलती रहती। कभी कभी, प्रत्यक्षत, उबरने का प्रयास करती, खुली हवा, सूरज की धूप और आजादी का आनन्द लेना चाहती। वह कोशिश करती, और फिर अपने-आप में सिकुड-सिमटकर रह जाती। और आप जानो, वह मुझसे प्यार करती थी, जाने कितनी बार उसने मुझे आश्वस्त किया कि उसके हृदय में कोई साध अब बाकी नही है। ओह, शैतान उठा ले जाय मेरी इस आत्मा को! और उसकी आखो की जोत बराबर मन्द होती जा रही थी। मैं आश्चर्य करता कि उसके अतीत में तो कोई ऐसी बात नही हुई है। मैंने खोजबीन की, लेकिन कुछ हाथ नही लगा। जो हो, आप अपनी राय खुद कायम कर सकते है। अगर कोई मौलिक आदमी होता तो वह अपने कधो को बिचकाता, शायद एक या दो बार उसासे भरता, और अपने ढग से जीवन बिताने

के लिए आगे वढ जाता। लेकिन मैंने, मौलिकता से शून्य जीव होने के कारण, कडियो और शहतीरो को गिनना शुरू कर दिया। मेरी पत्नी चिरकुमारी की आदतो—वीटहोवन, साझ की सैर, मिगनोनेट, सहेलियो से चिट्ठी-पत्री, अलवम, आदि आदि—मे इतनी पूर्णता के साथ पगी थी कि वह कभी जीवन के किसी अन्य ढग के साथ अपनी पटरी नही वैठा सकी, खास तौर से घर की मालकिन जैसे जीवन के साथ। जो हो, एक विवाहित स्त्री के लिए अस्पष्ट उदासी में घुलते रहना तथा साझ को गीत गुनगुनाना, इस किस्म के 'उसे तडके न जगाइये', वहुत ही वेढगा मालूम होता था।

"हा तो, इस ढग से, तीन साल तक हम स्वर्ग-सुख का भ्रम पाले रहे। चौथे साल में, पहली जचगी मे, वह मर गयी। और कहते आश्चर्य होता है कि मुझे जैसे यह पहले ही भास हो गया था कि वह मुझे वेटी या वेटा देने में असमर्थ है—इस धरती को एक नया निवासी प्रदान करना उसके वस की वात नही है। मुझे याद है कि किस प्रकार उसे दफनाया गया। वसन्त के दिन थे। हमारी बस्ती का गिरजा छोटा और पुराना था, उसकी पार्टीशन काली पड गयी थी, दीवारो पर कोई देव-चित्र न थे, ईंटो के फर्श में गड्ढे पडे थे, और हर ड्योढी में पुराने ढग की एक वडी धार्मिक मूर्ति लगी थी। तावूत को वे भीतर ले आये, धर्म-द्वारो के सामने वीच में उसे रखा, धुधली-सी एक चादर उसके ऊपर फैला दी, और तीन मोमवत्तिया उसके इर्द-गिर्द लगा दी। विधि शुरू हुई। एक वूढा और जर्जर डीकन, पीछे की ओर वालो का एक छोटा-सा गुच्छा हिलगाये और हरी पेटी को नीचे वाधे, डैस्क के पीछे खडा शोकपूर्ण अन्दाज में मिमिया रहा था। एक पादरी, उतना ही वूढा, सहृदय और चुधा चेहरा लिये, पीले फूलो से युक्त वैंगनी रग का चोगा पहने, खुद अपने और डीकन के लिए सस्कार सम्पन्न करा रहा था। खुली हुई सभी खिडकियो पर किशोर नये पत्ते सरसरा और कानो की

कानो में बतिया रहे थे। बाहर गिरजे के अहाते में घास की महक हिलोरे ले रही थी। मोमबत्तियो की लाल लौ वसन्त के दिन की उजली रोशनी में पीली पड गयी थी। गिरजे के समूचे ओर-छोर मे गौरया चहचहा रही थी और जब-तब गुम्बद के नीचे भीतर उड आनेवाली अबाबील की गूजदार टिटियाहट सुनाई दे जाती थी। सूरज की किरनो के सुनहरी धूलिकणो में गिनती के कुछ किसानो के भूरे सिर बराबर उठ और गिर रहे थे। वे लगन के साथ मृतात्मा के लिए प्रार्थना में रत थे। धूपदान के छेदो में से धूम्र की एक पतली नीली धारा प्रवाहित हो रही थी। मैंने अपनी पत्नी के मृत चेहरे पर नजर डाली. . हे भगवान, मृत्यु—खुद मृत्यु भी—उसे बन्धन-मुक्त नही कर पायी थी, उसके घाव को नही भर सकी थी—अब भी वह वैसी ही रुग्ण , सहमी-सी और मौन दिखती थी, मानो अपने ताबूत में भी वह उखडी उखडी-सी महसूस कर रही हो! मेरा हृदय कडुवाहट से भर गया। मधुर, बहुत ही मधुर जीव थी वह, और अपने लिए उसने यह अच्छा ही किया जो इस दुनिया से विदा हो गयी!"

वक्ता के गाल लाल हो उठे थे और उसकी आखें धुधली पड गयी थी।

"अन्त में," उसने फिर कहना शुरू किया, "उस उदासी से उबरने पर जिसने पत्नी की मृत्यु के बाद मुझे अभिभूत कर लिया था, मैंने अपने-आपको काम में लगाने का निश्चय किया। प्रान्त के नगर मे एक सरकारी दफ्तर में मैंने प्रवेश किया, लेकिन सरकारी सस्था के बडे बडे कमरो में मेरा सिर दर्द करने लगा, मेरी आखो ने भी जवाब देना शुरू कर दिया और कुछ अन्य कारण भी आ मिले। मैंने वहा से अवकाश ग्रहण किया। मास्को जाने का मेरा विचार था, लेकिन सबसे पहली बात तो यह कि मेरे पास पैसे नही थे, और दूसरे . सो मै आपको बता ही चुका हू—मै विरक्त हो चुका हू। इस विराग ने जिस रूप में मुझे पकडा है, उसे आकस्मिक कहा जा सकता है, और नही भी। भावना का जहा

साफ सबब है, मैं बहुत पहले ही विरक्त हो चुका था, लेकिन मेरा मस्तिष्क अभी उसका जुआ सहने को तैयार नही था। अपने तुच्छ विचारो और मस्तिष्क की इस स्थिति का कारण मैंने देहात के जीवन तथा अपने दु ख को समझा। दूसरी ओर, काफी दिनो से यह देखने मे आ रहा था कि मेरे पडोसी, बूढे और जवान सभी, जो पहले मेरी शिक्षा-दीक्षा, विदेशो मे मेरे प्रवास, और शिक्षा से प्राप्त मेरे अन्य गुणो से भयभीत हो उठे थे, न केवल यह कि मुझसे पूर्णतया अभ्यस्त होने का अवसर नही पा सके, बल्कि वे मेरे साथ अर्द्ध-रुक्षता तथा अर्द्ध-घृणा तक से व्यवहार करने लगे थे। मै जो कहता उसे नही सुनते थे और मुझसे बाते करते समय सम्मान के ऊपरी चिन्हो का प्रयोग करना उन्होने अब छोड दिया था। और हा, मै आपको यह बताना भी भूल गया कि अपने विवाह के बाद पहले साल के दौरान में मैंने अपनी उदासी दूर करने के लिए साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न किया था, यहा तक कि एक पत्रिका को कोई चीज़ भी भेजी थी—एक कहानी, अगर मै भूलता नही हू तो। लेकिन कुछ ही दिनो के बाद मुझे सपादक का शिष्ट पत्र मिला जिसमें, अन्य चीजो के अलावा, मुझे बताया गया था कि इस बात से तो इन्कार नही किया जा सकता कि मुझमें बुद्धि है, लेकिन साथ ही यह भी कहना पडता है कि प्रतिभा का मुझमें अभाव है, और प्रतिभा ही एक ऐसी चीज है जिसका होना साहित्य के लिए आवश्यक है। इसके साथ साथ, मुझे मालूम हुआ कि एक युवक ने—सो भी अत्यन्त भले स्वभाव के युवक ने—जो मास्को से आया था, गवर्नर के यहां एक सन्ध्या-पार्टी में मेरा उल्लेख करते हुए कहा कि मै एक छिछला, घिसा-पिटा तथा समय से पिछडा आदमी था। लेकिन मै अपनी धृष्टता में अब भी अधा बना हुआ था—खुद अपने मुह पर, आप जानो, चपत मारने के लिए मै तैयार नही था। आखिर एक सुहावनी सुबह मेरी आखे खुली। घटना इस प्रकार हुई। पुलिस इस्पेक्टर मुझसे मिलने आया, ताकि उस

जर्जर पुल की ओर मेरा ध्यान खीच सके जो मेरी मिल्कियत में था और जिसकी मरम्मत के लिए मेरे पास कतई पैसे नही थे। वोद्का का एक गिलास और धुए में सूखी हुई मछलियो का नाश्ता चट करने के दौरान कानून-व्यवस्था के इस दयाशील सरक्षक ने पिता की भाति मेरी लापर्वाही पर मुझे झिडका, लेकिन मेरी स्थिति से सहानुभूति भी प्रकट की और एकमात्र यह सलाह दी कि मै अपने किसानो को हुक्म देकर किसी भी मिट्टी से पुल की टूट भरवा दू। इसके बाद उसने अपना पाइप सुलगाया और आगामी चुनावो के बारे में बाते करने लगा। ओरबस्सानोव नाम का एक आदमी उन दिनो प्रान्त का मारशल का प्रतिष्ठित पद पाने के लिए उत्सुक था। वह शोरगुल मचानेवाला एक छिछला आदमी था। ऊपर से घूस अलग लेता था। इसके अलावा न तो वह वश की दृष्टि से उल्लेखनीय था न धन की दृष्टि से। उसके बारे में मैंने अपनी सम्मति प्रकट की, सो भी यो ही। ओरबस्सानोव को, मै स्वीकार करता हू मै अपने से निम्नस्तर का समझता था। पुलिस इस्पेक्टर ने मेरी ओर देखा, प्यार से मेरे कधो को थपथपाया, और भले स्वभाव के साथ कहा—'बस बस, वासीली वासील्यिच, उस जैसे लोगो की आलोचना करना हम-तुम जैसे लोगो का काम नही है— इतनी योग्यता भला हममें कहा है? अच्छा यही है कि मोची अन्त तक अपने मोचीपन को न छोडे।' —'लेकिन, सच कहता हूं,' खीज के साथ मैंने कहा, 'ओरबस्सानोव किस बात में मुझसे अच्छा है?' पुलिस इस्पेक्टर ने पाइप अपने मुह से निकाल लिया, अपनी आखो को खूब चौडा कर बडा किया और हस पडा। 'भई वाह, तुम भी मजेदार आदमी हो!' अन्त में उसने अपना मन्तव्य प्रकट किया हसी से लोटपोट होते और अपने गालो पर से आसू ढुरकाते हुए, 'क्या मज़ाक सूझा है तुम्हे ओह, मज़ेदार जीव हो तुम!' और जब तक वह विदा न हो गया, एक क्षण के लिए भी मेरी खिल्ली उडाना उसने बद नही किया, रह रहकर अपनी कोहनी से मेरी

पसलियो मे ठहोका देता और तू कहकर पुकारता था। आखिर वह विदा हुआ। वहुत हो चुका था और मेरा प्याला छलकना ही चाहता था। अनेक वार कमरे के फर्श को मैंने इधर से उधर नापा, आईने के सामने रुककर स्थिर खडा हुआ और देर तक, काफी देर तक, शीशे के सामने खडा अपने परेशान चेहरे को उसमे ताकता रहा फिर, धीरे धीरे अपनी जीभ को वाहर निकालते हुए, तीखी मुसकान के साथ मैंने अपना सिर हिलाया। मेरी आखो की माडी उतर गयी, आईने में अपने चेहरे से भी अधिक साफ मुझे नजर आ गया कि कितना छिछला, तुच्छ, निकम्मा और अमौलिक जीव हू मैं। ”

उसने विराम लिया।

“वाल्टेयर की एक दु खान्त रचना में,” अलसाहट के साथ वह फिर कहता गया, “एक सज्जन है जो इस वात से खुश है कि दु ख की चरम सीमा पर वह पहुच गया है। हालाकि मेरे भाग्य मे दु खान्त जैसी कोई चीज नही है, फिर भी मै स्वीकार करूगा कि उससे मिलती-जुलती चीज का अनुभव कर चुका हू। निर्मम निराशा के तीखे प्यालो का स्वाद मैंने चखा है, और उस मिठास का मैंने अनुभव किया है जो विस्तर पर पडे पडे, समूची की समूची सुवह, अपने जन्म की घडी तथा दिन को जान वूझकर एक साथ अभिशप्त करार देने में प्राप्त होती है। एकवारगी ही मै विरक्त नहीं हो सका। और, खुद आप सोचकर देखिये, इसके सिवा होता भी क्या—धन के अभाव ने मुझे देहात में बाधे रखा, जिससे मै घृणा करता था। अपनी जमीन का वन्दोबस्त करने के लिए विधाता ने मुझे नही गढा था, न ही जन-सेवा के मै उपयुक्त था, न साहित्य के। अपने पडोसियो से मै कोई वास्ता नही रखता था, और पुस्तके मुझे भार मालूम होती थी। और जहा तक नि सत्व तथा विकृति की हद तक भावुक स्त्रियो का सवध था जो अपनी लटो को लहराती और आवेग के साथ स्वतन्त्रता शब्द का राग अलापती रहती

थी, उनके लिए अब मुझमें कोई आकर्षण नही रहा था, जब से मैंने बात बघारना और उत्साहित होना छोड दिया था। और पूर्ण एकान्त मैं सह नही सकता था . मैंने—क्या आप कल्पना कर सकते हैं—मैंने इधर-उधर मंडराना, अपने पडोसियो के सिर पड़ना, शुरू किया। दुनिया-भर के छुट-पुट अपमानो को मैं जान बूझकर ओटता, आत्म-घृणा के नशे ने जैसे मुझे अभिभूत कर लिया था। भोजन के समय मेज पर मुझे भुला दिया जाता, उद्धत उपेक्षा से मेरे साथ पेश आया जाता, और अन्तत मुझे एकदम दरगुज़र कर दिया जाता। आम बातचीत तक में मुझे हिस्सा न लेने दिया जाता और मैं खुद अपने-आप इरादतन किसी मूर्ख वक्ता के समर्थन में अपने कोने से बोल उठता—ऐसे वक्ता के समर्थन में जो मास्को मे पुराने दिनो गद्गद होकर मेरे पाव की धूल चाटता और मेरे ग्रेटकोट के छोर को चूमता . मैं अपने-आपको इस विश्वास तक में मुब्तिला न होने देता कि ऐसा करके मैं व्यग के तीखे सन्तोष का उपभोग कर रहा हू और सच निराले में आदमी व्यग का उपभोग भला कर भी क्या सकता है! हा तो कई साल तक इस तरह मैंने व्यवहार किया, और आज भी इसी तरह व्यवहार करता हू "

"वाकई, यह तो हद हो गयी," बगलवाले कमरे में से मिस्टर कान्ताग्र्युखिन की उनीदी आवाज़ आयी, "जाने किस बेवकूफ को यह रात-भर बाते करने का खब्त सवार हुआ है!"

वक्ता तुरत बिस्तर में दुबक गया, और सहमे-से अन्दाज में झाकते हुए मुझे चेताने के लिए अपनी उगली उठायी।

"शि-शि!" वह फुसफुसाया, और जैसे कान्ताग्र्युखिन की आवाज़ की दिशा में क्षमार्थी की भाति सिर नवाते हुए सम्मानपूर्ण अन्दाज़ में बोला—"मानता हू, श्रीमान, मानता हू। क्षमा चाहता हू उनके लिए सोना जायज़ है, उन्हे सोना चाहिए ही," फुसफुसाकर वह फिर कहता गया, "उन्हे अपनी शक्तियो का सचय करना चाहिए—अगर

और किसी लिए नहीं तो इसलिए कि कल उसी चटखारे के साथ अपना भोजन कर सकें। हमें कोई अधिकार नहीं है कि उन्हें परेशान करें। इसके अलावा, मेरा खयाल है कि जो भी मुझे बताना था, वह सब बता चुका। शायद तुम्हें भी नींद आ रही है। नमस्ते!"

उद्वेगपूर्ण तेजी के साथ उसने करवट ली और तकिए में अपना सिर छिपा लिया।

"कम से कम यह तो मुझे मालूम होना चाहिए," मैंने पूछा, "कि किससे बातें करने का मुझे यह सौभाग्य "

तेजी से उसने अपना सिर उठाया।

"नहीं, इसके लिए मुझपर रहम करो!" उसने बीच में ही मेरी बात काटी, "मुझसे या दूसरों से मेरे नाम-धाम के बारे में पूछ-ताछ न करो। एक अनजान जीव ही मुझे अपने लिए बना रहने दो—कोई वासीली वासीलियिच—भाग्य का कुचला हुआ। इसके अलावा, मौलिकता से शून्य होने के कारण, मैं कोई व्यक्तिगत नाम रखने के योग्य भी नहीं हूं लेकिन अगर आप सचमुच मुझे कोई संज्ञा देना चाहते हैं, तो मुझे तो मुझे श्चिग्री जिले का हैमलेट कह लीजिये। हर जिले में इस तरह के कितने ही हैमलेट हैं, लेकिन शायद आपका इन दूसरे हैमलेटों से वास्ता नहीं पड़ा। अच्छा तो अब नमस्ते।"

उसने फिर अपने-आपको परों के कम्बल के नीचे दुबका लिया, और अगली सुबह जब मुझे जगाया गया तो वह कमरे में नहीं था। दिन का उजाला होने से पहले ही वह चला गया था।

चेरतोपखानोव और नेदोप्यूस्किन

गर्मी के दिन थे। शिकार करने के वाद मै एक गाडी में घर लौट रहा था। येरमोलाई मेरी वगल में वैठा ऊघ रहा था। कुत्ते भी उनीदे थे और वेजान पिण्डो की भाति हमारे पावो में पडे धचकोलो के साथ उछल और गिर रहे थे। कोचवान घोडो पर वैठी डासो को अपने चावुक से दुत्कारने मे जुटा था। गाडी के पीछे सफेद धूल का एक झीना वादल उठ रहा था। हम झाडियो के बीच से गुज़र रहे थे। सडक यहा लीको से अटी थी, और पहियो ने टहनियो में उलझना शुरू कर दिया था। येरमोलाई सहसा चौकस हुआ, अपने इर्द-गिर्द उसने नजर डाली। "ओह! " उसने कहा, "यहा ग्राउज होने चाहिए। चलो, उतर चले।" रुककर हमने एक झुरमुट में प्रवेश किया। मेरा कुत्ता ग्राउज-पक्षियो के एक झुड के पास जा पहुचा। मैने गोली दागी, और वन्दूक को फिर भरने जा ही रहा था कि तभी, अचानक, मेरे पीछे जोरो से कडकड की एक आवाज सुनाई दी। घोडे पर सवार एक आदमी मेरी ओर वढ आया, अपने हाथो से झाडियो को इधर-उधर धकेलते हुए वोला, "क्या मै जान सकता हू श्रीमान," अक्खड आवाज में उसने कहना शुरु किया, "कि यहा शिकार करने का अर्र आपको क्या अधिकार है ? " असाधारण तेजी के साथ, रुक रुककर और गुनगुनी आवाज़ में अजनवी वोल रहा था। मैने उसके चेहरे पर नजर डाली। अपने जीवन में पहले कभी मैने उस जैसा कोई जीव नही देखा था। सहृदय पाठको,

[illegible] [illegible] [illegible]—मेरे पास आया एक [illegible] आदमी, [illegible] [illegible] जो मुड़ी हुई [illegible], और [illegible] [illegible] मूंछें। गुलाबी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] माथे पर [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कोट पहने जिसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगी थी और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। उनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] नजर [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] रंग का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible], टेढ़े पंजों वाले [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] पैरों के [illegible] घुस रहे थे। चेहरा, [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], अजनबी का समूचा व्यक्तित्व, [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] गर्व प्रकट कर रहा था। उनकी [illegible] [illegible] [illegible], अगल-बगल से निकली, शराबी की भांति [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] थीं। अपना सिर पीछे की ओर उसने फेंका, अपने गालों को फुलाया, नाक से फुफकार छोड़ी और ऊपर से नीचे तक [illegible], मानो गर्व [illegible] [illegible] [illegible] हो—एकदम टर्की मुर्गे की भांति। उसने फिर अपना प्रश्न दोहराया।

"मुझे मालूम नहीं था कि यहां शिकार करना मना है," मैंने जवाब दिया।

"यहां आप, श्रीमान जी," वह कहता गया, "मेरी जमीन पर हैं।"

"आप कहें तो मैं यहां से चला जाऊं।"

"लेकिन यह पूछने की मुझे अनुमति दें," उसने फिर कहा, "कि क्या एक कुलीन से बातें करने का मुझे सम्मान प्राप्त हो रहा है?"

मैंने अपना नाम बताया।

"तब तो, यहां शिकार करके मुझे कृतार्थ कीजिये। मैं खुद भी कुलीन हूं, और कुलीनों की कोई भी सेवा करके मुझे भारी खुशी होती है.. और मुझे पान्तेलेई चेरतोपखानोव कहते हैं।"

उसने सिर नवाया, हिचकी ली, अपने घोडे की गरदन पर चावुक सरसराया। घोडे ने अपने सिर को झटका दिया, पिछले पैरो के वल उचका, एक तरफ लपका जिससे एक कुत्ते के पजे पर उसका पाव पड गया। कुत्ता वुरी तरह किकियाया। चेरतोपखानोव एकदम गुस्से से उवल पडा और हापते हुए घोडे के सिर पर कानो के वीच घूसा जमाया और विजली से भी अधिक तेज गति से उछलकर नीचे जमीन पर आ गया, कुत्ते के पजे को देखा, घाव पर थूका और उसका किकियाना वद करने के लिए उसकी पसलियो मे लात जमायी, घोडे की अयाल को पकडा और रकाब मे अपना पाव रखा। घोडे ने हवा में अपना सिर उछाला, पूछ को ऊचा उठाया और कन्नी काटता झाडियो मे वढ चला। एक टाग से फुदकता वह उसके साथ हिलगा रहा, आखिर काठी पर सवार हुआ, झुझलाहट उतारने के लिए अपने चावुक को फटकारा, सिगे को बजाया और तेजी से हवा हो गया। चेरतोपखानोव के इस अप्रत्याशित दर्शन से अभी मैं उबर भी न पाया था कि अचानक करीब करीव विना किसी आहट के, झाडियो मे से एक हृष्ट-पुष्ट आदमी प्रकट हुआ—चालीसेक वर्ष की आयु, काले रग के एक छोटे-से घोडे पर सवार। वह रुका, हरे रग की चमडे की अपनी टोपी को उसने सिर पर से उठाया और क्षीण दवी हुई आवाज मे मुझसे पूछा —"मुश्की घोडे पर सवार किन्ही सज्जन को तो आपने नही देखा है?" मैंने जवाव दिया कि हा, देखा है।

"किधर को गये है वह सज्जन?" उसी लहजे में, अपनी टोपी को अभी भी सिर पर से हटाये हुए, उसने फिर पूछा।

"उधर? वहुत वहुत धन्यवाद, श्रीमान!"

अपने होठो से पुचकारने की उसने आवाज की, अपनी टागो से घोडे की पसलियो को थपथपाया, और धीमी समगति से इगित दिशा की ओर चल दिया। मैं उसे जाते हुए देखता रहा, जव तक कि उसकी नोकदार टोपी टहनियो की ओट में ओझल नही हो गयी। यह दूसरा

अजनबी, अपनी बाह्य रूप-रेखा मे, पहलेवाले से जरा भी नही मिलता था। उसके मासल और गेद की भाति गोल चेहरे से लजालुता, भलमनसाहत, और विनम्रता झलकती थी। उसकी नाक—वैसी ही मासल और उसपर नीली नसो की धारिया उभरी हुई—उसके कामुक स्वभाव को सूचित करती थी। उसके सिर का अग्रभाग बालो से एकदम सफाचट था, बालो के कुछ झीने गुच्छे पीछे की ओर नजर आते थे। पतली दराजो में धंसी उसकी छोटी छोटी आखो मे दूसरे का अनुग्रह प्राप्त करनेवाली चमक थी और उसके लाल रसीले होठ मधुर मुसकान मे पगे थे। खडे कालर तथा तावे के बटनो से युक्त फ्रॉक-कोट पहने था जो काफी जर्जर होने पर भी साफ था। अपनी पतलून के पायचो को खूब ऊचे चढाये था, और उसकी मासल पिडलिया उसके बूटो के सिरो पर की पीली सजावट के ऊपर दिखाई दे रही थी।

"वह कौन है?" मैंने येरमोलाई से पूछा।

"वह? नेदोप्यूस्किन, तीखोन इवानिच। वह चेरतोपखानोव के यहा रहता है।"

"वह क्या, गरीब आदमी है?"

"धनी नही है। लेकिन, यो सच पूछो तो चेरतोपखानोव के पास भी फूटी कौडी नही है।"

"तो वह उसके साथ क्यो रहता है?"

"ओह, उनमें दोस्ती है। हर वक्त दोनो एक साथ रहते है। और बिलाशक, यह सच है—जिस जगह घोडा अपना खुर रखता है, उसी जगह केकडा चिपक जाता है।"

हम झाडियो से बाहर निकल आये। अचानक, निकट ही हमने दो शिकारी कुत्तो की हुकार सुनी, और एक बडा खरगोश छलाग मारकर जई के खेत में—जो अब पकने लगा था—घुस गया। शिकारी कुत्ते झाडी मे से उछल उसके पीछे लपके, और कुत्तो के पीछे खुद चेरतोपखानोव

तीर की भांति लपका। वह न तो चिल्ला रहा था, न कुत्तों को उकसा रहा था, न हांक लगा रहा था। उसका गला फूला हुआ था और वह हांफ रहा था। वह मुंह बाये था और टूटी-फूटी और निरर्थक ध्वनियां रह रहकर उसके मुंह में से निकल रही थीं। आंखें फाड़े आगे की ओर देख रहा था और अपने अभागे घोड़े पर बुरी तरह चाबुक झटकारता तेजी से लपक रहा था। शिकारी कुत्ते खरगोश पर हावी हो चले—क्षण-भर के लिए वह खरगोश पसरा, कमर को मोड़कर एकदम दोहरा हुआ, और तीर की भांति येरमोलाई के पास से होता झाड़ियों में घुस गया. कुत्ते भी पीछे लपके। "दे-ख-ना! जाने न पा-आ-ये!" जैसे-तैसे, बमुश्किल तमाम थकान से चूर घोड़सवार ने मुंह से निकाला, हकलाते हुए—"देखना, भाई!" येरमोलाई ने गोली दागी आहत खरगोश चिकनी सूखी घास पर गेंद की भांति लुढ़का, हवा में उछला, और उद्विग्न कुत्ते के दांतों में फंसा दयनीय भाव से चिचिया उठा। शिकारी कुत्ते उसके इर्द-गिर्द बटुर आये।

चेरतोपखानोव, तीर की भांति, अपने घोड़े से उतरा, खंजर को उसने अपनी मुट्ठी में दबोचा, दौड़कर कुत्तों के बीच लपका और गालियां बकते हुए क्षत-विक्षत खरगोश को उनसे छीना और अपने समूचे चेहरे को सिकोड़-समेटकर, एकदम मूठ तक, खंजर उसके गले में धंसा दिया धंसाया, और हांक लगाने लगा। जंगल के छोर पर तीखोन इवानिच की शक्ल दिखाई दी। "हो-हो-हो-हो!" चेरतोपखानोव ने दूसरी हुलूध्वनि की। "हो-हो-हो-हो," उसके साथी ने थिरता के साथ जवाब में दोहराया।

रौंदी हुई जई की ओर इशारा करते हुए मैंने चेरतोपखानोव से अपना अभिमत प्रकट किया—"लेकिन, आप जानो, सच बात तो यह है कि गर्मियों में शिकार नहीं करना चाहिए।"

"यह मेरा खेत है," चेरतोपखानोव ने हांफते हुए जवाब दिया।

इतने में नेदोप्यूस्किन आये हुए, खरगोश को उठाया, उसे अपनी काठी से लटकाया, और उसके पंजे कुत्तों के बीच फेंक दिये।

"शिकार के लिए धन्यवाद, मैं फिर कभी तुमको कारतूस भेंट करूँगा," येरमोलाई की ओर मुखातिब होते हुए उसने कहा। "और तुमको, श्रीमान," उसी तरह रूखी, झटकेदार आवाज में उसने जोड़ा, "मेरा धन्यवाद।"

यह कहकर वह घोड़े पर सवार हो गया। "इजाजत हो तो पूछूँ आपका नाम मैं जान सकता हूँ।"

मैंने उसे अपना नाम बता दिया।

"आपसे परिचय पाकर खुशी हुई, मौका मिलने पर आशा है कि आप मेरे यहाँ आयेंगे और दर्शन देंगे। लेकिन, तीखोन इवानिच, वह फोमका कहाँ मर गया?" गर्म उत्साह से भरकर उसने कहा। "उसका कुछ पता नहीं, और यहाँ खरगोश का शिकार भी हो गया।"

"उसका घोड़ा उसके नीचे दबकर मर गया," मुसकराते हुए तीखोन इवानिच ने जवाब दिया।

"मर गया? ओर्बस्सान मर गया?" उसने सीटी बजायी। "कहाँ है वह?"

"उधर जंगल के पीछे।" चेरतोपखानोव ने अपने घोडे की थूथनी पर चाबुक मारा, और गरदन-तोड़ गति से हवा हो गया। तीखोन इवानिच ने दो बार अपना माथा नवाया—एक बार खुद अपनी ओर से, दूसरी बार अपने साथी की ओर से—और दुलकी चाल से फिर झाडियो के बीच चल दिया।

इन दोनो सज्जनो ने मुझमें गहरी उत्सुकता जगा दी। इतने भिन्न जीवो को इतनी अभिन्न मित्रता के सूत्र में गुथने का क्या रहस्य हो सकता है? मैंने पूछ-ताछ शुरू की। जो मालूम हुआ, वह इस प्रकार है।

पान्तेलेई येरेमेइच चेरतोपखानोव आसपास के समूचे इलाके में एक

खतरनाक, सिर-फिरे, उद्धत और अत्यन्त झगडालू जीव के रूप में प्रसिद्ध था। वहुत ही थोडे समय के लिए वह सेना मे रहा था, और 'कठिनाइया' उत्पन्न हो जाने के कारण उसे नौकरी से अवकाश ग्रहण करना पडा था। वह अफसर था, लेकिन उस कोटि का जिसे आम तौर से किसी कोटि में नही रखा जाता। उसका जन्म एक पुराने परिवार मे हुआ था जो कभी धनी रहा था। उसके पूर्वज समृद्ध जीवन विताते थे, स्तेप के चलन के अनुसार, अर्थात् वे सभी का, आमन्त्रित तथा अनामन्त्रित दोनो का, स्वागत करते थे, उन्हे इतना खिलाते थे कि उनमें दम न रहता था, चार मन के हिसाब से उनके मेहमानो के कोचवानो को घोडो के लिए जई देते थे, सगीतज्ञो, गायको, विदूषको, और कुत्तो को रखते थे। खुशी-त्योहार के दिनो में अपनी रैयत को दारू और वीयर से खुश करते थे, जाडो मे अपने निजी घोडो के साथ, भारी-भरकम पुरानी गाडियो मे मास्को जाते थे, और कभी कभी, पास में बिना एक कौडी के, केवल घरेलू पैदावार के सहारे, कई कई महीने गुजार देते थे। पान्तेलेई येरेमेइच के पिता के हाथो में जब जागीर आयी तब वह अग-भग हालत में थी। अपने समय मे उसने भी उसे उजाडा, और जब मरा तो अपने एकमात्र उत्तराधिकारी पान्तेलेई के लिए वन्धक रखा हुआ एक छोटा-सा वेस्सोनोवो नामक गाव, मय पैंतीस पुरुषो और छिहत्तर स्त्री जीवो के, और कोलोब्रोदोवो बजर की साढे अठाईस एकड निकम्मी जमीन छोड गया। मृतक के कागजो में इनके वारे में कोई खरीद का दस्तावेज नही मिला। मृतक ने, यह मानना पडेगा, वहुत ही अजीव ढग से अपने को वरवाद किया था–'दूरदर्शी व्यवस्था' उसके विनाश का कारण थी। उसकी धारणाओ के अनुसार किसी भी कुलीन को सौदागरो, शहरियो और इस तरह के 'लुटेरो'–जैसा कि वह उन्हे कहता था–पर निर्भर नही रहना चाहिए। इसलिए हर तरह के धधे और दस्तकारी उसने अपनी जागीर में स्थापित

कर ली थी। "यह देखने मे भी भला लगता है और सस्ता भी," वह कहा करता, "यह दूरदर्शी व्यवस्था हे।" अपने जीवन के अन्त तक इस घातक धारणा को एक क्षण के लिए भी उसने नही छोडा। और, निस्सदेह यही उसे ले डूबी। लेकिन, तव फिर, उसे इसमें क्या मजा मिलता था! जिस चीज़ की भी उसे झक चढ आती, उसे वह कभी पूरा किये विना नही रहता। उसके करिश्मो मे से एक भीमाकार घरेलू वग्घी थी जिसे उसने अपनी निजी योजना के अनुसार किसी जमाने में वनवाया था। वह इतनी भीमाकार थी कि समूचे गाव से वटोरे गये किसानो के घोडो और साथ में उनके मालिको के सयुक्त प्रयासो के वावजूद वह पहले पहाडी ढलुवान पर ही फिस्स हो गयी और खण्ड खण्ड होकर विखर गयी। येरेमेई लुकीच ने (पान्तेलेई के पिता का नाम येरेमेई लुकीच था) उस ढलुवान पर एक स्मारक खडा करने का आदेश दिया, और चाहे जो हो—इस मामले मे वह जरा भी नही झिझका। तरग मे आकर एक गिरजा वनाने का खयाल उसके दिमाग मे उपजा—विलाशक अपने-आप—विना किसी शिल्पी की मदद के। ईंटे वनाने के फेर में उसने एक समूचा जगल जला डाला, भीमाकार नीव रखी—मानो कैथेड्रल (वडा गिरजा)—वनाया जानेवाला हो, दीवारे उठायी और गुम्वद चढाना शुरू किया। लेकिन गुम्वद गिर पडा। उसने फिर कोशिश की—गुम्वद फिर ढह गया। उसने तीसरी वार कोशिश की—गुम्वद तीसरी वार भी गिरकर टुकडे टुकडे हो गया। नेक येरेमेई लुकिच चिन्तित हुआ। जरूर इसमें कोई ऐसी-वैसी वात है, उसने सोचा जरूर किसी डायन ने जादू-टोना किया है और उसने फौरन गाव की तमाम वूढी स्त्रियो को कोडे लगाने का आदेश जारी कर दिया। उन्होने वूढी स्त्रियो को कोडे लगाये, लेकिन यह सव करने पर भी गुम्वद चढ नही पाया। नयी योजना के अनुसार उसने किसानो की झोपडियो का पुनर्निर्माण शुरू किया, और यह सव उसकी उसी दूरदर्शी व्यवस्थावाली प्रणाली का ही अग था।

उसने उनके लिए एक साथ तीन घर, त्रिकोण का ग्राकार बनाते हुए, खडे किये, और एक खम्भा खडा किया जिसपर एक ध्वज तथा एक चिडियाखाना खडा किया। आये दिन किसी न किसी नये अजूबे का वह आविष्कार करता। कभी पत्तो का शोरबा बन रहा है, कभी गृह-दासो के वास्ते टोपिया बनाने के लिए घोडो की पूछो को काटा जा रहा है। कभी सन के बदले बिछुए से काम लेने का प्रस्ताव किया जा रहा है, कभी सूअरो को कुकुरमुत्तो का खाद्य देने का प्रस्ताव किया जा रहा है जो हो, उसका शौक एक मात्र नयी नयी आर्थिक योजनाओ तक ही सीमित नही था, किसानो की खुशहाली से भी वह लगाव रखता था। एक बार 'मास्को गजट' में उसने एक लेख पढा जिसे खारकोव के जमीदार ख्र्याकख्रुप्योर्स्की ने लिखा था। किसानो की खुशहाली में नैतिकता का महत्त्व इस लेख का विषय था। इसके बाद, अगले ही दिन, अपने तमाम किसानो के नाम खारकोव भूस्वामी के उस लेख को फौरन जबानी याद करने का फरमान कर दिया। और तदनुसार किसानो ने उसे याद कर लिया। मालिक ने उनसे पूछा कि उसमें जो कुछ कहा गया है, वह उनकी समझ मे भी आया? कारिन्दे ने जवाब दिया—यह कोई शक करने की बात नही है! करीब करीब इन्ही दिनो उसने अपनी सारी रियाया को—सुचारु और दूरदर्शी व्यवस्था को बनाये रखने की दृष्टि से—आदेश दिया कि हर एक का अपना नम्बर हो, और प्रत्येक के कालर पर उसका नम्बर टका हो। अब जब भी मालिक से भेंट होती, वह चिल्लाकर कहता, "अमुक नम्बर हाजिर है!" और मालिक मिलनसारी के साथ जवाब देता—"जुटे रहो, खुदा का नाम लेकर!"

लेकिन, सुचारु और दूरदर्शी व्यवस्था के बावजूद, येरेमेई लुकीच क्रमश बहुत कठिन परिस्थिति में फस गया। पहले अपने गावो को बन्धक रखने से उसने शुरूआत की और फिर उनके बिकने की नौबत आ पहुची। पूर्वजो का आखिरी घर, अधूरे गिरजेवाला वह गाव, अन्त में सरकारी

बकाया चुकाने मे बिक गया। सौभाग्य से उसके जीवन-काल मे नही— ऐसे आघात को वह कभी सहन न कर पाता—बल्कि उसकी मृत्यु के पन्द्रह दिन बाद। अपने घर पर, अपने निजी बिस्तर पर, अपने लोगो से घिरे हुए तथा खुद अपने डाक्टर की देख-सभार मे मरने का उसे श्रेय प्राप्त हुआ, और बेचारे पान्तेलेई के लिए सिवा बेस्सोनोवो के और कुछ भी बाकी नही बचा।

पान्तेलेई ने जब अपने पिता की बीमारी का समाचार सुना तब वह सेना में था, और वे 'कठिनाइया', जिसका पहले जिक्र किया जा चुका है, अपने पूरे उभार पर पहुची हुई थी। वह अभी उन्नीसवे वर्ष में था। अपने बचपन के एकदम शुरू से लेकर वह कभी अपने पिता के घर और अपनी मा वासिलीसा वासील्येवना की देख-सभार से अलग नही हुआ था। उसकी मा एक बहुत ही भली लेकिन पूर्णतया मूढ स्त्री थी। वह बहुत सिर चढा और दम्भी बन गया। अकेले मा ने ही उसकी शिक्षा-दीक्षा सभाली। येरेमेई लुकीच अपनी आर्थिक कपोल-कल्पनाओ में इतना डूबा रहता कि इस ओर ध्यान देने का उसके पास समय नही था। यह सच है कि एक बार उसने खुद अपने हाथो से, वर्णमाला के एक अक्षर का गलत उच्चारण करने पर, अपने बेटे को सजा दी थी, लेकिन उसी दिन येरेमेई लुकीच को एक निर्मम आघात सहना पडा था, और वह भीतर से दुखी था—उसका सबसे अच्छा कुत्ता एक पेड से टकराकर मर गया था। जो हो, पान्तेलेई की शिक्षा से सबधित वासिलीसा वासील्येवना के प्रयास एक विकट चेष्टा से आगे नही बढ सके—अपनी एडी-चोटी का पसीना एक करते हुए जैसे-तैसे उसने एक शिक्षक रखा जिसका नाम बिरकोप्फ था। वह एक अवकाश-प्राप्त एलसाशियन सैनिक था। उसके सामने, अपनी मृत्यु के दिन तक, वह पत्ते की भाति कापती रही। "ओह," वह सोचती, "अगर यह हमें छोडकर चला गया, तो मै कही की न रहूगी! मै कहा जाऊगी? दूसरा शिक्षक कहा मुझे मिलेगा?

ओह, अपने पडोसियो से इसे अपने यहा खीच लाने में कितना कष्ट, कितनी जान मुझे खपानी पडी थी।" और विरकोप्फ ने, चतुर होने के कारण, अपनी इस बेजोड स्थिति से तुरत फायदा उठाया। मछली की भाति वह पीता, और सुवह से रात तक लम्वी तानता। 'विज्ञान का पाठ्यक्रम' पूरा करने के बाद पान्तेलेई ने सेना में प्रवेश किया। वासिलीसा वासील्येवना अव जीवित नही थी। इस महत्त्वपूर्ण घटना से छ महीने पहले ही वह चल वसी थी, भय के कारण। सपने मे उसे दिखाई दिया कि एक सफेद आकृति भालू पर सवार चली आ रही है जिसके वक्ष पर 'ईसा-द्रोही' का चिन्ह अकित है। इसके शीघ्र बाद ही येरेमेई लुकीच ने भी अपनी अर्द्धान्गिनी का अनुसरण किया।

उसकी बीमारी की पहली खबर पाते ही पान्तेलेई तावडतोड गति से घर पहुचा, लेकिन वह उसे जीवित नही पा सका। कर्तव्यपरायण बेटे के आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जव उसने देखा कि वह धनी उत्तराधिकारी से एकबारगी एक गरीब आदमी बन गया है! इतनी तेज़ उलट-फेर को सही-सलामत सहने की सामर्थ्य कम ही लोगो में होती है। पान्तेलेई का दिल कटुता से भर उठा, मानव-मात्र से वह घृणा करने लगा। एक ईमानदार, उदार और सदाशय जीव से—हालाकि वह बिगडा हुआ और तेज मिजाज था—वह उद्धत और झगडालू आदमी बन गया। उसने पडोसियो से मिलना-जुलना छोड दिया। धनियो के यहा जाने में उसका अहम् आडे आता और गरीबो को वह नीची नजर से देखता। हरेक के साथ—यहा तक कि माने हुए अधिकारियो के साथ भी—वह ऐसी उद्धतता से व्यवहार करता जैसी कि पहले कभी नही सुनी थी। "प्राचीन ख़ानदानी कुलीनो के घराने से मेरा सबध है," वह मन ही मन कहता। एक वार तो उसने कान्स्टेबल को गोली से उडा ही दिया होता। यह इसलिए कि टोपी सिर से उतारे बिना ही वह उसके कमरे मे चला आया था। अधिकारी भी, कहने की आवश्यकता नही, अपनी ओर से इसका वदला

लेते, और उसे अपनी सत्ता का अहसास कराने के किसी भी अवसर से न चूकते। फिर भी वे उससे डरते थे। कारण, उसका स्वभाव दुस्साहसी था, और दूसरा शब्द मुह से निकालते ही छुरो से द्वन्द्वयुद्ध करने पर उतर आता था। जरा-सा भी प्रत्युत्तर मिलने पर उसकी आखे दहकने लगती, उसकी आवाज लडखडा जाती। "आह, अर्र-अर्र-अर्र," वह हकलाता, "शैतान की पनाह!" और क्या मजाल जो फिर कोई उसे रोक सके। और, इसके अलावा, वह वेदाग चरित्र का आदमी था। उसने कभी किसी ऐसी चीज मे हाथ नही डाला जो जरा भी गडवड हो। उसके पास भी, कहने की आवश्यकता नही, कोई नही आता था और यह सव होने पर भी वह एक भले हृदय का—यहा तक कि अपने ढग से एक महान हृदय का—आदमी था। अन्याय और उत्पीडन के कृत्यो को वह कभी दरगुजर नही करता था। चट्टान की भाति अपने किसानो का वह पक्ष लेता था। "क्या?" खुद अपने सिर पर जोर से घूसा मारते हुए कहता, "रैयत के भला कोई हाथ तो लगाकर देखे! मेरा नाम भी चेरतोपखानोव नही अगर ..."

पान्तेलेई येरेमेइच की भाति तीखोन इवानिच नेदोप्यूस्किन अपने वंश-स्रोत पर गर्व नही कर सकता था। उसका पिता माफीदारो के वर्ग का जीव था, और पूरे चालीस साल तक सेवा में एडिया रगडने के वाद ही वह कुलीनो की पात में प्रवेश कर सका था। उसका पिता, नेदोप्यूस्किन, उन लोगो में से था जिनका, मानो गाठ वाधकर, दुर्भाग्य पीछा करता है। ऐसा मालूम होता था जैसे दुर्भाग्य को उनसे कीना हो। पूरे साठ साल तक—ठीक उसके जन्म से लेकर एकदम उनकी मृत्यु के दिन तक—वेचारे को दुनिया-भर की कठिनाइयो, विपत्तियो और अभावो से जूझना पडा, जैसा कि अल्पसाधन लोगो के साथ होता है। दोनो जून पेट भरने के लिए उसने जान तोड सघर्ष किया। न कभी भर पेट खाना खाया, न सोना। एडिया रगडना, चिन्ता में घुलना, [illegible]

पाई पाई के लिए झीकना, 'अकारण' ही अपमानित होते रहना और अन्त में खुद अपने या अपने बच्चो के लिए रोटी के एक एक टुकडे के लिए सघर्ष करते करते किसी कोठडी या तहखाने में दम तोड देना। भाग्य ने खरगोश की भाति उसका पीछा किया था। वह भले स्वभाव का और ईमानदार आदमी था, हालाकि वह अपने 'पद की मर्यादा के अनुसार' घूस लेता था—दस कोपेक से लेकर दो रूबल तक। नेदोप्यूस्किन के पत्नी थी, क्षीणकाय और तपेदिक की मरीज़-सी। उसके बाल-बच्चे भी थे। सौभाग्य से वे सभी कम उम्र में ही मर गये, तीखोन और एक लडकी को छोडकर जिसका नाम मित्रोदोरा था—यो उसे 'सौदागर की सुन्दरी' कहते थे। अनेक दु खद तथा बेढगे अभिसारो के बाद एक अवकाश-प्राप्त अटार्नी से उसका ब्याह कर दिया गया था। अपनी मृत्यु से पहले मिस्टर नेदोप्यूस्किन तीखोन को किसी दफ्तर में साधारण क्लर्क की जगह दिलाने में सफल हो गये थे, लेकिन अपने पिता की मृत्यु होते ही तीखोन उस जगह से रीटायर हो गया। अनन्त चिन्ताओ, सर्दी और भूख से बचने के लिए हृदय-वेधी सघर्ष, मा की चिन्ता, जर्जर उदासी, पिता की हृदयवेधी खिन्नता, भू-स्वामिनियो और दूकानदारो की भोडी ज्यादतिया, जीवन की कभी न चुकनेवाली दैनिक यत्रणाओ ने तीखोन में एक अतिरजित भीरुता का सचार कर दिया था। अपने अफसर की शकल-भर देखने से उसे गश आ जाता था, और बन्दी हुए पक्षी की भाति वह कापने लगता था। उसने अपने दफ्तर को छोड दिया। प्रकृति अपनी उपेक्षा से, या शायद व्यग से, लोगो में दुनिया-भर के ऐसे गुणो तथा प्रकृतियो का बीज डाल देती है जिनका उनके साधनो तथा समाज मे उनकी स्थिति से कतई कोई मेल नही होता। गरीब क्लर्क के लडके तीखोन को—भावुक, निरुद्योगी, मृदु और स्पन्दनशील जीव को—एक ऐसे जीव को जो एकमात्र सुखभोग के लिए उपयुक्त तथा गध और रुचि की अत्यन्त कोमल चेतना से सज्जित था—प्रकृति ने विशेष

सावधानी और प्यार से गढा था . उसने उसे गढा था, अत्यन्त सावधानी के साथ उसे अन्तिम स्पर्श दिया था, और अपनी इस रचना को छोड दिया था, घास गोभी तथा गधाती मछली के सहारे वडा होने के लिए। और, देखो तो, जैसे भी बना प्रकृति का बनाया यह जीव पलता ही गया। और इस तरह उस चीज का सूत्रपात हुआ जिसे 'जीवन' कहते है। उसके बाद तमाशा शुरू हुआ। भाग्य, जिसने इतनी वेरहमी के साथ पिता नेदोप्यूस्किन को सताया था, अब वेटे के पीछे पडा। लगता है जैसे उसे इसका चसका पड गया था। लेकिन तीखोन के साथ अपने व्यवहार मे उसने दूसरी योजना से काम लिया। उसने उसे सताया नही, वल्कि उसके साथ खेल करना शुरू किया। उसने एक वार भी उसे मरता क्या न करता की स्थिति में नही डाला, भूख की नीचे गिरानेवाली वेदनाओ को सहने की ओर उसे नही धकेला, लेकिन उसने उससे समूचे रूस मे इस छोर से उस छोर तक खूब नाच नचाया—एक के वाद एक अपमानजनक तथा वेहूदा स्थितियो मे डालकर। कभी भाग्य ने उसे एक क्रोधी, चिडचिडी सम्पन्न महिला का वटलर वनाया, कभी एक धनी कजूस सौदागर के टुकडो पर जीनेवाला एक विनीत जीव, इसके वाद आखें टेरनेवाले एक मास्को श्रीमन्त का उसे प्राइवेट सेक्रेटरी वनाया जिसके वाल अग्रेजी ढग मे कटे रहते थे। फिर शिकार के प्रेमी और झगडालू स्तेप के एक जमीदार के यहा—भडारी तथा भाड के वीच के पद पर—उसे पहुचा दिया सक्षेप में यह कि भाग्य ने वूद वूद करके तीखोन को परजीवी अस्तित्व का विपभरा कटु प्याला पीने के लिए वाध्य किया। अपने समय में सनको के हाथो का खिलौना तथा काहिली मे डूबे मालिको की गवार खिलवाडो का वह पात्र वना। जाने कितनी वार, अपने घोडा-नाच से मेहमानो की भीड का खूब अच्छी तरह मन वहलाने के वाद, अन्त में चैन की सास लेने का अवसर मिलता तव वह अपने कमरे में अकेला शर्म से कटकर और आखो में निराशा के निर्मम आसू भरे हुए

प्रतिज्ञा करता कि वह चुपचाप भाग खडा होगा श्रौर शहर में जाकर किस्मत आज़मायेगा। क्लर्क आदि की छोटी-मोटी जगह वह अपने लिए तलाश कर लेगा, या हमेशा के लिए सडको पर भूख से दम तोडकर मर जायेगा। लेकिन, पहली बात तो यह कि विधाता ने उसे चरित्र की दृढता नही दी थी, दूसरे, उसकी भीरुता उसे शिथिल कर देती थी, श्रौर तीसरे वह अपने लिए कोई जगह कहा पाता? किसके आगे वह हाथ पसारता? "वे कभी मुझे कोई नौकरी नही देंगे," भाग्य का मारा नि सत्व भाव से अपने विस्तर पर करवट लेता हुआ वुदवुदाता, "वे कभी मुझे कोई नौकरी नही देंगे।" श्रौर अगले दिन वह फिर उसी जीवन का दामन पकडता। उसकी स्थिति श्रौर भी अधिक दु खद इसलिए थी कि प्रकृति ने, अपनी तमाम सावधानी के वावजूद, उस प्रतिभा श्रौर गुणो का जरा-सा भी समावेश उसमें नही किया था जिनके विना भाड का धधा निवाहना करीब करीब असम्भव हो जाता है। मिसाल के लिए, उसमें इतनी क्षमता नही थी कि भालू की खाल के कोट को उल्टा पहने हुए वह उस समय तक नाचता रहे जब तक कि गिर न पडे, न ही एकदम सिर पर सनसनाते हुए कोडो की छाया मे चुटकले वनाना तथा कलावाजी खाना उसके वस की वात थी। जव उसे नगा बीस डिग्री नीचे के तापमान में वाहर बरफ पर खडा कर दिया जाता तो वह कभी कभी सर्दी से बीमार पड जाता। उसका पेट भी ऐसा था कि शराव में मिली स्याही तथा अन्य खुराफात नही पचा सकता था, न ही वह सिरके में वना कुकुरमुत्तो का कीमा खा सकता था। कौन जाने, तीखोन का क्या हश्र होता, अगर उसके आखिरी हितैपी को—एक ठेकेदार को जो धनी वन गया था—यह न सूझता श्रौर तरग में आकर वह अपनी वसीयत में यह न लिखा जाता—'श्रौर ज्योज्या (यानी तीखोन) नेदोप्यूस्किन के लिए—क्योकि वह वडी अच्छी सीटी वजाता है—उसके श्रौर उसके उत्तराधिकारियो के स्थायी अधिकार मे—मैं वेस्सेलेन्देयेवका गाव, मय सारे लवाजमात के, छोडे

जाता हू जिसे मैंने कानूनी तौर से प्राप्त किया है।' इसके कुछ ही दिन बाद, स्तर्जन मछली का शोरवा खाते समय हितैषी को लकवा हो गया। भारी कुहराम मचा। पदाधिकारी आये, और मिल्कियत पर मोहर लगा गये। सगे-सबधी आये, वसीयत को खोला और पढा गया, और उन्होने नेदोप्यूस्किन को बुला भेजा। नेदोप्यूस्किन प्रकट हुआ। अधिकाश मण्डली जानती थी कि तीखोन इवानिच अपने हितैषी के घराने मे किस प्रकार की ड्यूटी सरजाम देता था। सो कानफोड किलकारियो तथा व्यगपूर्ण बधाइयो से उन्होने उसका अभिषेक किया। "भूस्वामी, यह है नये भूस्वामी!" अन्य उत्तराधिकारी चिल्लाये। "सचमुच," उनमे से एक ने स्वर मिलाया जो अपने मजाक तथा हसोडपन के लिए नामी था, "भई, सचमुच, कहा जा सकता है . कि वाकई इन्हे कि सचमुच यह... उत्तराधिकारी कहलाने योग्य है!" और वे सब के सब किलकारियो मे वह चले। काफी देर तक नेदोप्यूस्किन अपने इस सौभाग्य पर विश्वास नही कर सका। उन्होने उसे वसीयत दिखायी वह विह्वल हो उठा, उसने अपनी आखे मूद ली शर्म से लाल हो गया और आसुओ में फूट पडा। मण्डली की हसी एक गहरी सर्वसम्मिलित चिल्लाहट में परिवर्तित हो गयी। बेस्सेलेन्देयेवका गाव केवल बाईस दासो का गाव था, ऐसा नही था कि उसके जाने का किसी को गहरा खेद हो, क्यो न उससे थोडा जी ही बहला लिया जाय! उत्तराधिकारियो में से एक पीटर्सबर्ग से आया था। वह एक सुडौल आदमी था—यूनानी नाक और चेहरे पर राजसी भाव लिये। रोस्तिस्लाव अदामिच श्तोप्पेल—यही उसका नाम था—इतना आगे बढा कि नेदोप्यूस्किन के निकट जा पहुचा और अपने कधे के ऊपर से दम्भ के साथ उसने उसकी ओर देखा। "जहा तक मैं देख सकता हूं, माननीय श्रीमान," तिरस्कारपूर्ण लापर्वाही के साथ उसने कहा, "आदरणीय फ्योदोर फ़्योदोरोविच के घराने में उनके मन-बहलाव के लिए सदा तत्पर रहते थे?" पीटर्सबर्ग के इन महानुभाव ने

असह्य रूप में परिष्कृत, चुस्त और चौकस शैली में अपने-आपको व्यक्त किया। नेदोप्यूस्किन, विचलित और घबराया हुआ, अपरिचित महानुभाव के शब्दो को नही पकड सका, लेकिन अन्य सब तुरत चुप हो गये, मजाकिया दयालुतापूर्ण अन्दाज मे मुसकराये। मि० श्तोप्पेल ने अपने हाथो को मला और अपने प्रश्न को दोहराया। नेदोप्यूस्किन ने चकित भाव से अपनी आखें ऊपर को उठायी, और उसका मुह खुला का खुला रह गया। रोस्तिस्लाव अदामिच ने व्यग से अपनी पलको को नीचा किया।

"मै आपको बधाई देता हू, प्रिय श्रीमान, मै आपको बधाई देता हू," वह कहता गया, "यह सच है, अगर मुझसे पूछो तो इस ढग से अपनी रोजी का जुगाड करना हर कोई नही चाहेगा! लेकिन de gustibus non est disputandum*, अर्थात् हरेक की अपनी अपनी रुचि है क्यो?"

पीछे की ओर किसी ने, सराहना तथा खुशी से भरी एक द्रुत किलकारी भरी।

"तो हमें बताओ," समूची मण्डली की मुसकानो से उत्साहित मि० श्तोप्पेल ने कहना जारी रखा, "अपने इस सौभाग्य के लिए किस खास प्रतिभा के आप ऋणी है? नही, शरमाओ नही, हमें बताओ, हम सब यहा, जैसा कि कहते है en famille**, एक ही परिवार के है, क्यो महानुभावो, en famille?" उसने कहा।

लेकिन, इस सवाल के साथ अपने जिस सबधी की ओर रोस्तिस्लाव अदामिच मुडा वह, दुर्भाग्य से, फ्रेंच नही जानता था, सो वह अनुमोदन में धीमे से घुरघुराकर रह गया। लेकिन एक अन्य सबधी ने जो माथे पर पीली चित्तियो से भरा युवक था, अविलम्ब स्वर में स्वर मिलाया—"वूइ, वूइ, बेशक, बेशक!"

---

*हरेक की अपनी अपनी रुचि है।

**एक ही परिवार के।

"शायद," मि० श्तोप्पेल ने फिर कहना शुरू किया, "आप अपने हाथो के बल चल सकते है, टागो को ऊचा उठाये, मतलब हवा में हिलाते हुए ?"

नेदोप्यूस्किन ने त्रस्त भाव से नजर घुमाकर देखा—प्रत्येक चेहरा व्यगपूर्ण मुसकान धारण किये था, प्रत्येक आख खुशी से चमक रही थी।

"या शायद आप मुर्गे की भाति कुडकुडा सकते है?"

हर तरफ से हसी का एक जोरदार झोका उमडा, और तुरत ही खामोशी में बदल गया, आगे की उत्सुकता ने उसका मुह बद कर दिया।

"या शायद अपनी नाक के ऊपर आप "

"बद कीजिये यह सब!" अचानक एक ज़ोरदार सख्त आवाज़ ने रोस्तिस्लाव अदामिच को टोका, "आश्चर्य कि इस बेचारे को सताते आपको शर्म नही आती!"

सभी ने घूमकर देखा। दरवाजे में चेरतोपखानोव खडा था। मृत ठेकेदार का चार पुश्त दूर का भतीजा। इस नाते सबधियो की इस सभा के लिए उसे भी निमत्रण का पर्चा मिला था। वसीयत के पढे जाने के समूचे काल में उसने, जैसा कि वह हमेशा करता था, दम्भ के साथ अन्य सबसे अपने-आपको अलग रखा।

"बद करो यह सब!" उसने दोहराया, गर्व के साथ अपने सिर को पीछे की ओर फेकते हुए।

मि० श्तोप्पेल तेजी से घूमा, और गरीबाना कपडो में अनाकर्षक शकल के आदमी को सामने खडा देख दबे हुए स्वर में अपने पडोसी से (सावधानी हमेशा अच्छी होती है) उसने पूछा—

"यह कौन है?"

"चेरतोपखानोव—एक नगण्य-सा आदमी जिसे कोई पूछता नही," कान में फुसफुसाते हुए पडोसी ने कहा।

रोस्तिस्लाव अदामिच उद्धत हो उठा।

"और आप कौन होते है हुक्म देनेवाले?" गुनगुने स्वर मे उसने कहा, अपनी पलको को हिकारत से भीचते हुए, "किस बाग की मूली हो तुम, क्या मैं यह पूछ सकता हू?"

चेरतोपखानोव चिगारी पडने पर बारूद की भाति भभक उठा। गुस्से से उसका गला रुध गया।

"रस-रस-रस!" उन्मत्त की भाति उसने फुकारा, और फिर एकबारगी गरजा—"मैं कौन हू? कौन हू मैं? मैं हू पान्तेलेई चेरतोपखानोव, खानदानी कुलीनो के एक प्राचीन घराने की सन्तान, मेरे पूर्वज जार की सेवा करते थे। और आप—आप कौन है?"

रोस्तिस्लाव अदामिच का रग सफेद पड गया, और डग उठाकर पीछे की ओर हटा। वह इस तरह मुह की खाने की आशा नही करता था।

"मैं मैं . मैं पछी हूं!"

चेरतोपखानोव तीर की भाति आगे की ओर लपका, श्तोप्पेल भारी घबराहट के साथ उछलकर परे हो गया, अन्य सब उत्तेजित जमीदार के पास जा खडे होने के लिए दौडे।

"द्वन्द्व, द्वन्द्व, द्वन्द्व, इसी दम, रूमाल का पाला बनाकर!" गुस्से के आवेश में पान्तेलेई चिल्लाया, "या माफी मागियें मुझसे, और उससे भी "

"कृपया माफी माग डालिये," सब सबधी श्तोप्पेल के इर्द-गिर्द खडे बुदबुदाये, "यह तो पागल आदमी है, क्षण-भर में गला काटकर रख देगा।"

"माफ कीजिये, मुझे माफ कीजिये," श्तोप्पेल हकलाया, "मुझे मालूम नही था, मै नही जानता था . "

"और इससे भी माफी मागिये!" जरा भी नर्म न पडनेवाले पान्तेलेई ने जोरो से कहा।

"मैं आपसे भी माफी मागता हू," रोस्तिस्लाव अदामिच ने कहा,

नदोप्यूस्किन को सबोधित करते हुए जो इस तरह काप रहा था जैसे उसे जूडी चढी हो।

चेरतोपखानोव शान्त हो गया, बढकर तीखोन इवानिच के पास पहुचा, उसके हाथ को उसने अपने हाथ मे थामा, आक्रोश के साथ घूमकर देखा। किसी ने उसकी ओर नही देखा। वह विजयी अन्दाज मे गहरी खामोशी के बीच कमरे से बाहर हो गया, विधिवतप्राप्त बेस्सेलेन्देयेवका गाव के नये स्वामी को अपने साथ मे लिये हुए।

उस दिन से वे कभी अलग नही हुए (बेस्सेलेन्देयेवका गाव बेस्सोनोवो से केवल सात मील दूर था)। नेदोप्यूस्किन की अगाध कृतज्ञता ने देखते न देखते अत्यन्त मुग्ध श्रद्धा का रूप धारण कर लिया। दुर्बल, कोमल तीखोन – जो एकदम बेदाग नही था – निर्भीक और एकदम बेदाग पान्तेलेई के पावो की धूल चूमता। "यह क्या कोई मामूली चीज है," अपने मन में वह कभी कभी सोचता, "सीधे गवर्नर के चेहरे पर आखें गाडे बात करना   परमात्मा की सौगन्ध – सच, वह ऐसे देखता है उसे कि बस!"

वह चकित और विस्मित होता, उसकी प्रशसा मे अपनी आत्मा की समूची शक्ति को खर्च कर डालता, उसे एक असाधारण विभूति समझता – इतना चतुर, इतना विद्वान! और इससे इन्कार नही किया जा सकता कि बावजूद इसके कि चेरतोपखानोव ने ऐसी कोई खास अच्छी शिक्षा नही पायी थी, फिर भी – तीखोन की शिक्षा के मुकाबिले में – उसे विलक्षण कहा जा सकता था। यह सच है कि चेरतोपखानोव थोडा बहुत रूसी पढ रहा था, और फ्रेंच की उसकी जानकारी बहुत ही गयी बीती थी – इतनी गयी बीती कि एक बार, स्विस शिक्षक के इस सवाल का, "Vous parlez français, monsieur?"* उसने जवाब दिया, "मैं समझ . ." और एक क्षण सोचने के बाद उसने जोडा "नही"। लेकिन

---

* क्या आप फ्रेंच बोलते हैं, श्रीमान?

यह सब होने पर भी, वह वाल्टेयर के अस्तित्व से परिचित था – यह कि पहले किसी ज़माने में वह हुआ था, और यह कि वह बहुत ही बढिया व्यग-लेखक था। वह यह भी जानता कि प्रूशिया के राजा फ्रेडरिक महान ने सैनिक कमाण्डर के रूप में भारी ख्याति प्राप्त की थी। रूसी लेखकों में वह देरजाविन का सम्मान करता था, लेकिन पसन्द मर्लीन्स्की को करता था, और उसके कुत्तो में से जो सबसे अच्छा था उसका नाम उसने अम्मलत-बेक रखा था

दोनो मित्रो से मेरी पहली भेंट के कुछ दिन बाद पान्तेलेई येरेमेइच से मिलने मै बेस्सोनोवो गाव के लिए रवाना हुआ। उसका छोटा घर काफी दूर से देखा जा सकता था। वह गाव से आधा-एक मील दूर एक नगी-बूची जगह पर, जोते हुए खेत में बाज की भाति, स्थित था। चेरतोपखानोव की जागीर में विभिन्न आकार की चार खस्ताहाल इमारतो के अलावा और कुछ नही था। ये चार इमारते थी – उपगृह, एक अस्तबल, एक कोठडी, और एक स्नानघर। प्रत्येक इमारत अपने-आप मे अकेली खडी थी। न तो चारो ओर कोई बाडा था, और न ही कोई फाटक नजर आता था। मेरा कोचवान चकराकर एक कुवें के पास रुक गया जिसे भर दिया गया था, और जो करीब करीब लुप्त हो गया था। कोठडी के पास कुछ क्षीण-काय और लावारिस-से पिल्ले एक मृत घोडे को झझोड रहे थे जो सम्भवत ओरबस्सान था। उनमे से एक ने खून सनी अपनी नाक को ऊपर उठाया, उतावली के साथ भौका, और फिर नगी पसलियो को चिचोडने में जुट गया। घोडे के पास सत्रहेक वर्ष का एक लडका खडा था – कुप्पा-सा पीला चेहरा, नौकरो जैसे कपडे पहने, और नगे पाव। वह कुत्तो की देखभाल करने का दिखावा कर रहा था जोकि उसकी सुपुर्दगी में थे, और जब-तब उनमें सबसे ज्यादा लालची कुत्ते की अपने चाबुक से खबर भी लेता जाता था।

"क्या तुम्हारे मालिक घर पर है?" मैंने पूछा।

"खुदा जाने!" लडके ने जवाब दिया। "दरवाज़ा खडकाकर देख ले।"

मैं कूदकर बग्घी से बाहर आ गया और उपगृह की पैंडियो के पास पहुचा।

मि० चेरतोपखानोव का घर बहुत ही उदास दृश्य प्रस्तुत करता था–कडिया काली पड गयी थी और बीच में से आगे को उभर आयी थी, चिमनी गिर गयी थी, घर के कोने सीलन से खराब हो गये थे और बीच में बाहर की ओर बैठ चले थे। छोटी छोटी, धूल-धूसरित नीली-सी खिडकिया, बाहर को लटक आयी ऊबड-खावड छत के नीचे से, झाक रही थी–इतनी उदास मुद्रा में कि वर्णन नही किया जा सकता। कुछ खूसट वेसवाए कभी कभी ऐसी ही आखो से देखा करती है। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। कोई जवाब नही मिला। लेकिन, दरवाजे के भीतर से, कोई तेज तेज आवाज में बोल रहा था।

"क, ख, ग–समझे, मूर्ख!" बैठी हुई सी एक आवाज कह रही थी, "क, ख, ग, घ नही! घ, ङ, च, च, च! हा तो अब, मूर्ख!"

मैंने दूसरी बार दरवाजा खटखटाया।

वही आवाज चिल्लायी–"चले आइये, कौन है?"

मैंने एक छोटी खाली ड्योढी मे पाव रखा और खुले हुए दरवाज़े में से खुद चेरतोपखानोव पर मेरी नजर पडी। एक चीकट बोखारे का चोगा, शलवार और लाल रग की चिन्दिया-सी टोपी पहने वह एक कुर्सी पर बैठा था। अपने एक हाथ में वह किशोर छोटे कुत्ते का मुह दबोचे था, और दूसरे हाथ में ठीक उसकी नाक के ऊपर रोटी का एक टुकडा थामे था।

"ओह!" अपनी जगह से बिना हिले ही उसने गरिमा के साथ कहा, "बड़ी खुशी हुई आपको देखकर। कृपया बैठिये। मैं ज़रा बेज़ोर के साथ व्यस्त हूं तीखोन इवानिच," अपनी आवाज़ को ऊचा उठाने

हुए उसने जोडा, "जरा इधर आओ, आ रहे हो न? यह देखो, मेहमान आये है।"

"आया, आ रहा हू," तीखोन इवानिच ने दूसरे कमरे से जवाब दिया। "माशा, जरा गुलूबद तो देना!"

चेरतोपखानोव फिर वेन्जोर के साथ जुट गया और रोटी का टुकडा उसकी नाक पर रखा। मैने इर्द-गिर्द नजर डाली। सिवाय एक दीमक लगे, लम्बे फोल्डिग मेज के जिसकी तेरह टागें थी, कोई लम्बी कोई छोटी, और इस्तेमाल करते करते बीच में बैठी हुई चार गयी बीती बेंत की कुर्सियो के कमरे में और किसी तरह का फर्नीचर नही था। दीवारो पर से, जिन पर जगह जगह नीले धब्बे पडे थे और जिनपर जाने किस युग में सफेदी की गयी थी, पपडिया उतर रही थी। खिडकियो के बीच की जगह में, लकडी के भीमाकार चौखटे मे जडा, एक खडित जग आलूदा शीशा लटक रहा था। चौखटे पर रोगन किया हुआ था जिससे वह महोगनी जैसा मालूम होता था। कोनो में पाइप-स्टेण्ड और बन्दूकें रखी थी, और छत से घने काले जाले लटक रहे थे।

"क, ख" चेरतोपखानोव ने धीरे धीरे दोहराया, और अचानक गुस्से से चिल्ला उठा—"खा, खा, खा! उफ, कितना बेवकूफ जानवर है!"

लेकिन भाग्यविहीन पिल्ला केवल थरथराया, और यह निश्चय नही कर सका कि अपना मुह खोले या नही। वह अब भी बेचैनी से अपनी दुम दबाकर वैसे ही बैठा था। उसने अपने मुह को सिकोडा, निराशा से अपनी आखो को मिचमिचाया और भीचा जैसे अपने-आप से कह रहा हो— "बेशक, जैसी आपकी इच्छा हो!"

"अच्छा तो यह ले, खा! ले न, पहले!" अनथक मालिक ने दोहराया।

"आपने इसे डरा दिया है," मैने कहा।

"तो यह ले, दफा हो जा यहा से!"

उसने उसे लात जमायी। गरीब कुत्ता उठ खडा हुआ, नाक पर रखा टुकडा धीमे से नीचे जा गिरा और वह—जैसे पजो के वल ड्योढी की ओर चल दिया—अत्यन्त आहत भाव से कि एक अजनवी के सामने, जो पहली वार आया था, उसके साथ ऐसा व्यवहार किया गया था।

अगले कमरे में से दरवाजे के चरचराने की धीमी आवाज आयी, और नेदोप्यूस्किन ने प्रवेश किया, मिलनसारी के साथ माथा नवाते और मुसकराते हुए।

मैंने उठकर नमस्कार किया।

"अरे नही, अपने को परेशान न करे, अपने को परेशान न करे।" वह तुतलाया।

हम वैठ गये। चेरतोपखानोव अगले कमरे मे चला गया।

"इधर, हमारे पडोस में, आपको आये अधिक दिन हुए ?" नेदोप्यूस्किन ने कहना शुरू किया, नम्र आवाज में, अहतियात के साथ मुह पर हाथ रखकर खखारते और सलीके से अपनी उगलियो को होठो के सामने रखे हुए।

"हा मै पिछले महीने आया था।"

"वही तो।"

कुछ क्षण हम चुप रहे।

"वडा प्यारा मौसम इस समय चल रहा है," नेदोप्यूस्किन ने फिर कहना शुरू किया, और कुछ ऐसे कृतज्ञता भरे अन्दाज मे उसने मेरी ओर देखा जैसे मौसम को इतना अच्छा वनाने का श्रेय मुझे ही प्राप्त हो, "अनाज, कह सकते है कि खेतो मे खूव खूव हरा-भरा है।"

सिर हिलाकर मैंने सहमति प्रकट की। इसके वाद हम फिर चुप हो गये।

"पान्तेलेई येरेमेइच ने कृपाकर कल दो खरगोश मारे," नेदोप्यूस्किन ने सप्रयास फिर कहना शुरू किया, प्रत्यक्षत. वातचीत को कुछ सजीव वनाने की इच्छा से, "और, सच, श्रीमान, वहुत ही वड़े खरगोश थे वे।"

"क्या मि० चेरतोपखानोव के पास अच्छे शिकारी कुत्ते है?"

"अत्यन्त अद्‌भुत, श्रीमान!" नेदोप्यूस्किन ने आह्लादित होते हुए जवाव दिया, "कह सकते है कि प्रान्त में सबसे अच्छे।" (वह मेरे और निकट खिसक आया।) "लेकिन, फिर, पान्तेलेई येरेमेइच भी तो एक अद्‌भुत आदमी है। बस उनके किसी चीज की इच्छा-भर करने की देर है, केवल उनके दिमाग में किसी बात के आने-भर की देर है—कि इससे पहले कि आप घूमकर देखें, उसे पूरा हुआ पाइयेगा। हर चीज, आप कह सकते है, घडी की सूई की भाति चलती है। पान्तेलेई येरेमेइच, सच मानें "

चेरतोपखानोव कमरे में लौट आया। नेदोप्यूस्किन मुसकराया, उसका बोलना बद हो गया, और एक ऐसी नज़र से उसने मुझे इगित किया जो कहती प्रतीत होती थी, "यह लीजिये, अब खुद अपनी आखो से देखकर निश्चय कर लीजिये!" हम शिकार के बारे में बाते करने लगे।

"क्या आप मेरे कुत्तो को देखना चाहेगे?" चेरतोपखानोव ने मुझसे पूछा, और जवाब की प्रतीक्षा किये बिना उसनें कार्प को बुलाया।

एक हृष्ट-पुष्ट युवक ने अन्दर प्रवेश किया। उसनें नानकिन का हरे रग का लम्बा कोट पहन रखा था जिस पर नीले रग का कालर तथा ऐसे बटन लगे थे जो नौकरो की वर्दियो पर लगाये जाते है।

"फोम्का से कहो," चेरतोपखानोव ने एकाएक कहा, "कि अम्मलत और सैंगा को ले आय, कायदे के साथ, समझ गये न?"

कार्प की पूरी बत्तीसी खिल गयी, एक अस्पष्ट-सी ध्वनि उसके मुह से निकली, और वह चला गया। फोम्का प्रकट हुआ, वालो को खूब सवारे और बटनो को कसकर बद किये, पावो में बडे बूट पहने और शिकारी कुत्तो को साथ लिये। शिष्टता के नाते मैंने मूर्ख जानवरो को सराहा (ग्रे हाउड सबके सब, अत्यन्त मूर्ख होते है)। चेरतोपखानोव ने अम्मलत के ठीक नथुनो में थूका, लेकिन इससे—प्रत्यक्षत—कुत्ते को

कतई सन्तोष प्रदान नही हुआ। नेदोप्यूस्किन ने भी कुत्ते के पृष्ठ भाग को थपथपाया। हम फिर बाते करने लगे। धीरे धीरे चेरतोपखानोव पूर्णतया खुल चला। अब न तो उसे अपनी प्रतिष्ठा की टेक थामे रहने की जरूरत थी और न ही वह उद्धत भाव से नाक से फुकार छोडता था। उसके चेहरे का भाव बदल गया था। वह मेरी और नेदोप्यूस्किन की ओर देख रहा था

"अरे," वह अचानक चिल्लाया, "वह भला वहा अकेली क्यो बैठी है? माशा! अरी ओ माशा! यहा आ जाओ!"

अगले कमरे मे किसी ने हरकत की, लेकिन जवाब कुछ नही मिला।

"मा-आ-शा!" चेरतोपखानोव ने दुलार से दोहराया। "यहा चली आ! सब ठीक है, डर नही।"

दरवाजा धीमे से खुला, और बीसेक बरस की एक लम्बी छरहरी लडकी पर मेरी नजर पडी – जिप्सियो जैसा सावला चेहरा, भूरी आखे, मुलायम काले बाल, मोतियो-से वडे वडे दात जो लाल होठो के बीच खूब उजले चमक रहे थे। वह सफेद कपडे पहने थी, और नीले रग का शाल, सोने के ब्रूच के सहारे उसके गले के इर्द-गिर्द सटा उसकी कोमल सुन्दर बाहो को – जो उसकी उत्कृष्ट जाति की सूचक थी – आधा ढके था। वन के जीव की भाति सलज्ज अटपटेपन के साथ वह दो डग बढी, फिर थिर खडी होकर नीचे की ओर देखने लगी।

"आओ, इन से परिचय " पान्तेलेई येरेमेइच ने कहा। "यह ठीक मेरी पत्नी तो नही, लेकिन पत्नी जैसी ही समझो।"

माशा का चेहरा लाल हो गया और वह सकपकाकर मुस्कराने लगी। मैंने खूब झुककर उसका अभिवादन किया। मुझे वह बडी आकर्षक मालूम हुई। तोते जैसी नाक, आधी पारदर्शी नासिकाएं, खूब उभरी हुई कमान-सी भौहे, करीब करीब अन्दर को धसे पीतवर्ण गाल – उसके चेहरे का प्रत्येक नक्श उसकी हठी रागात्मकता तथा उसकी बेलगाम शैतानियत

का सूचक था। उसके जूडे के नीचे से छोटे छोटे आवदार वालो की दो पाते जो उसकी प्रशस्त गरदन पर से होती नीचे तक चली गयी थी—उसकी नस्ल तथा स्फूर्ति की परिचायक थी।

वह खिडकी के पास आकर वैठ गयी। मैंने उसकी परेशानी को वढाना नही चाहा, और चेरतोपखानोव से वाते करने लगा। माशा ने चतुराई के साथ अपना सिर मोडा, और अपनी पलको की ओट में से मेरी ओर झाकने लगी—चोरी-छिपे, विल्लियो की तरह और द्रुतगति से। उसकी नजर साप के डक की भाति लपकती मालूम होती थी। नेदोप्यूस्किन ने उसकी वगल में वैठकर उसके कान में कुछ फुसफुसाया। वह फिर मुसकरा उठी। जव वह मुसकराती थी तो उसकी नाक थोडा ऊपर की ओर सिमट जाती और उसका ऊपर का होठ ऊचा हो जाता था, जिससे उसके चेहरे पर विल्ली या शेर जैसा एक भाव छलक आता था

"ओह, लेकिन हो तुम 'छुई-मुई' किस्म की औरत," मैंने सोचा, अपनी वारी उसकी चपल काठी, पिचकी हुई छातियो और उसकी द्रुत नोक-नुकीली हरकतो पर चोरी-छिपे नजर डालते हुए।

"माशा," चेरतोपखानोव ने पूछा, "अपने मेहमान की खातिर करने का भी तुम्हे कुछ खयाल है?"

"घर में कुछ मुरब्वा तो है," उसने जवाब दिया।

"अच्छा, तो मुरब्वा यहा ले आ, और जव कुछ लेने ही जा रही हो तो थोडी वोद्का भी। और सुनो, माशा," उसके पीछे चिल्लाकर उसने कहा, "अपनी गितार भी लेती आना।"

"गितार किस लिए? मैं गाऊ-वजाऊगी कुछ नही!"

"क्यो?"

"मेरा जी नही है!"

"ओह, यह फिजूल की वात है। जी करने लगेगा जव "

"जव क्या?" माशा ने पूछा, तेजी से अपनी भौहों में वल डालते हुए।

"जव तुमसे प्रार्थना की जायेगी," चेरतोपखानोव थोडी परेशानी के साथ कहता गया।

"ओह!"

वह चली गयी, जल्दी ही मुरव्वा और वोद्का लिये हुए लौट आयी और फिर खिडकी के पास जाकर वैठ गयी। उसके माथे पर भी एक रेखा खिची थी, और दोनो भौहे तत्तिये के नकुवो की भाति उठ और गिर रही थी। क्या आपने, पाठको, कभी इस वात पर ध्यान दिया है कि तत्तिये का चेहरा कितना दुष्टतापूर्ण होता है? "हा तो," मैने सोचा, "खुदा ही अव खैर करे!" वातचीत का सिलसिला लडखडा चला। नेदोप्यूस्किन विल्कुल चुप होकर वैठ गया, और चेहरे पर वाधित मुसकान सजा ली,चेरतोपखानोव हाफा, लाल हो उठा और अपनी आखो को उसने वरवट्टा-सा खोल लिया। मै विदा लेने ही वाला था कि अचानक माशा उठी, खिडकी के पल्लो को उसने फटाक् से खोला, अपना सिर वाहर निकाला और उधर से गुजरती एक किसान स्त्री को ललकारकर आवाज दी—"अक्सीन्या!" स्त्री चौकी, घूमकर देखने की उसने कोशिश की, लेकिन उसका पाव फिसला और वह धम्म से धरती पर आ गिरी। माशा ने अपने वदन को पीछे की ओर फेंका और ठहाका मारकर हसी, चेरतोपखानोव भी हसा। नेदोप्यूस्किन तो खुशी से चीख उठा। हम सव फिर चेतन हो गये। विजली की एक ही कौंध मे तूफान गुजर गया वायुमण्डल अव फिर साफ था।

आव घटा वाद हमें कोई पहचान तक न पाता। हम वच्चो की भाति खिलवाड कर रहे थे। माशा सवसे ज्यादा मग्न थी, चेरतोपखानोव की आखें तो जैसे उसपर चिपक कर रह गयी थी। उसका चेहरा अव अधिक पीतवर्ण हो गया था, उसके नथुने फूले थे, उसकी आखें एक साथ दमक भी रही थी और अधियारी भी हो उठती थी। वन का जीव जैसे खिलवाड कर रहा हो। नेदोप्यूस्किन अपनी छोटी, गावदुम नन्ही

टागों पर, उसके पीछे इस तरह फुदक रहा था जैसे नर वत्तख मादा वत्तख के पीछे फुदकता है। यहा तक कि वेन्जोर भी ड्योढी में अपने छिपने की जगह से वाहर रेग आया, क्षण-भर के लिए दरवाज़े पर ठिठका, हमारी ओर उसने देखा, और अचानक हवा में ऊचे उछलने तथा भौकने लगा। माशा दूसरे कमरे में तैर गयी, गितार को थामा, शाल को कधो से उतार परे फेंका, फुर्ती के साथ आसन जमाया और, अपने सिर को ऊचा उठाते हुए, एक जिप्सी गीत गाना शुरू कर दिया। उसकी आवाज गूजी, वैसे ही कम्पन के साथ जैसा कि काच की टूटी घटी के वजाने पर कर्कश-सा शब्द उत्पन्न होता है, लपककर आकाश की ऊचाइयो मे खो गयी . उसके गीत से हृदय माधुर्य और वेदना से भर उठा। "ओह, क्या खूब!" चेरतोपखानोव ने नाचना शुरू किया। नेदोप्यूस्किन अपनी टागो को झुलाकर तथा फर्श पर ठोक ठोककर ताल देने लगा। माशा का रोम रोम थिरक रहा था, आग की लपटो से घिरी वर्च की छाल की भाति। उसकी कोमल उगलिया मगन भाव से गितार पर तैर रही थी, उसका सावला गला अम्वर की दो पातो के नीचे धीमी उसास भर रहा था। कभी, एकदम अचानक, वह गाना वद कर देती, थककर निढाल हो जाती, और गितार को – जैसे अनिच्छा से – टकारा देती। चेरतोपखानोव थिर खडा हो जाता केवल अपने कधो को हिलाता और उसी जगह पर घूमता हुआ। नेदोप्यूस्किन चीनी गुड्डे की भाति अपना सिर हिलाता। इसके बाद वह फिर गाना शुरू करती, उन्मत्त की भाति, अपने-आपको समेटते और अपने सिर को सीधा करते हुए, और चेरतोपखानोव फिर धरती को चूमता, उछलकर छत को छूता, लट्टू की भाति चकरघिन्नी वन जाता, कूकते हुए – "तेज, और तेज!"

"तेज, तेज, और भी तेज!" नेदोप्यूस्किन स्वर में स्वर मिलाता, अत्यन्त तेजी से वोलते हुए।

काफी रात वीत चुकी थी जव मैं वेस्सोनोवो से विदा हुआ

चेरतोपखानोव का अन्त

१

पान्तेलेई येरेमेइच के यहा मेरे जाने के दो वर्ष बाद उसकी मुसीबतो का – वास्तविक मुसीबतो का – आरम्भ हुआ। निराशाए, दुर्घटनाए, यहा तक कि भाग्य की चोटे तो इससे पहले भी उसपर पडी थी, लेकिन उसने उनकी परवाह नही की और उसका 'राजसी' जीवन पहले की तरह चलता रहा। पहला आघात जो उसे लगा, वह उसके लिए अत्यन्त हृदयविदारक था। माशा उसे छोड गयी।

उसके घर को जिसमें वह इतने पूर्ण अपनत्व का अनुभव करती मालूम होती थी, छोडने के लिए किस चीज ने उसे प्रेरित किया, यह कहना कठिन है। चेरतोपखानोव को अपने जीवन के अन्तिम दिनो तक, यह विश्वास रहा कि माशा के भागने की तय में एक युवा पडोसी का हाथ था। वह ऊलान सेना का अवकाश-प्राप्त कप्तान था और उसका नाम याफ था। उसने, पान्तेलेई येरेमेइच के अनुसार, केवल अपनी मूछो में निरन्तर वल डालकर, जरूरत से ज्यादा क्रीम थोपकर और अर्थपूर्ण ढग से मुसकरा मुसकराकर उसका मन मोह लिया था, लेकिन यह मानना पडेगा कि इसके लिए माशा की रगो मे प्रवाहित स्वेच्छाचारी जिप्सी रक्त अधिक जिम्मेदार था। जो भी इसका कारण रहा हो, एक सुहावनी साझ माशा ने एक छोटी-सी पोटली में अपना रण्डीरा सभाला, और चेरतोपखानोव के घर से बाहर हो गयी।

इससे पहले तीन दिन तक वह एक कोने में दीवार के सहारे, घायल लोमडी की भाति, गुडमुडी-सी बैठी रही, और किसी से एक शब्द तक नही बोली। वह केवल अपनी आखो को इधर-उधर घुमाती, अपनी भौहो को ऐंठती, अपनी बत्तीसी झलकाती और अपनी वाहो को इस तरह हिलाती जैसे वह अपने-आपको लपेट रही हो। इस तरह की मनस्थिति पहले भी उसपर सवार हो चुकी थी, लेकिन वह कभी ज्यादा देर तक नही टिकी। चेरतोपखानोव यह जानता था, सो न तो वह खुद परेशान होता था और न उसे ही परेशान करता था। लेकिन अब जब वह कुत्ता-घर से लौट रहा था, जहा, शिकारिये के शब्दो में, उसके अन्तिम दो शिकारी कुत्तो का 'निधन' हो गया था, रास्ते में एक चाकर-लडकी से उसकी भेट हुई जिसने, कापती हुई आवाज मे उसे वताया कि मारीया आकीनफियेवना ने उनके लिए अपना वहुत वहुत अभिवादन भेजा है, और कह गयी है कि वह उनके लिए हर सुख की कामना करती है, लेकिन अब उनके पास लौटकर आने की उसकी कोई इच्छा नही है। ठीक उसी जगह जहा वह खडा था घिन्नी काटने और एक भरभरी-सी चीख मारने के वाद, चेरतोपखानोव फौरन भागनेवाली के पीछे लपका, जाते समय झटपट अपना पिस्तौल उठाते हुए।

घर से डेढ-एक मील दूर, बर्च की एक बनखडी के पास, ज़िला-नगर की सडक पर, उसने उसे जा पकडा। सूरज क्षितिज पर छिप रहा था, और हर चीज़ अचानक गुलाबी आभा से रजित हो उठी थी—पेड, पौधे और धरती, सभी कुछ समान रूप से।

"याफ! याफ के पास!" माशा पर जैसे ही नज़र पडी, चेरतोपखानोव चीख़ उठा, "याफ के पास जा रही है!" दौडकर उसके पास पहुचते हुए और प्राय हर डग पर लड़खडाते हुए उसने दोहराया।

माशा थिर खडी हुई और घूमकर उसकी ओर उन्मुख हो गयी। उजाले की ओर उसकी पीठ थी और वह ऊपर से नीचे तक काली नज़र

आ रही थी, मानो आबनूस से काटकर उसे गढा गया हो। केवल उसकी आखो की सफेदी रुपहले बादामो की भाति, उभरी थी, लेकिन खुद आखो का—पुतलियो का—जहा तक सबध था, वे और भी काली हो उठी थी।

उसने अपनी पोटली को फेंक दिया, और बाह पर बाह रखी।

"तुम याफ के पास जा रही हो, छिनाल!" चेरतोपखानोव ने दोहराया। वह उसे कधो से दबोचने जा ही रहा था कि उनकी आखें मिली, वह झिझका और बेचैनी के साथ वही का वही खडा रह गया।

"मै मिस्टर याफ के पास नही जा रही हू, पान्तेलेई येरेमेइच," कोमल, सम लहजे में माशा ने जवाब दिया, "बात केवल यह है कि मै अब और अधिक तुम्हारे साथ नही रह सकती।"

"तुम मेरे साथ नही रह सकती? क्यो नही रह सकती? क्या मैने तुम्हे किसी तरह नाराज किया है?"

माशा ने अपना सिर हिलाया।

"तुमने, पान्तेलेई येरेमेइच, किसी तरह भी मुझे नाराज नही किया है, केवल मेरा हृदय तुम्हारे घर मे बोझल हो उठता है अतीत के लिए धन्यवाद, लेकिन मै रुक नही सकती, नही!"

चेरतोपखानोव चकित रह गया। उसने, जोर से, अपनी जाघो पर हाथ पटके और उछला।

"यह कैसे हो सकता है? सारा वक्त मेरे साथ रहती रही, और सिवा शान्ति तथा सुख के और कुछ इसने नही जाना, और एकदम अचानक—इसका हृदय बोझिल हो उठता है! और यह मुझे धत्ता बताती है। बस, उठती और अपने सिर पर रूमाल बाध चल देती है। हर तरह का सम्मान मैने इसे दिया, कुलीन महिला की भाति!"

"ऊह, मै इसकी जरा भी पर्वाह नही करती," माशा ने बीच में टोका।

"पर्वाह नही करती? खानाबदोश जिप्सी से कुलीन महिला बन गयी, और इसे पर्वाह नही। नीचे कुल में जन्मी दासी! तुम इसकी पर्वाह कैसे नही करती? क्या तुम उम्मीद करती हो कि मै इसपर विश्वास करूगा? इसके पीछे विश्वासघात है—विश्वासघात!"

उसने फिर बड़बडाना शुरू कर दिया।

"मेरे मन में कोई विश्वासघात नही है, और न ही कभी रहा," अपनी सुस्पष्ट गूजती आवाज़ में माशा ने कहा। "मै तुम्हे बता चुकी हूं कि मेरा हृदय बोझल हो उठा था।"

"माशा!" चेरतोपखानोव चीखा, अपने घूसे से अपने वक्ष पर आघात करते हुए। "बस, बद करो। तुमने मुझे यत्रणा दी है... बस, बहुत हो चुका! ओ मेरे भगवान! ज़रा सोचो तो, तीखोन क्या करेगा, उसपर तो तरस खाती कम से कम!"

"तीखोन इवानिच को मेरी नमस्ते कहना और उनसे कहना. ."

चेरतोपखानोव ने अपने हाथो को मरोडा।

"नही यह सब तुम बकवास कर रही हो—तुम कही नही जाओगी। तुम्हारा याफ बेकार तुम्हारी इन्तज़ार करता रहेगा!"

"मिस्टर याफ " माशा ने कहना शुरू किया।

"वाह, बडा आया मिस्टर याफ!" चेरतोपखानोव ने नकल उतारते हुए कहा। "वह छिपा हुआ बदमाश है, कमीना कुत्ता—बनमानुष जैसी थूथनीवाला।"

पूरे आधे घटे तक चेरतोपखानोव माशा से जूझता रहा। वह उसके निकट बढ आता, पीछे हटता, घूसे तानकर उसे दिखाता, उसके आगे माथा नवाता, रोता, उसे झिडकिया देता।

"नही, मै नही चल सकती," माशा ने दोहराकर कहा—"मेरा हृदय इतना भारी है ऊब मुझे मार डालेगी।"

थोडा थोडा करके उसके चेहरे ने कुछ ऐसी उदासीनता का, करीब

करीव उनींदा-सा, भाव धारण कर लिया कि चेरतोपखानोव को उससे पूछना पडा कि कही उन्होने उसे अफीम का सत तो नही दे दिया है।

"यह ऊव है," उसने दसवी वार दोहराया।

"तो अगर मैं तुम्हे मार डालू तो?" चेरतोपखानोव ने जेव में से पिस्तौल निकाल लिया।

माशा मुसकरायी, उसका चेहरा खिला।

"तो यह लो, मुझे मार डालो, पान्तेलेई येरेमेइच, करो जो तुम चाहो, लेकिन मैं वापिस चलू, सो नही होगा।"

"तो तुम वापिस नही लौटोगी?" चेरतोपखानोव ने पिस्तौल ताना।

"मैं वापिस नही चलूगी, मेरे प्रिय। जीवन-भर मैं कभी वापिस नही चलूगी। इसे पत्थर की लकीर समझो।"

चेरतोपखानोव ने अचानक पिस्तौल को उसके हाथ में खोसा, और धरती पर वैठ गया।

"तो फिर तुम मुझे ही मार डालो! तुम्हारे विना मुझे जीने की इच्छा नही। मैं तुम्हारे लिए भार हो गया हू, और हर चीज मेरे लिए भार हो गयी है।"

माशा नीचे झुकी, अपनी पोटली को उसने उठाया, पिस्तौल को घास पर रखा—उसका मुह चेरतोपखानोव से दूसरी ओर करते हुए—और उसके पास गयी।

"ओह, मेरे प्रिय, क्यो अपने को दुखी करते हो? क्या तुम नही जानते कि जिप्सी लडकिया कैसी होती है? यह हमारा स्वभाव है और यह वात तुम्हे समझ लेनी चाहिए। जव दिल को वेचैन करनेवाली ऊव आती है और आत्मा का कही दूर अनजान देशो के लिए आह्वान करती है तो कोई कैसे रुक सकता है? अपनी माशा को नही भूलना, ऐसी माशूका तुम्हे कोई नही मिलेगी, और मैं भी तुम्हे—मेरे प्यारे—

नही भूलूगी, लेकिन हमारा एक साथ जीवन—वह एक बीती हुई बात है!"

"मै तुम्हे प्यार करता हू, माशा," चेरतोपखानोव अपनी उगलियो में बुदबुदाया जिनसे वह अपना मुह ढके हुए था।

"मै भी, प्यारे पान्तेलेई येरेमेइच, तुम्हे प्यार करती हू।"

"मै तुम्हे प्यार करता हू, मै तुम्हे प्यार करता हू, पागलो की भाति प्यार करता हू, बेसुध होकर पर तुम, सारी सुध-बुध के रहते, बिना किसी तुक के, मुझे छोडकर धरती की धूल छानने जा रही हो मुझे लगता है, अगर मै गरीब न होता तो तुम मुझे धत्ता न बताती।"

इन शब्दो पर माशा केवल हस दी।

"और तुम कहा करते थे कि मै धन की पर्वाह नही करती," उसने टिप्पणी की, और चेरतोपखानोव के कधे को आवेग के साथ थपथपाया।

वह उछलकर अपने पावो पर खडा हो गया।

"तो चलो, कम से कम मुझे इसकी तो अनुमति दो कि तुम्हे कुछ धन दे सकू—भला इस तरह बिना एक कोपेक के, तुम कैसे जा सकती हो? लेकिन सब से अच्छा यही है कि तुम मुझे मार डालो। मै तुमसे साफ साफ कहता हू—मुझे अभी मार डालो।"

माशा ने फिर अपना सिर हिलाया। "तुम्हे मार डालू? साइबेरिया की हवा खाने का मुझे चाव नही है, प्यारे!"

चेरतोपखानोव थरथराया। "तो केवल इसलिए—केवल काले पानी की सज़ा के डर से—तुम इससे हाथ खीच रही हो?"

वह फिर घास पर लुढक गया।

माशा चुपचाप उसके पास खडी रही।

"तुम्हारे लिए, मेरे राजा, मुझे अफसोस है," एक उसास भरते हुए उसने कहा। "तुम अच्छे आदमी हो लेकिन कोई चारा नही। अच्छा तो विदा!"

वह मुडी और दो डग उठाये। रात अब उतर आयी थी, और चारों दिशाओं से साये घिरते आ रहे थे। चेरतोपखानोव तेजी से उछलकर खडा हुआ, और लपककर पीछे से माशा को कोहनियो से पकड लिया।

"तुम . . सपोलिन . . मुझे इस तरह छोडकर जा रही हो, याफ के पास!"

"विदा!" माशा ने तेजी से और अर्थपूर्ण ढग से दोहराया, अपने को उससे छुडाया और चल दी।

चेरतोपखानोव ने उसे जाते देखा, लपककर उस जगह पहुचा जहा पिस्तौल पडा था, झपटकर उसे उठाया, निशाना साधा, और गोली दाग दी . . लेकिन इससे पहले कि वह घोडे को छूता, उसकी बाह ने ऊपर की ओर झोका खाया, और गोली सनसनाती हुई माशा के सिर के ऊपर से निकल गयी। उसने, बिना रुके, कधे के ऊपर से उसकी ओर देखा, और आगे बढती रही—चलते समय, मानो चुनौती के अन्दाज में, बदन को झुलाते हुए।

उसने अपने चेहरे को ढका, और भागने लगा . .

लेकिन अभी वह पचास-एक डग ही चला होगा कि अचानक थिर खडा हो गया, जैसे पत्थर का बुत बन गया हो। एक सुपरिचित, अत्यन्त सुपरिचित, आवाज तैरती हुई उसके पास आयी। माशा गा रही थी। 'यौवन के मधुर दिन' वह गा रही थी। गीत का प्रत्येक स्वर, आवेगमय और क्रन्दन से भरा, साझ की हवा में तैरता मालूम होता था। चेरतोपखानोव ध्यान से सुन रहा था। आवाज दूर, और दूर होती गयी। एक क्षण लगता जैसे वह खो गयी है, अगले क्षण वह फिर तिर आती, करीब करीब अस्पष्ट, लेकिन अभी भी आवेग की वैसी ही दमक लिये।

"मुझे चिढाने के लिए वह यह सब कर रही है," चेरतोपखानोव ने सोचा, लेकिन फौरन ही कराह उठा, "नही, यह उसकी अन्तिम विदा है—हमेशा के लिए अन्तिम विदा है," और उसकी आखो से आसू बह चले।

* * *

अगले दिन वह मि० याफ के घर जा पहुचा जो, दुनियादारी में खूब पगे हुए आदमी की भाति देहात के एकाकीपन से ऊवकर ज़िला-नगर में आ बसा था, ताकि—जैसा कि वह खुद कहा करता था, 'युवती महिलाओ का नैकट्य प्राप्त कर सके'। चेरतोपखानोव की याफ से भेंट नही हुई। उसके नौकर के शब्दो में, विगत साझ मास्को के लिए रवाना हो चुका था।

"तो यह बात है!" चेरतोपखानोव गुस्से से चीखा, "दोनो के बीच पहले से साठ-गाठ थी। वह उसके साथ भागी है   लेकिन जरा ठहरो!"

नौकर के प्रतिरोध करने के वावजूद वह युवा कप्तान के कमरे में घुस गया। कमरे में, सोफे के ऊपर, ऊलान वर्दी मे, मालिक का एक तैल-चित्र लटका हुआ था। "ओह, यह तुम हो, बिना दुम के वनमानुस!" चेरतोपखानोव गरजा, उछलकर सोफे पर खडा हो गया और अपने घूसे से कनवास मे एक रोशनदान खोल दिया।

"अपने दुकडिया मालिक से कहना," वह नौकर की ओर सवोधित हुआ "कि उसके गदे तोवडे की गैर हाजरी में कुलीन चेरतोपखानोव को तस्वीर को ही यह घूसा देना पडा और अगर उसके जी में मुझसे निवटने का खयाल हो तो वह जानता है कि कुलीन चेरतोपखानोव से कहा भेंट हो सकती है! या फिर मै खुद उसे खोज निकालूगा! उस शैतान वनमानुस को मै समुद्र की तलहटी में से भी खीच लाऊगा!"

इन शब्दो के साथ चेरतोपखानोव सोफे पर से कूदकर नीचे उतरा और शान के साथ वहा से चला आया।

लेकिन घोडसवार सेना के कप्तान याफ ने उससे निवटने की कोई माग नही की—यहा तक कि उससे उसकी कभी भी कही भेंट नही हुई—और चेरतोपखानोव ने भी अपने दुश्मन को खोज निकालने का कोई खयाल नही किया। फलत. कोई कुत्सा नही उटी। खुद माशा भी इसके शीघ्र

वाद ऐसी लापता हुई कि उसका कोई चिन्ह तक नही मिला। चेरतोपखानोव ने पीना शुरू किया, हालाकि वाद में, उसने अपने को 'सुधार' लिया। लेकिन, तभी, एक दूसरी गाज उसपर गिरी।

२

उसके हार्दिक मित्र तीखोन इवानिच नेदोप्यूस्किन की मृत्यु के रूप में यह गाज गिरी। मृत्यु से दो साल पहले से उसके स्वास्थ्य ने जवाव देना शुरु कर दिया था—उसे दमे के रोग ने सताना शुरू किया, नीद वरावर उसपर हावी रहती थी, और जव जागता था तो एकाएक अपने-आपे में नही आ पाता था। ज़िला डाक्टर का कहना था कि यह छोटे छोटे 'दौरो' का नतीजा है। माशा के भागने से पहले के तीन दिनो में—उन दिनो में जवकि माशा का हृदय वोझिल था—नेदोप्यूस्किन वहा मौजूद नही था, वह अपने घर वेस्सेलेन्देयेवका गया हुआ था, और ठड ने उसे वुरी तरह जकड लिया था। परिणामत माशा का व्यवहार उसके लिए और भी अधिक अप्रत्याशित सिद्ध हुआ—करीव करीव खुद चेरतोपखानोव से भी अधिक गहरा असर उसपर हुआ। मृदु स्वभाव और सकोचशील होने के कारण अपने मित्र के प्रति खेद तथा अत्यन्त वेदनापूर्ण आश्चर्य के सिवा उसने अपने मुह से और कुछ प्रकट नही होने दिया . लेकिन इसने उसके अन्तर की हर चीज को कुचल तथा मसोसकर रख दिया था। "वह मेरा हृदय नोचकर ले गयी," अपने प्रिय सोफे पर वैठते हुए वह मन ही मन वुदवुदाता और अपनी उगलियो को मरोडता। उस समय भी जवकि चेरतोपखानोव इस दुख पर कावू पा चुका था, वह—नेदोप्यूस्किन—अपने को नही सभाल सका था, और 'अपने अन्तर में शून्य का' अभी तक अनुभव करता था। "यहा," पेट के ऊपर अपने वक्ष के मध्य भाग की ओर इशारा करते हुए वह कहता। जाड़ो के आने तक वह इसी तरह घिसटता रहा। पालो के आगमन

पर उसका दमा तो अच्छा हो गया, लेकिन एक दूसरे दौरे ने—और इस बार किसी छोटे-से दौरे ने नही, बल्कि सच्चे, असदिग्ध दौरे ने—उसे आ पकडा। उसकी स्मृति फौरन गायब नही हुई। चेरतोपखानोव का, और अपने मित्र के इस हताशपूर्ण क्रन्दन का कि "तुम, तीखोन, मुझे छोडकर कैसे जा सकते हो, बिना मेरी अनुमति के—माशा की भाति?" उसे अभी भी चेत था, और लडखडाती तथा अनिश्चित-सी आवाज में उसने जवाब तक दिया—"ओ पान्ते-लेई ए-ए-इच मैं हमेशा खुशी से तुम्हारे आदेश पालन "

लेकिन इस सबके बावजूद, उसी दिन वह मर गया। उसने ज़िला डाक्टर की भी प्रतीक्षा नही की, जिसके लिए अभी मुश्किल से ठडे हुए उसके शरीर को देखकर अब कुछ करने को बाकी नही रहा था—सिवा इस दुनिया की हर चीज़ की क्षणभगुरता को उदास भाव से स्वीकार करने तथा "वोद्का की एक बूद और मछलियो का नाश्ता" तलब करने के। जैसा कि आशा थी, तीखोन इवानिच अपनी जागीर अपने श्रद्धेय पोषक तथा उदार सरक्षक 'पान्तेलेई येरेमेइच चेरतोपखानोव' के नाम छोड गया था, लेकिन श्रद्धेय सरक्षक के लिए वह कोई भारी लाभप्रद सिद्ध नही हुई, कारण कि कुछ ही दिन बाद उसे सार्वजनिक नीलामी के द्वारा बेच देना पडा—अशत इसलिए कि प्रस्तरीय स्मारक का—एक प्रतिमा का—खर्च पूरा करना था जिसे चेरतोपखानोव ने (और यहा उसके पिता की सनक को उसमें भी उभरता हुआ देखा जा सकता है) अपने मित्र की कब्र के ऊपर स्थापित करना उपयुक्त समझा था। इस प्रतिमा के लिए—जिसमें प्रार्थनारत एक फरिश्ते की छवि अकित होनी थी—उसने मास्को आर्डर भेजा था, लेकिन एजेण्ट ने—यह सोचकर कि देहातो में प्रतिमाओ के प्रेमियो के विरले ही दर्शन होते है—फरिश्ते के बजाए फूलो की देवी की सिफारिश की जो मास्को के निकट केथरीन के समय में लगाये गये उपेक्षित बागो में से एक में सुशोभित थी। ऐसा

करने का उसके पास एक बहुत ही माकूल कारण था। यह प्रतिमा, अत्यन्त कलात्मक, रोकोको शैली मे निर्मित तथा छोटी छोटी मासल बाहो, लहराते हुए घुघराले बालो, अनावृत्त वक्ष के इर्द-गिर्द गुलाब के एक हार और खमदार कमर होने पर भी उसे मुफ्त में मिल गयी थी। और सो कथा-पुरानो की यह देवी, अपने एक पाव को नफासत के साथ उठाये, तीखोन इवानिच की समाधि पर आज दिन भी खडी है और विशुद्ध पौम्पाडोर मुसकान के साथ, बछडो और भेडो की ओर—जो हमारे देहातो के कब्रिस्तानो मे बिला नागा आते है—ताकती रहती है।

३

अपने फरमानबरदार मित्र के निधन के बाद चेरतोपखानोव ने फिर पीना शुरू कर दिया, और इस बार कही अधिक। उसकी हर चीज एकदम बद से बदतर होती गयी। शिकार के लिए उसके पास पैसे नही रहे, उसकी अल्प सम्पदा, आखिरी पाई तक, स्वाहा हो गयी, उसके बचे-खुचे नौकर भाग गये। पान्तेलेइ येरेमेइच का एकाकीपन चरम सीमा को पहुच गया। ऐसा कोई नही था जिससे वह एक शब्द भी कह सकता, अपना हृदय उडेलकर रखने की तो बात ही छोडिये। अकेले उसके अहकार में कोई कमी नही आयी थी। इसके प्रतिकूल, उसकी स्थिति जितनी ही अधिक बदतर होती जाती थी, उतना ही अधिक वह खुद उद्धत, ऊचा और दुर्गम बनता जाता था। अन्त में वह मनुष्य मात्र से पूर्णतया घृणा करने लगा। बहलाव का एक साधन, एक सुख, उसके पास बच रहा था—दोन नस्ल का एक लाजवाब भूरे रग का घोडा जिसे वह मालेक-आदेल नाम से पुकारता था। वह सचमुच एक अद्भुत जानवर था।

यह घोडा नीचे लिखे ढग से उसके अधिकार में आया था।

एक दिन वह पडोस के एक गाव में से गुजर रहा था। तभी चेरतोपखानोव ने एक सराय के सामने किसानो की एक भीड को चिल्लाते और होहल्ला मचाते सुना। भीड के बीच में किसी की बलिष्ठ बाहे बारबार उठ और गिर रही थी।

"वहा क्या हो रहा है?" अपने उसी अटल लहजे में जो कि उसकी विशिष्टता बन गया था, एक वृद्धा किसान स्त्री से पूछा जो अपनी झोपडी की देहली पर खडी थी। दरवाजे की चौखट से टिकी, ऊंघती-सी मुद्रा में वह सराय की दिशा में ताक रही थी। सफेद बालो वाला एक लडका, छीट की कमीज पहने और अपने उघडे हुए छोटे-से वक्ष पर साइप्रेस लकडी का क्रॉस लटकाये, अपनी छोटी छोटी टागो को फैलाये और छाल की उसकी चप्पलो के बीच अपनी भिची हुई नन्ही मुट्ठियो को खोसे बैठा था। पास ही मुर्गी का एक चूजा रई-रोटी की पपडी पर चोच मार रहा था।

"भगवान जाने, श्रीमान," वृद्धा स्त्री ने जवाब दिया। फिर आगे की ओर झुकते हुए उसने झुर्रियोदार अपना गेहुवा हाथ लडके के सिर पर रखा, "कहते है कि हमारे लडके किसी यहूदी को पीट रहे है।"

"यहूदी को? किस यहूदी को?"

"भगवान जाने, श्रीमान। हमारे बीच एक यहूदी आया था। कहा से वह आया—कौन जाने? वास्या, चलो अपनी मा के पास! शि-शि, नासखेत जगली!"

वृद्धा ने चूज़े को दूर खदेड दिया, जबकि वास्या उसके पेटीकोट से चिपका रहा।

"सो, आप जानो सरकार, वे उसे मार रहे हैं।"

"उसे क्यो मार रहे है? किस लिए?"

"मालूम नही, श्रीमान। बेशक, वह इसी योग्य है। और सच पूछो तो, उसे मारा क्यो न जाय? आप जानो, श्रीमान, उसने यीशु को सूली पर चढाया था।"

चेरतोपखानोव ने हुप की ध्वनि उच्चारित की, सवारी के अपने चाबुक से घोडे की गरदन पर प्रहार किया, सीधे भीड की ओर लपका, और उसमें धसते हुए सवारी के अपने उसी चाबुक से दाहिने और बाए, बिना किसी भेद-भाव के, किसानो पर प्रहार करने लगा, टूटी-फूटी आवाज में चिल्लाते हुए—"मनमानी क्यो करते हो? सज़ा देना कानून का काम है, इक्के-दुक्के लोगो का नही! कानून! कानून! कानून!"

दो मिनट बीतते न बीतते भीड विभिन्न दिशाओ मे भाग खडी हुई, और सराय के सामने एक नाटा, क्षीणकाय, सावले रग का जीव दिखाई देने लगा, नानकिन का लम्बा कोट पहने, अस्तव्यस्त और नोचा-खरोंचा . सफेद चेहरा, टेरती हुई आखें, खुला हुआ मुह यह क्या था? घातक भय, या स्वय मृत्यु?

"तुमने इस यहूदी को क्यो मार डाला?" चेरतोपखानोव जोर से चिल्लाया, चाबुक को धमकाने के ढग से फहराते हुए।

जवाब में भीड में कुछ अस्पष्ट-सी बुदबुदाहट हुई। एक किसान अपना कधा सहला रहा था, दूसरा अपनी पसलिया, और तीसरा अपनी नाक।

"कौन गुण्डा है यह?" पीछे की पातो मे से आवाज़ आयी।

"चाबुक हाथ में क्या लिया, नवाब ही बन गया!" किसी दूसरी आवाज ने कहा।

"तुमने यहूदी को क्यो मार डाला, यीशु के नाम को कलकित करनेवालो!" चेरतोपखानोव ने दोहराया।

लेकिन ठीक इसी वक्त, वह जीव जो धरती पर पडा था, उछलकर अपने पावो पर खडा हुआ, दौडकर चेरतोपखानोव के पास पहुचा और बेसुध-से अन्दाज़ में, काठी के छोर से चिपक गया।

भीड़ में हंसी की एक लहर-सी दौड़ गयी।

"ओहो, जिन्दा है!" पिछले हिस्से में सुनाई दिया, "यह तो पूरा बिल्ली निकला!"

"सरकार, मेरी रक्षा करो, मुझे बचाओ!" अभागा जीव इस बीच लड़खड़ाती आवाज़ में कह रहा था, और उसका समूचा बदन सिमटकर चेरतोपखानोव के पांव से चिपका था—"नहीं तो, सरकार, वे मुझे मार डालेंगे, मेरी हत्या कर डालेंगे।"

"तुम्हारे खिलाफ उन्हें ऐसी क्या शिकायत है?" चेरतोपखानोव ने पूछा।

"मैं नहीं कह सकता, भगवान मेरी मदद करे। इधर-उधर कुछ गाएं मर गयीं ... सो वे मुझपर शक करते हैं ... लेकिन मैं ..."

"अच्छा अच्छा, इस सब को बाद में जान लेंगे," चेरतोपखानोव ने बीच में टोका। "लेकिन इस समय तुम लाठी को थामे रहो और मेरे साथ साथ चले चलो। और तुम!" भीड़ की ओर मुड़ते हुए उसने बोला, "क्या तुम मुझे जानते हो? मैं हूं भूतपूर्व [illegible] चेरतोपखानोव। मैं बेस्सोनोवो में रहता हूं ... और तुम, जो भी तुम्हारे मन में आये, मेरे खिलाफ और यहूदी के खिलाफ भी, जो [illegible] कार्रवाई कर सकते हो।"

"कार्रवाई हम क्या कर सकते?" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"जहा तक यहूदी की वात है, उससे हम फिर निवट लेगे। वह हमसे वचकर नही जा सकता। हम उसकी टोह में रहेगे।"

चेरतोपखानोव ने अपनी मूछो को ताना, नाक से फुकार छोडी, और पैदल-चाल मे घर की ओर चल दिया, मय यहूदी के जिसे उसने ठीक वैसे ही उसके उत्पीडको के चगुल से छुडाया था जैसे कि किसी ज़माने में तीखोन नेदोप्यूस्किन को छुडाया था।

४

इनके कुछ दिन वाद चेरतोपखानोव के एकमात्र चाकर ने जो कि अव तक उसके पास वच रहा था, सूचना दी कि कोई आदमी घोडे पर आया है, और उससे वात करना चाहता है। चेरतोपखानोव वाहर पैडियो पर निकल आया और दोन नस्ल के एक शानदार घोडे पर सवार यहूदी को उसने पहचान लिया। घोडा अहाते के वीच मे गर्व के साथ निश्चल खडा था। यहूदी नगे सिर था, अपनी टोपी को अपनी वगल के नीचे थामे हुए, और अपने पावो को उसने रकाव की पट्टियो मे—खुद रकावो मे नही—खोस रखा था। उसके लम्वे कोट के फटे हुए छोर काठी के दोनो ओर नीचे लटक रहे थे। चेरतोपखानोव को देखते ही उसने होठो से चुमकारा लिया और कोहनियो को विचकाते तथा टागो को झुकाते हुए वत्तखी अभिवादन किया। लेकिन चेरतोपखानोव ने, न केवल यह कि उसके इस अभिवादन का कोई जवाव नही दिया, वल्कि उससे क्रुद्ध भी हो उठा। क्षण-भर मे, ऊपर से नीचे तक भभक उठा। एक कोढियल यहूदी का यह साहस कि इतने शानदार घोडे पर इस तरह सवार होकर आये यह निश्चित रूप से अशिष्टता थी।

"ए, ईथोपिया के भुतने!" वह चिल्लाया—"फौरन नीचे उतर, अगर कीचड में लिथडना नही चाहता तो!"

यहूदी ने फौरन इसका पालन किया, बोरे की भाति घोडे पर से लुढककर नीचे आ गया, और रास को एक हाथ में थामे चेरतोपखानोव के निकट पहुचा, मुसकराते और माथा नवाते हुए।

"बोल, क्या चाहता है?" पान्तेलेई येरेमेइच ने गर्व के साथ पूछा।

"शरकार, जरा देखने की कृपा करे, कितना बढिया घोडा है!" यहूदी ने कहा, क्षण-भर के लिए भी माथा नवाना न रोकते हुए।

"अर. . हा तो . घोडा सब ठीक है। इसे कहा से उडा लाया? चोरी का माल है शायद?"

"यह आप क्या कहते है, शरकार! मै एक ईमानदार यहूदी हू। मैने इसे चुराया नही, बल्कि इसे शरकार मैने आपके लिए प्राप्त किया है, सच! और मुसीबत मुसीबत जो इसे पाने में उठानी पडी! लेकिन, फिर, देखिये न, घोडा भी तो यह एक ही है। समूचे दोन-इलाके में इसके जोड का घोडा कही खोजे नही मिलेगा। देखिये न, शरकार, कितना बढिया घोडा है! इधर, किरपा कर इधर आकर देखिये! वो! वो! ए, घूमकर खडा हो और हम काठी उतार लेगे। कहिये, क्या कहते है इसके बारे में, शरकार?"

"घोडा सब ठीक है," कृत्रिम उपेक्षा के साथ चेरतोपखानोव ने दोहराया, हालाकि उसका हृदय उसके वक्ष में हथौडे की चोटो की भाति धडक रहा था। उसे घोडो से गहरा अनुराग था, और अच्छी चीज़ को देखते ही पहचान लेता था।

"देखिये, जरा एक नज़र इस पर डालकर देखिये, शरकार! इसकी गरदन पर थपकी दीजिये! ठीक, ठीक हि-हि-हि! ऐसे ही, ऐसे ही!"

प्रत्यक्षत अनमनेपन के साथ चेरतोपखानोव ने घोडे की गरदन पर अपना हाथ रखा, उसे एक या दो थपकी दी, इसके बाद माथे के बालों

से लेकर कमर की रीढ तक अपनी उंगलियो को फेरा और गुर्दे के ऊपर – पारखी की भाति – एक स्थल विशेष पर पहुचकर उस जगह को हल्के-से उसने दबाया। घोडे ने उसी क्षण अपनी कमर को कमान बनाया, उनकी उद्धत काली आखें घूमी, सन्देह के साथ चेरतोपखानोव की ओर उसने देखा, अपने नथुनो को फरफराते तथा अपनी अगली टागो को कनमसाते हुए।

यहूदी हंसा और अपने हाथो से ताली की धीमी आवाज की।

"अपने मालिक को यह पहचानता है, शरकार, अपने मालिक को पहचानता है!"

"बेकार न बको," चेरतोपखानोव ने खीजकर टोका। "इस घोडे को तुम से खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नही, और जहा तक भेंट लेने का सबब है, न केवल किसी यहूदी से ही, बल्कि खुद सर्वशक्तिमान से भी मै उसे स्वीकार नही करूगा।"

"मानो मेरी इतनी औकात हो जो आपको कुछ भेंट दे सकू, खुदा रहम करे!" यहूदी ने चिल्लाकर कहा। "आप इसे खरीद ले, शरकार और जहा तक रकम का सवाल है, उसके लिए मै इन्तज़ार कर सकता हू।"

चेरतोपखानोव सोच में डूब गया।

"तुम इसका क्या लोगे?" आखिर अपनी बत्तीसी के बीच से वह बुदबुदाया।

यहूदी ने अपने कधे बिचकाये।

"जो खुद मैंने इसके लिए अदा किया। दो सौ रूबल!"

घोडा इससे दुगने – शायद तीन गुने – दामो में भी अच्छा था।

चेरतोपखानोव ने अपना मुह दूसरी ओर किया और उत्ताप के साथ जमुहाई ली।

"और पैसे कब?" उसने पूछा, तेवरो को कसकर चढाये और यहूदी की ओर न देखते हुए।

"जब शरकार को ठीक जचे।"

चेरतोपखानोव ने अपना सिर पीछे की ओर फेंका, लेकिन अपनी आखो को नही उठाया।

"यह कोई जवाब नही हुआ। साफ साफ बोलो, हिरोद की नस्ल के! क्या तुम मुझे अपने अहसान से जकडकर रखना चाहते हो?"

"अच्छा तो, कर लीजिये," यहूदी ने अविलम्ब कहा, "छ महीने में। आप राजी है?"

चेरतोपखानोव ने कोई जवाब नही दिया।

यहूदी ने उसके चेहरे पर एक नजर डालने का प्रयत्न किया।

"आप राजी है न? तो इजाजत दीजिये, इसे आपके अस्तबल में पहुचा दू।"

"जीन मुझे नही चाहिए," चेरतोपखानोव ने एकबारगी कहा। "जीन उतार लो। सुन रहा है न?"

"बेशक, बेशक, इसे मै उतार लूगा," खुश होकर यहूदी ने जीन उतारकर अपने कधे पर रखते हुए कहा।

"और धन," चेरतोपखानोव कहता गया, "छ महीने में। और दो सौ नही, बल्कि ढाई सौ। बस, बोलो नही। ढाई सौ, मै तुमसे कहता हू!"

चेरतोपखानोव अभी भी अपनी आखो को उठाने मे समर्थ नही हो सका। उसका अभिमान इतनी निर्ममता के साथ पहले कभी आहत नही हुआ था।

"स्पष्ट ही यह एक भेंट है," वह मन मे सोच रहा था, "कृतज्ञतावश इसे लाया है, शैतान कही का!" और एक तरफ उसका दिल चाहता वह यहूदी को गले से लगा ले और दुलराये दूसरी तरफ वह उसे पीटना चाहता था।

"शरकार," यहूदी ने कहना शुरू किया, थोडा साहस बटोरते और

अपने समूचे चेहरे से मुसकराते हुए, "आपको, रूसी चलन के मुताबिक, हाथो हाथ इसे ग्रहण करना चाहिए . "

"अब और क्या? वाह! क्या सूझ है! एक यहूदी और रूसी रिवाज! ए, कोई है? घोडे को लो, और इसे अस्तबल मे लिवा ले जाओ। और इसे कुछ जई डाल देना। मै खुद आऊगा, और सब देख-भाल लूगा। और इसका नाम होगा—मालेक-आदेल!"

चेरतोपखानोव ने पैडियो की ओर जाने का उपक्रम किया, लेकिन तेजी से मुडा और दौडकर यहूदी के पास पहुचा, हार्दिकता से उसका हाथ दबाया। यहूदी उसका हाथ चूमने के लिए झुका, लेकिन चेरतोपखानोव उछलकर फिर लौट आया, और यह बुदबुदाते हुए कि "किसी से कहना नही", वह दरवाजे मे विलीन हो गया।

५

ठीक उसी दिन से मालेक-आदेल चेरतोपखानोव के जीवन की मुख्य दिलचस्पी का, मुख्य खुशी का, आधार बन गया। वह उसे इतना चाहता था जितना कि उसने माशा को भी नही चाहा था, उसके साथ उसका इतना लगाव हो गया जितना कि नेदोप्यूस्किन के साथ भी नही था। और घोडा भी वह कैसा था! बिल्कुल आग था वह—एकदम बारूद की भाति विस्फोटक—और बोयार की भाति शानदार। अनथक, सहनशील, आज्ञाकारी—चाहे जहा भी उसे जोत दो, और उसके रख-रखाव का खर्च भी कुछ नही, अगर और कुछ न मिलता तो पाव के नीचे की धरती की घास को कुतरने से मुह न मोडता। जब वह कदम-चाल से डग भरता, तो ऐसा मालूम होता जैसे आया गोदी में लेकर सुला रही हो। जब दुलकी चलता तो लगता मानो तुम हिडोले में झूल रहे हो, और जब वह सरपट दौडता, तो हवा को भी मात करता।

उसका दम कभी नही टूटता, उसका सांस पूर्णतया स्वस्थ रहता। इस्पाती टागें—ठोकर खाना उसके लिए एक सर्वथा अनजानी चीज था—कभी ऐसा नही हुआ। खाई या वाडे को लाघना उसके लिए मामूली बात थी; और कितना होशियार जानवर था वह! अपने मालिक की आवाज सुनते ही हवा मे सिर उठाये दौडा चला आता, अगर उसे थिर खडे होने के लिए कहो और उसके पास से दूर चले जाओ तो क्या मजाल जो वह जरा भी हरकत करे, जैसे ही तुम लौटने को मुडो तो वह धीमे से हिनहिनाये—जैसे कह रहा हो—"मै यहा हू"। और किसी चीज का डर नही—घटाटोप अधकार हो, वर्फ का तूफान हो, वह अपना रास्ता निकाल लेगा, और अजनवी आदमी को तो वह किसी भाव अपने पास तक नही फटकने देगा, अपने दातो से उसकी खबर लेगा। और क्या मजाल जो कोई कुत्ता कभी उसके निकट पहुच सके—क्षण-भर मे उसकी अगली टाग उसके सिर का अभिनन्दन करती नजर आयेगी और उसकी वही टें बोल जायेगी। और उचित ढग से अभिमानी, शोभा की खातिर भले ही तुम उसके ऊपर चाबुक फहरा लो, लेकिन—खुदा न करे कि तुम उसे छुओ! लेकिन ज्यादा बखान करने से क्या फायदा?—घोडा नही, वह सच्चा हीरा था!

जब चेरतोपखानोव अपने मालेक-आदेल का वर्णन करता तो दमकते हुए शब्दो की झडी लगा देता। और किस तरह वह उसे थपकता तथा दुलराता था। उसके बदन की खाल चादी की भाति चमकती थी—पुरानी नही, नयी चादी की भाति जिसपर खूब पालिश हुई हो। अगर उसके ऊपर हाथ फेरो तो जैसे मखमल हो। उसकी जीन, उसका जामा, उसकी लगाम—उसका सारा साज-सामान, सच पूछो तो, इतने फिट, इतनी अच्छी हालत मे और इतने उजले थे कि जैसे चित्र खीचकर रख दिया गया हो, सर्वांग सुन्दर चित्र। चेरतोपखानोव—इससे अधिक हम और क्या कह सकते है—खुद अपने हाथो से अपने दुलारे के माथे और अयाल के वालो

को गूंथता था, उसकी अयाल और पूछ को वीयर से पखारता था और, एक से अधिक वार, उसके खुरो में पालिश करता था। वह मालेक-आदेल पर सवार होता और वाहर निकलता, अपने पडोसियो से मिलने-जुलने के लिए नही – पहले की भाति वह अव भी उनसे कतराता था – वल्कि उनके खेतो के वीच से, उनके घरो को पार करते हुए ताकि वे, मूर्ख कगले, दूर से ही मुग्ध होकर उसे देखा करे। या वह सुनता कि कही शिकार का आयोजन होने जा रहा है, कि किसी धनी भूस्वामी ने उसके इलाके के इर्द-गिर्द किसी हिस्से में शिकार-समारोह का वन्दोवस्त किया है, तो वह तुरत चल देता, और दूर – क्षितिज के पास – थिरकने लगता, सारे दर्शको को अपने घोडे की तेजी तथा सौन्दर्य से चकित करते, और किसी को अपने निकट न फटकने देता। एक वार किसी शिकार करते भूस्वामी ने अपने समूचे दल-वल के साथ उसका पीछा तक किया, उसने देखा कि चेरतोपखानोव निकला जा रहा है, और उसने – पूरी तेजी के साथ घोडा दौडाते हुए – उसके पीछे चिल्लाना शुरू किया – "ए, तुम! ए, सुनो तो! अपने घोडे के लिए जो चाहो ले लो! एक हजार से भी मैं गुरेज नही करूगा! अपनी वीवी, अपने वच्चे, सव न्योछावर कर दूगा! मेरा आखिरी कोपेक तक तुम्हारी नजर है!"

चेरतोपखानोव ने एकाएक मालेक-आदेल की रास खीची। शिकारी लपककर उसके पास पहुचा। "प्रिय श्रीमान," चिल्लाकर उसने कहा, "वताइये न कि आप क्या चाहते है? मेरे प्रिय मित्र!"

"अगर आप जार होते," चेरतोपखानोव ने धीरे से कहा (और उसने शेक्सपीयर का कभी नाम भी नही सुना था) "मेरे घोडे के लिए तव शायद अपनी सारी सलतनत मुझे दे सकते, तो भी मैं उसे नही लेता!" इन शव्दो को उसने उच्चारित किया, मुह ही मुह हसा, मालेक-आदेल को पीछे की ओर उचकाया, और लट्टू की भाति पिछली टागो के वल

हवा में उसे मोडा, और विजली की भाति ठूठो को रौंदता हुआ उड चला। और शिकारी ने (कहते है कि वह धनी राजकुमार था) अपनी टोपी को उतारकर धरती पर फेका, खुद भी नीचे आ गिरा, और टोपी में मुह धसाये आध घटा तक इसी तरह पडा रहा।

और चेरतोपखानोव क्यो न अपने घोडे की कद्र करता? अपनी असदिग्ध श्रेष्ठता को क्या उसी की वदौलत उसने फिर से प्राप्त नही किया था, उस अन्तिम श्रेष्ठता को जिसने उसे उसके सारे पडोसियो से ऊचा उठा दिया था?

६

इस वीच समय गुजरता गया और पैसा अदा करने के लिए नियत दिन निकट आता गया, जबकि चेरतोपखानोव की गाठ मे ढाई सौ रूवल तो दर किनार, पचास रूवल भी नही थे। अव क्या किया जाय? कैसे यह कर्ज अदा हो? "अच्छा तो," आखिर उसने निश्चय किया, "अगर यहूदी टस से मस नही होगा, अगर वह और अधिक इन्तजार नही करेगा तो मै उसे अपना घर और अपनी जमीन दे दूगा, और मै अपने घोडे पर चल दूगा, चाहे जिधर, इसकी चिन्ता नही! मै भूखो भले ही मर जाऊ, पर मालेक-आदेल को अपने से अलग नही करूगा!" वह अत्यन्त विचलित और यहा तक कि उदासी मे भी डूवा था, लेकिन इस मोड पर भाग्य ने, पहली और आखिरी बार, तरस खाया और मुसकान की उसपर वर्षा की—दूर की कोई सवधिन, जिसका नाम तक चेरतोपखानोव के लिए अपरिचित था, अपनी वसीयत में उसके लिए एक भारी—उसकी दृष्टि से—रकम छोड गयी जो दो हजार रूवल से किसी कद्र कम नही थी। और यह रकम उसे, जैसे कि कहते है, ऐन मौके पर मिल गयी। यहूदी के आने से ठीक एक दिन पहले। चेरतोपखानोव खुशी के मारे करीव करीव पागल हो उठा, लेकिन

वोद्का का उसे खयाल तक नही आया। ठीक उस दिन से जबकि मालेक-आदेल उसके हाथो में आया था, उसने अपने हाथो से वोद्का की एक बूद भी नही छुयी थी। वह भागकर अस्तबल मे गया, अपने दुलारे के– नथुनो से ऊपर जहा की खाल हमेशा इतनी मुलायम होती है–दोनो ओर उसने चूमा। "अब हम विलग नही होगे!" उसने चिल्लाकर कहा, और खूब सवारी हुई अयाल के नीचे मालेक-आदेल की गरदन को थपथपाया। वहा से लौटकर घर आया और ढाई सौ रूबल एक पैकेट मे मोहर बन्द कर अलग रख दिये। इसके बाद, उस समय जबकि वह कमर के बल लेटा और पाइप से धुआ छोड रहा था, उसने सोचना शुरू किया कि बाकी धन का वह कैसे उपयोग करेगा–बढिया कुत्ते प्राप्त करेगा, असली कोस्त्रोमा के शिकारी कुत्ते, चित्तीदार और लाल, इसमे जरा भी शक नही! उसने पेर्फीश्का से भी थोडी बात की, जिसे उसने एक नया कज्जाक कोट दिलाने का वादा किया था, जिसके सभी जोडो पर पीली गोट टकी होगी, और मगन मन सोने के लिए चला गया।

उसने एक बुरा सपना देखा। उसने देखा कि वह शिकार के लिए जा रहा है, लेकिन मालेक-आदेल पर नही, बल्कि किसी अजीब जानवर पर जो एक ऊट की भाति मालूम होता था। तभी एक सफेद लोमडी, बर्फ की भाति सफेद लोमडी दौडी हुई उसकी ओर लपकी उसने अपने चाबुक को फटकारने की कोशिश की, अपने कुत्तो को उसपर छोडने का प्रयत्न किया, लेकिन उसने देखा कि चाबुक की जगह उसके हाथ मे छाल का एक पुलिन्दा है, और लोमडी है कि सामने ही दौडी आ रही है, उसकी ओर अपनी जीभ निकाले हुए। वह कूदकर नीचे आ गया, ठोकर खायी और गिर पडा सीधे एक पुलिसमैन की बाहो में जा गिरा, और वह उसे गवर्नर जेनरल के पास ले चला, और जिसे उसने पहचाना कि यह तो याफ है .

हवा में उसे मोडा, और विजली की भाति ठूठो को रौंदता हुआ उड चला। और शिकारी ने (कहते है कि वह धनी राजकुमार था) अपनी टोपी को उतारकर धरती पर फेका, खुद भी नीचे आ गिरा, और टोपी में मुह धसाये आध घटा तक इसी तरह पडा रहा।

और चेरतोपखानोव क्यो न अपने घोडे की कद्र करता? अपनी असदिग्ध श्रेष्ठता को क्या उसी की वदौलत उसने फिर से प्राप्त नही किया था, उस अन्तिम श्रेष्ठता को जिसने उसे उसके सारे पडोसियो से ऊचा उठा दिया था?

६

इस वीच समय गुजरता गया और पैसा अदा करने के लिए नियत दिन निकट आता गया, जवकि चेरतोपखानोव की गाठ मे ढाई सौ रूबल तो दर किनार, पचास रूबल भी नही थे। अव क्या किया जाय? कैसे यह कर्ज अदा हो? "अच्छा तो," आखिर उसने निश्चय किया, "अगर यहूदी टस से मस नही होगा, अगर वह और अधिक इन्तज़ार नही करेगा तो मै उसे अपना घर और अपनी जमीन दे दूगा, और मै अपने घोडे पर चल दूगा, चाहे जिधर, इसकी चिन्ता नही! मै भूखो भले ही मर जाऊ, पर मालेक-आदेल को अपने से अलग नही करूगा!" वह अत्यन्त विचलित और यहा तक कि उदासी मे भी डूवा था, लेकिन इस मोड पर भाग्य ने, पहली और आखिरी बार, तरस खाया और मुसकान की उसपर वर्षा की—दूर की कोई सवधिन, जिसका नाम तक चेरतोपखानोव के लिए अपरिचित था, अपनी वसीयत में उसके लिए एक भारी—उसकी दृष्टि से—रकम छोड गयी जो दो हज़ार रूबल से किसी कद्र कम नही थी। और यह रकम उसे, जैसे कि कहते है, ऐन मौके पर मिल गयी। यहूदी के आने से ठीक एक दिन पहले। चेरतोपखानोव खुशी के मारे करीव करीव पागल हो उठा, लेकिन

वोद्का का उसे ख़याल तक नही आया। ठीक उस दिन से जबकि मालेक-आदेल उसके हाथो मे आया था, उसने अपने हाथो से वोद्का की एक बूद भी नही छुयी थी। वह भागकर अस्तबल मे गया, अपने दुलारे के—नथुनो से ऊपर जहा की खाल हमेशा इतनी मुलायम होती है—दोनो ओर उसने चूमा। "अब हम विलग नही होगे!" उसने चिल्लाकर कहा, और खूब सवारी हुई अयाल के नीचे मालेक-आदेल की गरदन को थपथपाया। वहा से लौटकर घर आया और ढाई सौ रूबल एक पैकेट मे मोहर बन्द कर अलग रख दिये। इसके बाद, उस समय जबकि वह कमर के बल लेटा और पाइप से धुआ छोड रहा था, उसने सोचना शुरू किया कि बाकी धन का वह कैसे उपयोग करेगा—बढिया कुत्ते प्राप्त करेगा, असली कोस्त्रोमा के शिकारी कुत्ते, चित्तीदार और लाल, इसमें जरा भी शक नही! उसने पेर्फीश्का से भी थोडी बात की, जिसे उसने एक नया कज़्ज़ाक कोट दिलाने का वादा किया था, जिसके सभी जोडो पर पीली गोट टकी होगी, और मगन मन सोने के लिए चला गया।

उसने एक बुरा सपना देखा। उसने देखा कि वह शिकार के लिए जा रहा है, लेकिन मालेक-आदेल पर नही, बल्कि किसी अजीब जानवर पर जो एक ऊट की भाति मालूम होता था। तभी एक सफेद लोमडी, बर्फ की भाति सफेद लोमडी दौडी हुई उसकी ओर लपकी उसने अपने चाबुक को फटकारने की कोशिश की, अपने कुत्तो को उसपर छोडने का प्रयत्न किया, लेकिन उसने देखा कि चाबुक की जगह उसके हाथ में छाल का एक पुलिन्दा है, और लोमडी है कि सामने ही दौडी आ रही है, उसकी ओर अपनी जीभ निकाले हुए। वह कूदकर नीचे आ गया, ठोकर खायी और गिर पडा सीधे एक पुलिसमैन की बाहो में जा गिरा, और वह उसे गवर्नर जेनरल के पास ले चला, और जिसे उसने पहचाना कि यह तो याफ है

चेरतोपखानोव जाग पडा। कमरा अंधियाला था, मुर्गों ने अभी दूसरी वार कुडकुडाना शुरू किया था .

कही दूर, वहुत दूर, कोई घोडा हिनहिनाया। चेरतोपखानोव ने अपना सिर उठाया। एक बार फिर हिनहिनाने की धुधली, अस्पष्ट आवाज सुनाई दी।

"यह मालेक-आदेल हिनहिना रहा है," उसने सोचा, "यह उसकी हिनहिनाहट है। लेकिन इतनी दूर से क्यो? खुदा रहम करे, हमें वरकत दे यह नही हो सकता ."

चेरतोपखानोव के रोम रोम में अचानक एक जूडी-सी सरसरा गयी। उसी क्षण उछलकर वह विस्तर से बाहर निकल आया, अपने जूतो और कपडो को उसने टटोला, कपडे पहने और अपने तकिए के नीचे से झटपट अस्तवल की कुजी उठायी, और अहाते में लपक चला।

७

अस्तवल अहाते के एकदम छोर पर था। उसकी एक दीवार खुले खेत की ओर थी। चेरतोपखानोव कुजी को एकाएक ताले में फिट नही कर सका—उसके हाथ थरथरा रहे थे—और वह कुजी को फौरन घुमा नही सका। वह निश्चल खडा रहा, अपने सास को रोके हुए, काश कि भीतर कोई चीज हरकत करे! "मालेक! मालेक!" धीमी आवाज में उसने पुकारा—मौत जैसा सन्नाटा! चेरतोपखानोव ने ऐसे ही अचेतावस्था में कुजी को झटका, दरवाज़े में चरचराहट की आवाज़ हुई और वह खुल गया। सो उसमें ताला वद नही था। उसने चौखट के उस पार डग रखा, और अपने घोडे को फिर आवाज़ दी—इस वार उसके पूरे नाम मालेक-आदेल से। लेकिन उसके फरमानवरदार साथी की ओर से कोई जवाव नही आया, केवल भूसे में एक चूहे की सरसराहट सुनाई दी। तव

चेरतोपखानोव अस्तबल मे घोड़े के तीन कटघरो में से एक की ओर लपका –जिसमें कि मालेक-आदेल रखा जाता था। वह सीधे कटघरे की ओर लपका, हालाकि चारो ओर घटाटोप अधेरा था . खाली! चेरतोपखानोव का सिर चकराया, लगता था जैसे उसके मस्तिष्क के भीतर कोई जोरो से घटी टनटना रहा हो। उसने कुछ कहने का प्रयास किया, लेकिन एक तरह की सिसकारी के सिवा और कुछ उसके मुह से नही निकल सका। और अपने हाथो से टटोलते हुए–ऊपर, नीचे, सभी दिशाओ में–बेदम और डगमगाते घुटनो से–एक के बाद दूसरे कटघरे की ओर वह बढा फिर तीसरे की ओर जो करीब करीब ऊपर तक सूखी घास से अटा था, पहले एक दीवार से वह टकराया, फिर दूसरी से, सिर के बल लुढका, खडा हुआ और अचानक जैसे पत्ता तोडकर भागा और अधखुले दरवाज़े में से बाहर अहाते में निकल आया।

"चोरी हो गया! पेर्फीश्का! पेर्फीश्का! चोरी हो गया!" अपनी समूची आवाज़ से वह चिल्ला उठा।

पेर्फीश्का, केवल अपनी कमीज़ पहने, दालान में से जहा वह सोता था, बेतहाशा भागता हुआ आया।

नशा किये आदमियो की भाति वे–मालिक और उसका एकमात्र एकाकी नौकर–अहाते के मध्य मे एक-दूसरे से टकराये, और पागलो की भाति वे एक-दूसरे के इर्द-गिर्द कूदने लगे। मालिक यह नही बता सका कि मामला क्या है, और नौकर यह नही समझ सका कि उसे क्या करना है। "नाश! सर्वनाश!" चेरतोपखानोव ने बुदबुदाया। "नाश! सर्वनाश!" नौकर ने उसके अनुसरण में दोहराया। "एक लालटेन! यहा! लालटेन! रोशनी! रोशनी!" आखिर चेरतोपखानोव के क्षीण फेफडो से निकला। पेर्फीश्का घर में लपक गया।

लेकिन लालटेन रोशन करना, आग हासिल करना, आसान नही था। दियासलाइया उन दिनो रूस के लिए एक दुर्लभ चीज थी। रसोई

में आग की आखिरी चिगारिया कभी की बुझ चुकी थी। चकमक और इस्पात जल्दी से मिले नही, और वे कुछ कारगर भी सिद्ध नही हुए। अपने दातो को चेरतोपखानोव ने पीसा और घबराये हुए पेर्फीश्का के हाथ से उन्हे छीनकर खुद आग सुलगाने लगा। चिगारिया प्रचुर परिमाण में झडी, और उनसे भी अधिक परिमाण में गालियो और यहा तक कि कराहो की झडी लगी, लेकिन लकडी ने आग नही पकडी या फिर से बुझ गयी – बावजूद इसके कि चार फूले हुए गालो तथा होठो के सयुक्त प्रयास लपक पैदा करने के लिए उसमें फूक मार रहे थे। पर पाच मिनट बाद, इससे जल्दी नही, जर्जर लालटेन के तल में लगी मोमबत्ती का एक टुकडा रोशन हुआ, और चेरतोपखानोव, पेर्फीश्का के साथ, लपककर अस्तबल में पहुचा, लालटेन को उसने अपने सिर से ऊचा उठाया, चारो ओर देखा .

सब खाली!

लपककर वह बाहर अहाते में आया, सभी दिशाओ में दौडा और वापिस लौटा – घोड़े का कही कोई चिन्ह नही! बेंत का बाडा जो पान्तेलेई येरेमेइच के अहाते को घेरे था, एक मुद्दत से खस्ताहाल था, और कितनी ही जगहो मे बैठ गया था तथा ज़मीन पर गिर गया था अस्तबल की बगल में, पूरे एक गज़ की चौडाई में, वह पूर्णतया ज़मीन से मिल गया था। पेर्फीश्का ने इस स्थल की ओर चेरतोपखानोव को इशारा किया।

"मालिक! यहा देखो! आज दिन में तो यह ऐसा नही था। और खडे बास वहा पडे हैं। इसका मतलब यह कि किसी ने उन्हे खीचकर उखाड़ा है।"

चेरतोपखानोव मय लालटेन के दौडा, धरती से सटाये उसे इधर से उधर घुमाया।

"खुर, खुर, घोडे के खुरो के निशान, ताज़े निशान!" वह बुदबुदाया, उतावली के साथ बोलते हुए, "वे उसे इधर से ले गये, इधर से!"

उसी क्षण उसने वाडे को कूदकर लाघा और "मालेक-आदेल! मालेक-आदेल!" चिल्लाता हुआ सीधे खुले खेत की ओर भाग चला।

पेर्फीश्का, चकित और विमूढ, वाडे के पास ही खडा रहा। लालटेन की रोशनी का घेरा शीघ्र ही उसकी आखो से ओझल हो गया – तारो से सूनी और चाद-विहीन रात के घने अधकार ने उसे लील लिया।

चेरतोपखानोव के निराश क्रन्दन की ध्वनि धुधली और अधिक धुधली, पडती गयी

८

जब वह फिर घर लौटकर आया, उस समय दिन का उजाला फैल चला था, वह मुश्किल से ही मानव-जीव मालूम होता था। उसके कपडे कीचड में लथपथ थे, उसके चेहरे का भाव वहशियाना और आतकप्रद था। उसकी आखें धुधली और सूजी हुई थी। बैठी-सी फुसकार के साथ उसने पेर्फीश्का को दुतकारा और अपने-आपको अपने कमरे में बद कर लिया। थक वह इस कदर गया था कि उसके लिए खडे रहना मुश्किल था। लेकिन वह अपने विस्तरे पर जाकर नही लेटा, बल्कि दरवाजे के पास एक कुर्सी पर बैठ गया, और अपने सिर को उसने दबोच लिया।

"चोरी हो गया! चोरी हो गया!"

लेकिन रात को, जबकि अस्तबल मे ताला लगा था, चोर मालेक-आदेल को चुराने मे कैसे सफल हुआ? मालेक-आदेल जो दिन में भी किसी अजनबी को कभी अपने पास नही फटकने देता था, उसे भी चुरा ले जाना, बिना किसी आवाज के, बिना किसी आहट के? और इसका क्या रहस्य था कि अहाते का एक भी कुत्ता नही भोका? यह सच है कि केवल दो ही बाकी रह गये थे – दो छोटे छोटे पिल्ले – और वे दोनो भी शायद ठड और भूख के मारे किसी कचरे में धसे होगे – फिर भी!

"और मालेक-आदेल के बिना अब मै क्या करूगा?" चेरतोपखानोव

ने सोचा। "मेरी आखिरी खुशी भी अब मुझसे छिन गयी! अब जीने का कुछ लाभ नही! क्या कोई और घोडा खरीद लू? अब जो धन आ गया है? लेकिन उस जैसा दूसरा घोडा मिलेगा कहा?"

"पान्तेलेई येरेमेइच! पान्तेलेई येरेमेइच!" उसे दरवाज़े पर किसी के पुकारने की सहमी-सी आवाज सुनाई दी।

चेरतोपखानोव उछलकर खडा हो गया।

"कौन है?" उसने चिल्लाकर कहा, ऐसी आवाज़ में जो खुद उसकी आवाज नही मालूम होती थी।

"मैं हू, आपका नौकर पेर्फ़ीश्का!"

"क्या चाहते हो? क्या वह मिल गया? क्या वह घर वापिस लौट आया?"

"नही, पान्तेलेई येरेमेइच, लेकिन वह यहूदी जिसने घोडा बेचा था "

"हा, तो?"

"वह आया है।"

"हो-हो-हो-हो!" चेरतोपखानोव चिल्लाया, और उसने एकबारगी दरवाज़ा खोल दिया। "खीच ले आओ उसे यहा। एकदम घसीटते हुए लाना उसे!"

अपने 'कृपालु' की अस्तव्यस्त, वहशियाना आकृति की अचानक प्रेत-छाया को देखकर यहूदी ने, जो पेर्फ़ीश्का की पीठ के पीछे खडा था, नजर बचाकर खिसक भागने की कोशिश की, लेकिन चेरतोपखानोव ने दो छलागो में उसे जा पकडा, और शेर की भाति सीधे उसकी गरदन पर झपटा।

"ओह, पैसा लेने के लिए आया है! पैसे के लिए!" वह चीखा, ऐसी भरभरी आवाज़ में मानो यहूदी का नहीं गुड़ उगला गया घोटा जा

रहा हो। "तुम रात को उसे चुरा ले गये, और अब दिन मे उसकी कीमत लेने आये हो, क्यो? क्यो? क्यो?"

"रहम करे, सरकार, हम पर रहम करे," यहूदी ने किकियाने का प्रयत्न किया।

"बोलो, मेरा घोडा कहा है? तुमने उसका क्या किया? किसके हाथ उसे बेच डाला? बोलो, बोलो, बोलो!"

यहूदी अब किकिया तक नही सकता था। उसका चेहरा तेजी से नीला पडता जा रहा था, यहा तक कि भय की छाप भी उसपर से गायब हो गयी थी। उसके हाथ नीचे गिर गये थे और बेजान से लटके थे, उसका समूचा शरीर, चेरतोपखानोव द्वारा बुरी तरह झझोडा जाने के कारण नरकट की भाति आगे और पीछे झकोले खा रहा था।

"मै तुम्हारे पैसे तुम्हे चुकता कर दूगा, आखिरी कोपेक तक तुम्हे अदा कर दूगा," चेरतोपखानोव गरजा, "लेकिन अगर तुम फौरन मुझे नही बताओगे तो चूजे की भाति तुम्हारा गला घोट दूगा।"

"लेकिन, मालिक, आपने तो अभी ही गला घोट दिया है," विनीत भाव मे पेर्फीश्का ने कहा।

केवल तभी चेरतोपखानोव को चेत हुआ।

उसने यहूदी की गरदन को छोड दिया, वह धम से जमीन पर गिर पडा। चेरतोपखानोव ने उसे उठाया, एक बेच पर उसे बैठाया, वोद्का का एक गिलास उसके गले मे उडेला, और उसे होश में ले आया। जब वह होश में आया तो उससे बाते करने लगा।

मालूम हुआ कि यहूदी को मालेक-आदेल के चोरी हो जाने की तनिक भी खबर न थी। और दरअसल उसे स्वय चुराने का अभिप्राय ही क्या हो सकता था जबकि वह स्वय उसे 'अपने आदरणीय पान्तेलेई येरेमेइच' के लिए लेकर आया था।

तब चेरतोपखानोव उसे अस्तबल में ले गया।

दोनो ने मिलकर घोडे के कटघरे को, उसकी नाद को, दरवाजे पर पडे ताले को देखा, घास और भूसे को हटाया, और फिर दोनो सहन मे निकल आये। चेरतोपखानोव ने यहूदी को घोडे के पावो के निशान चारदीवारी के पास दिखाये और फिर सहसा जाघ पर हाथ मारते हुए बोला–"ठहरो, तुमने कहा से यह घोडा खरीदा था?"

"मालोआर्खान्गेलस्क जिला के वेर्खोसिन्स्काया मेले में," यहूदी ने जवाब दिया।

"किससे?"

"एक कजाक से।"

"ठहरो! यह कजाक–वह युवा आदमी था या वृद्ध?"

"मझोली आयु का धीर-गभीर आदमी था।"

"और किस तरह का था वह? कैसा दिखता था? काइया धूर्त होगा मेरे ख्याल मे?"

"शायद धूर्त तो वह रहा होगा, शरकार!"

"और, मै कहता हू, उसने–उस धूर्त ने–क्या कहा? क्या उसके पास यह घोडा काफी अर्से से था?"

"याद पडता है, उसने कहा था कि घोडा उसके पास काफी अर्से से था।"

"अच्छा तो, फिर सिवा उसके और किसी ने नही चुराया। खुद सोचकर देखो, सुनो, यही खडे रहना! तुम्हारा क्या नाम है?"

यहूदी चौंका, और अपनी काली आखो को उसने चेरतोपखानोव की ओर घुमाया।

"मेरा नाम क्या है?"

"हा, हा, तुम्हे क्या कहकर पुकारा जाता है?"

"मोशेल लेइबा।"

"अच्छा तो, मोशेल लेइबा, मेरे मित्र, तुम्ही सोचो–तुम एक

समझदार आदमी हो—अपने पुराने मालिक के सिवा घोडा और किसे अपने ऊपर हाथ रखने दे सकता था? देखा न, निश्चय ही उसने उसकी जीन कसी, लगाम डाली, और उसका जामा उतारा—वहा घास पर वह पडा है। और उसने अपना सारा बन्दोवस्त एकदम ऐसे किया जैसे वह अपने ही घर मे हो! अरे, अपने मालिक के सिवा अगर कोई और होता तो मालेक-आदेल उसे अपने पावो से रौद डालता! वह भारी कुहराम मचाता, गाव-भर को जगा डालता। बोलो, मेरी यह बात मानते हो न?"

"मानता हू, शरकार, मै तो मानता हू "

"अच्छा तो, फिर, इसका मतलब यह कि सबसे पहले हमे उस कज़ाक को खोजना चाहिए।"

"लेकिन शरकार, हम उसका कैसे पता लगायेगे? अपने जीवन में थोडी देर के लिए केवल एक बार मैने उसे देखा है, और जाने वह अब कहा है, और उसका नाम जाने क्या है? अफसोस, अफसोस!" यहूदी ने अन्त में जोड़ा, अपनी लम्बी लटो को अपने कानो के ऊपर शोक से हिलाते हुए।

"लेइबा!" सहसा चेरतोपखानोव चिल्लाया, "लेइबा, मेरी ओर देखो! देखते हो मुझे कुछ सुध-बुध नही है, मै आपे मे नही हू! अगर तुम मेरी मदद नही करोगे तो मै खुद अपनी जान से हाथ धो बैठूगा!"

"लेकिन मै कैसे मदद कर सकता हू "

"मेरे साथ चलो, और हम चोर का पता लगाये।"

"लेकिन हम जायेगे कहा?"

"हम मेलो में, सड़को और गलियो मे, घोड़ा-चारो के पास, नगरो, गावो और बस्तियो मे—हर जगह, हर स्थान पर! और धन की चिन्ता न करो—मुझे विरासत मिली है, भाई! मै आखिरी कोपेक तक खर्च कर दूगा, लेकिन अपने दुलारे को वापिस लाकर रहूगा! और वह, हमारा दुश्मन—वह कज़ाक—हमसे बचकर नही रह सकता! जहा

वह जायेगा, हम वही पहुचेगे। अगर वह धरती में समा जायेगा तो हम उसे वहा से भी खोद निकालेगे। अगर वह जहन्नुम में होगा तो हम खुद शैतान के पास भी जा पहुचेगे।"

"ओह, शैतान के पास क्यो?" यहूदी ने कहा। "उसके बिना भी चल जायेगा।"

"लेइवा," चेरतोपखानोव कहता गया, "लेइवा, हालाकि तुम यहूदी हो, और तुम्हारा धर्म अभिशप्त है, तुम्हारी आत्मा कितने ही ईसाइयो की आत्मा से अच्छी है। मुझपर तरस खाओ। अकेले मुझसे कुछ नही हो सकेगा। मै एक गर्मदिमाग आदमी हू, और तुम्हारे पास मस्तिष्क है, सोने से तोलने लायक मस्तिष्क। तुम्हारी नसल में यह बात है। बिना कुछ सिखाये ही तुम हर चीज में सफल होते हो। शायद तुम अचरज कर रहे हो कि मेरे पास धन कहा से आया? मेरे कमरे में चलो—मै तुम्हे सब धन दिखाये देता हू। तुम उसे ले सकते हो, तुम मेरे गले का क्रॉस तक उतार सकते हो, केवल मेरा मालेक-आदेल मुझे वापिस दे दो, उसे मुझे लौटा दो।"

चेरतोपखानोव ऐसे काप रहा था जैसे उसे बुखार चढा हो। पसीना बूदें बनकर उसके चेहरे पर से ढुरक रहा था, और उसके आसुओ के साथ मिलकर उसकी मूछो में लुप्त हो जाता था। उसने लेइवा के हाथो को दबाया, उसने उसकी मनुहार की, करीब करीब उसे चूम तक लिया .. सन्निपात जैसी उसकी अवस्था थी। यहूदी ने आपत्ति करने का प्रयास किया, यह घोषित करने का कि उसके लिए चलना एकदम असम्भव है, कि उसे काम है सब बेकार। चेरतोपखानोव ने कुछ सुना तक नहीं। कोई उपाय नही था, बेचारे यहूदी को 'हा' करनी पडी।

अगले दिन, लेइवा के साथ, चेरतोपखानोव एक किसान के छकडे मे बेस्मोनोवो से रवाना हुआ। यहूदी कुछ त्रस्त-सी मुद्रा धारण किये था। एक हाथ से वह डडा थामे था, और उसका समूचा मुरझाया हुआ ढाचा,

धचकोंने खाती सीट के साथ, ऊपर-नीचे उछल रहा था। दूसरा हाथ वह अपने वक्ष से सटाये था, जहा अखबारी कागज मे लिपटे नोटो का एक बण्डल रखा था। चेरतोपग्रानोव एक बुत की भाति बैठा था, केवल अपनी आखों से इधर-उधर टेरते और गहरी उसासे खीचते हुए। उनके कमरबन्द में एक खजर खोसा हुआ था।

"बस, वह दुष्ट जिसने हमें विलग किया, अब अपनी खैर मनाये!" राजमार्ग पर जब गाडी ने बढना शुरू किया, वह बुदबुदा उठा।

अपने घर की देख-रेख वह पेर्फीश्का तथा पुरानी बावर्चिन को सौंप आया था। बावर्चिन एक बहरी किसान स्त्री थी जिसपर तरस खाकर उसने उसे अपने यहा रख लिया था।

"मालेक-आदेल पर सवार होकर ही मैं अब तुम्हारे पास लौटूगा," विदा के समय उसने उनसे चिल्लाकर कहा, "या फिर कभी नही आऊगा!"

"तब तो तुम मुझसे शादी कर लो," बावर्चिन की पसलियो मे अपनी कोहनी से ठहोका देते हुए पेर्फीश्का ने मजाक में कहा। "मालिक कभी लौटकर हमारे पास नही आयेगा, और ऊब के मारे एकदम एकाकी मेरी तो यहा जान ही निकल जायगी!"

९

एक साल गुजर गया   पूरा एक साल। पान्तेलेई येरेमेइच की कोई खबर नही आयी। बावर्चिन मर गयी थी, खुद पेर्फीश्का ने भी घर को छोडकर नगर जाने का निश्चय कर लिया जहां उसका चचेरा भाई एक नाई के यहा काम सीखता था। नगर आने के लिए वह उसपर बराबर ज़ोर देता था। तभी, अचानक यह अफवाह फैली कि उसका मालिक लौटकर आ रहा है। बस्ती के पादरी के पास खुद पान्तेलेई येरेमेइच का एक पत्र आया था जिसमें उसने बेस्सोनोवो लौटने के अपने

इरादे की सूचना दी थी, और उससे अनुरोध किया था कि उसके नौकर को उसकी तुरत वापसी के बारे मे आगाह कर दे। इन शब्दो का पेर्फीश्का ने जो अर्थ समझा वह यह कि उसे जगह को जरा झाड-बुहारकर साफ कर देना होगा। लेकिन, इस खबर पर उसने कुछ ज्यादा विश्वास नही किया। फिर भी, इस बात का कि पादरी ने सच कहा था, उस समय उसे विश्वास करना पडा जब—कुछेक दिन बाद—खुद पान्तेलेई येरेमेइच, स्वय मालेक-आदेल पर सवार, अहाते मे जाकर प्रकट हो गया।

पेर्फीश्का दौडकर अपने मालिक के पास पहुचा और, रकाब को थामकर उसे उतरने मे सहारा देना चाहता ही था कि वह खुद उतर आया, और उसके इर्द-गिर्द विजेता की नजर से देखते हुए जोरो से चिल्लाकर बोला—"मैंने कहा न था कि मैं मालेक-आदेल को खोज निकालूगा, और अपने दुश्मनो तथा खुद भाग्य के बावजूद मैंने उसे खोज निकाला!" पेर्फीश्का उसका हाथ चूमने के लिए आगे बढा, लेकिन चेरतोपखानोव ने अपने नौकर की स्वामीभक्ति की ओर कोई ध्यान नही दिया। मालेक-आदेल की रास थामे, लम्बे डगो से अपने पीछे पीछे वह उसे अस्तबल की ओर लिवा ले चला। पेर्फीश्का ने, और अधिक ध्यान से, अपने मालिक पर नजर डाली, और उसका हृदय भारी हो गया। "ओह, एक ही साल मे वह कितना दुबला और बूढा हो गया है, और चेहरे पर कितनी कठोरता, भयानकता, छा गयी है!" चाहिए तो यह था कि अब जबकि अपना लक्ष्य उसने प्राप्त कर लिया है, पान्तेलेई येरेमेइच को खुश होना चाहिए, और सचमुच वह खुश था भी . फिर भी पेर्फीश्का का हृदय बैठा जा रहा था, वह एक तरह के डर तक का अनुभव कर रहा था। चेरतोपखानोव ने घोडे को उसकी अपनी पुरानी जगह पर खडा कर दिया, उसकी कमर को हल्के-से थपथपाया, और कहा—"हा तो, तुम फिर अपने घर आ गये। और देखो, अब जरा सभलकर रहना!" उसी दिन चेरतोपखानोव ने अलग-थलग किसान

को जिसके पास अपना कोई घोडा नही था और जो विश्वसनीय आदमी था, चौकीदार के रूप में रखा, अपने कमरो मे फिर से अपने-आपको स्थापित किया, और पहले की भाति रहना शुरू कर दिया।

लेकिन नही, एकदम पहले की भाति नही पर इसके बारे में बाद मे।

अपनी वापसी के अगले दिन पान्तेलेई येरेमेइच ने पेर्फीश्का को भीतर अपने पास बुलाया, और बाते करने के लिए और कोई न होने के कारण, उसे बताना शुरू किया – बिलाशक, अपने रोब तथा अपनी गहरी आवाज को बरकरार रखते हुए – कि मालेक-आदेल को खोजने मे वह कैसे सफल हुआ। चेरतोपखानोव, अपनी कहानी को बताते समय, खिडकी की ओर मुह किये बैठा था, और लम्बी नलीवाला पाइप पी रहा था, जबकि पेर्फीश्का चौखट के पास खडा था, अपने हाथो को पीठ के पीछे किये और सम्मान की भावना के साथ अपने मालिक के सिर के पृष्ठ-भाग को देखते हुए। उसने सुना कि किस प्रकार, अनेक निष्फल प्रयासो तथा अभियानो के बाद, पान्तेलेई येरेमेइच आखिर रोम्नी के मेले मे पहुचा, खुद अपने-आप, बिना उस यहूदी लेइबा के जो, अपने चरित्र की कमजोरी के कारण, डटा नही रहा, बल्कि बीच मे ही उसे छोडकर चला गया। पाचवे दिन, जबकि वह वहा से विदा होनेवाला था, आखिरी बार उसने गाडियो की पातो का चक्कर लगाया और एकदम अचानक, बाडे से बधे अन्य तीन घोडो के बीच मालेक-आदेल पर उसकी नजर जा पडी। ओह कैसे, एकदम देखते ही, उसने उसे पहचान लिया, और कैसे मालेक-आदेल ने भी उसे पहचाना, और उसने हिनहिनाना, अपनी रस्सी को खीचना और अपने खुर से धरती को खोदना शुरू कर दिया।

"और वह कज़ाक के साथ नही था," चेरतोपखानोव उसी धीमी गहरी आवाज में कहता गया, बिना अपने सिर को मोडे, "बल्कि घोडो के एक जिप्सी सट्टेबाज के साथ था। मैंने बिलाशक, अपने घोडे को थामा, और खीचकर उसे ले जाने का प्रयत्न किया, लेकिन वह जगली जिप्सी

इस तरह चिल्लाने लगा जैसे लपटों से झुलसा जा रहा हो। सारे बाज़ार को उसने सिर पर उठा लिया, और कसमें खानी शुरू की कि एक अन्य जिप्सी से उसने इसे खरीदा है, और इसे सिद्ध करने के लिए गवाहो को ले आने की गुहार मचायी मैंने थूका, और उसे—जहन्नुमी कही का—धन अदा कर दिया। मुझे अन्य पचडो से क्या मतलब मेरा दुलारा मुझे मिल गया था, और मेरा मन अब शान्त हो गया था। इसके अलावा, कराचेव जिले में, एक आदमी को मै वही कज़ाक समझ बैठा—यहूदी लेइबा के शब्दो का मैंने भरोसा किया कि वही मेरे घोडे का चोर है—और उसका मुह तोडकर रख दिया। लेकिन वह कजाक पादरी का लडका निकला, और बतौर क्षतिपूर्ति एक सौ बीस रूबल उसने मुझसे रखवा लिये। हा तो, धन एक ऐसी चीज़ है जो फिर भी आ सकती है, लेकिन सबसे मुख्य बात तो यह थी कि मुझे मेरा मालेक-आदेल वापिस मिल गया था। मै अब खुश हू—शान्ति के साथ अब मै सुख से रहूगा। और तुम्हारे लिए, पेर्फीश्का मेरा एक आदेश है—अगर कभी भी तुम्हे—खुदा न करे—आस-पास कही वह कज़ाक दिखाई पड जाय, तो उसी क्षण बिना एक शब्द कहे दौडकर जाना और मेरी बन्दूक लाकर मुझे दे देना। फिर मै अपने-आप देख लूगा कि क्या करना चाहिए।"

इस प्रकार पान्तेलेई येरेमेइच ने पेर्फीश्का से कहा, इस प्रकार, इन शब्दो में उसकी ज़बान ने अपने-आपको व्यक्त किया। लेकिन अपने हृदय में वह उतना शान्त नही था जितना कि उसने घोषित किया था।

अफसोस! अपने हृदय के अन्तर्तम मे उसे इस बात का पूर्ण विश्वास नही था कि जो घोडा वह लाया है, वह सचमुच में मालेक-आदेल ही है!

१०

पान्तेलेई येरेमेइच के लिए मुसीबतो के दिन शुरू हो गये। उसकी आत्मा को शान्ति तो बिल्कुल ही नही थी। यह सच है कि कुछ दिन उसके सुखद भी रहे, उसके मन का सन्देह उसे निराधार मालूम होता

और उस हास्यास्पद खयाल को—वह जिद्दी मक्खी की भाति—मन से निकाल बाहर करता अपने पर हसता भी। लेकिन बुरे दिन भी उसे देखने पडते—वह चमचीचड खयाल उसके हृदय को भीतर ही भीतर फिर नोचने और कुरेदने लगता, फर्श के नीचे घुसे चूहे की भाति, और गुप्त यत्रणा में उसके दिन कटते। उस स्मरणीय दिन जब चेरतोपखानोव ने मालेक-आदेल को खोज निकाला था निरे हार्दिक आनन्द का उसने अनुभव किया था। लेकिन अगली सुबह उस समय जब सराय के नीची छतवाले सायबान मे फिर से प्राप्त अपनी आखो के तारे को—जिसकी बगल में उसने सारी रात बितायी थी—उसने उसकी पीठ पर जीन लगानी शुरू की, तब पहली बार एक गुप्त कसक का उसने अनुभव किया उसने केवल अपने सिर को झटका दिया, लेकिन बीज पड चुका था। घर की यात्रा के दौरान में (पूरे सात दिन में जो सम्पूर्ण हुई) सन्देहो ने विरले ही उसके मन मे कभी सिर उठाया हो। लेकिन जैसे ही वह बेस्सोनोवो पहुचा, जैसे ही वह घर मे उस जगह पहुचा जहा पहलेवाला असल मालेक-आदेल रहता था, वैसे ही वे अधिक सबल और अधिक सुस्पष्ट हो उठे। शान्त, झूमती हुई चाल से, चारो दिशाओ मे नजर फेंकते और अपने छोटे पाइप पर कश लगाते हुए उसने घर का रास्ता पार किया था, चिन्ता से सर्वथा मुक्त, सिवा एक खयाल के जो कभी कभी उसके मन मे आ जाता था कि "जब चेरतोपखानोव परिवार के लोगो का दिल किसी चीज़ पर आ जाय तो चाहे जो शर्त बद लीजिये, वे उसे पाकर रहते है!" और वह मुसकरा उठता। लेकिन घर वापिस लौटने पर स्थिति ने एक बहुत ही भिन्न रूप धारण कर लिया। लेकिन, यह सब वह अपने तक ही रखता था। उसका दम्भ ही उसे अपने आन्तरिक भय को मुह से निकालने से रोके रहता। अगर कोई अत्यन्त अस्पष्ट रूप में भी इस बात का सकेत करता कि नया मालेक-आदेल सम्भवत पहलेवाला नही है, तो वह उसके टुकड टुकडे कर

डालता। अपने घोडे को फिर से पाने में सफलता प्राप्त करने के लिए उसने बधाइया स्वीकार की, उन गिनेचुने लोगो से जिनसे मिलने का उसे सयोग हुआ। लेकिन वह ऐसी बधाइयो का आकाक्षी नही था, सदा की भाति वह लोगो से किसी भी प्रकार का सम्पर्क रखने से परहेज़ करता था—जो कि एक बुरा चिन्ह था! वह, करीव करीव हमेशा—अगर ऐसा कहा जा सके तो—मालेक-आदेल की परीक्षाए लेता रहता। वह उसपर सवार होता और खुले खेत में दूर किसी स्थल पर उसे ले जाता, और उसे कसौटी पर परखता, या चोरी-छिपे अस्तवल जाता, भीतर से ताला वद कर देता, और ठीक घोडे के सिर के सामने खडे होकर उसकी आखो मे देखता, और फुसफुसाकर उससे पूछता—"तुम्ही हो न? तुम्ही? तुम्ही?" या फिर चुपचाप और इरादतन लगातार घटो तक उसे ताकता रहता, और इसके बाद, प्रसन्नता से खिलकर बुदबुदाता—"हा, यह वही है! वेशक, वही है!" या फिर चेहरे पर एक हैरानी का, यहा तक कि परेशानी का भी, भाव लिये बाहर निकल आता।

दोनो घोडो के आकार-प्रकार में जहा कही कोई भेद था तो उसे देखकर चेरतोपखानोव को ऐसी कुछ ज्यादा परेशानी नही थी हालाकि इस तरह के कई-एक भेद मौजूद थे—यह कि पहलेवाले की पूछ और अयाल के वाल थोडा अधिक हल्के थे, उसके कान अधिक नोकदार, टखने अधिक छोटे और उसकी आखें अधिक चमकदार थी—लेकिन यह सब तो केवल भ्रम भी हो सकता था। उसे जो चीज़ सबसे ज्यादा उलझन में डालती थी वह थी, जैसा कि कहते है नैतिक भेद। उसकी आदते भिन्न थी, उसके तमाम तौर-तरीके उस जैसे नही थे। मिसाल के लिए मालेक-आदेल, जव भी चेरतोपखानोव अस्तवल में जाता, हर बार घूमकर देखता और हल्के-से हिनहिनाता, जवकि यह घास को चवाता रहता है, मानो कुछ हुआ ही न हो, या अपना सिर लटकाये ऊघता रहता है। दोनो ही, उस समय जव उनका मालिक ज़ीन पर से उतरता था, थिर खडे

रहते थे; लेकिन वह उसकी आवाज पर फौरन चला आता था जब उसे पुकारा जाता था, जबकि यह पत्थर के बुत की भाति खडा रहता है। वह दौडता इतना ही तेज़ था, लेकिन अधिक ऊची और लम्बी छलागें भरता हुआ, जबकि यह अधिक आजादाना डगो से और अधिक झटके देनेवाली दुलकी चाल से चलता है, और कभी कभी अपने खुरो से 'मुरकिया' लेता है—अर्थात् पिछलो को अगलो से टकराता है। उसने —खुदा न करे—कभी इस तरह की लज्जास्पद हरकत नही की। चेरतोपखानोव को लगता बराबर अपने कानो को कसमसाता रहता है, बहुत ही मूर्खतापूर्ण ढग से, जबकि उसके साथ इससे एकदम उलटा था—वह एक कान को पीछे कर लेता था, और इसी स्थिति में उसे रखता था, मानो अपने मालिक के लिए चौकस हो। वह, जैसे ही वह देखता कि इधर-उधर गोबर फैला है, फौरन अपनी पिछली टाग से अपने कटघरे के पार्टीशन पर खटखट करता, जबकि इसके कान पर जू तक नही रेगती, चाहे लीद का ढेर उसके पेट तक ऊचा क्यो न जमा कर दिया जाय। उसे, मिसाल के लिए, अगर हवा के खिलाफ मुह कर दिया जाता तो गहरी सासे लेता और अपने-आपको हिलाता, जबकि यह केवल नथुनो से फुकार छोडता है। वह सीलन से बेचैन होता, इसे जैसे इसकी कोई सुध नही यह औघड जानवर है—कही अधिक औघड! और इसमें वह कोमलता नही थी, बडा मुहजोर था, इससे इन्कार नही किया जा सकता। वह घोडा आखो का तारा था, और यह

यही सब कभी कभी चेरतोपखानोव सोचता और इस तरह के खयाल उसके लिए अत्यन्त कटु होते थे। कभी कभी वह अपने घोडे को किसी नये जोते हुए खेत में पूरी तरह सरपट छोड देता, या उसे किसी खोखले खड्ड की एकदम तलहटी में कूदने और सबसे गहरे स्थल से उछलकर फिर बाहर निकल आने की मुहिम में डालता, और उसका हृदय आनन्दातिरेक से थरथराता, एक जोरो की 'हुप' उसके मुह से निकलती।

उसे पता चल जाता, निश्चित रूप से यकीन हो जाता कि यह असली, प्रामाणिक मालेक-आदेल ही है जिसपर वह सवार है। नही तो फिर अन्य किस घोडे में यह सब करने की सकत है जो कि यह कर रहा है!

लेकिन, कभी कभी, त्रुटिया और दुर्भाग्य यहा भी पीछा न छोडते। मालेक-आदेल की सुदीर्घ खोज चेरतोपखानोव के लिए बहुत महगी पडी थी—भारी रकम इसमें खर्च हो गयी थी। कोस्त्रोमा के शिकारी कुत्ते रखने के अब वह सपने तक नही देख सकता था, और पहले की भाति अकेला आसपास के इलाके में सवारी करता था। सो एक दिन सुबह, बेस्सोनोवो से तीन-एक मील दूर, सयोगवश चेरतोपखानोव की उसी राजकुमार की शिकार-मण्डली से भेंट हो गयी जिसके सामने, डेढ-एक साल पहले, इतने विजयी ठाठ के साथ वह पेश आया था। और, भाग्य की बात तो देखो, ठीक उसी दिन की भाति पहाडी ढलुवान के नीचे झाडी में से उछलकर एक खरगोश बाहर लपका—कुत्तो के आगे आगे। पकडो! पकडो! पूरी शिकार-मण्डली ने हवा की भाति उसका पीछा किया, चेरतोपखानोव भी लपका, लेकिन बाकी मण्डली की सगत में नही, बल्कि एक बाजू, उससे दो सौ डग हटकर, ठीक वैसे ही जैसे कि उसने पहली बार किया था। पानी का एक भीमाकार झरना, बल खाता, पहाडी ढलुवान के बीच बह रहा था और ऊचाई के रुख, क्रमश अधिकाधिक सकरा होता गया था। वह चेरतोपखानोव के रास्ते को काटता था। उस स्थल पर जहा छलाग मारकर उसे वह पार करना चाहता था और जहा, अठारह महीने पहले, सचमुच में उसने इसे पार किया था, यह अभी भी आठ फुट चौडा तथा चौदह फुट गहरा था। विजय की पूर्व-कल्पना कर—उस विजय की जिसकी इतनी आह्लादपूर्ण पुनरावृत्ति हो रही थी—चेरतोपखानोव हुलसकर मुह ही मुह हसा, अपने चाबुक को चटकारते हुए। शिकार-मण्डली भी सरपट दौड रही थी, अपनी

रासों को दु:साहसी घुड़सवार पर जमाये। उसका घोडा गोली की भाति सनसनाता हुआ लपका, और नाला अब ठीक उसकी नाक के नीचे था— अब, अब, पहले की भाति एक छलाग लगाने की देर थी! लेकिन मालेक-आदेल एकदम चमका, बाईं ओर घूमा और बावजूद इसके कि चेरतोपखानोव उसे कगारे की ओर, नाले की ओर खीच रहा था, वह खड्ड के किनारे किनारे, सरपट दौड चला।

तो वह कायर साबित हुआ, उसे अपने पर भरोसा नही था।

इसके बाद चेरतोपखानोव ने, शर्म तथा गुस्से से जलते हुए, लगभग रोने की हालत में, रासो को ढीला छोड दिया और घोडे को सीधे सामने चढाव की ओर, शिकार-मण्डली से दूर—बहुत दूर—तेजी से ले चला, अगर और किसी बात के लिए नही तो केवल इसी लिए कि उनके खिल्ली उडाने की आवाज उसके कानो तक न पहुच सके, उनकी बदबख्त नजरो की पकड से वह अपने-आप को बचा सके।

बुरी तरह झाग से लथपथ, चाबुक की बेरहम बौछारो को अपनी पीठ पर सहता, मालेक-आदेल सरपट घर पहुचा, और चेरतोपखानोव ने फौरन कमरे में अपने-आपको बद कर लिया।

"नही, यह वह नही है, यह मेरा दुलारा नही है! वह अपनी जान से भले ही हाथ धो बैठता, पर मेरे साथ यो विश्वासघात न करता!"

११

और जिस परिस्थिति ने, जैसा कि कहते है, अन्तिम रूप से चेरतोपखानोव को 'चित्त' कर दिया, वह इस प्रकार थी। एक दिन, मालेक-आदेल पर सवार, इलाके के गिरजे के इर्द-गिर्द—बेस्सोनोवो इसी के अन्तर्गत था—वह पादरियो के क्वार्टरो के पिछवाडे घूम रहा था। अपनी कज्जाक रोएदार टोपी को नीचे आखो के ऊपर तक खीचे,

"दुष्ट लोगों की चालाकी द्वारा एक जानवर से हाथ धोने के बाद," पादरी कहता गया, "उसके दुःख में आपने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि –इसके प्रतिकूल–और भी अधिक विश्वास के साथ ईश्वरीय सत्ता में भरोसा करते हुए अपने लिए एक अन्य जानवर आपने प्राप्त किया, जो किसी तरह भी पहलेवाले से हेय नहीं है, बल्कि–कहना चाहिए कि–उनसे बढ़कर है, क्योंकि ."

"क्या फिज़ूल की बात करते हो?" चेरतोपखानोव ने उदास भाव से बीच में टोका। "दूसरे घोड़े से तुम्हारा क्या मतलब है? यह वहाँ तो है, वही माल्केक-आदेल . मैंने उसे खोज निकाला है। लेकिन तुम हो कि जो मुह में आया, बक दिया!"

"अये, अये, अये!" पादरी ने जवाब में विलम्बित स्वर अलापा, निश्चयात्मक अन्दाज़ में, उगलियों से अपनी दाढी को भीतर से ठकोरते और अपनी उजली उत्सुक आखो से चेरतोपखानोव की ओर देखते हुए, "यह कैसे हो सकता है, श्रीमान? आपका घोडा, खुदा मेरी स्मृति को सलामत रखे, पिछले साल इटरसेशन के कोई पन्द्रह दिन बाद चोरी हो गया था, और अब नवम्बर का महीना खत्म हो रहा है।"

"तो इससे क्या?"

पादरी अभी भी अपनी दाढी में उगलिया नचा रहा था।

"क्यो, इसका मतलब यह कि तब से अब तक एक साल से भी अधिक गुज़र चुका है, और तब–ठीक जैसा कि अब है–आपका घोडा चितकबरा भूरे रग का था–सच पूछो तो, वह अब और भी गहरा मालूम होता है। सो कैसे? भूरे घोडो का रग तो साल-भर में काफी हल्का पड जाता है "

चेरतोपखानोव चौंका मानो किसी ने उसके हृदय को खजर से बीध दिया हो। यह सच था–भूरा रग बदल जाता है। यह कैसे हुआ कि यह सीधी-सी बात पहले कभी उसके दिमाग में नहीं आयी?

"मेरी जान न खाओ! कमबख्त सूअर की पूछ!" सहसा वह चिल्लाया, आखो से गुस्से की चिगारिया निकलने लगी और पलक झपकते न झपकते चकित पादरी की आखो से ओझल हो गया।

तो अब कुछ शेष नही रहा था!

अब, आखिर, सचमुच कुछ भी शेष नही रहा था, हर चीज़ चकनाचूर हो गयी थी, आखिरी पासा पड चुका था। हर चीज़ आनन-फानन ढह गयी, एक 'हल्का' शब्द के सामने।

भूरे घोडो का रग हल्का पड जाता है।

"चल, सरपट चल, बदबख्त जानवर! लेकिन इस सत्य से तू कभी पीछा नही छुडा सकेगा!"

चेरतोपखानोव हवा की तरह घर लौटा, और अपने-आपको उसने फिर अपने कमरे में बद कर लिया।

१२

उसे अब तनिक भी शक नही था कि यह टुकडियल बेदम घोडा मालेक-आदेल नही है, कि उसमें और मालेक-आदेल में जरा-सी भी समानता नही है, कि कोई भी आदमी जिसमें जरा भी समझबूझ है पहले क्षण में ही इस बात को भाप लेगा, कि वह चेरतोपखानोव, निहायत बेहूदा ढग से ठगा गया—नहीं, बल्कि उसने जानबूझकर, निश्चित इरादे से, अपने-आपको ठगा, खुद अपनी आखो पर पर्दा डाला—इस सबके बारे में अब उसे हल्का-सा भी सन्देह नही था।

चेरतोपखानोव इस छोर से उस छोर तक, अपने कमरे को नाप रहा था, प्रत्येक दीवार के आने पर एडियो के बल एक ही तरह घूमते हुए, पिजडे में बद वन्य जीव की भाति। उसका स्वाभिमान असह्य वेदना का अनुभव कर रहा था, लेकिन वह केवल आहत-स्वाभिमान से

ही पीड़ित नही था, बल्कि निराशा ने भी उसे अभिभूत कर लिया था, गुस्से से उसका गला रुंधा था और प्रतिशोध की आग से वह जल रहा था। लेकिन गुस्सा वह किस पर उतारे? किससे वह बदला ले? यहूदी से, याफ से, माशा से, पादरी से, कजाक-चोर से, अपने तमाम पडोसियो से, समूची दुनिया से, खुद अपने-आप से? उसका दिमाग जवाब दे रहा था। आखिरी पासा पड चुका था! (इस उपमा से वह सन्तुष्ट हुआ।) वह अब फिर अत्यन्त निकम्मा, अत्यन्त हेय जीव बन गया था—सबकी हसी का पात्र, रगबिरंगा विदूषक, एक बदबख्त मूर्ख, और एक पादरी की फब्तियो का निशाना! उसने कल्पना की, सुस्पष्ट चित्र उसने मूर्त किया, कि सूअर की पूछनुमा चोटीवाला वह घृणित पादरी किस प्रकार भूरे रग के घोडे और मूर्ख श्रीमन्त की कहानी का प्रचार करेगा। ओह, भाड में जाय सब! चेरतोपखानोव ने अपने उमडते हुए उद्वेग को रोकने की कोशिश की, लेकिन बेकार, और बेकार ही उसने अपने को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि यह   यह घोडा, हालाकि मालेक-आदेल नही था, फिर भी.   एक अच्छा घोडा था, और अभी भी कितने ही सालो तक वह काम दे सकता था। इस खयाल को, गुस्से के साथ, उसने वही के वही खदेडकर अलग कर दिया, मानो इसमें उस मालेक-आदेल के लिए जिसे वह, अपनी समझ से, पहले ही काफी आहत कर चुका था, कोई नया अपमान निहित हो   और सच, इसमे शक नही! इस मरियल को, इस मुर्दे को, उसने—एक अधे मूर्ख की भाति—उसके, मालेक-आदेल के—समकक्ष रखा! और यह बात कि वह उससे काम ले सकता है . मानो वह कभी उसपर सवार होने की कृपा करेगा? कभी नही! किसी हालत में भी नही! कुत्ते के मास के बदले किसी तातार के हाथ वह उसे बेच देगा—यह इसी योग्य है . हा, यह सबसे अच्छा रहेगा।

दो घटे से अधिक समय तक चेरतोपखानोव अपने कमरे के अन्दर घूमता रहा।

"पेर्फीश्का!" अचानक निश्चयात्मक आवाज में वह चिल्लाया, "इसी क्षण लपककर शराबखाने में जाओ, और एक गैलन वोद्का ले आओ! सुन रहा है न? एक गैलन, और ज़रा फुर्ती से! मै इसी क्षण यहा, इस मेज पर, वोद्का चाहता हूं!"

पान्तेलेई येरेमेइच की मेज़ पर वोद्का के नमूदार होने में देर नही लगी, और उसने पीना शुरू कर दिया!

१३

अगर उस समय चेरतोपखानोव को कोई देखता, अगर कोई उसकी उस विक्षुब्ध उद्विग्नता का साक्षी होता जिससे कि वह एक के बाद एक गिलास खाली कर रहा था, तो वह अदबदाकर अपने-आप भय से काप उठता। रात घिर आयी थी। मोम की बत्ती मेज़ पर धुधली जल रही थी। चेरतोपखानोव ने इस छोर से इस छोर तक मडराना बद कर दिया था। वह, ऊपर से नीचे तक, भभूका बना बैठा था। उसकी आखें धुधलायी थी, जिन्हें कभी वह फर्श पर और कभी अधियाली खिडकी पर हठपूर्वक जमा लेता था। वह उठा, कुछ वोद्का उडेली, उसे गले के नीचे उतारा, फिर बैठ गया, फिर एक स्थल पर अपनी आखें जमायी, और थिर हो गया—केवल उसके सास की गति में तेज़ी थी और उसका चेहरा अधिक तमतमा उठा था, ऐसा मालूम होता था जैसे कोई निश्चय उसके भीतर ही भीतर पक रहा हो, ऐसा जिससे वह खुद शरमा रहा था, लेकिन जिसका वह क्रमश आदी होता जा रहा था। केवल एक विचार हठपूर्वक और बिना डिगे, उसके अधिकाधिक निकट आता जा रहा था, केवल एक चित्र अधिकाधिक स्पष्ट रूप में उभर रहा था, और भारी ज्वलन्त नशे के नीचे क्रुद्ध चिडचिडाहट के स्थान पर अब हिसक भावना उसके हृदय में घर कर रही थी, और एक प्रतिशोधपूर्ण मुसकान उसके होठो पर उभर रही थी

"हा, तो समय आ गया," उसने यथातथ्य, करीब करीब थके हुए लहजे मे, घोषणा की। "मुझे अब काम मे जुटना चाहिए।"

उसने वोद्का का आखिरी गिलास खाली किया, अपने बिस्तर के ऊपर से पिस्तौल उठाया – वही जिससे उसने माशा पर गोली दागी थी – उसे भरा, कुछ कारतूस अपनी जेब में डाले – कौन जाने क्या ज़रूरत पड जाय – और अस्तबल की ओर चल दिया।

उसने दरवाजा खोलना शुरू किया ही था कि चौकीदार दौडा हुआ उसके पास पहुचा, लेकिन उसने उसे दुत्कार दिया – "मै हू क्या दिखता नही? दफा हो यहा से!" चौकीदार थोडा एक ओर हट गया। "दफा हो यहा से और जाकर सो जा!" चेरतोपखानोव फिर उसपर चिल्लाया – "यहा तेरे चौकीदारी करने के लिए कुछ नही है! कौनसा अजूबा है यहा चौकीदारी करने के लिए कौनसा खजाना गडा है!" उसने अस्तबल में प्रवेश किया। मालेक-आदेल नकली मालेक-आदेल, पुआल के अपने बिछौने पर पडा था। चेरतोपखानोव ने उसके एक ठोकर लगायी, यह कहते हुए – "खडा हो, जगली कही का!" इसके वाद उसने कील से अटकी वाग निकाली, घोडे का जामा उतारा और उसे फर्श पर फेंक दिया, और रुखेपन के साथ विनत घोडे को कटघरे में घुमाकर मोडते हुए उसे वाहर अहाते में निकाल लाया, और अहाते से खुले खेत की ओर ले चला। चौकीदार भारी अचरज में पडा। वह कतई नही समझ पा रहा था कि विना ज़ीन के घोडे को अपने साथ लिये रात के इस समय उसका मालिक कहा जा रहा है। उससे, कहने की आवश्यकता नही, कुछ पूछते डर लगता था। वह केवल अपनी आखो से उसका अनुसरण करता रहा, जब तक कि वह सडक के उस मोड पर जो पास के एक जगल की ओर जाता था, नज़र से ओझल नही हो गया।

१४

चेरतोपखानोव लम्बे डग भर रहा था, विना रुके और विना मुडकर देखे। मालेक-आदेल – अन्त तक हम उसे इसी नाम से पुकारेंगे – मेमने की भाति उसका अनुसरण कर रहा था। रात अपेक्षाकृत निर्मल थी।

चेरतोपखानोव जगल की असम वाह्य-रेखा को पहचान सकता था जो काले समूह की भाति सामने दिखाई दे रही थी। रात की ठडी हवा में प्रवेश करने पर निश्चय ही वोद्का का नशा तेज़ हो जाता अगर एक दूसरा, उससे भी ज्यादा जवर, नशा उसे पूर्णतया अभिभूत न किये होता। उसका सिर भारी था, उसका रक्त उसके कानो और गले में धक धक कर रहा था, लेकिन वह अडिग गति से वढे जा रहा था, और वह जानता था कि वह कहा जा रहा है।

उसने मालेक-आदेल को मार डालने का निश्चय किया था। समूचे दिन सिवा इसके और कुछ उसने नही सोचा था। और अव उसका मन निश्चय पर पहुच चुका था।

और इस काम को करने के लिए वह वाहर केवल शान्ति के साथ, वल्कि विश्वास के साथ निकल आया था, विना किसी अचकचाहट के, उस आदमी की भाति जो किसी चीज को अपना कर्त्तव्य समझकर करने जा रहा हो। यह 'काम' उसे वहुत ही 'सरल' मालूम होता था, एक धोखेवाज का अन्त करके एकवारगी 'सभी कुछ' निवट जायेगा – अपनी मूर्खता के लिए उसे दण्ड मिल जायेगा, अपने असली दुलारे के प्रति किये गये अपमान का परिमार्जन हो जायेगा और समूची दुनिया के सामने यह प्रकट हो जायेगा कि ('समूची दुनिया' का फिक्र चेरतोपखानोव को अत्यधिक चिन्तित किया करता था) वह ऐसा नही है जिसके साथ खेलवाड किया जा सके और वह खुद भी मरने जा रहा था, इस कपटी के साथ अपना भी अन्त करने – क्योकि अव वह जिये तो किस लिए? किस प्रकार इस सवने उसके मस्तिष्क में आकार ग्रहण किया, और क्यो उसे यह इतना सरल मालूम होता था, यह वताना सहज नही है, हालाकि एकदम असम्भव भी नही है। वुरी तरह मर्माहत, एकाकी, पास में कोई इन्सान तक नही – विना सगी-साथी और विना फूटी कौडी के, और खुद वोद्का की आग में लपलपाता हुआ – वह पागलपन की सीमा तक जा पहुचा

था, और इसमे शक नही कि पागलो की बेहूदा से बेहूदा सनक मे भी, उनकी नजर से, एक तरह का सगति का — बल्कि कहना चाहिए कि न्याय का— समावेश होता है। न्याय का जहा तक सबध था, कमोवेश रूप में, चेरतोपखानोव पूर्णतया आश्वस्त था। उसे कोई दुविधा नही थी और अपराधी को सजा देने के लिए वह तुरत चल पडा, इस बात की अपने सामने कोई सुस्पष्ट व्याख्या किये बिना कि इस शब्द से उसका क्या अभिप्राय है — कौन है वह जिसे वह अपराधी समझता है। सच तो यह है कि उसने इसपर बहुत ही कम सोचा था कि वह क्या करने जा रहा है। "जरूर, जरूर, मैं जरूर अन्त करूगा," हठपूर्वक और कठोरता के साथ इसी को वह अपने मन में दोहरा रहा था, "जरूर मुझे अन्त करना होगा।"

और निरपराध अपराधी, विनत दुलकी चाल से, उसके पीछे पीछे चल रहा था। लेकिन चेरतोपखानोव के हृदय मे उसके लिए जरा भी तरस नही था।

१५

जगल के अन्दर एक खुली जगह से थोडी ही दूर जहा वह अपने घोडे को लिवा ले जा रहा था, एक छोटी-सी घाटी थी। बलूत की किशोर झाडिया उसे आधा घेरे थी। चेरतोपखानोव उसमे उतर चला। मालेक-आदेल ने ठोकर खायी और करीब था कि उसके ऊपर ही आ गिरता।

"सो तुम मुझे कुचल डालोगे, क्यो, नासखेत वहशी!" चेरतोपखानोव चिल्लाया और, जैसे अपना बचाव करने के लिए, उसने अपनी जेब मे से पिस्तौल बाहर खीच लिया। क्रुद्ध उत्तेजना का वह अब अनुभव नही कर रहा था, बल्कि एक खास बेहिसी उसकी इद्रियो मे समायी थी जो, कहते है कि, अपराध करने से पहले आदमी पर छा जाती है। लेकिन वह खुद अपनी आवाज से भयभीत हो उठा — वन्य घाटी की घनी, सद्भाव-भरी

सीलन में काली टहनियो के आच्छादन के नीचे वह इतनी वहशियाना और अजीब मालूम हो रही थी। इसके अलावा, उसकी चिल्लाहट के जवाब में, उसके सिर के ऊपर किसी पेड की छत पर कोई वडा पक्षी अचानक फडफडा उठा चेरतोपखानोव कापा। उसने, जैसे, अपने कृत्य के एक साक्षी को चौकस कर दिया था—सो भी कहा? उस निस्तब्ध जगह में जहा कोई भी जीवित प्राणी उसे नही दिखाई पडना चाहिए था

"दफा हो, शैतान, जिस दिशा में भी हवा तुझे ले जाय!" वह बुदबुदाया, और मालेक-आदेल की बाग को छोडते हुए, पिस्तौल के पिछले हिस्से से उसने उसके कधे पर ज़ोरो से आघात किया। मालेक-आदेल तुरत उलटा मुड़ा, जैसे-तैसे घाटी से बाहर निकला और दुलकियाता चल दिया। लेकिन उसके खुरो की चाप अधिक देर तक सुनाई नही दी। उमडती हुई हवा में सभी आवाज़ें घुलमिल गयी थी।

चेरतोपखानोव भी, धीरे धीरे, घाटी में से निकला, जगल में पहुचा और सडक के सहारे सहारे घर की ओर चल दिया। वह अपने-आप में वेचैन था। वह वोझ जो उसके मस्तिष्क और हृदय को भारी बनाये था, उसके सभी अगो में फैल गया था। झुझलाया हुआ, उदास, असन्तुष्ट और भूख का मारा वह लौट रहा था, जैसे किसी ने उसका अपमान किया हो, उसका शिकार, उसका खाद्य, उससे छीन ले गया हो

आत्महत्या करनेवाला विफल-मनोरथ होने पर, निश्चय ही इस तरह की उत्तेजना का अनुभव करता होगा।

अचानक किसी चीज़ ने, पीछे से, उसके कधो के वीच में टहोका दिया। उसने घूमकर देखा मालेक-आदेल सडक के वीचोवीच खडा था। वह अपने मालिक के पीछे पीछे चला आ रहा था। अपनी उपस्थिति की घोपणा करने के लिए अपने नथुनो से उसने उसका स्पर्श किया था

"ओह!" चेरतोपखानोव चिल्लाया, "तुम खुद, तुम अपने-आप, अपनी मौत को भेंटने चले आये। तो यह लो!"

पलक झपकते न झपकते उसने अपना पिस्तौल निकाला, पिस्तौल के घोडे को चढाया, मालेक-आदेल के माथे को पिस्तौल का निशाना बनाया और गोली दाग दी .

बेचारा घोडा उछलकर एक ओर हटा, अपने पिछले पावो पर उचका, दस-एक डग दौडा, अचानक धम से गिरा, और धरती पर तडपते हुए हाफने लगा .

चेरतोपखानोव ने अपने दोनो हाथो को अपने कानो पर रखा और वहा से भाग खडा हुआ। उसके घुटने उसके बोझ से लडखडा रहे थे। नशा, गुस्सा और अधा आत्मविश्वास, सभी एकबारगी गायब हो गये। केवल लज्जा और घिन, और यह असदिग्ध चेतना कि इस बार उसने खुद अपना भी अन्त कर लिया है, इसके अलावा और कुछ भी उसके मन में न था।

१६

छ सप्ताह बाद, पेर्फीश्का ने पुलिस कमिश्नर को जो, सयोगवश बेस्सोनोवो से गुज़र रहा था, रोकना अपना कर्त्तव्य समझा।

"क्यो, तुम क्या चाहते हो?" कानून और व्यवस्था के सरक्षक ने पूछा।

"बहुत भला हो, अन्नदाता, अगर हमारे घर में चलने की मेहरबानी करे," उसने खूब नीचे झुककर माथा नवाते हुए जवाब दिया। "पान्तेलेई येरेमेइच, लगता है, मरने के निकट है। सो मुझे डर है।"

"क्या? मरनेवाले है?"

"हा, सरकार! पहले मेरे मालिक रोज़ रोज़ वोद्का पीते रहे, और अब विस्तर से जा लगे है, और बहुत दुबले हो गये है। लगता है, मेरे मालिक अब कुछ नही समझ पाते। उनकी आवाज़ बिल्कुल भारी हो गयी है।"

कमिश्नर अपनी बग्घी से बाहर आ गया।

"पादरी को तो कम से कम तुमने बुला भेजा है न? क्या तुम्हारे मालिक अपने गुनाहो को कबूल कर चुके है? प्रायश्चित तो करा दिया है?"

"नही, सरकार!"

कमिश्नर ने भौहे चढायी।

"सो कैसे, मेरे मुनुवा? यह भला कैसे हो सकता है, जरा बताओ तो? क्या तुम नही जानते कि इसके लिए तुम्हे भारी भुगतान करना पड सकता है?"

"इसमें शक नही, और उनसे मैंने परसो पूछा था, और कल फिर पूछा था," भय से मारे लडके ने प्रतिवाद किया, "'अगर आप, पान्तेलेई येरेमेइच,' मैंने कहा, 'मुझे इजाजत दे तो दौडकर पादरी को बुला लाऊ, सरकार?' पर उन्होने कहा, 'तू अपनी जुबान बद रख, मूर्ख। अपना काम देख!' लेकिन आज, अपने मालिक से जब मैंने बात की तो वह बस देखते रहे, और अपनी मूछो को उन्होने फरफराया।"

"और क्या वह बहुत ज्यादा वोद्का पीते रहे है?" कमिश्नर ने पूछा।

"काफी से ज्यादा! लेकिन, सरकार, बडा भला हो अगर आप उनके कमरे में चले चले।"

"अच्छा तो चलो!" कमिश्नर बडबडाया और पेर्फीश्का के साथ चल दिया।

अन्दर जाकर जो दृश्य उसने अपनी आखो से देखा उससे वह स्तब्ध रह गया। पीछे के एक सीलन-भरे अधेरे कमरे में, घोडे का जामा बिछा था जिसपर एक मनहूस-से बिस्तरे पर, नमदे के एक खुरदरे चोगे का तकिया लगाये, चेरतोपखानोव पडा था। उसका रग अब सफेद नही, हरा-ज़र्द हो गया था, लाश की भाति, चिकनी पलको के नीचे आखें गढो में धसी हुई और, उसकी अस्तव्यस्त मूछो के ऊपर, पैनी कचोटी

हुई सी नाक – जो अभी भी कुछ लाली लिये थी। वह अपना वही पुराना – कभी न उतरनेवाला – काकेशी कोट पहने लेटा था, वक्ष पर कारतूसो की पट्टी और नीले रग का काकेशी शलवार। गुलाबी कलगी से युक्त एक कजाक टोपी उसके माथे को, ठीक भौहो तक, ढके थी। एक हाथ मे चेरतोपखानोव अपना शिकारवाला चाबुक थामे था, दूसरे मे कसीदा कढा तम्बाकू का बटुवा – माशा का आखिरी उपहार। बिस्तरे के पास एक मेज पर शराब की एक खाली बोतल रखी थी, और बिस्तरे के सिरहाने की ओर दो जलरग चित्र दीवार मे कीलो से जडे थे। इनमे से एक मे, जहा तक पता चलता था, अपने हाथ मे गिटार लिये एक मोटा-सा आदमी अकित था। यह सम्भवत नेदोप्यूस्किन था। दूसरे मे एक घोडसवार चित्रित था जो पूरी तेजी के साथ सरपट चाल से लपका जा रहा था। घोडा कल्पना-लोक के उन जानवरो की भाति मालूम होता था जो बच्चे दीवारो और बाडो पर बनाते रहते है, लेकिन उसके बालो का सावधानी के साथ किया गया चितकबरा भूरा रग और घोडसवार के वक्ष पर कारतूस रखने की जेबे, उसके जूतो के नुकीले पजे, और भीमाकार मूछे – सन्देह के लिए कोई गुजाइश नही रह जाती थी कि इस चित्र का अभिप्राय मालेक-आदेल पर सवार पान्तेलेई येरेमेइच को अकित करना था।

चकित पुलिस कमिश्नर की समझ मे नही आया कि वह क्या करे। कमरे में मृत्यु की निस्तब्धता छायी थी। "यह तो पहले ही मर चुका मालूम होता है।" उसने सोचा, और अपनी आवाज को ऊचा करते हुए बोला – "पान्तेलेई येरेमेइच। पान्तेलेई येरेमेइच।"

तभी एक असाधारण घटना घटी। चेरतोपखानोव की आखो की पलके उठी, उसकी आखें – जो तेजी से पथराती जा रही थी – पहले दाहिनी ओर से बाई ओर, और फिर बाई से दाहिनी ओर घूमी, और कमिश्नर पर टिक गयी – उसे ताकने लगी उनकी धुधली सफेदी मे कोई चीज़ थी जो चमक रही थी, लगता था जैसे किसी चीज़ की याद

उनमें कौध गयी हो, चिपके हुए नीले होठ धीरे धीरे खुले और एक मरमरी-सी, जैसे कबर में से आती हुई आवाज सुनाई दी।

"प्राचीन पुश्त दर पुश्त से कुलीन पान्तेलेई येरेमेइच मर रहा है–उसे कौन रोक सकता है? उसे किसी का कुछ देना नही है, किसी से कुछ मागना नही है उसे परेशान न करो, लोगो! जाओ, अपना रास्ता देखो!"

चावुकवाले हाथ को उसने उठाने का प्रयास किया, लेकिन बेकार! होठ फिर एक-दूसरे से चिपक गये, आखें मुद गयी, और चेरतोपखानोव पहले की भाति अपने अटपटे बिस्तर पर पड रहा, खाली बोरे की भाति सपाट, अपने पावो को कसकर सटायें।

"इसके मरने की मुझे खबर देना," कमरे से बाहर निकलते हुए कमिश्नर ने पेर्फीश्का से फुसफुसाकर कहा, "और मेरी समझ मे तुम अब पादरी को बुलवा लाओ। तुम्हे विधि-विधान का यथोचित पालन करना चाहिए। और देखो, मृत्यु-समय के इनके अन्तिम सस्कार में कतई कोई कसर नही छोडना!"

पेर्फीश्का उसी दिन पादरी को बुलाने के लिए गया, और अगली सुबह उसने कमिश्नर को जाकर खबर दी–पान्तेलेई येरेमेइच का रात को देहान्त हो गया।

दफनाने के समय, दो आदमी उसके ताबूत के साथ थे–पेर्फीश्का, और मोशेल लेइबा। चेरतोपखानोव के मरने की खबर, जाने कैसे यहूदी तक पहुच गयी थी, और अपने हितैषी के प्रति सम्मान प्रकट करने के इस अन्तिम कृत्य को निभाने से वह नही चूका।

जीवित समाधि

ओ जन्म भूमि,
चिर पीडित रूसी जनता की धरती!

फ० त्यूत्चेव

एक फ्रासीसी कहावत है कि 'सूखा मछियारा और भीगा हुआ शिकारी दयनीय होते है'। मछलियो के शिकार का मुझे कभी शौक नही रहा, सो मै यह निश्चय नही कर सकता कि बढिया उजले मौसम मे मछियारे के हृदय पर क्या गुजरती है, और जब मौसम बुरा हो तो मछलियो की बहुतात से प्राप्त होनेवाली खुशी भीगने की बदमज़गी को किस हद तक पूरा करती है। लेकिन शिकारी के लिए वारिश वास्तव में एक मुसीबत है। येरमोलाई और मै ऐसी ही एक मुसीबत मे फस गये—उस समय जबकि हम बेलेव जिले में ग्राउज-पक्षियो का शिकार करने निकले थे। वारिश एकदम सुबह से घडी-भर के लिए भी नही रुकी थी। उससे वचने के लिए क्या कुछ हमने नही किया। अपनी वरसातियो को करीव करीव ठीक सिर के ऊपर तक हमने खीचा, और बारिश की बूदो से वचने के लिए पेडो के नीचे हम जा खडे हुए। वरसाती कोट—इस वात को छोडिये कि बन्दूक चलाने में वे बाधक होते थे, अत्यन्त निर्लज्जता के साथ पानी को अन्दर घुसने दे रहे थे। पेडो के नीचे शुरू शुरू में वारिश निश्चय ही हम तक नही पहुच पाती थी, लेकिन वाद में पत्तियो पर जमा पानी अचानक गिरने लगता, प्रत्येक टहनी हमारे ऊपर पिचकारी-सी छोड़ती,

और एक ठडी धारा हमारे गुलूबन्दो के नीचे सरसरा जाती और हमारी पीठ पर से वह चलती   यह, येरमोलाई के शब्दो में हद थी।

"नही, प्योत्र पेत्रोविच," आखिर वह चीखा – "यो नही चलेगा! आज शिकार-विकार कुछ नही होना है। बारिश इतनी ज्यादा है कि कुत्ते अपने शिकार की गन्ध खो बैठते है। गोलिया चूक जाती है   ओह, क्या मुसीबत है!"

"तो क्या किया जाय?" मैने पूछा।

"चलो, आलेक्सेयेवका चले। शायद आप नही जानते – इस नाम का एक पुरवा है जो आपकी मा की सम्पत्ति है। यहा से चार-एक मील दूर होगा। रात को हम वहा ठहरेगे, और कल   "

"फिर यहा लौट आयेंगे?"

"नही, यहा नही। आलेक्सेयेवका के उधर कुछ स्थानो को मै जानता हू   ग्राउज-पक्षियो के लिए वे यहा से हर घडी अच्छी है!"

मैने अपने फरमानवरदार साथी से यह सब पूछना-ताछना शुरू नही किया कि इन इलाको में वह मुझे पहले क्यो नही ले गया। उसी दिन हमने उस पुरवे की राह पकडी जो मेरी मा की मिल्कियत था और जिसके अस्तित्व के बारे में, मुझे स्वीकार करना चाहिए, मुझे गुमान तक नही था। इस पुरवे में, पता चला, एक छोटा-सा बगला था। वह बहुत ही पुराना था, लेकिन चूकि उसमें कोई रहता नही था, इसलिए साफ था। काफी शान्त रात मैने उसमें बितायी।

अगले दिन मै बहुत जल्दी उठ खडा हुआ। सूरज अभी निकला ही था। आकाश मे एक भी बादल नही था। चारो ओर की हर चीज दूनी आभा से चमक रही थी। एक तो सुबह की ताजा किरनो की उजियाली से, दूसरे कल की बारिश के निखार से। इस बीच जबकि वे मेरे लिए गाडी जोत रहे थे, मै छोटे-से बगीचे में टहलने निकल गया। यह अब उपेक्षित पडा था और उसमें झाड-झखाड उग आये थे। इसकी सुगधित,

रसीली हरियाली वगले की चारो ओर से घेरे थी। ओह, खुली हवा मे, उजले आकाश के नीचे जहा लार्क-पक्षी कूक रहे थे और उनके घटी जैसे स्वर रुपहले मनको की भाति नीचे धरती पर वरस रहे थे, कितना प्यारा मालूम होता था! अपने परो पर, शायद, वे ओस की बूंदें वहन किये थे और उनके गीत ओस में भीगे मालूम होते थे। मैंने सिर पर से अपनी टोपी उतारी और एक आह्लादपूर्ण गहरा सास खीचा। छिछली घाटी के ढलुवान पर, वाड के निकट, एक मधुमक्खियो का वाग दिखाई दे रहा था और एक सकरा पथ साप की भाति वल खाता उस तक चला गया था—ऊची घास और कटीली झाडियो की घनी दीवारो के वीच—जिनके ऊपर, खुदा जाने वे यहा कहा से आये, गहरे हरे स न के नुकीले सरकडे जूझ रहे थे।

मै इस पथ पर मुड चला। मधुमक्खियो के छत्तो के पास पहुचा। उनके वरावर में वेंत की वनी छोटी-सी झोपडी थी जिसमे, जाडो के दिनो में, छत्तो को रखा जाता था। मैंने अधखुले दरवाजे मे से झाककर देखा। भीतर अधेरा, चुपचाप और सूखा था। पुदीने और लेप की सुगध आ रही थी। कोने मे कुछ पाटिया एक-दूसरे से जुडी थी और उनके ऊपर, रज़ाई से ढकी, कोई एक छोटी आकृति-सी वैठी थी। मै वहा से चलने को हुआ

"मालिक! मालिक! प्योत्र पेत्रोविच!" मुझे एक आवाज सुनाई दी—धुधली, धीमी और मरमरी, दलदली घासो की कानाफूसी की भाति।

मै रुक गया।

"प्योत्र पेत्रोविच! कृपा कर भीतर चले आइये!" उस आवाज ने दोहराया। यह कोने मे से आ रही थी जहा मैंने पाटियो को देखा था।

मै निकट पहुचा और आश्चर्य से स्तब्ध रह गया। मेरे सामने एक जीवित मानव-प्राणी पडा था। लेकिन किस प्रकार का जीव था यह?

एकदम मुरझाया हुआ चेहरा, एकरस ताम्वे जैसा रग, किसी अत्यन्त प्राचीन देव-प्रतिमा की भाति, काल के प्रभाव से जो पीली पड गयी हो, तेज़ चाकू की भाति पैनी नाक, होठ लगभग गायव—केवल नफेद दात

चमक रहे थे, और आखें, और पीले बालो के कुछ पतले लट रूमाल के नीचे से माथे पर निकल आये थे। ठोडी के पास, जहा रज़ाई सिमटी हुई थी, उसी ताम्बे जैसे रग के दो छोटे छोटे हाथ हरकत कर रहे थे, उगलिया छोटी तीलियो की भाति धीरे धीरे बल खा रही थी। मैने और ध्यान से देखा। चेहरा, बदसूरत होने की बात छोडो, निश्चित रूप से सुन्दर था, लेकिन अजीब और भयावह। और यह चेहरा मुझे इसलिए और भी अधिक भयावह मालूम हुआ कि उसपर – उसके धातुवी गालो पर – एक मुसकान पर मेरी नज़र पडी – जो सघर्ष करती हुई जूझती हुई . लेकिन अपने-आपको मूर्त करने में असमर्थ हो रही थी।

"आप मुझे पहचानते नही, मालिक?" वह आवाज फिर फुसफुसायी– लगा जैसे वह करीब करीब बेहिस होठो से नि सृत हुई हो। "और, बेशक, आप पहचानते भी कैसे? मै लुकेरिया हू याद है न आपको, वही जो प्पास्कोये में, आपकी मा के यहा झूम झूमकर अपनी सहेलियो के साथ नाचा-गाया करती थी याद है, मै सब के आगे आगे गाया करती थी?"

"लुकेरिया!" मै चीखा। "अरे, तो क्या वह तुम हो? क्या ऐसा हो सकता है?"

"हा, मालिक, मै वही हू, मै वही लुकेरिया हू।"

मेरी समझ में नही आया कि क्या कहू, और विमूढ-सा उसके अधेरे गतिशून्य चेहरे की ओर ताकता रहा जिसकी सुस्पष्ट, मृत्यु-सदृश आखे मुझपर जमी थी। क्या यह सम्भव था? यह पिण्ड, लुकेरिया – हमारे समूचे घराने में सबसे सुन्दर – वह लम्बी, गुदगुदी, श्वेत और गुलाबी, गाती, हसती और नाचती जीव! लुकेरिया, हमारी वह चपल-चचल लुकेरिया, जिसका प्रेम पाने के लिए हमारे सभी लडके ललकते थे, जिसे लेकर अनेक गुप्त उमासे मैने भरी थी, जब मै सोलह वर्ष का लडका था।

"खुदा रहम करे, लुकेरिया!" आखिर मैंने कहा, "यह तुम्हे क्या हुआ है?"

"ओह, ऐसी गाज मुझपर आकर गिरी! लेकिन, बुरा न माने, मालिक! मेरी हालत को देखकर बुरा न माने। यहा, उस छोटे-से टब पर बैठ जाय—थोडा और पास, नही तो आप मुझे सुन नही सकेगे। मेरी आवाज अब न के बराबर रह गयी है आपको मिलकर मुझे बडी खुशी हुई। कहो, आलेक्सेयेवका की ओर कैसे आ निकले?"

लुकेरिया बहुत ही धीमे और क्षीण स्वर में, लेकिन बिना रुके बोल रही थी।

"येरमोलाई, मेरा शिकारी-चाकर मुझे यहा लिवा लाया। लेकिन तुम सुनाओ "

"आपको अपनी मुसीबत के बारे में सुनाऊ? जरूर सुनाऊगी मालिक। एक जमाना हुआ जब यह घटना घटी थी—छ या सात साल पहले। केवल तभी, ठीक उन्ही दिनो, जब वासीली पोल्याकोव से मेरी मगनी होकर चुकी थी। आपको याद है न, कितना खूबसूरत दिखता था वह, अपने घुघराले बालो के साथ? वह आपकी मा के बुफे का कर्मचारी था। लेकिन आप तब देहात मे नही थे, पढने के लिए मास्को चले गये थे। हम एक दूसरे से बहुत बहुत प्रेम करते थे, वासीली और मैं। एक घडी के लिए भी मै उसे अपने मन से अलग नही कर पाती थी। वसन्त के दिन थे जब यह सब हुआ। एक रात सूरज निकलने से कुछ ज्यादा पहले का पहर नही रहा होगा मै सो नही पा रही थी। बाग में एक बुलबुल गा रही थी। इतनी मधुर कि अद्भुत! मुझसे नही रहा गया। मै उठी और उसका सगीत सुनने के लिए बाहर पैडियो पर निकल आयी। वह कूक और कूक रही थी और एकदम अचानक मुझे लगा जैसे किसी ने पुकारा हो। वह वासीली की आवाज़ की भाति मालूम होती थी, इतनी कोमल—'लुकेरिया!' मैंने घूमकर देखा, अधनीद में होने

के कारण—मैं समझती हू—मेरा पाव चूक गया और ऊपर की पैडी से एकदम सीधे नीचे, धम्म से धरती पर जा लुढकी। और मैंने सोचा कि ऐसी कोई ज्यादा चोट नही लगी है, क्योकि मैं एकदम उठ खडी हुई और वापिस अपने कमरे मे लौट आयी। केवल ऐसा मालूम होता था जैसे मेरे भीतर—मेरे शरीर के भीतर—कोई चीज टूट गयी हो। ओह, जरा मुझे दम लेने दो बस आधा मिनट मालिक।"

लुकेरिया रुक गयी और मैंने अचरज के साथ उसकी ओर देखा। अचरज की खास बात यह थी कि वह अपनी कहानी करीब करीब आह्लाद के साथ, बिना आहो और कराहो के, बिना किसी शिकायत के या सहानुभूति की माग किये सुना रही थी।

"उसी दिन से जब यह घटना घटी," वह कहती गयी, "मैं घुलने और क्षीण होने लगी। मेरी चमडी काली पड गयी, चलना-फिरना मेरे लिए मुश्किल हो गया और इसके बाद, मेरी टागें एकदम बेकार हो गयी, न मैं खडी हो सकती थी, न बैठ सकती थी, हर घडी पडी रहती थी। खाने या पीने की भी मुझे कोई सुरत नही थी। दिन दिन मेरी हालत खराब होती गयी। आपकी मा ने, हृदय की बडी दयालु थी वह, डाक्टरो को दिखाने के लिए जोर दिया और मुझे एक अस्पताल में भेजा। लेकिन मैं जैसे लाइलाज थी। और कोई भी डाक्टर यह तक नही बता सका कि मेरा रोग क्या था। उन्होने मुझे लेकर क्या कुछ नही किया! गर्म लोहे से उन्होने मेरी रीढ दागी, बर्फ के डलो में उन्होने मुझे रखा, लेकिन लाभ इस सब का कुछ नही हुआ। अत में मैं एकदम सुन्न हो गयी सो मालिको ने निश्चय किया कि मेरी और अधिक डाक्टरी करना बेकार है और गढी में अपाहिजो को रखने मे कोई तुक नही थी उन्होने मुझे यहा भेज दिया—क्योकि यहा मेरे सगे सबधी हैं। सो यहा मैं रहती हू, जैसा कि आप देख रहे हैं।"

लुकेरिया फिर चुप हो गयी और उसने फिर मुसकराने का प्रयास किया।

"लेकिन तुम्हारी यह स्थिति तो भयानक है।" मैंने चिल्लाकर कहा। और यह न समझ पाने के कारण कि आगे क्या कहू, मैंने पूछा, "और वासीली पोल्याकोव का क्या हुआ?" एक अत्यन्त मूर्खतापूर्ण सवाल था यह।

लुकेरिया ने अपनी आखो को थोडा दूसरी ओर कर लिया।

"पोल्याकोव का क्या हुआ? उसे वडा रज हुआ—थोडे दिन तक रज रहा—फिर उसने दूसरी लडकी से शादी कर ली, ग्लिन्नोये की एक लडकी से। क्या आप ग्लिन्नोये को जानते है? यहा से ज्यादा दूर नही है। उमका नाम अग्राफेना है। वह मुझे वहुत प्यार करता था, लेकिन, आप जानो, युवा आदमी, वह कुवारा कैसे वैठा रह सकता था? फिर मै सगिनी भी किस किस्म की हो सकती थी? एक अच्छी प्यारी बीवी उसने अपने लिए खोज ली है और उनके बच्चे है। वह यही रहता है। एक पडोसी के यहा कारिन्दा है। आपकी मा ने उसे पासपोर्ट के साथ मुक्त कर दिया और वह—भगवान भला करे—मजे मे है।"

"और सो तुम सारा वक्त यही पडी रहती हो?" मैंने फिर पूछा।

"हा, मालिक, सात साल से मै यही पडी हू। गर्मियो मे मै यहा इस झोपडी में पडी रहती हू और जब ठड होने लगती है तो वे मुझे वाहर हमाम मे ले जाते है और मै वहा पड रहती हू।"

"तुम्हारी हाजिरी कौन देता है? क्या कोई देख-सभार करनेवाला है?"

"ओह, सव जगह की भाति यहा भी कुछ दयालु लोग है। उन्होने मुझे त्यागा नही है। मेरी देख-भाल थोडी-सी होती रहती है। जहा तक खाने का सवध है, मै ऐसा कुछ खाती नही, लेकिन पानी यहा है, इस कूजे में। झरने का शुद्ध पानी इसमें वरावर भरा रहता है। मै खुद उसतक पहुच सकती हू। मेरी एक वाह अभी भी कुछ काम

देती है। यहा एक छोटी-सी लडकी है, अनाथ है। जब-तब वह मेरे पास आ जाती है, मुझे देखने-भालने। बडी दयालु लडकी है। अभी अभी वह यहा थी   क्या आपको नही मिली? बहुत ही प्यारी, गोरे रग की लडकी है। वह मेरे लिए फूल लाती है जिन्हे मैं बहुत चाहती हू। हमारे बाग में फूल नही हैं–थे कभी–लेकिन अब गायब हो गये। लेकिन, आप जानो, जगली फूल भी बढिया होते हैं–बाग के फूलो से उनकी महक और भी मीठी होती है। लिली, अब   भला उनसे अधिक मधुर और क्या होगा?"

"और क्या तुम्हारा जी नही ऊबता, तुम दुखी अनुभव नही करती, लुकेरिया?"

"क्यो, और चारा भी क्या है? मैं झूठ जरा नही कहूगी। शुरू शुरू में तो बडी ऊब लगती थी, लेकिन बाद मे मैं इसकी आदी हो गयी, अधिक धीरज मुझमें आ गया–यह कुछ नही है, कितनो की हालत तो इससे भी बुरी है।"

"यह कैसे कहती हो तुम?"

"कयो, कुछ हैं जिनके पास सिर छिपाने के लिए जगह तक नही है, और कुछ अधे या बहरे हैं, जबकि मेरी–भगवान का शुक्र है–आखो की जोत ठीक है, और हर चीज मैं सुन सकती हू, हर चीज। जब छछून्दर धरती में बिल बनाती है तो मैं वह भी सुन सकती हू। और मैं प्रत्येक गध–धुधली से धुधली भी–सूघ सकती हू। जब चरागाह में मोथी या बाग मे लीपा का पेड खिलता है–तो मुझे इसकी खबर देने की भी जरूरत नही होती। मुझे सीधे, सबसे पहले, पता चल जाता है। क्योंकि, उस ओर से–चाहे कितना ही हल्का क्यो न हो–हवा का एक झोका इधर बह आय। मैं क्यो भगवान को परेशान करू? मुझसे भी अधिक यन्त्रणा सहनेवाले लोग मौजूद हैं। फिर, आप ही देखो–अच्छी सेहतवाला आदमी आसानी से पाप में फस सकता है, लेकिन

मैं तो पाप से भी दूर हो गयी हू। उस दिन, पिता अलेक्सेई—पादरी—मुझसे प्रायश्चित कराने आये और उन्होंने कहा—'तुम्हे कोई प्रायश्चित करने की जरूरत नही। अपनी इस हालत में तुम पाप मे नही फंस सकती, नही फंस सकती न?' लेकिन मैंने उनसे कहा, 'मन के पाप के बारे में आप क्या कहते है, पिता?'—'ओह वह,' उन्होंने कहा, और वह हसे, 'वह कोई बडा पाप नही है!'"

"लेकिन मुझे लगता है, उस तरह भी—कल्पना मे भी—मैं ऐसी कुछ ज्यादा गुनाहगार नही हू।" लुकेरिया कहती गयी, "क्योकि मैंने कुछ न सोचने की, और सबसे बढकर, कुछ न याद करने की आदत डाल ली है। समय को बीतते देर नही लगती।"

मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मै चकित था।

"तुम हमेशा अकेली रहती हो, लुकेरिया। विचारो को अपने दिमाग मे आने से भला तुम कैसे रोक सकती हो? या तुम हर घडी सोती रहती हो?"

"ओह, नही, मालिक। मैं हर घडी नही सो सकती। हालाकि मुझे कोई खास पीडा नही है फिर भी एक हल्का-सा दर्द रहता है, यहा—ठीक मेरे भीतर—और मेरी हड्डियो में भी। वह मुझे सोने नही देता, जितना कि मुझे सोना चाहिए। नही लेकिन देखो न, मैं फ़कतदम अकेली यहा हू। मैं यहा पडी रहती हू और कुछ नही सोचती। मैं अनुभव करती हू कि मैं जीवित हू—मै सास लेती हू और मै अपने-आपको इसी में खोये रहती हू। मैं देखती और सुनती हूं। मधुमक्खिया छत्ते में कानाफूसी करती भनभनाती है, एक कबूतर छत पर आकर बैठता और कूकता है, एक मुर्गी मय अपने चूजो के चुगा चुनने के लिए यहा टुरक आती है, या एक गौरैया, या एक तितली उडकर भीतर आ जाती है—मेरे लिए यह एक बहुत बडा मन-बहलाव है। दो साल हुए, वहा उस कोने में अबाबील ने एक घोसला तक बना लिया था और अपने नन्हे

मुन्ने बच्चो का लालन-पालन किया था। ओह, कितना मनोरम था वह सब! एक उडकर घोसले के पास आती, उससे सट जाती, नन्हो को चुगा देती, और फिर उड जाती। फिर पलटकर देखो तो दूसरी अपनी जगह पर मौजूद। कभी कभी वह भीतर नही आती, केवल खुले दरवाजे के सामने से तिर जाती, और नन्हे-मुन्ने एकदम चीची करना और अपनी चोचो को खोलना शुरू कर देते . मै आस लगाये थी कि अगले साल वे फिर आयेंगे, लेकिन कहते है कि किसी शिकारी ने उन्हे अपनी बन्दूक से यहा मार डाला। और उसे इससे मिला क्या? वह, अबाबील, ले-देकर तिलचट्टे जितनी बडी तो होती है. ओह, कितने दुष्ट होते हो, तुम शिकारी लोग!"

"मै अबाबील का शिकार नही करता," मैने फौरन कहा।

"और एक बार," लुकेरिया ने फिर कहना शुरू किया, "सच बडा मजा आया। एक खरगोश भीतर दौड आया, सचमुच दौड आया। मै समझती हू शिकारी कुत्ते उसका पीछा कर रहे थे। जो हो, ऐसा मालूम होता था जैसे वह दरवाजे में से सीधे भीतर लुढक आया हो . वह एकदम मेरे निकट निहुराकर बैठ गया, और बहुत देर तक ऐसे ही बैठा रहा। वह निरन्तर अपने नथुनो को फरफरा रहा था, और अपनी मूछो मे बल डाल रहा था—एक अफसर की भाति! और वह मेरी ओर देख रहा था। वह समझ गया था—इसमें शक नही—कि मुझसे उसे कोई खतरा नही है। आखिर वह उठा और कुदक कुदककर दरवाजे पर पहुचा, चौखट से झाककर चारो ओर देखा और पलक झपकते गायब हो गया। ऐसा मजेदार जीव था वह!"

लुकेरिया ने मेरी ओर देखा, मानो कह रही हो, "क्यो, क्या मजेदार नही था?" उसे तसल्ली देने के लिए मै हसा। उसने अपने सूखे होठो को नम किया।

"हा, तो जाडो में, बिलाशक, मुझे कष्ट होता है क्योकि अधेरा

गिर जाता है। वही भला जलाने से खेद न होगा? और उससे फायदा भी क्या? बेशक, मै पढ सकती हू, और पढने की मै हमेशा शौकीन थी, लेकिन मै पढती क्या? यहा किताबे नही है और अगर वे होती भी, तो मै उन्हे थामती कैसे? पादरी अलेक्सेई मेरा जी बहलाने के लिए एक कैलेण्डर लाये थे, लेकिन उन्होने देखा कि उससे कोई लाभ नही, तो उसे वह उठाकर वापिस ले गये। लेकिन, अधेरा होते हुए भी, हर घडी कुछ न कुछ यहा सुनने को मिल जाता है, झीगुर की आवाज या कोई चूहा कही गुदरकुदर करने लगता है। यह अच्छा है—उस समय जब सोचने से ध्यान हटाना हो।"

"और मै प्रार्थना भी करती हू," थोडी साग लेने के बाद लुकेरिया कहती गयी, "केवल इतना है कि वे—प्रार्थनाए, मेरा मतलब—मै अधिक नही जानती। और उसके अलावा, सर्वप्रभु भगवान को मै क्यो तग करू? मै उनसे भला क्या माग सकती हू? मेरी जरूरतो को वह मुझसे ज्यादा जानते है। उन्होने मुझे कष्ट सौपा है, इसका मतलब यह कि वह मुझे चाहते है। ऐसा ही उनका आदेश है जो हमे निबाहना है। मै ईश वन्दना करती हू, मा मरियम की वन्दना, सारे पीडितो के त्राण की वन्दना और इसके बाद मै थिर हो जाती हू, कतई कुछ नही सोचती, और बिल्कुल स्वस्थ अनुभव करती हू।"

दो मिनट बीत गये। मैने निस्तब्धता को भग नही किया और जरा भी नही हिला—उस सकरे-से टब पर जो मेरे लिए आसन का काम दे रहा था, मेरे सामने लेटे इस जीवित, अभागे प्राणी की निर्मम, पथरायी हुई निस्तब्धता जैसे मेरे अन्तर में भी सरसरा रही थी, और मै भी जैसे सुन्न हो चला था।

"सुनो, लुकेरिया," आखिर मैने कहना शुरू किया—"मेरा एक सुझाव सुनो जो मै देना चाहता हू। अगर तुम चाहो तो मै तुम्हे एक अस्पताल मे—नगर के एक अच्छे अस्पताल में—भिजवाने का

प्रवंध कर दू? कौन कह सकता है, शायद तुम अव भी चगी हो जाओ, कम से कम तुम वहा अकेली तो न रहोगी।"

लुकेरिया की भौहे अस्पष्ट-सी फरफरायी। "ओह, नही, मालिक," त्रस्त-सी फुसफुसाहट मे उसने जवाव दिया। "मुझे अस्पताल में न डालो, मुझे न छेडो। वहा मुझे केवल और अधिक वेदना भोगनी पडेगी। वे अव मुझे क्या अच्छा करेगे? सच, एक वार यहा एक डाक्टर आया था। वह मुझे देखना चाहता था। मैंने उससे विनती की, भगवान के लिए, मुझे न छेडो। वेकार है यह। उसने मुझे उलटना-पलटना शुरु किया, मेरे हाथो और टागो को ठोका-वजाया, और मुझे इधर से उधर करता रहा। उसने कहा–'मै यह विज्ञान के हित में कर रहा हू। मै विज्ञान का सेवक हू–एक वैज्ञानिक आदमी। और तुम्हे वास्तव में मेरा विरोध नही करना चाहिए, क्योकि मुझे अपने काम के लिए एक पदकर प्रदान किया गया है, और तूम जैसे निरीह लोगो के लिए श्रम कर हा हू।' उसने मुझे धुन डाला, मेरी वीमारी का मुझे नाम वताया–वहुत ही उजीव लम्वा-सा नाम था वह–और यह सव करके चला गया, और मेरी गरीव हड्डिया इसके वाद एक हफ्ते तक दुखती रही। आप कहते हैं कि मै एकदम अकेली हू, हर घडी अकेली। ओह, नही, हर समय नही। लोग मेरे पास आते हैं–मै चुप रहती हू–उन्हे परेशान नही करती। किसान लडकिया आती है और थोडा वतिया लेती हैं। कोई स्त्री –तीर्थ-यात्रा करती–इधर आ निकलती है और मुझे यरूशलम की, कीयेव नगर की, तीर्थ-यात्राओ की कहानिया सुनाती है। और अकेलेपन से मुझे डर नही लगता। सच पूछो तो, यह अच्छा है, क्यो! मुझे नही छेडना, मालिक, मुझे अस्पताल न भिजवाना धन्यवाद, आपके हृदय में तरस है। वस, मुझे छेडो नही। ओह, कितने भले हैं आप!"

"अच्छा, जैसा तुम चाहो, जैसा तुम चाहो, लुकेरिया। तुम जानो, तुम्हारे भले के लिए ही मैंने यह सुझाव दिया था।"

"मै जानती हू, मालिक, मेरे भले के लिए ही आपने यह कहा था। लेकिन, मालिक, दूसरे की मदद क्या कोई कर सकता है? क्या कोई दूसरे की आत्मा में पैठ सकता है? हर आदमी को खुद अपनी मदद करनी चाहिए। आप शायद मेरा विश्वास न करे। कभी कभी मैं यहा इतनी अकेली पडी रहती हू और ऐसा मालूम होता है जैसे इस दुनिया में और कोई नही है, बस एक मैं ही हू। जैसे एक मै ही जीवित हू। और मुझे लगता है जैसे कोई चीज मुझे वरदान दे रही है ओह, वास्तव में अद्भुत सपनो में मै तिरने लगती हू।"

"अच्छा, तो लुकेरिया, तुम सपनो मे क्या देखती हो?"

"सो तो, मालिक, मै नही बता सकती। उनका भेद कोई कैसे जान सकता है। इसके अलावा, बाद मे वे भूल भी जाते है। जैसे एक बादल-सा आता और चटक जाता है। तब वह इतना ताजा और इतना मधुर हो उठता है कि बस! लेकिन वह ठीक ठीक क्या था, कौन जाने। केवल मुझे ऐसा लगता है कि अगर लोग मेरे निकट होते, तो यह सब कुछ मुझे प्राप्त न होता, और सिवा अपने दुर्भाग्य के और कुछ मै अनुभव न करती।"

लुकेरिया ने एक दुख से भरी उसास ली। उसका श्वास-प्रश्वास, उसके अगो की भाति, उसके काबू में नही था।

"और जब मै, मालिक, आपके बारे मे सोचती हू," उसने फिर कहना शुरू किया, "आप मेरे लिए बहुत दुखी है। लेकिन सच पूछो तो आपको इतना दुख नही करना चाहिए। मै आपको एक बात बताती हू। कभी कभी, मै अब भी . क्या आपको याद है कि अपने समय मे मै कितनी प्रसन्न रहा करती थी? दीन दुनिया से बिल्कुल बेखबर . सो क्या आप सोच सकते है कि मै अब भी गीत गाती हू?"

"गाती हो? तुम?"

"हा, मै पुराने गीत गाती हू, खेलो के गीत, दावतो के गीत, बडे दिन के गीत, सभी तरह के। आप जानो, कितने अधिक गीत मै जानती थी, और मै उन्हे भूली नही हू। केवल नाच के गीत मै नही गाती। जो हालत मेरी अब है, उसमें मुझे यह ठीक नही मालूम होता।"

"तुम उन्हे गाती कैसे हो? मन ही मन?"

"मन ही मन, हा, और स्वर से भी। मै जोर से नही गा सकती, लेकिन फिर भी समझ में आ सकता है। मैने आपको बताया था कि एक छोटी लडकी मेरे पास आती है। बडी चतुर, नन्ही अनाथ लडकी है। सो मै उसे सिखाती हू। चार गीत वह मुझसे सीख भी चुकी है। क्या आपको विश्वास नही होता? एक मिनट ठहरिये, मै अभी आपको सुनाती हू "

लुकेरिया ने सास लिया इस खयाल-मात्र से कि यह अर्द्धमृत जीव गीत शुरू करने के लिए तैयार हो रही है, अनायास ही मै भय से थरथरा उठा। लेकिन इससे पहले कि मै शब्द भी अपने मुह से निकालू एक दीर्घ खिचा हुआ, मुश्किल से सुनाई पडनेवाला, लेकिन विशुद्ध और सच्चा स्वर मेरे कानो मे थरथराने लगा इसके बाद दूसरे और फिर तीसरे स्वर ने उसका अनुसरण किया। 'चरागाहो में' लुकेरिया गा रही थी। वह गा रही थी, पथराये हुए अपने चहरे के भाव में बिना कोई परिवर्तन लाये, और अपनी आखो तक को एक उसी स्थल पर जमाये। लेकिन कितनी हृदयस्पर्शी थी उसकी वह दीन, सघर्ष करती, नन्ही आवाज जो धुवे के एक धागे की भाति थरथरा रही थी और वह कितनी लालायित थी उसमें अपनी समूची आत्मा को उडेलकर रख देने के लिए किसी भय का अब मै अनुभव नही कर रहा था और मेरा हृदय अकथनीय अनुकम्पा से भर उठा था।

"ओह, मैं नही गा सकती," अचानक उसने कहा, "मुझमें सकत नही। खुशी ने—आपको देखने की खुशी ने—मुझे इतना विचलित कर दिया है।"

उसने आखें वद कर ली।

मैंने उसकी नन्ही शीत-सी उंगलियो पर अपना हाथ रखा . उसने मेरी ओर देखा, और उसकी आखो की सावली पलके किसी प्राचीन-प्रतिमा की भाति सुनहरी वरौनियो की झालर लगी, फिर वद हो गयी। क्षण-भर वाद अध-अधियाले मे वे फिर चमकने लगी एक आसू ने उन्हे गीला कर दिया था।

पहले की भाति मै थिर वैठा रहा।

"कितनी पागल हू मै!" अचानक, अप्रत्याशित ज़ोर के साथ, लुकेरिया ने कहा, और उसने अपनी आखे पूरी खोली—उसने आसुओ को उनमे से हटा देने का प्रयास किया। "मुझे शर्म आनी चाहिए! यह मै क्या कर रही हू? एक मुद्दत हुई मेरी ऐसी हालत हुए. उस दिन के वाद जव, पिछले वसन्त में, वास्या पोल्याकोव यहा आया था, ऐसा नही हुआ। जब तक वह मेरे पास वैठा और बाते करता रहा, मै विल्कुल ठीक रही। लेकिन जब वह चला गया, कितना मैं रोयी थी अपने इस एकाकीपन में! जाने कहा से इतने आसू उमड पडे। हम लडकिया तो यू ही रोने लगती है। मालिक," लुकेरिया ने अत मे कहा, "आपके पास रूमाल तो होगा शायद. . अगर वुरा न माने तो मेरी आखो को पोछ दें।"

मैंने, विना देर किये, उसकी इच्छा का पालन किया, और रूमाल उसके पास ही रहने दिया। पहले तो उसने इन्कार किया "भला, ऐसा उपहार मेरे किस काम आयेगा?" उसने कहा। रूमाल वहुत साधारण, लेकिन साफ और उजला था। वाद मे उसने अपनी क्षीण उगलियो में उसे दवोचा और फिर उन्हे ढीला नही किया। और जव

मै उस अधेरे का अभ्यस्त हो गया जिसमें कि हम दोनो बैठे थे, मेरे लिए उसकी आकृति को साफ साफ पहचानना सम्भव हो गया, यहा तक कि उस हल्की लाली की भी मै अब झलक पा सकता था जो उसके चेहरे के ताम्बई रग की ओट में से झाक रही थी और मैं—कम से कम मुझे मालूम ऐसा ही होता था—उसके भूतपूर्व सौन्दर्य के चिन्हो तक का पता लगा सकता था।

"आपने, मालिक, मुझसे पूछा था," लुकेरिया ने फिर कहना शुरू किया, "मुझे नीद आती है या नही। मै बहुत कम सोती हू, लेकिन हर बार जब मै सोती हू, मै सपने देखती हू, बहुत ही अच्छे सपने। अपने सपनो में मै कभी बीमार नही पडती—हमेशा खूब चगी रहती हू, और युवा. दुख एक ही बात का होता है—जब मै जागती हू तो मेरा खूब अच्छी अगडाई लेने को जी चाहता है, पर मुझे लगता है जैसे मै चारो ओर जजीरो से जकडी हू। एक बार बहुत ही प्यारा सपना मैंने देखा। आपको बताऊ? अच्छा तो सुनिये। मैंने सपने में देखा कि मै एक चरागाह में खडी हू, और मेरे चारो ओर रई लहरा रही है—खूब ऊंची, पकी हुई, सोने की भाति! और मेरे साथ एक कुत्ता था, लाल-से रग का। ओह, बडा दुष्ट था वह! वह बार बार मुझे काटने की कोशिश कर रहा था। और मेरे हाथो में एक हसिया था, मामूली हसिया नही, लगता था जैसे खुद चाद मेरे हाथो में आ गया हो—चाद जैसा कि वह हसिया के आकार का होने पर होता है। और इसी चाद से मुझे रई का खेत काटकर एकदम साफ कर देना था। केवल मै गर्मी के मारे बुरी तरह ऊब गयी थी और चाद ने मेरी आखो को चौंधिया दिया था और मै आलस का अनुभव कर रही थी। चारो ओर नीलपोथे खिले थे। खूब बडे बडे। और वे सब मेरी ओर अपना मुह किये थे। सपने में मैंने सोचा कि उन्हे तोडना चाहिए। वास्या ने वचन दिया था कि वह आयेगा। सो पहले एक हार चुन लू। रई काटने मे

लिए अभी बहुत समय है। सो मैंने फूलो को चुनना शुरू किया, लेकिन वे बराबर, चाहे जितना भी जतन मैं करती, मेरी उगलियो के बीच पिघलकर रह जाते। और इसी बीच किसी की आहट मैंने सुनी, बहुत ही निकट, और फिर पुकारने की आवाज आयी—'लुकेरिया! लुकेरिया!'—'ओह,' मैंने सोचा, 'कितने दु:ख की बात है कि मुझे समय नही मिला। लेकिन कोई हर्ज नही। फूलो के बजाय उस चाद को मैंने अपने सिर पर रख लिया—मुकुट की भाति। और उसे रखते ही मै ऊपर से नीचे तक चमचमा उठी। समूचे खेत मे अपने चारो ओर मैंने उजाला कर दिया। और, देखती क्या हू, कि बालो की ठीक चोटियो के ऊपर से, बडी तेजी के साथ, वह मेरी ओर तिरता आ रहा है—वास्या नही, बल्कि खुद प्रभु ईसा! और मैंने कैसे यह जाना कि वह प्रभु ईसा थे, नही कह सकती, चित्रो में वे उन्हे वैसा नही बनाते, लेकिन थे वह प्रभु ही। दाढी विहीन, लम्बा कद, युवा, ऊपर से नीचे तक सफेद लबादा, केवल उनकी पेटी सोने की थी। और उन्होने अपना हाथ मेरी ओर बढाया। 'डरो नही,' उन्होने कहा, 'मेरी बाकी बहुरिया, मेरे पीछे चली आओ। देव-लोक में तुम गोलाकार नृत्य मे सबसे आगे नाचोगी और स्वर्ग के गीत गाओगी।' और मै उनके हाथ से चिपक गयी। मेरा कुत्ता एकबारगी मेरी एडियो की ओर झपटा लेकिन तभी हमने ऊपर की ओर तिरना शुरू कर दिया था। वह आगे आगे थे उनके पख खूब प्रशस्त समूचे आकाश मे छाये थे और समुद्री चिल्ली की भाति लम्बे थे. और मै उनके पीछे पीछे। और मेरे कुत्ते को वही रह जाना पडा। केवल तब मेरी समझ में आया कि वह कुत्ता मेरी बीमारी है और देव-लोक में उसके लिए कोई स्थान नही।"

लुकेरिया ने क्षण-भर विराम लिया।

"और मैंने एक और सपना भी देखा," उसने फिर कहना शुरू किया, "लेकिन शायद वह देव-दर्शन था। वास्तव मे मै नही जानती।

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मै इसी झोपडी में पडी हू, और मेरे मृत माता-पिता मेरे पास आये है, नीचे झुके है, लेकिन बोले कुछ नही। मैंने उनसे पूछा, 'माता जी, पिता जी, आप मुझे माथा क्यो नवाते हो?' 'क्योकि,' उन्होने कहा, 'तुम इस दुनिया में बहुत कष्ट सह रही हो, जिससे तुमने न केवल अपनी आत्मा को ही मुक्त कर लिया है, बल्कि हमारे कधो पर से भी भारी भार उतार लिया है। और हमारे लिए दूसरी दुनिया अब काफी आसान हो गयी है। तुम अपने गुनाहो का अत कर चुकी हो, और अब तुम हमारे गुनाह धो रही हो।' और यह कहकर मेरे माता-पिता ने मुझे फिर माथा नवाया, और मै उन्हे नही देख सकी—सिवा दीवारो के अब और कुछ नजर नही आता था। बाद में, इस घटना को लेकर मै भारी सदेह में पडी। गुनाह-कबूली के समय पादरी तक से मैंने उसका जिक्र किया। केवल उसका खयाल है कि वह देव-दर्शन नही था। क्योकि उसकी प्रतीति केवल पादरी लोगो को ही होती है।"

"और मै आपको एक और सपना बताती हू," लुकेरिया कहती गयी, "मैंने सपना देखा कि मै एक बेंत-वृक्ष के नीचे राजमार्ग पर बैठी हू। मेरे हाथ में एक लाठी है, कधो पर एक पोटली और मेरे सिर पर एक रूमाल बंधा है—ठीक तीर्थ-यात्रा करनेवाली स्त्रियो की भाति। और मुझे कही जाना है, दूर, बहुत दूर, तीर्थ-यात्रा के लिए। और तीर्थ-यात्री बराबर उधर से, मेरे पास से, गुजर रहे है। वे धीरे धीरे चले आ रहे है और सब एक ही दिशा में जा रहे है। उनके चेहरे थके है और सब बहुत कुछ एक जैसे मालूम होते है। और मैंने सपने में देखा कि उनके बीच एक स्त्री इधर से उधर कसमसा रही है। वह सबसे एक बीता ऊची थी और विचित्र-से कपडे पहने थी, जो हमारे जैसे—रूसियों जैसे नही थे। और उसका चेहरा भी अजीब था—कृश और कठोर। और अन्य सब उससे दूर हट जाते थे। लेकिन वह अचानक मुडी और

सीधे मेरे पास चली आयी। वह थिर खडी हो गयी और मेरी ओर उसने देखा। उसकी आखे वाज की आखो की भाति पीतवर्ण, वडी वडी और उजली थी। और मैने उससे पूछा—"तुम कौन हो?" वह मुझसे कहने लगी—"मै तुम्हारी मौत हू।" और वजाय डरने के, ठीक इससे उलटा हुआ। मै इतनी खुश हुई जितनी कि हो सकती थी। मैने क्रॉस का निशान वनाया। और वह स्त्री—मेरी मौत—मुझसे कहती है—'मुझे तुमपर रहम आता है, लुकेरिया, लेकिन मै तुम्हे अपने साथ नही ले जा सकती। अच्छा विदा।' हे, भगवान, कितना दुख हुआ मुझे तव! 'मुझे ले चलो,' मैने कहा, 'नेक मा, मुझे ले चलो, प्यारी मा!' और मेरी मौत मेरी ओर मुडी और मुझसे वोलने लगी मै जानती थी कि वह मेरे लिए मेरी घडी नियत कर रही है, लेकिन अस्पष्ट और समझ में न आये इस तरह 'सन्त पीटर दिवस के वाद ' उसने कहा। और इसके वाद मेरी आख खुल गयी सच, ऐसे ऐसे अद्भुत सपने मुझे दिखाई देते है!"

लुकेरिया ने ऊपर की ओर देखा और अपने विचारो मे खो गयी।

"केवल दुख की वात यह है कि कभी कभी सारा-का-सारा हफ्ता गुजर जाता है और एक बार भी मेरी आख नही लगती। पिछले साल कुलीन घराने की एक स्त्री यहा से गुजर रही थी। नीद दिलाने की दवाई की एक छोटी-सी शीशी उसने मुझे दी थी। उसने मुझे वताया कि एक वार में दस बूदे लेनी चाहिए। उस दवा ने मुझे वहुत फायदा किया और मै सोने लगी। केवल यह कि वह वहुत दिन हुए सारी चुक गयी। क्या आप जानते है कि वह क्या दवा थी, और वह कैसे मिल सकती है?"

उस महिला ने स्पष्ट ही लुकेरिया को अफीम दी थी। मैने उसे वैसी ही एक दूसरी शीशी लाने का वचन दिया, और उसके धीरज पर सस्वर आश्चर्य प्रकट किये विना नही रह सका।

"ओह, मालिक!" उसने जवाब दिया, "आप ऐसा क्यो कहते है? धीरज से आपका क्या मतलब है? अब, आप ही देखो, वास्तव में धीरज सिमेओन स्ताईलाइत के पास था—भारी धीरज। तीस साल तक वह एक खम्भे पर खडा रहा। और एक अन्य सन्त ने अपने-आपको धरती मे गडवा दिया, ठीक अपने वक्ष तक और चीटिया उसके चेहरे को खाती थी और वाइवल के एक छात्र ने मुझे जो बताया था, वह—मै आपको बताती हू—किसी जमाने में एक देश था, और अगार्यान लोगो ने उसपर युद्ध छेड दिया, और उन्होने सारे निवासियो को यत्रणाए दी और उन्हे मार डाला, और लाख जतन करने पर भी लोग उनसे छुटकारा नही पा सके। और इन लोगो मे एक पवित्र कुमारी का उदय हुआ। उसने एक भारी तलवार उठायी, एक मन वजन का कवच पहना, अगार्यान लोगो के खिलाफ मोर्चा लिया और उस समय उन सबको समुद्र के उस पार खदेड दिया और केवल जब वह उन्हे खदेडकर बाहर कर चुकी, उसने उनसे कहा, 'अब मुझे जला डालो, क्योकि यही मेरी प्रतिज्ञा थी, कि मै अपनी जनता के लिए अग्नि में जलकर मरूगी।' और अगार्यान लोगो ने उसे उठाया और जला डाला, और लोग तबसे आज़ाद है। वह एक शुभ कृत्य था, आप जानो। लेकिन मै   मै भला क्या हू!"

मै मन ही मन अचरज कर रहा था कि कहा से और किस रूप में जॉन आफ आर्क की पुरानी कथा उसके पास पहुची है, और थोडी देर चुप रहने के बाद मैने लुकेरिया से पूछा कि उसकी उम्र क्या है।

"अठाईस   या उनतीस   तीस नही हो सकती। लेकिन वर्षों को गिनकर क्या करेगे? आपको सुनाने के लिए मेरे पास एक और   "

अचानक लुकेरिया ऐसे खासी जैसे उसका गला रुंध गया हो, और कराह उठी।

"तुम बहुत ज्यादा बाते कर रही हो," मैने कहा, "तुम्हारे लिए यह नुकसानदेह हो सकता है।"

"यह सच है," वह फुसफुसायी, मुश्किल से सुनाई पडनेवाली आवाज मे, "वाते खत्म करने का समय हो गया। लेकिन हुआ करे, इससे कोई फर्क नही पडता। अव, जव तुम चले जाओगे, जितनी देर भी मै चाहू चुप रह सकती हू। जो हो, मैने अपना हृदय हल्का कर लिया "

मैने उससे विदा ली। उसके लिए दवाई भेजने के अपने वचन को दोहराया और उससे एक वार फिर पूछा कि अच्छी तरह सोचे और मुझे वताय – कोई ऐसी चीज तो नही जो उसे चाहिए?

"मुझे कुछ नही चाहिए। मै सव से सतुष्ट हू, भला करे भगवान!" अत्यधिक प्रयास करते हुए उसने एक एक शव्द का उच्चारण किया, लेकिन भावना के साथ। "भगवान सवको अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करे। लेकिन, मालिक, अपनी मा से एकाध शव्द आप कह सकते है – यहा के किसान वडे गरीव है – अगर वह उनके लगान मे कम से कम भी कमी कर सके! उनके पास काफी जमीन नही है और कोई जगल नही है, कुछ नही है वे आपके लिए भगवान से दुआ करेगे लेकिन मुझे कुछ नही चाहिए। मै विल्कुल सतुष्ट हू।"

लुकेरिया को मैने वचन दिया कि उसके अनुरोध का पालन करूगा और दरवाजे की ओर वढ भी चला था कि तभी उसने मुझे फिर वुलाया।

"क्या आपको याद है, मालिक," उसने कहा, और उसकी आखो और होठो पर एक अद्भुत चमक तैर गयी, "मेरे वाल कितने अच्छे थे? याद है न आपको – कैसे एकदम घुटनो को छूते थे! उनके वारे में फैसला करने में काफी दिन मुझे लगे ओह, क्या बाल थे वह भी! लेकिन उन्हे कघी से सवारकर भला कैसे रखा जा सकता था? मेरी इस हालत में! सो मैंने उन्हे कटा डाला हा अच्छा तो, मालिक, क्षमा कीजिये! अव और अधिक वोलने की मुझमे सकत नही.. "

उस दिन, शिकार के लिए रवाना होने से पहले, गाव के कान्स्टेवल से लुकेरिया के वारे में मेरी वातचीत हुई। उससे मालूम हुआ कि गाव

के लोग लुकेरिया को 'जीवित समाधि' कहते है, कि वह उन्हे कोई कष्ट नही देती , न ही उन्होने कभी उसे कोई शिकायत करते या रोते-झीकते सुना। वह कुछ मागती नही, हर चीज़ के लिए कृतज्ञता प्रकट करती है। "बडी शान्त स्वभाव है, यह मानना पडेगा, भाग्य की मारी," अपनी बात को खत्म करते हुए कान्स्टेबल ने कहा, "लगता है अपने पापो का फल भोग रही है, लेकिन इस सबसे हमारा कोई मतलब नही। और जहा तक निन्दा करने की बात है, नही, हम उसकी निन्दा नही करते। वह जो है सो रहे।"

इसके कुछ सप्ताह बाद मैंने सुना कि लुकेरिया मर गयी। सो उसकी मौत उसे लेने आ गयी और 'सन्त पीटर दिवस के बाद' ही। उन्होंने मुझे बताया कि अपनी मृत्यु के दिन उसके कानो में बराबर घटियो की आवाज सुनाई देती रही, हालाकि आलेक्सेयेवका से गिरजा पाच मील से भी ज्यादा दूर था और वह इतवार का दिन नही था। लेकिन खुद लुकेरिया का कहना था, घटियो की आवाज गिरजे की ओर से नही, बल्कि 'ऊपर से' आ रही थी। शायद यह कहने का उसे साहस नही हुआ कि स्वर्ग से आ रही थी।

पहियों की खड़खड़

"मुझे आपसे एक बात कहनी है," मुझसे मिलने के लिए झोपडी में आते हुए येरमोलाई ने कहा। मैं अभी दिन का भोजन करके हटा था। ग्राउज-पक्षियो के शिकार के काफी सफल तथा थका देनेवाले दिन के बाद थोडा सुस्ताने के लिए नफरी बिस्तरे पर लेटा था। करीब दस जुलाई के आसपास का दिन था, और तेज़ गर्मी पड रही थी। "मुझे आपसे कुछ कहना है—जितने छर्रे हमारे पास थे, सब खत्म हो गये।"

मैं बिस्तर पर से उछलकर खडा हो गया।

"सब गायब हो गये? सो कैसे? क्यो, कुछ नही तो करीब तीस पौंड हम अपने साथ गाव से लाये थे—पूरा एक थैला भरा था!"

"वही तो, और बडा थैला था वह—एक पखवारे के लिए काफी होता। लेकिन कौन जाने! ज़रूर उसमें कोई छेद-वेद रहा होगा, या और कुछ। जो भी हो छर्रे नही रहे. . इतने बचे होगे कि दसेक बार के लिए काम आ सके!"

"अब हम क्या करे? एकदम अच्छी जगह तो अभी बाकी पडी है—कल के लिए ही छ झुण्ड ग्राउज-पक्षियो के मिलने का हमे विश्वास दिलाया गया है "

"अच्छा हो यदि आप मुझे तूला भेज दे। यहा से ज्यादा दूर नही है। केवल तीस-पैंतीस मील होगा। उडकर जाऊगा, और चालीस पौड छर्रे ले आऊगा। बस, आपके कहने-भर की देर है।"

"लेकिन तुम जाओगे कब?"

"क्यो, अभी। देर क्यो की जाय। केवल, हमें घोडे किराये पर लेने होगे।"

"घोडे किराये पर क्यो लिये जाय? खुद अपने घोडो से क्यो न काम ले?"

"अपनो को हम वहा नही ले जा सकते। जोतवाला घोडा लगडा गया है बुरी तरह!"

"सो कब?"

"कई दिन हुए। कोचवान उसे नाल लगवाने ले गया था। सो उसके नाल जडी गयी, लेकिन लगता है, लोहार नालायक था। अब वह एक डग तक नही भर सकता। अगली टाग है। उसे कुत्ते की भाति उठाता है।"

"तो फिर? नाल तो उन्होने, मैं समझता हू, निकाल ही ली होगी, क्यो?"

"नही, उन्होने नही निकाली, लेकिन, बिलाशक, उन्हे निकाल लेनी चाहिए थी। यो कहना चाहिए कि एक कील सीधे मास में ठोक दी गयी है।"

मैंने कोचवान को बुलाने का आदेश दिया। येरमोलाई की बात सच निकली। जोतवाला घोडा सचमुच अपना खुर जमीन पर नही टेक सकता था। मैंने तुरत हुक्म दिया कि उसकी नाल निकाल ली जाय, और नम मिट्टी पर उसकी टाग रखी जाय।"

"तो क्या इच्छा है? तूला जाने के लिए मैं किराये पर घोडे ले लू?"

"क्या तुम समझते हो इस वीराने में हमें घोडे मिल सकते है?" झुझलाहट के साथ बरबस मेरे मुह से निकला।

एक वीरान अभागा-सा गाव था वह जहा हम जा निकले थे। उसके सभी निवासी गरीब थे। वडी कठिनाई से हमें एक झोपडी मिली जो किसी कद्र खुलासा थी।

"हा," अपनी उसी हस्वमामूल स्थिरता के साथ येरमोलाई ने जवाव दिया, "आपने जो इस गाव के वारे मे कहा वह वहुत-कुछ सच है, लेकिन ठीक इसी जगह एक समय एक किसान रहा करता था—वहुत ही चतुर आदमी था! और धनी भी। उसके पास नौ घोडे थे। वह तो मर गया, अव उसका सवसे वडा लडका उनकी देख-भाल करता है। आदमी निरा वुद्धू है, लेकिन अपने पिता की सम्पत्ति उडाने का अभी उसे मौका नही मिला। हमें उससे घोडे मिल सकते है। अगर आप कहे तो उसे आपके पास पकड लाऊ। उसके भाई, मैंने सुना है, वडे काइया है, लेकिन फिर भी वही उनका मुखिया है।"

"सो कैसे?"

"क्योकि वह सवसे वडा जो है! विलाशक, छोटो को उसका हुक्म मानना चाहिए!" और यहा, समष्टि रूप मे छोटे भाइयो का उल्लेख करते हुए, कुछ इतने जोश के साथ उसने कुछ शब्द कहे जो कि छापे में नही दिये जा सकते। "मै उसे पकड लाऊगा। वह सीधा-सा आदमी है। उसके साथ मामला तय हुए विना नही रह सकता।"

उस समय जव येरमोलाई अपने उस 'सीधे-से आदमी' की टोह में चला गया, मेरे मस्तिष्क में विचार आया कि ज्यादा अच्छा हो अगर मै खुद तूला चला जाऊ। सर्वप्रथम, अपने अनुभव के मुताविक येरमोलाई में मेरा ऐसा कुछ अधिक विश्वास नही था। एक वार कुछ चीजें खरीदने के लिए मैंने उसे शहर भेजा। उसने वायदा किया कि एक ही दिन में वह सारा काम निवटा लेगा, और वह पूरे सात दिन तक गायव रहा, सारा पसा उसने दारू मे उड़ा दिया, और पैदल घर लौटा, हालाकि वह मेरी

बग्घी में गया था। और दूसरे, तूला मे मेरा एक परिचित सट्टेबाज़ भी था। मै उससे जोत के पगु घोडे की जगह एक अन्य घोडा ख़रीद सकता था।

"तो यह तय रहा," मैंने सोचा, "मै ख़ुद ही जाऊगा। चाहू तो रास्ते-भर सोता हुआ भी जा सकता हू—भाग्य से बग्घी आरामदेह है।"

* * *

"मै उसे लिवा लाया!" कोई पन्द्रह मिनट बाद लपककर झोपडी में आते हुए येरमोलाई ने चिल्लाकर कहा। उसके पीछे लम्बे कद के एक किसान ने प्रवेश किया—सफेद कमीज़, नीली बिरजिस और छाल की चप्पले पहने हुए। उसके बाल सफेद थे, आखो से कम दिखता था, खूटेनुमा लाल दाढी, लम्बी सूजी हुई नाक और खुला हुआ मुह था। वह निश्चय ही 'सीधा-सा' दिखता था।

"यह लीजिये, मालिक," येरमोलाई ने कहा, "इसके पास घोडे है, और यह देने को राज़ी है।"

"जो है सो, निश्चय, मै " अचकचाते हुए मरमरी-सी आवाज़ में किसान ने कहना शुरू किया, अपने बालो के क्षीण गुच्छो को हिलाते और अपनी उगलियो से टोपी की पट्टी पर जिसे वह अपने हाथो में थामे था तबला-सा बजाते हुए वह बोला—"निश्चय मै "

"तुम्हारा नाम क्या है?" मैंने पूछा।

किसान ने नीचे की ओर देखा, और ऐसे लगा जैसे गहरी सोच मे हो।

"मेरा नाम?"

"हा, तुम्हे क्या कहकर पुकारते है?"

"क्यो नही, मेरा नाम फिलोफेई।"

"अच्छा तो, मित्र फिलोफेई, मैंने सुना है कि तुम्हारे पास घोडे है। जोड के तीन घोडे यहा ले आओ, उन्हे अपनी बग्घी में हमें जोतना है—बग्घी हल्की है—और तुम मुझे तूला ले चलना। इस समय चाद निकला

हुआ है। उजाला है, और मौसम भी ठंडा-सा है—गाडी हाकने के लिए अच्छा है। उधर की तुम्हारी सडक कैसी है?"

"सडक? सडक रत्ती-भर भी खराब नही। बडी सडक सोलह-एक मील होगी—ज्यादा नही वहा एक छोटी-सी जगह है थोडी अटपटी लेकिन सो कुछ नही!"

"तो यह छोटी अटपटी-सी जगह क्या चीज है?"

"नदी है, जिसे हमें चलकर पार करना पडेगा।"

"लेकिन क्या आप खुद तूला जाने की सोच रहे है?" येरमोलाई ने पूछा।

"हा।"

"ओह!" मेरे फरमानबरदार चाकर ने अपना सिर हिलाते हुए टिप्पणी की। "ओह-ओह!" उसने दोहराया, इसके बाद उसने फर्श पर थूक की पिचकारी छोडी, और कमरे से बाहर चला गया।

तूला की यात्रा में स्पष्ट ही, अब उसके लिए कोई दिलचस्पी नही रही थी।

"क्या तुम सडक से अच्छी तरह परिचित हो?" मैंने फिलोफेई को सबोधित करते हुए कहा।

"निश्चय, सड़क हमारी जानी-पहचानी है। केवल जो है सो, मालिक किरपा, मै इतनी अचानक . भला कैसे जो है सो "

मालूम हुआ कि येरमोलाई ने फिलोफेई के वचन देने पर, उससे कहा था कि वह यकीन रखे—कि उसके बेवकूफ होने के बावजूद—उसे पैसा मिलेगा बस और कुछ नही। फिलोफेई—जिसे येरमोलाई बुद्धू समझता था—अकेले इस वक्तव्य से सन्तुष्ट नही था। उसने मुझसे पचास रूबल मागे, जो बहुत ज्यादा दाम थे। मैंने अपनी तरफ से दस कहे—जो कम थे। सौदेबाज़ी की घिसघिस शुरू हुई। पहले तो वह अडा रहा, फिर उसने नीचे उतरना शुरू किया, पर धीरे धीरे। क्षण-भर के लिए भीतर

आकर येरमोलाई ने मेरी दिलजमई शुरू की, "वह बुद्धू" – ("प्रकटत. उसे यह शब्द प्यारा मालूम होता है," फिलोफेई ने धीमी आवाज मे टिप्पणी की) – "वह बुद्धू धन का हिसाव-किताव कतई नही जानता," और उसने मुझे याद दिलाया कि किस प्रकार बीस साल पहले मेरी मा ने दो राजमार्गों के चौराहे पर एक चौकी-सराय स्थापित की थी जो इस वजह से ठप्प हो गयी कि उसका प्रवध करने के लिए जिस बूढे गृह-दास को रखा गया था वह, निश्चित रूप से, हिसाव-किताव रखना नही जानता था, और निरे सिक्को की सख्या से रकमो का मूल्य आकता था – सच पूछो तो वह ताम्बे के कई सिक्को के बदले में चादी का सिक्का दे डालता था, हालाकि सारा वक्त वह बुरी तरह कोसता और वडवडाता रहता था।

"ओह, फिलोफेई! तुम भी पूरे फिलोफेई निकले!" येरमोलाई ने अन्त मे उसे चिढाया, और गुस्से से दरवाजे को वद करता हुआ बाहर निकल गया।

फिलोफेई ने उसे कोई जवाब नही दिया, मानो वह स्वीकार करता हो कि फिलोफेई कहलाना सचमुच – उसके लिए कुछ ज्यादा चतुराई की बात नही है, कि ऐसे नाम के लिए आदमी को जायज़ तौर से झिडका जा सकता है, हालाकि इस मामले मे वस्तुत दोष गाव के पादरी का था जिसे, नामकरण के समय, उचित मुआवजा नही मिला था।

जो हो, अन्त में बीस रूवल पर हमारा सौदा पटा। वह घोडो को लाने के लिए चला गया, और एक घटा बाद पाच घोडे लेकर आया कि उनमे से मै कोई तीन चुन लू। घोडे काफी अच्छे निकले, हालाकि उनकी अयाले और पूछें उलझी थी, और उनके पेट ढोल की भाति गोल तथा तने हुए थे। फिलोफेई के साथ उसके दो भाई भी आये, जो जरा भी उससे नही मिलते थे। छोटी छोटी, काली आखें, नुकीली नाक – सचमुच वे 'काइया' जीव नज़र आते थे। उन्होने, वहुत तेज़ी के साथ,

वहुत कुछ कहा – खूब 'टिटियाये' – जैसा कि येरमोलाई ने उसे व्यक्त किया – लेकिन बडे भाई की आज्ञा मान ली।

वे बग्घी को खीचकर खपरैल से बाहर ले आये और उसमे घोडे जोतने में डेढ घण्टे तक जुटे रहे। पहले उन्होने रस्सियो की जोत को ढीला किया, इसके बाद उसे फिर ज़रूरत से ज्यादा कस दिया। दोनो भाई बहुत कुछ इसपर अडे थे कि चितकबरे को बीच मे जोता जाय, क्योकि 'वह पहाडी ढलुवान पर से सबसे अच्छा जायेगा'। लेकिन फिलोफेई ने 'झबराले' के लिए निश्चय किया। सो, तदनुसार झबराले को ही बमो मे जोता गया।

उन्होने बग्घी को ऊपर तक घास से भर दिया, लगडे घोडे के कालर को सीट के नीचे रखा – तूला मे घोडा खरीदने की हालत मे उसकी ज़रूरत पड सकती थी फिलोफेई जो इस बीच जाने कैसे समय पाकर घर दौड गया था और वहा से एक लम्बा, सफेद, ढीला-ढाला खानदानी चोगा, एक ऊची डबलरोटी नुमा टोपी तथा कोलतारी जूते पहने लौट आया था, विजयी अन्दाज मे कोचवान की गद्दी पर जा बैठा। मैने अपनी सीट ग्रहण की और अपनी घडी पर नजर डाली – सवा दस बजे थे। येरमोलाई ने मुझे विदाई-अभिवादन तक नही किया – वह अपने कुत्ते वालेत्का को पीटने मे व्यस्त था। फिलोफेई ने रासो को झटका दिया और पतली, महीन आवाज़ मे चिल्लाया, "चल, चल, नन्हे-मुन्ने!"

उसके भाई दोनो ओर उछल पडे, बाजूवाले घोडो के पेट के निचले हिस्से पर चाबुक फटकारा, बग्घी ने हरकत की, और फाटक से बाहर निकल सडक की ओर घूम चली – झबराले ने अपने घर की ओर मुडने का प्रयास किया, लेकिन फिलोफेई के चाबुक की दो-चार फटकारो ने उसके होश ठिकाने लगा दिये। और यह लो, हम अब गाव से बाहर आ चुके थे और खूब पास पास उगी अखरोट की घनी झाडियो के बीच काफी हमवार सडक पर से गुज़र रहे थे।

थिर, शानदार रात थी, सवारी के लिए बहुत ही बढिया, लाजवाब!

रह रहकर हवा का एक झोका झाडियो में सरसराता, टहनियो को झुलाता और फिर शात पड जाता। आकाश मे निश्चल रुपहले बादल देखे जा सकते थे। चाद खूब ऊचे चढा था और चारो ओर उजली चान्दनी बिखेर रहा था। मैने घास पर अपने बदन को सीधा किया, और अभी ऊघना शुरू ही किया था लेकिन मुझे उस 'अटपटी जगह' का ध्यान हो आया, और चौककर उठ बैठा।

"सुनो, फिलोफेई, क्या वह जगह दूर है जहा नदी को चलकर पार करना है?"

"वह जगह जो है सो पाच-एक मील होगी।"

"पाच-एक मील," मैने मन में सोचा। "वहा हम अभी एक घटे से पहले नही पहुचेंगे। तब तक मै एक झपकी ले सकता हू। "फिलोफेई, तुम रास्ता तो अच्छी तरह जानते हो न?" मैने फिर पूछा।

"निश्चय। भला, उसे भी न जानूगा? मै कोई पहली बार ही गाडी थोडे ले जा रहा हू।"

उसने कुछ और भी कहा, लेकिन मै अब सुन नही रहा था—मै सो गया था।

* * *

मै जागा, लेकिन—जैसा कि अक्सर होता है—अपने इस इरादे के परिणामस्वरूप नही कि ठीक एक घटे बाद मुझे जागना है, बल्कि एक दम अपने कान के पास एक तरह की अजीब, किन्तु अस्पष्ट छपछप तथा कलकल की आवाज सुनकर। मैने अपना सिर उटाया।

और अद्भुत दृश्य था वह, इतना कि वर्णन करते नही बनता। मै, पहले की भाति, बग्घी पर लेटा था, लेकिन बग्घी के चारो ओर—हर तरफ—उसके पार्श्व से आधा फुट—आधा फुट ही, ज्यादा नही—पानी की एक चादर बिछी थी, चादनी में चमचम करती, छोटी छोटी, सुस्पष्ट, थरथराती लहरियो में छितरायी हुई। मैने सामने की ओर देखा। कोचवान

की गद्दी पर कमर को दोहरा किये और सिर को झुकाये, फिलोफेई बैठा था, प्रतिमा की भाति, और उससे थोडा आगे, लहरिया लेते पानी के ऊपर, जुए की कमान-सी मेहराब, घोडो के सिर और उनकी पीठ नजर आ रही थी। और हर चीज इतनी निश्चल, इतनी नि शब्द थी मानो वह कोई जादू भरा स्थल हो, सपना हो, परियो के देश का सपना   क्या मतलब हो सकता है इसका? बग्घी की छत के नीचे से मैंने पीछे की ओर देखा। अरे, यह तो हम बीच नदी मे है! तट हमसे तीसेक डग दूर है!

"फिलोफेई!" मै चिल्लाया।

"क्या है?" उसने जवाब दिया।

"क्या है—वाह! खुदा बचाय! हम कहा है?"

"नदी में।"

"यह तो देख रहा हू कि हम नदी मे है। लेकिन, इस तरह तो हम सीधे नदी मे डूब जायेंगे। क्या इसी तरह तुम नदी को चलकर पार करते हो, क्यो? अरे, क्या तुम सो रहे हो, फिलोफेई? बोलो, जवाब दो!"

"मुझसे एक छोटी-सी गलती हो गयी," मेरे पथप्रदर्शक ने कहा, "मै एक बाजू जरा गलत चला आया। लेकिन अब थोडा रुकना पडेगा।"

"रुकना पडेगा? सो क्यो, भला किस लिए हमे यहा रुकना पडेगा?"

"ज़रा झबराले को अपने इर्द-गिर्द की टोह ले लेने दीजिये। जिधर को वह अपना सिर मोडेगा, उसी ओर हमें जाना होगा।"

घास पर मैंने अपने-आपको ऊचा उठाया। जोतवाले घोडे का सिर एकदम निश्चल था। सिर के ऊपर, उजली चान्दनी मे, केवल उसका एक कान नजर आ रहा था जिसे वह न-मालूम-सा आगे-पीछे की ओर हिला रहा था।

"अरे वह—तुम्हारा वह झबराला—भी सो रहा है!"

"नही," फिलोफेई ने जवाब दिया। "वह अब पानी को सूघ रहा है।"

और हर चीज फिर स्थिर हो गयी। केवल, पहले की भाति पानी की धुधली कलकल सुनाई दे रही थी। मुझपर एक जडता-सी छा गयी।

चादनी, और रात, और नदी, और हम उसमे

"यह फुकार जैसी आवाज क्या है?" मैंने फिलोफेई से पूछा।

"वह? सरकडो में वत्तखे है—या फिर साप।"

और एकदम अचानक जोतवाले घोडे का सिर हिला, उसके कान खडे हुए, उसने एक फुकार छोडी, और हरकत में आ गया। "हो-हो-हो हो!" फिलोफेई ने अचानक सप्तम स्वर में हाक लगानी शुरु की। वह सीधा होकर वैठा और अपने चावुक को फहराया। बग्घी उस जगह से उचकी जहा वह जाम हो गयी थी, नदी के पानी को चीरती आगे की ओर उसने एक डुबकी लगायी और अगल-वगल झकोले खाती तथा लचलचाती बढ चली। शुरू में मुझे ऐसा लगा जैसे हम डूब रहे हो और अधिकाधिक गहराई में उतरते जा रहे हो, लेकिन दो या तीन झटको और धचकोलो के बाद पानी का विस्तार अचानक नीचा होता प्रतीत हुआ वह नीचा, और अधिक नीचा होता गया, बग्घी उसमे से उबरकर ऊपर उठती मालूम हुई। देखते न देखते पहिए तथा घोडो की पूछें नजर आने लगी, और अब—चाद की धुधली रोशनी में—बडी बडी बूदो से, जोरदार छपाको से उत्तेजित, हीरो की—नही, हीरो की नही—नील-मणियो की बौछारो को बिखेरते हुए, सयुक्त रूप में पूरा जोर लगाकर घोडे हमें रेतीले तट पर खीच लाये, और दुलकी चाल से पहाडी ढलुवान की ओर जानेवाली सडक पर बढ चले। उनकी उजली बुर्राक टागें जैसे होड में कौंध रही थी।

"फिलोफेई अब क्या कहेगा?" यह खयाल मेरे मस्तिष्क में कौंधा। "देखा आपने, मेरी बात ठीक निकली!" या ऐसे ही कुछ और। लेकिन उसने कुछ नही कहा। सो मैंने भी लापर्वाही के लिए उसे कोचना आवश्यक नही समझा, और घास पर लेटते हुए फिर सोने की कोशिश करने लगा।

* * *

लेकिन मुझे नीद नही आयी, इसलिए नही कि मै शिकार से थका हुआ नही था, न ही इसलिए कि जो विचलित कर देनेवाला अनुभव मुझे अभी हुआ था उसने मेरी नीद को छिन्न-भिन्न कर दिया था, बल्कि

इसलिए कि हम अतीव सुन्दर प्रदेश के बीच से गुजर रहे थे। विस्तृत, दूर दूर तक फैले, नदी के तट पर घास की हरियाली से भरे चरागाह, प्रचुर परिमाण में छोटी छोटी तलैया, झीले, नन्ही नदिया-खाडिया जो छोरो पर टहनियो तथा बेंतो से आच्छादित थी—एक बाकायदा रूसी दृश्यपट, ऐसा जिसे रूसी प्यार करते है, उन दृश्यो की भाति जिनमें हमारी पुरानी गाथाओ के वीर नायक सफेद हसो तथा भूरी बत्तखो का शिकार करने घोडो पर निकलते थे। सडक जिसपर हम जा रहे थे, पीले फीते की भाति बल खाती चली गयी थी। घोडे आसानी से दौड रहे थे, और मै अपनी आखें बद नही कर सका। मै मुग्ध था। और यह सब, चाद के सहृदय आलोक से मृदु, एक-लय आखो के सामने तैर रहा था। फिलोफेई तक उससे आर्द्र हो उठा था।

"ये सन्त येगोर के चरागाह कहलाते है," मेरी ओर मुडते हुए उसने कहा। "और इनसे परे बडे राजकुमार के चरागाह है। सारे रूस में इनके जोड के चरागाह और कही नही है ओह, कैसे सुन्दर है!" जोतवाले घोड़े ने नथुने फरफराये और अपने बदन को थरथराया। "खुदा वख्शे तुम्हे!" दबे स्वर में गम्भीरता के साथ फिलोफेई ने टिप्पणी की। "कितने सुन्दर है!" उसास लेते हुए उसने दोहराया। इसके बाद उसने एक लम्बी-सी हुकार भरी। "कटाई का समय एकदम सिर पर आ लगा है, और सोचो तो, कितनी घास वे वहा बटोरेगे! पहाड के पहाड! और खाडियो में ढेर की ढेर मछलिया! ओह, इत्ती ब्रीम मछलिया!" सुरदार आवाज में उसने अन्त में कहा। "बस समझ लो, जीवन मधुर है—मरने को जी नही चाहता!"

अचानक उसने अपना हाथ उठाया।

"वह देखो, झील के ऊपर वहा वह बगुला ही तो खडा है न? क्या वह रात को मछलिया पकड रहा है? खुदा वख्शे! यह तो टहनी है, बगुला नही! ओह, गलती हुई। लेकिन चाद हमेशा ऐसे ही आखमिचौनी खेला करता है!"

सो हम चलते गये, चलते गये। लेकिन अब चरागाह खत्म होने लगे थे, पेडो के छोटे छोटे झुरमुट तथा जोते हुए खेत नजर आने लगे थे। एक बाजू एक छोटा-सा गाव कौंध गया जिसमें दो या तीन बत्तिया जल रही थी। बडी सडक अब केवल तीन-एक मील दूर थी। मै नीद की गोद मे ढुरक गया।

मै फिर अपनी इच्छा से नही जागा। इस बार फिलोफेई की आवाज ने मुझे जगाया।

"मालिक मालिक हो!"

मै उठ बैठा। बग्घी समतल भूमि पर, राजमार्ग के ठीक बीचोबीच, थिर खडी थी। फिलोफेई जो कोचवान की गद्दी पर घूमकर मेरी ओर मुह किये था, आखो को खूब फाडे (उन्हे देखकर मुझे वाकई आश्चर्य हुआ, मै सोच तक नही सकता था कि उसकी आखें इतनी बडी है) रहस्यमय अन्दाज के साथ फुसफुसा रहा था—

"खडखड पहियो की खडखड!"

"क्या कहते हो तुम?"

"मै कहता हू, खडखड हो रही है! जरा झुककर सुनिये। क्यो, सुनाई देती है?"

मैने अपना सिर बग्घी से बाहर निकाला, अपना सास रोका, और सचमुच कही दूर, हमारे बहुत पीछे, धुधली टूटी हुई आवाज मुझे सुनाई दी, पहियो के लुढकने जैसी।

"क्यो, सुनाई देती है?" फिलोफेई ने दोहराया।

"हा, सुनाई देती है," मैने जवाब दिया, "कोई गाडी आ रही है।"

"और आपको सुनाई देती है शू-ऊ-ऊ! घटिया और साथ में सीटी की आवाज सुनाई देती है न? अपनी टोपी उतार लीजिये ज्यादा अच्छा सुनाई देगा।"

मैंने अपनी टोपी नही उतारी, लेकिन मैंने ध्यान से सुना।

"ओह, हा शायद। लेकिन इससे क्या?"

फिलोफेई ने घूमकर घोडो की ओर मुह कर लिया।

"कोई गाडी आ रही है हल्की, लोहे के हाल चढे पहिए," उसने अपना मत प्रकट किया, और घोडो की रास सभाली। "ये दुष्ट लोग आ रहे है, मालिक। इधर, आप जानो, तूला के निकट वे जो न करे थोडा!"

"क्या बेकार की बात करते हो! तुमने कैसे जाना कि वे जरूर दुष्ट लोग ही होगे?"

"मै सच कहता हू घटिया बजाते और खाली गाडी में भला भला और कौन हो सकते है?"

"अच्छा, अच्छा क्या तूला यहा से ज्यादा दूर है?"

"अभी दस-एक मील और चलना होगा, और आबादी का यहा कुछ पता नही।"

"अच्छा तो, जरा तेज चलो! देर करने से कोई लाभ नही।"

फिलोफेई ने अपना चाबुक फहराया, और बग्घी फिर तेजी से बढ चली।

* * *

फिलोफ़ेई की बात पर हालाकि मुझे अधिक विश्वास नही था, फिर भी मै सो नही सका। "अगर वे सचमुच ही ऐसे हुए तो?" मेरा मन विचलित हो उठा। मै बग्घी में उठ बैठा—तब तक मै लेटा हुआ था—और चारो ओर मैंने देखना शुरू किया। उस बीच जबकि मै सोया हुआ था, एक हल्की-सी धुध छा गयी थी—धरती पर नही, बल्कि आकाश में। वह काफी ऊची थी, और चाद एक सफेदीमायल धब्बे की भाति उसमें लटका था, जैसे धुवें मे अटका हुआ हो। हर चीज धुधली और एक-दूसरे में विलय होती मालूम होती थी, हालाकि धरती के निकट कुछ उजलापन

था। चारो ओर सपाट, नीरस प्रदेश। बस खत ही खेत, खेतो के सिवा और कुछ नही – इक्की-दुक्की झाडिया और खड्ड – और फिर खेत, ज्यादातर परती जमीन, कही कही विरल जगली घास उगता हुआ। बिल्कुल वीरान मौत की भाति। काश, किसी लवा-पक्षी की ही आवाज सुनाई दे जाती!

हम आधे घटे तक तेजी से बढते रहे। फिलोफेई बराबर अपने चाबुक को फटकार और होठो से टिटकार रहा था। लेकिन न तो उसने एक शब्द कहा, और न मैंने। पहाडी ढलुवान पर हमने चढना शुरू किया फिलोफेई ने घोडो को खीचा, और तुरत फिर कहा–

"यह पहियो की खडखड है, मालिक। हा, सचमुच है!"

मैंने फिर बग्घी मे से अपना सिर वाहर निकाला, लेकिन ऐसा करने की कोई जरूरत नही थी, छत के नीचे रहते हुए भी – इतनी सुस्पष्टता से, हालाकि अभी भी दूर से, गाडी के पहियो के खडखडाने की, लोगो के सीटिया बजाने की, घटियो की टनटन की, यहा तक कि घोडो की पदचाप की भी आवाज आ रही थी। इतना ही नही, मुझे कुछ ऐसा भास हुआ जैसे गाने तथा हसने की आवाजें भी सुनाई दे रही हो। यह सच है कि हवा उधर से ही आ रही थी, लेकिन इसमें शक नही कि वे अव हमसे पौन, या शायद डेढ-एक मील से ज्यादा दूर नही थे।

फिलोफेई और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा। उसने केवल अपनी टोपी को पीछे से चुटकिया कर माथे पर खिसकाया, और फौरन रासो के ऊपर झुकते हुए, घोडो पर चाबुक बरसाना शुरु कर दिया। वे सरपट भाग चले, लेकिन अधिक देर तक वे सरपट नही दौड सके, और फिर दुलकी चलने लगे। फ़िलोफेई उनपर चाबुक फटकारता रहा। हमें निकल भागना चाहिए!

कह नही सकता कि क्यो, लेकिन – वावजूद इसके, शुरु में फिलोफेई की आशकाओ में मैंने योग नही दिया था – अव अचानक मेरे मन में भी यह बात बैठ गयी कि राहजन सचमुच हमारा पीछा कर रहे हैं ..

कोई नयी चीज़ मैंने नही सुनी थी—वही घटिया, वही ख़ाली गाडी की खडखड, वही बीच बीच मे सीटियो की आवाज, वही अस्पष्ट शोर लेकिन अब मुझे कोई शक नही था। फिलोफेई गलत नही कह सकता!

और अब बीस मिनट और बीत गये। इन आख़िरी बीस मिनटो के दौरान में, अपनी गाडी की खडखड तथा घरघर को वेधकर, हम एक अन्य खडखड तथा घरघर को सुन सकते थे।

"रुको, फिलोफेई," मैंने कहा, "इससे कोई लाभ नही—अन्त तो एक ही होना है।"

फिलोफेई ने एक सहमी-सी 'वो!' का उच्चार किया। घोडे उसी क्षण रुक गये, मानो सुस्ताने का मौका पाकर वे खुश हुए हो।

ख़ुदा रहम करे! घटिया अब ठीक हमारी पीठ के पीछे कुहराम मचाये थी, गाडी खडखडा और चरचरा रही थी, और लोग सीटिया बजा रहे थे, चिल्ला रहे थे, और गा रहे थे, घोडे फुकार और अपने खुरो से धरती को धुन रहे थे

वे हमारे निकट आ लगे!

"आफत आयेगी," फिलोफेई ने निश्चय के साथ दबे स्वर मे टिप्पणी की, और अनिश्चितता के साथ घोडो को टिटकारते हुए उन्हे फिर आगे बढने के लिए उकसाने लगा। लेकिन ठीक उसी क्षण अचानक एक लपका-झपकी-सी हुई और एक बहुत बडी तथा चौडी गाडी, जिसमे तीन सीकिया घोडे जुते थे, तेजी से कन्नी काटती बराबर में आयी, सरपट आगे निकली और फौरन हमारी राह को रोककर कदम चाल से चलने लगी।

"बिल्कुल लुटेरो की ही चाल खल रहे है!" फिलोफेई बुदबुदाया।

मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मैंने अपने हृदय में एक ठडी कपकपी का अनुभव किया घुधली चादनी के अध-अधियारे में, उद्विग्नचित्त, मैं सामने की ओर ताकने लगा। हमारे सामने गाडी में—अध-बैठे और

अध-लेटे – कमीज और बटन-खुले कोट पहने, लगभग छ' आदमी थे। उनमें से दो टोपी नही लगाये थे। भीमाकार पाव, बडे बूट पहने, गाडी की रेलिग के ऊपर से झूल और लटक रहे थे, वाहे उठ और गिर रही थी, बदन आगे और पीछे की ओर हिचकोले खा रहे थे यह बिल्कुल साफ था मण्डली नशा किये है कुछ यू ही बेमतलब ऊची आवाज में गाये जा रहे थे, उनमें से एक बहुत ही सही तथा तेज सीटी बजा रहा था, दूसरा गालिया बक रहा था। कोचवान की जगह पर, भेड की खाल का कोट पहने, एक दानव-सा बैठा गाडी को हाक रहा था। वे कदम चाल से चल रहे थे, मानो हमारी ओर उनका कोई ध्यान ही न हो।

क्या किया जाय? हम भी कदम चाल से उनके पीछे पीछे चल रहे थे कुछ और हम कर भी नही सकते थे।

करीब चौथाई मील तक हम ऐसे ही चलते रहे। इस तनाव में रहना भारी यन्त्रणा थी अपने-आपको बचाने, रक्षा करने का सवाल ही नही था। वे छ' थे, और मेरे पास एक छडी तक नही थी। तो क्या हम वापिस मुड चले? लेकिन वे हमें उसी क्षण धर दबोचेगे। मुझे जुकोवस्की की एक पक्ति याद हो आयी (उस प्रसग की जहा वह फील्डमार्शल कामेन्स्की की हत्या का जिक्र करता है) –

कुटिल कुल्हाडी, बदमाश राहजन की

या फिर – घिनौनी रस्सी का फदा एक खाई में पटका जाना
वहा जाल में फसे खरगोश की भाति छटपटाना और दम घुटकर

उफ, भयानक!

और वे, पहले की भाति, कदम चाल से टुरक रहे थे, हमारी ओर कोई ध्यान न देते हुए।

"फिलोफेई!" मै फुसफुसाया, "जरा कोशिश तो करो, थोडा दाहिनी ओर दबकर, देखो, अगर आगे निकला जा सके।"

फिलोफेई ने कोशिश की — दाहिनी ओर को वह दवा, लेकिन वे भी तुरत दाहिनी ओर को हो गये। बराबर में से निकलना असम्भव था।

फिलोफेई ने एक और प्रयास किया। बाईं ओर को वह दबा। लेकिन, इस बार भी, उन्होने उसे गाडी से आगे नही निकलने दिया। वे जोरो से हसने भी लगे। इसका मतलब यह था कि वे हमें निकलने नही देगे।

"ये बुरे लोग हैं," अपने कधे के ऊपर से फुसफुसाते हुए फिलोफेई ने कहा।

"लेकिन ये इन्तजार किसका कर रहे है?" मैंने फुसफुसाकर पूछा।

"पुल पर पहुचने का — वह सामने — तलहटी मे, नदी के ऊपर। वे वहा हमारी खबर लेगे! हमेशा ऐसा ही करते है पुलो की ओट में। अब हमारी ख़ैर नही, मालिक!" उसास भरते हुए फिर उसने जोडा, "वे हमे शायद ही जीता छोडे। यह उनके लिए एक बहुत बडी बात है कि सब कुछ छिपा रहे। मुझे एक बात का अफसोस है, मालिक, मेरे घोडे चले जायेगे, और मेरे भाई उन्हे नही पा सकेगे!"

मुझे उस समय आश्चर्य होना चाहिए था कि फिलोफेई अभी भी, ऐसे क्षणो में भी, अपने घोडो के लिए चिन्तित हो सकता है, लेकिन — मुझे स्वीकार करना चाहिए, मुझे उसकी कोई सुध नही थी। "क्या वे सचमुच मुझे मार डालेगे?" बार बार यही मैं अपने मन में सोच रहा था। "वे मुझे क्यो मारेगे? मैं उन्हे हर चीज दे दूगा जो मेरे पास है"

और पुल निकट और अधिक निकट आता जा रहा था, और उसे अधिकाधिक स्पष्टता के साथ देखा जा सकता था।

अचानक एक तेज हुप-सी आवाज़ सुनाई दी। हमारे सामने की गाड़ी, जैसे, आगे की ओर उड चली, तीर की भाति और पुल के पास पहुच, सड़क के थोडा एक ओर, फौरन रुककर एकदम थिर खडी हो गयी। मेरा हृदय, सीसे की भाति डूब रहा था।

"ओह, भाई फिलोफेई," मैने कहा, "हम अब मौत के मुह में जा रहे है। माफ करना यदि मै ही तुम्हे इस मुसीबत में खीच लाया हू।"

"इसमें, मालिक, आपका क्या कसूर है! भाग्य से भी भला कोई बच सकता है! चलो, झबराले, बेटा, तुमपर मुझे विश्वास है," फिलोफेई ने जोतवाले घोडे को सबोधित किया, "ज़रा बढ तो चलो, भाई! अपनी आखिरी सेवा कर डालो! जो होना है, सो तो होगा ही, भगवान हमपर कृपा कीजिये!"

और उसने अपने घोडो को दुलकी चाल में डाल दिया।

हम पुल के निकट पहुचने लगे—उस निश्चल, भयावनी गाडी के निकट। उसमें हर चीज निस्तब्ध थी, मानो इरादतन। एक हुकार तक नही। यह पाइक या बाज की, शिकार करनेवाले प्रत्येक पक्षी की, खामोशी थी—उस समय की खामोशी जब शिकार निकट आ रहा होता है। और अब हम गाडी के बराबर में पहुच गये थे .. अचानक, भेड की खाल का कोट पहने एक दानव, गाडी में से उछला और सीधा हमारी ओर लपका!

उसने फिलोफेई से कुछ नही कहा, लेकिन फिलोफेई ने—अपनी मर्जी से—रासो को झटका। बग्घी रुक गयी।

दानव ने अपनी दोनो बाहे बग्घी के दरवाजे पर रखीं और मुस्कराते हुए अपने झबराले सिर को आगे की ओर झुकाते हुए, फैक्टरी-मज़दूर के लहजे में धीमी, समतल आवाज में कहा—

"माननीय श्रीमान, हम एक अच्छी दावत से—शादी की दावत से—लौट रहे है, हम अपने एक बहुत ही बढिया साथी को ब्याह कर आ रहे है—यानी हमने उसे सुला दिया है; हम सब जवान लडके है, लापरवाह जीव—जी भरकर पीना-पिलाना हुआ, खुमार दूर करने के लिए थोडी-सी शराब और पी ले। सो श्रीमान, बडा अच्छा हो अगर आप थोडी, बहुत ही थोडी—बस हरेक साथी के लिए एक एक वोद्का का पौआ खरीदने की किरपा करे। हम आपके स्वास्थ्य का जाम पियेंगे, और

आपको याद करेंगे। लेकिन अगर आप हमपर मेहरबानी नही करेंगे तो, हमारी बिनती है कि हम पर नाराज न होना!"

"क्या मतलब है इसका?" मैंने सोचा। "क्या यह मजाक है? हसी-ठिठोली है?"

दानव सिर झुकाये खडा रहा। ठीक उसी क्षण चाद धुध में से उबरा और उसके चेहरे को आलोकित कर दिया। उसके चेहरे पर, उसकी आखो में, उसके होठो पर, मुसकान खेल रही थी। लेकिन उसमें ऐसी कोई चीज नही थी जो डरानेवाली हो केवल ऐसा मालूम होता था जैसे वह, ऊपर से नीचे तक, चौकस हो और उसके दात इतने सफेद और इतने बडे वडे

"खुशी से यह लीजिये" उतावली के साथ मैंने कहा, और अपनी जेब मे से बटुवा निकालते हुए चादी के दो रूबल—तब रूस मे चादी का प्रचलन था—दो रूबल मैंने बाहर निकाले—"लीजिये, अगर इनसे काम चल जाय।"

"बहुत शुक्रिया!" सैनिक ढग से दानव ने कहा, और उसकी मोटी उगलियो ने आनन-फानन मे मुझसे झपट लिया—समूचे बटुवे को नही, बल्कि केवल दो रूबलो को। "बहुत शुक्रिया!" उसने अपने बालो को पीछे की ओर झटका और गाडी की ओर दौड गया।

"लडको!" वह चिल्लाया, "महानुभाव ने हमें चादी के दो रूबल भेंट किये है!" वे सब, जैसे, एकबारगी चहक उठे। दानव लुढककर कोचवान की जगह पर जा विराजा।

"खुदा आपको खुश रखे, मालिक!"

इसके बाद वे फिर दिखाई नही दिये। घोडे आगे की ओर लपके, गाडी ढलुवान पर चढी। धरती को आकाश से अलग करनेवाली रेखा पर एक बार फिर उसने उभारा लिया, नीचे उतरी और आखो से ओझल हो गयी।

और अब पहियो की खडखड, चिल्लाने और घटियो की आवाज़, कुछ भी नही सुनी जा सकती थी।

मृत्यु जैसी निस्तब्धता छायी थी।

* * *

फिलोफेई और मै एकाएक अपनी होश में नही आ सके।

"ओह, कैसे हसी-मज़ाक के शौकीन निकले!" आखिर उसने टिप्पणी की, और अपनी टोपी उतारकर क्रॉस के चिन्ह बनाने लगा। "हसी-मजाक का शौकीन, सच," उसने फिर कहा और मेरी ओर घूम गया, खुशी से छलछलाता हुआ। "कैसा बढिया जीव था वह, सच। बस, वस, वस, मेरे नन्हे-मुन्ने, अब जरा होशियार हो जाओ! अब कोई खतरा नही। अब कोई खतरा नही! यही था वह जो हमें आगे नही निकलने देता था, यही था वह जो घोडो को हाक रहा था। और उसका मजाक करना तो देखो! वस, बस, अब चले चलो, खुदा के नाम पर!"

मै कुछ नही बोला, लेकिन मै भी खुश था। "अब कोई खतरा नही!" मैंने मन ही मन दोहराया, और घास के ऊपर लेट गया। "चलो, सस्ते छूटे!"

बल्कि, जुकोवस्की की उस पक्ति को याद करने पर, मैंने आपेक्षाकृत शर्म का भी अनुभव किया।

अचानक मुझे एक खयाल आया।

"फिलोफेई!"

"क्या है?"

"क्या तुम विवाहित हो?"

"हा"।

"और क्या तुम्हारे वाल-बच्चे है?"

"हा।"

"तो यह कैसे हुआ कि तुम्हे उनका ख़याल नही आया? तुमने अपने घोडो के लिए अफसोस प्रकट किया, क्या तुम्हे अपनी घरवाली और बच्चो के लिए अफसोस नही हुआ?"

"उनके लिए अफसोस किस बात का? आप जानो, वे कोई चोरो के चगुल में तो फसने जा नही रहे थे। लेकिन वे बराबर मेरे ध्यान में रहे, और अब भी है निश्चय!" फिलोफेई रुका। "हो सकता है उनकी खातिर ही सर्वशक्तिमान प्रभु ने हमपर तरस खाया हो!"

"लेकिन वे लुटेरे नही भी तो हो सकते थे?"

"यह हम कैसे कह सकते है? क्या कोई दूसरे की आत्मा मे पैठ सकता है? दूसरे की आत्मा, आप जानो, एक अधेरी जगह है। लेकिन, हृदय में भगवान का ध्यान हो, तो हमेशा भला होता है। नही, नही! मुझे बराबर अपने बीवी-बच्चो का ख़याल था ए, हो जरा तेज़ी से मेरे नन्हे-मुन्ने, ख़ुदा के नाम पर!"

करीब करीब दिन का उजाला फैल चला था। हम तूला के निकट पहुचे। मै लेटा था, स्वप्निल और उनीदा।

"मालिक," अचानक फिलोफेई ने मुझसे कहा, "वह देखो, वे वहा सराय में रुके है उनकी गाडी!"

मैंने अपना सिर उठाया। वे वहा थे, और उनकी गाडी, और घोडे। शराबख़ाने की चौखट पर अचानक हमारा परिचित–भेड की खाल का कोट पहने वही दानव–नमूदार हुआ। "श्रीमान!" अपनी टोपी फहराते हुए वह चिल्लाया, "हम आपकी सेहत का जाम छलका रहे है! ए कोचवान," उसने फिर कहा, फिलोफेई की ओर अपना सिर हिलाते हुए, "तुम थोडा डर गये थे, क्यो?"

"आदमी मजेदार है!" फिलोफेई ने अपना मत प्रकट किया, लेकिन तभी जब हम सराय से पचास-एक गज़ आगे निकल गये।

आख़िर हम तूला पहुचे। मैंने छर्रे ख़रीदे, लगे हाथ चाय और दारू पिया, और यहा तक कि घोडे के सट्टेबाज़ से एक घोडा भी ख़रीद लिया।

दोपहर को हम फिर घर के लिए रवाना हुए। जब हम उस जगह के पास से गुजरे जहा हमने पहले-पहल अपने पीछे गाडी की खडखड सुनी थी तो फिलोफेई, जो तूला में थोडा रग-पानी कर चुका था, बडा वातूनी निकला—उसने मुझे परियो की कहानिया तक सुनानी शुरू कर दी—और उस जगह से गुजरते समय अचानक हसने लगा।

"आपको याद है, मालिक, किस प्रकार मैने आप से रट लगाये रखी, 'खड़खड   पहियो की खडखड,' मने कहा।"

उसने कई बार हवा में अपना हाथ फहराया। यह फिकरा उसे अत्यन्त रोचक लगा था।

उसी साझ हम उसके गाव वापिस जा पहुचे।

येरमोलाई से उस जोखिम का मैंने वर्णन किया जिसमें हम पड गये थे। चूकि उस वक्त वह शराब नही पिये हुए था, इसलिए उसने कोई सहानुभूति प्रकट नही की। उसने केवल एक हुकारा-सा भरा—समर्थन का अथवा झिडकी का, मेरा खयाल है कि यह वह खुद भी नही जानता था। लेकिन दो दिन बाद उसने, भारी सन्तोष के साथ, मुझे सूचित किया कि ठीक उसी रात जबकि फिलोफेई और मै तूला की ओर प्रयाण कर रहे थे, ठीक उसी सडक पर, एक सौदागर को लूटा गया और उसकी हत्या कर डाली गयी। पहले तो मैने इसपर कुछ ज्यादा विश्वास नही किया, लेकिन वाद मे मुझे इसपर विश्वास करने के लिए वाधित होना पडा—जब कान्स्टेबल द्वारा इसकी पुष्टि हुई जिसे, घटना के सिलसिले में, अपने घोडे को सरपट दौडाकर आना पड़ा था। कौन जाने, कही यही तो वह 'शादी' नही थी जिसे मनाकर हमारे वे वीर लौट रहे थे? क्या यही तो वह 'वढिया जीव' नही था जिसे उन्होने सुला दिया था—उस हसमुख दानव के शब्दो में। मै फिलोफेई के गाव में पाच दिन तक और रुका। जव भी मै उससे मिलता, हमेशा कहता—

"कहो भाई, पहियो की खडखड?"

"कैसा ज़िन्दादिल आदमी था!" वह हमेशा कहता, और हसने लगता।

बन और स्तेप

और जाने किस प्रेरणा ने
उसके हृदय को
वापिस देहात की ओर खीचना शुरू किया,
उस अंधियारे बाग की ओर
जहा लीपा के पेड—
इतने भीमाकार, और छाया से भरपूर,
जहा लिली के फूल अपनी सुगन्धि बिखेरते है,
और जहा पानी के किनारे इर्द-गिर्द
उगे थे बेंत-वृक्ष—
बाध पर से झुके पातो में,
और जहां बलूत का पेड जोरावर उगता है जोरावर खेत मे,
सन की गध और बिछुए की पातो के बीच
वहा, दूर तक फैले खेतो में
जहा की धरती सम्पन्न और मखमल-सी काली,
जहा रई, दूर जहा तक जाती आख
सरसराती नि शब्द मृदु तरगित लहरियो मे
और जहा गोल-मटोल, उजले, पारदर्शी बादलो से
झरता है भारी स्वर्णिम प्रकाश, रमता है मन वही
(एक कविता से जो लपटो को अर्पित कर दी गयी।)

बहुत सम्भव है कि पाठक मेरे शब्द-चित्रो से पहले ही ऊब चुके हो, उन्हे तुरंत आश्वस्त करने के लिए मै वचन देता हू कि अब तक जो अश छप चुके है, उन्ही तक मै अपने-आपको सीमित रखूगा।

लेकिन जब विदा ही ले रहा हू तो शिकारी के जीवन के बारे में दो-चार शब्द कहने का मोह मैं संवरण नही कर सकता।

कुत्ते और बन्दूक के साथ शिकार पर जाना स्वय अपने में एक आह्लादपूर्ण चीज है – 'für sich'* जैसा कि पुराने दिनो में कहा करते थे, लेकिन मान लो कि आप जन्मजात शिकारी नही है, लेकिन – फिर भी – प्रकृति और आजादी से आपको प्रेम है। तब, आप, हम शिकारियो पर रश्क किये बिना नही रह सकते सुनिये।

मिसाल के लिए, क्या आप वसन्त-ऋतु में दिन निकलने से पहले ही रवाना होने के आनन्द से परिचित है? आप बाहर पैडियो पर निकल आते है सावले-भूरे आकाश मे जहा-तहा तारे टिमटिमा रहे है, सुबह की नम हवा के धुधले झोके जब-तब लपककर आपका स्पर्श करते है, रात की गुप्त, धुधली, फुसफुसाहट सुनाई पड रही है। अधियारे में लिपटे पेड धीमे धीमे सरसरा रहे है। और अब लोग गाडी में एक दरी और आपके पावो के पास एक बक्सा जमा देते है जिसमें समोवार रखा हुआ है। बाजूवाले घोडे कसमसाते हुए हरकत करते है, नथुनो को फरकाते और नफासत के साथ धरती को अपने खुरो से खुरचते है। श्वेत कलहसो का एक जोडा, अभी भी नीद मे मदमाता, अलस भाव से और चुपचाप, सडक के इस ओर से उस ओर निकल जाता है। बाडे के उस ओर, बगीचे मे, चौकीदार निश्चिन्तता के साथ खर्राटे भर रहा है। प्रत्येक ध्वनि, ऐसा मालूम होता है, जैसे ठण्डी हवा मे थिर हो गयी हो – निश्चल लटक गयी हो। आप गाडी में अपनी जगह ग्रहण करते है, घोडे तुरत चल पडते है, और गाडी जोरो से गडगडाती लुढकने लगती है आप बढ चलते है – गिरजे के पास से, पहाडी ढलुवान पर से दाहिनी ओर को मुडते, बाध को पार करते है तलैया पर धुध का बिछावन अभी

---

* अपने-आप के लिए।

विछना ही शुरू हुआ है। आपको अपेक्षाकृत कुछ ठड मालूम होती है, ग्रेटकोट के कालर को आप मोड़ लेते हैं। आप उनीदे हो चलते हैं। सडक पर जगह जगह खडे पानी में से घोड़े छप-छप करते जा रहे हैं। कोचवान मुह से सीटी बजाना शुरू करता है। लेकिन अब तक आप तीन मील से अधिक पार कर चुकते हैं . आकाश का कगारा गुलावी आभा से दमक उठा है, बर्च-वृक्षो मे भद्दे ढग से पर फडफडाते कौवो की काव काव कानो से आकर टकराती है। पुआल के ढेरो के इर्द-गिर्द गौरैया चू चू करती है। हवा मे अब अधिक निखार है, सडक ज्यादा साफ नजर आती है, आकाश खिल उठा है और बादल अधिक उजले तथा खेत अधिक हरे नजर आते है। झोपडियो में जलती हुई छेपटियो का लाल आलोक फैला है, फाटको के पीछे उनीदी आवाजें सुनाई देती है। और इस बीच उषा की लाल आभा फूटना शुरू होती है। आकाश के आर-पार सोने की पारिया खिच गयी है। खाई-खड्डो के ऊपर वाष्पीय धुध के वादल घने हो रहे हैं। लार्क-पक्षी प्रभातगीत गा रहे है। मन्द समीर जो ऊषा की पेशवाई करती है, वह रही है, और रक्तवर्ण सूर्य धीरे धीरे ऊपर उठ रहा है। प्रकाश की जैसे एक पूरी बाढ आ जाती है, और आपका हृदय पक्षी की भाति फडक उठता है। हर चीज ताजा, मगन और आह्लाद भरी है। चारो ओर खूब दूर तक, हर चीज़ अब देखी जा सकती है। उधर वनखण्ड के उस पार, एक गाव, और वहा, और आगे, एक और गाव – अपने सफेद गिरजे से शोभित, और वहा पहाडी पर वर्च के पेडो का एक जगल, उसके पीछे दलदल जहा आपको पहुचना है जल्दी, घोडो, जल्दी! वढे चलो, जरा अच्छी दुलकी चाल से वढे चलो! डेढ-दो मील ही अब और रह गये है, अधिक नही। सूरज तेजी से अधिकाधिक ऊचा उठ रहा है। आकाश साफ है। दिन आज का शानदार होगा। ढोर-डगरो का एक रेवड गाव से आपकी ओर चला आ रहा है। आप पहाड़ी के ऊपर पहुचते है ओह, क्या दृश्य है! नदी पाच-छ मील तक वल खाती चली गयी है, धुध ने उसे धुधले नीले रग

में रग दिया है। नदी के उस पार हरे रग के चरागाह है, और चरागाहो से परे ढलुवा, पहाडिया। दूर, दलदल के ऊपर, प्लोवर-पक्षी जोरो से चिचियाते चक्कर लगा रहे है। नमदार उजाले मे दूरी सुस्पष्ट नजर आती है गर्मियो की भाति नही। ओह, कितने उन्मुक्त भाव से वायु सासो में भरती है, कितनी चपलता से अग हरकत करते है, और समूचा मानव-वसन्त के ताज़ा श्वासो से परिवेष्टित – अपने-आपको कितना सबल अनुभव करता है!

और गर्मियो की सुबह – जुलाई मास की सुबह! शिकारी के सिवा भला और कौन जानता है कि भोर के समय झाडियो के बीच घूमना कितना सुहावना होता है! आपके पाव की छाप, ओस से सफेद बनी घास पर, एक हरी-सी लीक छोडती जाती है। भीगी झाडियो में से आप देखते है और रात मे सचित सुहावनी सुगधि का एक झोका आपसे आकर लिपट जाता है। वायु चिरायते के ताजा चरमरेपन से, मोथी और क्लोवर की शहद जैसी मिठास से, पगी है। दूर, बलूत के वृक्षो का एक जगल दीवार की भाति खडा है और सूरज की किरनो में दमक और चमक रहा है। किरनो मे अभी ताज़ापन है, लेकिन गर्मी के सान्निध्य का भी अनुभव होने लगा है। मीठी सुगधो की अति मस्तिष्क मे बेसुधी और मादकता का सचार करती है। झाडियो का अन्तहीन विस्तार हे केवल कही कही, दूर, पकती हुई रई की पीली झलक और लाल मोथी की सकरी धारिया दिखाई देती है। तभी किसी गाडी के पहियो की चू-चरर-मरर सुनाई पडती है। एक किसान झाडियो के बीच से राह बनाता आ रहा है और दिन की गर्मी के मारे अपने घोडे को पहले से छाह में खडा कर देता है। आप उसका अभिवादन करते है, और दूसरी ओर घूम जाते है। पीछे से हसिये की सगीतमय 'श-श-श' की सी ध्वनि आ रही है। सूरज ऊचा, और ऊचा, उठ रहा है। घास जल्दी खुश्क हो जाती है। और गहरी उमस अब घिर आती है। एक घटा बीतता है, फिर दूसरा क्षितिज पर आकाश सवलने लगता है। निस्तब्ध हवा चुनचुना देनेवाली

गर्मी से तप जाती है। "क्यो भाई, यहा पीने का पानी कहा मिल सकता है?" कटाई करते किसान से आप पूछते है। "उधर, खाई मे एक कुवा है।" घास के आल-जाल में उलझी अखरोट की घनी झाड़ियो को पार कर आप एकदम खाई की तलहटी में उतर जाते है। ठीक चट्टान के नीचे एक छोटा-सा झरना छिपा है। वलूत की एक झाडी अपनी टहनियो को, वडी वडी लोलुप उगलियो की भाति, पानी के ऊपर फैलाये है। वडे वडे रुपहले वुलवुले थरथराते हुए तलहटी से उठते है जो महीन मखमली काई से छायी है। आप धरती पर पसर जाते है, पानी पीते है, लेकिन आप इतने शिथिल हो गये है कि हिलने को जी नही चाहता। आप छाह की शरण लेते है, नमी भरी गध का रस लेते है, सुस्ताने लगते है, जवकि झाडिया आपकी ओर ताकती रहती है, दमकती और जैसे सूरज की धूप में पीली पडती हुई। लेकिन वह क्या है? अचानक हवा का एक उडता हुआ झोका आता है, चारो ओर का वायुमण्डल विचलित हो उठता है–क्या वह गडगड़ाहट थी? आप खाई में से वाहर निकल आते है . क्षितिज पर सुरमीले रग की पट्टी के क्या माने? क्या वह गहन होती हुई गर्मी थी? कही तूफान तो नही आ रहा? और अब विजली की एक हल्की कौध नज़र आती है हा, तूफान आयेगा। सूरज अभी दमक रहा है। आप अभी भी शिकार के लिए जा सकते है। लेकिन तूफान का वादल गहरा हो चला है। इसका अगला किनारा, एक लम्वी आस्तीन की भाति खिचकर, मेहराब की शकल में ऊपर झुक आता है। घास, झाडिया, इर्द-गिर्द की प्रत्येक चीज़, अधियारी हो उठती है जल्दी करो! वहा, उधर ऐसा मालूम होता है जैसे सूखी घास की कोठडी नज़र आ रही हो जल्दी करो! दौडकर वहा पहुचते, भीतर जाकर शरण लेते! उफ, ऐसी वारिश! विजली की ऐसी चकाचौंध! वेंत की छत के किसी छेद मे से भीनी गधयुक्त सूखी घास पर पानी टपकने लगता है लेकिन अव सूरज फिर उजला चमक रहा है। तूफान वीत गया। आप

बाहर निकल आते है। ओ मेरे भगवान, कितनी आनन्दपूर्ण चमक है हर चीज में! ताजा स्वच्छ वायु, स्ट्राबेरी और कुकुरमुत्तो की गध!

और तब साझ तिर आती है। आग की लपटो की दमक फैलती और आधे आकाश को घेर लेती है। सूरज छिप जाता है। आसपास की वायु एक विचित्र बिल्लौरी पारदर्शिता से युक्त है। दूर एक मृदु, आखो को सुहावना लगनेवाला, नमी से भरा धुधलका छाया है। अभी कुछ देर पहले तक स्वच्छ सोने की वाढ से प्लावित खेत, नीहार के साथ, रक्तवर्ण आभा मे रग जाते है। पेडो, झाडियो और पुआल के वडे वडे ढेरो से लम्बी छायाए दौड चलती है सूरज छिप चुका है, सूर्यास्त के अग्निमय सागर में एक तारा टिमटिमा और थरथरा रहा है अब वह—अग्निमय सागर—पीला हो चला है। आकाश नीला रग जाता है। पृथक् परछाइया विलीन हो जाती है, वायु अधेरे में डूब चलती है। अव समय है कि घर की ओर लौट चला जाय—गाव की उस झोपडी की ओर जहा आप रात को टिकेगे। अपनी वन्दूक को आप कधियाते है, और—बावजूद थकान के—तेज डगो से आप चल पडते है इस बीच, रात घिर आती है। अब आप बीस डग आगे की चीज भी नही देख सकते। कुत्ते अधियाले में धुधले सफेद नजर आते है। वहा उधर, काली झाडियो के ऊपर, क्षितिज पर एक अस्पष्ट-सी चमक नजर आती है। यह क्या है? आग तो नही? नही, यह चाद है जो ऊपर उठ रहा है। और इससे नीचे, दाहिने हाथ, गाव की रोशनिया अभी से टिमटिमा रही है और यह लीजिये, आखिर आपकी झोपडी आ गयी। खिडकी में से एक मेज दिखाई दे रही है, जिसपर सफेद कपडा विछा है, एक मोमवत्ती जल रही है, साझ का भोजन

किसी एक अन्य अवसर पर, आप आदेश देते है कि वग्घी को वाहर लाया जाय, और ब्लैक ग्राउज का शिकार करने के लिए जगल की ओर रवाना हो जाते है। रई की दो ऊची दीवारो के वीच सकरे पथ मे राह

वनाते गुज़रना वड़ा सुखद मालूम होता है। रई की वाले आपके चेहरे पर मृदु आघात करती है, नीलपोथे आपकी टागो के इर्द-गिर्द चिपक जाते है, लवा-पक्षी चारो ओर गुहार मचाते है। घोडा असल दुलकी चाल अपनाये है। और यह लीजिये, जगल आ गया – पूर्ण छाया, और निस्तब्धता। सिर के ऊपर खूव ऊचे एस्प के सुडौल वृक्ष सरसरा रहे है, वर्च-वृक्षो की लम्वी लटकी हुई टहनिया मुश्किल से ही हिलती नजर आती है, लीपा के एक सुन्दर वृक्ष की वगल में, विजेता की भाति, वलूत का एक शक्तिशाली पेड खडा है। छाया की धारिया पडे हरे पथ के सहारे आप आगे वढते है। वडी वडी पीली मक्खिया सुनहरी हवा मे निश्चल रुकती और फिर, अचानक, उड जाती है। छोटी छोटी मक्खिया, झुड वाधकर, मडरा रही है – छाया में उजले, और धूप मे अधियाले। पक्षी, विना किसी विघ्न वाधा के, गा रहे है। वार्वलर-पक्षी की मधुर लघु आवाज़ अनवरत हृदयोल्लास का गीत गाती है, जो घाटी मे खिले लिली के फूलो की गध के अनुरूप है। आगे, और आगे, जगल की अधिक गहराइयो में . जगल अधिकाधिक गहन होता जाता है एक अकथ निस्तब्धता भीतर आत्मा पर छा जाती है। वाहर भी सभी कुछ स्थिर और स्वप्निल है। लेकिन अव हवा जोर पकडती है, और पेडो की चोटिया उद्वेलित लहरो की भाति गूजने लगती है। जहा-तहा, पिछले साल के भूरे पत्तो के वीच, लम्वी घास उगी है। कुकुरमुत्ते अपनी चौडी किनारो वाली टोपिया लगाये अलग खडे है। अचानक एक खरगोश उछलकर वाहर निकलता है, कुत्ता उसके पीछे लपकता है, अपनी गूजती आवाज में भूकता हुआ

और यही जगल, शरद् के आखिर में, जव स्नाइप-पक्षी उडते है, कितना भला मालूम होता है! स्नाइप-पक्षी – जगल के हृदय में नही रहते, उनकी टोह वाह्य छोरो में लेनी चाहिए। न हवा होती है, न सूरज, न रोशनी, न छाया, न कोई हरकत, न ध्वनि। शरद् की गंध, मदिरा की गध की भाति मृदु वायु में घुली होती है। दूर, पीले खेतो के ऊपर, एक

मृदु धुध लटकी है। नगी भूरी टहनियो की झिलमिल में से थिर आकाश बहुत ही शान्त नज़र आता है। लीपा के पेडो पर, कही कही, अन्तिम सुनहरी पत्तिया हिलती हैं। नम धरती पाव के नीचे लचलचाती है। घास की ऊची सूखी पत्तिया थिर हैं। सफेद पडी घास पर लम्बे सूत चमकते दिखाई पडते हैं। शान्तचित्त से आप सास लेते हैं, लेकिन आत्मा में एक विचित्र कम्पन का आभास होता है। आप जगल के छोर के सहारे सहारे चलते हैं, अपने कुत्ते पर नजर रखते हैं, और इस वीच प्रिय आकार, प्रिय चेहरे, मृत और जीवित, आपके मस्तिष्क मे उभरने लगते हैं। मुद्दत से सोयी हुई स्मृतिया अप्रत्याशित रूप में जाग उठती हैं, और कल्पना तेज़ी से लपकती और पक्षी की भाति ऊची उडाने भरने लगती है, और यह सब इतनी सुस्पष्टता के साथ गतिशील होता है और आपकी आखो के सामने उभरकर आता है। कभी हृदय धडकता और थरथराता है, गहरे अनुराग में उमडकर आगे की ओर लपकता है, और कभी स्मृतियो में इतना डूव जाता है कि उवारे नही उवरता। आपका समूचा जीवन, जैसे सहज ही और तेज गति से, आपकी आखो के सामने विछ जाता है। ऐसे क्षणो में मानव अपने समूचे अतीत, अपनी समूची भावनाओ और अपनी शक्तियो का – अपनी समूची आत्मा का – स्वामी होता है, और इर्द-गिर्द कोई चीज़ ऐसी नही होती जो बीच में वाधा डाले – न सूरज, न हवा, न ध्वनि

और एक स्वच्छ, शरद् का अपेक्षाकृत ठडा दिन, भोर में धुध-पाले से युक्त – जव बर्च के वृक्ष, परियो की कहानी के पेडो की भाति ऊपर से नीचे तक स्वर्णिम, हल्के नीले आकाश की पृष्ठभूमि में चित्रवत उभरे नज़र आते हैं, जब सूरज – नीचे आकाश में स्थित – लापता नही वल्कि गर्मियो से भी अधिक उज्ज्वल चमक देता है, एस्प-वृक्षो का छोटा-सा वनखण्ड जब चमक की साकार प्रतिमा बन जाता है मानो अपनी नग्नता में वह खुश और आराम का अनुभव कर रहा हो, खाई-खड्डो की तलहटियो

में धुध-पाले की सफेदी जवकि अभी तक नजर आती है, ताजा हवा गिरते हुए, चुरमुर पत्तो को जव मृदु भाव से सहलाती और उन्हे अपने साथ खदेड ले जाती है, जव नीलवर्ण लहरिया, खुशी से छलछलाती, नदी में किल्लोल करती और इधर-उधर छितरे कलहसो तथा वत्तखो को ताल-लय के साथ झूला झुलाती है, दूर, नरसलो से आधी ढकी, चक्की चू-चरर-मरर की आवाज़ करती है, और स्वच्छ वायु मे वदलते हुए रगो के साथ कवूतर तेज गति से उसके ऊपर चक्कर लगाते है

गरमियो के धुध भरे दिन भी, हालाकि शिकारी उन्हे पसन्द नही करते, मधुर होते है। ऐसे दिनो मे उस पक्षी को भला कोई कैसे गोली का निशाना वना सकता है जो ठीक आपके पांवो के नीचे से फडफडाकर निकलता और अधर लटकी धुध के सफेदी-मायल अधियारे मे पलक झपकते ओझल हो जाता है। लेकिन हर कही कितनी शान्ति है, कितनी अकथनीय शान्ति! हर चीज़ सजग है, और हर चीज़ निस्तब्ध है। आप एक पेड के पास से गुज़रते है। वह अपनी एक पत्ती तक नही हिलाता, वह अपने विराम में लीन है। क्षीण वाप्पीय धुध के वीच से जो वायु में एकसार घुली है, सामने एक लम्वी काली रेखा दिखाई देती है। आप समझते है कि वह पास-पडोस का कोई वन है जो विल्कुल आपके नज़दीक है। आप उसकी ओर वढते है—और वह मेड पर उगे चिरायते के पौधो की एक ऊची पात में परिवर्तित हो जाता है। आपके ऊपर, आपके इर्द-गिर्द, सभी दिशाओ में—धुध लेकिन अव हवा धीमी हिलोरे ले रही है, पीले-नीले आकाश का एक अश धुधला-सा झाककर देखता है। क्षीण होती हुई, जैसे वाप्पीय, धुध को वेधकर सूरज की रोशनी की स्वर्णिम-पीत किरन अचानक फूट पड़ती है, एक लम्वी धारा में वहती है, खेतो और वनो का स्पर्श करती है—और अव हर चीज़ पर फिर घटाटोप अन्धेरा छा जाता है। वहुत देर तक यह सघर्प चलता है, लेकिन उस समय दिन कितना अकथनीय रूप मे उजला तथा शानदार वन जाता

है जब अन्त में प्रकाश विजयी होता है और गरमायी हुई धुध की अन्तिम लहरो की तहे खुलती और मैदानो के ऊपर फैल जाती है, या हवा के साथ उडती और गहरी, मृदु चमकती ऊचाइयो में गायब हो जाती है.

इस वार आप वाहिरी इलाके के लिए, स्तेप के लिए, रवाना होते है। कोई सात-आठ मील तक आप कच्ची सडको पर से गुजरते है, और अन्त में, यह लीजिये, राजमार्ग पर आ जाते है। गाडियो की अन्तहीन पातो, और खुले फाटको, एक कुवे तथा सायवान के नीचे खौलते हुए समोवार से युक्त सडक-किनारे की सरायो और एक के वाद दूसरे कस्वे को आर-पार करते है, अन्तहीन खेतो के वीच से और सन के हरे खेतो के किनारे—देर तक, वहुत वहुत देर तक—आप चलते है। एक वेंत-वृक्ष से दूसरे पर मैगपाइ फरफराते है, किसान स्त्रिया हाथो में लम्बे पजे लिए खेतो में चल रही है। पुराना नानकिन का लम्बा कोट पहने एक आदमी, कधे पर झल्ली रखे, थका-सा अपने पावो को घसीट रहा है। एक भारी जमीदार की वग्घी जिसमे छ ऊचे दम-उखडे घोडे जुते है, सामने से चली आ रही है। गद्दी का एक कोना खिडकी से वाहर निकला है, पीछे ऊपर की ओर एक वोरे पर, पतली रस्सी से हिलगा, ग्रेटकोट पहने और भौहो तक कीचड के छपाको से लिथडा एक नौकर गुडमुडी-सा बना है। और यह लीजिये, जिले का एक छोटा-सा नगर आ गया—लकडी के टेढे-मेढे छोटे छोटे घरो, अन्तहीन वाडो, सूनी पत्थर की इमारतो और गहरी खाई के ऊपर पुराने ढग के अपने पुल से युक्त आगे और आगे! आखिर स्तेप के प्रदेश में आप आ पहुचे। पहाडी की एक चोटी पर से आप देखते है—क्या दृश्य है! गोल नीची पहाडिया एकदम ऊपर तक जोती और वोयी हुई, प्रशस्त उतार-चढावो में हिलोरे लेती। झाडियो से आच्छादित चक्करदार खाइया उनके बीच अपना व्यूह रचे हुए। छोटे छोटे वनखण्ड आयताकार द्वीपो की भाति छितरे है। एक गाव से दूसरे गाव तक सकरी पगडडियो का जाल बिछा

है। गिरजो की सफेदी नजर आती है। वेंत के झुरमुट की झाडियो की झिलमिल में से एक छोटी नदी चमचमा रही है, जिसमे चार जगह वाध वधे हैं। खूव दूर, एक खेत मे, एक पात मे, द्राखवा-वृक्ष खडे हैं। अपने आउट हाउसो, वगीचे और खलिहान से युक्त जमीदार का पुराना-सा घर नजर आता है जो एक छोटे-से ताल के किनारे दुवका-सिमटा है। लेकिन आप आगे, और आगे चलते है। पहाडिया छोटी, अधिकाधिक छोटी, होती जाती है। मुश्किल से कही कोई पेड नजर आता है। यह लीजिये, आखिर हम आ पहुचे – असीम, अनन्त स्तेप हमारे सामने फैली है।

और जाडो के दिनो में ऊचे वर्फ के ढेरो पर से खरगोशो का पीछा करना, पाले में डूवी पैनी हवा अपने सासो मे भरना, मृदु वर्फ की चौंधिया देनेवाली सूक्ष्म चमचमाहट के मारे अपनी आखो को अनायास आधा मूदे हुए, लाली-मायल जगल के ऊपर छाये मरकतमणी रग के आकाश को मुग्ध भाव से निहारना। और वसन्त के पहले दिन जव हर चीज चमकती और प्रस्फुटित होती है, जव पिघलती वर्फ के भारी वाष्प से हिम-मुक्त धरती की गध आनी शुरू हो चुकी होती है, जव उन स्थलो पर से जहा वर्फ पिघल चुकी है, सूरज की तिरछी किरनो के नीचे, लार्क-पक्षी विश्वास के साथ अपना स्वर छेडते और पानी की प्रवल धाराए, प्रसन्नता से छलछलाती और गरजती-गूजती, एक खाई से दूसरी मे उमडती-वढती है

लेकिन अव खत्म करना चाहिए। एक वात और। वसन्त का मैंने जिक्र किया, वसन्त में विदा लेना आसान होता है, वसन्त में जो सुखी हैं वे भी कही दूर जाने के लिए ललकते है अच्छा तो, पाठको, विदा। मेरी कामना है, अखण्ड सुख का आप उपभोग करे।

पाठको से

विदेशी भापा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विपय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें वडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, जूवोव्स्की वुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

ये किताबे पढिये।

मक्सिम गोर्की, 'इटली की कथाए', पृष्ठ-सख्या २७६

गोर्की १६०६-१६१३ तक इटली मे रहे। वहा के जीवन के अनुभव इस पुस्तक मे दिये गये है। "मैंने इटली के जीवन की झाकियो को कथाओ का नाम दिया है," गोर्की ने लिखा, "क्योकि वहा का प्राकृतिक सौन्दर्य और लोगो के रीति-रिवाज, वास्तव में वहा का समूचा जीवन ही, रूस के जीवन से इतना अधिक भिन्न है कि एक साधारण रूसी उसे परियो की कथाओ जैसा मान सकता है।"

कुल मिलाकर, इस पुस्तक मे सत्ताईस कहानिया है और उनके विषय बहुत अलग अलग है। कई छोटी कहानिया है जिनका सम्बन्ध सामाजिक जीवन से या लोककथाओ से है या फिर वे इटली के साधारण जीवन के शब्द-चित्र है। एक कहानी मे 'सिम्पलोन सुरग' की खुदाई का वर्णन है, दूसरी कहानी मे मा की महिमा की स्तुति गायी गयी है और इसी प्रकार एक अन्य कहानी का विषय है—इटली के कगालो मे शादी कैसे होती है। कपरीओट्स की बहुत ही सुन्दर और रग-बिरगी झाकिया भी इस पुस्तक मे है।

* * *

व० कोरोलेको, 'अन्धा संगीतज्ञ' पृष्ठ-संख्या ३५१

व्लादीमिर कोरोलेको (१८५३-१९२१) की इस प्रख्यात कहानी का विषय है—एक अन्धे लडके का मानसिक विकास। लडके को अपनी हीनता की पूरी चेतना है। यही चेतना उसके माननिक सघर्ष का कारण बनती है। लेखक ने इसी मानसिक सघर्ष के मनोविज्ञान की गहराई मे जाने की कोशिश की है। कहानी का नायक अपनी मानसिक हलचल पर काबू पाकर, जिन्दगी में अपनी सही जगह तलाश कर लेता है। प्रतिभासम्पन्न सगीतज्ञ के रूप मे, वह अपनी कला में, जन-साधारण की भावनाए अभिव्यक्त करता है, उन्ही के सुख-दुख को सगीत के स्वरो में बाधता है। इसी में वह अपने जीवन की सार्थकता समझता है, इन्ही मे उसे सन्तोष और सुख मिलता है।

* * *

लेव तोल्स्तोय, 'बचपन', 'किशोरावस्था', 'युवावस्था', पृष्ठ-सख्या ५१२

'बचपन' की कहानी, यह लेव तोल्स्तोय (१८२८-१९१०) की पहली साहित्यक रचना थी। उस समय उनकी उम्र थी—छब्बीस बरस। इसी कृति को वे एक लम्बे उपन्यास के रूप मे बदलना चाहते थे। इस उपन्यास का शीर्षक होता—'विकास के चार चरण'। चौथा भाग कभी लिखा ही न गया। 'बचपन', 'किशोरावस्था' और 'युवावस्था', तोल्स्तोय की आत्मकथा, इन्ही तीन हिस्सो में समाप्त हो जाती है। इन तीनो भागो का मुख्य पात्र है—निकोलेन्का इर्तेनयेव। उसके मानसिक विकास में स्वय तोल्स्तोय के मानसिक विकास की कहानी छिपी है। अन्य पात्रो का सम्बन्ध तोल्स्तोय के रिश्तेदारो, परिवार के मित्रो, उनके अपने दोस्तो और शिक्षको से है।

* * *

लेव तोल्स्तोय, 'कज़्ज़ाक', पृष्ठ-संख्या २७६

'कज्जाक' (१८६२), यह लेव तोल्स्तोय (१८२८-१६१०) की अत्यधिक काव्यमयी रचना है।

कहानी का नायक है ग्रोलेनिन। वह कुलीन है। कुलीनो के निठल्ले और बेकार के जीवन से उसे बहुत निराशा होती है। वह खुशी और आज़ादी की खोज में काकेशिया जा पहुचता है। ओलेनिन सदा के लिए कज्जाको के बीच रहने की सोचता है। वह चाहता है कि वही एक घर बना ले और सुन्दरी मर्यान्का से शादी कर ले।

मगर गर्वीली मर्यान्का उसे ठुकरा देती है। ओलेनिन के व्यवहार-आचरण से कज्जाक बुरी तरह चिढ जाते है, तिलमिला उठते है। 'भगवान की सारी सुखी दुनिया' में वह अजनबी और अनजाना-सा ही रह जाता है।

* * *